

# ज्ञाधनी भाग

अस्य सम्बद्धित्व स्थापन्य स्यापन्य स्थापन्य स्यापन्य स्थापन्य स्थापन्य स्थापन्य स्थापन्य स्थापन्य स्थापन्य स्य

## জিলি: কল্পনাথ সাকুর কর্তৃক

W. Hirol

~~ 神像の変えです。

aption sout

学说: 衛門

35 63 4 8

ক্লিক্ত।
আদি নাজননার যতে
জীকালিদাদ চন্দ্রভী দানা
দ্বিত ও প্রকাশিত।
বিনাং শণর চিব্র ব্যাত।

में पद 3382 । व्यक्तिवादान अवल्क ! 3 देख्या महिलाइ ।

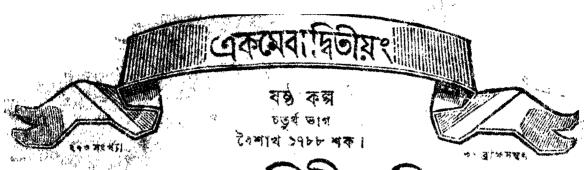
दूना 8 होति होका भाव ।

## তত্ত্বোধনী পত্রিকার একাদশ কম্পের ভৃতীয় ভাগের স্চীপত্র 🗸 ০

the fractional delignation and the second se		The same of the sa	-
देनगाथ ७०० मध्या।		জাবিন ৫০৬ সংখ্যা।	
शान	` ;		. 5.4
निवदुर्वित जानागमीय	3	The state of the s	2 + 4
জাচার্য্যের উপদেশ	ve		> >
নাগাধর্ম নীতি	4	পাক্ষরর্থ-নীতি	556
প্রাচীন ভারতে শিক্ষা		रम्यान-श्वदा	<b>&gt;</b> 2 **
সাংধ্য স্তের অনুবাদ	5.9 5.9	1 444.01041	252
अञ्चलका विकास		का। १९क (०) मध्या ।	
প্রার্থনা	*3 9	वाहारभव उत्रस्थ	34.3
	23	4 110 11 1 2 2 4 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	594
ন্ববর্মের অভ্নস্থীত	25	7 5 - m -	<b>ን</b> ስታ
গ্রান্থি সীকার	3.75	ি বস্তি- তেল <i>স</i> াত্র	300
नगात्ना इन:	\$ 5	বঙ্গে পঞ্চ ব্যক্ষণ	202
देखार्छ ४०२ मध्यत्।		বিজ্ঞান ও শৃশ্	20t
নৰবৰ্ষের ত্রাহ্মসুগাল 💃	55	। अकावनारी '२ मित' दांव तरीत एकि	200
আহিতেগ্যন উপদেশ	<b>9</b> .30	्रित्रश्रेष्ट्र देवसम्बन्ध लिल्	ንጸ ፣
ম্পুন্ম জেরমপেরন প্রিক্	<b>+3</b>	ज्याहायन ৫०४ गर्या।	
পাটীন ভারতে শিক্ষা	ئانى	অতিশিন্ত উপদেশ	>8°
		প্রেটিবিজম্ এবং আধ্যান্থিক ধণ্	38¢
শাম্বাজার আক্ষমাজ নজের গোক কে ?	්) ර ප්)ල	চাৰ্থৰ্কিশী সভা	284
भगरकारकार	র রভ	वाभ-को वन	১৫৮
'আয়াচ ৫০৩ সংখ্যা ৷		িকাগান মঞ্জী ! প্রাঞ্জি শ্বীকার	7.50
			565
জিতিথি জাচাযোর উপদেশ	35	(भीद १०० मध्यत्।	
আচ্চবের গ্রহণ সোশ্য সেহিগি।	53 88	অভিনিয়ের উপরেশ	\$6%
भेडीफ्ट गांदीय अधान ज्यन	১ ১৮	काया कात। उद	545
अव <b>णा</b> धर्य-सं}िष्ठ	40	धर्म शासका क्ष इंटर्शायमन नाम्याम सञ्जी	>4<
য়াংখ্য স্বের অভ্বাদ্	210	क्षित्र खेत्र	268
े वाश्यान-मञ्जूषी 💮 🥍	33		: b 🐿
र्रे ७गान म्हान्डाब	63	साघ ७०० अरशा।	
্রভাবেশ ৫০৪ সংখ্যা।		প্রাণ দাগরে সাচাটোর উপদেশ	58%
্ৰহ্যং পুৰুষ	৬১	जिस् <i>ए</i>	28-79
অতিমিশ্যর উপদেশ	৬১	ব্রক্ষে-শ্র-নাভি	کرد، د -
প্রাচীর আর্য্যদমাজে পাপ ও প্রায়ভিত্ত	৬৪	वर्षणान मध्यो	ই ৫৩ ই ০%
देदकानिक धर्म ध्वतः वाधाशिक धर्म	るか	त्तवशृद्ध देमनियन निर्णि	. २०५
<b>উপাशा</b> न	98	' किन (८) मश्याः।	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
मीर्था राजत अस्वाम	99	मानिक वाकानगांक	,
चार्थाम-पञ्जरी	95	এ <b>ক্ষিলন</b>	₹ <b>*</b> ₽ ₹>>
ব্ৰহ্মন্ত্ৰি মহাবাহীৰ ভ্ৰম	95	সাংবৎসন্ত্ৰিক ত্ৰন্ধোৎসৰ	520
অভিয়েশ্বিকার	930	रेठिक ७३२ मध्यत ।	is not 2
	149	अवस्ति	335
ज्ञाम ८०० मध्यत ।	•	আচার্য্যের উপদেশ	२२ <i>५</i> २ <b>१</b> %
भारतिस क्रिपटिंग्य	2.5	সাংখ্য-স্থ্রের ব্যাখ্যা	5.05 5.05
गर्सा त्नां कर्ना	100	নব্যবন্ধের উৎপত্তি স্থিতি এবং গতি	રહ્ય
गर्गेड के निर्दाक्षत डेनानमां टिक्टNÍNG	,	<b>সঙ্গীত</b>	₹8₺
	205	अग्र पूर्व	₹8₩

## do অকারাদি বর্ণক্রমে একাদশ ক**েশর ভৃতী**র ভাগের **স্থ**টাপত্র

1.	সংখ্যা	পৃষ্ঠা		- मध्या	70,447
	600	63	धा स नीकात	0.45	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
	a + >	<b>9</b> ;	বঙ্গে শঞ্চ প্রাহ্মণ		3 368
	C o Z	<b>૨</b> ૨ *		•	\$-9¢ ,
	600	85			>=> .
	e • 8	45	• •		202
	a o a	b-5 .	1	. ,	20₽
	600	<b>5</b>	,		<b>5</b> 5
	609	320			83 61
	Cob	ひおひ	}		5 by .
	20"	500			94
	<b>€</b> 1. •	<b>26</b> 27			550
	@ > <del>2</del> ,	123	i '		568 568
	O 0 3)	u			30 K
1	603	2515	ব্ৰাহ্ম-ভানে		১৫৮
<b>*</b>	220	\$55	विभ हैं है		
,	8 0 9	) w	स्त्रप्रकारिक		φ.
	11 m 25	إ ورو،	এক্ষণেয় নীয়তি	e - 3	
	( o 3)	505	ा का भन्दा- में जिल	405	55E
, ,	( ch	:01	द्राचिन्त्य न्योरिङ	a b o	२०७
	0 > 2	२.घ४	বাধানমালের শাস্তাব	Co?	526
	<b>6</b> 25	₹7%	ল(খন/খনন	623	र्देऽ५
	609	300	ভাগ্য সাকা ও ওক	403	34.2
	009	380	चित्र यदस्यमाल्यस्य आकृत	6 o ₹	<b>૨</b> ৪
	420	207	मन्त्रातीय स्थ्य	4 - 8	939
	Q.o. 5	53	भागिक-वाक्रमभाव	<b>435</b>	అంప
ৰ •	600	200	শামবাজার ব্রাক্ষমমাজ	⊄∘ર	٥,
	602	3	স্ <sup>ল</sup> তে :	· @ 3 R	<b>२</b> ৪ <b>७</b>
এবং গতি	632	₹ 98	সতা <b>ৰ্</b> ই নাৱীর <b>প্ৰধান</b> ভূষণ	000	81-
	805	5	স্থালোটনা	« • >	>2
ě	<i>«</i> •٠২ ٠	25	नेत्रारनाइना	20 ×	້ <b>ອລ</b> າ
	<b>د د</b> ۵	36	मगाद्गाहना "	<b>C</b> o C	bes
শ্বিক পর্য	600	sea.	স্মালোচনা	6.4	\$25.
चित्रक सन्ध	بره	384	मार्कात्र ଓ नित्राकात्र उलामना 🧢	<b>6</b> · <b>6</b>	84
,** 	C=3	\$	मा का इसी मी अभिवाका वा नी त करि	F CVI	موو
• "	Q • 2	20	শংশ্য স্থান অহ্বাদ	e • 💆 🔻	*
পঙ	, a		मारशा र्वात सहयान	c • • • •	· Aug
2.	<b>R • 8</b>	680	मार्था श्रावंत्र प्रस्वान	<b>*</b> 18	9.80
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	c50.	1000	And the state of t	<b>E&gt;</b> 2	***
* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	e•>	3		***	*>**
14.	C . 5	>3		6.0	1
À	¢ • 8	45	Cloning		
	ব এবং গতি ব্যিক ধর্ম ব্যিক ধর্ম পাড়	(1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1) (1)	(1) (2) (2) (2) (2) (2) (2) (2) (2) (2) (2	ত ০০ ২২ বিজ্ঞান প্র বর্ম বর্ম বিজ্ঞান প্র বর্ম বর্ম বর্ম বর্ম বর্ম বর্ম বর্ম বর	



# • जखारिनी थानिका

हिक्क विविक्षिणमञ्ज्ञानीभागाय किकाराणिकिशियः नार्धसमान्यः ज्यात्व सिखाः आर्थानसमान्यः स्वर्णकः विद्वताप्रदामक प्रशानिकीयः सार्धवाणि मञ्जीसिवञ्च मञ्जीश्रामः गर्व्धविय भावामक्षिमम् आर्थः धूर्वसञ्ज्ञाः समित्रः । ५४०९७ (भागताना समान्यः) पाविविक्षतेमिनिक साञ्चकक्षकवितः स्वीतिक्षम् स्वीतिकामः (स्थिक) मान्यः स्वर्णकामः स्वर्णकामः ।

### ঋগেদ সংহিতা।

## প্রথমনওলনা ত্রোদশান্ত্রাকে সগুমং সূক্তং ৷

গোড় মঞ্চলি প্রক্রিক্টনে ইন্দোনে বত। ।

১১ ইনে চিত্তৰ মুন্যতে বেপেতে ভিষ্যা মুহী। যদিকে বজিলো জাসা বৃত্তং মুক্ত আবধীর চলি মন্ত্ কুরাজাং।

>> 'मही' महरणी 'हरम हिन्न' महावी पृथियहायित दह देख 'मनहरूव' मणीयकाशीच 'जिन्ना' छीखा 'दबरशट' मुस्मिरण दह 'हेकिन्' यक्षणम् 'हेक्क' 'मक्र्युक्ति' मक्र्युक्ति कर हर्द 'खक्ति।' बरतान 'पद्' यक्षा दुक्तर' 'कार्युनेह'। जन्ना नहर्माण्यिकार्यक्रि सरमाध्याकार्यकार्यकार्यः।

্রা হ বিশ্বর ইক্র। যধন তুলি স্থাধিপতা প্রকটিত করিয়া বলপূর্বক বুলান্তরকে বধ করিয়াছিলে, তথন এই মুহৎ স্থর্গ মত্যও ভৌষার কোপ-তরে কল্পিড ইইয়াছিল।

১২ কবেপদান তন্যতেন্ত্র ২ বৃ-জে বিশীসকল সংস্থান ২ বর্জ

### আধ্যঃ সূহপ্রভিরোয়তা চ্চুন্তু বরাজাং।

ার ব্রহণ কিন্তা বেল্ডা। প্রকৃতিকন কম্পান্ত নি বিবীভ্যত ভিতিত নাকরেছে। ক্ষেপ্তেন্ডা প্রকৃতিষ্ক যোগের ক্ষেত্রিক নাক্ষেত্র না িংকিন্তা। ক্ষেত্রিক উত্তেদ বিস্ফাল ক্ষেত্র প্রকৃতিক ক্ষেত্রিক ক্ষেত্রিক বিভাগ বিস্ফাল ক্ষেত্র ক্ষেত্র ভিত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র ক্ষিত্র ক্ষেত্র ক্ষিত্র ক্ষেত্র ক্ষেত

২ং রুত্রাস্থর কম্পন বা গর্জন স্থার। ইন্দ্রকে ।
ভীত করিতে পারে নাই; প্রভুতে ইন্দ্র স্থাধি ।
পতা প্রকটন পূর্বকি যে লৌহমর সভ্রপ্রধার বজু নিকেপ করিয়াছিলেন, ভাষা এতা ।
স্থারের অভিমুখে উপস্থিত হইয়াছিল।

५० यम् तः एवं हा नितः वर्षः । मुगर्याधवः । अशिमिला जिपीर-मरु। पिति ८० वष्ठरथः निताकः असं खुताकार ।

२० ८६ 'हेक्स' 'यद' यम 'गुजर' 'छत' इस्तांबर रखन प्रमीत 'अमानिक्राक 'छः 'वर्ळ्स' 'गमरवावयः' मेमाळ व्यक्तिति । उमानिक 'अधित' 'आगणः क्षात्र कृत्य क्रियोक्सक क्षात्र विक्रित 'एए' 'छत 'गवः' वतः 'पिति' 'वद्याय' वश्चर कासूका-एक ताल्योगीक । निष्ठः श्वात्र

১৬ ছে ইন্দ্ৰ: থখন তুমি স্বীয় অভূত্ব প্ৰকটৰ পূৰ্বাক বৃত্তাস্থয়কে ও তোমার প্ৰতি প্রক্রিপ্ত ভারার অশ্নিকে বজু ছারা প্রহার করিয়াছিলে, তথন নিয়াভনার্থ সমাগত লেই বৃত্তকে হননেজ্যায় ভোমার বল আকাশে ব্যাপ্ত হইয়াছিল।

p . 95 5

১৪ অভিষ্টনে তে অদিবো যৎ-স্থা জগন্ধ রেজতে। স্বফাটিত-বিম্নার ইন্দ্র বৈবিজ্যতে ভি-মাজনের প্রজোন।

ান বহু জোটো বাং এব হৈ জ ৭.১ তাৰ পদ্ম জিন্দীকো দিংছি নিংছি নিংছি নিংছি নিংছি নিংছি নিংছি নিংছি নিংছি নিংছি নিংছিল কিন্তু নিংছিল নিংছিল নিংছিল নিংছিল কিন্তুল কিন্তুল নিংছিল নিংছিল কিন্তুল নিংছিল কিন্তু

ত তে এজন বলৈ। তোমার নিংহনাদে পানর জন্ম কাম্পত হয়। বজুনিখাতো বিশ্বকর্মাণ ভোমার কোপ-ভয়ে পুনংপুন কম্পিড হন। ভুনি এই কপে স্বীয় স্বাধি পাচ্য বিশার করিতেতা।

605

ः निर्मित्र यार्पनीयमीखुः का-वीर्या शहर । जिस्से मुभू ज कर्जुः प्रमा अकार्या मर्पनु हर्षकेश्च सहाकीरः।

াক কান হাজেং সক্ষয় ব্যাপা কর্ত্তনানং ইক্সং ক্ষিত্র প্রতিশ্বর ক্ষিত্র ক্ষিত্

২৫ মর্পত্রগামী ইন্দ্রকে আমরা অবগত নহি।
অতি দূরে বর্ত্তমান ইন্দ্রের নামর্থ্যকোন মন্ত্রযাই জানিতে পারে না; যে হেতু দেবতারা
ইন্দ্রেতে ধন,বীর্ষা ও বল স্থাপন করিয়াছেন।
ইন্দ্র স্থায় আবিপভা বিস্তার করিতেছেন।

১७ गामर्थर्ग मस्निष्ठा एशास्त्र विग् गर्न्न । जित्रम् अविश्विश् वर्शक्तं क्रिशा मर्गगा जाक्त्रस्रं वराक्तं १ । ১। ৫। ७১।

১৬ (জনকা) এতৎসাজককাৰিঃ 'শিক্ষা' নাৰ্কারাং আক্ষানাও পিত্সু গ্ৰান্থ চা দেখাত, অৰক্ষাৰং পুত্ৰঃ এতৎ
সাজক : থাইছে খাও 'ধান ও আইড হং ক্ষাতিছত অকুক্ষান । ডালান' কৰানি থানি 'ব্ৰকানি কৰিলক গানি অহানি
চিন্ন 'ক কাকখানি পোনানি কানি কানি সভি জানি কৰানি
চিন্ন 'ক কাকখান প্ৰাবানি চানি সভি জানি কৰানি
চিন্ন 'ক কাকখান প্ৰাবানি চানি সভি জানি কৰানি
চিন্ন 'ক কাকখান সমাজতা। ১৭ দুটাত্তঃ। কুক্ষা প্ৰেনাম সামাজ বলিভানি না যাজ্যমুখ্য হ্ৰী। দু
বি তে জেকপানি চোলান কাকখানি আছাতে ভছব। যাইজান বি তে

১৮ ইক্র পুকা পূকা ক্ষিদিনের যজ্জের নায়।
ভাষকা, সকলের পিতা সন্তু, ও দ্বাঙ্নামক প্রাথিদিপের বজ্ঞীয় অন্ন ও স্তোত্ত সকল গ্রহণ করিয়াছিলেন। এই ইন্দুরুত্ত ব্যাদি ঘারা স্বকীয় আধিপত্তা প্রকৃতিত করি। তেছেন। ১।৫০০১।

शक्षद्भाशासः मग्राखः।

### মেদিনীপুরেগোপগিরিতে বসন্ত কালে ত্রনোপাসনা।

বসন্ত ঝড় উপত্তিত, প্রাতঃ-ন্ত্র্যা সমুদিত, গোপগিরি প্রকুল্লিত। আমরা এই
শুভ ক্ষণে এক কালে মুভন ঝড়ু, মুভন দিবস,
শরীর ওমুনের মূভন বার্যা, লাভ করিয়াছি।
সকলই অভিনব; আমারদের উক্তি পুষ্পা
অভিনব রূপ ধারণ পূর্বক সেই মঙ্গলময়ের
চরণে কি অপিত হইবে না? বন উপবন,
গিরি কানন, স্রোতঃস্বতী, ভাষার মহিনা কীর্ভন করিতেছে; প্রফিগণ রুক্ষ-শাখার আরুদ্দ
ম্যারণ মন্দ প্রবাহিত হইরা ভাষার
যামারণ মন্দ প্রবাহিত হইরা ভাষার
যামারণ মন্দ প্রবাহিত হইরা ভাষার
যামারণ মন্দ প্রবাহিত হইরা ভাষার

েতে লইয়া তাঁহার পুজার জনা অগ্রসর হইরাছে; আমরাই কি কেবল তাঁহার উপা-मना इट्रेंट वित्र थांकिय ? छिनिहें এहे নৰ ঋতু, নৰ পত্ৰ, নৰ নৰ কলিকা প্ৰেরণ করিতেছেন। যিনি ব্যাধিকে আরোগো, विश्रमृतक मण्यातम्, श्रेतां क्यातक कटत श्रितिक করেন; ভিনিই বসভের প্রকাশ করেন। যিনি भीजतक वमरखं, वार्षि व्याद्याद्या, विश्वन् म-ম্পাদে, পরাজয় জায়ে, পরিণত করেন; ভিনি কি মুত্রকে অমৃতেতে পরিণত করিতে शास्त्रका ? मार्थे शास्त्रको किंक कीवन, वग्राच्या नामा स्थापाति पर्वा सम्बद्धा स्थाप इडेटव: बाद्य सुर्या आभावनित्वात मन्ग्रंथ এ ক্ষণে যে কল দীলি পাইতেছে, ভাই व्यक्तिको छेक्क्स्टर्स करल ध्वम एवं। सर लाटक बामानामत समार्थ मेखि लाहे-বেক। যে মন্সলময় পিতা আনারদিগকে ইছ কালে ধর্ম্মতেবণের স্থানের পর আবার भाव लिएक व व । ज्यानन यमान कविद्वा. ভাষার উপাননাতে সক্ষণ নিযুক্ত থাক: डींशटक श्रीजि कत, डीशत श्रिप्त कार्या माथन कर ; जाहा क्ट्रेटल दगटगुत क्यूम অপেক। ভোমারদের জনর মধুময় হইবে, यमरखत भोन्नर्या परभक्ता छेरक्के उत त्मी-ষ্ব্য ভোমারদের মুগগ্রীতে প্রকাশিত रहेटत, मनश्-मभौत्र घटलका अकूलकृत আত্ম-প্রসাদের হিলোল তোমারদের অন্তরে নিতা সঞ্চরণ করিবে।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং।

মাসিক ব্রাক্ষসমাজ ! ৬ চৈত্র ১৭৮৭ শক। প্রধান আচার্ব্যের উপনেশ।

ষিনি চন্দ্র-ভারকে থাকিয়া—চন্দ্র-ভার-কের স্বস্তুরে থাকিয়া চন্দ্র-ভারককে নিয়মিভ করিকেছেন, ভিনিই আমারদের আত্মাতে

থাকিয়া—আত্মার অন্তরে থাকিয়া জান ধর্মো ভাহাকে পরিপুষ্ট ও উন্নত করিতেছেন। তিনি আকাশে, তিনি আনাতে। তিনি বাহিরে, তিনি অন্তরে। তিনি স**র্ক্ষ-সাক্ষী**, তিনি কর্মাধ্যক । তিনিই আমারদের আ-রাধ্য দেবভাঃ ভীহাকে দর্শন করিবার कना मृत्व याकेटक व्य ना, समा विष्ट्रम अनुमन्नान विदिश्य हरा तो—विशा **व्या** व्यादाग-छाम এই প্রিত্ত আলা। पिनि আপনার আত্মানে পরিত্র করেন, ভিনি ভাষাকে অভনে দেখিতে পান: আকা-শে কণ নাই: আকাশতে চলে দেখা যায় না, আকাশকে হাস্বধারতে পারি না---जनानि जागाइ मणुद्ध अहे एविष्**र अ** দ্যান আক্রাপ্তেশ আগ্রান্ত ক্ষুম্ভব कांब्रहार । यह समा आकानाक वामना যে ৰূপ অনুভৰ করিভেছি, পূর্ণ ঈশ্ব-রকেও দে ৰাণ পানু চব করি না—আমা-রচের এ কি নোহা অংগাশ পুনা পদার্থ— ইশ্র অন্কাশ, তিনি আকাশ নতেন্ ভিনি পুনা নহেন , নিলু ভিনি পূর্ব, ভিনি সভা। यादांश उँ हार भड़ाद्ध-ाई म्टबाद মতাতে পুণ রাষ্ণাছে। তথাপি পুন্ আকাশকে আমরা যে ৰূপ অনুভা করি-তেছি, পূৰ্ব ঈশ্বংক লে **ৰূপ অনুভ**ৱ করি না। বিনি এই আকাশে রহিহাছেন; ভিনি অনেরে যেখানে আকাশ নাই, সেখা-নেও রহিল্পেছন। আকাশ নাই কোথায় ? আকাশ নাই আলাতে। আপন্ত শ্রীতের भटका अर्थात आजारक म्थ, अशिद्य स्य দেখানে আকাশ নাই। আত্মতে আকাশ मारे--- याचा व्याकारमत अञीक भनार्थ। আরা স্লানহে, অগুনহে, হুস্থ নহে, দীর্ঘ नहरू , এই আঝার মধ্যেই অনাকাশ স্থ-কাশ প্রমান্তা অবস্থিতি করিতেছেন। তিনি বাহিরে এই সমস্ত আকাশে ব্যাপ্ত

े निक्किर भागता कार्या-कार्त्र-कार्य-कार्य করিয়া পাকি; কিন্তু আমরা যতদুর প্রয়োগ ্করিতে চাই—ফলে ভতদূর পারিয়া উঠি **না — অনে**কটা আমাদের **হাতে** থাকি থাকিয়া যখন আমরা দেখি একখণ্ড দগ্ধ কার্চ পড়িয়া আছে তখনই আমরা মনে করি যে, অগ্রির দাহিকা শক্তির প্রভাবেই কাষ্ঠের এইরূপ ভাব-পরিবর্ত্তন ঘটিয়াছে,— यागता पार्ग-कार्मात অগ্নিতে আরোপ করি; কিন্তু তাহা করিয়াই আমা-**(एत छ्वात्मत अ**काळल मिक्ते मा। एति (ए দাহন করে—তাহা জেন করে? কাহার শক্তি তাহাকে দাংন-কাশ্যে প্রয়ন্ত করে ? আবাব অগ্নিকেষে দাহন-কার্য্যে প্রব্রক্ত করে,—দে-ই বা কে ? এবং তাহার সেই প্রবর্ত্তনা-কার্য্যেরই বা কারণ কি ? এইরূপ ক্রমাগতই কারণের গৃষ্ঠে কারণ লাগিয়া আছে, কোখাওুভাহার অন্ত খুঁজিয়া পাওয়া যায় না। অনেক দাশ-নিক পণ্ডিত আলোধী প্রণালী-জনুদারে , কারণের মূল-আবিফারে পরাভব যানিয়া শেষে এইরূপ এক অ্যথা দিদ্ধান্ত স্থির করিয়া বদেন যে, কার্যা-কারণ-তত্ত্ব নিভান্তই বৃদ্ধির অতাত—উহার আলোচনায় খাত পাঝাই শ্রেষ। বদি আরোহী এণালা ভিন্ন আর কোন প্রকার যুক্তি-প্রবালী না থাকিত ভবে ইহাঁদের কথা অকাটা হইত; কিন্তু নিম্নে খামরা দেখাইব যে, একরূপ যুক্তি প্রণালীতে বে প্রশ্নের কিছুই নামাংসা হয় না, জার একরপ যুক্তি-প্রণালীতে ভাহার মীমাংসা षा और महत्क निश्नन हहें ।

প্রমাণের বিষয় যেমন নানা প্রকার,
প্রমাণের পদ্ধতিও দেইরূপ নানা প্রকার;
কোন পদ্ধতি কোন বিষয়ে খাটে—কোন
বিষয়ে খাটে না। অতি-একটি সহজ বিষ্
য়কেও যদি অনুপযুক্ত পদ্ধতি দ্বারা অনুয়ত্ত
করিতে যাও—দেখিবে যে, তাহা কিছুতেই

তোমাকে ধরা দিবে না। নিম্নে ইছার একটি উদাহরণ প্রদর্শন করিতেছি।

#### ক খ

মনে কর ক তুই হাত পিছাইয়া আছে,
থ তুই হাত এগিয়া আছে; আর মনে কর
যে, ক যদিও তুই হাত পিছাইয়া আছে,
তথাপি তাহা থ অপেক্ষা দিওল বেলে চলে;
ক এক নিমেষে তুই হাত অ তবাহন করে, থ
এক নিমেষে এক হাত মাত্র অতিবাহন
করে। মনে কর, ক এবং থ উভয়েই চলিতে
থারস্ত করিল; থ এক এণ ষেলে চলিতেছে—ক দিওল পেগে চলিতেছে; এফলে
স্পান্তই দেখা মাইতেছে যে কিয়ৎকাল পরেই
ক, খ'কে ধারতে পারিবে,—এবং ভাহার
পারেই থ'কে গ্লাহত কেলিয়া এগিয়া যাইলে, কিন্তু আমি আমার স্ক্তি-প্রণালী অবুসারে প্রমাণ করিব যে, ক কথনই থ'কে
বারতে পারিবে না। সে প্রণালী এইরূপ;—

#### ক খ গ ঘ

মনে কর, ক-স্থান হইতে ক এবং খ-স্থান হইতে খ একই সময়ে চলিতে আরম্ভ করিল, এবং উভরের মধ্যে তুই হাত মাত্র ব্যব-ধান; ক সেই তুই হাত কাৰণান অতি-क्रम क्रिया यथन क-सान र्टेट थ-सारन উপনাত হইল, খ তথন চুপ করিয়া বদিয়া नार, - क रयमन पूरे राज षाज्यम क्रिया খ-স্থানে উপনীত হহল, খ তেমান এক হাড় অতিক্রম করিয়া গ-স্থানে উপনীত হইন, কেননা থ রের গতি-বেগ ক-অন্তর্গন্দা অক্তেক क्म । এই तथ क धथन थ'द्रात व्यवम श्राद् অর্থাৎ খ-স্থানে—আদিবে, থ তখন তা-शत (गरे ध्यम हान हरेट ज क राज हूरके विक्रोह-साटन (वर्षाद शन्दाटन) याहरत : जा-হার পর, ক রখন গেই এক হাত অভিনে किंद्रा प्रदेशत विजीध हारन (श-शारन) याहरें ৰ তবন আৰ হাত অতিক্ৰম ক্রিয়া ভূতীয়া

चारन (वर्षाः भ-कान एकैएक ध-कारन) याहेरतः, তাহার পর ক ষথন দেই আধ হাত অতি-ক্রেম করিয়া খ'য়ের তৃতীর স্থানে (ঘ স্থানে) ষাইবে, খ তথন গিকি হাত অতিক্রম করিয়া চতুৰ্থ স্থানে যাইবে; ক যখন দেই সিকি ছাত আতিক্রম করিয়া খ'য়ের চতুর্থ স্থানে পাইবে, খ তথ্ন অৰ্দ্ধ দিকি হাত অভিন্তুস করিয়া পঞ্চম স্থানে যাইবে; ক যখন সেই অর্দ্ধ নিকি ছাত অতিক্ম করিয়া খ'ছের পঞ্চম স্থানে ষাইবে, থ তথন নিকির দিকি লাচ অতি-क्रय कतिता यष्ठे छोटन याहेट्न : अरेक्न १ तथा गार्टेर्ड्स्टर्स, क व्यदः य'रसन भएता वायस তুই ছাত বাবধান ছিল; ক খখন খ'থের পরিতক্তে খ-স্থানে আসিল, তখন উভয়ের মধ্যে এক হস্ত বাববান বহিন : ক সখন খ'য়ের পরিতাক্ত গ-স্থানে আমিন, তথন উভয়ের মধ্যে অর্দ্ধ হস্ত ব্যবধান বহিল ; ক যখন খ'মের পরিত্যক্ত ঘ-ছানে আলিল তখন উভয়ের মধ্যে নিকি হস্ত প্রবর্গ রহিল; ক ধ্**ধন খ'ি**হর তর্থ স্থানে আমিল উভারের মধ্যে তথন অৰ্দ্ধ দিকি হাত বাৰধান গ্ৰহিল; ক যখন খ'রের পঞ্চন স্থানৈ আলিল, উত-য়ের মধ্যে তথন দিকির দিকি হাত ব্যবধান तिहल ; क्र<mark>यागण्डे क</mark>्रेत्रभ भक्त अपूर्वाद्व উভয়ের মধ্যে অর্দ্ধেক অর্দ্ধেক করিয়া ব্যবধান ক্ষিতে থাকিল - কিন্তু কোন কাণেই ব্যব-ধান তিরোহিত হইল না। এক বাৰধান আর-এক ব্যবধানের সিকির সিকির অর্থ্যক **इहेरन७** তাহা ব্যবধান—সিকির দিকি হইলেও তাহা ব্যবধান, যতই অন্ত ব্ৰেখান ভাবো না কেন তাহাও ব্ৰব্ধান তা-হার আর ভুল নাই ; – অতএব আসার যুক্তি **धानानी षञ्जात धार्मिक हरे**क्ट त्य, कान कारल है क अवः च छछ दात मत्भा वावबीन এक्कादतहे विलुख हईदव मा, थ वक्रेन वक्रे विश्वा थाक्टिवर थाकितः

অতএৰ প্রমাণ হইল যে, ক—খ'তে কিছুতেই ধ্রিতে পারিবে না।

উপরে শুদ্ধ কেবল স্থানিক যুক্তি প্রণালী **অবলম্বন কর। হইয়াছে,**—ক হথন গ'লেব পরিতাক্ত স্থানে পৌছিবে খ তখন দে স্থান इंटेंटच अकर्षे ना अकर्षे मृत्त मतिहा शाहेटच —এইরূপ স্থান-ঘটিত প্রমাণ প্রায়োগ করা হইগাছে; কিন্ধু সেরূপ যুক্তি-প্রশালী এখান-কার অনুপ্রোজী ই**হা** বলা বাছ্যা। ফালিক যুক্তি-গণানতে সহজেই প্রতিগল হয় যে,-দ বখন এক নিমেধে ছুই হাত আভিবাহন কৰে, তথ্য দুই নিখেগে ক-স্থান চহতে ৪হাত দরে অগ্রদর হইবে, খার খদেই চুই নিমেয়ে ধ-ছান হটজে গৃই হাত (সূত্রাং ক-ছান হইতে ৪ হাত) দুরে অগ্রাসর হইবে; তুই निरमस्य উভरेग्रेडे क दान इंटेर्ड ८ हाज দূরে পৌছিবে; অভএব প্রমাণ হইল যে, গুই निरम्दा क थे'दक श्रांत्र ।

এইরূপ দেখ। বাইতেছে যে শুদ্ধ। ফেবল रानिक युक्ति-श्रिगाली बादा याश कान মতেই প্রমাণ-সাধ্য নহে, কালিক যুক্তি-প্রণালী দারা তাহ। অতি সহজে সপ্রমাণ হয়। এখন,মূল কারণের অভিত-প্রমাণ সদ্দক্ত আমাদের বক্তব্য এই যে, যদিও কারণের কা-রণ—তদ্য কারণ—এরূপ করিয়া ঊপযুগিপরি উর্দ্ধে উড্ডয়ন করিতে থাকিলে কোন কালেই মূল কারণে পৌছান যায় না যদিও কালিক যুক্তি-প্রণালী অনুসারে মূল-কারণের অক্তিত্ব প্রমাণ কারতে পারা যায়ন। – তথাপি আমর। वाधाविक देशनी व्यूमात मून-कान्रत्व অন্তিৰ স্পৰ্ভন্নপে উপলব্ধি করিতে পারি। উপরে আমরা দেখাইয়াছি যে, যাহা স্থানিক প্রমাণ-ছারা কোন মতেই সিদ্ধ হইতে প্রারে না, তাহা কালিক প্ৰমাণ দাবা সিদ্ধ হইলেও . হইতে পারে; এক্ণে আমর দেখাইতে চাই যে, এমনও বিষয় আছে যাহা কালিক প্রমাণ

বারা কোন মতেই সিদ্ধ হয় না, অথচ আধ্যাত্মিক প্রমাণ বারা অনায়াদেই সিদ্ধ হয়ঃ

দৈশ-ঘটিত এমন কতক-গুলি তত্ত্ব আছে যাহা কাল-সম্বন্ধেও খাটে; আবার,দেশ-ঘটিত \* এম্নও কতক-গুলি তত্ত্ব আছে যাহা কাল-দ-স্বন্ধে আদৰেই থাটে না। মধা ভাগ অভিক্রম না করিয়া অস্ত-ভাগে পৌছানো যায় না—এ ভত্তুটি দেশ কাল উভয়েতেই খাটে:, যেমন বলা যাইতৈ পারে যে, তুই কোশ অতিবাহন না করিয়া চারি জোশে পৌছানো পায় না, তেমনি বলা ঘাইতে পারে হে, ড়ই ঘণী অতিক্রম না করিয়া চারি ঘণ্টায় পৌছানো কিন্তু যদি বলা যায় যে, অএ-যায় না। পশ্চাৎ পরিবর্ত্তি হইলেই গার্থ গার-য্ৰ্তিভ ছইবে, তবে এ তাত্ত্বটি কেবল দেশের मयरकरे थाएँ-कारलं मयरं थाएँ मा; দেশের সহক্ষেই বলিতে পারো যে, প্রধা-मुया इटिशा माँ ज़िटित नार्वीदत विकासी व ্**দক্ষিণ** দিকে রহে, পশ্চিম-মূল ইইয়া লাড়া-**हेट्स रमहे प्रकिश शार्थ** हिंदहिएक किंद्रिश ষ্ঠা, অগ্রপশ্চাৎ প্রিটিত ইইলেই সেই সদে প্রবিত্ত হয়। এ তত্ত্বাট কা-(लार् भेष्ठति धहेखार थाएँ ना, १८६ क् का-নের ওদা কেবল এগ্র পশ্চাৎ আছে-পার্য নাই। তিম্নি আবার আত্মার একত্ব—যাহা একটি মাত্র বিন্দুর সহিত উপমেগ্র – তাহার পार्य । नारे कार्य शका ५७ नारे .- এर जना "কালের উজান বাহিয়। মূল-কারণে উঠিতে ছট্টবে" এ প্রণালীটি আধাত্মিক পর্ম কারণ বলিলাম যে, আত্মার मश्रदक थाएँ ना। একত্ব একটি মাজ বিন্দুর সহিত,উপমেয়, ক্তি প্রথ-কারণ-সম্ব তাহাও সম্পূর্ণ ক্লপে ঠিক্ নহে,—আকাশ-স্থিত একটি বি-ন্দুর প্রাথে আর একটি বিন্দু কল্লিড হইতে পারে কাল হিত একটি মুহুর্ভের পুরো-

ভিত্তি আর একটি মুহুর্ত্ত কল্লিড হইতে পারে, কিন্তু পরম-কারণের একত্ব আকাশের **সম্ভ** रिम्हुटक এक **ম্হাকাশে**র गर्धा कर्नालंड কবিয়া রাখি**য়াছে ও কালের সমস্ত মৃহুর্তকে** এক মহাকালের মধ্যে কবলিত করিয়া রাখি-হাছে—ভাহার পাৰে বা নম্মুখে দিভীয়ের थान नार : এर जना जाकारनात मगल विम् মিলিয়া যদি একটি মাত্র বিন্দতে সম্ভুক্ত হইয়া শাষ, ভবে মেইরূপ-একটি বি**ন্দুই পা**রমা**র্থিক** বাবৈত ভাবের সহিত উপদেয়। পার্শ-লেদ এবং অগ্রপশ্লাৎ-ভেদ উভয়ই ভাঙে; ভালের পার্য-ভেদ নাই কিন্তু অগ্র প-চাং ভেদ আছে ; সর্বাময় এবং সর্বাতীত প্রম একডের পার্ম্বভিদ্ও নাই, **অগ্র পশ্**চাৎ ভেস্ও নাই। যেমন পাশ-িঘটিত কোন তত্ত্ কাল-রাজ্যে স্থান পাইতে পারে না,মেইরূপ বতা পশ্চাং ঘটিত কোন তত্ত্ব পরম অধৈত রাজে স্থান পাইতে গারে না।

গালার অদৈত-প্রদেশ আমাদের দেশীয় দর্শনি শাল্পে নিরুপাধিক শক্তে অভিহিত হইয়াছে। ক'ল প্রভৃতি ইউরোপীয় দার্শ-্নিকেরা মেই প্রাদেশকে Transenscondent এই শক্তে নির্দেশ করিয়া**ছেন। মূল-তত্ত্ব-**সক**লে**র দৈশিক এবং কালিক প্রয়োগ (অর্থাণ যেরূপ এত্যোগ দেশ-কালের সম্বন্ধেই খাটে সেইরূপ প্রয়োগ) আত্মার নিরুপাধিক প্রদেশে সং-লগ্ন হয় না বলিয়। অনেকে এইরূপ দিদ্ধাতে ङ्गनीज स्हेशार्डन (य, डेक्ट निक्नभाषिक क्ष्रांटनम मञ्ज्ञा-काटमत এएक गारतहे व्यक्षिकात-বহিভূতি। কাল-রাজ্যে পা**র-ঘটিত কোন্** তৰেরই প্রয়োগ সম্ভবে না—ইছা দেখিয়া আঁমরা অনায়াদে বলিতে পাছিতাম মে, কাল-রাজ্য আবাদের জ্ঞানের জ্ঞাধিকার-বহি-ভূত, কিন্তু তাহাক্তো আমরা বলি না। তাহা যদি হইল তবে – অগ্ৰ পশ্চাৎ ৰটিভ কোন তত্ত্বাহার নিরপাধিক প্রদেশে খাটে

না—এইটি শুধু দেখিয়া কেমন করিয়া আ-মর। জানিব বে, আত্মার নিরুপাধিক প্রদেশ একেবারেই আমাদের জ্ঞানের অধিকার-বহিত্তি।

कान्छे वर्त्त्रन रश, धिन कार्श-कार्तन-তত্ত্বকে উহার কালিক প্রায়েগি হইতে বিযুক্ত করিবা ভাষা যায়, তবে কার্যা-কারণ তত্ত্বের किছ्हे जात थाक ना। यस कत्र, छें छान मश्राहा वत्रक शनिश्र कल उरेशा याहे-·তেছে—কঠিন অবস্থা পরিভাগ করিয়া ভরন অবসায় উপনাত হইতেছে; যে শ ক্তির প্রভাবে করিন জল ভরন হইতেছে:-তाहा जाना अर्जनको करिन धन्या धन्य পরবর্তা তবল অবস্থা এই ছই অবসার সন্ধিছনে বহুনান; কিন্তু যদি ঐ পূর্বা-वर्छो शतमधी छे अप्रकटे नाम मिया एन দেই শক্তিটিকে আমর। ধরিতে যাই—তবে আমরা মনে করি বটে যে, এইবার মৃষ্টি মধ্যে এक हो- विष्ट्र भारेलाम, -- कि छ शक (भानश দেখি-শুনা ! • তৈল আ: তথা যথন কাচ-পাত্রে অবাছত হয়, তথন ইতিয়ের সাম্ব-স্থা-বভী রেখা-চজটি দিবা আমাদের দৃষ্টি-গৈচির হয়, কিছু যদি একদিকু হইতে তৈল এবং আর, একদিক্ ইইতে তল সরাইয়া লওয়া যায়, তাহা হইলে সে রেখ। কোথায় থাকে প্রেমাপানিক কার্য্য-কার্ ৰুখিতে পাৰি কিন্তু নিক্ষপাৰিক কাৰণকে क्रिक्राट्य व्यागना कारन छ्रेशलिक कतिय ?

কাতের এই প্রমানির মীমাংসা কালিক মুক্তি-প্রণালী অনুসারে অসম্ভব, ইহা আমরা মুক্ত কঠে স্বীকরি করি; এমন কি, কান্ট আ-প্রনিই স্থীকার করিয়াছেন যে, নিরুপাধিক তত্ত্বের পক্ষে, কালিক বা সাংসারিক মুক্তি-প্রণালী বৈধ প্রণালী নহে। কান্ট তম তম করিয়া দেখাইয়াছেন যে, সোপাধিক যুক্তি- যাইতে যাওয়া বিজ্যনা মাত্র—কেননা দে পথ একটি প্রকাণ্ড গোলোক গাঁদা।

্জামরা যাহা বলিতে চাই ভাহা সংক্ষেপে এই ষে, নিরুপাধিক কারণের ভাব—
দূরে কোথাও নহে—আমাদের আত্মার কাবীনভাতেই অন্তর্নিহিত আছে, যদি বল
"তাহার প্রমাণ কি" তবে তাহার উদ্ভব্ধ এই
থে, সাধু বাজির অনুষ্ঠিত ধর্ম-কার্যাই ভাহার
গ্রাণ ; যে বাজি যত ইন্দিয় নিরপেক্ষ
গ্রাণা করে, সে বাজি ততই আত্মার
অন্তর্না কার্যা করে, সে বাজি ততই আত্মার
অন্তর্না নিরুপাধিক ভাব আপনার নিকট
এবং অন্যের নিকট সপ্রমাণ করে। যদি বল
যে, "কার্যা-কারণ্যায় জগতে স্বাধীনতা কিরূপে সন্তরে—ইয়া আমাকে বুঝাইয়া দেও,"
তবে তাহার উদ্ভব এই যে, ও-বিষ্যুটি বুঝা
যেমন সহজ—বুঝানো তেমন সহজ নহে।

যাহা বিছু আকাশে বিস্তৃত ও কালে পরিবর্ত্তমান, তাহা যেমন টি আমরা বৃঝি, তেননি-টি অনাকে বুঝাইয়া দিতে পারি; যে ব্যক্তি পর্মত দেখে নাই, তাহাকে পর্মত আঁকিয়া দেখাইতে পারি। মেরু প্র-নেশ—শেখানে ছয় মাদ ছয় মাদ ক-রিয়া রাত্রিদিনের জিলট্ পালট্ হয়, সেখান-কাৰ কোন অধিবাদী এখানকাল হাত্ৰি দিনের পর্যায় রভান্ত জিজ্ঞান। করিলে তা-হাকে এবটি রেখা টানিয়া বুঝাইয়া দেওয়া যাইতে পারে যে, এই রেখটিকে যদি, তো-মাদের যাথাদিক দিন বলিয়া ধরা যায় তবে ইহার১৮০ ভাগের অর্দ্ধেকটা আমাদের দিন ও অর্দ্ধেকটা আমাদের রাত্রি। বিভিন্ন আ-কাশ-ব্যাপী বস্তুর দৈর্ঘা প্রস্থ ও বেধের আয়তন বিভিন্ন প্রকার, এজনা দেই তিনের সেই সেই আয়তন নির্দেশ করিলেই জি-জ্ঞাস্থ ব্যক্তি সেই সেই বস্তুর ভাব স্থান্তম্ ক্রিভে পারে; অমুক পুক্রিণী দীর্ঘে বিশ ছাত, প্রস্থে দশ হাত, গভীরে জিশ হাত,

এই শ্রাটি শুনিবা-মাত্র, পুষ্করিণীটির আ-কৃতি কিন্তাস ব্যক্তির বোধায়ত হয়; বিভিন্ন কাল-ব্যাপী ঘটনার উৎপত্তি স্থিতি এবং পরিবর্ত্তন নির্দেশ করিয়া লোককে তাহার ভাব বুঝানো যাইতে পারে;—এভ্যুত্তে গদ্মের कनिका विक्रमिण रहा, माता किन जारा अमरे রূপ থাকে, রাত্রিতে তাহা মুগভিয়া ঘাল,— ইহা বলিবামার জিজ্ঞাস্বাক্তি ভাষার ভার বুঝিতে পারে। কিন্তু আহাত অধীনতার ना बांट्ड होर्चा, ना बांट्ड लह. ना बांट्ड বেধ, না আছে ভার-পরিক্রন, কাজেই তাহা আপন-মনে ব্ঝিলেও জনাকে বুঝাইবায় উপায় নাই: ৩েবে, কাফ-ছার। প্রকারান্তরে दक्षादना गाइटक भारत,—स्वाबीन कार्या हाता আত্মার সাধীনতা বৃকানো যাইতে পারে, "ফলেন প্রিচীরকে"। এ স্থ**লে কেছ বলিতে** পারেন গে, 'ফলেন পরিচীনতে" যদি সত্য . হয়,তবে তো মনুনা খালাদ মস্তক পরাধীন, — যাহারা উদ্বের জালার অস্থির ভাহাদের স্বানতা কোণায় ? ইহাৰ উত্তর এই যে, মনুষা মনেক অংশে প্রাধীন ইহা আমি অম্বীকার করি না ; কেমনি, সে যে কভক অংশে স্বাধীন ইয়। তুনিও অস্বাধার করিতে भार मां ; रक्नना कृषि निष्क्रहे कार्या-कारन তোমার নিজের স্বাধীন বিবেচনা-শক্তি জন্ম-ভব করিয়া থাক। খামি বলিতেছি ভার-**उ**वदर्श रिमालग्न चाट्ड, द्भि कनाक्नातीट माँ ए<sup>।</sup> देश नित्र एवं एवं एवं विकास কই কোথাও তে! হিমালয় দেখিতেছি না"; আমি বলিতেছি "মপুষ্যে স্বাধীনতা আছে," তুমি মনুষ্যের ভৌতিক অংশ লক্ষ্য করিয়া ৰলিতেছ "কই এখানে তো স্বাধীনতার নাম-গন্ধও দেখিতেছি না।" তোমাব জানা উ-চিত যে, ভারতবর্ষের উত্তর-প্রদেশেই ছিমা-निश्च-निक्निन-शादन्दन नदरः, मनुत्यात व्यासा-স্থিক প্রদেশেই স্বাধীনত।—ভৌতিক প্রদেশে

নহে: এবং দেই স্থানীনতাকে কার্যো সপ্র-মাণ করাতেই মনুমোর মনুষাত্ব।

মূল-কারণ আছেন এরিষয়ে কাহারো নংশয় থাকিতে পারে না; কেননা মূল-কারণ নাই অগচ শাখা কারণ আছে-ইহা শিরোনান্তি শিরঃগীড়ার নাায় অসম্ভব। তবে—আরোহী গুণালী ছারা যদি আমর। মূল-কারুল পর্যান্ত উটিতে চেত্রা করি—তা-ছার পূর্ব্বেই আমাদের জানা উচিত যে. लाशारक बामना कि इरल्डे क्रूक शा क्रेर्क भातित मा। षारवाशे लगामी षसूमारव নহে কিন্তু আৰম্মিক প্ৰশালী অনুসাৱে আ-মরা মূল কাবণের অন্তিত্ব উপদানি করি; সে প্রবালী এইরূপ; স্বাধীন আড়া পর্যাত্মাত চায়—যাহা দে চায় তাহা গে জ্**নশই পা**-ইতে থাকে—পরনাক্লাকে যতই পান্ন ততই আপনার ধ্রুব অবলহন পায়। এ কথাটির তাংপর্যা এই धा,--श्राधीन आँख्रात अञ्च কোন কিছুতেই আশা-পূৰ্ত্তি হইতে পাৱে না, यायीन जाजात छएनमा महान् छएनमा; ত্রকার দিন ভাষার নিকট এক মুহুর্ত্ত নয়, অনন্ত নাল নভোষওল তাহার কুদ্র একটি পিঞ্জরের আবরণও হ**ইতে পারে** না। পরি-পূর্ণ মহান্ পুরুগ—স্বাধীন আস্মার একমাত্র উপজাবিক।! পৃথিবীর ধূলিতে **লয়্ পাইবার** जना नवीत श्रेताटह,-श्राधीन जात्रा जारात जना रह नारे।—यादीन जाजात बाह्रना-শক্তি যেমন অগাধ—সেইরূপ ভাহার ক্রম্ মহান্—তাহার গতি অনন্ত। স্বীক্ত স্থাৎ ছাড়াইয়া **প্লরমান্তার** ক্রোড়ে গিয়া তবে দে তৃপ্তি লাভ করে, নিরালম পুরুষকে অব-লম্বন করিতে:পারিলে তরেই সে আপ্তকাম र्य।

যাহা এতকা প্ৰিয়া বাাখ্যাত হইল সমু-স্তই উপনিয়দের এই চুই প: জি শ্লোকের মধ্যে স্পান্ত রূপে ইন্সিত করা হইয়াছে ; ্রপ্রথম্ । পংক্তি ;—যতোবাডোনিবর্তুন্তে অপ্রাপা মনদা সহ।

দিতীয় পংক্তি ;—মানদং ব্ৰহ্মণো বি-দান্ন বিভেতি কৃতশ্চন।

প্রথম পংক্তির তাংপর্যা এই যে, আ-রোহী প্রণালী দারা আমরা পরব্যাকে কি-ছতেই নাগাল পাইতে পারি না— মনেব সহিত বাকা উপ্লকে না পাইয়া ভাষা হইতে নির্ভ হয়।

দিতীয় পংক্তির ভাৎপর্যা এই যে, আধানত্মিক প্রণালী অমুসাবে দ্থন আমরা ভাঁহার
নিরুপানিক খানন্দকে উপলব্ধি করি, তথন
আর আমাদের ভয় থাকে না। আত্মার অভাত্তর পিত ম্ক্তির রাজ্য অর্থা কার্য-শ্লালার
অতীত—তাহাই নিরুপাধিক আমনের ছার;
—সেইখানেই আমরা আনন্দ স্বন্ধ্রে অয়ত
আস্বাদন করিয়া মঙ্গভ্য হুইতে গরিত্রাণ
পাইতে পারি;—কিন্তু তাহার পূর্বের ধর্মনসাধন ছারা চিত্তকে বিষয়াস্তিত হুইতে
নির্মৃত্তি করা নিতাওই এয়েজন।

# ধর্মপ্রচারক ও মহাত্মা রামর্মোহন

শীত কর্ত্তক সংখ্যক ধর্ম প্রাক্ষণ শালাল আবুক্ত বাবু চক্রশেণর রহা প্রাক্ষণ যাজ দখনে আবে কথা বলিয়াছেন। তাহার প্রকৃতিবের অনী আমাদের বর্ত্তমান প্রস্তাবের অনী আমাদের বর্ত্তমান প্রস্তাবের মানা কিন্তু তিনি রামমোহন বিরু বৈরুপ ব্রিয়াছেন এবং তাহার যে ব্যাতিক আনেকেরই ভাম হইবে যে রামাদিন আবে একজন অবৈত্তমানী বৈদান্তিক আবে এক হিন্দুশাল্রের সক্রম প্রকার মতে বিরাম ভিলা। এই ভামটা বে করা আমাদের এই প্রস্তাবের উদ্দেশ্য

आगार्दत श्रथम कथा এই उथनकात चा লোকে রামযোহন রায়কে ব্ঝা হায় না। এখন খেরুপু জনসমাজ ৬০।৭০ বংসর পার্স্ব কিছু এরূপ ছিল না। তথন শিক্ষার ভারস্থা অতি শোচনীয়। প্রায় সাধারণেই আশি-কিত ছিল। ৰতকণ্ডলি লোক বিষয়কার্য্য উপযোগি চইবার জ্না সাহানারূপ পার্নীক ভাগা শিক্ষা করিত। আর অল্প সংখ্যা রো-ক্ষণ পণ্ডিত কেবল দিখি ব্যবস্থা দিবার জন্য ক ওকখানি নবা স্থাতি এবং রেছ কেছবা নৰা নাায়শাস্ত্ৰ পড়িবেন। কিন্তু লগাৰ শাস্ত্ৰ-দিয়ু মন্ত্ৰ করিলা উচ্চ শিক্ষা গ্ৰাপ্ত হইতেন ত্রাহ্মণ পশুভিদিশের মধ্যে এরপ লোক তথম বিবল ছিল। তংগানে রাম্মাইন রায়েব মহিত আধারণের সেরপে বিচার হইয়াচিল সেই সমস্ত আলোচনা করিলে ইহার অনে-কটা প্রমাণ পাওয়া যায়। এইরূপ জনসমাজ রামগোহন রায়ের যুদ্ধক্ষেত্র। তাঁহার লক্ষ ক্রিয়াকাণ্ড উচ্ছেদ করিয়া একে ধরবাদ ভাতিষ্ঠা ক্রেন। কিন্তু শাস্ত্রবিচার না করিলে ভাহার पंचीहे निष्ठि रश ना। अरे छना जिनि अर्रे অগাধ শাস্ত্রদিন্ধ মন্থন করিতে প্রবৃত্ত হন। উ।হার ভার্ধনি লক্ষ্য,একেশ্বরবাদ স্থাপন। এই প্রদক্ষে তিনি তর্কৈ মুখে প্রতিপোষক বাচ্য শাস্ত্রের মধ্যে য়েখানে যাহা পাই-য়াহেন তাহাই উদ্ধার ক্রিয়াছেন। কিন্তু দেই সমস্ত শাস্ত্রীয় বচ**র্ন পাঠমাতেই বোধ** হুইবে যে হিন্দুশান্তের সকল কথাতেই তিনি বিশাস করিতেন। বাস্তব তাহা নহে। বে সমস্ত শাস্ত্রীয় প্রমাণ একেইরপর প্রতি-পক্ষের অবগতির অন্য তাহা উদ্ভূত ক্রিতে পিয়া তাহার দূপে এমন অনেক নীজ্ঞায় কী বাহির করিয়াছেন যে গুলি পড়িলে ক্টুই বোধ ইয়া-বিনি জীব ত্রালৈর একত্ব মানি-(इन। शाहीन करहार शक्ष्यकापि नकन

ক্ষিতেন। কিন্তু বস্তুত ভাহাই কি ঠিক্। अर्देश अक्षी कथा वला वित्नय आवनाक। ব্রন ভাঁহার সহিত সক্ষিমাধারণের ঘোরতর শালীয় বিচার হয় তখন তিনি আপনাকে কুত্রাপি ব্যক্ত করেন নাই। যা কিছু ব্যক্ত ্রকরিয়াছেন সমস্তই শা**ন্ত্র। এইগুলি** ধরিয়া বিচার করিলে তাঁহাকে অবশাই ছোর বৈদা-खिक त्याव इटेरव। किख मगरा मगरा छैं।-হার আপনাকে ব্যক্ত করা আবশকে হটয়া-ছিল ৷ ভাহা আলোচনা করিলে তিনি যে কি ছি**লেন তাহা বেশ** বুঝিতে পারা যায়। তিনি লউ বেণ্টিকের সময় যথন শিক্ষা-সমিতিকে প্ৰতি লিখেন তাহাতে স্পষ্টই বলি-ग्नाटकन दिनास्त मर्गन अप्तरभाव ग्रत्थे अपन-ভাঁহার অভিপায় এই কার করিয়াছে। যাহাতে সংলারের প্রতি উনাদীনা আনে সেখর্মা জনমুমাজের উপযোগি নহে কিন্তু যে ধর্ম লোকের কর্মাঠ ভাব বর্দ্ধিত করিবে ভাহাই নামাজিক धर्ज रुउरा जावनाक। একা দেশ বেদান্ত ধর্ম পত্রে পত্রে ছত্রে ছবে विनिष्ठिष्ट्रम (कर्टे कारात नय, नक्नेटे মায়া, এই যে জগৎ দেখিতেছ ইহারও वास्त्रकं मखा नारे। विनारखन्न এই সমस्त्र ভাব লোকের অস্থিমজ্জায় প্রবেশ করিলে সামান্য উদরাল সংগ্রহের নিমিত্ত কি কাহারও প্রস্তৃতি হয় ? এখন দেখ রাম-যোহন রায়ের এই পত্রথানি আলোচনা कतिरन क्येनरे तार्ष एत ना त्य जिनि देवमा-স্তিক ছিলেন। ভবে তুমি ৰলিতে পার যদি ভিনি তাহাই না হইলেন তবে বিচার-মুখে প্নঃপুনঃ বেদাছবাকা উদ্বৃত করিয়াছের কেন। আমর ইতিপূর্কে বলিয়াছ এবন কার আলোকে রামমোহন রায়কে বিচার कतिरल हिल्द न। তিনি যে নময়ে ক্ষমিয়া ছিলেন তখন যদিও শাস্ত্রের গভীর चारलाच्ना मुख्यात रहेताहिल किन्छ न। त्यते

উপৰ লোকের প্ৰভা বিভ্যাক কুত হয় नाहे। उपन गृह्ह गृह्ह शुक्र क्लान लाह পূজিত হ**ইত। আ**র এত**দেশে বেঁদান্তের** নাায় একেশ্বরপ্রতিপাদক দিতীয় গ্রন্থ নাইন (मरे जना क्रांगरमारन तात्र (मार्केत नर्दक) বিশাস হইবার জনা তাহাই অবলম্বন করিয়া একেবর্বাদ প্রচার করেন। ইহার সংক্র অবশ্য এমন সকল বৈদান্তিক মত উদ্ধৃত করিয়া ছিলেন যেগুলি বাদ দিয়া বলা ভাঁচার পক্ষে কালোচিত নয় বলিয়া বিবেচিত হইয়া-ছিল। কিন্তু তিনি তজ্জন্য কিছুমাত্র ইতস্ত উ করেন নাই। ভাঁছার প্রধান লক্ষ্য যেন তেক প্রকারেণ কর্মকাণ্ডের উচ্ছেদ ও একেশ্বরবাদ প্রচার। তিনি তাহাই করিয়াছিলেন। বাল্ডব তিনি বৈদান্তিক নন এবং শাস্ত্রামুদারে কন্মীও নন।

এখনে আর একটু কথা বলি ৷ কি ধর্ম-সংস্কারক কি স্থাজসংস্কারক সকলেরই সং-স্কার কার্য্যে দেশকালের অপেকা রাখা আব-শাক। নচেৎ তিনি কৃতকার্য্য হুটতে পা-त्तन ना। ७४न द्विषा प्रक विगरमाहन রায়ের সময় জনস্মা**েছর অ**বস্থাকি**রপ**়। কেবল অজ্ঞানতার অন্ধ্রকার ও শারে কেবল একটা অন্ধ ভজি 🎏 নেই অবস্থায় রাম-মোহন নায় যদি শাল্পের কোন কোন অংশ বাদলাদ দিয়া নিজের হুদয়াসুগত ুও লান ন্ত্ৰের মন্দ্রীসুগত কথা ভৰ্মুখে স্নানিট্ডেন जारा रहेकी लाटक जारा अस्त कतिएक भावित मा। এই बना जिनि मिरक যান নাই তিনি প্রমাণকরে এমন একটি লোক ভূলিয়াছেন হয়ত স্থানায় ভূটো-शारन खानाद्धा होट्ड मी लाह एक दर्ब ति देव पिका प्रकृति के कारतत स्था करे शाक महत्रकोर के के के किए रहे के अब नगाटक के छारकातिक बरेका स्वास वृक्ति हेराटड किंदूरे त्यात पूर्व देश विकास

,ক্রিয়কাঞ্টিয়ের করিয়া একেধরকান প্রচার। . खामात छत्मना। अच्हान त्वनास वा धना (कान भाक्तीय 'श्राम 'श्रोदिक्तारिक आर्त्रके ্থাকিলেও আমার অভিপোচ একেশ্যপ্রতিক পাদক কথা ভাষার মর্বেমবের রহি।ছে। ভার আমার বিধান ওদ্ধারটো লোকের টোতনা সম্পাদন করিবন বাস্থাসন त्रश्च अध् বিশ্বাস 19 আল'বদু সেই লোৱ এককাৰ্য্য स्थादन (वर्षानु-ता अ होता कात्स्यत्य शहरात करिया यान्। अथम भः - अटन्त कचनते এট সেবে কোন উপায়ে হউক, জনচন,জিকে ग्राफ्ती करतान भागप्रमा गर्भा । शतनार्धी मध सारता वर्कता है। होते भारकामा नकन मुक्त ক্রিম্বার্থির অভিপ্রায়কে বিশ্বরূপে শুদ नेत्यता मध्यति-कामः जित्रचान अदेशानात्री-**তেই হই**য়া আসিতেতে। ব্যুষ্টোটন গ্ৰেষ্ প্রবন্ধী ধর্মাস ক্ষানি প্রধান আল্লান, মহার । ্তিনি কে গ্রিক্টেম যে প্রাক্ষার্য গ্রন্থ প্রস্থান কৃরিয়াতেল এ**বং** ভাষান জ্ঞান ও **কীব**ন রোগ্য भागात्वत वरण त्य लितर्हन भागात्ह ীচ<u>ন্দিশ্</u>বরুষার ভাষা আলোচনা বারিলারন **'শিলে' এই বাকোর** সংগঠ জন্মান প্রটিরেন। याक्, क्रामरमाध्न ताप्र त्य को उनानी ছেলেন না ভাষার প্রমাণ অনৈক আছে। , এ শ্ব প্রস্তারে কুঁছার সমাবেশ হইজে •পারে না। তবে একটা কথা বলি। জীয व्यक्तात अकश्व-भंदूङ तिशाम शाकिद्रान जिला म **चें शहर के किए हो दिंद आहे. यान था एक ना ।** विश्व রামনোহ্ম রায় আক্রমাজে অক্ষের উপাধনা ুপ্রতিভাকরিয়াছেন টি তাঁহার সময় বেদ-বারেক্ট ক্রীয়রের জ্বান্তি পাঠ হইত, গায়ত্রী-মন্ত্রে ভাষার ধ্যান হইত এবং বৈরাগ্য সূচক সঙ্গীতে <sup>জ</sup>তাহার প্রতিন্দির **প্র**তি বর্দিত করা শহস্ত। যদি জীর অন্দের একত্বে তাঁহার বিখাসই ছিল তত্ত্বে ব্রাক্ষসমাজের এই বিস্-ষান্ত্রিপদীরে আবার অবতারণা কেন।

ভাল, আরও একট্ট দিক দিয়। দেখ। লমেমেছন লাল মখুন খ্রিটান্দের ক্রিটত-মহগ্রাম করিখা ভিলেন তখন বাইবল ভাগের অবলম্বন ছিল। তবে তিনি কি পিটান হ भा छ। महा। जिनि दहितल निहा (मर्शहिहा-জেন এক দ্বীগন্ধই সমুসেয়ে ভানকর্ত্ত। ভাত্তিত দিনীর আরে কিছুই নাই। ভিনি বেদান্ত ও दार्वतकत मध्य दकेतिन जनभम रानिश মুদলযান মনাজে প্রবেশ করিয়া ছিলেন। किस्तु जिल्ला दोन्द्र तिक कि अवस्थाद्रमत केलागुक মুঘল্যান গ্লালা না না লামান আকাৰ यात संभात क्षणांचा भवन भवन 医阿斯内氏畸 জনসমাধে একেশ্বরবাস এ,তিই। করা। নকল ধর্মানারে এই ছবি গুলাভ পচ্ছা রহি**য়াজে ু**ুভাগ্র ৩৫গন ১৯টা উপরে ভথাক্তালৰ স্থাসনিত কান্ত পাৰে স্থাৰ লোচে সভা ধর্মী প্রহণ কলিলে দলং ২ইবে ভান সেই ধন্মের **আ**লোকে বাহাৰ চন্দে দ্যস্তৃত্ই উল্লেখ্ড ইট্ডে গাল**ে**ব। ভাষন কোনর পা বন্ধভাব আনে ভাষার উন্ন িত্র পথে কল্টক দিতে পারিকে না।

একণে আমর। চন্দ্রশেষর বাবুকে দেখাইব ব্রাজধর্মের শক্তি কি। উপরে শ্লেইই ব্রাজধর্মের শক্তি কি। উপরে শ্লেইই ব্রাজধর্মের শক্তি কি। উপরে শ্লেমান্তর হংক্তি একেশ্রবাদ উদ্ধান করিয়াছেন। ইং ছিরা কি বোধ হইলাং যে সত্য জন্মা-ধারণ সেই বিশ্ববাপেক সভ্যের উপর এই আলাধর্ম প্রাংশ্তি। যাহা দেশ ও কালের অনায়ক্ত অংচ সকল দেশ ও সকল কালে সমান দীজিতে প্রকাশ পায় তাহাই সতা। বৌল্যধর্ম দেই অটল ভিত্তির উপর প্রাণই হউক কোরাণই হউক যে কোন বর্মণ্ডেছ হইতে এই শিশ্বজনীন সত্য উদ্ধৃত হইলে তাহাই আলামুর্মা। কিন্তু দেশভেদে ইহার বাহা পরিচ্ছদ ভিমন্ত্রপ হওয়া আবশ্যক। বলিতে

कि प्रदेश है। इस्टेन इनिट्य ना। यदन কর হিন্দুখানে আমার জন্ম আমি জাতিতে **হিন্দু** তুমি মদি বাইবল দিয়া আমার নিক্ট সভাটি বুখাইতে চাও সভাপ্রিয়তা খাৰিলেও ভদারা আমার উপকার হইবে 🏰 ি ফারণ বিশ্বজ্ঞনীন সভা আমার নিকট গৈ পারচ্ছদে গাইল তালা আমার পুরুষ-পরিম্পারার । অপরিচিত। कार हो সকল/কথা ও এমন সকল ভাব আছে তাহা অবশ্য সত্যের অগ্নিপরাক্ষায় টেঁকি-য়াছে কিন্তু ডোহার পরিজদ আখার অপ-ক্রিচিছ বলিয়া তাহা আমার প্রাণকে স্পর্ণ করিতে পারিল না। স্থতরাং তদ্ধার আমার . दिशान कोषर इहेन ना। किस गाई तमह **দৈতা আমাদের জাত**ার ধর্ম প্রত্যের মধ্য দিলা অফিল অমনি তাহা আমার প্রাণকে স্পর্শ **করিশ্নি) কার4** জাতীয় কথা ও জাতীয় ভার **অামাদের প্রথবর**স্পরায় পরিচিত। ফল কথা সভাট কেবল শিক্ষার জন্য নয় ইহা **मिनदा** नंग्रहोत श्रानिवाद जना। उन्ने विश जाभाव थानटक स्थान ना कटव ভুষামি কোনু বলৈ তাহাকে জীবনের সহিত মি করিব। এই প্রন্য আদি ভাক্ষম্যাত ব্রাহাধীর প্রছের। এত আদর। **७**हे गम् অষিব। আ আমাদের সভা সাধনের অনুকুল। क्रम्या वार् जनामा नगाटकत पृत्रमा पिश्री ग्रेमिशारक्ष काटन आपि खाक्षमशारक अ दवल्यों हों अ स्थितादका श्वानत शाकिरव ना। িশ্ব আনরা মুক্তকঠে বালতেছি হিন্দুর क कि । हिन्द कार्त शृहे हरेशा एक कान জাবিত থাকিব, জারম পুরুষার্থ মুলি যদি আমানের প্রার্থনীয় হয় তবে এই ভারাধর্ম-প্রছে নিব্দ বেদ্যাকা 🛊 ঝাযবাকো কদাচ जीमादम् अनोमंत्र रहेद्यं ना । ज्यात हस्त-त्नियत वात् यपि श्रीन त्य, शूर्वकात्नत्र मन्द्र

বড় দশ্রের বার পর-বিরোধী ত্র্ন বারা সুবাদ সমগ্র জ্বান-কাও, আবার জানিকা ভাষা, ভারতক লাকর ভাষা, রামালুজের ভাষা, ও বৈক্ষর সম্প্রদায়দিশের ভাষা, আবার কোমর বাঁথিয়া রণ্যনে স্বতি ভাষা, ভাষা, আবার কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষ, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষ, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষ, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষা, কালিকা ভাষ

্ "এতিবিভিন্না স্বতরোধিভিন্ন নাসৌ ম্নিইস্ট স্বতং ন ভিন্নং।

#### ব্রাগ্য-ধর্ম-নীতি।

८८५२ **अशा**शः। विभ्यस्य।

#### চহুৰ্থ প্ৰস্তাব।

নোহ। "

খানাদিগের আত্মা এই অফিচ্ছাময় শরীরে বদ্ধ থাকা নিমিত্ত যে সকল প্রী-র্থিব বস্তুতে আমাদিগৈর অনুরাণের উৎ-পত্তি হয় দেই অনুৱাগ নিয়মিত করিয়া, ধর্মানুসীরে তাহার বাবহার করিয়। আমর। भी मात्र याखा निन्दीह कतित, हेहाहे जेपद्यत অভিপ্রায়। কিন্তু ঈখরের এই ভাতিপ্রায় উল্লেখ্যন করিয়া আমরা যথন কোন্ন পার্থিব ৰুৱে বা বিষয়ের প্রতি অষ্ণা ও অপ্রিমিত असूताश श्रामनि कति, त्महे असूत्रिक्षत जा-তিশব্যে অন্ত হইয়। পিছি ধন্ কর্তব্য-क्रवा स्वानगुना हहे, उपन आमा दमहे প্রর-প্রদত্ত অ**নু**রাগকে মোছে পরিবন্ধ করিয়া কেলি। পার্থিক স্থাবের প্রতিক্ষেত্র न्त्रत मुद्दतीय नट्ट, किन्छ रगरे च प्रताल कर রিনিত হইয়া পাড়িলে ভাহা দারা দারা



ইয়া বখন আমরা ধর্মের নিয়ম 🐉 জবন ুক্রি তথন আনীয়া স্থা-ভোগ-লাল্যা-জনিত साइ-भारतम इरेशी जूमिना अल इरे। धन र्मन्भारमत - প্রভি জমুরীর দ্বণীয় নহে। কিন্তু দেই অন্তরাগ অত্যন্ত গড়িতাকার খার্ণ -করিলৈ তাহ। বার। - ক্লারণে পরিচালিত **ছইয়া ফাষরা যথন অ**পশ্লাচরন কবি তথন ভাষরা ধন-দ**ম্পার-লাল**দা-জীনত যোহ্পর-বশ হইয়। শোচনার তুপ**্**তগ্র এই। জা পুত্র-পরিবার প্রভুতির প্রতি অনুবাগ-দূষ-নায় নছে; কিন্তু যখন আমরা সেই অনু-রাগে আমাদিগকে এতদুর আগদ হইতে বি**≷েষ** তাহার জনা আমনা আমাদিনের আত্মার মধলের প্রতি দৃষ্টিনূনা হইর। পড়ি ওখন **স্থা**য়র সাংসারিক সম্বন্ধদিত সোহ পরবশ হইরা আন্তর্গান্ধক ভাষেত্র প্রারথ হই। পার্থিব 👺।বনের প্রতি অনুরাগ দুষ-नोत्र नटर, कि हो तेमरे अनु मारण यथन जानदा এতদুর আবন १२ । ए ७ जना अनाम ७ ४ मी-ুবিরোধা কার্যো প্রস্তু হই তথন পার্থিব স্বারনের প্রতি অনুরাগ-জানত নোহাবিঙ্ক হ্ইয়া আনন্ধা আনাদিগের পার্যাথিক ইও নাশ করিয়া থাকি। মেত্র পাথিব স্কুথ, পার্থির সন্তব্ধ, পার্থিব ধ্রুদ্রাপাদ, ও এই পা থিব জাবনের প্রাতি ঈবর-প্রদত্ত অনুরাহ্মের বিহত আকার, শুউহার অপ্রাবহার ত বাভিচার। অভ এব এই মোইরিপু দর্বভো-ভাবে পরিত্যক্রা

शाबित स्थ, देन मन्त्राप, मन्द्रत उ जीव-নের প্রতি ই বর-প্রদত্ত ধর্মানাসন যে অকর।গ তাহা আমাদিশের মণলের কারণ, কিন্তু ছ-হার বিক্ত আকার বে মোহরিপু তাহ। यागानित्व नाना सम्बन्ध ७ यनत्थत मूल १ मिर्दे वरीक के लिया मिन्स मकल श्राकात कितिए हरेराक। बाकार व वाल्य वाल्य करिय ज्यानक भारत क्षेत्रक स्रेटक भारतना त्य रेकित अर्थ-वामना-कानीक त्यादश्व अर्थ न का

সে পরদার ্ব্রাভিচার গ্রন্থ ভিত্তি ঘোর পার্টে পতিত হয়; যে ধন্য স্পদ্সস্থোগের किन्द्र भारहत वनीकृष्ठ इस, स्त व्यवकना, চৌৰ্যা হাত্ত প্ৰভৃতি অধ্ৰুশ্মাচনণ কৰে, ষে সাংস্থারিক সম্বন্ধের ভাতি **অনু**রাগজীনত মোহে অভিভূত হয় দে ইশ্বর ও প্রকাল বিস্মৃতি রূপ মহাপা৻েপ নিমগ্ন হয় ; যে 🏰 র্থিব জাবনের প্রতি অনুরাগঞ্জনিত মোহে আক্রান্ত হয় দে আগদুগ্রিক জাবুনের উৎকর্ষ मावन करिक् मक्यम है। । रैम। इ-भत-বশ হইলে মানুষ যে সঞ্জ পালে পভিত হয় তথিতে যে কেবল তাখার আবাল্পিচ অবনতি ও তুৰ্গতি নাৰিত হয় ভাৱা নীহে, আব্যান্ত্রিক অবনতি 🖢 ুণ্ডিল জ্বাধ্যন্তাবী ফল স্থান্ত থে শারীরিক ও মান্সিক অনুনতি ও তুর্গবি, যুটে সে ভাগরিও ভাগী হয়। 🤆 সংক্ষেপতঃ, মোইরিপুর জ্বীন হবুলে মানু-যের সর্বাঙ্গান ঘোরতর অমাধন সাধিত -হইয়া থাকে 🌤

ত্তাক্মার মহান উপদেশ এই যে পা-र्थित स्थ, शार्थिव धनमण्यान, शास्त्रक्षेत्रक छ। পাথিব জাবনের প্রতি ইবরের উদ্দেশ্য অমু-সারে যেরপ ধর্মানত অতু নাগ এদর্শন করা উচিত, যেরূপ নিয়ন্তিত প্রানিচ রক্ষা করা কর্ত্তব্য, সেইরূপু **অসু**রাগ সেইরূপ প্রীতি র**ক্ষা** কারয়। চালবেক, ক**খন সেই অনুরাগ্নকে অপ**-রিমিত আকার ধারণ করিতে দিবেক না, কথন ভাষােকে অনুমান্তপে চালিত ক্রিবে না, কখন তাহাঁর অপব্যবহার কার্যা তাহাুকে মোহে পরিণত করিয়া ফেলিবেক নাঃুমাদ্দী ভূমি তাহা কর তাহা হট্টুতে তোমটিক ধর্মা চুতে এবং পাৰতভা ও লোদাৰ্যভেষ্ট হুইয়া হহলোকে ও প্রলোকে ছঃমহ মন্তাপুতভা্গ

"बब निष्ठाबुका सकार त्यारोड व्यक्तिमान त रीवर्यी होनार्वः अन्याहरूका युकारक ।

হে "যে হাজি মোহ হেড় হিও বাকা ক্ৰীক্ষ কো দীৰ্ঘুনী হট্য়া প্ৰুষাৰ্থ হুই ভুট হয় এবং পশ্চাৎ সন্তাপে পতিত **र**ग्न ।

ত্রীকা যিনি তিনি সকল পাথিব বস্ত ও বিষয়ের প্রতি ঈশর-প্রদত্ত অনুরাগ স্যত্ত্রে ্রিক্সা করিয়া চলেন, তিন কখন ভাগা মোহে পরিণত করিয়া ফেলেন না। তিনি পার্থিব মুখ ও ধন সম্পদের তানুরাগী হারেন, কিন্তু ভাহাদিশের জন্য তিনি কখন ধর্ম্বের পথ জাগ করেন না, তিনি আত্মীয় বন্ধু পরি-অনের প্রতি অনুরক্ত হয়েন, কিন্তু সেই অনুরালে অন্ধ হইয়া কোন অনাায় বা অ-ধর্মাচরণ কবেন না; তিনি পার্থিব জীবনের গুতি অমুরাগ রক্ষা করেন, বিষ্ণু সে অমু-রাগে অনুরাগী হইয়া আধ্যাত্মিক জীবনের উৎকর্ষ সাধন করিতে ভুলিয়া যান না। তিনি পৃথিবীতে থাকেন, কিন্তু পৃথিবীর বিছু-তেই তিনি মোছ-মুগ্ধ হয়েন না; পৃথিবীর স্কল বিষয়ের যেরপে নখন ও আপাত-মনোরম এক্তি তাহা তিনি ঠিক্ বুঝিতে পারেন, অতএব তাহাদিগের বাহা চাক্-চিকা ও শোভায় মোহান্ধ হইয়া ভিনি কখন জ্ঞান হারা**ন না। যত**টুকু পৃথিবীর হওয়া আবশাক তিনি তভটুকু পৃথিবীর ইইয়া ্র আধ্যাগ্রিক জগতের লোক হয়েন। ত্রোহ্মধর্ম্ম প্রাহণ করিয়া, ত্রাক্ষা বলিয়া স্থগতের নিকট পরি-**দয় দিয়। যি ন এইরূপে মোহরিপুকে বশ** ক্রিট্রে ন। পারেন, তিনি আক্ষধর্ম্মের ও তাক্ষ नारमद अवगानना करहन, जिनि क्थन ८३७ 🗱 আক্ষ নামের উপযুক্ত হইতে পারেম না।

দৃঢ় নির্ভিত্ন দৃষ্ট নিষ্ঠার সহিত তোমাকেই সজের কার্যন্ত্র করিতে হইৰে, সভা ভোমার অংসরৰ করিবে ন व्यामक्रीव्यदन्त्र सम्बद्धा महत्त्व क्षा क्षा क्षा क्षा है। হইল সে **কেবল আ**দি প্রচান করিলাম বলিয়া। সীভারে <u>लाजि कामना कारनक समरत मूलिकाना कृतिका शांकि 🐠 ।</u> আমরা তাহাকে আখাদ দিলা বলি, ভোমার কিছু ভয় নাই, আমি ভোমাফে থাড়া করিয়া ত্লিব। 🚧 তোর যেন রাস্তবিক কোন দাওয়া নার্মী তাই আমার অন্তর্গ্রহের উপুরের সে দাবী করিতে আনিয়াছে, এবং আমি ভারাজে আমার মহৎ আএন দিয়া বেশ কুতারী क तिलामि अमेर इनरशत मत्या भवदा स्थिमान अक्छा द করিলাম। এ**ইরূপে** সভোর চেমে বড় ইইতে গিয়া আমরা সভাবে দুরী করিয়া দিই, মিথাকে আছ্লান করিয়া আনি। আমরা ভূলিয়া যাই (ম, মৃতা সমস্ত জগতের আত্রয়ন্থন, এজনা সভা কোন বাজিবিশৈবের অনুগ্রহ বা তোষামোদের বশ নঙে। স্থাসার স্বিধামত আশ্মি যদি সভাকে বাকাইতে পারিভাষ ত সভা কি সহজ্ঞ ১ইতে পারিত। কিন্তু আমি সভোর কাছে বাঁকিয়া ভালেমা ধাইতে পারি, সভা তাহার **অটল স**রক **ভূমার** মহিমায় দাড়াইয়া থাকে—সভা আমার মূধ তাকাইলে: চলে না, কারণ সকলেই ভাষার মুখ ভাকাইয়া আছে।

এই জনাই সভাের এত বল! সভা আমার প্রতি নিভর করেনা বলিয়াই আন্দ্রন্তের প্রতিক্র ক্রিতে পারি। সভাকে বদি, আবশাক্ষম বাকান যাইতে পারিত ভবে আমরা দিধা থাকিছাম কি করিয়া। " সতা যদি কথায় <u>কথায় স্থান পরিবর্তন</u> কার্ড **ভবে** আমরা দাঁড়াইতাম কিদের উপরে! সতঃ যদি না থাকে তবে আমরা আছি কে বলিল !

আমরা যথন মিথ্যাপথে চালা তংন আমরা ছবলৈ হইয়া পড়ি **এই বস্তা। তখন আঁ**মরা আস্ত**্তা। করি** ি ভখন আমরা একেবারে আনাদের মূলে আঘাত করি। আমরা বাহায় উপরে দাঁড়াইটা আছে ভানাকেই সন্মেই করিয়া বদি। যতথানি অন্যাদের মিখ্যা অভ্যাস হয়। ততথানি আমরা লুগু হইটা যাই। সত্তোর <mark>্পেডাৰে</mark> আনরা বাড়িতে থাকি, নিথাক বলে আমরা অমিরা व्यानिक कारण मठाराष्ट्राव मीषांचा त्माणा नीहें। দেশ, জাতি, সম্প্ৰদায়, আমাপৰ অভতি বে সকল ৰাজ ধানকে আমুরা পাধাণ প্রাচীর মনে ক্রিয়া নিশ্চেই ছিলাম, সহনা সভোৱ বিহাজানোকে বৈথি ভাহার। त्काशाक नाहे। क्वाहाक नाहा करनाहा क्वाहाता. व्यभीय मकाबादबाक काश्वीतक गांभाना, बानुकात उन्तरह बाक्टरब क्यांनिव जिल्ला कारावा दकरने क्यारे में कार नका विकास के के के मध्यत्म आवश्रक मात्र विकास महिला के विकास महिला महिला के विकास महिला के विकास

कहे दृश्य संगारिक स्विकांत शहरिक विश्विक कितिएक ठाहिरिकार । भरिकांत स्वास्त्र स्वास्त्र विश्वित वार्षित होशा स्वित्र स्वास्त्र स्वास्

ইহার প্রনাণ কি আমবা প্রতিদিন দেখিতে পাই না ? আমলা বিপাচাবীর দল আমরা প্রতিনিন প্রতি भूख कारक कि मान कवि मा सा, नामुन्तिक छावसमा বছুটিত পৃথিবাৰ কাছ চান্তত পাৱে না, খাটি সভা ব্যবহার কেডাবে পড়িতে যত ভাল গুনাব ক'জের বেলায় হুত ভাল ওবাৰ ছুৱ না। অধীং যে নিবংমর উপর সমস্ত অগৃৎ নিডয়ে পনিছর করিয়া আছে, সে নিহমের উঠির আমি মিডর কলিছে থাবি মৃা; মনে হয় আমারি ভার পে সামলাইতে প্রান্ত লাল চল ত্যা ভাষাতে গাখী রহিচাচে কিন্তু মানাকে দে ধারণ কাঁচচে পারিবে মা, আমাকে সে বিনাধের পাপ নিক্ষেপ ক্ষানিকে। তার চাদন নিগাবে আঁদা বচনা ক্রিয়া আমরা শভাবে অমনক মাডেন, করিবা ভারুয়াছি লে, আমাদের भाग ज्ल, मृत्तः कावितीन अनाव-मृत्य व्ह नगाउन्ह গোড়ার গ্লুদু। এই জত্ব ক্ষ্রোলের থাবর হব 🕫 ८कत्व **रकोन्ते क**तियाह वि**'क्लिंड** इदेशव। टकोन्यहर একমাত্র এপার। ভাল গালা মনে করে আমি কৌশল করিয়া থাকিব, ভাড়তে ক্রান্ত্র ইয়া থাকা ক্রান कारसंत्र नरह ; अंडि वरत आमीत्र विकड़ साहे, त्कान ध्यकात कभी कैतिया नीयां पा किन्छ इटेट्ट्र हुई आ বলে মাটকে নিভান্ত মাট জ্ঞান করিয়া আমি আঁপিনা-इंहे जिभारत, मांशाहेत; त्य कम त्कोमत्मत्र कथा नय, কিন্ত অবশেৰে যে আশ্ৰয় ছাড্মিয়া তাহাল লক্ষ্যের সেই আশ্রয়ের উপরে পড়িকাই ভারাদের অভি চুর্ হইয়া শায়।

মন্ত্রসমাজের এই ক্ষতি বৃহত্ব জাটল মিল্লা ব্যব্ত লাবের মধ্যে পাড়রা সভাকে অবলম্বন, করা আমাদের পকে কি কঠিন বাপের হিয়া শড়িয়াছে। চক্ষের উপরে চকুদিক হইতে গুলার্টি হইতে জে—আমরা সভাকে দেখিব কি করিয়াণ অক্ষরা জন্মান্থিই গুটিপোকার মত সামানিক গুটির মধ্যে আছেয়। অতি দীর্ঘ-পুরাতন কুরু ম্যাম্থাতি দেই গুটি রচিত। সভ্যের অপেকা প্রথাকে আমরা অধিক সভা বলিয়া জানি। প্রথা আমাদের চকু আছেয় ক্রিয়া ধরিয়াছে, আমাদের

हीं एक शास मृद्धके वैतिबाटक, वनाश्र प्रका**रिगटक**ु **্রিস্থা কবিতে নিষেধ করিতেছে, পাছে** ভালাকে আ**তি** জিম ক্রিয়া আধরা সভ্ত দেখিতে পাই -বাংলকাল स्टेंट आमानिशतक मिथा मान, मिथा, मगानात काट्ड প্রানেত করিতেছে; নিখ্যা কথন, নিখ্যাচরণ আমানের কর্তবোর মত করিয়া শিক্ষ দিতেছে !ু আননী বুলি এক, করি এক; জানি এক, মানি এক; — স্বায়ুর বিকার পটিলে যেমন আমরা ইচ্ছা কবি এক চপ অগচ আমাদের অঞ্জনজনে চালিট ইল- ,ত্যন বিজ্ঞ শিক্ষায় আমর। সভ্যেব আলেশ বলি এক্লাং, অপচ মিথার বশে পড়িয়া অনাঝ্পে চালিত ২ই। প্রণা বলে অন্যায়াচরণ কর পাপাচরণু কর ভাষাতে গনি নাই, किन्द आभाव विकन्नाहर्वी कांत्र मा, आया इट्टा **্রামার মানহানি চলবে, জোমার মুগ্রেল নঠ চলবে—ুর** অতি পুৰাতন মান, অতি পুৰ্বাতন ম বাবে, সভা বহেরি कार्ष्ट्र किहूर नय। अहे ४० मध्य कला कला व ना ना त्या মাৰে মা<u>ৰে</u> মহৎলোকেৰা অন্যান নান লবলদা कृतभूषि विवस्त अथा, मनाव्यत मन्य विकास স্বলী ছিল্ল কলিয়া বাহিব তথলা আঁপেন, ভাগদের সঙ্গৈ সংক্ষাত শত কাবোকনা স্বান বাভ করে। কেবল প্রাথীর প্রিয় সন্তান্ত্রকুর, বছর: প্রথারের আলিন্সনে পড়িয়া দত্ শৃজ্ঞানের উপরে নাইচেন প্রেম জান্মায়ে বিনধ জনস্ত মূক কাক্ষীক ধাহারা বিভীবিকার শ্রমণ কেন্দ্রৈ ডালারাই ভালার ভগ্ন কায়া**লাচীরের পাশে ব**লিরাছির শৃথ্য বংক লইঘা ম্জিলাতাকে গালি 🗤 ও ভলাবশেষের ৪ ল জুপের মব্ব্যে পুনুমরার **আপনা**ও অন্তক্ত্রে ব্যাস্থ্য খন্ন করিতে থাকে।

এই সমাজ ধাঁদার মধ্যে পজিলা আনি লাত তাব বিকে দুঁটি জির রাখিতে চাই। যেমন নান, জাল বিচাৰত হইলেও চুম্বক-শলাকা দবল ভাবে উত্তবের বিকে মুখ রাক্ষে সত্যের দহিত আয়ার যে একটি দরল চুম্বকা-কর্ম যোগ আছে, সেইটি চির্দিন অক্স্তাবে বেন রক্ষা করিতে পারি! ভয় হয় পাছে সংসীরের দহল রিখার ভোবিলাম সংস্পর্শে আয়ার সেই সহল চুম্বকশিকি মুই হিইয়া যার! যেন এই বৃঢ় পণ থাকে যে, সত্যানুবাসের প্রভাবে চারিবিকের জাটলভা সকল ছিল করিবা নুমা-জকে সরল করিতে হইবে। সংশ্য ভয় ভারনা অবিশাদ দ্র করিবাদিরা গুরুশকে ধরিত কবিতে হইবে।

শ্বামাণের জাতি বেমন সত্যকে অবহুরন করে এমন আর কোন জাতি কবে কি না জানি না । আমরা মিধ্যাকে মিধ্যা বলিয়া অন্তব্ করি না। মিগ্যা

ভাষী আর ভনিতে পাইনা, তাহা নিঃশবতারই আকার ধারণ করে। এই কারণে পুরাতন সভা সকলে া ভূমিতে পায় না, এই কারণে পুনাতন সভা সকলে বলিতে পারে ন। মধাপুরুষেবাট পুরাতর সভা ব-লিতে পারেন-াম গও চৈতনোবাই প্রাতন সতা ব-निट्छ क्षारबद्ध अला डाइरतत काट्ड वित्रमिन न्डन পাকে করিশ সভ্য তাঁছাদের মুগার্থ প্রিরপন। আমরা যাহাকে ভাল পাদি যে কি আমাদের কাছে কখনও পুরাতন হয় ! তাহাকে कि প্রতি নিমেষেই নৃতন করিয়া অহতের করিনাং প্রথম সাক্ষাতেও নেত্র যেমন অসীম চুখি অধবা অপ্রিচ্খির সহিত তালার भूरबंब व्यक्ति व्यानक थाकिटड हांब, नन वरनंब महतासब পরেও কি নেত্র সেই প্রথম আগ্রহের সহিত ভাহা-্লকেই চারিদিকে অনুসন্ধান করিতে থাকে না ? সভা बॅटाश्रूफ्यरनव भरक (महेज्रश हित्रन्डन खिन्नदत्तः ! আমার কি তেমন সভাতেশ্রম আছে যে, আজ এই প্যাতন যুগে, মানব-সভাতা আহ্ছাবেৰ কত সংস্ৰ বংগর পরে পুরতিন সতাকে, নৃতন করিয়া মান্ব-ছদমে জাগ্ৰন্ত কৰিতে পাৰিব ট

যাহারা সহভেই সভা বলিতে পারে তাহাদের সে কি অসাধারণ কণতা! যাহারা হিসাব করিয়া পরম পারিপাটোর সহিত সতা রচনা করিতে থাকে, যতা ভাগদের মাথে কাহিয়া বায়, তাহারা ভরদা ক্রিয়া প্রিপূর্ণ সভা বলিভে পারে না। রাম্প্রদাদ ঈশ্বর প্রিচারত্ত ইইয়া দেরপ **আ**য়ার অ**তরপে**র তাম ঈশকের সহিত মান অভিনান করিয়াছেল, অরে ,কর কি তুলিছিসিকভার ভব করিয়া দেরূপ পারে ৷ অন্য কেহ চইলে এমন এক ভারগার এমন একটা শব্দ প্রাংগ, এমন একটা ভাবের ধুণদ্ করিউ, বে তং-ক্ষণাং সে ধরা পভিত। **অহুতব ক**রিয়া **ব**লিলে সভ্য কেনন সহজে স্কল্পেস্পূৰ্ব ইইয়া ধরা দেব ভাগার এ-কটা দৃষ্টাত সাদার মনে পড়িতেছে। প্রাচীন ঋষি সরল कनरह द्य व्यक्ति डेक्नात्रण कृतिमाहित्यन 'अम्दक्षः मनगमय, उमाना मा त्याडिशमय, म्रैटार्णिक उनमय, ध्युतिबादीर्वे कति, काम बंदछ प्रक्रिकः पूराः दृष्टेन मार माहि निकार।" अनुकृष्ट निष्ठाम, शैवक त्यमन मर्द्रलये हीतक इहेश छिएँहैं वह खार्थना एक नि महर्म শ্বিভাবে উজ্জন আকার ধারণ করিয়া উদিত ইইয়া-हिंहा, श्रीम यनि अप्कर दिमार कतिया धरे धार्यनाव क्षार-मार्गानन कतिए बर्गन, जारा वहेरण विकासारम হ্মদরে, আবাত লাবে, ক্লয়ত ভাহাতে এই প্রার্থন বিভ পতোর সংজ উজ্জেত হাল হুইয়া যায়। ক্রিড তোম।র ৰে প্ৰানয় মুখ, তাখার ৰামী ৰামানে মুক্তিন। রক্ষা কর"

आर्थनात कहें कारभट्टेक् शतिवंडिन कार्यमा देकर टकर বলিরা থাকেন, 'লিয়াময়, ভোষার বে জিপার করণা, তাধার দারা আমারেক সর্লগ রক্ষা কর।" এইরবেশ খাবিদিগের এই প্রাচীন প্রাথনার কিচ্চাংশ ছিন্ন করিয়া ভাগতে একটি নৃতন ভাব ভাগ দিবা লাগান' হই-গ্ৰাছে—কিন্ত এ কি বা**ভ**নিক সালাধন হ**ইল ৷ নরল**ল সদায় ঋষি কি মিখ্যা কনিবাকনেল ওই **প্ৰাৰ্থনায়** जेबंबटक द्या केल वेला स्ट्याट्ट गडा प्राथि **श**वित्र सूथ পিয়া আতি সহতে এই সংঘানন বাহির হইয়াছে। অস্তা, অস্কান, মৃত্যুর ৩৩ ভীত হইটাই ঋষি : ষ্টশরকে ভাকিতেছেন কিন্তু সেংলাধ লালার মনের এই বিশ্বাস ব্যক্ত হুইজেছে যে, মতা ম.ছে, সোচি **আছে,** অমৃত আছে। এই বিশাদে লগ বালগঠ তো**ন বলিয়া**-হিলেন "রুজ তোমার যে জাগন মুখ"--**এমন আ**খা-স্ব্রণী আরে কি ২ইডে পারে, এমন মাজেঃ কনি তনি-ভেছি মাধানের আবে ২০ । হণ ধে ঋ্য অসভ্যের মবো সভা, অভকারের মধো সোভি, মুহুর **মধ্যে** खरुड (मधिपाट्डन, डिनिड लाजर माक्न पूर्य (मिरिका) ছেন, এবং সেই আনন্দলারতা প্রচার করিতেছেন, তিনি ব্যতিটেন ভণের মধ্যে অভয়, শ্বিনের মধ্যে ত্তমে বিচাল কুরিতেছে ৷ এখানে "দয়ালয়" বলিলে दाउ प्रथा दाख्न इव मा, त्म त्वदन ध्वकी। **क्या**त क्**या** হ্ব মার । ভাহোতে রাজ ভাগে**র** মধ্যেও <u>প্</u>থেমভা, क्षाश्चित्र अधिभौग । व्ययभग ५१, मंत्र वे(४) ८ मदन क्षाः মল্ল হতপের অতি চূচ নিওর **এমন হুদ্ররূপে বাক্ত** द्य ना। मर्शव এटन्छ छातिया वलम नारे, नेपरवर প্রদান দাক্ষণমূখ দোখাত পাইরাছেন বলিয়াই তিনি লিভান দিবরকে কন্ত্র বলিতে পারিয়াছেন, তাহার সুব দিয়া সূত্য কবাৰে বাহির হল্ডাছে আর কমেরা বিভন্ন তৰ্ক কৰিয়া যুক্তি কৰিয়া ভাষার একটি কৰা প্ৰিৰ্ত্তৰ ক্রিলাম,, কাহার স্বাধ্যস্পান্তা নষ্ট হইয়া সেল্ড 🔑 🕆

ইহা ছইটেই প্রনাণ হয় তছে, সতা বলা সহক্ষ
নাম। ইপ্রথের পড়ার মত দুঙা মুনস্থ করিয়া সভা বলা
বাল, না। সত্যেব প্রতি ভালবালা আবা সভালে বলা করিছে
ইইবে, সংসারের সংপ্র কৃতিগভার মধ্যে হাদগকে সরল
রামিতে হইবে ভার পরে সভা বলা সহক ইইবের
ক্ষেত্রনা ইতি লোভ জোধ প্রভৃতি কুপ্রবৃত্তি সকল
ভানাদের সভাপথের বাধা হইজ, ভাহা ইইলেজ
আনাদের ভক্ত ভারনার কারণ ছিল না। কিয় আবা
বিচলিত করিবার জন্য আনাদিগকে সভাপথ হইজে
বিচলিত করিবার জন্য আনাদিগকৈ আব্রবণ করিছে
বাক্তি আরাজিত কার্যাকর কারণ, ক্লোকরাল, লোকার্য

भाग व्यत्नके नगरा आमापिशक में अबिहे क्रिएं हैं। क्रिएंड शांदक, वहें जनारे मजाध्वागतक वहें नकन ্জাতুরাগের উপটের শিরোধার্য্য করা আবশ্যক।

श्रामात्र श्राह्म मुक्ता कथा लाटकत विव्रक्तिकनक পুরাতন ঠেকিতে পারে কিন্ত আমার একটি কথা পুরাতন হইটে ও বোধ করি অনেকের কঞ্চে অতান্ত মৃতন ঠেকিভেছে। আনি বলিভেছি, সভা কথা বল, সভাচিরণ কর, কবিণ দেশের উন্নতি তাংগতে ই হইবে। এ কথা সচরাচর গুনী, যায় না। কগাটা এত অল্ল, এড नाब क्रांक्या नाय, अवर अमन आहीन क्रियानंत्र (य, কাহারো বলিয়া **জ্ঞাহয় না, ভনিতে প্রার্ভি হয় না,** ইংতে ভগভীন চিন্তাশীলতা বা গবেষণার পরিচয় ण्याख्या याग ना, हेर्रीएक अमन डेक्नीलना ड उब्बेस नाहे যাহাতে কলভালি আকর্ষণ করিতে পারেন, দেশ্হি-তৈষিরা কেং কলেন দেশের উন্নতির জনী জিয়াষ্টিক কর, কেং বলেন সভা কর, আন্দোলন কর্টু ভারত-बक्षी ह शाम कब, ८कट वर्रमम् भिष्मा वन भिष्मे व्यक्तात কর কিন্ত ব্রুট বলিতেছে**ন্না সত্য কথা বল ও** শেষ্ট্রান কর। উপরিউ**ক্ত স্কল ক'টার এবে**। खरे कि शकायत (ben नवा मध्य खबर मकरवाद (ben कदा नं छ, ७ इ.७ इ पुरुष्ट ए छित्र आदमाक दिनी, ' এক শককের coca অধিক উপেঞ্চিত। সত্যাসকলের পোড়ান এবং সতা সকলের শেষে, আরি**ন্তে** সভাবী**জ** , বোপন করিলে দেবে শতা ফল পাওয়া, যায়, মিথ্যার ধাংকে আত্ত মিগার তাহার শেব। আমরা যে ভীত मद्रां ५ ए मध्या अभिष्य मृत्रियश्वी की हे । हे हे साहि देश्यत्यस्त भिथा निन्ता कतिया स्थामता पड़ इहेर ना, ব্দাপনাদের মিলাই প্রাশংসা করিলেও আমর। মত্ত হইব না। স্থানরা <mark>হে পরম্পরকৈ</mark> ক্রমাগত **সংক্**হ করি, অবিহাদ ক্রি, হৈব করি, খিলির ক্ষেত্র করিতে, পারে না, প্রাক্ষতা ঘটিয়াছে, সেবানে চাইরী আদিয়া কি পরের ভতি পাইবার অন্য হা করিয়া থাকি, কথায় ক্পার আমাদের দল ভাঞ্জিয়া যার, কাঙ্গ আরম্ভ ক্রিতে শংশাস্থ্য, কাজ ঢাগাইতে উৎসাহ গাকৈ না, আমরা प गूलका वहेवा याकि, श्रीमावि वहेवा मान् माजमान क्रि, म्या इतिहाँ भिन्न त्रीक बहेबा क्रिकिका मूथ-লীৰ নাম বিবাদ করিতে থাকি, আড়ালে প্রস্পারের নিশা করি, মনুখে দোষারোপ করিছত অতার চমুণজ্জা ९व, छोटात कात्रेव आमता स्थानात्री, मुख्या आजार्व गरम ७ मदन महि, केनात उदमारी पु विशामनत्रायन नहिं। भागती दी जोताहीय जैने होतिद्वहि, छाराव जीका महित्नीनाविश अस्क्रीन कविद्वां कि के छोशाव इत्त नका इदि, अरे बना कम ताज इरेडिंड नही रत्रमन दे बाह्य के कार्य कार्य मार्कना टकने अवहा वाह्य विश्वास कार्य कार्य कार्य वाह्य वन । विश्वापना विश्वापन

অরু অবলম্বন করিতে হটনে, সেই এক স্লবের প্রভাবের शास्त्र मकल छात्रत् मत्भा क्षेत्रा हुन, नार्नी विक्रिय স্থর এক উদ্দেশ্য সাধন কবিতে থাকে, কেচ কাহাকেও অতিক্রম করে না, তেমনি আমরা যে কাজ করি না **কেন স্ভাকে** ভাষার মূল হরে, গরিতে হইরে। আমরা **বেই মূল হার** ভূলিয়াছি বিলিয়াই এত কল্পব চচ্চেছ্ ক্রীকা প্রশ্নীশ্রনার এড অভাব দেখা যাইতেছে । এড বিশৃখলা স্কেণ্ড দকলেপকোলাহলই উত্তেভিত করি-তৈছেন, ক্লেই মূল হারের প্রতি লক্ষ্ণ কবিতে বলি-তেছেন না, তাহার কারণ ইহার প্রতি দকলেব তেমন पृष् . चार्च मारे - हेशा क डीशाब मुलकात्वत । इमात्व दमरथन निकास<sup>क</sup>्षांत्रभारकत रिशास्त्र (मरथन ना। र्शिष्ट्रियरहेका स्वरमंत्र हेम्रेजित स्वामा नाना छेलाच (मथिदछरङ्ग, नामा दक्षीनन द्विनिदंकऽङ्ग। । व निदंक मिथा। नोतरव धांशनात कांग्राकतिरङ्ख, तम शेरत धीरत আনিবদের চরিতের মূল শিখিল করিয়া দিভেছে, সে আমাদের পেট্রিফ্রিগের কোলাহলময় ব্যস্তভাকে কিছুনার খাতির করিতেছে না। পেট্রিরটেরা প্রার ভীরে তুর্গ নির্দ্ধাণে মৃত্তি কইয়াছেন, কিন্তু মারাবিনী পলা তাহার অধিপ্রাম ধর্যপ্রাতে তলে তলে তটভূমি জীর্ **কর্মিতেছে। তাই মাকে মাকে দেখিতে পাই আমাদের** পেট্রিনটদিগের বিস্তৃত আয়ে:জন নকল সহসা এক-রীতের মধ্যে স্বংগর মত অন্তর্ধান করে। যেথা**নে** জাতীয় চ্রিডের মূল শিথিল হইয়া গিয়াছে, সেখানে যে পাঁচ জন পেট্রিয়টো মালিয়া জোড়াতাড়া, তালি, क्षेत्रका व्यप्ति जनसम्म कवित्रा क्लोमन त्यनहात्रा ऋत्री কিছু করিয়া উঠিতে পারিবেন এবন ্ত্রেমা<sup>ন</sup>্**বিখাস** स्रौ ना। अनरक्षत्र अध्यक्षित्र निवन्त क्षात्रा ঠোলবে কে ? থেথানে সভ্য সিংহাদনচ্যুত্ৰ হওয়াকে কারবে ৷ হায়, দেশ উদ্ধারের জনা সত্যকে কেইই आधुनाक विरवधना कविराज्यक्त ना 🕒 চির্নবীন চির-ব্লিষ্ট্ শত্যকে বৃদ্ধিমানেরা অতি প্রাচীন ব্লিষা অব-(हना क्तिरक्रहन। किंख पेशाता जीवन न्टन आतस করিয়াছেন, বৌবনৈর শ্রুত ছতাশন বাঁহাদের ক্রন্যকে উদ্দান্ত ও উদ্দান করিয়া বিরাম করিতেছে বাহার গ্ৰহণ্ড দিখা দাগু তেকৈ মহবেৰ দিকেই অবিপ্ৰায় অসুবি निर्देश के जिए करण, बार्डामा विक्रांपत मिथा जारन अफिक इस नार, मिणा प्रकारिक सम्बाग ध्यश्राद्भव साथि या जात हरेशा यात नारे, जीशाता आ उका करून था-र्वन) रुक्त एवन मर्जार्शिय छित्रहिन घर्षेण शांकिएक शादतम, जुरा इहेरन अभन रशेयन माइन्किनिया छ।शाना

कांब मदन मदन्दे बाँबो श्रेष्ठ वार्यका आशास्त्र कार्यास्त्र मर्था अस्तन कंदूई, आभारतत त्यतन अहति क्रिया वार्त, व्यामाद्यक व्याद्वक मुक्त रख नकन निश्चि रहेश भएए. সংশয় ও মেবিখানের প্রভাবে মাংস ক্ঞিত হ**ই**য়া যায়। আমরা এই প্রতিজ্ঞা করিয়া সংসাবের কার্যাক্তের বাহির হইব যে, মিলার ক্লয় দেখিলেও আম্রা সভাকে विश्वाम कविन, मिणाव ने लिपिटलेख आमका मेहितक আত্রয় করিব, মিণ্যার চক্রান্ত ভেদ করিবার উল্লেখ্ন मिथा कल वा रात कतिव मी। प्रामित्र कानि भौटिक মিখ্যা আছে, চিরক্তন প্রথার মুধ্যেও মিখ্যা আছে, **जाबुता आ**नि चरनक नुशरत जाबादनत स्टिज्यी जाबी-বৈক্লীমখ্যাকেই আমাদের যুগার্থ হিভজান করিলা ু জানজী বা অজ্ঞানতঃ আমাদিগকৈ মিথা উপদেশ ্রাদরা থাট্টেন্ন। সত্যাপ্রবাগ হৃদদের মধ্যে অটল রাথিয়া 🛍 हे मकन मिथानि विकटक मध्याम क्रिएड हहेटव। ক্র্জাত্রাগ পরেও আমরা ভ্রমে পড়িব, কিছু দেই के नः त्नायम इटेटन, त्नहे अमरे व्यामानिशतक शूनताव निक्षेत्र्य निर्देश कात्रवा विद्या किन्छ एकमाञ अशा-শ্বলী বা শাপ্রাহ্মিণা বলতঃ যথন এমে পড়ি তখন সে अम हिर्छ यात श्रीमारमत छेकार नाह, उथन क्षेम्रक ज्यामत्रा ज्यानिकन कृषिः विश्वारक व्यिम वनिष्ठा वत्रन वित्र विकार काडीम छ छुकरीय रहेशा छेट्ट, श्र्म श्रुकर इंडेटर किन्न श्रूबंद मगर्त्र भःजाभिक इंडेटर बादक, **এইকুণ क्षेत्रान्त्र পार्ट्या विनास्थत वीक मिथा क्यांशन** আৰু বিভাৱ ভারে ভারে শিকড় 'বিভার করিছে থাকে পুৰ্তেশ্বী সেই জাৰ্শ জজন মন্দিৰ্কে সজে কৰিয়া ক্ষিমাণ হয়। আমাদের এই হর্দশাপর ভারতব্**র** সেই क्षिमा व बीर्व मिनात्रत्र उद्गत्र । कामकाम वक्षम জ্জার্শতা এই ভারতবর্ষে অমনি হীনাসন আন্ত इदेश जिले (व क्षेत्र, लाज कर: अवाह क्यांटा प्रदर्शनकी) बरेक केठियादिन विशीष याशीन महात्क अन, नाज व्याद क्षेत्राक नामरेक निक्क इहेट इक्षेत्राहिन। मिशा क्रिनारम बाह्य क्रमा व्यक्तात क्रिताम ए मध्य विकार मधनानी करा निर्मा निर्मा नाविका नाविका करें। केना दरेशासिक विकासिका विका शास्त्र मान रामानी ,गरेशन मानागरनत निकली गर्ग क्षासा स्थानी असे प्रिंग निकामिक। ना देशशहेरण (valent) नदा शासी क्षादक शादन मान विशाद व्यक्ति पूर निर्दार्थ देखियात हैं के विकासी नहीं क्रांडि र्शन्ति चरका वा विद्नी चर्डिकार बोलन प्रदेश (व क्रियुक क्षिक कर्म क्षेत्रकारकाका निर्देश क्षेत्र क्रिकामिया गनि वर्षे विकास के देखान नेहादर भए। व बन्दे विकास का का धरन कतार करें है। ना के

মনিব হইয়া বাজাইল সভাকে বিবার করিব হুরুজী

ফুলন। সভার এইকা অবহান দশার শত নহল মিনার
আসিরা আমাদের ক্রিনারাকে ক্রিনারাকে মিনার আরম সইন কেই তারাকিয়কে রোধ ক্রিনারাকি মানার তাহার কল এই হইন সভাকে দাস ক্রিনা আমার মিগার দাসতে রভ ইইলাম, দাসক হুইতে ভুক্তর দাসতে উত্তরোভর নামিতে লারিলাম, আজ আর উশ্বান শক্তি নাই—আল প্রকাদেহে প্রপাশে বসিরা ভিকাপাত হাতে লইয়া কাতর স্বরে ব্রিভেছি 'দেও বাবা ভীণ্ দেও।"

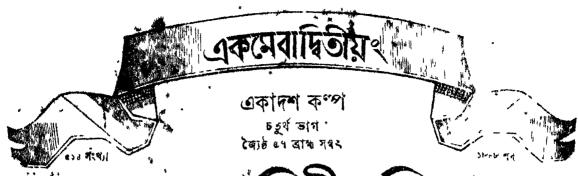
#### নব-বর্ষর গান।

ভৈরে। ঝাপভাল।

আমারেও কর মার্জন।
আমারেও দেহ নাথ অমৃতির কনা।
গৃহ ছেড়ে পথে এনে, বনে আছি মুন বেশে,
আমারো হৃদরে কর আনন রচনা।
জানি আমি, আমি তব মানন সম্ভান,
আমারেও দিতে হবে শনতলে স্থান।
আপনি ফুবেছি পাপে কাদিতেছি মনভাপে
ভননো আমারো এই মরম-বেননা।

ললিত। আড়াঠেকী।
বর্ষ গেল, বুথা গেল, কিছুই কারমি হল,
আপন শুনাতা লয়ে, জাবন বহিয়া গাল।
তবুত আমার কাছে, নব রবি তীলয়াছ,
তবুত জীবন চালি বহিছে নবীন বাল।
বহিছে বিমল উমা ভোমার আশীর মানী,
ভোমার করশা-স্থা ভাদরে দিতেছে আমি
রৈখেছ জাত-পুরে, মোরেত ফেলমি দুরে,
স্বীয় আখানে তাই ব্যাকে শিহরে শ্রা।

त्वाजि-देख्यती । क्ष्याजातीका ।
किद्रतामा किद्रशमा काकि, जदम्ब ह्याहरू,
भूना चाट्य काका वाळ खूना मरमाहत ।
काक जाता गाँउ क्षर खुनद्र जानत्का, क्ष्य चमुळ खिता गाँउ क्षर खुनद्र जानत्का, क्ष्य चमुळ खिता गाँउ कार्य मानवाका एक खान चर्च कार्य कार्य गाँउ कार्य मूना प्रति कार्य खुन्द कार्य गाँउ कार्य द्रशास कर्या क्षेत्र क्षर जात्र कार्यका



# তভাৱাখিনী পানকা

अध्यानक्षिद्भवस्य साथा यत् दृक्षधनामाणात्य स्थामन गत्। त्यत्र नित्य द्वास्थानमा शिव स्वत्यक्षित्य व्यवस्थानि । सर्विद्याद्य में में नव्यक्ष्ये स्वत्यात्र प्रभावति । यत्र व्यवस्थानि । एकस्य सन्त्योप ननवा वार्तिकसादक्षत्र स्वति । तथिन प्रतिसत्त विविधानकार्थि साधन स्वत्यास्थानि ।

### वर्य-८ शय उमिनमाज।

পৃথিনী আত্মান গালন ও পোষণ-ক্ষেত্র। কুলক বীষ্ণকে অনুধাত করিবার জনা যেমন প্রথমে সুদায়ত্ত্ব ভূমিখণ্ডে তাহাকে বপন করে; ভৎপারে জলবায়ু আলোক প্রাদানে ভাহাকে পরিবার্দ্ধিত করিলা ক্ষেত্রান্তরে রোপণ ক্রিয়া থাকে, ক্রণাম্য় প্রনেশ্র তেম্নই পৃথিবীরূপ উর্বর কেন্তে মানব আস্থাকে শক্ষা করিয়া এখানকার জ্ঞান গর্ম্ম প্রীতি পবি-ত্ৰতায় শিক্ষিত ও উন্নত করিয়া ত্রামে তাহাকে উপযুক্ত ेকরিয়া। লন। লোকলোকান্তরের কৃষক যেগৰ ভুল্তিকার মধ্যে বীক নিহিত করিয়া দিয়া নিশিন্ত নছে, যতকাল না তীহা जन्निक करेश कृत दकते श्रीकाण रेश, ভভ্নিমই যথানিয়ামৈ বারিসেচন ও বাতা-তপ প্রদান বিষয়ে স্থব্যবস্থা করিয়া থাকে, रोहेत्रभू अन्तर क्यान-स्क्रां शतरम्बद विगाल শংসারের মধ্যে ক্রায়তন দেহাভাতরে অমর . पाकारक निहिष्ठ क्रीवरा निमा अगन्हे जलू-कृत विवय-नार्शक्ति , जिउटत ध्यम जाटव ्णाराद्वे न्यात्रात्रे कतिशाह्न, ते तम् वहरू कारने परियाक अट्येक कार या हासार जो

্কুষিকাৰ্য্যে কুমকের মন্ত্র চেট্টা আ-কিলেও যেমন হার্ষ্টির অপেকা খাকে टिंगीन छे। जिनीन पावीन आञ्चात छोत. উমতি ও এইিছি নাধনু জন্ম ভাহার আত্ম-চেষ্টা আত্মবল থাকিলেও তাহার সার্বভো-মিক উন্নতির নিমিত দেব-প্রাসাদের নিতান্ত लाजा । भेयत तारे बना कारी बजना ত্যান প্রোম-ছটা প্রকৃতি-পটে নিয়তই বিস্তার ক্রিয়া রাখিলাছেন, তুর্লভ গ্রানাদ্রারি অকা-তরে মানব অ জার উপরে অজন্রশারে প্রতি-নিয়তই বর্ষণ করিতেছেন, জ্ঞান তেম দুয়া ধর্মা প্রতিকানই বিতরণ করিতেছেন, জবং ভাষার খনত উমতিমাধনের পরমোহকুট্ট আদশ্রণে আপনাকে তাহার হৃদয়ার্কানে নিয়তই প্রকাশ কারতেছেল। বুক্লবাটিকা যেরাপ ন্তের পূর্ণবিকাশের স্থানানিছে, কিয়-দ্যুর পর্যান্ত বন্ধিত হইলেই হৈমন জাহা শেতাত্তরে নীত ও রোপিত হয় এবং কুলি-জ্ঞা কলফুলে শ্যেভিত হইয়া দিক্বিতান श्राद्रमाकि करत, रिनर्क्षेत्र मानव आञ्चात পুর্ব উলোব ক্ষেত্র এই পৃথিবী শহে। পৃথিবীয় <u>जिक्नागधन, कान रक्षमः क्षेत्राटक क्षेत्र</u>ि প্রবিজ্ঞতা, শাসন্ত পূঁজাবের ফলফুলে চিরলো-

দিত উন্নত ও ৰাৰ্দ্ধিত হইলে আবাৰ উচ্চত : শিক্ষা ও মহন্তর উন্নতি নাখনের জন্য লোকা স্তবে নীত হয়।

পার্থিব কীট পাতস ষেমন বর্দ্ধন-উন্মুখ রক্ষলভার শ্রী গৌলহা বিনাশ করে তেমনি এখানকার পাপ ভাপ উন্নতিশীল আত্মার শ্রীদোষ্ঠব বিরূপ ও বিরুত ক্রিয়া দেয়। ক্লাহারদের উপদেব অভ্যাচারে আত্মা এখানে ক্ষিক্ত হইয়া পড়ে, ভাহার ক্তি উদায স্থিলৈয়[হত হইলা যায়। আকাশ হইতে हत्स्व क्रिया रहा। इ.स. १ महा है अपन कितन ·মেষ্টের স্থায়িক্ষা কারিকালা জাত্তা হুইলে মেমন ক্ষণত। প্ৰাণ পায়, জেমনি অন্তৱাকাশ হইতে জ্ঞান প্রেম সভা মধল সরপ ঈশ্বরের অমৃত-জ্যোতি প্রত্রেষ ধারা আত্মাতে পাতত হইলে ত্বে ভাষের পাপড়াপ মোহ-বুজ্বটিক। ছভ-রিত ইয়। ুভাইরি উমতি-পথের বিল্ল-বিপতিনকল বিদুরিত, হইয়া যায়। मरे ता नवस्त्र कनार्राट्य लात्कर जना এখানে উপযুক্ত হইবার বলশক্তি লাভ করে।

কৃষক থেমন কুজ বৃক্ষবাটিকার নবজাত বৃক্ষক থেমন কুজ বৃক্ষবাটিকার নবজাত বৃদ্ধকে বদ্ধনা হইতে দেয় না, ফলতঃ সাহাতে ভাষার গতক থাকে; কেনি নাহাতে আমারদের আলা এই সংক্রীর ক্সোরে নিম্ম হট্যা না পড়ে, পার্থিব অসারদের আলা আহই না হয় স্ত্রীল্ডি পার্যারদের আলা আহই না হয় স্ত্রীল্ডি পার্যারদের মায়ার শতবন্ধনে জড়িত হরা না যায়, অনন্ত উল্লভ ধানের বাজী হইয়া এককালে পৃথিবীতেই আলা ভর্মা দূলক ক্রিয়া নাইকলে, ক্তল্পনা ক্রশাময় ক্রিক ক্ষাক্রীর সেইকটিতে আমানিলকে ক্রিক ক্ষাক্রীর ক্রেক্টিতে আমানিলকে ক্রিক ক্ষাক্রীর ক্রেক্টিতে আমানিলকে ক্রিক ক্ষাক্রীর ক্রেক্টিতে আমানিলকে ক্রিক ক্ষাক্রীর ক্রিক্টিতে আমানিলকে ক্রিক ক্ষাক্রীর ক্রেক্টিকে ক্রিকটিক ক্রেকটিক ক্রিকটিক ক্রিকটিকটিক ক্রিকটিক ক্রিকটিকটিক ক্রিকটিক ক্রি

কঠিন কশাবাতে আমাদিগকে সংপ্ৰেথ আইন য়ন করি**তে**ছিন ৷ কখন বা শ্রেমের আলিকন <sup>বা</sup> ান্যা আমাৰ্থনৰ আত্মান শতওণ খল বাৰ্ডিড क्षित्र विकटरहर । कथन वा अनेग्रविटमाइन প্রেমের প্রতিমা স্লেহের পুত্তলিক। সকলকে অন্তরিত করিয়া দিয়া, আমাদের মোহ-অন্ধন কার বিনপ্ত করত জাগ্রত করিয়া প্রকৃত সমুদ্ ষত্বে সম্পাদনে আমারদিগকে দুট্ত্রত করিয়া ভূলিতেছে। দেশ কালের মধ্যে থাকিয়া ঘটনাপটে যথন ভাঁহার অকুত্রিম স্লেহের 'যভিনয় দেখিতে পাই, তখনই বুঝিতে পারি যে আগরা সংনারের জীব নহি, বিন-শর পার্থিব প্রদার্থপুঞ্জ আমারদের চিরতৃপ্তি-প্রদ উপাদান নছে, আমারদের ভৃপ্তি-স্থল ঈশ্ব, আমাবদের প্রাণাবাম পরভক্ষ। তথ্য ব্ৰিতে পারি যাহা কিছু তিনি প্রেরণ করেন, তাহাই আমারদের কল্যান ও মন্ত্রার ক্ষন। তথ্য আমনা কেবলমাত্র তাঁহাকেই 🔩 আমার্নে**র সংবঁত্ব ও** ঐচিক পার্ত্তিক স্থ**র্খ** সম্পত্তির কারণ জানিয়া নির্ভন্ন ইই। मात भागांतरम्ब गर्सन्य नेरह, खाशवा लक्षाः পামের যাত্রী, অনন্ত কাল শত শত বারা বিশ্লের মধ্য দিয়া আমারদিগকে **ভাহারই** দিকে অগ্রাসর হইতে হইবে। পৃথিবী সেই পাথের একটি সামান্য পান্থ-নিবাস মার্ক্ত। ত**খনই** निवानात यरहा जाना शाहे, त्नारकृत मर्देके সাভ্যা লাভ করি, সংসার-প্রহেলিকার গুড় धन्त्र व्यवधातत् ममर्थ हरे अबः एक विशासक শ্মক্ষেত্রভাষার অভয় হন্ত দেখিতে পাইয়া त्नी हैवर्षा कन्त्राक चात्रक क्षि। हो। ই খনের কি করণ।। তিনি দীন ক্ষুদ্র আপারে কত উপারে কে আগু-নার দিটে আকর্ণ ক্রিতেছেন তাহা विष्टितः।

রকের গ্লামন্থ্যুতে, আপান বুর তেমন্ট উর্দেশ্যে আপান উর্দেশ্য

क्रेग्र होंद्र हे होंडे किए कि चार्यक के पर बत দিকেই ইয়ার গতি, বাঁছা ভূলোই ইইতে **(स्वर्तादक) रमग्रहा**क श्रेट्ट केस्क्रिय स्वारक ক্রমাগর্ডই বিমল্ভরীপাবিত্রভর হুইয়া নির্দ্ধল লাখত স্থ উপতোগের জনা দেই স্থের খনভ প্ৰ**ভাৰণের** প্ৰা**ভি ধা**রিত হটলেছে। यानव '**जाजा देशहें जि**निकीएनीय सरभव छि-থারী **বলিয়াই সাংসারিক হুং**থ তাছার এত বতুপ্তি, ভাহার ক্ষুৎপিপাসা অধিক কলিল ই পার্থিক অনিতা স্থলে তাহাল শান্তি নত আরাম নাই। যথনই ভাষার হইয়া সং-সার-মুরীটিকায় তৃত্তি লাভ করিতে য়ায়, ্ভখন্ট এডারিজ হয়। -

व्याप्त व शक् राव्हेल छालि क्वेटन राध्यन রক্ষের ডালাপ্ত ৬ বিশুজ হছণা **অবশে**য়ে হতুনে মূবে লভিড হয়, **ইশনের ক্লেছ** প্রেমের ाण छेनागीन हहे, ल एकानि काछात छे-চ্ছেদ-দশা উপস্থিত হুইয়া থাকে। 'আম্বা राधीन कीव रंगेरा है लागाइरन्त मान्तिक বল একদুর আবক নহে, যাহাতে পাপ প্রকোতনের প্রতি আক্রমণে বিজয় লাভ গরিকে পারি। জ্ঞানের ফীণ্ मकेल महस्य जायत। आभातरमञ्जू शेष्ट्रता नी হির করিতে পারি না। রিপুকলের উত্তে-ভনায় জাইলভাবে তভাগ্ৰান থাকা আমার-प्तत्र **भएक पाम**ा इन्हा छिटो। दम्हे জনাই ভাষার এই প্রেম্যাল্যে পাপ,ভাপ विवाप कला अगुरा भवनिकाव पावानल খানল নিষেই ভাত্মলিত করিয়া দিয়া দথ विनक्ष एहर छ छ ।

अमेरमंत्र काल हिला। यात्र, अहे तकनी যার ছার্ডার আছে। আমরা একণে ছা-**छीछ 🐧 अ**विवादछत्र संशायदन मछातुसान । অতীডের কিনে দৃষ্টিপাত করিয়া হৃদয় विक्रिका के स्ट्रेस्ट्राइ। विगन क्ष नम्हे

मिक पामित्त एहै। क<sup>ित्स</sup> महत्के पा-দিতে পারিতাম, এমন 🔩 সময় জামোদ श्रादम कार्ने इंग्ना मिया ১খন ভাঁচার পবিত্র নাম উস্নারণ করিলা এবেনকে মধু-মার করি**তে** পারিতান, ও ভাষার জানিজী ন ধর্মানুষ্ঠান করিয়া भगुरुषक (यात भागत मण्याचेम विद्विष्ट भगर्थ १ हेन्स्य । १००३ (श्रास पाखान मुक्ष इर्या अहा: ११) সর্থ করিয়াছিলাম, তথ্য জানিতাম ন্ " **এেয় হটতে** এতদূর অভাৱে পতিত *হত*ে ও আপনার উপর এড খনিক পাল-মলা দ গুরু করিব। সংস্পার্থ ্য কণ্ড এক স্ত্রা ष्ट्रेरिक जना तरका अभन करवे । हाह। हासन আবোহী অনেক দল গ্ৰন্থ না কবিয়া নামতে গারে না, তেমনি প্রেবা প্রস্তু শ্রেষ-প্রের **অ**ভিক্ৰ ক্ৰিণা ওখন নে কেমন ছবিছা Central भएए धानिया **छेगरि**क श्रेश्य, তাহা নির্ণয় বরিজে পারি না। যখন ব্লি-লাগ যে মেই পুৰা-পৰ্য হইতে বহুদূর অহনে আ। দয়। পড়িয়াছি তথন ঈশ্বরের রুপ। ভিত্র षात श्राह्म विकास के नाम क्षित्र शाह না, ভাষার অমোঘ সাহাধ্য বিনা পরিত্রাণের স্বার গতান্তর দেখিতে পাই না।

ভবিষাতের कि কোন আশা নাই, দে পথ কি নিতান্তই অন্ধকারাছের ? অতীতের : পাপতাপ কি ধ্বংস্ক হইবার নহে? আমারদের মৃতবং আত্মারুকি মৃত্যঞ্জীবন ঔষধ কে-था ७ नारे १० जानातर नत जा जा উন্নত ধাৰের যালা হইয়া অসহায় অবস্থায় এই মহা প্রান্তরে নিপত্তিত থাকিয়া কি চির-कान त्रापन क्रियत, िहत्रक्षी ভाবে कि এখানে তুঃসন্থ মুরক্-যন্ত্রণা ভোগ করিতে शक्तिक ना, कथनहे ना। सह भान-जानशाती विनम्कालाती आमानताती निर्वेदि, নেই সেহনয়ী মাড়া করুণাময় পিছা, যাত্রী-विधा विधियाहिष्क कवित्राहिः वर्षन केंद्राह्म स्थान दन्य व्यागात्रक महाद्या छान-

উন্মীলন করিয়া তাঁহাকৈ সকলে দর্শন কর, ফির হৃদয়ে তাঁহার আশাপূর্ণ স্লেহের আহ্বান শ্রবণ কর। তিনি বলিতেছেন "বংস। নিরাশ হইও না, এই যে আমি তোঁহার সম্মুখে; কৃত অপরার জনা আন্তরিক অসু-তপ্ত হইয়া আমার আশ্রেয় গ্রহণ কর, আমি তোমাদের পাপ-মলা শ্রেকালিত করিয়া জন্মত পথে লইয়া ঘাইব।" আমর বিলম্বের প্রয়োজন নাই, আইম আমরা সকলে তাঁহার জ্যোজন নাই, আইম আমরা সকলে তাঁহার জ্যোজন নাই।

হে পরমালন্। ত্যি যে অমর আজার উন্তি সাধনের গুরুলার যত টুকু আমার-দের হত্তে নাজ করিচাছিলে, দেখ আ-মরা ভাষাকৈ পাণের পদ্ধিন হ্রদে জুবাইয়া বিশাসমাতকের নাায় তেগাির সিংখাসনের जन्मूर्य किष्णिठकरत्वरत मधात्रमान हरे-য়াছি। তুনি সহতা দণ্ড দাও অমানবদলে সহা করিব, ুকিন্তু তুমি আমাদিগকে পরি-তাগ করিউ না তোমা হইতে পলায়ন ক্রিয়া আঁর কোথায় গিয়া রক্ষা পাইব। গিরিভ্রা অরণা প্রান্তর নগর গ্রাম সকল স্থানেই তোমার দিংহাদন প্রতিষ্ঠিত রাহ-म्रोटि। वित्यारी श्रका यमन डाकार निक्षे আর্ত্ম সমর্পণ করিয়া অভয় প্রাপ্ত হয়, সেই রূপ আমরা পাপে মলিন শোকে জর্জ-রিত হইয়া তোমার পদতলে অমর আ-শ্বাকে আনিয়া ধারণ করিতেছি, তুমি তো-প্রায় প্রাপদ-বারি দিকনে তাহার পাপ-গলা ধ্যিত বিধাত করিয়া দাও। ভূমি তোমার অমৃত্যম জোড়ে তাহাকে স্থান দান কর ধৰ্মের অভেদা কবচে ভাহাকে আর্ভ করিয়া ৰ বে আমারদের আশ্রহ, আর আমরা তেতামার স্বাশ্রিত, ত্মি যে জাগার-एक निक्क जामका एवं किया के मेन गर्थान, ভূমি যে আমারদের ইহলোকের শার্গ্য পরলোকে প্রক্রি আমুরা বে তোমার চির

আশিত ও তোরার বারের কির্নিভ্যারী।
বংশরের প্রতিকার চলিয়া যাই তেছে, আর
কটকার টোনা ইইতে দূরে থাকিব। তুমি
যদি কুপা করিরা আমারদিগকে দর্শনি দিয়াছ
আমারদিগকৈ তোনার সানিহিত কর।
বাহাতে শত বাধা বিশ্ব অভিক্রম করিয়া
নিরম্ভর তোনার দিকে অপ্রসর হইতে পারি,
বর্ষের পর নববর্ষের আগ্যানের সঙ্গে করে।
যাহাতে আমারদের আগ্যান্তর কল্যান্তর
বেশে তোমার নিকটবতা হইতে পারে, কুপা
করিয়া আমারদিগকে এরপ ধর্মবল ও শুভবুদ্ধি প্রদান কর। তোমার নিকটে যোড়করে এই প্রার্থনা করি।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং।

#### নব-বর্ষ।

দেখিতে দৈখিতে নববর্ষের ছার উদ্যাটন कतिशां आति किम भूति शुर्तिनिटक प्रशासान হুইল, আর আমাদের অন্তরে বাহিরে উৎসব-शन्तिद्वत बात जन्माणिज हहेन ; यद्या वामन-मानीनः वित्य (पर्वा खेनामरण-चांगारपत আলাগ দেবতা মধ্যস্থলে জ্যোতিশ্বয় মছিমায় আগীন রহিরাছেন নিখিন ক্ষেতারা ভাইার উপাদনা করিতেছেন—আমরাও উপ্রস্নার জন্য এখানে প্রেম ভক্তি সহ-কারে সন্মিলিত হইয়াছি। তাঁহারই আদেশে ুপ্রত্যেক মাস, প্রত্যেক বংগর, দুভন, দুভন সজ্জার সজ্জিত হইয়া স্ব স্কার্যাশা कतित्रा निःभटक हिनता यहिर्छ्ट कर्ने महत्रत **এই श्रमक्रिका अपनि विवर्ग विवर्ग** हिनद्रा ना वाद - अहे मूथा नगर हिटक करिन जामना कामप्रतावादका जागादम्ब मानन (नवजात भारतिसनाम **इ**ट्यम कवि क्रिक বিভদ্ধ মনে উৎসর্গ করি মেন সাধ্যম

আমরা ভাহার ফল ভোগ করিতে পারি। शाजः कारलब श्रथमार्काणित कना मरबान्द्वत भमा तक्यन लालाधिक हते, इंद्रशत्त्रत अपने मञ्जल कितर्गत कना आगता रमहत्राण स्वार्ख असरत अगारन निर्वासिक इरेशी हैं, - वरे লম্যো আইল আমরা আমাদের দেবতার দেবতা প্রভুৱ প্রভু জীবনেরজ্ঞাবন প্ররমা-ত্বাকে ভাক্তি-ভবে ৬.শম করিয়াধনা ও হৃতি: স্তাণ হই, আজ তিনি অমীদিগকৈ বং-সারের প্রথন অমৃত ফল বিস্করণ করিবার জন্য লবানে আহ্ব ন করিসাছেন, আজ আমাদের কত হা আন্দা। পাৰ্য শ্ৰণ**ত-ধ্**ৰনিতে হুড়েল শ্ৰণ র আত্মার দিব চিফা বিক্সিত স্ট্রাচ্ছে—প্রধালাকে খাধ্রা বেশিকেছি— ে এবারভাগ ম উপলিপ্তাই স পশ্চাই স প্রস্বার স দ্যক্ষণতা সাউভততঃ ভিনি অবেধ্য কিনি ৬৫ই জিন প্ৰশাহত ভিনে भभूत्य किन प्रायन्त्य डिनि छिल्टत, नेमारमा অভতংগ্য তিনি কুড ভাষ্ট্রের নিজে **স্ত্**পাদা স<sup>াউ</sup> বচ তেনি অবচত জেল কলাও ভেমনি, সমস্তা ভূত ত্রিবাং বর্ত্তমান **डाहाबरे ८४ (२.व. मूर्रार्श नियाम, समस्ड वा-**कान डाहाइरे क्षरिनंद खीतल खेळ्या मार हर প্রমাজ্য ৷ তোমার প্রায়াদে ব্যক্ত ঋতু তর লভার মর্মেমনের রম সক্ষ করে, গ্রীয় আহু সন্ধা-সমাত্রণে মাণ্যার নিঞার করে, বর্গা-আহু তপ্ত মেদিন)কে,শাওল করে, শরৎ আহু ं भिक् मिभरखंत यानिन भूषे উञ्चल कर्ड, नाज खाउँ धत्रनीरक भगामानिनी करत, किछ **छ**।-मात्र ८७म-स्थात क्यामाज क्यामारहत स्ज-শরীরে যেরূপ প্রাণ সঞ্চার করে, আমাদের শ্রেক হাদরকে যেরূপ সর্গ করে আমাদের আত্মাতে যেরূপ অক্ষ জীবনের ভাণ্ডার উন্মক্ত করিয়া দেয়, অগতে কোঁথাও তাঁহার ' উলনা নাই। । তোমার গ্রেন নিখিল জনের निशिन गुरुन - त्मरे (धारमत धामान विन्दू

আমাদের সক্ষমেশের গ্রুল ছট্টের এই জারি শায় উৎফুল্ল ছট্টা ক্ষমেল গ্রেলি সমাগত ছট্টাছি — ভূগি প্রস্থা বিজ্ঞা আমাদের মনোবাঞ্চা পূর্ব করু।

ু 🕳 একমেব্যন্ত্রিটি 🖓 🥫

### দর্শন-নংহিত।।

#### উপর্ক্তমণিকা

ভারজান-প্রাদ বিদ্যাপ থেও ব্যক্তে জনিয়েও

কট একের আন পিত্রপ্য-কোন থানে তত্ত্বজ্ঞান-শবের দতরে উল্লেখ আছে, সে-খানে দর্শন বিজ্ঞান গলৈতে সচরচের যাহা বুঝার তাহাই বুঝিতে হইবে। তত্ত্বজ্ঞান বা দর্শন কহেকে বলে তাহা, পারে জ্ঞাপনা ইই-তেই প্রকাশ পাইবে—দেকুনা কোন চিন্তা গাই। প্রকাঞ্জে গেবল এই কপানি বলিয়া রাখা জাবশাক থে, তত্ত্বজ্ঞান শবের বেরপ কর্প এখানে ধরা ইইভেতে, তাহার ভিতর ভৌতক বিজ্ঞান বি প্রবিত্রবিদ্যান তি তুরার কোন-টিই স্থান পারতে পারে না—উভয়ই ভাহার জাবকার-বাহস্তি।

#### ्क कुळालात श्राक्षेद्धा<mark>न्य्रेषि विष</mark>य क्षे

তত্ত্ব-জ্ঞান-শান্তের তুইটি হওয় চাই -(১) সতা হওয়া চাই এবং (২) বৃত্তি দার।
সমর্থিত হওয়া চাই। তত্ত্জান-শান্ত যাদ
সতা না হয় তবে তাহাতে লোকের িবাদ
জ্ঞানে কদাচ; যদ্ধি তাহা যুক্তি-দারা এ মাশীকৃত না হয়, তবে সেরপ শান্ত তত্ত্জিজ্ঞা
স্থকে অধায়ন করিতে দেওমা, স্থান, কুধা-

<sup>\*</sup> অধ্যাপক কেরিখারের ক্ত Institutes of Metaphisics.

র্ভূকে কাঁচ। মাংস ভক্ষণ করিতে দেওয়া, স্থান,— তাং: গলাধংকরর হওয়াই ভার। সতা তত্তভানের চরম লকা; এই জনা তৃত্ব-জ্ঞান শাস্ত্র সভা হওল চ'ই। **তেমনি**,আন বার, জ্ঞানের বিকাশ চত্ত্বভানের জ্ঞানির জিপান্থিত 🖟 लका, - जाहा र्या-वृद्धित श्रीक्रालनाम के পুর নিভর করে। বৃদ্ধির্তির পরিচালনা 😓 অগাৎ প্ৰশান্তা মূলত্ত্ স্ইতে চর্ম ণিক অ প্রান্ত শক্তির যত**ওলি বে**য়ৰ আছে, भग (७१२) व्यक्तिति खत्र मृश्वनातन्त्र , अहे জনা ওর্ফান শতে বৃক্তি-যুক্ত হওয়া চাই। অত্থিৰ তত্ত চনৱ এক্ত আদৰ্শ গৱিতে গেলে এই দেশ ৮ ভার যে, তছ্জান বুজি-মুক্ত সভের এ জী সকর্ব।

> ं जे इसे अस्ति प्रशेष विषय कर्तना ने সাৰিক বন্ধই।

্ট্রী উপরে মেডুইটি প্রয়েক্ষনীয় বিষয়ের कथा तना इरेम (कि ना (३) में च इंडरा छारे, (২) মৃতিযুক্ত হওয়। ছাই) ভাহার মুঝে; শেষোক্রটি অ**পে**ক্ষাক্রত বলবং। ভত্ততা<mark>ন</mark>ের পক্ষে সভাহপ্রা হতই কেন আবশাক হউক मा--यूकि-युक ४७१। ए।११ अशिकाउ खिक भोतभातः, कादन, गाउ।त माधान থাওয়া মুকুষার ভাগো ২য়-ভো কোন কা-লেই ঘটিবোনা, কিন্তু বুদ্ধি-রভির পরিচালনা স্পান্তিই ভাষ্ট্রার অধিক্রিয়ন্ত, এবং ভা তাহার ক্ষণ্যর ভিতর। গেখানে তুইটি বিষয় অসুধান∰কলিয়। ধরিবার কথা,দেশানে, **ংৰে-টি জিন্চি 5 \**ক্ষাবেদর কোলভ**্**হনত সে-টিকে ছাড়িয়। –kh টি অুনিশ্চিত (ছা: তোবা একেবারেই অপ্রাণ্ণ) সেটিতে হও-প্রসারণ ক্রা**্রিতাভ**ই সুতি বিক্ল। এ ছাড়া, সীয়া क्षित्र कित्र विग्रमी मने येग्रायात असमे अक्षि खेककेद खेळाडू, अमेरा वाद किहु है नरह। ক ভাষার সম্বন্ধে বিভিন্ন শংক্রের

এইরাপ বিরেচন ামিছিল তত্তভাব-

भारता विकासना के विहास कर के आहार মূলা সংক্রিক বাছাতে উপরি-উক্ত উভ ত্থ একাণারে বর্জমান – অর্থাৎ যাত্য মত্যাও वटमे युक्तिक वरहे। कि**स्तु हेरा छ** इकान ৰাজ সতা হইয়াও বুজিছীন, ভাছা অপেকা, বীহা দ্ভা না ১ইরাও যুক্তিযুক্ত তাহার মূলা অ বিশ্ব

#### 'ব্জিষীন শাঙের কোন মুলা নাই বেছেট্ট **ए। इ.** ए इड्यानड में कि वितन्ता।

भ युक्तिशीन एउट्यान-भारता रकान मुना নাই; কারণ বুক্তির পথ দিয়া মত্য ভোগ্রিক नागरे उद्कान्। उद्घाणा मः सारे है। মে শাস্ত্র সত্যে উপনীত হয়- িজ ঘুক্তির পথ দিয়া ২৫১, ভাষা মুগাই পত্তালৈ নহে; ভাষার লোন বৈজেনিক মূলানাই। **स्वितम क्यांश विधान को तहा उकान मनुषाई** অপর মনুহোর নিষ্ট হইতে পতা প্রহণ করিছে রাণ্ডেন্ছে। সুভিত্তি স**েভার গ্রহণ,** অবি দোকানহাতের কপার বিশ্বাস করিয়া षिनिम् (कमा, छिङ्ग्हे मयान । (र भार সত্য হটপাও যুক্তিন্দি ভাষার সম্বন্ধে ভাল'ল मदबा (क्नाम छाहै । धक कथा वता घाष्ट्रेस्ट शास्त्र ২েন, যে শাস্ত্র পুরের বা'র (অগাৎ না সভ্য 🕂 🔻 না ধুক্তিযুক্ত) ভাষা অংশকা উহা ভাল। अ अधीन नाज गरेर गरेर अधिकारी निकास नाहे । 🗥

चारात, भून्छचीन एड्छान-भार यकि ভগালি ভাষা সত্যের কোন সৈতাও কর, भिन्नर्थन और भारत थाउन करद मा। **फार**ि লভা হইলেও হটতে পারে, কি**ন্তু ভাল** নিশ্চিত নহে। ২।৪২ নিশ্চয়ত। কিছু আরগ क्रिम्मि एवं मा,--वश्यद क्रिमादनव क्रिन्द्र-শক্তি অকটি যুক্তির উপর নামিশ্চয়তা নির্ভর করে। আত্তরব যুক্তিফীন তত্ত্বভানের " সুহিত নিশ্চয়তার কোন সংখ্র নাই। 🕆 🤲 मन्द्रियामधीनक भारता छ छत्रभ भाकि वादिक वादिक नी ।

चौदता और निवकान एवं प्रमुख वृद्धि

अदिनारोट तथ केलीक-अक्रम-एन चराने कि खानिक मका नकरनद सक् काम गुना सदि, "স্বৰ্ত্ত" অৰ্থাই ভাষ্টেদৰ কোনটিকে অব্সিঞ্জ গুলুবুল্খনা হইকে বিভিন্ন কৰিয়া ভ্ৰুপ্তিলো ভাহার কোন মূলা নাই ছিছির বিকাশ যায় क्रिकारनद उत्कर्निहेंबु, उद्दे देव छानिक मंडेंबे -বৰ্তসূত্র মধ্যে হেরপে সার্কাদিক পুরাগ রহি-রাম্বে ভাহারই স্বধারণ এবং আলোচনা অভীষ্ট मार्गरनत भटक इतिरंभव छेभकाती। किन्छ যুক্তিহান তত্ত্তান-শাস্ত্র গতই কেন সতা 🧐 রীতি-সম্বত ছউক ন্যু—তাহার বিভিন্ন অব্যাব-সমূহের মধ্যে এমন কোন মণ্যতিক বৰ্ণ ৰ ই ঘাহাতে নকলেই মকলের সভ্যা-সত্যে ভাগী হইতে পারে। অভ এব মনকে ্রুনংয়ত এবং স্থাকিত করা ধেপারে মুখা সংকল্প, সেখানে যুক্তি-হীন শাস্ত্ৰ নিতা**ন্তই** [अंकिंक]।

শৃতিশৃক্ত শাস নাও যদি মতা হয়-শৃত্তির পরিচালক ৰলিয়াও ভাহার কৃতক্টা, সুলা **আছে। 🏗** 

তাঁর এক দিকে দেখা যায়, যুক্তি যুক্ত শাস্ত্র সভ্য না হইদেও উহার কিছু না কিছু ন্ল আছে। किश বুদ্ধি পুরিচালনা ছারা। ক্রান উৎপাদন করে। উহ্ন সত্যে পৌছিতে না পাকুক্—সতা-প্রাতির প্রাকৃত পথ অমুসরণ করে। হইলে হইজে পারে উহার অঙ্গ প্রতা-সতলি সতা নীৰে কিন্তু তথাপি সেই এক-একটি অস আছিতেও চরম বিপাকে উত্তীর্ণ কবিয়া দিবার এক একটি প্লাপ, অথবা ব্র-একটি নিবুৰচ্ছিন শৃষ্ট্যান উপন চর্ম ফলের এক-একটি কড়।। বুদি প্ৰতি শানের এক-একটি অবহাবতক শুদ্ধ কেবল একল এক এক টি শাৰ্শ কিলা কড়া/ বলিয়া ধরা বাঁৱ ভাহ। एहरना पुष्पादक भागी बात दन, किया निखास निकृत गाड् : दोनबा, अवैधिक सेश देशन प्रकारक का नाक कार्रा-वित्नात आनुष

রাখে, আর-এক দিকে ভোনি লানা চক্রাস্তৈর মধ্য হইতে অভিত্রেত 🦠 উদ্ধার করিবার 🦈 ৰে এক পরিটিটায়, ফালা উপান্তেল (এমন कि विख्लादन (८) तम अकात किटल लाखे कटब না, তাহাও তাহাকে প্রদান করে।

ত কাদের ক্লোব দুধ্ত ইহার আধ্যত্র 🤲 ्रिन चौष्ट ।

এরাপ শাস্ত্র ছৈথাৎ যাহা সত্য নহে কিন্তু যুক্তি-যুক্ত ভাহা) পূৰ্ব-নিৰ্দিষ্ট তত্ত্ব জ্ঞানের সংজ্ঞা পর্যান্ত অতু উচ্চে নাঙ্গাল না পা'ক— অনাবিধ শান্ত্ৰ অপেক্ষা (অৰ্থাৎ যাহা সভা কিন্তু ধৃক্তিহান, তাহা অপেকা) উহা উক্ত সংস্কার **অনেকটা** কান্ডাকাছি যায়। "সত্য <del>কাভ</del> করা হইতে**ছে** কিন্তু শক্তিরঃপথ দিয়া **নহে" এ**-টি খেমন তাত্ত্ব ক্লানের সং**ভ**্জা-বিরুদ্ধ কার্যা, "সভ্যে বঞ্চিত হ ওয়া হইভেঁছেই কিন্তু যুক্তির পথ দির।" এটি তেমন নহে। যুক্তি-পথ ভিন্ন সত্ত্য-প্রাপ্তির আরো নানা পথ বাকিলেও থাকিতে পারে, **কিন্তু** যে শাস্ত্র ভাহার কোন্টকে অবশ্যন করে,ভাহা আর-ঘাহাই হউক্ ন: কেন—প্রকৃত পক্ষে **ভাহা উত্ত**ান শাস্ত্র নহৈ।

ें नका विरा ब्रिक्ट इंडेरे ३ ७ ता हाई।

গোড়াৰ যাহা বলিয়াছি-তজ্জান-শা-জের সুটিই হওয়া চাই; উহার যেখানকার ষ্ত্ৰ প্ৰদক্ষ সমস্তই সভা হওয়া চাই; আর, ধারাবাহিক অকাটা যুক্তি পরম্পর। দার। खेश गुड़ान्यूबाक्ररण अभागीकृष्ठ इछ। हाहै। **এই গুইটি প্রয়োজনী**য় বিষয়ের প্রত্যেকেই অভিবৃত্তি ভর করির আছে, সেই পৃথলার ইয়ুদির আপনাতে আপনি ধর্যাপ্ত, তথাপি উভায়ে একতানে গিলিত হইয়া প্রছের আ্রু माच कुछुत्रा अकाहेर श्रमादनत अकहे। इति-খী। নেছ প্রতিষ্ঠিত করিবে। धमन एकि কেশা কি बेटनांत नाज शांक होड़। स्टेंट প্রকৃতি বৈজ্ঞানিক ফলের প্রকাশা কর। ষাইতে লাবে, তবে ভাহা এইরপ-শান্ত।

ভত্তানের প্রয়োগী অধীত হইতে পারে, বাক্যাবলী ভাগাইতে পারে, কিন্তু তাহার একটি অধারী যুক্তিগ্রু শারে, ভিন্ন আর কিছুই বেশা কিন্তা শেখানো যাইতে পারে, না।

এ পৰ্যান্ত ভৰজনে শান্ত **প্ৰতি নামা প্ৰচাৰীক্ষ** হয় নাই।

ভত্রিদগ**ের বির্চিত শাস্ত্র** স**াহের** সভাগতা বিষয়ে কৈলন কথা না বলিয়া, এ কথা আমানা অকুত্যোভাৱে বলিতে পারি যে, र्द्राट्मत (कानावेहे युक्तियुक्त नटह ; युक्ति-মুক্ত বলিতে আমরা এইরূপ বুঝি যে, তত্ত্ব-ক্ষি-শাস্ত্রের আদি হইতে অন্ত পর্যান্ত স্থাতি অক্টা প্রমাণের একটি নির্বাহ্ম প্রালা প্ৰায়িত থাকিবে—তবেই বলিব হৈ, ভাছা মুক্তিযুক্ত। পূৰ্মনূৰ্ম তত্ত্ব-পদীয়া তত্ত্তা-रमें श्रुर्कां जूरिंग श्रुरि श्रायमा नीत विचरवत अकरिक भाष्ट्रन युक्ट दकन केंद्रशत देखेन ना, किछ पूर्वितं गर्दरा त्यिष्टि त्वनी मन्द्रा छक छ **मि**जाख गा इंदेलिटे नम्न, (मरेणिक दे उँदिर्मी व्यवदेश्ला क्तियादृष्ट्न। यात, देशत कल সমস্ত পৃথিবীময় গভীর অসতভাষের অক্ট श्वीन-ऋटें छम्बिया छम्बिया आनाम् पिट्टेटि । নিম্ন পরিচেছদের কথাগুলি ঐ অস্ফুট-ব্রনির মর্মা-নিহিত ভাষটি সমাক্রপে ন। হউক যথার্থরপে কাক্ত কলিতেছে।

> विष्कारमञ्जूषा । विष्णुकारमञ्जूषा ।

ত নকলেই এই বিলিয়া আন্দেপ করেন বে, লাছে; এমন কি, বাহা লইয়া নিবার্থনা ভ্রুত্তান লম্মনায় ভক্ বিভক ও বাদাসুবাৰ তেছে ভাহাব কোন্ দিক্টাই বাংলাল করা ইইভেছে, কোন্ দিক্টাই বাংলাল করা হইভেছে, কোন্ দিকটাই বাংলাল করা হইভেছে, কোন্ দিকটাই বাংলাল করা হইভেছে, কোন্ দিকটাই বাংলাল করা হইভেছে, তাহাও কাহালে দেকল করা হাত হৈ প্লো-বাজির মুখ্য ইয়াই করা করাল কাটিছে। কেইই আন প্রতিষ্ঠ দৃদ্ধ লাভাহে বে, কাম্মনাই করা বিভিন্ন করা প্রতিষ্ঠ করা হাত করালে করা বে কোন্ন মুক্ত বিভিন্ন করা প্রতিষ্ঠ করা হাত করালে ক

THE PROPERTY OF PERSON AND चौरता हिंक् रेंग्रे, क्लान छोडाई होका रे ভারের বোঝা রাশীকৃত পড়িয়া জাতে,— প্ৰায়ত ত**ৰ্জা**ন-শাস্ত্ৰ কোথাও নাই। नाथटक को बद्दान दल। नग्रती होश्राटक टबर-বাসে বনা-জার,এখনকার তত্তভানের প্রস্থা वनीटके उकुछाम-भास वना व्यविक के ক্থা। এ সকল এছ কেবল আংশিক এই অসম্বন টিপ্পনী-রাশি,—চুর্ভাগা বশতঃ দুল এছে কেছ গে হন্তাপণ করিবেন তা'র ভো नार - कनना जारा कान चारने नारे। **बहै जनाई** मार्गनिक मंदल बंड लाएना যোগ; যিনিই তত্তানের প্রতি প্রকিক মলোনিবেশ করিয়াছেন, তা **डाहाटड जमस्डाय এवर जमार्था लिम्स्टिटी** अमन कान विवाहांमरनंत्र नाम-अन्तर्भे व খেগানে কোন বিবাদস্থল মীমাংসাধে সা পিত হইতে পারে। এমন একটি 🕉 नेरि रायारन ठिक्ठीक निदर्शक-डारेव क्रीनै-নিকু সমস্ত মতের সংহিতা বিনাত রহিয়াছে ভিষেশানে দার্শনিক তক্ষ্মিতকের মুল-স্ক্র ভালর সন্ধান পাওয়া যাইতে পারে। 💐 बना रुद् जान एधु (व कर्वन जेक्ट्री) मर्स्टीव তাহা নহে কিন্তু এইরূপ এক এছুত সংগ্রাৰ যাহাতে প্রবৃত হইয়া অবধি,কৌন যোগাই— क्रमाणबंहे वा कि भाव विश्वकर है है। कि কোন পক্ষেরই বিবাদের ভিতি মূল ব্রুম नरक ; ध्यम कि, वाहा नरेश निवृक्ति ट्या हारात देशान् पिन्तार हा नि कड़ा इहेटलाइ, कान पिकटाई वे किटक रहेट उट्ट जाहा अवस्ति हर के का बहे दर शूरला-राषित स्व देश देशक कर कर গভীরে পাত। আছে হেন, ক্রিকারে বাক नार्वत्र पृष्टि करन नव । (य रकान यङ्काला कता रहे जहां अवसार पहें हैं

ভাবে করা হয়, বিশ্বনে থে প্রাহা হয়। হরে নিজার কি দোষ যে প্রপ্রাহা করা হবল ভাষা করা হয়। করা হয়।

आवम, १कन दत्र दक्त की विद्योग, देशद काछीकात । किएम १

উপরে বাছা রাণিত ইইল তাছাতে কছুই

ক্ষান্ত্র ক্ষান্ত্র নাট বরং জনেক ক্ষাইয়া

ক্ষা হইরাছে। প্রথম ইছারা ভারবিৎ তা

গালে কথা আছিলা দিই—কিন্তু বাঁহালা
প্রেরির ঐসব ত্রারাধা ন বার-রক্ষকদিসের

ক্ষান্ত্রণ ভিতা কিলিখাত্র দহল্ট কাবতে
তাহাস পাইলাহেন, তাঁহারা আমাদের

ক্র কথার সহজেই প্রভায় ধাইলেন। ইহা

ক্ষান বিশ্বান ব্যা যে, ভত্তজানের অবহা ইহা

ক্ষান বিশ্বান হা ভাল নাই—তথন ইহাই

ক্ষান্ত্র ঘটিয়াহে, হিতাগতঃ বিরুপে উর্গ্রা

প্রথম – সাবারণ তঃ বল সাইন্দে পারে
বি, প্রবিশিক্ত প্রধান হাজেনিনার বিষ্ণানিব
বির্থানিক নাই উহার মূল, — বল্লানা সুক্তি-ছারা
লম্পিত ইয় না বলিয়াই ঐনি ঘটিয়াছে।
বুলি-ছারা নাম্পন করা কাহাকে বনে তাহা
কালে না দেখাইয়া, ভাগু কেবল কথায়বলিয়া,
বুলানো ঘাইতে পারে জা। কেহু ঘদি কাল্লানা ঘাইতে পারে জা। কেহু ঘদি কাল্লানা হাইতে পারে জা। কেহু ঘদি কাল্লানা হাইতে পারে জান ক্লান্ত প্রয়োগ ক্রমের কোন সাধারণ
ক্রমে প্রাচককে হয় তো এমন কোন কিছুই
লিখাইতে পারিক না ঘাহা প্রকৃতিইতেই
লিখাইতে পারিক না ঘাহা প্রকৃতিইতেই
লিখাইতে পারিক না ঘাহা প্রকৃতিইতেই

পথে তালোক প্রদান না করিয়া বরং অনৈক কার্ ধরিয়া ভাইক তাশ লালের পাশ ঘূচির মানা মুরাইক লইয়া বেড়াইবে। আর আর কার্কোর ক্রিয় মুক্তিও—করিয়ালেনা বুঝানো মানা-বলিয়া তেখন বুঝানো যাল না। তত্ত্ব-ভাইনিয় অসভোষ-জনক অবস্থার বালন তবে এইটিই স্থিল যে, তাহা মুক্তি ছালা সম্প্রিক হয় না।

যতক্ষন না তক্ষান বুক্তিগুজা-হাবৈতিতক্ষণ ভাষা হত্তে কোন মুকলের প্রত্যাশা করা হুবা।

যতক্ষণ পর্যান্ত ন। ভত্তর্জনিকে গোড়া হইতে শক্তরণে প্রমাণ করিয়া তোলা হই-তেছে ভত্ত্বণ পৰ্যন্ত বিবা**দ-বিশ্বশা**ৰ্ণ হ**ই**ভে ভারার বারে নিষ্কৃতি নাই; ত্তক্র পর্যান্ত বালা প্রতিবাদীর মধ্যে কলছের বিরা**ম-প্রত্যালা**। দূরে থারুক্ একজন এক কথা বলিছেছেন -আর-এচজন আর-এক কথা বৃধিতেছেন্-ত্রাইরূপ বিগরাত অগ-বোধই জ্বয়াগত চ**লিতে** থাকিবে। মব নাবিক ভিন্ন ভিন্ন আদেশ অকু স⊦রে, ভিন্ন তিন পথে, ভিন্ন ভিন্ন বারু**ন্বলে**, পালি ভরে ছালয়াছে: আরে, প্রতি**অনেই** আর-সন্পোর স্থিত এই বলিয়া কল্ছ কিরি তেছে 'কেন ভেষেরা অষে'র সহিত্<del>ত এক</del>' भट्यं मा गाउ।' हेश चटलका चादा। উত্তম রহস্য এই যে, তত্ত্তজনের **এখন কো**ন: बक्त को जा नारे पहाएउ छ छत्र अर्क अकरे খেলার প্রায় ভ চুই খেলোয়াড়ের ম্থেন জয় প্রাজ্যের খুন্ই ধূম-ধাম, চলিতেছে, অঞ্ উভয়ের মধ্যে এক্জন খেলিতেছেন সতর্ঞ আর একু জন খেলিতেছেন পাশ।,—এ ছুরাই ৰা কিরূপ, আৰু এ পরাজয়ই বা কিরূপ, তাহা বুঝাই বাইতেছে। এইরপ স্টে-ছাড়া সংগ্রাম্বর করেব আর কিছুই নছে-তত্ত-कार किए। हैरेल पुकित्वार लगा করিয়া ভোলা হয় মাই, তাই বাদী প্রতি-वानीय मटबा अमम दक्षाम् माधावन विवाप यन

খুঁজিয়া পাওত সার না, শীহা লইয়া উভয়ের যাবে বোঝ-পড়া চলিতে পারে।

७ ४ छाटमत मूथ-द्वार अर्थार मूरकाय ।

মহায় যত অগ্রাসং হইগাছে তভ্তানের দুশা তৃত ভাল'র দিকে না খাইয়া মন্দের ि भिरकटे खानमा रहेगाइ। हैशाए। इटेर्सर, গোড়ার মূলত ভ্র-সফলের মীতিমত স্কর্থারণ नाहे-राठाव युक्ति भादा छ। हे नाहे रहन করা নাই—অথট বিশুদ্ধ বিজ্ঞানকৈ আগে আৰ্থে ভাড়াইটা লইয়া চলা ইটাউছে, এরপ করিলে সভেতে গাতে ওল যাহ। জড়ানো আছে তাহা তো আচেই, ভাহার উপর অ(রো বস্ত্রের পর বস্ত্র জ্ডাইয়া দেওয়া হয়। ্তত্ত্তানের প্রত্যেক জিজাসাই য'র এক কি**ভারেনার** জাবেরণ। •চরম (আমল ন-রিতে গেলে আহিন) জিজাসাটিতে উপনীত হইতে হুইনে এ সমস্ত আরুত-আবর্ক জি-্তাস্তলিকে দ্রাইয়া ফেল। আবশ্ক। বহিরাবরণটি সক্ষাতো আমাদের সম্মুখে দেখা त्म् तरहे, किस जालादकं धतः छोणात नीरहत নীতের সমস্য আবলে গুলিকে যে পর্যান্ত না আমরা সরাইটা ফেলিতে পারি, সে পর্যান্ত আমরা,ভাহাদের কাহারে৷ প্রকৃত মর্ক্স অব-এক জিন্দ্র**ংসর প**র পত হইতে পারি না ৷ चात्र এक जिल्लास शिनिष्टे आरमन-रिनि **टकवल मर्ट्या**পतिष चावतगढि खक्कारन महा-हैश्रा (किमिश्राहे कान्छ इ'न,--नभए जातवर्ग-जिल्क एवं अदक अदा महाहेश (क्ला जात-সে দিকে কাহারে। ক্রন্তেপ নাই; हेहात कल धार हर तथ, जिल्लाम गाकि श्रथम আবরণতির ভটিলতা মোচন কলা দূরে ধা-कूक-छोहात्र शास्त्र धक (जीह तक बाया-हेशा (मान, देनमार्गिक आवरत्वत उर्वत अनक कि वायत्व कामाहेश ग्राद्यन, - देहादक সত্যের পথ পুরোপেকা আরে দটির ক্রিয়া क्रिक्त वह कांत्रत्य विश्वन विश्वन दर्शन कार्य

লোবের সমুখে উপস্থিত হয় না বাহা रेनम्भिक अदश कृष्णिय नांना हमारवरन उदक শুরে গার্ত নহে: আর, এই সুরুমুকোরে মংখ্যা ক্রমাগুরুই বাড়িতেছে: লোকে সতাঁ जीलारे गरन करत ता छड़ कल जारक कि ना- १७ এक है। उद्घल्तारं न इ कि कामी विषय, অপনা কোন কুকালে (এজসসা বিষয় ছিল 🕼 किस्तामाणिक्षांत किङ्गे नर---तानि-तानि भूटकारमञ्ज अक्रो ७,२००१ म माज । अनिरक मा महाहरन ७ हुए ७ छ। तक मूथ-प्रमंन शाख्या कुपति। याद ७४ति खानकाया--যাহাকে ভত্তজানীরা "সহক্ষতিত শূতই নান প্রদান করিয়া স্থগা হ'ন—তাহাও বেকটি মুকোষ (শ্রমন কি মুকোনের সমস্ত পেকিনি-কে-দোকান বলিদেও হয়); কিন্তু ঐ শঙ্গেল টির অর্থ ভাঁহার৷ সিক ঠাব্ কি যে গেবেক — রগেশ রাশি সাজন্মজ্ঞার নিগাঁড়নের পিতেই বস্তুটা যে কি তেএ বার্কাটি কেহই লাঘর দানক क'त्रश । जामिनरक रतनम मू', ग्रांशास के इन কোষনুৰো অভাত-বৰ্গেটিক ভাড়াইয়া গিয়া ভূ-পাত্তিত করেন, তাঁহারাও তাথা বলেন না ভার সংখ্যম ভা**ল কথা**স উত্তার পাহিত আ লাপ করেন, উছিরিও ভাছা বলেন না ফলে, একথা স্থানিশ্চিত গে, এই চুই-সংশ্ৰ বংসর ধরিষা কোন অমুধ্য একটিও দার্শনিজ্য जिल्लामात त्रका-मार्टात मुखीव मूर्ति आर्कीः अशिख (पर्यन नारे।

मर्गटनत्र पूर्वा प्रमुख्या 🖯 🗥

এরপ যে, কেন হয়, তাহার মীমাংসা এই;—লোকে ভাবে যে, সন্মুখে প্দার্পণ করিলেই তত্ত্তান পথে অগ্রসর হওরা যায়; কিন্তু বাত্তিক এই যে, সে পথে অগ্রসর হইতে হইলে পিছাইয়া চলা আবশাক। আগে আমরা মূলে না যাইয়া, অন্তে পৌছিন্ বার জনাই প্রয়াস পাইয়াছি। তত্ত্ত্বানীর। মূলতত্ত্ব-দকল করায়ত্ত না করিয়াই সিফান্তের

ৰীৰা-নাম প্ৰায়ত হইমাছেৰী টিহার প্ৰকৃত विद्वान अरे; - मार्निनक कर्म खनारिश्र मान मलना कृषि, -- किस मेम्राम विन-अका ए बर्डिंग হুইলেও তাহার নায়ে অত্রেম্ক একটা বিপ্-লায়তন তৃষ্পরিক্রিয়া মণ্ডল হইয়া উঠে না। ममुन्ति हिन्दाव बी्ब-शाक् मम्नाय युक्तिक मूल जुन्न, र मम्पाय चुनुद्रम् से विवस्त छोवी मूल উপাদান, সত্যের স্মস্ত চানি, প্রথমে আমা-त्मत्र भारमञ्जू नीटक्ट्रे माणि काभा थाटकः किन्तुः তথন ভাহার আবি্ফারে স্বামাদের অধ্কার नाहें। जरव बामाफ्निक मनस्य मधनहिं পরিভাগর করিতে হুইছর, —দিশনের সমস্ত ত্ত-ক্ষাও পরিশ্রান্তি পদে পদ্যটেন করিতে **হইবে** । এই জন্য আমাদের প্রজ্ঞাক পদক্ষেপই আমানিলকৈ লক্ষা স্থান হইতে দূরে <sup>প</sup>দূরে कर अध्यक्ष । विज्ञुका**ल भएत्रहे भएजा**द वी**ज** বাড় বকল-বাহা শামরা অক্ট্র আলোকেল ২: লড়াইয়া বে**ড়াইতৈ**ছি<del>^</del>তাফা স্বহনুর প-কান্তে পড়িয়া থাকে, অগচ আমরা মনে করি যে ভাহা সন্মুখস্থিত দিক্-চক্রবালে হাঝ বা ঝিক্মিক্ করিতেছে। পরিত্যক্ত গৃহ-দৈবঁতার নাায় তা**ভ্যতে আম**র। অনেক দূর ছাড়িলা আদিলাছি, **অণ্ট** তাহা আমরা कानि नोत उद्ध भागना नम्हर्थ एत के-বিয়া এমন একটা পথে চলিতে থাকি—যাহা हिंद अथ वर्षे -- ना- ७ वर्षे, क्रिक् अथ नह, কেন না প্রত্যেক পদ-কেপেই আমরা সতঃ মইতে দুৱে পড়ি; ঠিক্ পৰ, কার্প তাহা িল আর আমাদের পঞ্জি নাই। যাইতে ाटि तथन द्यशान प्रामात्मक भा थात्म, ति सानरे **भागीतित भाजिक भौ**का ७ छैत जिस्ता पर्नीन मागरेंद्रद '' বাড়াীয়ে। বদায়। मना-नथ नाव वहेट ना वहेट वामाटनव नव अदक्षाद्वर माग्या यारेएक भारती स्थ-त्न दे छेश्रवि जान क्टेंट जारवाजादन केंद्रीन रहेर्न मः नदम्ब यन चंछ। आसारम्ब भरव

প্রকার করিয়া বসিত্রে পারে নবং নিরাপুরে ক্ষিকা আমাদের ক্ষোগে নিকাপ্ত করিতে পাতে প্রথম যে আমর। পি: - িস ভাহারও (को नुष्टिक्त <u>अथन आगत्। अस्त ह ते हु</u>क **उन्याभूरम छात्रहा जिल्ला मग्रह निप्र ।** सर्वेत्र মধ্য দিয়াভিড ঠেলিয়া চলা ভিঃ ১০ 💠 পরি নাই। ভৌতিক অগতের ন্যার লৈ 🕞 নিক জগৎ একটা গোল পদার্গ; যে সম্বে পরিব্রাজক মনে করিতৈছেন যে, তিনি মণু-মোর অধিক্রি ছাড়াইয়া দুরত্ত্বে চরম মী-থায় পৌছিয়াছেন, তাহার পরক্ষরেই তিনি দৈখেন যে, তিনি আপুন পুছে বিরাজ্যান। তিনি খুরিয়া ফিরিয়া আবার ভাঁহার সেই ১ ল স্থানে আসিয়াছেন। আবার তিনি তাঁহার চির-পরিচিত প্রাতন গাইস্থা জবা নাম-গ্রীতে পরিবৃত্য কিন্তু এখন চির-পরিচয়ের অবজ্ঞা অস্কুদৃষ্টির অভিজ্ঞতায় পরিণত হই-য়াছে; তত্ত্বভানের পরিপ্রেম তাঁহাকে সবল করিয়াছে; এবং তত্ত্ব-চিন্তার ফল ভাঁহাকে বিজ্ঞ করিয়া তুলিয়াছে। এখন তিনি ভূমি थुनन कतिया मह्छात 🗯 वि 🗟 कांत्र कतिदात्रे, অধিকারী ; এখন তিনি: জ্ঞানের বীক্স-ধাতু-«সকল **দেখিতে** এবং দেখাইতে সু**মৰ্ঞ্** এখন তিনি বিশ্ব-জ্জাওকে নৃতন এক জ্ঞান-ী জ্যোতিতে উত্তাসিত দেখেন। প্রথম তিনি ৰে জোতিতে 'দেখিতেন—এ **জ্যোতি** তাহা অপেক। বছ-পরিষ।দে বিশুদ্ধ এবং অকুর। এইশানেই তত্তভানে এবং সহজ্ব ভানেঃ কোলাকুলি হয়।

> नकेरनम रंगावीज उच-खेनि गकरनम रन्दिर वाहिक स्था।

তত্ত্বভানের ক্রিক্টান এবং সাধারণত:
অসম্ভোষ-জনক ক্রিক্টার কারক এই সে,
কোন ভত্ত্বভিজ্ঞাম বাজি মুলে পৌছান
নাই ইটারও কারণ দর্শানো ফাইতে পারে
নাই ক্রিক্টার কারণের জনা কোন মনুষাই

দায়া নহে কেন না তাহা প্রকৃতির একটি

শবশাস্থাবী নিয়ম; সে কারণ এই বেই
প্রকৃতির গশাসুতে যহা প্রথান করেন গশনাতে তাহা চর্ম । প্রথান করেন চনা একদিকে যেমন করেন প্রার-এক করেন দার ছইতে অব্যাহার জের, কার-এক করেন তেমনি— আরু পর্যান করেন উত্তর্গনের বর্ণ-প্রকৃত্তির সাঙ্গ হইল না, ক্রনই বা মুক্তিহার জন্মান্তের এজ সংখান্বাহলা— শব্দ তের-জ্যানের ক-থ শিক্ষা এখনো বারি শক্ষি আবেং ইহার ক্রেণ স্পরীক্ষরে প্রার্থনি করে। উদাহরণ ঘারা এই বিষয়টির মুদ্দিন করে। উদাহরণ ঘারা এই বিষয়টির

ें जाबा जनर का कन्नरणब जेगारबर्ष ।

যত প্রকার নূলতত্ত্ব আহে সমস্তই দ্বিনে উদ্যাসত এবং স্পর্করপে ব্যাখ্যাত रेराव दल-श्राति लाकमग्राटक जालनारमञ् প্রভাৰ সম্থন করে ও বিস্তার্কলে এবং कारकार्यः चार्या गाशृष् रहे। जाया ইত্রে একটি প্রধান উপমাস্থল। ব্যাকরণের মুন্তব্-থান ভাষার মূলে এচ্ছন থাকিঃ। ভাইর সংগঠনের উপর কর্তৃত্ব कि हैरात्रा-मकरन अक्तकादतरे स स कार्या जम्मानन करत । देशार्पत्र कर्ज्य-वर्ग जारा যখন আকার-পরিগ্রহ করিতেছে, তখন কোন द्रशत दे प्विक्रारमंत्र छन्न कार्यात्र प्रक्रि-ৰান্ধি 🛊 জিয়া পায় না। তথাপি বিনিই कार्जीशा-कर्ण जांचा कावशत करतन, जिनिहे ৰ নকৰ ব্ৰত্তে বভূত—অথচ ছিনি हाटनंत्र अस्टिट्यत विन्यु-विन्यर्गा अध्यमिक ক্রিয় না ভিছাদের উপাছতি এবং व्यक्ति व्यक्तिमा हरेगाइ वह मृद्दर उशासक FILLS CALL CASE SE নাধি ক্ষেত্ৰেল ভপ্ত; **উ**হার ব্য ক্ষান্দের স্বলোচর ্

हत्य नार्ड चनचित्र छारव सम्बद्धाता अक বিশ্বন কাত গাবেৱাপান কৰিয়া উঠে, एमनिक्शिक्षेत्रभाषी-धनात्रा। जात्त्र कक्र्र वीक निकित्व इंहेरकः तमर्थः नांद्रे-चिन्द विक्रुरताकाम काशास्त्र। हर्ट्य शर्छ नारे-কাহারে। হস্ত আরণ্যক ক্রিউটির মূলে অল-ষ্টিঞ্চন করে নাই, ক্রম-বিবর্দ্ধিত দেহ-পৃষ্টি 😉 ছায়া-বিস্তারের কোখাও কোন লিখিও নিদ-শন রক্ষিত হয় নাই—আগে এসব কিছুই रम नारे, किन्छ जाशात शत यथन गाँतमित्कृत व्यन्तकाया-छनि भतिहा निःद्रनिष्ठ हरेन, অক্সাৎ যখন ভাষাটির পূর্ণ অবরৰ জাবরণ-মুক্ত হট্যা সায় মহিমায় সম্মুখে দভায়মান হইল, ভাষার পরাবে পরাবে বর্ণন শুর-বীয় পুরুষগণের কবিতা, তত্ত্বজান, ধর্মশান্ত, পঞ্চি আৰুট হইয়া উঠিল, সভা জগতে ব্যাসংখ্য কাব্য সাহিত্য এবং দেশনৈর ফ্রন 🖼 😘 নিপতিত হুইতে লাগিল—ডৰ্ল ভাৰ্টী ধুলের খেঁজে পড়িল।

त्वना चारनको चार्जना म्हें গেলে তবে: ভাষার **বীক্ষতত্ত্বভাগির সন্ধান** त्मत्व ७ छाराज्य वाक्षा विश्व रहा के अहै সকল বীত্ৰ-তত্ত্বেরই প্রসাদাহ ভাষার উৎপত্তি **এवः छन्नाक् हेश्राहे जाया-मः गठत्नव म्य** नियामक; अके काजन चरेना किहरे कि कि नरह रव, के भव मूल-छन्। बाद्वादक उन् সিত ও ব্যাকরণে লিপিবছ হইবার বহু প্রে ভাষার লোকিক ব্যবহার লুপ্তাবশিষ্ট্র পরি পত হ**ই**ইছে। এমন যে আছি বিশ্ क-पना, रेरा ७ ভाষার अरेशकि अनर सार्ग রের সহস্রাধিক বৎসর সরে তবে লোকে यत्न ଓ तमनाग्र न्याहे पहिचाकि लाज करि ब्राट्ड ; ज्या के ज्यान कात, ब्राट्का के সার-ভূত বীজ-জুলি,ভাষার উৎপাত্তর গোড়া-**एरे हिन** 

श्रात-नाव्यत्र क्षत्रावनः। नार्वि-भावः कात्र-व्यक्तिः स्ट्रीकः ॥ जन्मव E STATE OF

হিত্ৰ নাত্ৰ-পান্ধের কোন নিয়মই অক্তিত নছে—যুক্তি-প্ৰক্ৰণ কুছিনেক বলে তাছাও আনে না— সে তাছাৰ বছ-পূৰ্ব-ছইতে প্ৰক্ল-বান্ধ্ৰণ্ডন যুক্তি খাটাইয়া আনিয়াছে। আদি কাল-ছইতে প্ৰত্যেক যুক্তি-বাপোৱেই ন্যান্ধের মূলতত্ব-সকল কার্যা করিয়া আসি-যাছে, অথচ গোডন সে-পর্যন্ত না যুক্তির অবস্তব-গুলি তল্প তথ্য করিয়া প্রদর্শন করিলেন প্রবহ্ন সহজ্য ও সামান্য চিল্লা-কার্মের নিয়্গা-ব্লী বিহ্নত করিলেন সে পর্যন্ত সুক্তি কার্মী ভাহাব প্রভাব ভিন্নাল। উপলব্ধি করে নাই।

#### तारा निपाधन विकास स्वत

- मर्गामन-नतीलादाङ । दे याण-जिल्हात ীপন্দি ক্ৰেৰ জ্বাশ সংগ্ৰহ স্থা क्षका विकित तकरमा। स्थेतिक शासानिकार **সকল্**রিলিবস ক্টলার এর ও বা, ভারীন क्षाम् अविकार तकः । भूषकः (तत् १८ छ। हिन्द्रतः ট্র**তারে** উহরে কা**র্যা** গলিতে থগাল। লিখিত **ল্ডুক্তি-পান্ত** বিছু খান মাজ দিন্তন গঠি কলে মা,— দেবে বিজ না সেংও মূলতভূ পূর্বের্ছ আল্লিন্ড নে লেকিড বলহার লিগ্যেত করিভ—লিপত শী সেই নিয়ম গুলিতে স্ট এচাৰ যেশাতা, এক শাস্ত্ৰ প্ৰাসন পরে। সংক্রেপে, রাজ **নিয়স সং**স্থাপত বান্ধার বৃদ্ধরে উহা লোক भराहेक विकास । थारक-स्टलाक-म्भाजरक পরনত করে। ইছা স্কুস্পন্ত এবং পরিপাটী শন্ধলাবিশিষ্ট অবয়ৰ ্ধারণের পূর্ব্বে অব্যক্ত এক প্রাক্তির ভাবে করি। তক্ত তির পংজিতে উহার সকলের আলে पाहित, कारमत श्रीकरक केशात मक-লের পেবে আইলে; কার্যের ক্রিব সূক্ত লের আনে আদিয়া উপস্থিত ইয়াজননে খায়ত হুইবার স্ময় সকলের পেরে ছেখা

· 电多型性研究 4 4 4 4 4 4

তভ্যান-স্পাদেও এক 🕟 পদ্ভাবের प्रा-फह छनि-मगक निष्णा १८० भारतेत **बिक-शाहर (ब्राग्रि—-** 213 किंग । १८५५ र श्रीराप **मर्का-श्रिमालीकरू, ७**०० हरू । पर ११ - देशहा मक्र मंह , एती । ु ए खुळान 🕝 🐈 र ल्या मा रेनडनानिक स्रक्षित मर्गा ए १८ । १५० ६३ থে, তত্ত্তানের মূলতত্ত্বকল গেম্বা কানেট गर्क-१ थम मस्यान - (एमनि हिस्स। भवदः -**ल्या जानि**न्तानि ग्रक्ति। खुटाल अध्य क्रेट्रिज **উদ্ভ হ**য়। উহারা মন্ত্রনের সংধারে রায়-**দমূহকে আন্দোকের দিকে** বলপ্রতি জালিখা ি কৰে অথচ আপনাৰা পশ্চাতে সন্ত্ৰিত হইতা वाष्ट्रात्व शहक । अहे दय क्यां विकास तथ, प्य**ित्र स्थार म**क्यस्य ४ व्यक्ति -- १ हिन ্জিতে তাহা সকলেৰ প্ৰান্তট্ন নাপি এ নিয়মের বাভিচার নাই। ভাই আৰক্ষা বাল বে, বিজ্ঞান পৰচাৰে চলিপাই, खगत। या**रा खादा। ठिक्**रहिंग कितिहा প্রান্তে আসিয়াই, অএনত ইততে পারে; লন্**র ছ**বিয়াৎ কান্ট্র অন্যতি জভীত কা-লের্রহ্সা বিছের জবিরত পারে। জার, मनुवा सर्वातम्य मन्त्र १ ५००० व्यव स्वयं स्वयं स्वयं তথনই মনিস্কান হয়, যথন মেন শেও চিত্তা-চক্র পরিভ্রমণ কবিশ্ব, গভার ভয় শক্তর বি, জ এবং স্বচ্ছ চেত্রে সমূদ্ধ হইয়া, স্বস্তানে ফি-রিলা, আ**দে,— আদে** কেবল তাণার আদিয় **অভ্যন্ত অ্যা**য়িক মহিমাত নিমগ্ন হ্ইডের। অশ্বালা ।

### চরিত্র।

ধশের প্রথম লক্ষণ ধারণ।। মুনোরতির তুই প্রকার অবস্থা অন্তর্মুগ ও বহিন্মুগ। প্রথমটা বর্মাধনের অমুক্ল, দিতীগুটা প্রতিক্র কুল। মনের যে বহিন্মুখ ভাব, অথাৎ বিহ-

বের প্রতি ভাষার হৈ দৈর গতি, ধর্ম তাহা शातन या ह्यां करता। हेहाहे धर्मात वायगं नका। कि प्रात्ति यत्नत अहे देशकारी নিবোধ করিবার নিমিত ুশরীরকীয়েবনের यनि हेट्टा रन द्वा नहीत वावश्रा क वन। प्रकार कर ता अन्य करनेकी नित्यक का এবং নে অবস্থাৰ ভাষাকে যে দিকে বিজ নিয়োগ করা দুহিতে পারে; কিন্তু বাত্তৰ ध्रीश मार्ग द्वा यटनत अवनी शात अवमानना প্রা হিন্ন। পরি স্বরং এই কার্যে অসম্প্ বিলিপ্ত বিন একটা বাহা শক্তির আ্বশাকর্তা প্রীকার করা হয়। আর গদিও স্বীকার কর শিরীরশোধা ধর্মের একটা অভীপ্ত সিদ্ধির খন্য, ইহার্ড ঠিক নয়। কারণ ধর্মের প্র-ভাৰা মনে ৰে পতি আনে মনের পকে ুইছা ভােু শিকা অধাৎ অভঃদ স্বার, ইহা ক্লিছুতেই **যাইবার**্নয়। কিন্তু শ্রীরশোষণ প্রভৃতি উপায় মনে যে গতি আনে তাহা ৰাছা ব্যাপার মাত্র। ইহা শিক্ষাও নয়, সং-ক্ষার**ও** নয়। স্কুতরাং কারণের অভাবে<sub>ক</sub>চালে এই কার্মের নাশও <mark>আছে। স্</mark>তর্কী **য**দিও আও ইছা দারা কো**ন ফ**ল হয় কিন্তু তাহার স্থায়িতা নাই। পুরাণ পাঠে দেখা যায় কোন অধি দীৰ্ঘ কাল অনশনে শরীর শোষণ পুর্বাক গ্রীপ্রের উত্তাপ, বর্গার রৃষ্টি ও চুরন্ত শ্বীত সহা করিয়া মনোনিগ্রহে যত্ন করিশ टब्रहम कि छोटमालया अक निर्मास क्रीहात मगल आयात वार्थ कतिया जिला। निक सानीनिवादि हैश (व श्रृष्ठ भव নয় প্রাচীন ক্রিয়া ইসিতে তাহাই বলি-খাঁছেন। ক্লার'র একটা কথা এট, ভাহাই. श्रम निक्ति बोर। नश्य नश्य बिताधी শতিক বিষয়ে অসর পাইতে পারে। এই कता क्रेडिम दक अध्यादिक निर्देशस्त्र शतक चनगरक क्रान्**कालम् स्ट**न नारे। जिनि

হন কিন্তু বিলাস মন বিরোধের প্রেক ধর্মবেলই পর্যাপ্ত । আর মসুও বলিয়াছেন শরীরশোষণ মনের শিক্ষার প্রেক্ত প্রসার নর। অতএব ধর্মই আমাদের
মনোন্তবির বিক্ষেপ ভাব দূর করিবার এবং
তাহাকে বিষয় হইতে প্রত্যাহার করিবা
বিষয়াতীতের প্রতি লইয়া সাইবার প্রেক্ত

দিতীয় লক্ষণ তেলেনা। ভাৰ্থা**ৎ কর্ত**ন ব্যার্থে নিয়োগ। মনুষোর কি সঙ্গট অবস্থা। হতীতের কোনও পদান্ত নাই, ভবিষাৎ নাতিপরিক্ষুট আলোকে, দৃশাসান একটা গভীর অন্ধকার। আর তাহার ব**র্** बात्न এই तिन्छीर्व भःभातः भःभात स्थ कि श्राट्टानिका किছूहे द्विवाद त्या नाहै। ইহাতে কেবলই বিচিত্ৰতা। প্ৰীতি ও বি-क्ष्मिन, भाभ ७ श्रा, इर्घ ७ विद्यान, याखा ও রোগ এইরূপ নানারূপ বিরোধি ভাশ ইহাতে পর্যায়ক্রমে আসিতেছে ও বাই यनुषा नाना প्रकात जिल्लाकाशा-কারণ সূত্রে আবদ্ধ। মনুষ্য-স্মান্ত্রেরও আপাদ মন্তক পরস্পরের বিরোধি স্নার্থে জড়িত। এরপ অবস্থায় ধর্মের প্রেরণা-শক্তি ভাহাকে রক। করিতেছে। আমরা ধর্শ্বের উদার বক্তে স্কল সার্থকে সমবেত দেখি এবং তাঁছার প্রেরণা অনুসারে চলিয়া থাকি। ইহাতে सारर्थंत सरका शहरकात विस्ताम ज्ञान एक এবং সংসারের স্থিতিও অব্যা**হত পাকে।** ইছাই ধর্ম্মের প্রেরণা। 🗼

এখন ধর্মাকে বাবজেদ করিয়া তুইনি ভার পাইলাম। প্রথম ধারণা ক্রিক্তির প্রেরণা। ধারণা-গুলে মকুরা মনের প্রস্কৃতির ক্রিয়া বাকে। আবার ধর্মোর এই তুই উপায়ান মতুবের চরিত্রের ক্রিছি ছারণ ক্রিকেন্ত্রের চরিত্রের ক্রিছি ছারণ ক্রিকেন্ত্রের

aের ভিতর্ভ <u>তেই</u>টা শক্তি অলকিত ভাবে त्रहिशादक। अपन, द्वित वस्राथा स्ट्रेट अक-তন্ত্র কোটিতে অধাৰমায়। যদি ভোষার ক্রি বছ বিষয়ে বিক্ষি প্রশাকে উত্তৰ দেইরূপ আছি-রতার অবস্থায় তোমার কার্যাপ্রতি হইবে না। একতর কোটিতৈ—কোন উন্দেশ্যে তোমার স্থির হওয়া চাই। ফলত ইহা ধর্মের ধারণাগুণে ष्ट्रिया थाएक । विजी प्र निहात शुर्म्बक कार्या। অর্থাৎ অকার্বা হইতে কার্যাকে পুথক করিয়া ভাহার অনুষ্ঠান। ইচা পর্বাল প্রেরণান্তবে **इहेरा थार**कः वक्करम कथः १४८ मकर**ल** हिक्किन वान इस न। (तन। इंश्टियक उखत आर्थ-পরত।। সার্থপরভার লাঞ্চুপ্তি আছে। কিন্তু চরি এবভাগ অনেক জ্যাগস্থীকার চাই। অবার এই ভাগেষাকার যে কিরূপ কঠিন ভাষা বৃশাইতে ধ্ইলে সমুব্যপ্রকৃতির বিষয় **ডিছু বর পারশ্রক। জগতে তুই প্রকার ভার** ভন্মদের **কতকগুলি কঠোর আর** ৰুত্তক্তি কোমল। বে**গুলি আভিতৃপ্তিক**র প্রস্থার বিরোধী তাহা কঠোর। ইহাকে আ-নর। নাতি বলিলা নির্দেশ করিলাম। ে গুলি **আশুভৃত্তিকর প্রস্ত**ির অনুকূল ভা**হা** কোমল। ইহাকে ভোগ নামে নির্দেশ করি-नाम। यनुषा अकृषि धरे पूरे जारवन की ए-मक ४ हेश। जारह। किस रा छाङ्कि जामू-লত কঠোরতার লৌহম্য ক্রোড়ে লালিভ হয় সে কোগঁলভার অভাব সহিতে পারে। আর বে ভারুতি আমূলত কোমলভার প্রাল্লান্ডরণে পার্শপরিবর্ত্তন করে তাঁহার পক্ষে ক্ষিঠোরতা महा इतना। जगरु औ छाउँ रनदः। **उटेर क्थन कथन य रेक्ट्र गुल्कित (एथा** याम काश निकात कन स्वतार वितन । स्थन দেশ ত্যাপসীকার বনিতে কি বুঝায় । না, জ-গতের যে সমস্ত কোমল ভার মনকে অধিকার " করিয়া আছে,বাল আতত্তিক সেই ওলির नयक्रता । रेश जनना क्रिन सानात ।

কারণ যে প্রকৃতি আমুলত কঠোরতা দূর **শুইতে** দূরে পরিস্থার করিয়া **ব্যক্তিকর কোমল ভাবের বিন্নিয় ভাহার**ু किहूर है मैं श दश ना। कन है हा यनि ? पूक्त कि**ल्याम्बर्ग** नरश **्ष्ट**त এই विक्तापि वार्गिक्तं मीगाःमा जात्हा जः মরা ইতিপূর্কে **আম্লত** একটা কথা ৮-য়োগ করিয়াছি। তাহার উদ্দেশ এই যে বালাই অভাবের প্রকৃত কাল। সংস্কার পাধাণে অন্ধিত রেখার নাায় কিছু-তেই যার না। যদি বাল্যকাল হসতে কঠোর ভাবের সভিত পরিচয় হস, তাহা হইলে दशेवत्म जागश्रीकारतत् किसूमाच यञ्जन। নাই। এই জনা প্রাচীন ভারতে বালোই অল**চৰ্যের ব্যবস্থা** ছিল। শৈশৰ জাল হটতে কাষ ক্লেৰি-লোভ প্ৰভৃতি প্ৰহৃত্তি গুলিকে मगम कतियात जना शक्त-ग्रुगार्टिश जिकाब, তেজোগাতু নিয়োগঙ বিলাসকল। পরিহারের ব্যবহা দেখা যায় এবং আপনার স্বার্থকে ভুজ্ঞ করিয়া অন্যের সার্থকে বলবং করিতে ভাষাণাদি বর্ণজ্ঞ বাল। হইতে Creman ! **७रेद्र**(भ भृषिदीत चंद्रशांद चाव मकन **चा**एख ক্রিত এবং ইহারই বলে যৌরনের উদাম প্রবৃদ্ধির উপর ক*্*ছ করিতে **পারিত**।

শালো কিরুপে সহনীয় হয়। আনি এই
টুকু বুঝাইবার নিমিত প্রাচীন অক্ষচর্যার কথা
তুলিয়াছি। পুর্কের ধর্মা ও নীতিকে এক
পর্বারে বুঝিত। তখন বালা হইটে ক্রুল
যে ইহার নিম্নাংহছে তাহা করে নিম্নার
স্ ত মানুষ্ঠানত মুপরিহায়। ইলা আনা মে
কার্য ভাল লাগিতেছে না অভ্যানের বলে
কারে তাহাই জীতিকর হইনা থাকে সহজে
হয়। একটা দতা মানুষ্টানিক মুপরিণ্ড অব-

ৰায় ত্ৰি যে দিকে ইতানোডাইতে পাৰ কিন্তু পৰিণত হইলে আ গৰিবে না। ফল্ড মনুষ্বোর প্রকৃতিও তদ্ধে। মনুষ্ঠান তরুণ থাকে তথন ভাহাকে তে দিকৈওলার দিতে হাও পারিবে কিন্তু যথন কৌবনের নানাভাব আদিয়া ভাষার উপর আধিপতা কবিতে থাকে, ব্যাস কিন্তু সকল ভাবে পুত্ত হয় কিন্তু ভালি সকত করা বড় মুখলাক কানা। অত্তর বালাই কঠো-

কিন্ত এখনকার সমাজের অবসা কি
লোচনীয়া খবন্য, লোকে ইং। লুকিয়াছে
কি বাল্যকাল হইতে ধর্ণাশিকা দেওয়া আব কি বাল্যকাল হইতে ধর্ণাশিকা দেওয়া আব কি বিন্তু সূক্ষা বুলিতে গেলে ধর্মের কিলাতে নয় অনুষ্ঠানেই কঠোরতা। বর্তুমানে ভাষা সম্পূর্ণ উপেকিত হইয়া খাকে। একে ভোএইরপ কঠোরতা শিক্ষায় উপেকা ভার উপর আবার জীস্ব বালা-বিবাহ। অত্যাং এই ভোগপ্রবণ কালে চরিত্র কিলেপ সম্ভব হইবে। আর যদি চ্লিত্রই না থাকে ভালা পুথিবীতে ধর্মের স্থিকতা কি, উপব্যোলিতাই রাকি।

# স্পরিক উৎসব উপলক্ষে ব্যাখ্যাত।

শালে আজ কি বলিতে আলিয়াছি।
আল বাদলে এখানে, আনলখামের কিন্তুন,
চিক্তানাতন বার্তা ভারিরার জন্য উৎস্তৃক
হঠি সাবিয়াজেন। কিন্তু সাবি কে। আলি
কিলানি। আলুক্তানিবার কি কাবিলার
আছে। আলি কিলাকে কিনাক কবিয়াছি
যে নববারে কালি লিকে প্রারি কান কি
তানক করিয়াছি
তান বাবি কিলাক কিলাক কিলাক কিলাক
তানক কিলাক কিলাক কিলাক কিলাক
তানক কিলাক লিকে প্রারি কান কি
তানত নক কিলাক কিলাকি আলি বাবিহাতি

কৈনে আপুন জনজের আৰাষ্ট্র স্কলতে বিভাগ করিতে আদিয়াছি। আমি কছিতেও এমধনা, করিতে চাহিনা। আমি কিছুই করি নাই, আমি এই পুথিবীতেই চিলাম— তবে আমি আমি আনন্দ্রামের বার্তা কি বলিতে আদিয়াছি।

কেই হয়ত আমাকৈ বলিবেন তুমি ব্রি ভানিয়া আসিয়াছ। যে সকল মহাপুরুসের। অক্সধামে বাস করিভেছিন তুমি বুঝি ভারা-দের কাছে কিছু ভানিয়া জাসিয়াত মুশে মুখে সকলের কাছে ভাই প্রচার করিছে চাও। ভাই বা কই ভানিলাম। বিনীত ইয়া ধৈর। ধরিয়া ভাই বা ভানিতে পারিল ম কই। প্রাম আপনার কথা জনাইতেই রাজ ভালানের কথা ভানিতে আনি অবসর ক্ষামিকই। ভবে আমি আনন্দধারের বার্ছা কি ব্রক্তিভ আসিয়াছি।

जत्व कि ल-मकन कथा मक**रनरे जात्** দেই কথাই আমি সকলকে জানাইতে আসি-মাছি। মন্ত্রোরা কোন্ সূহৎ স**র্জা না জানে**। দতেরে মহারু, এে**থেরে মহারু, দয়ার মহারু**, G (क ना जारन क्ष्यिश्वा, G (कहे के कारन) ल भक्त कथा धिन जानाई इटेर्ट **इंटर** हित-দিন ধরিয়া বলিতে হইছেছে কেন্ট্রানতা-दमन क्या क नाम्क्स, नेटलावरे क्या हक किया। জয় হয় না, এ কথা চির দিন জুনিতেছি তবু বৃদ্ধিতেছি না কেন ? আল্লবং সার্বভূতের কং প্ৰাতি স্প্ৰাতি, আত্ত্বৰ সম্বাদ্ধীয়াৰ विनि स्टिप्स जिनिष्टे से विक त्मर्यम् के कथी कछ मिन हहें कि किए অমূভৰ করিতেছি না কেন নিতেই সকল প্রাতন কথা প্রতিদিন মানুষকে শুক্তর করিছা শিথিতে হইতেতে, ফুৰে ইংগদিনক প্ৰয়য় क्षे भागानी कि केतिया प्रतिक। सारमस्तिकारीक्षेत्रकृतः कृष्टि अक्ष

ভানিলা, আমি স্কলুৰ অত্ত্ৰ কৰি নাড় আমি বলিতে পাৰিব নাড

তবে আমি কি বলিব ৷ সাধনার বিক্র निरुक्त, नार्षिणात श्रित्र विश्व पृत्र, पाउ-त्रामी शतम श्रक्षात्र किंद्र विदासकान आ-্রার বে নিভত নিলয়, সেই খানেট যাহা-দের নিতা যাতায়াত <mark>খাছে, সেইখান ভইতে</mark> ব্যুষ্টারা জ্যোতিশ্বান হইয়া আসিতেছেন, ভাঁহাদিগকে জিজ্ঞাদা কর ভাঁহারা কিছু বলিতে পাধিবেন—আমি এইমাত্র সংসার হইতে আদিতেছি, সংসারের ধুনি লইয়া श्वामिटलिंह, क्या निका निका भ्रानि वामना नानमा साम्माना श्रामान কেলাহলের আবর্তের মধ্য হইতে আদিতেছি, এর্থন ও হুদয় ধৌত করিয়া আদি নাই, এখনও শুচি दहै नाहे, भाख हहे नाहे. आधि श्रानमश्रीत्मत वार्खा कि विकटन शांति।

্স্তা প্রচার করিবার **অধিকার সকলের** নাই। সত্য জনায়ুত কাহার ও কাছে জালে না। সতা উপাৰ্জন করিতে হয় লাভ করিতে হয়, কৃষকেরা যেমন করিয়া ফললাভ করে শ্রালাভ করে: তেমনি করিলা সভা লাভ করিতে হয়। সতা **খথে**র মধ্যে নাই, जिल्लांत्र मत्था नार्दे, मजा कार्रांत्र मत्था जारेहा কারণ সতা ঈপরের সতা, সতা আমার সৃষ্টি नटर। जैयदात कांट्यात मट्या जेयदात निर्मा পালন করিয়া চলিলৈ তবে সভা লাভ করিতে পারা ৰায়। তুৰি যথাৰ্থ ভালবাস, তবে স্থ্রের ভালবাদা ব্রিতে পারিবে; তুরি महा कर, क्रेंबरत करूना अनुस्त कतिए ণারিবে; ত্রি সত্যান্তরণ কর, ইবরেই অগ্নং তোমার বিক্লকে কথাটি কহিবে না । নেবকের निकटो छाष्ट्रत मध्यान कार्यका यात्र हे प्रदेशत विनि स्वितक क्षेत्राह केटिन सेप्टबंद राजा गरित । ज्ञेन्द्रद्व देशक दक र विनि **एक क्ला कर**तम्, सिन भिज्ञमाजात स्वत

করেন, প্রতিবেশীকে মাহান্য করেন, বিনি
ক্রেমন্ত জগৎকে প্রীতি করেন আর বিনি
ক্রেমন্ত জগৎকে প্রীতি করেন আর বিনি
ক্রেমন্ত করেন করেন হার্য কাছে সংশবের করেন করেন হার্য করিব করা শুনিবে
না; উছিল কাছে রহুদ্রের প্রতি করিবাস ও
ক্রেমন্তের প্রতি বিরাস, তাতের প্রতি সন্দেহ
ও নিজের প্রাতি প্রতিষ্ঠ জনতে পাইবে।
তিনি বলেন, বিশের মাহান্তে চলে আ্যার
ভাহাতে চলে না, তিনি বলেন প্রেম

সতোর চির-উৎসারিত অনন্ত প্রস্তবণের সহিত্র বাঁহাদের প্রদুদ্ধের বেগে আছে জাঁচা-রা**ই সন্তা** পাইতে পারেন। জনবের মধ্যে इंटर ग्रेंट्रेंद्र थनन कतिया त्य, जामता किछूनिन ব্যবহু দুর গত সত্য ধরিয়া রাখিতে পারি তাৰ পার না। সভোৱ তির-প্রবাহিত প্রত্যা সহিত আমাদের হনমের চির্যোগ त्रकारिक रहेरन। भूरवात निक्रे रहेरक বেলামাদিগকে চিরদিন উত্তাপ আলোক धर् दिज् हरेटाइ, कान काटनरे व-লিক্সেরি না, "ষথেষ্ট হইয়াছে, আর আ-वशाक नारे, अथन किছू मिन हिन्या याहेरव, , এখন কিছুদিন আমি আপন উত্তাপে উত্তপ্ত वाक्ति याभन चाट्नाट्क ठातिनक चाटना-विकास वार्षियं — (ज्यनि स्थात कना) ध्याद अमार महाजात बना हित पिन क्रिक् ভের দিছে শঞ্লি প্রদীরণ করিয়া করিয়া ্বা বাহিবার জনা যেমন অবিভাষ वाई-व्यक्तिर वात् कृतिदेख क्रिकेट, ब्रोटिंग के भारेतात करें। देशिय विविध्य **प्राक्षक छै**ह-त्यर गोक एक देशींग बाका छाटे देशीन गटणा क्या क्रियान सम्बद्ध गटणा महिल नध हरेश अधिक हर्दन भूगे। गर्दाव गर्या सम् हरेकी के किएल इन्द्रेस

ৈ কভা চাহেন। স্থান ক্রের সহিত বিশ্ব অসহতাম। সুদ্ধান ক্রিক্সোমা জ্যো-

जिनस्य, इत्हार्नाक्ष्यकः नगता । जाताबाबीर्य- दिन्दारमणः स्वतः वामिणावर्तः अस्तः अव-্রদেগ**্ত<sup>্</sup>দ্দি**শং মুখং তে**ন মাং**ং পাছি নিতাং। অসং দিতে আমাকে লাভা লইয়া যাও, নৃত্যু হইতে আনকৈ প্রতে नरेश शंखा (र यहातीन श्रामी निकरे थानानित रु। अनु, देशका ये अन्य पून, ए। ए। या बाबाहरू महाति का देत । 'धरे সংসারের **উত্তরি**ক তিত **অস**তা, যে প্রতি নিন অভীক্ষণভঃ সভেব প্রতি আকুলতাও ष्यायादमंत्र देशाल एवं संधिति एए एक। अहे अना ৰীয় নিশান্ত ভীত ইট্য়া নিভাত বাকেন हैरेस जेनदबंद करान क्षीपना करियाहितन - রিলিগাহিলেন (ছে **সংক্রাল,** আমার নি-কট প্ৰাণিত হও।" ৰাশাদের মুধ্যে বে अन्य जाएक हिंग गार्थ बाजा श्रे कि र ি হৰিতে প্ৰায়েন "আনি কোন অসতী চাচি দা 🐉 ছান্তবিকই কি কোন ক্ৰমতাকেই আ-भता शिक्ष इतिया वर्षे का माहे, प्यामारमय श्रीमदनत व्यवनयन कति ग.रे. २५८७ हो स्थाप ু শভিভূত হইয়া কি আনরা কেনে বিভেন্ন ভাতি সেহাপ্রিক বিশ্ববিদ্ধান নাইনি ক্রিবে আমতা মুখে কেবল অফচভাৰা ফলস্বৰ" <sup>ট</sup> প্রাথনা **ইক্চা**রণ করিয়া সভ্য লাভে**র** অধি-জানা ইইৰ বিক্ৰপেঞ্জানাণেৰ এখানে কে ত্যন আছেন দিনি বাবনের সচিত বিষ্ঠে श्रीट्रामें-"रक्नाव्ह नागव मेगून किये व्टिन কুন্যাম্ বাহার দালা আলা অক্ত্রা হটব े छोड़ो नहेंगा लागि कि किति। छ। यपि ना লগ্যিলীয় ভবে মূৰে "ফুছোৰ্ণাম্বাশ उद्यादन कांबराह्म्यस्थ्याद्वका व्यक्तिती रहेन कि के किया है। बाराजा करायेज गासून्छात ग्रिकेस्टिक्स बनियाप्टिस्स "अन्दिसा-मनानक काराबार बाद अवन्ति विनशा-

্রি**শান শেন অয়তে**র পুরেরা শোন, **(मार्क हिस्स्याग्दामीशर (मान, का**बि (गरे মহান্ প্রিষকে ক্লানিয়াছি যিনি অন্তকাধতে অভিক্রে করিয়া বিরাজ কারগেছেন।— এবখা কি আমরা বলিতে পারি।

বিজ্ঞ তবুও ত খাষৱা ওৰ্ক ক্ষাণ্ডে ধ্যক্তি না । তহত ত খামৰা বিষা থাকি, খন-তের মধ্যে পুথ নাই প্রিতি নাই খনককে কাল্পনির জন্মার সংখ্য বদ্ধা করিয়া প্রস্তিত শীন ফ'বলে ডালে আহাতে শুথ পাই, তেবে ভাষ্ট্রক এটিড করিছে পারি। বিষয়েক আ মি এখন অফোণ করি নাই, মাঁচণ্ড প্র ইসার জন্য হান্ত্রের নরেশ্য ব্যাধ্য ল**ভ**় জন্মভস্ত ८ १३ २०१, किहारक शाहिश स्थ नाई स्वया ্লিবার অধিকার **আমাদের** দি আছে ! বীৰাল এটালগো জানিয়া**ছেন, উ**(ইটোই কাল-शास्त्रम ' क्रोमन खुगर मारल अरम कु"--**ज्यारे द्वयभक्षता, याद्य उप सारे ।** जामता **অন্যো**নের অভ্যত। খন্তি**জ্**তা **নই**য়া সে কথাৰ প্ৰতিবাদ কৰিছে বাই কোনু মাহমে। একপ্রার্থ জাক্ষি ভাষে যে, এন্ত শ্বরণারে স্থায়াদের **আয়তে**র **ম**ত্রীত বলিয়াই **ভাঁ**হাতে षायादनव अञ्चल स्थ। याशं प्रायद्वा পাই তাহাতে আমাদের স্বায়ী প্রশ্ন, নাই, পাহা আমুৱা আয়ত পারিলাছি ভাষা আমরা তাপে করিতে চাই, চিরদিন পাইয়া बाहारक जामला कितिम्स स्थय कांत्रक भारत না তাহাতেই মান্যদের আন্দ। মতলক কে তর্ক করিতে আদিয়াছে যে, অনতে স্থা नाह, जीबाटल्ड द्रथा हो हो स्थायदा नाहर ठारिकः, जर्गाः, मृडादक महिना (प्राप्तदाना ক্ষাতে চাই চেক্টি বিভাগ

ं ''क्सनेटराक्त स्वयंग्यस, क्लिटनामा **टक्ना**किर्यस्य म्-

এ সংসাবে আমানের চার্নিদকে স্থ্যান্ত ক্ষাত্র সভার সভার কালা কালা কালা কালাবের মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র কালা কালাকের মান্ত্র কালাকের কা

শামতা যে সকলার ভালবাদি : नीटर लोख्य र ा लामना निष्यासूर्य नाल ক্ষিতে চাই। আনোকে আমাদের আবরণ क्षिक्र क जिल्ला उक्तन, ज्यागारत्वे कृतिका चार देने इन्द्रश्त केनक कियम क्षेत्राचिक ংট্রা পরে, সহসা তৌমার ক্রজাপ্রান্ত নেটা एमिटक शाहे-एमिटक शाहे काशामिदक াৰ কেন্দ্ৰ দশুৱে প্ৰভিন্ন নীইয়াছে, আনা-प्तत यो नव**र्षेत्रात्व की बंग्यम्ल्यू ने** अहिगाहरू, उपिति चारिका **जनकान** महिसार्छ → धहे चेना चर्मिता पारिकार ठारिया, पानश काण बांचा जारे, वांश्रयानि अक्ट ना, वह कना यामृत्रा के। लन्तीक सीमाहरूक चिट्ड हाई—स्ट्राटनक चिनन कथन जातिका উপুথিত হয়, অসমসানি ক্লাপন আসিয়া শাচ্চন করে, বিমাপ কুখন আনিয়া আক্রাণ मरक चानिएड भारि ना। अरे जना यान

্বের প্রেক্ষ্মন ভ্রাপ্র াব কি হ**ইতে** পারে "তমনোন্ডেলা আন বা নারিদিকে শাস্ত্রকার আমানে ক্লোপি ক্লেন্ডি আমান

পায় আৰা কানি না । মান না হ' লাগত।

শহত আৰা কৰিয়া বেডাই জ বিশাস কলে।

হইনা নামতের অতি লাবিশাস কলে।

হাই ৷ একবার লাভ—একবার অন্তর্ভালী আনালা লাভ ভালা কলে।

হাই ৷ একবার লাভ—একবার অন্তর্ভালী বিশালার হাত হকিল বালা পাইন। এই

হাবা হাইনে না।

হাইনি বিশালার হাত হকিল বালা পাইন। এই

হাবা হাইনি বালা পাইন। এই

হাবা হাইনি বালা পাইন। আই

হাবা হাইনি বালা পাইন। আই

হাবা হাইনি বালা পাইন। আই

হাবা হাইনি বালা পাইন।

হাবা হাইনি বালা পাইনা

হাব হাইনি বালা পাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হাইনা

হাব হাইনা

হ

শিক্ষাক্ষিমি এনি তে সপ্রাশ, আমার

শিক্ষাক্ষিমি এনি তে সপ্রাশ, প্রি প্রকাশিক

শিক্ষাক্ষিম ক্ষাক্ষ্য, স্থা প্রকাশ প্রকাশ

শাক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য করে ক্ষ্যা হার

শাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য করে ক্ষ্যা হার

শেক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য করে ক্ষ্যা হার

শেক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য করে ক্ষ্যা হার

শেক্ষাক্ষ্য ক্ষাক্ষ্য করি ক্ষয় করি ক্ষাক্ষ্য করি ক্ষাক্য করি ক্ষাক্

ক্ষেত্র প্রাথমে লোক্তর করা থকো ছার।
আনাকে করা করি করি লাও, আরার মোহনিলা স্থাকরিরা লাও। হে কজ, আলার্কাল।
কিছু পরিষ্ঠাকর বোগা বোমার রজে নার।
অথ্যে তারা বিনাল কর, তাহার লানে তোনার
দ্বিশ্ব হয় কোনা প্রায়

A SE CANTAGE SE P.



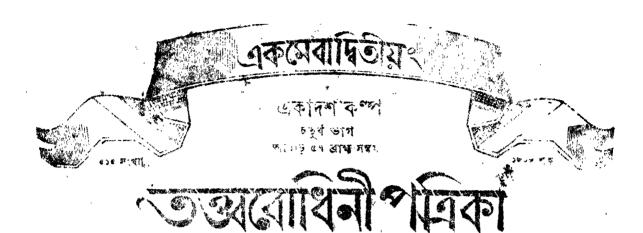
### दमरशुंदर द्वेपमन्पिन लिशि।

১৮ कार्डिक-चना वहनी मारहा बन ज्या कर gham Hall Pulpit Vol III 14 34 Meis Principles and Bollers क्राइ प्रायम अरा erba Nothing de

ক্ষিতিয়ের ক্ষেত্র ব্যৱস্থা উক্তর ক্ষেত্র হৈ নামিক প্রতীক্ষিত্র ক্ষিত্র কার্থ তাহা হহতে ভাহাকেছ মাজকার বিধেন ক্ষিত্র বাইত না।"

সাক্ষাৎ করি করি ভাতত ভাততার বাব্র সাক্ষাৎ
সাক্ষাৎ
করিত বাই তথন ভাহার করিত আধান্তার পাঞা এক
অবংশেশ করিতে আইসে। তথানকার পাঞারা মুঞ্জ
মুখ । কেবল দৈ চিড়া বাইতে ভাল বাসে। গুরিনার
ভাহারা বেদ পড়ে, তাহার পর ভানা ক্ষেত্র আসন
বেদ পাঠ করে না। ভবলেরের কর্মকান্ডীর পদভির
ট্রেনির নার সকল সভ্যাস করে। তাহার অর্থ পর্যান্ত
করিনানা। পাঞারিপের মধ্যে হই একজন লোক কিছান আছেন।

০ কার্তি শক্ত প্রতে বার্ ছাইছানাথ মন্ত্রক তার্ গোবিলচল ব্যান্ত্রকালকে থাড়ওরা নতাভাকে বিয়ালকলকে থাড়ওরা নতাভাকে বিয়ালকলকে থাড়ওরা নতাভাকে বিয়ালককে নতাভাকি বাল লাখনা বিশ্ব প্রতির প্রতির প্রতির বাল লাখনা বিশ্ব বাল লাখনা ব



# चानि डामम्ब्राज्

क देखा है शिव भेद जोज भाष **दन्।** 

কেনে না কেনু গণ্ডক-সূত্রে, আবদ্ধ হইয়া कान ना कान भाषाकन मात्राज खेजिला গ্ৰাম প্ৰাভাৱা একত্ৰ সমাজত হয়। এখানে আজ কি সম্বৰ্ধ-সূত্ৰে স্বাগত হই-अग्रि—वाबादमवं लाशाचनरे वा कि । 'स्य স্থান-সূত্রে এগানে আজি আমরা সমাগত হৃষ্যাতি তাহা অতি উচ্চতর সম্বত । দেই ল**মন্ত ধাহা আন্তার** সহিত আঞ্চারই-শ্রীরের সাইত মনের মহর, ভাহা আমাদের কাহারে। জানিতে अनिश्चे मारे ; मतादेश आधाल नानित्सरे यटन जापाछ लाएन, नहींत्र क्रांख इंटेटनहें मन बारमत रहेंगा भट्ड, नतीत खर रहेंटनहें यन अकुल एक । नहीं विवा गरेनद गरेश **এই ये मधक** हेशातक योगवा विल-धार्न কিন্তু আলোডে অ'লাতে বে শ্বশ্ব ভাছা ভারে। উত্যতর স্বস্ত

বিভার নিবের সাম্বর । গ্রান-মুজে সেগ্র मन क्यादित साहते हुए, तिस्ता दर्शम सुरुव **দেইরণ আছা** ভারাতের গাড় ই হয়। প্রস্থা स्वा इत्स्य वसन हामारे । इतिया किरिके हैं। याथा दहरेतन लादनव ছাভাইটা উঠিতে পারিলেই এরযুঁতে হয়, **७थना छोर।** ककीश गरियात दिक्कि इस-उपनेर काश हरेटड है एक छात्नद मौसि अदः विकृत ८ थरमङ नावना कृष्टिश वास्ति হয়। আত্মার প্রতি সমুদোর ভালবাস। गयुका गणु (यात भारीत गन দেখিতে লার না— আজা দেখিতে চাঁহ, নধর শ্রীরের উপর অবিনশ্র আত্মাকে কয়-যুক্ত प्तिष्ट होते। य मनुसादक जासता पांच त्य, केंद्रिक नयत गतीत अविनयत चाकाटक नुधान-तक कत्रिया भटक चाटके - छेपनिया लहेका टेक्स काराइ टाकि यामहा विकास वर्षेत कार्ब , किन्नु वाहाटक दम्भि द्यु, काराव महिनयुत्र जाजा भरोत्रमनद्वीविजन ८८ दर्ग ननी शुक्क कविश्वा हाना हैट छट्ट — छोड़े। ह शक्ति অৰিনা আন্তরিক ভক্তির সহিত মপ্তক অব-नजुना कविया शाकिएक अधि मा ; आ क्षेत्र প্র**তি মামু**যোর এইরূপ **আন্তরি**ক ভাল**্**না।

এই উপদেশ শ্রমবাঞ্চল ব্রংক্রমাঞ্চের বার্ত্তিক
উৎসংদে পঠিত হইয়াছিল। সং

আহাৰ আভি মনুসেবে তেই যতি ভাল-বলো, তবে দেন তালাং উদ্দেশে খন্দ্ৰেক তথ **যাইতে না**িল্ড মন্ত্ৰোল চরণ অলিত वर्षेत्रा द्वाप्ता ८८६०० कता सञ्चा ८७भी ানৈৰ্য্য হয় কলিছে পাণ ভূলিছা সাম ভতা ধার পর জেমের অধ্যেদ লা পাইয়া নিরুৎ-गाँच रहा.- अहिताम राजुला निष्नाहक पाँछ-হাট আলে **হইতে পরামুখ ১৯,—ই**ছোর অভাব বাহ, কিন্তু সভিত্র অভাবেট আন স্থার প্রনিত যে, কাহাতে প্রনিজ্ঞা ভয়না, ভাষ্ঠা নতে কিন্তু এছেরি মন তাওছৰ সভিত্র लेकिथि**ए**ड भारता साहेद्य ता, जनांकहें तम ূ আনিছোর তারে। যে অন্নতালে **অ**ক্ষণ द्व रे तटक "जार जसर ठारे मेर् १०६ প্ৰায়া বলিয়া ৰাগুনিক্ট যে লে অন্তি চাচ ना जार, महर, रयुगा जम ना । कारहा কেছ কৰি বলেন 'শ্বামি আহাতে চাই না,' उ**दर ८म**्किय। स**्थेत** कथा- कारखत कथा में हि! श्रीकारिक विपत्ता (४, १) है, मा छ है। ेमदर्ग-पाचारक रागिता गाहे में हेरे हैं हैक; किन भारें ना ? सामात्व केर्या नारे; ন্ধানর। **ভোগের আগু** ভারিভাগিতার জনগ ্রাক্ত থই : আমানের সম্প্রেমিনা--- 🖡 পার্টের স্বাভারের ; ফিন্তু আন্ত পিপাসা निव्चित्र जना पार्यता अन्त दाख (व, शारत ংক্তিরা দেখিবার আসাদের অবকংশ নাই-মরীচিকার অভ্যাৎ প্রভাৎ সহত্রেই থাকিত ेष्ट्रहें टिक्षि। रणाजन, ग्रंथाकृष्ठि, श्रुष्टित वाका, মুন্দর অস্ব <del>বাঁ ডা</del> চাল-চলন্দ-এই ভারি (पिया-माज स्वान सामार्ग्य मन विशा क्ट्रेट (य, आद्या देश कटलका क्रिक क्रीह িক চইডে পারে। জমে বহিঃশোভাতেই ৰাখাকে অবলোকন করা আমাদের অভাপন্ भारेश भाषा ; काञात रेग्यातन निक निर्कन उन् टमशाद्व जामन विशिद्धां नाजा प्रिक्टि भारे ना -छाटे स्मर्थादन चाम्रादक्छ प्र-"

्विट शह मार् पण देश भारते हैं । बाजा ভিরত্যায়ী। বিশিষ্টা অমিলা তেম চিপ্র তাহারাই আক্সাকে দৈখিতে প্রীন, বাহান্ত্র এপ্রেমর ক্তিম বেশ ভূষা চা'**ন**্ ভা**ছার** भाग्नाविनी कविष्याद्य लोकान मिहेरामट्स আরড় দেশিলেই ভাষ্টের চক্ষ্পারভূপ: मगुर्गाद जेवल और भन्ने । पाष्प्रामा গ্রাছিম্ভি, সন্থুসেরে গ্রন্থা মণাতবি আঞ্চারটী ছবি, শিশুবোর ভালন মিতা ১৯ কণা-থাকা ७ एक एक पाइतह नेएउ। इस । लेख আৰুলৌ যে একিনেলি, আৰুলে যে ছবিব আ**ন্তার√**ফ **সীজে**জ্যান স্থানাই আহি: ন া : काइ बद्धान १,४११ अंजन शाहिता, सामर ভা হার ঐ ফা নচিরালরণ তালিলে বাঁকড়িল ধ্যতিক আ, সংগতিকবৈৰ এক্ত **আছি**। তাহাৰ कारता करून के भागिता । मान्। दिखा**रल् — छे । य**। इति तम तंदल भारतांवनी भनिमा छोहात छान তাভ্যাৰ কা ফ্লেক্টে; অবিদ্যাল পাৰ্গ এজ্যাদ এতে যথন সৈ ৬ ডিমুর্ডি পুলি নৃতি ৩ইশা প্ৰত্যাহাল নিজনে ছইয়া যাত্ৰ, সে গী-তেও ুগ্য বেলয় **বে**ল্ডার। এবং **বে**ংগ্র হই মাণ যায়, তথন বলি প্লাদের ভ্লাভা-िक्री मात्र छोए। इस्टिन व अक्षा: जार उस मंत्रित क्षाक्षा भारतक करहे १० विकिस है । হিলেন্দ্র সঙ্গ করিয়া রাজ াশ্লামে আসিত शिद्ध-माच-शर्ण (म ७क वस मानाना कर्च-**চ**রিকে রাজা খনে করিয়া ভাষার চরণে ्रमहें क्लिवे(-क्लि मिश्रपी कविशा सामनादक क्रडकटार्थ महत् कारन,—खेडु खरेबार्टा दर्शन कार्य। है मिन्न इस मा। जाजाई ग्रंन जामा-দৈচ লক্ষ্য তখন আত্মা পর্যান্ত পৌছার্ক্রী চাই, নহিলে আমাদের সমস্ত পরিভাষ বি-रुल इंदेरिन, स्ट्रामिडे **रेड्ड जान युद्ध**न কত্বক **অপঞ্চত হইৰে।** 

शुर्क ब्लिशिक (ग, गरीह अनः मत्नह सुर्था रायन खारनद होन, बाबाह बादाह

त्मरेक्न विश्वीत देवस्था है। सा साम साम कामहा जिल्हा त्थालक शक्ता है हरेरब ५ ज्रानक मग्र वाश्वा नह कृतिका शात्र মায়াকালে অড়াইয়া প্রিয়া বিশুক তেন अक मगरत जागानिशदक विनित्रोहित त्य म-ক্রেক্ত ক্ষম করিবে, কিন্তু এখন আমর। पिष्टिक जारिक विकास जागियाहि— তাহাকে আবাদের ভয় করিয়া চলিতে হই-তেছে; প্রেম বলিয়াছে ক্ষমা করিতে—কিন্ত গ্রাণ চায় বিদাশ করিতে—এখন আর আ-মর৷ প্রেনের কথায় কর্ণপাত করিতে পারি ना। भक्र-विनाभ बाह्य यथन छा। পরি-**ड्हे** ग्रेन, ज्थन आंग्रज्ञा कॅंग्निट यिनाम ''ছায়। প্রেৰেক কথানা শুনিলাম কেন।" পৃথিনীতে প্রেম অপেক্ষা প্রাণের আদর ·ष्यविक । गम जैवेर भेतीदवत मरशा श्राटेनव দেরূপ প্রবল বন্ধন—পৃথিবীতে আতায় আত্মায় সেরাপ থেম-বন্ধন খুঁজিয়া পাওয়া ভার। কিন্তু প্রাণের বন্ধন বালির বাঁধ— প্রেমের বন্ধন অদীম অগতের ভিত্তিমূল। গ্রাপের বন্ধন মন্থার ইহ জীবনকেও ভাল করিয়া **আমত করিডে** পারে না—বিশুদ্ধ প্রেমের বন্ধন মুর্যোক্ত ঐহিক এবং পারুত্রিক मक्छ कौरन वाशिश वाशनात अकार मय-র্ধন করে। প্রাণশ্রবং প্রেমের মধ্যে সাদৃশ্য এই যে, প্রাণধারণ বেমন শরীরের পক্ষে নিতান্ত প্রয়োজনীয়, প্রেশ-ধারণ সেইক্লপ আত্মার পক্ষে লিতান্ত প্রয়োজনীয়; আর, बाहा स्वयन क्षारनत जलूकून, वर्ष महिन्नुन বিশুক প্রথমের অনুকুল; আবার, অভাযা বেমন প্রাবের প্রতিকূল, অধর্ম দেইরপ প্রেমের প্রতিকৃল ৷ প্রভেদ এই যে, প্রাণ **दक्तम असेरतब्रहे मद्यत मनी—बाजाब सुर्ह** 👊 প্ৰনা তাহা অহায়ী ; বিভন্ন প্ৰেৰ পাছাৰ পাৰের স্থী—এ শ্লনা তাহা চিব্ছারী 🛊 কেন খামরা প্রকৃতিকে এত ভয় করিভেছি—

ক্ৰিকা এক ব্ৰুব-বিভদ্দ ভোম। বিশুদ্ধ প্রেম, সাক্ষাৎ অয়ত – ভাহাতে ভারে। ক্রিপ্ত স্প্রশান্ত স্থাসর ও মটল বল শালী হয়— **अक्रमी दश्र (य, स्ड्रा**— ज्ञात जाराज निकारि আসিতে পারে सी। বিভার ের্মের অভাবে আত্মার যে কি হীন-দশা হণ তাহা আর বক্তবা নহৈ, তখন আন্তা কামে কল্যিত ইজাধে অন্ধ, লোভে লালায়িত এবং মোছে অভিভূত হুইয়া, সর্বাদাই উন্মত্তল সর্বাদাই **प्रशास - नर्का मार्ड गालन - नर्क्ष मार्ड के विश्व** হইয়া ইতন্তভঃ ম্রিয়া বেড়ায়—শান্তির মুখ এক মৃত্রতি কে খিতে পায় না।

শত্রব বিশুদ্ধ প্রেমের সহন্ধ সূত্রে আ-মরা যে আজ এই পবিত্র স্থানে সমাগত इहेरा है हेहा आयाएमत भन्य (मोछाना। **अथन श्रीगारिनत कि ए: हाअन—कि कर्ज**ग কার্য্য ক্রুভারার প্রতি একবার প্রণিধান করি।

এখাৰে ন্যাগত ইইয়াছি, বিশুদ্ধ প্রেমের ठिविक्शिनाधनरे यागादनत श्रायन। প্রতিশ্বনৈ একবার আপনাকে আপনি জি-खामा करून "जूमि कि छाछ—कटेंगड কাৰ্য্য-কাৰণ শৃত্বলায় বন্ধ পাক্তিত চাতি—না তाश इरेट मुक्ति-नाज **कहिट हा १**? পত-পক্ষী-কীট্যপতকোৱা কেন্দ্ৰ দেখ-দেখি প্রাকৃতির ক্রোড়ে নিজবেসে শরান স্থাছে— वाबता दक्त जाहा भारत ना है बाबारमत रेग्नवाबाब जोगता द्वा दिन हिनाब-छ्यम माञ्चित्र भात क्षितिक कानिकाय मा, ज्यन विश्व करून मर्ग कर वस्तू -प्राशास्त्र काटक नमान हिल, वासारमञ (का एक दिन ना, जानका हिल ना, जावना বিব না। ত্থন তো আমরা **এ**কৃতির क्लाह्य निवा निर्वास भाषान किनाय – **এ**খन রোগের উমধ অনেক আছে: ক্রিন্ত মুহার ি ক্রডির বছন মইতে মুক্তি লাভ করিবার



<sup>লপায় অবেষণ</sup> ক্লরিট্ডচি ?' শিশুর অব**স্থা** भ र कि छिनेंद्रे अ कथा। मागारमा लई-র্মণ , তার কুলের সহিত 'ও-নবানর সাকুশা ত্রাটেছ, কিন্তু মার্য-পঞ্চার ফাঁচত উভ্যোর ক্যান ु शादा मामृन्धे । रे,---१ ७३ मार्ट्ड नद्या र मानुसा अर्थद्र रिक्त स्थार रासाया-कके कत महिन हिन्द्र कागाइता भागभा माहे; শিশুর সচল লাবে স্ফিল বিশুদ্ধ ভাল-প্রেমের নাজুল আছে, কিন্তু মাঝুলুগুরে ৰ্ণ্ডিক ৰিজেনে মাইছ উভীৱের ফালারে। भाषृभा गाँछ। विश्व कार्या कातरबंद अस्त-স্তে বাদ ভারতেত্তে অথচ কার্ম্য-কার্মণের কোন ভক্ই রাখে না - অবিভক্তে চল ধ্রি-वात खना १८४ लागातन वदत-अपूर्विक আহতে মৃষ্টিগত করিতে খাং। বিশ্বন ट्यम । कार्या-कार्य-कृष्णनाएक प्रवास करक —প্রকৃতিকে অগ্রাহা করে: ভাই ক্লিডাই-श्रीकि साराम व्य**रक्**ती बनिया हिस्त हर्ने-अद्भारक , नंभारशक्ती पार्थाद दार्गाना । १४१-শুভালার ভাতাতঃ শিশুর অকুলিয়ালারণ-ু ল্যানের সহিত বিশুদ্দ প্রেমের এইরূপ সাদৃশত্ िल्ला बूरेना गाना गाम्ना<u>ल (य्मनं न श्राट</u>णन ८७ भीन : दोक सचिक्ना-मीर्ड जननारन छ।-ব্ৰজ্ঞান্য আলেকে উদ্ধানত; নিভর প্রমায়িকতা অভ্যান-তিমিরে আন্তেম্ম ; বি-**७व** क्षीतिव भ्रतिध्व । स्वान(कार्तिति **জ্যোতিখানু।** লিভর অমারিকতান এবং विश्वक खान-दशक्षत जमानिक्छ। ७३ प्रहे कूटनत मेंश्राहरन विकारिनों नहीं त्थानिक ছইতেছে। শিশুরখিত বর্গেম্বীদি হয় তঙ্কই কাৰ্য-কারণ-শৃঞ্চলার দিকে ভাহায় গৃষ্টি পড়ে। **অগ্নিতে চুই এ**কবার তাহার অঙ্গুলি দুর্গ্ধ হুইলেই আৰু গে অগ্নির দিকে অগ্রসর ন। ত্রগক্ষা ভাগকে কাল-কারবের শা-পিপতের **এপিবা নত**ুক্রিনে **হ**ণ। भिष्युषा अगन शांच नटह :त, तम कामा-वाह-

- নের কঠোর আধিপতী চুদা কুরিয়া तिरेव ; सपूरशंत जिल्ल खीवां किছू छहे। मह হইবার নহেঁঃ ংতুষা-প্রকৃতি-রূপা পুরুষ **च्यारक विख्याननाळ्य मात्रा वस्त्रम कतिशा** আপনার অভাষ্ট ২।সে নিযুক্ত করি**তেছে।** মৰুষাই বা এলভিকে জানায়ন্ত করে কেন প্তরাই বাভাগনা করে কেন্পু সমূজে-পোলে কে কিন্তু গ্ৰহান কৰিছে শাৰে তাহাত সমুদ্রে ভরম দার হালিত হয় অবচ সমূদ ক্ষেত্ৰত পাগলা, কিছ সে नाङि अनुभू जीत्व ५७।४२/न शांदर्भ (न ব্যক্তি সমুদ্রের কেশ্যে স্বারা অবিচলিত অপ্ত সমুক্তকে দেগনিগভাৱে ভাসারিত দেশিকে भाषाः। शङ् भक्षांदा एक्कांब्र पर्द्धं रिनीन আছে, তাই ভাষার। প্রাকৃতিকে জ্ঞানাগ্রহ ক্রিতে গারে না, **–মনু**ষ্য প্রকৃতির **অ**উচ্চ শ্লুদেশে গাড়াইগা গাছে তাই মে এইডিকে জ্ঞানে আগ্রন্থ করিছে। সম্প্রা বিক্রান-ৰং ৷৷ মনুষ্য স্বৰ্গতের কাষ্য্য কারণ-শৃত্যাল दर्शय**८५ शाम्र-- दिन्छ** दि कूटल मार्थ हेंग, মনুষ্য প্রাকৃতির তিরু**স্ব-লীল।** অব**ে**চ কন করে, দেকৰ প্রকৃতির অতীত – বিষ্ক্রেশ खगना ; रंग कून विकन्दि । विकास বিশুদ্ধ জ্ঞানের গশ্য । বিজ্ঞান মনুমেনে ৮০০ तरे नरह—तिस्र दिखक छान ध्या भेषु গোর পরম প্রীতিভাজন ব**ন্ধু।** যেমন দাস-বংগার সত্ত্বে - কেমনি বিজ্ঞানের সঙ্গে— মন্ত্র-খোল সংহত্তি সক্ষক,—আর, যেমন হাদ্ধণ বন্ধুর মক্ষে– ভেননি বিভন্ন জ্ঞান-ভোমের নকে—মনুযোর অহেতুক স্বল্ধ। দাস কি कना ? ना भिदात कना ; विख्वान कि कना ? न बाहाय हानाहैवात बना—खरक अञ्च ক্রিবার জন্য—কেন্তু নির্ম্মাণের জন্য—এক কথায় দেবার জন্য 🧎 বিশুদ্ধ-জ্ঞান-প্রেম 🗺 धना १ ७ थोटन कि-चना-धिकामात्र कान वर्ष नाई- जेथारन कान कारनदहे कना-

ट्यम द्यारगढ का निकार के इत्र के कमा मदर। विश्व के जान स्टार्यक अनेत्र मन्दि नचरक सेंग्रत्यात दकान सामार्ज-श्रायनीय क्राकानिक निर्देश करत मा, किन्छ जाहात छ-পর অত্যন্ত এণটি গুরুতর বিষয় নির্ভর করে—সমুরোর মনুষার বৈতর করে,—তাহা-নাই গুণে মনুষা, মনুষ্য ছয়, তাহ। যাধ্ব পশু-পশ্চারা माहे (म-मनूषाई नदह। গ্রেক্তকে চিনিতে পারে নাই, তাই তালারা প্রকৃতির রাজো নিরুদেশে বিচয়ণ করি-তেঃছ-কল্য কি আহার করিবে, অদ্য তাহা চিনিয়াছে – ভাই সে প্রাকৃতির অবিকৃতির नाम कतिहा किष्ट्राउने मेंटलाय नाज कतिलेख পারে না, লংগেলির অতাত প্রদেশে আপি নার একটা বাগ খানের আধোজন না করিয়া∤ কিছুতেই নিক্ষিয় থাকিতে পাঁবে না। আ-ম্বা আছতির অতীত এদেশের লোক— তাই আন্ত্রা প্রকৃতির কঠোর শৃখলায় প্রপী-ড়িত ইইরা 'দিবা**নিশি জেম্পন করিতেছিল** जाकार के नटलन "मस्ट्रार्स इटक अक्ट्रार्सिय-ट्यार्थन । ८ पार्का म्हाभानः" — भौत भन्नी-রাভান্তরে নিমগ্ন হইয়া নিডান্ত আনহায় 😻 मुहासान क्रिया— (नाक क्रिएक शास्क्रि "कुहेर वना भगाजाना गोनगना महिल्लामा कि वीज्राकः," यर्गेन म्हा चालनात मञ्जूनीतः অভূকে এবং তাহার মহিমাকে দেখে তথন ्रि भाक श्रेष्ठ मुक्क एत। भागास्त्र क्षिष्ठन मुक्तिनाजा श्राष्ठ এथाटन व्यासीनिशहक (प्रथा निद्यन - जाशोदक (मिथश) **क्रांश** बीन जटमाक रहेर-**ारे पामनो अहे मास्टि** यन्तित भगागे हरेश्राहि। बाबा नद्य আগ্র পর্যাত্মাকে অবলম্বন ক্রিক युत्रा निर्ठात विष्ठत्व कतिय—हेशहे जासी श्रापन।

🎉 ছে পর্যাস্থন্ 🕩 আৰু তোমার আরা-

A Table

भनात्र कना ाधता अरे शविक गनिएव गमा-প্র হইয়া ে ভোষার মূচস্তীবনী শে-जिन्दल जूमि जामानिशदक क्षीवन भान कता। यशिक्र चारलारक एक कारनवा ट्यामाव पर्नन शहिया **चान्य-मान्**दत निनोन रुप्त चानादमत অভান্তরে দেই চকু ফুটাইয়। বেও; যাহার **ভবে বৈনি-হান মর্ত্ত মানব ভোনার মহিমার** मेंश्रेशन रुग्रेश जगत भनती कुळ वटत, टमरे প্রেম তৃমি আযাদের হৃদ্যা ভাতরে ভিদ্যাপন कर , जीयता मकरम वकाजा रहेश वक মনে তোমার চরণে প্রাণিণাত করিতেছি তুমি ভাবে না। কিন্তু মমুষ্য প্রকৃতিকে বিলক্ষ্য আমানের পূজা গ্রহণ করিয়া আমানের ক্ষ্যুরের চিরাভিলায় পূর্ণ কর -- তোনার জ-ম্মানু শান্তি-বারিতে আমাদের সমস্ত পাপ-ভাল প্রাক্ষালিক কুরিয়া আনাদের আহাকে **'তোমা**র সহবাদের <mark>উপযুক্ত</mark> কর,—আসর। তোনার শর্ণাপন হইতেছি—ভোনার বিষশ মুখতেলাভিতে হুনি আমাদের সমস্ত অন্ধকার पूत्र कतिया (पश्चा

্ ও একসোরাহিতীয়া।

11.30

মূলত্ত্ব-সক্ষ যদিও ভৰজানের অভাবুকে ক্রিটা করে उगानि हाराजा अनाक के

এশন-যে শ্ৰেষ শীজ্ঞভজ্ঞান ভাহাৰ त्रेन अस्ति स्था (ध. <u>अहे सा</u>नदाह-कारन अ देन शृहात सम्बद्ध इ-मक्ट्रात विनेत्र वराष्ट्रात ৰঞ্জি এখন ইত্ৰুপন্ততঃ কতক প্রিয়ালে-ৰুক্তিক প্ৰয়া মহিনে। ঐ মূলভব্তলি মূল-স্থিত তাই উহাদের স্থাবিকারে এত বিলম। ক্রিছ বদিও তত্ত্বজ্ঞানের কোন রীতিয়ত শাস্ত নাই, তা' বলিয়া আৰুৱা এরূপ মনে করিতে শারি না যে, উহার\**ইলাইছ**-সকল এ-যাবৎ কাল শক্তিহীন স্ত**াহীল**ু এবং সাড়া-শব্দ-হীন হইয়া চুপ কৰিয়া প্ৰতিয়াছিল; উপ্টা

मध्य नार्व विक्र नार्वे नार्वे छ राजा यात्र क्षि कतिया कर्ष पड़ दशनी प्रिश्व गतन नाथ नविकन दल छित हरेश छित्र। नत्यात्र के तर तीय-धार् कान काट्न युगारेका केन मा बढ़े, किन्नु बहा हिक त्य, छेशाएक, काँबा छेशाता एकि गःरताभरन वर्षः तिः भटकः मगाधा कृतिया जागिरकहाः। অ শ্চিম্বা ক্লিড্রার ক্লিডে ্ উহারা দৃষ্টি-পথ-षा उक्का कतिया का है ति निर्मान करें यात्र ; अकर्ना, दर्क (य छेशहा - छारा दकहेंहे कारन नाः "छहारमत পরিচয় প্রদান केता जिल्लाम-वियहक अबद्यनात कन्त्र नरह, जाहा এমনি এছটি যুক্তি-যুক্ত গ্ৰহকৈ অংগ্ৰাহ্ করে—যাহা माका ९ ভ ভূজান 🖠 জ্ঞান এবং তাহার মূল্ডভ্-সরবের क्रमिक वराया मदल महारे स्मेन मान वाधिकरे रुष्टिक कि निष्ट मगर्मा रहे SAMOILE AND MAIN SAMOILE SAMOILE বে-তৰি অংশক্ষাক্ত ভক্তৰ এই বিশাসক্ৰ ছার ভিতরেই আর-**একটু** এগিয়ে **স্থান্তর** बारमाच्या अरेश विनिन्दातका कृता बहिरेंच। स्कारन जरे जरे 'कथा महम्मरन वन अस्तिक शास्त्र एक, जेव्यकारमञ्जू ব্লেডের, অথবা প্রারম্ভ সূত্র কলিতে আমরা श्रापानणः इति छेराव श्रेक चित्रका छेपान मार्ग, उद्यान नेका की कारगणना, कुनारक केश किरमद असे अमिनाट अनेकिशान कतिहरू रंग-, दक्त केविएक एम एकि श्रकी (बहे ना छोड़ा कर रहा। व किए किए य यह शक्षित निर्देश ध्यान कार्मद भवादि हत्य। छहाता मर्गन-त्माभादनेत গেড়োর পইনী, তথাপি লোকে অনেক কা লের পর অতি কটে তবে উহাদের সন্ধান शाहेबारक्। छेहाता एक छारनत यूगाफि मिक वीय-वाषिय ज्लात, ख्वानि ज्याना गर्मा**क पार्ट्याटक छन्** उद्य नाहे। उन्

্ৰ**ৰণা তহজান কো**গাওঁ আলোপাত প্ৰমাণ করিয়া

প্ৰকাশ কোন স্থানেই এরপ দেখা যায় না থে, তুৰুজ্ঞান খাদ্যোপাত জ্যোতিশ্বর विकासन्त अकृषि वार, • ज्यान देशानीकृष्ठ म-त्याह अनि मानावं। তত্ত্তান আগনাৰ कार्य। के बाहारे वार्ग व्याहे करने छेनन कि করুক, খ ক্লিক্সেণ্ড নে-কার্যা সম্পন্ন হইতে পারে তাহার উপায় স্থিররূপে অবধারণ্থ করুক, ভবে তে। সে ওরাপ কইবে। ना हर्दछ व न र मान ना दम जाननात मूल-छद-गरम बान कतात्रल कतिरलहरू, धनः ভাষ্ডে করিয়া তাহাদের কার্যোর প্রাসর ও अस्त्री न जिम्बार वाननीह हत्कत म-ক্ষিক্তিক ধরিয়া পাইতেছে, যভ**ক্ষণ সে** আন্ত্ৰনাৰ মূলতত্ত্ব-সকলের কাছে আপনি মত-িৰু ও ইত-জ্ঞান হইয়। প্ৰড়িয়া থাকিতেছে, ভত্তকুৰ পৰ্যান্ত ওরূপ অভিজ্ঞতা কাভ ভাহার ভারে ঘটিবার নহে। গোলিক সত্য সকল— 🧧 ত্ত্ৰ-বিজ্ঞাগার থাদিম প্রবর্ত্তক-স্কল—তত্ত্ব-জানের মৃতিব্রাস্ঠনে তলে তলে সহায়তা করিলেই যে, সব হইল, ভাহা নহে। ভাহা-দের প্রভাব, যাহা এ-যাবই কাল ভিত্তে

ভিতরে কালোপনে কার্য্য করিয়া আদিতেছে, कारा धकारणा निवस्त है इंडाई होहे, डाहा **स्ट्रेटनर्ट** उद्युकान याननात लाखाइडें निश्रुष बार्क विकास प्रशिक्ति इतिया, कि कार्यात करन পুৰিবীতে আসিয়াতে তাহা স্থাক অবগত इहेगा, अर्थ मिलि दिन्छानिक पिश्विकत्यद অন্ত পরে অস্থিত ইইয়া, বাহির ইইভে পারে। কিন্তু দ্বার্শনিক আর্দ্রোর্টনা অপেকা-ক্ত দী**ৰকাল ধ্বিয়া অভীউ পণে লা**গিয়া না খাতিলে, ওদ্ধাণ **হংগজন**ক পরিশাষ্টি খটিভি সম্পন্ন হটবার নহে; কারণ, ফালে যাহা প্রথম, জ্ঞানে ভাছা, চরম। এজনা, এ-যাবৎ, কাল ৬ টু ফান কেবল এইরূপ দর মতামতেরই ফাঙ অইলা শালিতেতে মাহার কোনটিই পোড়া হটজে: ভাষাৰ কৰিয়া <mark>ভেট্ৰা নাই।</mark> নো-নাধ ল মতামিত লোখলে মনে হয় বুটে খে, ভাহাদের অপেক। ম্পুট মত্য আর কিছুই ছইতে পারে না, কিন্তু দুগাপি ভাহার। বোধ-क्षमा नार्यत र्याभा २८० **; (कनना, द्रा श्वतन** यूक्ति-भारा नगर्थित ५ उक, नग्न फ्लान्ति অবশান্তানী সত্য হউক, তুমের না এটি— न। ७ 10 — १क्रां इस्ट्रिंग विद्यान-मह्दर्भ कान किहूरे द्याप्त्रमा नदस्त वाज हहेर्छ भाद ना।

অবশ্যভাবী-সভোগ আন্ত্যা**খুনি, তথুজানির** সামি ব একট প্রতিষ্ঠ -কারণ কি

যুক্তি-হানতার প্রস্থাধীন ক্রিজানের বেরপ অসম্পূর্ণতা প্রদানিত হইল, তাহায় কারণ-প্রদর্শন-ছলে আরো এই বলা যাইতে পারে যে, প্রাচীন কাল হইতে একটা প্রাজ্য-শালী প্রয়ন্তি ভক্তানের বৈধ প্রস্থাক্তি প্রভিটা সম্প্রতি কোন-কোন মহলে প্রকট-ভাব ধারণ করিয়া এইরপ এক প্রতিভাতা আকারে কোল দিয়াছে যে, জ্যানের নিতান্ত অবস্থানী তথা-ভলিকে বভদ্র দাধ্য অল্লের মধ্যে

সঙ্গুটিত করিতে হইবে,— ীহাদিগকে একে-नाटारे উড़ारेया (न ६३) मा 🕫 ौु—वासकः উহাদিপকৈ বিশুদ গণিতের সংগ্রেছীটক कतिया राथिए इस्टि—डाहरा नाहिएते यहित्र प्रभिन्न स्टित ना । उन्हार कति সর্ম ; কিন্তু যেমন আর আর প্রভার সমতে তেমনি ইহারত সদক্ষেবলা যাইটে জাত্র যে, কডকগুলি সাধারণ সন্তব্যের লগে উ-কারী সমূচিত শীমাংগা হইতে পারে ন। --উহার রাজিণত মামানে ক্রিতে ইট্রে বিবাদের সামগ্রী গুলিকে (অর্থাৎ স্বয়া কর শান্তারী সভ্য-গুলিকে) সাফাতে আনিলা উপস্থিত করা চাই। এ গুলি প্রে গ্রাখ शास्त्र जागिता यात्र 'लाट्यं, एक्शिएनत মপকে বাজনা বাদাসুবাদ অথবা ভাষা रेषेद्र गरिखत श्रीत्रव्य-क्षार्गन. उन्हें दक्तना, अथन दुक्तन मार्गनिक আলোচনার গতি-বোধক করিণ-গুলি দেখা-तार बामातनंत जिल्ला करनेत जात्मत অবশক্তিবী মৃত্য-সকলের প্রতি হত শক্তি नाकि के देखिन-छन्दि गर्देश गर्दिश्यान पंग-पूछ, वर्षानारे जनात जाहारमत शाम्य अस्तर कर्ता ।

भवना छायी नुठा काशेटक वटन।

যাহা হউক, অবশান্তারী সভ্য কাহাকে রলে তাহার বাাবা। উপাদকে তুই এব ট সন্তা এবানে প্রকাশ করিতে হানি নাই। তাহাকেই আবনাভারী নিয়ম ধাহাক বিভাগী সভা বা অবশান্তারী নিয়ম ধাহাক বিভাগী পক্ষ অভাবনীয়, হবিরোঁ বা বাছহতা, অর্থ-পুনা, অন্তব; আরো সংক্ষেপে, সেই সভাই অবশান্তারী যাহার সংস্থাপন-কার্মো প্রকৃতির পত্যন্তর ছিল না। প্রকৃতি প্রকৃপ নিয়ম সংস্থাপন করিলেও করিতে পারিত যে, পৃথিবী স্থাকে নহে কিন্তু সূর্বা পৃথিকীকে প্রদাশ করিবে, অভভঃ এরপ করনাতে

ষ্থবিরোধী কিছুই লক্ষিত হয় না। তুই পক্ষই

শ্বান সম্ভবারক ছিল। কিন্তু প্রকৃতি কোন

ঘৰষাতেই নিম্নলিখিত এ নিয়নটি সংস্থাপন করিতে পারিত না যে, কোন একটি

শ্বান অইটি মাত্র সরল রেখা ঘারা, পরিবেষ্টিত হইবে; কেন্না পরেবেইন করে, তবে
তাহাতে কেবল ইহাই প্রতিপন্ন হইবে যে,
উভয়ের—হয় একটি—নয় তুইটিই—ব্রোধী
পক্ষ আপনিই আপনাকে খণ্ডন করে।
প্রতিপক্ষের ঘ্রিয়াভ অবশান্তারী সত্যের
নিদর্শন-চিছ।

कार्याः नात्र उत्पन्न क्षत्र जन्म ति क्षि का बाद्ध नव निर्मित प्रश्नित अवस्था क्षत्र विद्या कार्यां कि क्षा कार्यां क्ष्यां प्रश्नित प्रश्नित क्ष्यां कार्यां कार्यां कार्यां कार्यां का व्याद्ध कार्यां क

त्म काश ना इंट्र**ड्ड** शास्त्र औक्षाणि यादा - जिल्ला अहिना इंडिक, अलामात क्यापि जित्ता के कि किया ता के ; जारा देशक দাঁড়াইরে যে, ভৌমার কথার মূলার্থ এই ফালুভার্থ উভয়ে পরস্পারের বিশ্বহীত ; স্তর্হ উভয়ে একটিকৈ এইণ ক্রিক গেলে.আর-একটিকে পরিতাগে করিতে হর। কোন্টিকে গ্রহণ করিব ? ভোমার কথার অর্থ প্রথমে ছিল, "যে যাহা – গে তাহা না হইতেও পারে" এখন তাহা উণ্টাইয়া গিয়া এই দাঁড়াইতেছে "য যাহা—সে তাহা ভিন্ন আর কিছুই হইতে পারে না" এই তুই বিপ-দ্বীত অথের মধ্যে তুমি আমাকে একটি ছাড়িয়া ্তার একটি গ্রহণ করিতে বলিতেছ – তোমার অক্তিপ্তত প্রথম অর্থটিই গ্রহণ করিতে বলি-কৈছ সেইটিই যে ঠিক্ অৰ্থ তাহার প্রামার কিন বৈ যাহা সে-যদি তাহা স। ইইতে এ পারে, তবে তোনার কথা যাহা— নৈ যে ডাইটি ভুজাধার প্রমাণ কি 🕻 তাধার वक्रा ध्रमा भागीत रमधा निहत्न শামি তাহা এইৰ করিতে পারি না।" মানু-याव हुन । किनि श्रमान पर्नाहरक शासन मा । यस्तर किमि छ।शत थे कथानि छ।-त्त्रमः प्रदेनहे किनि विना-श्रमात् जनका मानिका जान त्य, ७ कशा याश- उद्देश छा-হাই। এইটিই আমরা চাই। তত্ত্ব-সিদ্ধির নিয়্য আপনিই আপনাকে প্রতিপন্ন করি-তেছে। উহা অধান্ত হইনেও থীকৃত হুর ; কারণ, যিনি অ্যীকার করেন তা-बादक हेश बागिएक है हम ८४, जिमि असी-কার করিতেছেন, অপ্রা যাহা একই क्षा - **डाहारक न्यानिट**डे इस स्व, **डिन**ि बाहा वनिर्देशन छाहार यनिर्देश এবং তাহার সৈকে ইহাও মানিতে হয বে, ভাষায় প্রতিপক্ষ বছর প্রথাৎ ডিকি

ষাহা বনিতে হন ডাজ বনিতেছেন না—এই क्राहि जाशिवर जाशिनात रहा। रेराट व चात्र किছू ना दशक् खादनत (এकि অন্ততঃ) অৱশানভাষী সভা আছে, ইহা क्ति हरिन ; कि जेकिए शांकरण शारत, ভূবে অনেকজনি বাহিতেই বানা পারিবে स्मा करने, श्रीक्रिक-नत्राष्ट्रित नियमि त विकति खंदगाछ। यो नित्रम म। यनिशा এই विता चाता हिन् इहारा, रह मन महजात বিপরীত পদ স্বিদাত গর্ভ, সমস্টেরই উহা সাধারণ ধর্মা এবং অভিজ্ঞান-লক্ষণ। ইহা वना दाइना त्य, श्रीकृतक-ताक्षक्र्य के त्य নিয়ন (ছি না,বে বাং। -দে ভাগার বিপরীত ছ্ট্তে পারে না) উলার নিজের কোন **গুণ** নাই। প্রদাকেরল উচার নিজের প্রতি দৃষ্টি ক্রিনেউল আৰ্জিকের **হুইতেও অকি-**কিংকর। উচা সমুগায় খবশাভাবী সতোর সংক্ষিপ্ত পরিচয়-লক্ষণ বনিয়াই উহা যাহা কিছু ভাজে লাগে। অবশভাষী মত্ত্যের পরাক্ষা এই যে, চাধার প্রতিপক্ষ স্ববিঘতি-গর্ভ কি নাঃ ভাষা ধনি হয় তবে তাহা यवार्थहे अवनाहाताः, लाहा यानिना ह्य, অর্থাৎ, তাহার বিপরীত পক্ষ যদি স্থবিরোধী না হয়, তবে তাহা অবল্যন্তাবী, নহে—তাহা আগন্তক মাত্র।

প্রভাবর্তন শ

এ নব বাাখ্যা-কার্মে এখন কান্ত হটুরা,
বে বিষয়টি নাকাং জামানের হতে আছে,
কিনা ভত্তভানের গতি হস্তা কারণের আছুসন্ধান, জ্বাহাতে প্রভাবর্তন করা যা ক।
এই বৈ এক অনুনক জপনাম বিনা প্রমাণে
মানিলা লওয়া হয় যে, যাহাকে অবশাভাবা
সভাত্যথ্যা জ্বানের অবশাভাবী নিয়ম বলা
বার হয় তাহা কোন কার্য্যেরই নহে—নয়
ভাহাক করে। প্রতিবাদ

এক মিখ্যা-অপুবান খোষণ; কর; হয় যে, ও-সক্ষুতোর অনুসভান এটার ৮র্চ্চা, ল পেমন তত্বজ্ঞানের উল্লিব সালাহ এপিছ্ডা ও তন্ধুজ্ঞানকে 'ইভিচ্চান ক্রিচুক্ত এক-একার বিজ্ঞান করিয়া জুনিবার কার্য, এমন षात्रुकिहुरे गरम। काइन, ५८लाङ्गरी সভেবে অনুশীলন ছাড়িয়া নিলে, ভঙ্জানের প্রকৃত কবি গাহা-ভালাই ছাড়িল পেওল र्य। **कब्रुक्कारमा अठि** द्रास्ति कार्स क शादन अप्रे बाहा दनशादना इंहेड्डएफ, देश পুৰ্ন্য-কথিত মূল কানেটির একটি ন্ৰান্তর भाषा गावः, ५०-७५५ दम परे ६४, काट्याइ বেলাম ধাহা তাগে, জানের বেলায় ভারা -**इत्याः** स्वयः । अत्येष्टानी भारत-भक्त माकि छड्छात्व वाष्ट्राहर काराव বৈলায় নাজি উ**ছার। সকলে**ল ব্যারতী, णारे बर्गेंगे चार्रेग्नाट्य त्य, कारन्य त्यमारा উহাবা মকলের পশ্চাংবর্জা; দৃষ্টি এড়াইসা शुकारेश **था**किए उ केराती, गर्सारभण, २८३।, षात जाटनाटक गष्टित प्रहेतात मगः हिंद्या मकरन्द्र त्यरन वाहित रहा। अ ह हा, आत একটি উপরি-রক্মের প্রতিবস্ক যাহার क्या किम्ररपूटको छरलंथ किम्राडि, ,जाहात विकास के जिलामिनारक यू चिटल स्ट्रेशाय्ह.— विकि विक कि ना - अहारा पाकार के माथा अशिंदक ना शिद्ध बार्शिटक मक्ट व आहु नन किहा। किह जारम छराता जातकी बालात ना किन्त असाय मी भागान हरेश। छिटिद, बाब, छातका-मानाहरे नाम सा ट्या द्या बनार्था पृष्ठे श्रेटर्व व

वनामि ध्वः देश्वरक उपकारमञ् एतवस्।।

তত্ত্বজ্ঞানের অচলিক্ষু বিশ্রাল এবং চুরায়ত্ত অবস্থার সংক্ষেপে এই যে কারণ দুর্শানো হইল, ইংগার উপসংহার-তহলে বলা যাইতে পারে বে, কি ইংগাও, কি কর্ম্মানি, উত্যা প্রদেশেই—অবশান্তাবী প্রান্তাল

विकि क्ल-विद्यार अवेद जार्भशा-निर्भाष বিষ্ণুত হ<sup>্ন</sup>া থাকে তথাপি—তাহাদের হল ্বিভিন্ন মণ্ড **হইতে পারে ভাহা হই**য়াছে। 🕽 তাহানের নধ্য-হইতে এক টি দল বাছিয়া ল বিষয়া ভাষাদের উপরেই কেবল পর্ফা-এদার্শিত **্রিতাতপক্ষ-**বিখাতের পরীক্ষা (অর্থাৎ ভাষা**টের** বিপারীত পক্ষ অবিপাত গার্র কি না ভাইার **भद्रीका)ेखरशा**त्र कतारमा स्हेशारक, व्यवसिद्धे-ভলি সৈ পরীকা উভাৰ্ন হই তে অসমৰ্থ অথচ তাহাদিনকেও অনুনাত্তি বলিয়া ধরা হই-য়াছে—স্থাগভিকের কোলা তাহাদিগকে স্থান দি**লে জি**-্যেন অমুচিত কাঁগা করা হইত। অবশাভাবী মৃত্য-মাজকেই প্রতিপক্ষ-বিঘাতের পরীক্ষা উদ্যাপন করা চাই, তাহাতে যাহারা পিছপাও তাহারা অবশাভাবী না-মের অবোগ্যা, পরীক্ষা-প্রয়োগের এই বে, विमुश्रा। वा देनिथिला, এটি कारिकेंद्र काज: ইহার ফল চ্ইয়াছে— ঘোরতর গোলো-যোগ। ইংলভেরতভ্বিদগণ কাঁটের দুই।ত অপুসরণ করিয়াছেন এবং কতক পহিমানে **जाहाब नाप अ (मथाहे बार्ट्सना अन्या** छाती ছতের অহিলচনায় ইস্তক্তেপ করিয়। অবধি ইংলপ্তের পতিতগণ এক্লপ অবিচক্ষণত। সহ-কারে ভাহাদের লইটা ভোলা-পাড়াকরিয়া-ৈছেন, আগন্ত ক সত্য-সকলের সহিত তাহা-**पिश्रहेक मिनाहेश अञ्चल क्र**डिय**ि ला**कारेश-**ट्रिन**, पूरे ट्रिनीय मरकात गर्धा क्षरक गरा पाटक जारा करकराद्वर छक्न कर्त्वा छछ-द्वरक परमकार्ष अज्ञल अविक्री नगान विश्वितात्र द्वामान कतिहारहन (य, व्यवनेरहादी গড়েৰ প্ৰতি তাহার৷ আদুবেই যদি হত कर्म ना कृतिकान, जारा हरेल उक्कारनेत ভাবী স্থানের পথ এবনকার অপেক্রা অনেক अतिशार्थ विक्रिके रहें छ। ।

শীহা বলা হইল ছাহার পোৰকতার পাঠককে

নামরা কাটেটা বাই আটিল এক বিভাগি করক স্থানটা

ण्यकारमञ्ज्ञात्वाह । अत्रश्चात्र किर्माणका । जनसङ्ख्या

पिठीय किंक्स मा अहे. दियम किंग्स क्रिक्स वर्तमान केंद्र एटाय-कनक करकार

নদৰিতে অহুবৈধি করি বেখানে তি ন নিধাক স্থানিকে (বিশ্বীক (Synthetical) এবং ক্রচিক (Analytical) এই হই হোণীতে বিভক্ত করিছ ই ভরের প্রভেষ্ক আন্ধ্

কাণ্টের মতে এরপ এক শেণীর দিকাক আছে यशित विस्थित-शामव छाई भूको इर उट्टे छाडाव वि-শেরা-পদে অ রভু তি রচিয়াছে; গেল এই একটি নিদ্ধান্ত त्य. भिष्य-माजरे विखानवान् । अनेतन विखानवा नक-ণ্ডি পূৰ্ব্ব-হইডেই পিটেও অসভু কি রহিয়াছে; কারণ, योशास्त्र तत्व विस्तृतः भगाधः करिएकहे तत्व भिछ: "পিড়া" এই শব্দের ডিলেখ মানেটে বুকার যে, ভাষা বিভার-গান ; স্নতরাং গিওকে বিস্তাববান বলা বাড়ার ভাগ—ভোলা মাগায় তেল দেওল মান। এইরূপ যজ সিমাত্তি—যাহা নৃতন কিছুই বলে না, বিশেষ্য-গ্ৰেছাতা বলিয়া চুকি খাচে - বিশেষণকে দিনা ভাষ্টে পুনকৃত্তি কলায় সাত্র, কাণ্ট্ ললানের নাম সমাভেন এটিক দিজান্ত। এই চেশ্ৰণীর যাবতীয় দিদ্ধান্তই অবশ্লারী महाहाई नक्षांक्रीय ; धिवर व्यतिभूत्यात स्विधार्गात-ार है हिरामत निमर्गन-हिरु; कात्रने, ' अकवात यथन পিত্যৈর সঙ্গে বিভারকতা লক্ষণ জড়িত করা হইয়াছে. कत्रम "शिष्ठ विष्कृषियान् नदर" दलाउ या, चात्र, शिष्ठ भिष्य मरह य**यात्र को —** डेलग्रेट नमान।

মার-এক শ্রেমার নিদ্ধান্ত আছে যাংক কান্ট্রিক নামে নিজেল করেন। যৌগক নিদ্ধান্তর বিশেষা-পরের বিশেষা-পরের করেন। যৌগক নিদ্ধান্তর কথানা কথানা বৈর্বনিক বলিয়া উক্ত হয়; বৈবনিক লাখন কথানা কথানা বৈর্বনিক বলিয়া উক্ত হয়; বৈবনিক লাখনি বুলুর। কাটের মতে নিদ্ধান্ত কথানার কামের বুলি সাখন কুলুর। কাটের মতে নিদ্ধান্ত সকল, আনার, আর ছুই শ্রেমানত বিভক্ত,—(১) আগভন্ত এবং (২) অবশান্তাবী। "হর্ণ রব-সাধ্যা" এ নিদ্ধান্তি আগলক; কোনা, ত্রব-সাধ্যাতা সকল বাদ নিয়ান্ত ব্যক্তি ভারান্ত্র যাইতে পারে। "হর্ণ বিভারবান্ত্র বিভারবান্ত্র পারা যাইতে পারে। "হ্র্ণ বিভারবান্ত্র বিভারবান্ত্র পারা যায় না।

এ পর্যন্ত প্রভেদ-টি বুঝিতে কোন কট মাই।
ক্রিকি সিদ্ধান্ত মাত্রই অবশান্তাবী, আর, আগত্তক বিক্রিক মাত্রই বৌগিক, এটুকু পরিকার দুঝা বাইতেছে।
ক্রিক বৌগিক অগত অবশান্তাবী, এইরপ এক কিন্তু উক্রেপীর সিদ্ধান্তের কথা কান্ট যথনটু বলিতে হাল ভাররাছেন, তখনই গোলোযোগ বাধাইয়াছেন। তিনি
বলেন যে, এরণ সিদ্ধান্ত অবশান্তাবী সভ্যোর (অন্ততঃ
মহায়-বৃদ্ধি-ক্রন্ত অবশান্তাবী সভ্যোর) ক্রন্তাবান্ত, অথ্য প্রতিপদ্ধের অবিলোগিতা উন্তানের নিন্দিন-চিত্র নত্তে।
তবেই ইটা যে, এনকল সিদ্ধান্তের বিশেষক প্রদের অব্ প্রতীক্ষি দাবি হা প্রতিষ্ঠ পরিপ্রাম-সহকারে প্রামন একটি তার ক্ষিত্র জার জার গাড়ী

किम बत्तम (ग. काकिक धनः अनिश्वनिष्ठत न्यस मुन्डकर सहभाशानी मिलक निशाय है अधिमध्यत क विद्याबिका देखांकात नैविज्ञायक नद्द । छोहान नवान क्ष्मीय "मार्क्षांत मार्क वारता, रुग" धरे नि १४छ । केंकि बालने दी, व्यक्तिशासन प्रतियो व देशार प्रवर्ती नाहै। किंह व्यागारमत हरक बामता व्याप्रेड स्थि Cक्रि एग. फेटान अखिलक अनिवाक-गर्ड, अन्तर्भ উছা ক্ষিক বিদ্ধাপু, কারণ, যদি বলা খাব বে, - শ্লাত আৰু প্ৰত বালো নহে? তাহা হইলে প্ৰকলো-স্করেইলের ন্যাল্য যে প্রাত আরি পাচন-সাত নার পাঁচ ৯৬, ' , শহে তি পোঁদপক বচনেৰ বিদেশ্য পদ छेबात ि भग भारत अद छेल्डेहिया भिट्डाइ ; ग्रूमियोः প্ৰাক্ত আৰু প্ৰকৃত লাগে ইছাল বিশেষণ প্ৰদেশ অৰ্থ িউহার বিলেন্ত গলের অস্তৃতি, --বারো এ শহের অর্থ সাত-অবশালিত অহাত হৈ অভিয়† এ সিধাইট (संशिक मट्डा १% ० जिल १

काश्य कला । १६ (त. जातमा धारी मरकात मुक्क्यां-জ্রাত্ত সিল্লাম্ব মার্ট রা লে ; ইংলারে মধ্যেকার অনে-क छाना भाग जातात देगक दिक। फेर्सा क्रिक देवक-পিক ব্যিবাৰ কাৰণ এট যে, গণন বিশেষণ-পদের অর্থ বিক্লান্ত কলেক কি তা এত-দূর নিগুচ ক্ল**েই-প্রেক্স থাকে** · কে আহা সহলে বুলিকে ধৰা পৰ্যে মা, তথ্য ভাছাঃ ম্পাষ্ট নি গাটন বাংনাখামাদের জানে এক**টা পুরুদ্ধ খা**বি-করে সংস্থানিত কলিরা তাখাকে ব্রিজ করিরা জৌলে। গ্রহ-পতির অক্তবিসাধি যে ধন গ্রান্ডাক্সমে মুক্তিকা গর্মে <u>্রোগিত আছে, তাহা তো তাহারই ধন ; তাহা আবি-</u> ষার কৰিয়া। পাইবে পরে ব বাহা তাঁহার, ছিল—আহাই ভাঁহার থাকে; অথচ ভাষাতে ভাঁহার বিলক্ষণ প্রন-वृक्षि हम ; अभिन-धाता । य मठा शृत्वं इंग्रेट आभीतित কাছে আতে কিন্তু নিগুড রূপে প্রচ্ছা, ছাছাক আবি-ছারেও আমাদের জান বন্ধিত হয়। গুলু-বিশেদে বিশে-ষণ-পদের অর্থ বিশেষা পদের ভিতর নিগুড়ার**থে, আছির** थाकार्ट्ड कार हेत मार्ग अहेत्रल सम समित्राहित रा, প্রতিপক্ষের স্ব-বিবোধিতা নৌগিক অবশ্যস্তাবী সত্যের পরিচারক বংহ। কাতি তাঁহার নৈয়ায়িক পদার্থ-সঞ্জ 🍘র উপদংহার-স্থলে যে-সকল ভর্কে যৌগিক আ🕏 শাস্তাবী সূত্য ব্ৰিয়া সংস্থাপন করিয়াছেন, এখানকীর এই কৃত্র পরিসরের মধের তাহার স্বদ্ধে কেবল এই প্রথান্ত ইঙ্গিত করা যাইতে পারে যে, হয় তাঁহা জানের: অবশান্তাবী সত্য নহে—ময় প্রতিশক্ষের স্ববিরোধিতাই ভাহারীনিদর্শন-চিহ্

া তর্গ শিশে নানা অর্থ বুঝার, কিন্ত উহার মুখা অর্থ বাহা ন্যায়-শাস্ত্র ব্যাখ্যাত হুইয়াছে তাহা এই;—
তুরু মিত্রে চর্গলিক্ষর স্থা অর্থ সমূহদ্য উপদেশঃ, ইহার অর্থ এই দে, পালপার-দিছর (অর্থাৎ রাতিমত প্রণালীবছ্র) বিষয়-সভূষের উপদেশ; ইহার ইংরাজী প্রতিশ্বস্থ System:

রতে তছাইয়া ভুলিতে চেপ্তা করা হোক, \* যাহা এক দিকে ষেমন সভা ইইরে, জার এক দিকে তেমনি যুক্তিয়ক্ত ক্ট্রে—মিথিল ী রূপে নহে কিন্তু পুখানুধ্যারণে; এ ভিন্ন **উহার আ**র-কোন উপায় নাই। "অভি-\* শ্রায় ভাল" এ কলিয়া দোগেও এতি দহা করা হইবে না; কমুব্য-জ্ঞানের তুর্রলভার ছুতা গ্রাহা করা হ**ইবে না (ক**রিণ, সে এবং-नाजा जात किছूरे नाम-करन दिना अर्गत ভान-काती जानमा गाँवो; वाशावि धान ক্টিন বলিয়া কেলি একাৰ ব্লিঞ্জি—চাওয়াও इहेरव ना—ति ९<sup>™</sup> ७ इहेरव ना l कार्यां है। ্ৰুয় ব্লীতি মত করা হোঁক লা হয় তে। কাদ-র্থেই না করা হোক। প্রস্তাবিত একটি ভত্তমানের দেহ-গোষক কোন বৈত-প্রবন্ধ হইলে চলিবে না। আমি তো কটি খড় গ্রভৃতি উপকরণের আয়েনজন করিয়া নি-শ্চিন্ত-প্রতিষ্ঠা যে গড়িবার সে গড়িবে-कतिरम हिन्दि न। विख्नारनत উপকরণ-সংগ্রাইকদিশের অনেকে আপনা-८न्द्र शतिझारमत श्रीक् अन्तिभ मेनरा-मृष्टि নিক্ষেপ ক্রিতে কেম্ম তৎপর। বিনরী त्नाक मन । अक्षन बाज-मध्यत-द्वा-त्न "এই नि'न गरानंत्र है है कि - अयन आपनात्र ৰাভি আপৰিই তৈয়ারি করিতে পারেন" छाहाटक द्वन अनावाम ना निटलहे अग्रा श्राचित वार जच्छात्नत भात-कथा-छनित একটিকেও ছাড়িবে না, প্রতঃ ই সমস্ত श्वनितक मैंगरक्तरं षाश्चमार कबिल वरः স্থানত মুক্তি সূত্রে **অসুসাতি ক**রিয়া তাহাদের লইয়া একটা পরিপাটী-শৃন্ধলা-বিশিষ্ট সম্প্রী-কাও দাঁড় করাইবে I- বিশাল <sup>ক্</sup>ভভুজ্ঞান রক্ষের যে-যে মূল-এছি ক্টুডে ক্ষেট্ট মত-শাথা প্রসারিত হইয়াছে, উহা সেই সেই कान ठिक्ठीक प्रथाहरत । दिवामीता निष्य--(म-मत द्वान क्वांशांस-क्वांस क्वांतन ना। था

ভাবিত প্রভোগ বাগেগতবা বার্থা প্রক্রেন এক কাই যে, প্রভাগনি তল্প ক্রিন্ট ক্রিট সম্প্রাইতির ভ হইবে, আর চাই মে, উহা ত ভজানির একটি সমগ্র তন্ত্র হইবে। আর কিছু না হো'ক, অস্ততঃ এটি স্থির শে, তত্ত্ জ্ঞানের হানাবস্থা সংশোধন-পূর্বক তাগকে ভাল অবস্থায় জানিতে হইলে এমন একটি গ্রন্থ আবশকে, যাহা গে'ড়ায়-ক্ষিত তুইটি বিষ্ণাের প্রাইলাক্র এবং মৃতিযুক্ত হইবার প্রথাৎ সভা হইবার এবং মৃতিযুক্ত হইবার প্রথোজনীয়তা) জাগা। গোড়া মানিয়া চলিবে।

### সভা এবং থুকি উভয়ামুক একটি প্রতীকার ভত্ত অসম্ভব নহে।

জিজান্থ ব্য**ক্তি মদি স্থির-চিত্তে** এবং **ভন্ন**ভঃকরণে ভ্যানের হিত-সাধলে যত্ন নি-रशंभ करतन, जर्ब मठा जाश्वनात काज षाशनिष्टे कदिएव-एम बना दर्जन हिसानाहै। म्ला भाग, वर्षाद (नोकिक-हिन्दानंड म-क्षेत्र जान, यनिक निजाल है ज्वादनत िद्रवाशी, ত্রীপি জ্ঞানের সৃহিত সত্তার এখনি এক স্কাৰ্যনিক ঘনিষ্ট সম্পৰ্ক আছে বে, জিজ্ঞাস্থ वाद्भि यनि व्याननात नका वाश्नि व्याधकारन জ্বনিয়াত করে,প্রারই দে লফেরে কাধ্যন হত-সকল হয়,তাহা হুইলৈ ওম কেইল এ প্ৰভাৰ-मिक मन्नदर्भत है। दम शिक्षा क्यांटनव महिक मजा मध्यक इहेश। यात्रा अज्ञात्मत सहित् मन्त्रक महा का यासी दम्ब शासि-वामा जात, गेंगूरवात कान यर्गन पाटक, जरन खरना त्महे कादनव गर्यालयुक्त वातरात्रभ जाहात সাধান্তভা অতএব তব্ৰজ্ঞানের নিক্তে এ कथात दर्गन वनरे बादि ना त्य, क्वादनत बर्गालञ्चल नावहाद मेन्द्रमात मानाजीज, वान्त्र मर्कात सर्हिक स्कारनेत शार्यक्षमा धनः

# Mines remains and accordance of the same o

- किछ, ब्राटनित यर्था क्रिके वास्त्रक व किर रंग्ल क्या। अप्तरहरू मान ज्यान-त्वन अहेणिर किता अरे अर तक की की শিষ্ট বিষয়ের সম্বন্ধে কৃত না চুন্নাই বি বাবস্থ। লিপিবদ্ধ ইইয়াছে, কিন্তু আইছে আ**ল পর্যান্ত** কাহারো এক তিল ম**লান-রাম্ব** যুক্তি বুক্ত তত্ত্ব**জ্ঞানের পর্কে** रहेल ना। নিল্ল-লিখিত একটি মাত্ৰ অমুষ্ঠান-ছিৰি ষথেপ্ত কার্যা-দর্শা। মনত তত্ত্তভানের অ্নুষ্ঠান विधि भरे , - कि इरे शोकाः कतित्व सा-क्यान যদি-না ভাহাকে অবশাস্থাবা সভা বলিয়া প্রতিপাদন করে; অনুশক্ত্রেরী মৃত্যু, অর্থাৎ যাহার প্রতিথক্ষ-কলনা স্বিনাত-সূচক, আর, किहूहै अभी गत कतित्व ना - यनि छ। य-विचाल गूठक ना रा, खबदा बाहा धरहे कं িজ্ঞানের ফোন-এগট অবশান্তাবা স**ভ্যের** বা অবশাস্তানী, শিয়মের বিবোধা না হয়। এই অতুষ্ঠান-বিশ্বিটি দুংলবেণ পালিও হউক, ভাষা হইলে তর্ত্তানের সাতে কার্যা কুশলে **নির্পাহিত হইবে।** এই বিষ্টির ওরুত্ব— -वर्ण्यान्दर्-किञ्च मान्दन ।

ৰবৰ্ষন সংহিতা-তথ্য সভাবতা এবং বৃদ্ধিৰতা ইনেতেই আপনাকে সৰবান্ মনে করে কিছ বেশীর ভাগ বৃত্তিমতাতে।

উপশ্বত দর্শন-সংহিতা, যাহা উপরিউক্ত সাধারণ মন্তবা-গুলিকে কার্যো পারিশত
ক্রিতে আয়াস পাইয়াতে, তাহার সম্বন্ধে
ভূমিকাছেলে প্র্বাহে এইটি বলিয়া রাজ্য
ভাল বে, বলিও এ তল্ল-টি—স্তবেক্তা এবং
বৃত্তিগ্রা—তুরের কোনটিতেই আপনার সম্বন্ধি
অধীকার করিতে পারে না (বলি করে তবেদেরপে মিখল-বিনয় কাহারো প্রভা-ভাজন
হইবে না) ক্রাপি ক্রেক্তার উপর ওও নার
যত মুক্তি-মভার উল্রেক্তার উপর ওও নার
যত মুক্তি-মভার উল্রেক্তার উপর ওও নার

সংস্থাপন করিতে অভিলাগী। ধনি অন্যান্য ভন্ত অপেকা উহা সত্য হয় হরে দ্ভিন্ত গণেই উহা ভাহাদের মপেকা সভা; আর, অন্যানা তন্ত্র ধনি উহা-অপেকা অসভা। মৃত্তির লোগেই ভাহাণ উহা-অপেকা অসভা। যদি বুজি আ নটি প্রণা গরিতে গৃহিত্র ভ করা যায়, বাং অনেক তন্ত্র বন্তুমান, ভন্ত অ-পেকা হৈচা বহন্ত মানা বাহায়।

Award of the state of the state of the state of अधे करें। सार्वा भारत का वन्त्रक्ष अधे ्ष केवा न्टार राभ हर एक दिनाई। 多數 海绵色 化有头 人名伊克伯斯 安医人外槽, [在 重复声 ] 化对象 文化 一译 机砂油罐 新婚士 क्यू, केश्वर १, १५ । १००० किस महर ५ ५१३व, ्र रहेरे ५ १० ल इ.स्ट्री क्लाइडि-्प्तर १ र एक १ वर्ष १ र १ वर्ष भूतक द्वारि ्वित्र १ र १ । १ १ १ एक विकास शिक्षिकान गा १२ क अहम कि अन्तर विक्**रे आहेट्य** সাৰ না, চলন চল চাল বলিয়াছি যে, সদ্য-टार के कराव के भारतात निव**र्गन-विद्य** র ১৮৮ ১৯ শান ১৮৪(-প্ররোগ এবং **তাহার** মাত্র বিভাগ প্রিন্তালের সম্বা**ন্ধলির প্রতি** এলে জে তথ্য কেলে লাক্ষাক **ইহাতেই** ব্লেড গালে সেইটো না, প্রেম্বা**তভূটি যাশা**-थ ६ सन्तम्ह 🐧 क्षे ६३ न्तर्व इहेर्ड সমস্ত ভন্তুটি ব্যোগাহিক সিভান্ত পরশ্বরা क्रटम नाकानक रहेश्राटकः; टम निकास-গুলর কোনটিই, দৃচ্ প্রমাণ-বরণয়, জামিতির कार्ना निकास बार्शका कारना जारन मान भट्ट, षांत्र, ममन्द्रभनि এकटव भिनिया ब्रह्मा-কার একটি-মাত্র অকাট্য সিন্ধাক্তে পর্যবসিত। चकाछ। ध्वभारति शताबाधी-विद्व यपि ले সিদান্ত-গুলির গাজে অঞ্চিত না থাকে; যদি প্রস্তাবিত তল্পের এক স্থানেও একটি ছিত্ৰ থাকে; যদি উহার কোন-একটি অধি-

**福月神**日 1

### णातादिक सम्बन्ध

শ্রহ্মাপ্রদ প্রির বিচায় ফার্ডাই নহাশর স্থারিশ স্থাকের স্ট্রেরার, সুন্ধ্রি

बरन Promise । दमाराचक १ की एक उर १५ जनस्म শেক্স-প্রকরণ-নিজিঃ সোহার গাড় গাড়া গাড়া বিদ্ধা **ইইলে অন্ত প্ৰেক্তৰ সিত্ত হ**া তাহাৰ আনিক্ৰৰ বিভ ভার। ঐস্কটির ভাবে উহার যাক বাবেল কর। হটয়াছে ডাহা এই "বল ধর্ম সংগ্রী মত্যে 🦠 ন্মুষ্-भारतः, स टेशर्विमा प्रार्थाः मिकाछि, एउंश्यू पन अस्तरः, मार्श्वकवर्गमका**छः". देशक अर्थ ५८, ८**० (सर्व छ निष्क इंडेरन अंशांस दिश्य मिक ३४, ५८४६ भाग । बहा मर রেকে ভাষারা দিছ হব না, সভ তে ভাষার। আপ্রের করিয়া **আহে, অথ**া২ জন্ন করিয়া আছে, তাহাই অহি-कर्तन-निकास ; Premise अवर व्यान अवस्त के भारत नवार्थक व्यानकश्यन मर्थान । वाता व काल पार्ट्यनार व অনেকে Concurrent এই অর্থ বিলীয় শাদর স্বান্ प्यास्त्राम कतिया परिकत,-रेगो स्य पूर्व नात्वा कार লিখিত বচন-টি দেখিলে তাঁহানে মুখ জলে মুখ-हे**त्, यथा,--**ेरांख घटा र्राज घसक हार्राज्याः নিদাক্তঃ" অর্থাৎ, একে বাসনা নাম লং ডাত হয় ভাষাত্ সিভার্তি ইংগালিতে ইংগ अर्थ & Proposition as 4; same solved and two নির্ভান্ত নির্ভান্ত আন্ত্রান্ত্রাক্তান্ত Premise । (व भिज्ञाच आधियम द्वेतच्यानक अभाव चात्रा शावधार होतार्त केंद्रशाल नहीं 'Unionty, एव শিক্ষাৰ ঐদাপ-প্ৰমাণ ধারা স্কৌলোটিত ও তাহার हेश्यांक नाम Hypothesis।

পরি লাগে করিয়াছেন। তিনি ত্রাক্ষাসাংজ্যের মধ্যে একজন বিচল্ফণ ও মার্ন্সিক। শ্রীমৎ প্রধান আলোধা মহাশয়ের মধ্যাবছায় যত-গুলি নিয়া হয় তম্মধ্যে কেশনচন্দ্রের নায় পতিও বিজ্ঞাক্তরেও ঐকজন গণনীয় এবং জান ও যোগ-মার্লে একজন আগেল। স্ত্তরাং গোলার কথা লইংগ আলোচনা লরা আমরা লোন আংশেই নির্প্ত বিবেচনা করি আমরা লোনের প্রধান করিন ন্র্তিশ্রের প্রধান করিন ন্র্তিশ্রের প্রধানি পত্র ব্যাখারণ সমারেন সাহত সম্পূর্ত পরিত্রাধারণ করিন ন্র্তিশ্রের প্রধানি পত্র ব্যাখারণ করিন করিন ন্র্তিশ্রের প্রধানি পত্র ব্যাখারণ করিন করিলাম। একবে তাহার প্রদান করিলাম। একবে তাহার প্রদান করিলাম। একবে তাহার প্রধান বি

तर्खगारम शृथियो नानाक्रल **উल्लक्ष्य** দূষিত। বি হিন্দু তি মুসলমান কি এ। প্রাধান मक्न मयाखरे छेन्दर्भाद लाष्ट्रश्व । स्रोव-ছানতের নিয়ম এই বে,যাহ। যোগ্যতর ভাছাই जीविक पारक, जात ममछ विलूख हरेगा যায়। বর্ণমজগতেরও ঠিক ঐ নিয়ম। বাঁহার। বৈদিক ধর্মোর ইতিহাস আলোচনা क्रियारहर्ने अहेंगे डॉहॉरम्ब (दर्न दायगम इहेरव । (२८५ मृहे इम्र अंक अक रेविंफक কবির স্বাদয় অল্পে অল্পে জড়ুর।শির আবরন टिंग क्रिनात दहरे। **शाहेट**ल्ट , प्रदेश पर् অনস্তের দিকে উলোষিত হইতেছে এবং প-রিশেষে দহর্ম শক্তিতে উহা খনস্তে পূর্ব বি-কাশ পাইয়াছে। এই টুকু দেখিলে বোধ হয় त्य, त्य त्याभाजत त्महे कीवज थारक कमत्ज क्तिन कार्रेन अरे निव्ययंत्र राज्ञित नार्रे। এহনে त्य, याहात वन अधिक अधीर याहा সত্যু ছাই জীবিছ। অপরগুলি কবিতা-রাশির সুমাধি জুলে হত ও শয়িত থাকিয়া লোকের অতীতের উৎস্থক্য চরিতার করি-एटह । अभारत यज्ञण श्रामन् कतिनाम **এইরপ निर्माद्यत यहुन्दे क्राक्रधर्युत छे**९পতি। ইহা অলে অলে দক্রালী উল্প্রিক্তির বন্ধ ভেদ করিয়া অনভের দিকে বিদ্ধানিক ভর্মাছে। ইহাই এই ধর্মের স্বাভারিক উলতি বা রুদি। যে জালা সভ্যকাম স্বাধার এই ইাতহাদ আলোচনা করিলে ব্রিতে পারিকে কি উপায়ে ইহা রক্তিতে পারে। এখনে স্পার্ক কণায় করিছে এক কথায় এই মান বল মায় মে. ই শিশু একরার মার্কাভ শানে কালা বিদ্ধানা বিদ্ধানা প্রাক্তির হাইয়া মহাবিনাশ। স্প্রাং যাহালে আক্রান্ত প্রাক্তির ইইয়া মহাবিনাশ প্রাক্তির করিব।

এতগতীত ভাঁচার আরও বিদ্যু কর্মব্য আছে। তিনি যে মতালী পাটবেন অধিকল ভা**হাই** প্রচার করিবেন। বিষ্ণুত আকারে প্রচার ফরা বিশেষ অনিইকর। এই প্রা**ন্থে** मः (कर्ण कि हू वरा स्वातमाक इटेर**ाट ।** ख्डान : ९ **छार** नहेंग्र, तक । महन कहे, दिन स्म ধর্মা প্রদায় করিয়াছে দর্শন ভাষার জ্ঞান ভারে পুরাণ ভাষার ভাব বাকবিভা। এটারের পক্ষে अर्द्धत्र এই छूटे बङ्ग् विस्थय छेलर्याणी। কিন্তু এদেশে এই কনিতা কিছু অনর্থের মূল ইইয়াছে। আমরা ইতা অবশা দ্বীকার করি কৈ বিভদ্ধ সভা প্রচার করা দর্শনের নাায় পুরাণেরও উদ্দেশ্য কিন্তু কবিক্রনা **পঞ্চাত**-সারে তাহার মূলে আঘাত করিয়াছে। ইহার क्षधान कांत्रन हचारवरण नजा क्षणात । ब्रह्मस्य বে দেবদেবীর এত বাতলা ইহার কারণই এই ছন্মবেশী সতা। প্রাচীনতম বেদেই ভাহার মূল প্রো**থিত আ**ছে। কিন্তু দর্শন বেদ হইতে যে অবিমিশ্র সভ্য এচার করিবার চেষ্টা পাই য়াছে পুনাণ ঠিক নোরূপে কৃতকাষী ছইতে भारत नाहै। इंश इम्न डीशन जाहि, नुम ह्यार्याम गठा क्षेत्र उरकारम अवने (बारमञ मर्सा की ज़िहिता हिला कि खामार कर चन्

**त्नक खुट्ल द्वां**शिष्टे वलतथ गत्न इह। ≥ष्णान्, ্রিমরা নিম্নেসং**শে**পে তহি। বিরত করিতেছি । ্রত বিশেষ কাল, ভারতের অতি শৈশব কাল। িকিন্ত লৌরাণিক কালকে যৌবন বা বার্দ্ধক্য বং निक्का निर्देशक कत्र≯योहेटल शास्त । ८४४ ८महे সমরে কি হইয়াছিল। আমরা জগৎকার্ফে থে সকল প্রাক্তিক দ্বির্ম্ম দেখিয়। থাকি বেদের ফাল কাহা কিছুই বুঝিত না। বায়ু বহিতেছে, नुमा खेरिटलस्ट, त्यांच शहरतरम हिन्दारह, এই সকল শ্বাপার দেখিয়া আদি কবিশ্র ইছাই कातन अनुमणान कतिएकन अवश्रीनाज्यत व हेक्-সাদ্ধে প্রেড্যেক ঘটনায় এক সচেভন অবি लालांब कहाना कांबरजन। गर् मन न एडेमांब মধ্যে কতকণ্ডলি মঙ্গলার অপ্রার ক্তর্পুলি সাহা মঙ্গ**ল**কর **উঠানের চক্তে** 집회학 어디던 [ एक्षिष्ट रमञ्जा काज साहा जामननक अराहे অন্তঃ। মেল আভাবদার উপায় সূধ্য বা ইল্ডোড় আন্ডোককে আবরণ করিত স্থতরাং ছাহা অন্ত্রলকর এজন্য ভাষার নাম রত্ত্রস্থির। এই সমটুকু ধরিয়া পোলানিক ক**বিয়া দেবরাজু** ইত্রের সহিত রুজান্তবের একটা থোরতর যুদ্ধ বৰ্ণনা ক'বলেন । বৰ্ণনাৰ ঘটায় বোধন হয় ्यम हेश कन हो विस्तित ए**हेन। आत क्रिकी** ৰল দেখ। প্ৰভাতে মুগ্ন উদিত,তাহার স্বৰ্বৰৰ্ণ কিংগ প্রাভাতিক প্রায়ুকেনে আন্দোলিত বৃক্ষ-পত্র সকল স্পর্শ করিতেছে। धरे पिषिया कवि व हान।वट्न कित्रगटक कत्र शानीश कतिशा স্ব্তিক হিরণাপাণি বলিয়া নির্দেশ করিলেন। কিন্তু ভবিষাতে এই সূর্যাই হিরণাপাণি অর্থাৎ বহু-স্বৰ্ণ-দ বলিয়া যভ্নান কর্তৃক স্তুত হয়। আরও একটা দেখাই। বেদে সূর্যা বিষ্ণু-নামে অভিহিত হৈইয়াছে 📖 🐠 বিষ্ণুর বিদুৱে কথিত আছে যে, তিনি, পূ**ৰিবী অস্ত**-ত্ৰীক 🕏 আকাশ এই তেন সংশে ভিন भ्रम निरम्भ कतियां थारकनः। विषे मूखहेकू 🧽 🌦 रेन्र विकृतिहळ्या त्वथा निष्ट्य 🎉 ।

ধৰিয়া পৌরাণিক কঁবিয়া বাদন অবতশ্বি সৃষ্টি ঝাৰ্ষিরা ভাত্তিক সোন্দ্রীর করিলেন 1 মোহে মুদ্ধ হট্যা প্রথমানস্থার ক্রিডের আৰ कांद्र त्या भकन सदन कण हो समान्याम অত্যৈ কে ভাবিয়াছিল গে ভবিষ্যতে পাছার এইরূপ পরিণাম হইবে। ফলভ পৌরাণিক দেবতভের অধিকাংশেরিই মূল এই ছুদাবেশা এম্বলে অনেকৈ বলিজন হৈছিক ফৰিবা প্ৰাকৃতিক ঘটনা দুৱে প্ৰতিবাৰহাৱেৰ माप्तभा भाष्ट्रेश कल्लाना दर भवल भटल दर ধলিয়া ছিলেন ভাষাতে পোরার্পণক কবিদিলেব বান্ডবিকই লম কটগাছিল। এই ভ্রম কটাডেন পুরাবে নানাক্রপ দেবভার সৃষ্টি হয়। ভালই, এরপ হলে কেং ভ্রম বলিতে চান বন্ন কিন্তু আমল তাহা বলি না। অভি প্রাচীন কালে কুমারিল্ল ভটের স্বিচ্চ বৌদ্ধবিগের বিভার ময়। বৌদের। দেবছেয়ী। তাহার। কহিয়াছিল ধে জ্বন্ধা কন্যাগামী, ভাঁহার পূজা কিজপে কর: যায়। প্রভাতেরে কুমারিল ভট্ট কহিরাছিলেন ত্ৰকাৰ পক্ষে এ ঘটনা বাস্তব নয়। মূর্কোর<sup>্ব</sup> অপর নাম ত্রকা বা গুলাপতি। অব্লেষ্ট্রাকালে ভাঁছার আগমনে উচার जया। अर्थ जनारे छेश लाशत पूरिका। छ-যার সহিত তাঁহার তেজ সংযোগ হয় বলিয়া ঐ উভয়ে স্ত্রীপুরুষং উপচরিত হইয়াছে।। ঘটনা বাস্তব নয় ইহা করিকল্লনা মাত্র। এর্থন এই স্পান্ত কথাটা আলোচনা করিলে এবং পুরাধের দিখনভঙ্গী পরীকা করিনে বোধ হয় ছদাবেশে দতাপ্রচার তথনকার একটা বৈদ্যাপ ছিল 🚛 ইছা রোগ বা ঘাই হউক কিন্তু আমর। বলি সত্যের অঙ্গে এই-রূপ অলম্ভার বড় বিপদাবছ। এইরূপ এজ্ঞ

<sup>†</sup> প্রজাগতিতাবং প্রজাপালনাধিকাবাধানিত।
এবোচাতে বা স চাকণোদ্ববেলায়াস্থস্থানায়ভোতি সা
ভানাগমনাদেৰোপভাষত ইতি তদ্ভিত্তন ব্যপাদশাতে। তস্যাং অকণ কিরণাথ্য বীজনিক্ষেপাং ত্রীপুক্ষ
সংবাগবহুপচারঃ।

সত্যে এক সময়ে জনসমাজের বিশেষ অনিষ্ঠ-হইয়া ছিল। পুরাণ পাঠে ইহারও যথেষ্ট প্রমাণ পা ওয়া যায়। কোন ও সময় এর প প্রশ্নত উঠিয়াছিল যে অসংকার্যো একাদির यि किছू, श्रेष्ठाताय न। स्य তবে सनूरवात কেন হইবে। কিন্তু প্রত্কারেরা বড় চতুর। ভাঁহারা লোকভিতিভঙ্গ নিবারণের নিমিত্ত প্রত্যন্তরে কহিয়াছিলেন তেক্লীয়ানদিগের ইহাতে কিছুনাত্র দোষ নাই। ইকাথাও বলি-রাছেন ত্রক্ষাদির এরূপ কার্য্য কেবল অস্থর-প্রলোভনের নিমিত্ত। অথাৎ তাঁহাদের দু**ঙান্ডে** অস্থরেরা এইরূপ পাপে **লিপ্ত** হইয়া ্ 🕏 চছন্মে ঘাইবে। কি চমংকার প্রাক্তর !

্রথন বুঝা গেল সতোর ছদ্মবেশ কভদুর पृष्वीय। यनि वन वर्त्तमान नजाकीराज छक শিক্ষার প্রাত্মভাব। এখন ইওরোপ ও ভারত-বর্ষ জ্ঞানে এক হইয়াছে। স্তরাং কোন রূপ ছ্মাবেশ সভাকে লোকের চ্চেম্ম আর প্রচন্দের রাখিতে পারে না। এ কুখাও ঠিক नरहा जाउठतर्घ क्वन अवन्द्र ए फ्रिक শিক্ষাৰ প্ৰাতুৰ্ভাৰ ইছা কে বলিল ৷ এবানে এমন একটা সময় ছিল যে, পুথিবীর আর কোন দেশ এপগান্তও ভাষার সীমান মাইতে भारत नाहे। यागता मिरे कार्तक उद्याप করিয়া বলিতেছি যে তথ্নও এই শুরুম সভার অনুসন্ধান অনেকেই পান নাই 🖟 উ ক্রের সহিত তাহার সন্মুখে দাঁড়ায় তখন পরে যে থবীকবিবাদের কথা তুলিয়াছি 💘 ৰারা ভাছা কতক্টা প্রমাণ হয়। যথন এছ-বিশেষ জ্ঞানের প্রমাপক না হইয়া বৃদ্ধি হৃদয় তাহার প্রয়াপক হয় সে সময়কে ব बार्ट छा निकात बीन वनिव। व्यक्तिशार्यात हे कि शेरन का शत निपर्नन कार्र्ड । जात मणूत ধর্মাধর্ম-নির্বন্ধ-হল পাঠ করিলেও তাহ। অনেকটা বৃশিতে পানা যার। স্থিতবাং দে मगर्बं वर्षन व्यत्ना करहे हरू मुख्या धरे हमार्यन गटा शुरु नाहे अवर बी गामक

मिटगंब बाता शूटकी**क एकारंब** ्या क्रांक रहेटन यथन बावर्गान कान खाल्डिहे চলিয়। আসিয়াছে, তখন ম্কুক**েঠ** বল্ যায় স**ত্যের অংক** অলঙ্কার বড় দূষণীয় 🕴 🦏

**এই मानकात नर**्षत खन्म **यारलाहक** কি**স্ত ই**হার: কর্ম্ম ছোর অন্ধকারে। নির্ভার রূপে মুগ্ধন। হটলে ভাছাকে সাজাইতে প্রবৃত্তি হয় না। এই মোহের মূল আ-লোক। আবার আমি যেমন মুশ্ধ হইলাম এইরপ অনোও হউক এই জনা তাহার সাজ-ফলত সতোর এই বাহা সম্পদের যাহারা অপ্তা বাহা সম্পুদ তাহাদিগকে মুগ্র করিতে পারে নী কিন্তু মুগ্ধ করে পরবর্তী-দিগকে, তাহা**ও**ুআবার অ**স্ক**কারে। কহিরাছেন কেবল সাধকদিগের হিতের নিমি ভট্ বাহা সজ্জার এইরূপ কল্পনা জানিকে কিন্তু পরবর্তীরা অলঙ্কারের ঔ**ল্লনের কল্প** নার কথা বিশ্বীত হন এবং অসম্ভারকো वकिष्णाखन महा निया थारकन। वह ते আলক্ষারিক নোহ এই টুকু অকার ক্ষ हेहरेल ऋ डिं भार ना। अर्तक मुगद्धी स्मार्ट यातात अक्तकादात अक्षे रहें। দীড়ায়ী কারণ, আধীন বৃদ্ধি তত্রে অনু লুরুণ করে ইহাই তাহার ধর্মা, কিন্তু ঘ ব্ৰের উত্তল আবরণ যথন একটা আগু বা-ৰুদ্ধির আর জাধীনতা থাকে না। সে ওদ তেই নির্বিচারে ন্যা হইয়া পড়ে। 🔫 🖼 🤼 এই আলফারিক মোহই অন্তর্বের শুষ্টা ভারতবর্ষে দেবভত্তে বিখাদ এই মোহ-জ ভাবেই ঘটীয়াছিল।

এখন এক স্পাদ গোকামী মহা<mark>প্র</mark> দেখুন তিনি আধ্যাত্মিক রূপক ধারা অর্থাৎ क्रम्राक नेयन ७ जागाटक मार्थक धक्री (य न्यूक्त वत्रद्व वीकार्य श्रात क्रिक क्षेत्र हरेग्रहन छाराव

কত দুর অনিষ্টকারিতা। এই ষে আধ্যা-স্থিক রূপক ইছ। কিছু ন্তন নহে। গোপিকা সকল দাধক ও কৃষ্ণ ঈশ্বর এই রূপকের উদ্ভেক্ত ভাগবতের কোন কোন বৈষ্ণব টীকাকার করিয়া গিয়াছেন। আর যিনি <del>দীব্</del>রভেট্নে এক সময় সমস্ত ভারতবর্ষ শাতাইয়া যান সেই ধর্মানীর চৈতনা যে 🔄 নন্দের নন্দন বিভুদ্ধ মুরলীবরকে তাঙ্গত ই-শর জানিতেন তাহা নছে। 1 ত্রিও একটা আধ্যাত্মিক অর্থ গ্রহণ করিয়াছি প্রশান কিন্তু চৈতনাই ভূটন আর **যে**ই হাউন ভাগারা যে चार्तिहरू १३ मालकात महा भागगाहण्य অবস্থা উত্যাদের কোন ক্ষতি द्रशारे, १६८७७ भारत मा। कें।इन क्रम নটা ভাষাবাই সাড়তেছেন এবং ভাষারাই প্রতিত্তির । পায় গ্রাম্ম তাগ্রের অবস্থে निवासमान, एन्ता, अहे तांश १,८०० छ। छ।-বের গ**েক** প্রভাগে জাকিঃ গ্রুৱ। কিন্তু खिछाभा कति अहे हे एत्स्मात शत् कालन লোক রাধাঞ্জের এই আনবাল্লিক অর্থ প্রত্র করিয়াছে? ত্রেচ চেচ। দ্বিখারের কোন না**রি** নাই, ভবে সে নাম বেওয়া তার। **-কেবল** ভাষার সাহতে কভীত ভার প্রকাশ হয় না এই জন। কিন্তু ভাই কলিয়া যে **নান্তে** পাহিত কতকণ্ডনি পাথিব বিনামের বা লীলাম ভাৰ জড়ত তাহার কেনে আৰণায়িক অৰ্থ থাকিলেও হুমি তাহা লইতে পার না। তুমি অবশ্য ক্রফকে ঈষ্ণের ও রাধাকে 🙀 ভের একটা ভাষ্কা পরিতাহ করাইয়া উভ-अटक नाशक नाशिका , बार्ल एमथाहरल अवस् উহাঁদের বিরহ ও মিলনের স্থীতও তাল ম নের সহিত গান ক্রিলে, কিন্তু ইহার क्त कि इर्ने जनगरा लंब , जिन छोत्र অভ্য ও এক ভাগু বিছত। যদিও বিভেয়ে। वाखदान निशा र शंभका व क्रमः ७ हास কাছার ভুঞ্জি লইয়াছেন ইহা দেখিতে भान कि ई पाछात्री जाहात विम्यू विमर्भ । भाष्य ना । जैन हो अपिनिनी, जिल् ফের শিথিপ্তেপটিত বনমালাকড়িত মস্তক কুঁহার চরুণে নগর্রাগে রঞ্জি হট্যা নগতে বি ক্লেৰোধাাত্মিক ভাৰ প্ৰচাৰ করি-তেছে में छोहात किहूरे दूर ना । करन ने प्राष्ट्रेन महाकती के बदर विचान अपः बहान

ताली जैयातत मामा तल गर्छ। लोगात विन শাস। ভাগবতের নাার ভাক্তদর্শন জগতে আর আছে কি না নন্দেহ। সেই ভাগ্রত-कांत्र 'खन्याना देवश्च कविद्र नगत्र द्वराश्वतः মার্ক্তা লীলা বর্ণনে লেখনীকে তাদুন প্রভাব <del>দেন নাই। তথাচ তিনি ভেকমবৈ লংশর</del> করিয়াছিলেন্থে ভিনি, জগততে গে পেল্য ও ভক্তি শিক্ষা দিতে চলিয়া, দন্মুকের এই মর্ত্তা লালা ভাহার, বা্দানক হুটাবে कि ना । कला दिक्य मुख्ये आहरत शतदात আলোচনা কৰিলে ভাছার এই সংশ্য সঞ্ তেই বেবে হয়। ইহাদের অনেক গুলি আবিদ্য কুফুলালাভাহাব ভূরি ভার প্রমাণ। ফল গ এই ভারত্রুষে কোন সম্প্রদায় ছাবা ধদি কোনও দুষ্ঠিত কাৰ্য্য হইয়া থাকে ভৱে ভাছা এই বৈষ্ণৰ সম্প্ৰদায় ছাবা হইয়াছে। ইহার कादन नाग्रक नाग्रिका ভाবে गुणन मुर्ভित क्वितन এই देवऋर म अनाव । न এই ছন্দ্রনী সত্য দারা আর একটা সম্প্র-দায়ের যে লেকের জনিষ্ট হইতেছে এম্বলে তাহারও উল্লেখ করা আবদাক। ইহা এত-**ক্ষেত্রৰ প্রবল তান্ত্রিক সম্প্র**ার ! ৰূপে তৃত্ৰ অবশাই একটা জ্বনা কাও। কিন্ত ইহার অধিকাংশ ছল উজ্জল সত্তা পরিপূর্ণ। **শক্ত লোকে আবরণ মুক্ত** কবিলা তালার তাতু উত্তেৰ করিতে পারে না। এই কনা ভাল্লিক-पिट्या मेट्या मनाभान नाफ्रिकांद अ्षि বোরতার পাপ গুলায় পাইয়াছে। ইহা গুয় मकदलहै अवगठ चाहिन या अहे जत्स छ मार्वनातं (नाहारे निष्ठा जात्नदक क्रिकेटलादक भक्तमारक मानाजन शहित कार्या करिया প্রকেন। এই জনাই বলিয়াহি নতেরে মঙ্গে विक्रिया जननगाटका नक्तनाटनात भ्ला লে**ুকে∗ অভাে** অলকারের প্রান্থা মুক্ত হয়, ক্ষেতিভিরে ,কি যে সভা আছে তাহার, ভা**ন**ু মঝানৈ তাহীব। আরু অবসর পাই না!

আমরা প্রথণেই বলিয়াছি ব্রাক্ষণে দ- দিও উপধর্ণের হাদর ভেদ করিয়া উ। বভ হইয়াছে। ইহার বীজনন্ত নির্লক্ষাব একার। এই ভিরার দাধনাই ব্রোক্ষের দর্শন তোভাবে কর্ত্তর বিনি এতঘাতীত গোল্ধানী মহালায়ের ন্যায় জনা বীজের পক্ষ-পাতী ভিনি নিশ্চয় উপধর্ণের হাষ্ট করিবেন।

\*\*\*\*

এই উপদর্শের বলে ভারতের সভাধর্ম মে-ষান্তরিত পূর্বোর ন্যায় প্রচন্তন হইয়। আছে। তে নির। কুমারিল ভট্ট ও শক্ষরের নাায় সেই সমস্ত অলম্বার চুর্ করিয়া শাস্ত্রের গ্রহত मज्हेक लाकरकी वुबाहेश एउ वैहार्ट हिन्दू बेर्ट्यात दगोत्रव ब्रोह्म शाहरव। ভৃতি অভিতর পৌচলিকতার ন্যায় এই হিন্দু-ধৰ্ম্মে ধে একত পৌতলিকতা নাই, প্ৰত্যুত ইহার অশ্বিস্ক্রায় যে একেশ্বরীকা ওত-প্রোত, শাস ও অর্থের আবরণ ভেদ ক্রিয়া खाद्य दिन्य हिवाब ८० है। कत, हेश बाब वि জ্ঞানোজ্ঞাল কালে এই ধর্মাকে বিনাশ ছইতে রক্ষা করিতে পারিনে, কিন্তু বিনয়ের দৈহিত ক্হিতেছি সতোর অলস্কার প্রঃপ্রচারের किह्न एउट्टे (हिंहा शहिक ना। कारन अह অনকারের হ'ল আলোকে কিছা ফার্ছি অস্ক কারে। স্বাদ উজ্জ্বল প্রভায় সুক্ষের **আনন্দ** লোপ ৷ করিয়া ৷ ক্রমশ স্থলের আনন্দানীয়ন क्त्रा हेहात शुण भक्ति। अहं बनाहे हेहीएक विश्वाचारतत काली विलया निर्देश कतियाहि। वार्जेश्वर मान्धांनी ভाরতের यटक .(मर्टे व्यक्त-কার আর আদিও না। ইহাতে তোমার - चिन्हे बागांत भानिहे अवर गमछ मिटनत मनिहे।

### প্রেরিত পত্র।

# ত্ৰাকা বন্ধদিগের প্রতি বিবেদম।

প্রকাশ করিল/ব। এই অনী/ব বিষয়াক্ষার স্টেক্তা সমষ্ট্রের নতা করণ জান বরণ কান্ত বরণ লান্ত বাতি মধ্য

শক্ষণ, অন্তর অমর নিডা, এক মাত্র আহিতীর প্রিক্ত শক্ষণ বিভা

তিনি নির্বাদীর বর্ণাৎ ভাঁহার কোন প্রকার জড়ীর রূপ নাই। ভিনি সকলের প্রতা কোন প্রতিভার মুক্ত ভিনি নামেন, তিনি বতপ্র কাহারও সহিত তাঁহার মুক্তা হয় না।

তিনি এক মাত্ৰ অধিতীয়, জগতে হইজন ক্ৰীৰ্ নাই, তিন জনও নাই অথবা অনেক ঈশব্ব মাই ক্ষিতি

যে কোন মনুষা জগদীখন বলিয়া যে কোন নারের তাহাকে ডাকে দেই অন্বিতীয় পরমেখনকেই ডাকেট্র আর হিতীয় ধরন নাই দ্বার কোথা হইতে অস্ত ক্রিম্বর্জ আনিবেন ব

পরমেখনের কোন নির্দিষ্ট নাম নাই। নানা দেশের লোকে আপন আপন ভাষায় তাঁহাকে এক একটা নাম করিয়া ডাকিয়া থাকে।

স্টিকর্তাকে লক্ষ্য করিয়া তুমি এন্ধ বল, আনা বল, পোলা বল, হার বল, রাম বল, ক্ষণ বল, কালী বল, হুর্গা বল, তাহাতে কিছু মাত্র ক্ষতি নাই। কেই কেই বলেন লোকের মনে প্রাপ্তি ক্যাইতে পারে: একথাও ঠিক নহে। কারণ হার শন্ধে ক্যাইতে পারে: একথাও ঠিক নহে। কারণ হার শন্ধে কিংহ, অর্থ, বানর, এবং পাণহরণকর্তা প্রমেগর এই সমস্ত ওলি বৃন্ধাইয়া থাকে। কৈই যদি ভগবানকে লক্ষ্য করিয়া হরি যদিক গদ গদ ভাবে ভাকিতে ভাকিতে জক্ষপাত করে তথল এমন শোক কেই নাই যে বলিবে এ লোকটা রাক্ষয় প্রজ্ঞান কেই লাক ভাকি লাকিতেছে। বিশেবজ্ঞান মহায়ের ভ্রম হইলেই বা ক্ষতি কি ল আমার উন্ধার্থ কর্তা মহায় নহে। আমার দেবতা অন্তর্গমী জিনি ক্ষানিলেই হইবে। তুমি যে মামে ভগবানকে ক্ষতে কেই নাম তোমার পক্ষে প্রেষ্ঠ। আনো যে ক্ষতিই ভাইতে আগতি কেন ।

পুরেই বলিয়াছি যে, ঈশরের অড়ীর রপ আই থেকানা উথাকে নিরাকার বলি। কিন্তু তাঁহার নিরাকার স্থিতিয়াক রপ আছে! যাহা জ্ঞানচক্ষে দর্শন কর্ম আছে নাই আন কর্ম, জ্ঞান কর্ম, জ্ঞান নাসিকা, জ্ঞান রসনা ইত্যাদি আছে। যাহাজে ক্রাবাদ, আখাদন, অমুভব হর। জ্ঞানচক্ষে ইহন্দোকে শর্লোকে যাহা ক্রিলু সভা আছে ভাষা প্রজ্ঞাক করা বারা। সাধন বারা জ্ঞানচক্ষিক লিভ হয়। যাহার পারীর আমা নির্মাণ তাহার আখন। আপনি ক্যানচক্ষ্ বিকলিত হইতে পারে। অনেকেরই হয়। পার্ম দেখার এক তাহার প্রদন্ত মানবীর আছি এক। বার্ম সভা তাহাই ধ্যা। সভা ধর্মে বল নাই ক্রাবাম নাই মান্ত্রার ভ্রম প্রমাণ ক্রাবাদ ক্রাবাম করি।

্ স্বিরাকে প্রীতিকরা এবং **ভাষার বিরক্ষীর নাধন** করা উহোর উপাদনা। তিনিকে আত্তরিক ভাল বাদিলে তবে ভাষার প্রিক্ষণীয় করা বার ।

আমি বাদ উত্তাকে বাজবিক আলু বালি তাই।

কটেল আ কেন্দ্ৰ আহাক ভাল বাদেন উত্তাক তাক কটনা করে বিনিট আমার প্রমানীর সম্পর্ক । একনা বেলার বিন্তা প্রাাশকনাতির নেই স্থানেই গ্রন করি, কটেল কটাইটো নাম বিশিক নেই খানেই ভপতিত হটরা আপনাকে ধনকোনি করি। আমার প্রভাকে পূঞ্জা পুরিভেছে, আমার প্রভাৱ নামকীর্তন কারতেছে, কৃত্যুজারুল, আনল ধরে না। এজনা স্থাকে শৈব বেঞ্চৰ মুখনি মুসলমান সকল খানে প্রভাক সংগ্রেমন করি। কত বৃক্ষ ভলে কন্ত্রপুর্বতে নদীগতে নির্মানিরে মসভিদ্ গিন্দার আমুদ্র প্রভিত্ত প্রভাগ ক্রিয়া ভূমিও হন্যা প্রণাস্ক করিয়াকুলাই ধ্রায়ছি।

স্থানাধের নেশে রাধাক্তক একটা টাণ্ডত সাধ্যাপ্রিক রুগ্রণ উপাসনা ও খোলেই এরপ উচ্চতার
আর আছে বলিনা আমার বিখাস লুক্ত। রাল ভাত্ত,
রুগ্ধ ইলপাসা দেবত পর্মেশ্বর। বৃদ্ধানি গুরুর, মহম্মদ,
টেডলা, ভালব করার প্রব, প্রেইন্সাস, নাবর, জনত,
প্রস্তৃতি ইলায়ানের ভালির প্রান্ধ উপাস্নাক্ষালে করার্ড নাবা ভাহাদিসকে দেন করা বায়।

भन्दाभतरे उत्पाद खिन। किन खन देश मर्का निवास कापट देशना सन, नागु, मृति, नुका, महा, करें, पंचल, जुन हिन्छा में का निल्हा के मिन देश काप महान्या देश कापट के सिका निल्हा के । यस मिन देश काप मिन भारी के समान के सिका कि हो के कापि छोते करि शिला मान हिन्दि छोड़ा में के लगान के के से खुनाम करिता मान छोड़ा के स्वाप्त के स्वेश खुनाम करिता मान छिन के स्वाप्त के स्वेश कापना के सिका करिता के सिका कि भारा विकास खार्या के सिका करिता के सिका कि भारा विकास खार्या के सिका करिता के सिका के सिका कि सिका करिता के सिका के सिका के सिका करिता के सिका के सिका

ভ তা কুটা ৰই না হ্বাল লাগ্ধৰ সভুৱ বাছির হয় না।

াটানিগালী প্রত্যেক নবনাবার জনায় জ্ঞান প্রেম
লাজ দিলে বেরাল ক্রিলেছন। জান্মার সহিত পরক্রিয়ার ভান প্রেল শাকার যোগ ক্রাকেই যোগলাকার
ক্রিয়ার ভান প্রেলিয়ারন করিলে সক্রোর দিব্য দৃষ্টি
ক্রেক্টিন কর। জন্ম দিব্য স্থানাক ক্রনার বস্ত্র
আন্ক্রিন কর। জন্ম দিব্য স্থানাক ক্রনার বস্ত্র
আন্ক্রিন কর। জান্তাক হন। ইল্লের ক্রভনার বস্ত্র
আন্ক্রিন বিভাগতেন। এ অবভা হকলে সংশ্রে আকে নাইন
ক্রেন্য প্রালিন ক্রিয়াৰ বিভাগতেন,

্তিটাত সদমগ্রাস্থালনতে সন্ধ সংশয়াঃ। কামত্রে চানা কথ্যান ভামন্ত্রে গরাবরে॥শ

্ব ক্রক্টের। মাধারণ আখিলখান্ডের প্রচাব নিয়াস্থ ৩০ শে ধ্রিশাখ। ১৮০৮ শ্রু

নিবেস্ক শীবিষয়ক্ত গোপামী

# ्रजा थानि-मक्षती।

শ্রীমহ প্রধান আচার্বা মহালয়ের বাংখান মূলক পদা ।

क्रेनविश्म ब्रामान । 🚵

্রিগত মাঘ মানের প্রতিকার ২০ ক্রেন্সার পর।) জনমের পাড়ি নিনি জ্বর ঈশ্বর। তারে বৃদ্ধি পাও জাব। হাদর ভিতর।

शिरांत (शटबंटक मक्र, ভবে কেন অন্য ভঞ্জা প্রেম ভক্তি ভরে তাঁরে পুজ নির্বয়র।। ্ৰস্থাধীৰ কাৰয়া তিনি স্চলন আন্তায়। করিবে তাহার পূজা আগন ইচ্ছা।।। আপনারে ভেয়াগিনে, अदित भगिष्णान सिंहत, (श्रेक्ष-श्रदेश साहि गदि मध्यात सामाह ॥ 🛩 व्यक्तिमंजित्यागरम्ब दशक ५७९ । व्यागारमञ्जूषा एक रमर्थ (वर्षिनः पुत्रम । স্থাংশু ভগনু ভারা, अंशान नरस्य भागा, ্ষ্টির ১৯মত হলে কবিছে ১৪৮ এ শ্বস্থানে ভাঁর বলে উদিছে পিবেছে। रमन नामी करत मध्य, शानन निधास গিরি হতে প্রভাবণ 可证 不可知可以 रष्ट्रकार समा भूल नामः। १८म. १८६ ४ কিন্তু হাত্ত মান্তবল ভাগ বচনা নৱ ৷ তাঁৰ পৰা মেছু ভাঙা কমিত প্ৰথম ৷ বিবেকেকে প্রদেদাল ান্যভার পথে চলি, আশনতি গলিবতা কাইছে সঞ্চয় 🚛 व्यायोनका (१९३३ नत ६ न छेम्ब्रू ह्यून १. खाबीनका पूर्ण किया विश्वय । ना ! ভীহা হ'ডে ুরে রয়, ্বিদ্য তুপাতি হয়, অমৃত ভ্রমেতে শান করে হলাংল। কেন কিছু করিলেন আধীন এ নরে 🔊 ভাইজ পাপন ইচ্ছা বিগাথে বিচয়ে। ভাই ক্রোপ অভিযান, रिश्मा (द्वन (चन-फान, স্থানের বরারে কিবা ছার খার করে॥ ্ৰে কে। দেন স্বাধীনতা যক্ষল নিলান १ **স্থাধীনভা—চারতে**র নিক্স পাযাণ। বেবা তাঁর জ্জ হ'বে, " তার পথ বাছি লাবে, সেই পথে কহিবেক, একান্তে প্রয়াব 🛭 ছদি কা । জটা-পাশ করিবে ছেনন। তাঁর এপ্রমে শ্রেজবেক,ভাষার জীবন। ৰড কিছু অভিলাষ, 🥇 অন্য প্ৰেম অন্য আৰু, সে প্রেম অধীন হরে করিবে ধারণ ॥ न्यायीयका निवा किमि विस्कृत घरेन्त । 🦈 সে বিভেন্ন মিলনের হয় আগ্রয়ান। **শে বিচ্ছেদে কত** মর, পুড়ি ছাঃ জর জার, তাঁহার কাছেতে গিলা জুড়োর পবাল দ स्वाधीनका—आभारतत निक्रम स्वाधी। प्रिक्ति प्रमुखा । स्थान स्थान मामुसारा । হয় সব আগমার, ইথে মুম অধিকার,

মারে ভাল বাসি আমি গব দ্ধি ভারণ

তীহারে সকল ক্ষতে কিবা প্রাণ চায়।

करण क्षा अपन कान नाह गार ।

্বলি তাঁৰে "দরামর !"

সে প্রেম জাভিলে এবে জীয়ার কুপায়।

ক চলে ভোমার ক্র

বৈদের অপন তুমি আমার ভাঙ্গিল।

এ কেন পানীরে তুমি উত্তার করিলে।

তুমি মোর ছালে মালি, তোমাতে করিতে ছালি,

তোমার নামল লাতে তুমিই বলিলে।

তব পারে চলে নামা ভারকা তপন।
আমি বেন চলি ভাহে ভালের মতন।

ওকে ভালেরে আমী, স্বাধীন না ব'ব আমি,

হানর নামলৈ তুমি করছে এইণ।

আমি বিল দিই ভারে বা আছে আমার।
ভাষার আমি হই,
ভাষার নামার।
ভাষার আমি হই,

তাহার অ্যেশ হাদি পালি অনিবার।

निश्च ज्यमान इश क्ष्य मान्य। জড়ের নিয়মে বঁদ্ধ আত্ম কড়ু নয়। আপন মহাল আত্মা কিবা চিলে লার। পবিত্র হইতে তার ইচ্ছা আওশর ।। প্রাপন সাধন্ধ বুবো ঈশ্বরের সনে। 🌯 জাঁহাতে সংযুক্ত হয় প্রেমের বন্ধনে 🕮 🍀 বে কেব ভাবেভে আছা তাঁর পরে চলে। 🕖 কাহার প্রভাবে আত্ম' তাঁর প্রেমে গালে ।। ঁসেই দেব-ভাৰ তার হয় নিজ ধন। বিদাশিতে তাহা নাহি পারে কোন জন।৷ क्षेत्राउत रेख में कि आदि विश्वास । ্ৰাৰ হ'তে আত্ম-শক্তি হয় বলীয়ান। ৰবে আত্মা নিজ বলে ধার তাঁৰ পাৰে। বাধা বিশ্ব পথে তার কর্তু নাছি মানে দু শত শত প্রলোভনে থাকে লৈ ক্লটণ । ितकात माञ्चनात्र वाटफ जात बेला।। ্এই ভার অধিনতা—ঈশ্ব ত্রীন্ থাকিয়া জীবার কাষ করে অনুদিন।।

জড় জগতের যন্ত্রী হয়েন কথার।
তাহার নির্মে রহে বত চরাচর।।
সব্যর আশ্রেয় দেই পরম কারণ।
আগ্রের অফিন তিনি আমাদের হ'ন।।
প্রির ভিনি—পুরু মোরা স্বে হই আই।
প্রের অকি ক্রিটি তারে—তার কারে বাই।।
আনরা সক্রেছি জার নিকটে কেন্দ্র।
প্রের পরিব্রভাগত ক্রির বারন।
ওলা পরিব্রভাগত ক্রির বারন।
ভলা বিকটে তার কাছে গাঁব।
ভার মঙ্গলালা তার কাছে গাঁব।
ভারর মঙ্গলালা তার কাছে গাঁব।
ভারর মঙ্গলালা তার কাছে গাঁব।
ভারর মঙ্গলালালা তার কাছে গাঁব।

ં હાર્યના ।

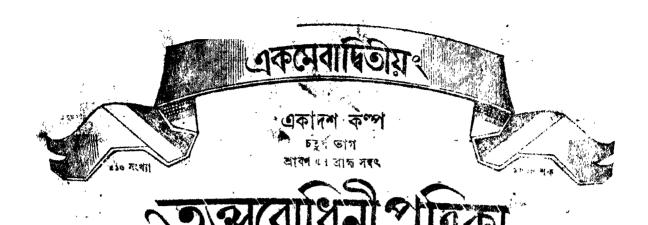
दर बाल । जारीय, कतित्य कांगात्र. जार नाम छ । দেহ মনঃ প্রাশ সাঁপর ভোষারে, **্রেমার্ড শ**রণ লই ॥ **লাহ ভোষা হাটি**, स्पृत्व भाष्ट्रश বিষয়ে মগান হয়ে। कात विमञ्जान, प्रमुख क्वानन, धन यान द्वा लक्षा कदिएल स्थान-अटन अई हाई, महरम नश्राम होथ । ভোমার শরণ, লহন্ম হৃদি, সভত বিকটে থকে।। হুমি পিতা মাত্র, मरात्र जनगा, ওছে নাথ। রুপা করি। **७**द्रक् छोषन, धार्म भाषाद्य, (मह भारत भाग कहा ॥ (काशाह सम्भन्न প্রেসন্থ আনন, (मथा ३ व्यक्तीन करन । ভব ইচ্ছা যাহা, (श्रीक संबद्ध, युद्द, भाग लाहा लाग भटना ্ অন্তর মানার, भारिक सहर, প্রোম স্থা ওব দানে। विशान मन्भारम्, . वादक रयम हिन्छ, ্রিয়ত তোমার পানে।। हेकि छैनियान गायान गया था।

### मश्याम ।

শামরা শোকাকৃণ চিত্তে প্রকাশ করি তি ।
বিশ্ব শক্ষার দ্ব বহুকান বেণাছেলের শর গ্রু
ই ব্যুক্তি দেহতাগি কার্মিট্রন। তান এই তব্ব
বোধিনী প্রিকার সম্পানক ছিলেন। তাহার দেহ এই
ব্যুক্তি প্রিকার পারচার্গাস এক প্রকার নই গ্রু। ফ্রুক্তি
বিজ্ঞান প্রভৃতি উচ্চ অসের বিষয় স্কুন এই প্রিকার প্রকাশ করিছা তিন প্রন্ত নিয়ে ব্যুক্তি উপ্রকার করিছা যান। তাহার অনেক প্রকৃত্ত বিশালিকের
প্রায়া। ভারতবর্গায় উপ্পেক সম্প্রায় করিছার কার্তি
ক্রিটা। ভারতবর্গায় উপ্পেক সম্প্রায় করিছার কার্তি
ক্রিটা। বি ভারা কি প্রবিদ্ধ ক্ষণা প্রকারেই বস্প্রাহতা ভাহার নিন্দ প্রশা। এই ধীমারেই বস্প্রাহতা ভাহার নিন্দ প্রশা। এই ধীমারেই বস্প্রাহতা ভাহার নিন্দ হ্যাবার হাইবর্ম সেনিবরে ক্যান

আধানী ৯ই আবাদ বজলবাদ সন্ধা গা টার সমটে ভ্রানাপুর আজ্পনাজের ছাজিংশ বার্থিক উৎ্ধ্র ভ্রানাপুর

> विश्वामच्या को दुर्ग। संस्थानक।



मञ्जाका म्याभित्म प्रशासी हात्य । जिल्लामा कि विश्व मध्य मध्य मध्य मध्य निर्धा शासन निर्धा शासन निर्धा कि विश्व मध्य कि विश्व कि विष्य कि विश्व कि विश्व

### ভবানীপুর চতুদ্রিংশ সায়ৎ**সরিক** ব্রাহ্মসমাজ।

হ আধার মধানবার ১৮০৮ শক। "আইব ভূমা তৎ হুথং নানে হুখমন্তি"

যিনি মহান্ তিনি স্থ্ৰ-দক্ষণ অল্প কিছুতে ত্রথ .ন ই। অন্তবং বিষয় সন্হের সঙ্গে আমানের দাণিক সামন্ধ, অন্ত পরব্রকার সহিত আমাদের চিরন্তন সম্বন। আমা-দের জ্ঞানের দার উদ্বাটিত হইলেই আমরা धनख ज्या महान् शूक्षटक ज्ञागादन्त्र था-আাতে দে**ৰিতে, পাই, তখন হাদ**য়ের অভ্য-छत इंहेरफ '८अरमन छेदम खानन। इहेरछहे खेशमातिक हरेशा छिट्टा क्या गहान प्रति সামাদের আত্মার একমাত্র শান্তি নিকেতন। रि अविक्र ना पामुद्रा जाहाटक छन्द्र शह भि श्री**ष्ट योगाद्वत शाक्**नजा विद्यूट**उ**हे नान्ति गामिए नार्त्र ना । जिनि गहान्-दिनाक्षितात विशिष्ठ-**कृतमान** कृतिनाक শন্তরীক্ষের স্থানির, তথালি আমারের প্রতি कारात एकारम् वितास सारे। संस्मादवर सहस्र नेव पूर्वित्रा वक्त आकृता के हा के एक विद्युष क्षान काराव करूना अक नित्मत्वत कर्ना छ

আনানের সদ চাত্রেনা ১ স্থন মেতে 👪 অক্তারে আমানের গতিয়ের হইটা সংগ্ उथन डाँरिनियर (मर्टे कुलना खाटनत खाटनाक विविद्या व्यामानिगरक श्रंथ अनुसनि करत्। उपाँचा तक्रमीत **जनगार**न वजनः छो। आविङ् ७ ६ है। 2**নেমন** পৃথি<mark>ৱীকে আখান-মুক্ত করে, তাঁহার</mark> ক্রনা সেইরপ আগাদের স্মুবে আদিয়া श्रामिनित्क जन्त श्राम करता असम অবিচলিত প্রেম আমাদের সংস্কৃতি সঙ্গী— ইহার কণ্মাত্র ফলয়খন করিয়া আগরা কি श्वानन-माणदा निमश रहेव ना १ अमन मर्क নভাপহারী তির্ভন প্রেম ভার কোঞা আৰিল। ভাষেক করিয়া পাইব ? প্রিমার। चन्छ यशन्—ि जिन भक्त वर्षमान, श्रीभारम বর্তমান—তুটীরে ক্রেমান, কর্গে কর্তমান — भएका वर्षभान ;ेषार्ख्य विषय-द्राका इहेरी মন-ত'কু **ফিরাইলেই আম**রা তাহার অভয় প্রেম্মুর্ভি দেখিতে পাইব—তাহার অমৃত্যন गड़ा धरे शादनरे जानता सनग्रथम कतिया পুৰুষ্কিত হইক। আকাশকৈ আমরা কথায় বলি খনীম মহান্ কিন্তু দেই আকানের প্রত্যেক বিশু বাঁছার অন্ত মহিশায় পরিপূর্ণ তিনিই প্রস্তুত অধীন,প্রস্তুত মহান্। দেশ ক্লালে আ-

বদ্ধ আমাদের এই আ**ত্মাকে আম**র।বিলি পা ধান পূর থকিন্তু সেই আ**ত্মার যিনি অ**ভারা**ত্মা** ালনিই সনাতন স্বাধীন পুরুষ, তাঁহার ে তন-खना कड़े **यागारमंत्र या**जा महत्त्व इहेशा**र्छ**, তাংগ্র প্রধানতা-প্রসাদেই আমাদের আত্ম प्रावीन इटेशार्ष्ट्रः शादीन इटेशां उँ। हाई নহিত সহবাদের উপযুক্ত হ**ই**য়াজে। পর-মাগাব প্রতি আগার যে ভাতি, তাছা করের ্বশীভূত নচে--ভাগ ভাগনভারই উচ্ছান। পরমাত্রা বাদের জানে চিব একশিমনি, ্তিনি আন্তাদের হৃদ্যে চির বিরাজ্যান,—-কিন্তু এ বাৰ্ক্।টি আম : নকল সময়ে বনিতে ্পারিন।; তখনই উচা আমরা ব্যিতে শারি—গখন আমাদের বুদ্ধি নির্দ্ধণ ও প্রাশাস হর্ম বদর কলুষ-গ্রান হইতে মুক্তি লাভ ক্রিয়া পবিত্র আনন্দের আবাদ হয়—এক ক্যার বধন আমাদের আত্মা প্রকৃতিত হয়। নোহ মেঘ অপুসারিত হইয়া গেলে আত্মতে ক্ষর্মালাতে কিচেত্র আর ব্যবধানী পর্নাজ। অসীম জগতের ব্যবধান তেদ ক্রিয়া আমা-দের হাদ্যে এধিষ্ঠান করিতেছেন আমর। ু কেবৰ নোছের প্রেধান ভেট করিলেই তা-হাকে পাইয়া কৃতার্থ হইতে পারি, তবে কেনু আৰুল ভাষতে আলস্য করি 😲 সভাং জ্ঞান্যনন্তং একাকে আইস আমন ছির िट्ट धान कति—धाटनह मश्कीर्य ननी दवन-ব**তী** হইয়া যখন আ**নন্দের অতল-**স্পার্শ मगूरके विलीन श्हेरत. उथन धात धारारपत cकान े अखाव थाकि त ना। मनुषा श्रेशी चायता यान अत्रश्जातक नो कानिलाय अ ভাঁহার সহবাস-তেপে জ্ঞান্ময় ও প্রেম্ময় অন্তঃকরণ প্রাপ্ত ন। হইলাম, অভ্যার হইয়াই कीवन खिठाएन कदिलाय, छाहा इटेल হামাদের মঁমুষ্যত্বে প্রয়োজন কি ছিল? জ্ঞানের মুক্ত কি জড় অপেকা অধিক নহে-প্রেষ্কে মূল্য কি মোহ অপেকা অধিক নছে?

জড়ের সেবাতেই নিয়ুক্ত করিয়া আমর। কি জ্ঞানকৈ জলে নিকেপ করিব ? খোহের সেবাতেই নিয়ক্ত কারিয়া আমরা কি প্রেমকে জলে নিকেপ কয়িৰ ? সগাঁয় জ্ঞান্-প্ৰেম कि हेरावरे कना बढ़ि खनजार इस्वाहिन (य, दिव्हन अफ़ छ । भारहत मागु कविद्यारे জীবন অবস্থা হরিবে । কপন্ই না। স্থাঁর জ্ঞান কি পুণিধার এনকে তিলক করিয়া ললাটে ধারণ ফ্রিবে ? পবিন প্রেম কি পক্ষিল বাদনাকে খক্ষের ভূষণ করিকে? ७, श यनि कद्द, जेरन तन छान्तरक विक्-সে তেখকে বিক্। জানের সেবার পাত্র-যদি কেহু থাকে ভবে তিনি সভাং জ্ঞানমনন্তং ব্ৰহ্ম, প্ৰেমের দোবার পাত্র যদি কেহু থাকে ভবে ভিনি "আনন্দরপময়তং যদিভাতি !" অ্ডএব আইস আনরা মোহময় সংসারের মরীচিকা পশ্চাতে ফেলিয়া জ্ঞান-েনের ভূমা অয়ত-দাগরে আত্মাকে নিমগ্র করিয়া জীবন সার্থক করি।

হে পরমাত্রন্। আমরা স্থবিমল শাভির জনা তোমার হানে উপনীত হইয়াছি; আর य-पिरक चामहा पृष्टि कति, त्मरे पिरकरे ভূমুল ভরস কোলাহল মুখ ব্যাদান করিয়া উঠিতেছে, কোণায় ধাইব ভাছা ভাবিয়া পাই ন। আমাদের দেশ পরাধীনতা-শৃশ্বলে জ্বাপাদ-মস্তক প্রপীড়িত, আমাদের অন্তঃকরণ ক্টিনতর পরাধীনতার মিয়মাণ; কোথাও এখন স্থান নাই যেখানে স্বাধীনতার মুক্ত বায়ুতে ক্ষণকালের জন্য নিশাস কেলিয়া भौত্তি-সূথ অনুভব করি। আমাদের আর সকল দিক্ কৃদ্ধ ইইয়া গিয়াছে—ভোনার তেম-মুখ আমাদের ভৃষিত আতার স্মকে অনায়ত কর—তাহা হইলে আনাদের সকল তুর্গতির অবসান হুইবে। আমাদের এই হতভাগা দেশের কত নবা সম্ভান স্বাধীনতার म्थ पर्यन क**दिवाद खना एम्म एम्माख्दा भगन** 

করে; হার! সাধীনভার নিক্স নিকেতন-মুক্তির অনিরুদ্ধ থোকাশ যে তুমি—ভোমা-কেই আমলা ভুলিয়া রহিয়াছি --আমানের আর কি হইবে | আগাদের ভান-চক্ষু অন্ধ ভ্টয়া গিয়াছে--কাৰীনতা আমানের নিকট-তম প্রদেশে শা সহল রশিতে দীস্তি পাইলেও আমাদের কাঞ্ছে তাহা তাম্পী নিশার অন্ধকার। তোমার, প্রেমের বীজ আনারদের আক্সাতে অক্সুরিও হটলে তাহঃ হুইতেই কেবল সাধীনতা ফলিতে পারে ইছা আমরা দেখিয়াও দেখি ন**া** ভোষার ত্রেম ঘদি এই দত্তে আমাদের জালাতে বলের সঞ্চার ৮০০ তাপে এই দভেই আমরা স্বাধীন হই! ভাহা হইলেগ ধ্বী ওছা লে'কে দেখিয়া চমকিত হয়—বাত্ৰৰ ও মোহবল অপেকা আজার বল কত প্রকাপশালী। কিন্তু এখন আমরা তোমা হইতে দুরে পড়িয়া মোহে অজ্ঞি হইয়া দিনপাত ক্লিতেছি— এখন আমাদের কোনো বলই নাই; দীন হীন গতিহানের তুমি কল্পাময় এড়-এই কেবল আমাদের এক নাত্ভরহা, তুনি আনাদের ভাতি ত্রেমার এক বিন্ রূপা বিতরণ কর এই কেবল আসাদের ভার্থনা; তোমার প্রদর্গাই আমাদের তর্মল আলাতে वनाधान करिएक भारत-रूमि जामारम्ब প্রতি প্রসন্ন হও।

ै **४ ७क्ट्रा**का व भेगा

# " দশন-সংহিতা।"

ক্ষুত্ৰ একটি ।।।পত্তি এবং ভাহার খণ্ডন।

াই তন্তাটির বিক্লজে যৎসামান। এই একটি আপত্তি উত্থাপিত হইতে পারে যে, উদ্ধার ঐ প্রবল প্রমাণ-পছতিটি গণিত-

বিজ্ঞানের নিকট হইতে ধার করিয়া পার্ভয়া, —তাং, ৬৮ ব বিজ্ঞানকেই সাজে, তত্ত্ব-জ্ঞানের পক্ষে ভাছা সংলোগ স্থান ইছার উত্তর এই---সংক্র: ২০ কি ন: ড'হ: বেবল "कटलन भाँतिहोहद्देखाँ कर्ना भादास निर्वाह হুইতে পারে। পরাক্ষাতে গরি করেপ্ দ্বীভাষ যে, এ ৫০০০ অবল অস্ত্র বভাস एक्छारनव भरम दिवा छेशर्याकी करत তাহার উপর অবে কথা নাই; সার ১০%-कोश यनि 📺 ः ना छिटक, एटट छ। हात সপ্তে তর্ক ক্ষ্যা-ও খেষ্ট নিজন, জাহার বিপ্রাক্তি ও বর্গন করা : ে টান নিচ্ছে-য়ে। জন। বিষয়টি এননি সে, ভালার আগ-নার গোগতো-সমর্থন গাপনাকেই করিছে হটাৰ,—ফালাভ ভৰ্বিতৰ্ক-দ্বা নহে কিন্তু কার্যা-বারা। ওলে, লোকে এই মে একটা কথা রাষ্ট্র যে, জি প্রাবল এমাণ পদ্ধ-তিটি তত্ত্বজ্ঞানের নিজের **নহে—**উছ। গণি-তের নিকট হইতে ধার করিয়া লওয়া—এ কথা কাজের কা নহে; উল্টা বরং এই

নেট ''প্রতিপক্ষের অবিঘাত অবশ্যন্তাবী সত্যের নিদ-শ্ন-চিন্ন'' এই শিরস্ক পরিচ্ছেদের অব্যবহিত পরবর্তা; সেই পরিভাক্ত পরিচ্ছেদটি নিম্নে সমিবোশত ইইল।

সন্ত-প্রতীতি অবশাভাষী সভোর নিদ্পন চিহ্ নতে।

্রথানে আর-একটি বিষয় বলিবার আছে,—াব্যয়টি मःकिश दाते, किश्व खन्नाजन, त्म वि अहे त्य, मना-প্রতীতি অবশাস্থাবী নতোর নিদর্শন নত্র--বদিচ **च्यामारक तरे । तर्मक विकास ।** अल्बन सूर्या व्यवस्थ স্থ্রুপাষ্ট প্রতেপ প্রেমাণ করা হইবে যে, আমাদের সমস্ত খাভাবিক চিস্তা ধারাবাহিক ভ্রম-সিদ্ধান্ত-পরপ্রাণ পর্য্যব্যিত; সে সিদ্ধান্ত-গুলির প্রত্যেতেই ববিঘাত-গর্ভ, অপবা **বাহা একই** কথা— একটি না-একটি অবশা-প্তাবী সত্যের বিরোধী। কিন্তু তা'বলিয়া এরূপ প্রত্যাশা করা হাইতে পারে না যে, যে গণ এম-দিছাত্ত উচ্চারিত হ**ু নিয়াত্র অ**মনি তাহাদেব স্ববাহতি-দোর জাজন্য হইয়া উঠিকে, অথবা জ্ঞানের যে-সকল প্রাহৃত ভৰ্ তাহাদের স্থানে বদিবার উপযুক্ত সেগুলি তদাগুই অবশ্যস্তাবী বলিয়া প্রতীয়মান হইবে। জ্ঞানের অনুষ্ঠা প্রিতে—আগন্তক সভা-সকলের যত না সময় ও সাধ্য-আধনা আবশাক হয়—উচ্চ অফের অবশান্তাবী সত্য-ভিলির তাহা অপেক্ষা অনেক বেশী সময় ও সাধ্য-শ্বাধনা অপেক্ষিত হয়।

বিজ্ঞান বেবাই আপে কাছিল ভ্লানাথ প্রাক্তিন নিজ্ঞান প্রাক্তিন কর্মান বিজ্ঞান বেবাই আপে কাছিল ভালা কর্মান বিজ্ঞান কর্মান ক্রামান কর্মান কর্মান ক্রামান ক্রাম

### এই ভারের বৈত্রকিক সংল্পন্। 🧍

ু জিন্তান্ত ব্যক্তি দেখিবের ১৯ বিলে বিহন, তাহা বৈলবিদ্যান পাছের। তিরি ইবনে, তাহা বৈলবিদ্যান পাছের। তিরি ইবন কুরিনে পারেন যে, গুল কেবল । তেন্ত্র প্রতি প্রবং আপুনার প্রশানী-খন নান, সভা প্রদর্শনের প্রতি ঘাইর একমা। বাকা, বার কিছুবই জন্য মাহার নাল। বাল নাই, আর কিছুবই জন্য মাহার নাল। বাল নাই, আর কিছুবই জন্য মাহার নাল। বাল নাই, বাল ক্রে প্রশান মাহার নাল। বাল প্রশান বিহার প্রাক্তির সমন্ ভাইপাল। বিহার বালেবিদ্যান গতিকে এল্লানে উল্লান্থ। শহরে বালেবিদ্যান প্রতির এলেবিহাই বালি ভাই। সিক্ ঠাক বুলিকে প্রার্থ সইলো।

### **কেন ভারজানকে বৈ**য়ে কেক হলত লগত

বুই তন্ত্রতি অতিশান্ত বৈত্র কিব। কেন।
না যেহেড় লৌকিক চিন্তাল দ্রন-স বোলনের প্রমাই বিগাস জন্ম-পরিত্রিছা। এ জিল
ইয়ার আর লোল প্রতে নাই, জাল কোল
উদ্দেশ্য নাই, জাল কোল কর্ম নাই। এ
যাল হয় যে, মুমুখ্য সভাবতই তত্ত্বাপুলালী
চিন্তা করে, চবে তাহাকে তত্ত্বাস্থালী
দেওলাইবার কোল প্রয়োজন নাই। মুমুখ্য
যদি বিশ্বী প্রস্তরে পূর্ক হইতেই সভাব

দ্ধল হুদুও ছালে। অনাকশ্যক ; ভাহা হইলে তো ৯তব্বজানের কর্ম গিয়াছে—ভাহার কৰিবার-আর কিছুই নাই—ভাহার **পাকা** কেবল বিড়ফন। े এ জন্য তত্ত্বজ্ঞান মানিয়া ল্ব। (ড'হাকে মানিয়া লইভেই হয়) যে, ্ভাতঃ মনুষা তত্তানুষ্টো চিন্তা করে না, এটাকে তাড়চিন্তা **শিক্ষা দেওয়াইতে হইতে** হ भन्य राज्य १८८३ मन्यकात्र निकटने प्यारेन না, মড়াকে মা কলাপনা কৰিয়া আনিতে হ-লা । সভাৰত মুক্তা **যদি ভাৰানু**যায়ী চি**ন্তা** रा ०८० छ। । य भथानुषाती हिन्स वटत १ এটা গ্ৰহাৰান লা (কেনলা ভাইচাৰ বেলৰ ছেলু ধৰিবলৈ **অভিনাক্ত** এলাশ পাং) নাম্যা কেবল লাল থে, সভাবতে ম্লুড্ খন ব্যাৰতার সাহত চিন্তা কলে 🕫 আবার, পলাবের গতিকে সভা যাদ মনুবের বৈণ-্ত সম্পতি না ২্য়, খেন কা**র আর অনে**র এবং নধ্যতক প্রভাষ করি**তে হ**য়—স্ ८८ द खना ७ यान समितिष **वेरिए**७ इहा, তবে বি মনুষ্যের আভাবিক পেতৃত্ব সংস্থাত भिषा। यर आहे। १६६६ नाइ । এ स्थाउ व्यायदा, बाल का ान बांत्रशं । नवश्रवादीटक প্যাতে কেনা আন্তেন্ত জি**ভ**সান **ন**হে छ। हा (य, এ(कराद्दर मिथा, এ कथा जायतः বান না, আনরা বলি—ভাহা আন্ত। তবেহ ষ্ট্তে**ত্তে যে, শনবধানতা** এবং স্থান্ত তে**ই** पुरुष्टि वन-भाषावरनंत देश हुक भूग बना এই মানিয়া লওয়। যিদ্ধান্তটির উপরে **ওত্ত**-জ্ঞানের বাতিবার অধিকার এবং এয়োজনা-য়ত। সম্পূর্ণরূপে নির্ভন্ন করিতেছে।

### ्वियम्भागत मुस्मित्।

্ষদি বিশুদ্ধ জ্ঞানের আলোচনায় পৌক্র-থের বাক্ট্রের কোন প্রামাণিকতা স্বীকার ভারতে ক্ষ্মি তবে তত্ত্বজ্ঞানের একমাত্র প্রাস্কৃত উদ্দেশ্য যাহ। আনরা এখানে আনিয়া

খাড়া করিলাম, তাহায় পোষকতায় প্রচুর শাস্ত্রীয় প্রমাণ উদাহত হইতে পারে; তবে कि ना-तम श्रामान-छिल श्रुव-एव विभेष १९ অপ্তলিত তাহা নহে (কেন না তত্ত্বজ্ঞান এ যাবংকাল যে ভাবে চলিয়া আদিতেছে— ভাষার কোন্ধানটাই বা বিশদ কোন্ধান-টাই বা অস্থালিত)। এ-দব প্রমাণ এখন নহে ; যথন আমাদের কথার প্রতিবাদ করা হুইনে, যথন আমাদের বিরুদ্ধে (पर्यात्ना হইবে যে – মনুষোর স্বাভাবিক চিন্তা স্থলভ অনববংনভার সংশোধন ছাড়া আর-কোন উদেশা তর্জানের কোন জামে ছিল ব। থাকিতে পারে, তখন আমাদের **পজে**র সাক্ষাণণ্ড বিসার-ক্ষেত্রে উপস্থিত করিবার यदश्छे भगन्न इहेदन ।

জর্ক বিজক ব্যভিব্যাক ভত্তজানের উদ্দেশ্য সাধিত ইউচে গাবেল মা

এই যে একটি র তান্ত যে, লোকিক চিন্তাস্থানত অনবধানতার মংশোধনার্থেই তত্ত্বজাননের অন্ন-এহণ, এইটি উহাবে উহার স্বেজাক্রেমাছে। কিন্তাম্বেশণ ব্যাপার এড়াইতে
পারলে সে পরম স্থাইত, কিন্তু তাহা না
করিয়া মে আপনাকে কিছুতেই সমানাইতে
পারে না। তাহাকৈ বৈতর্কিক হইতে হইবে—এই অসাকার-সুত্রেই তাহার জন্মপরিগ্রহ, ভাহার জন্মের সার্থকা সম্পাদন
করিবার জন্যও তাহাকে বৈ তর্কিক হইতে

ইইয়াছে; কারণ,লোকিক চিন্তার অনবধানতাদোষ সে ধদি তর্ক ভারা খণ্ডন না করিবে,
তবে আর কি উপায়ে সে আহার সংশোধন
করিবে ?

स्वका-ताय हरेटक छवकान्य प्रकि त्मवत्र। हरेटकट्ट।

তত্ত্তের বিরুদ্ধে পাছে এই এক অভি-যোগ উথাপিত হয় যে, তিনি মনুষ্টের সহ

বৃদ্ধির শিদ্ধান্ত সকলকে নিতান্তই হেয় অর্থন क्द्रम, के कमा क्यांत्म तथा कार्याहर एग, তত্ত্বজ্ঞ – পরের ভত নয় যত আপনার – স্থা-ভাবিক চিম্ভার দোষ ধরেন। আকাৎ সম্বন্ধে जिनि बाननाक नहेशाहे सानुछ। यूगा-রূপে, তিনি আপনারই চিরাভান্ত অনবধান নতা-দোষ সংশোধন করিতেছেন। কেব্র অনোৱাও তাঁহার নাচে অনবধানত: এক হইতে পাৱে--এই ভাবিয়া তিনি গেণি-চেপে লনোবও দেই সোধের সংশোধনে প্রবৃত্ত भनः किंगु नाक्षाः, मन्नद्रमः स्मादन हिन জনা ব্যক্তিতে দেখিতেকেন না—জাপনা জেই দেখিতেছেন, এখন্য প্রধানতঃ ভাহা **डिनि** थालनाट्डि बाट्टांश क्ट्रम। কথাটি এইবার এই যা নলা হইতেছে, দিতীয় वात देशत कात छत्वय कहा इहेटव ना, অতএব ইহার প্রতি ভাল করিয়া প্রণিধান করা হো'ক। অন্যানব্যক্তির ন্যায় তত্ত্ব-জ্ঞানীও লোকিক চিস্তা-স্থলভ দৌর্বাল্যে আ- : ক্রান্ত। যে দেয়ে তিনি দেখাইভেছেন ও যাহার সংশোধনাথে তিনি চেঙ্টা পাইতে-ছেন, সে লোখে তিনি যে ভাঁহাৰ প্ৰভিবেশী-দিসের অংগ্রেফ। কম দোধী—ভাছা নছে। তাঁহার কলহ তাঁহার গ্রতিবেশীদিগের সহিত নহে কিন্তু আপনার সহিত্য; পাত্রটি এখানে এরপ যে, ভাহাকে (ত্র্যাৎ আপনাকে) সং-শোধন এবং শাদন করিতে মনুযোর কেবল যে অধিকার আছে তাহা নছে, কিন্তু মনুষ্য তাহা করিতেধর্মতঃ বাধা।

धरे छन्नछ मरनाविकारमन विस्ताधी।

আরো এই দেখিতে হইবে বে, বর্ত্তমান
তক্ত্র শুদ্ধ যে কেবল লোকিক চিন্তার বিরোধা
তাহা-নহে—তাহ। মনোবিজ্ঞানেরও অনেকানেক মতের বিরোধী। ইহাও অনিবার্য।
লোকিক চিন্তার ভ্রম-সিদ্ধান্ত সকলের সংশোধনার্যে চেন্তা দা করিয়া মনোবিজ্ঞান

উপ্রারে সেই ভ্রন্তলিকে দৃষ্ট করিবার জনা প্রতারতে প্রতিপদ্ধ করিবার জনা— मापारिमादम देउ है। ब कार्षि ब दत ना । , जन्म लोकिक किन्द्रात छलत त्यत्रल पर्केटतान হইছে, ভাষার ভাগ পাইবার জন্য ননো-বিজ্ঞান্ধকে ছা আগত। আদিতে ইইতেছে। विधिति । विश्व विश्व विधिति । विश्व विधिति । হইত-ক্রি এড়াইবার জো নাই।। তত্ত্ব-জ্ঞান, ইয় ভাষার অভিত্তে কলাঞ্জনি দিক, नम् लानिक हिस्रात एम-मः नावन एतर মনোধিজ নের ২ত-গ্রন এই তুই কা**মো** প্রস্তু ে ব্, এ ভিন্ন গতংহর নাই । ফলে, ভদ্ধ কেবল গ্ৰানাজনে ভত্ত-জান মনো-বিজ্ঞানের শত্রপক হইয়া দাঁছাইগাছে। इंशिट्ड करन—गरगिक्डान का कर।
 करा মতের উৎসাহ-দাতা এবং সহকারী বলিয়া। লৌকিক চিন্তার বিপক্ষভাচনৰ বিদ্ধি--তত্ত্ব-कक्षारमह खदभाखाती दर्मा। (म ११ दशक, চিত্ত পুন্য লোকের স্বাদারিক সিদ্ধান্ত-মক-**(ल**त्र चारशक्ता गानादिख्छात्मत नाष्ट्रीय हि-ছাস্ত-সকলে খণ্ডন-কার্য্যে অধিব্তির দৃড়ত এবং নির্মতী সংকারে প্রয়ত হথায়া তত্ত্ क्छारनत कर्डनाः, कातन, पार्यक्षान्ते स्थाप्तक নিদ্ধান্ত-গুলি শুদ্ধ কেৰল উপেক্ষা এবং অন-दशानजा-मूनक जािका माड, किन्छ (नर्याङ শান্ত্রীয় দিদ্ধান্ত-গুলি দেই লাভির গারে সত্যাভাস পূর্ব ফুত্রিম বিজ্ঞানের সাক্ষর মু-ক্সিত করিয়। **তাহাকে মু**র্ভিমতী মিধ্যা করিয়া পাকাইয়া তোলে। মনোবিজ্ঞান প্রায়শই (नोकिक हिस्रोत (शिष्ठक्छ)-कार्या दं , কিন্তু ঘটনা-পতিকে খখন গৈ আবাৰ—লৌ-কিক চিন্তার ভ্রম-সংখ্যোধ্যা-কার্ম্যে হস্তকেপ करत, उथन (शेंद्र दिशा संशेंदिन) दम जारांटि কৃতকার্সা হওয়া /দূর্যার থাজুক্—তথন সে আর এক কাও করিয়া বলে 🖟 স্বাভাবিক ভ্রম একতো পূর্ব হইতেই পাছে তাহার সহিত

সে আবার তাহার নিজের স্ট নুত্র একটা কিবলো বা অনেক-গুলি) খাবিঘাত-গর্তু দিদাস্ত ক্লড়াইরা ব্যাগারটিকে আরো অপর্যন্ত করিয়া তোলে।

প্রস্তাবিত ত্রু কেন্যে, নৈত্রিক, তাহার কারণ প্রদর্শনের পক্ষে উপরি উক্ত মন্তব্য-শুলিই যথেষ্ট । সেজ্ঞা-জ্বেম নহে—কিন্তু অগতেন—এই ক্রুটিকে প্রতিদ্দির্ভায় লিপ্ত হইতে হইয়াছে। যে দতে মন্থনেরা তাহা-দের বালি প্রস্কৃতি প্রস্কৃতি করে আন্তান্য বিষয়-সম্বর্দার লেভ ত্রু-স্বর্দ্ধ স্থিত মাতৃপর্ত্ত হন্তিত ভ্রিত অগ্রন্ত করিবে, সেই দতে ত্রুজ্ঞান পূলিবী হইতে অক্তরিক প্রয়েশন ধ্রিবে কারণ, তাবন আর ভাহাকে প্রয়েশন ধ্রিবে কারণ, তাবন আর ভাহাকে প্রয়েশন ধ্রিবে কারণ

#### ৬ : ত্রুর কার্য্য গরিস্কার গণে নিদিস্ট ক্রি**ডেছে।**

অভ এব তাম্নানের লক্ষ্য অববা অভিসমি অথবা বার্য সম্প্রে পাছে কেছ কোন
শ্রুকার ভুল বুক্ষা থাকেন, তাহার প্রতিবিধানার্থে প্রকার স্পাই করিয়া ঘোষণা করা
যাইতেতে বে, লোকিক চিন্তার অনবধানতাদোর সংশোধন করাই তত্তভানের মুখ্য
উদ্দেশ্য; এবং সে অনবধানতা-দোর হৈছেত্
প্রায়শই মনোবিজ্ঞান কর্তৃক দূর্চাক্ষ্ত হইয়া
থাকে—কদাচ সংশোধিত হয় না, এবন্ধিরাক্ষ
ভাগে যাহা কেবল বৃদ্ধির ভুল ধর্ইয়াই ক্ষান্ত
ভিল—ক্রমে ভাষা পাকিয়া উঠিয়া মৃতিমতী
মিথাা ইইয়া দাঁড়ায়, এজনা মনোবিজ্ঞানের প্রার্থনি তত্তভানকে সমাধা করিতে
ছইবে।

#### তহ্জানের স্থাপনাত্মক কার্য্য।

কিন্তু এ খা' বলা হইল—এ যদিও তব্ত্ত জ্ঞানের কার্যোর একটি সারাংশ, তথালি এই অংশটি কেবল খণ্ডনাসক; অর্থার ইহাতে

(कवल পরমতেরই খণ্ডন হয়, সমতের সং− স্থাপন ইয় না। লোকিক চিস্তার ভিতর যে-সকল অনুবধানতা-মূলক ভ্রম প্রচহন থাকে, মনোবিজ্ঞান সেই সব জনের ফেরপ পোষকতা করে, ভাহার প্রতিবিধারী করিছে **इरे**टन এकपिटक रथमन खमछनिटक छिटछ प করা চাই, আর এক দিকে তেমনি ভাহাদের পরিনাক্ত কাতি-স্থান একটা কিছু দিয়া প্র-ত্বৰ কথা চাই। অবশ্য। আৰু,মেই যে একটা কিছু ভাহ<del>;—সঙ্গু সভা ৷ অভএকেতুজানের</del> विधनसे बदमा, कायादे बदना, मध्यस्त्रहे बदना, আর একমাত্র উদ্দেশ্যই বলো ভালা সাকলো ব্লিং। বলিতে ২ইবে তত্তভাবের সাজ্ঞা এইরপ দীভাষ : - কি প না লৌখিক চিন্তার অধন্ত্ৰ-স্তৰ্ভ অনবধানতা গণ মনোবিজননের প্রসত্ন পালিত ভাগ এ দুবের খালে প্রায়ত ए छु-मक्रान्त (तथी६ क्यात्मत्र एवभरकारो সতা সকলের) সংস্থাপন—ইহারই নাম তত্ত্ত জ্ঞান। এ তেঃ দেখা যাইতেছে দিবা সৈজা কথা: উব্ও অনেকে বিদ্ৰতা ফলাইয়াৰ-লিতে ছাড়েন না যে, ভড়জান যে কি তাহা বুকিয়া ওঠা ভাষাদের নাধনতইত। ভারুজান যে কি, ভাষা ঐ আমরা বলিনাম। পূর্বের ুজামরা বলিয়াছি যে, যুক্তির পণ দিয়া ভ-Coात छेशन के हैं दिखीन; এখन এই याश বলিশাম (কিনা ভিম খণ্ডন-পূর্ব্বেক সত্যের সংস্থাপন) ইহা ঐ কথারই পুনরুজি— কেবল আর্-একটু বির্ভ করিয়া নির্বাচিত। এইটি এখানে ক্রম্ভব্য যে, তত্ত্ত্তান আপ-নার গন্তব্য-পথে মত অধিক অগ্রসর হয়, ্ও তাহার পথ যত অধিক পরিষ্কৃত হয়, ততই তাহার সংজ্ঞা অধিকতর পরিকাট-রূপে নির্বাচন-সাধ্য হয়। তত্তৃজ্ঞানের অঙ্কু-রিতাবন্থা-স্থলত সংজ্ঞা কাজেই সর্বাপেকা पांत्र-शतिकृष्टे; पात्र, এथन (ग मः छ्छा-ि निर्ताष्ठिত इहेन छाश (य, श्रीतक हेणात

চরম সীমায় উত্তীৰ, তাহাও নতৌ কলে, সতা, সিদ্ধান্ত গুলিকে-- অগাং আনেএ অব-শান্তবি তত্ত্ব-গুলিকে—ে সংগ্ৰা ক্ৰিছিল মত প্রদর্শন করা হইতেতে হৈ, গোপার্থ ও জু-क्लारनत मध्या मानानएडः छित्र (१८११-७३ त्नाधभभा इन्हेर्फ भागित्व मा। 🔅 छड़ छितित शाममान छिभ क्यां भिक्त कर्या नद्य छ। शाकार मर्द्या अर्थे भाग । या दशक व हमान भरका बाता अने। स्रेट्ड भारत--উহা-१८हे, खहुकारनत स्था सःकञ्च कि. ভাষৰ্ত্তক প্ৰস্থাজন কি. লোকে ভাগা জানিয়ত থারেও ছোঁল লোকের মাণার ভিতর এই (म अक लोखें-दिम श्रदनम किन्त्रगराइ १२, তমুজ্ঞান বলিতে একএপ মনোবিজানই ল-নাম (মহার 'উদেশ- কে ভানে কি--মিছা: কৈবল কতক-৮বা মনেবাতি লগীয় নাড়। লাড়া খার ঐ রক্ষের সভ্সর ছাই ভदा खङ्काता) अ पूर्वतृष्टिमिति मार्थः इमेर्ड एलः নাত হইতে পাবে। কর্ম্মে মাতুষ বেকার অবস্থায় পড়িলে তাহাব গেখন হয়—কাজ খুজেতেছে বিজ্ঞ পাইতেছে না—ত রজান এ-যাবং কাল দেই ভাবে চলিয়। লাদি-লেছে; কিন্তু কি কাৰ্যা ঠিক তাহার উপ-বোগী তাছা ধখন সে জানিজে শারিল षाधन की विकानगढ़ इन देवते। किमाता क-রিকে পারিবে ও একটা স্থানদিপ্ত কাজ হাতে পাইবে, তথন ভাহার আধি বাথা নিৰ্ব্যুখ্ श्हेरव।

কেন ভবজান একার্য্যের ভার ক্ষেত্র লয়।

উপরি-উক্ত সংজ্ঞাতে যে কার্যা নিদিপ্ত হইল, তত্ত্বজ্ঞান কেন তাহা স্থান্য লয় তাহা বলিতেই হইবে—এইন্নপ একটা কোটি ধরিবার কিংবা তাহার উত্তর প্রদান কবি-বার বিশেষ কোন প্রয়োজন নাই। মনুষ্যার মানস-ক্ষেত্রে ভ্রমের-স্থানে কেন সত্য প্রতি-ঠিত হইবে—ইহার কারণ দর্শানো নিক্ষা য়োজন। তঁবে যদি ইংগার নাম কারণ-দর্শানো হয় যে, ভানের স্থানে সভা প্রতিটিত হইবে কেন—না যেহেড়ু যাহা খরে আদিতেছে তাহা সভা, আর যাহা বাহির হইয়া যাই-ভেছে তাহা ভ্রম,—সেই যা এক কণা।

তত্বভান কিরপে স্কার্য্যে প্রবৃত হর।

তত্ত্ব-জ্ঞানের উদ্দেশ্য কি তাহা পুর্কো বলিয়াছি, এবং কেন তাহা সে উদ্দেশ্যের অনুগামী হয় জোগও বলিলাম; এখন সে উদ্দেশ্যটি করায়ত্ত করিবার মানুদে তত্তুজ্ঞান কিরণে কার্যো এরত হয়, ভাহাই কেবল বলিবার অবশিষ্ট। ভত্তভানের অনুষ্ঠান-বিধি যাহা ইভিপ্রেম নিকারিত হইগাছে (किना किहुई श्रीकात कतिरव ना - यपि-ना তাহা জ্ঞানের অবশান্তাবী সত্য হয়) মেই অনুষ্ঠান-বিধির সমাক্ অনুবর্তী হুইয়া তত্ত্ ভান সনুবোর স্বাহাবিক-চিত্ত। প্রসূত মত मकलाक देवतहिं -(पादन (पादी निन्धन करहा ফলতঃ, লৌকিক সিদ্ধান্ত সকল খদি স্ববি-ৰোধী না হইত, ভবে ভাহাদের বিক্লম্বে ে গ্ৰামর বাঁধিয়া দাঁভানো তত্বজ্ঞানের পকে নিত,ভই স্পদ্ধাসূচক হইত; কারণ, সে সিদ্ধান্ত গুলি े बिन स्विरतारी मा ६१ल – ७८व मि-छान (य भठा मटह छाहा (क व नन ? वबर (गई-গুলিরই সভা হইবার বেশী সভাবনা—বৈ ুহেকু দেগুলি জন-সাধারণের মত। এরূপ হট্লে, তত্ত্বজান বেশী কি আর করিতঃ इन এই कांत्रण-अक ट्यांनेत ज्यूमानति সরাইরা তাহার খানে আর-এক শ্রেণীর অনু-মানকৈ আনিয়া পত্ৰ ক্রিড। লোকিক মতের খব্যাহতি-দোষ শুধু যে क्विन बार्ताभ क्रिलिंह हुईन छोहा नर्ह, অবশাস্তাবী সত্যের কর্তৃত্ব সৈ কার্যাট করা চাই; নচেৎ ওত্তজান খাদ স্লেচ্ছা-মুদারে বিচার-নিষ্পত্তি করে, তরে ভাষতে তাহার নিতান্তই ঔৰত্য এবং মুটভা প্রকাশ

পায়। এ টি তবে স্থির যে, লেইকিক চিন্তার প্রত্যেক ভ্রম<sup>্</sup>সিদ্ধা**ন্ত জ্ঞানের একটি-না-একটি** ष्पनगन्धावी । भटाजात बिद्याथी। সংহিতায় এ রভান্তটি দেখানো হইয়াছে – পেঁচাও তক্তিকু দারা নহে—কিন্তু একদিকে লৌ-কিক ভ্রম সিদ্ধান্ত ষ্ঠলি এবং আর একদিকে জ্ঞানের অবশাস্তাধী সত্তা-গুলি উভয়কে মুখা-मुथि माँ ए कदा है हा। छेश दि-छ क विद्वह माहि নিন্ধ-দ্বত প্রণালী বন্ধনের মূল। এই প্রন্থে জ্ঞানের অবশাস্থানী সভা-নকল ধারাবাছিক भिपाल-भवल्यवा जरम भुयक् भुयक विमाख হট্য়াছে; আর, এতেক সিদ্ধান্তের সঙ্গে একটি ক্রিয়া ওটত্থক সিদ্ধা**ন্ত জুড়িয়া দে-** : एहा १२ हार ६ --- स्म श्री काफ मिकास त्री-কিকাচনা-প্রভা স্বিয়াজনারে ভ্রান্তি বই আর বিপ্রথ মধ্যে, \* ইছে৷ করিলেই তুই পক্ষের মধ্যে সংগ্রাম লাগাইয়া ार्ड भारतः, देशराज नाञ अहे या, कि ্যাপারে আন্ত্রা ন্যাপুত হইতেছি—কিনেরই বা স্পক্ষে আর কিসেরই বা বিপক্ষে আমর। যুঝিতেছি, তাহা আমানের নিকট অপ্রকাশ থাকিন্দে পানিবে না। স্ব্ৰিছ এইরূপ দৃ*ট্ট* रहेरद रव, रकान अकारे निय**ष्ट्र-चरिंड म**रना-বিজ্ঞানের সিদ্ধান্ত—দেই বিষয়-ঘটিত লো-কিক সিদ্ধান্তের সহিত—সর্বাংশেই হউক আর কিয়দংশেই হউক্ (প্রায়শই সর্বাংশে) অভেদাস; এই জন্য প্রতিপক বিভাৱ-क्षान- अर्क पिटक यटनाविस्तादन व्याह्य উপদেশ এবং আর-এক দিকে অদবধারতা-মূলগ লোকিক সিদ্ধান্ত—উত্তয়কেই আৰু नाएँ अकाशास्त्र मृद्धिमान कहिरव। नद्गील त्रित्र द्वेमन वाग-प्रकिन व्यवस्तर-त्थानी, वर्खमार्म<sub>ः</sub> সংহিতার ভেমনি সপক্ষ-প্রতিপক্ষ সিদ্ধান্ত-শ্রেণী।

• অবানে যাহাতে প্রতিপক দিয়াত বলা যাইতেছে, পুরাতন দর্শন-শারে স্থায়া পূর্ব-পক্ষ বলিয়া প্রসিক্ত



ভদ্জানের কার্যা-প্রতির আরো বিবরণ।

স্থক সিদ্ধান্ত ওলি এবং ভাষাদের গ্রমাণ-প্রদর্শন প্রস্তাবিত গ্রন্থের মূলংশ বা भूगाःम। ইहारे प्रर्गन-मःहिला। বিদ্ধান্তটি বিনা-প্রমাণে প্রতঃসিদ্ধ ব্রিয়া সংস্থাপিত হইয়াছে। প্রত্যেক সিফার্থ क्छक-छनि धातानाहिक महाना द्वर वा।यान দারা পরিপুট। এই সক্ষ মন্তব্য এবং वराशास्त्रत छिष्मभा खाद किছ नश-भूथः সিদ্ধান্তের মধ্যে যাহা কিছু অস্পত্ত একং কাঠিন বোধ হইবে (না সে ভালেই ই<sup>ট</sup>ক্ জার বঢ়নেই হউকা ভাষাকে স্পান্ত এবং স্থান কার্যা লেওয়া, আর, বৈত্রকিক এবং জীতিহালিক বিবরণ যেখানে মাহা আবশ্যক गत्न हरेदा छाहा ल्लाशिह्या एमख्या। अह ভাষা-গুলি সংহিতার ন্যায় অত্টা কড়াৰ্ড **ইইবে না।** হয় জে। উহারা বতটা পূর্ণাব**ু**ি ছইতে পারিত ভাহা হয় নাই; কিন্তু সা ন্ত্রণতঃ দেখিতে পাওয়া ঘাইবে যে, ত<del>ত্ত্</del>ব জ্ঞানের মূল কাণ্ডের যে যে প্রছি-স্থান ২ইতে ट्रहाटम ट्रहाटी—कलीट६ रा वज् वज्-मठा-্মতের ফ্যাবড়া বাহির ইইয়াছে, ঐ ভাষা-গুলি মেই মেই এছি-খান ঠিক ঠাক দেখা-ইয়া দিবে। ন,না কারণ-বশতঃ প্রতিপক্ষ দিছান্ত-গুলিকে সপর্ফ নিদান্ত-গুলির টিক পরে পরে ব্যানে। স্কল স্ময়ে (বলিতে কি প্রায়শই) ঘটিয়া ওঠে নাই। সেগুলি मस्त्रा এवः वर्धायास्मेत्र भीमाज्ञास्त्रत स्थान পাইয়াছে, এবং আবশ্যক মতে তাহাদের কর্ত্তক বিশনীকৃত হইয়াছে। প্রতিপক্ষ সি-দ্ধান্ত-গুলি সকল-বিষয়েই সপক্ষ-সিদ্ধান্ত-গুলির প্রতিদ্দী; আর, শুদ্দ যদি কেবল তা-হাদেরই প্রতি দৃষ্টি নিবন্ধ করা যায় ভবে দেখা যাইবে যে, তাহারা সর্বশুদ্ধ ধরিয়া শত্যাভাদের একটি স্থান্যন্ধ বিপ্রাহ। দে বিগ্রহটির বিরুদ্ধে আপত্তি কেবল এই যে,

প্রতিপদেই তাহা একটি-না একটি নার্স্বভো-মিক সত্য বা ভ্রানের মূলতার উল্টাইয়া দেয়। কিন্তু কেহু যদি যে আপত্তি অগ্রাহ্য করেন, তবে তাঁহার মনের মত-স্বোবিজ্ঞা-নের শান্ত্রীয় মত এবং জনদাধারণের স্বাভা-विक भाज- के उद्यवहरे कहते। भागितीका भावता। বিশিপ্ত সন্দর্ভ তিনি তাহার ২াজে কাছে স্ত্রণজ্জিত পাইবেন। যদি হাভিক্তি হয়---স্বাছনের তিনি ভারাকে আলিম্বন হরিতে পারেন ও বথার্গ ভত্তজানকে সমূলে প্রভান-था। वितिष्ठ भाषान्। जिन प्रिश्तन যে, সভা একং জ্রা—বিদ্যা এলং অবিদ্যা— উভঃনে ক্রমাগত পার্পাপার্থি সম-বাবহানে লহঁয়। চল। হংয়াছে; যাহা**ে**ক ভাহার পদক্ষ হয় তাই।কেই তিনি গ্রহণ কবিতে পালেন। बहेल्य खनातीन करा

🌯 বুঝাই যাইতেছে—এইরূপ প্রণানীতে চলিলে জিজাধ বাজি নিম্ন-লিখিত-রূপ ফল-লাভ করিবেন। তিনি ভাঁহার 💜ব্য প্ৰবেৰ প্ৰত্যেক বিৱাম-ছানে — কোন স্বতটাই বা ঠিক্ আর কোন্ম এটাই বা ভুল—ভা১; দৈখিতে পাইবেন। তুয়ের ত্লনা-গতিকে তিনি ডুইকেই ভাল ফরিয়া বোপাংত করিতে পািবেন। য'হা তাঁহাকে এহন করিতে বলা হইতেছে তাহা কেবল নয়, ভা ছড়ো ষাহা তাঁহাকে পরিত্যাগ ক্রিতে বলা ২৮-তেছে, তাহাও তিনি দৈখিতে পাইবেন। দার্শনিক মত এবং সৌকিক মত এ-বুর্যার পরস্পার-বিরোধিতা ভাঁছার চক্তে স্পপ্ত ধন। পড়িবে। ইহাও দেখিতে পাওয়া ঘাইনে य, लोकिक हिन्छ। (शहा कथरना कथरन সামান্য বৃদ্ধি বলিয়া সংজ্ঞিত হয়) এবং তত্ত্ব-জ্ঞান, এ চুয়ের বিবাদ-ভঞ্জন খুবই ভাল-রূপে হইতে পারে—যদি সেই সামান্য বুদ্ধি অলজ্যনীয় তত্ত্তানের বিচার-নিষ্পত্তি নির্বি-বানে ঘাড় পাড়িয়া লয় 🕬

সত্য এবং মিথা। উভয়ের তুলনা না করিবার দোষ।

কোন একটি তন্ত্র বোন একটি বিগতের সম্বন্ধে (বিশেষতঃ এখনকার মত এইরূপ বিষয়ের সম্বন্ধে) যদি কেবল সভা মতটি **লংস্থাপন** করিয়াই নিশ্চিম থাকে, ভবে তাহা স্বকার্টোর অর্দ্ধাংশ-মাত্র সমাত করে, জার তাহাও পরিপালী রূপে নতে; কালৰ ভ্রান্ত মতটি প্রকাশো আনীত এবং সপরিরূপে **খণ্ডিত না হওয়াতে তা**খা ।জজাস্থ ব্যক্তির মন হইতে অপনীত হয় নাং –বৰং অন্ধ-काबाञ्चस थीएक विलिश जाएन सहावरकाले वक्षमुन इस्र। जाहा हरेतन, पृष्टे भएक व कुनना-বিরহে, কিলে-সে উভয়ের মধ্যে ভীনকা তাহা বুঝিতে পালা যায় না। দে!ঃ গ্রানে, সাল্য खदः ज्ञम **जूरेरे गत्ना** मर्तर । ५३-मरङ वर्जिया থাকে, কিন্তু এরূপ শ্যাগ্রত মুখ্যু-ভাবে दर्जिश शांक (य, जांहा नाशोक (वेरे गांगिल । ভুল সিদ্ধান্তটি (স্পান্তরূপে নহে কিন্তু অনি-র্দেশ্য এবং অপরিস্ফুট রূপে) প্রতিরুদ্ধ হও-য়াতে ভাষার পূর্বতন প্রাভূষের অনেবটা ত্তেজ থার্ন হইয়া পড়ে, আর সভা নিদ্ধান্তটি ্ভুলের **য়লিন** সংসর্গে একে তো কহুষিভ ভাহাতে মে আবার ভিতরে ভিতরে আপ-নার পূর্বতন আধিপতঃ প্রাহাণীবত করি-বার চেপ্তায় পরিক্লান্ত হওয়ালে, নে—তাহার উদ্দল-তম এবং অমোখ-তম রশ্মি-গুলি হারা হইয়া ক্ষীণ-প্রভায় মিট মিট করিতে থাকে৷ সতা মত এবং ভ্রাম্ভ মতের মধ্যে --দার্শনিক মত এবং লৌকিক মতের মধ্যে-এই যে এক অন্ধকারাচ্ছন অনির্দেশ্য বিবাদ, ইহাই সংশয়-বাদের এবং অব্যবস্থিত তত্ত্বচি-ন্তার মূল-কার্ণ।

সভাসভোর ভূলনা-শৈথিলাই অবোধ্যভার মূলণ দর্শন-কারের৷ সত্য এবং নির্থান মধ্য-গত বিরোধ স্পত্তীক্ষরে নির্দেশ করিতে ত্রব-

সা**ধা**ৰণতঃ दश्मा कहारिक्ट प्रमान-भाष्ट অবোধাতা দোনে জড়াইয়া পড়িয়াছে; আর এই ব্যাপারটি, দর্শন-ঘটিত যত কিছু গোল-याः।, नगर्छत्ररे∖म्ल। पर्मन-भारसद शूदा-রুত্তের সহিত কিফিয়াত্র পরিচয়-লাভ হই-लिहे हेश-आंत्र कौहारता अविदिन्त थारक मा যে, পর্যতন দার্শনিকেরা শিক্ষিত্রা সভা এবং পরিহর্কবা ভ্রম এ ঘুয়ের বৈলক্ষণ্য স্পান্ত कतिया कृतिहित जूनिएक अवरक्षा करार उहे সমস্ত দার্শনিক ব্যাপার আবোরাভার জাকর হট্যা দাঁড়াইলাছে। ত্রীক বেলের প্রদান-তম তত্ত্বাবং মেটোর "আদৰ্শ জগং" সাবাং हनछः खातासः त्यनः । अक त्यन अह জন্য থে, সৌকিক মত-সকলের এন্তর্গত কোন্ মতটিকে খণ্ডন কবিবার অভিজ্ঞায়ে তিনি ঐ দার্শনিক চটির অবতারণা করিয়াছেন--তাহা তিনি স্পষ্ট করিয়া খুলিয়া ফলেন নাই। জন্মান-দেশীয় তত্ত্ববিং স্পিনোজা'ৰ "অবাহ-বক্ত" এখনো পর্যান্ত অর্থ-ছান রহি-ষ্টাছে কেন । ঐ একই কার্ন-বশতঃ। কোন্ ধৌকিক ভাষের প্রতিদৰ্শী তাহা আ মরা অবলাত নহি। স্বিখ্যাত লাইব্নিট্**রের** "ভ্যাত্র," ভেষ্টি আবার ভাঁহার "পুর্ক-নিবদ্ধ কার্যা-কারণ-সুত্রে," এ সব রহস্যের এখনো পর্যান্ত চাবি যিল্পিচছে না কেন— অথবা চাৰি ষাহা মিলিতেছে তাহা তালায় লাগিতৈছে না কেন ? শুদ্ধ কেবল এই জনা যে, সৌকিক চিন্তার কোন্ ভ্রমটির পরিবর্ত্তে তিনি তাঁহার কোন্ নৃত্টি স্থাপুন কারতে অভিলাযী, তাহ। তিলি ম্পাষ্ট করিয়া বলেন নাই। জন্মাণ দেশীয়া ওছিবিং ছে-গেল্কেন আগা গোড়া বন্দ্ৰ-সংহত পৰ্ম-তের ন্যায় অভেদা 🕆 🔯 ছালি-ভিনি হর তো প্রকাও একটা অজগরের নায়ে त्नोकिक अंक्षेत्र <del>अंदिका</del> বলে আনিয়া পিদিয়া ওঁড়া ওঁড়া ক্রি

তেছেন, কিন্তু সে কুমটি যে কি তাহা তিনি কোথা ও প্রকাশ করিয়া বলেন নাই। প্রবল পাক-চক্রের পেখনে তিনি হয় তোঁ সে ভায-টির একখানি ও অস্থি অর্শিপ্ত রাথেন নাই 😓 কিন্তু আমরা তাহা জানি না। দিদ্ধান্ত-গুলি (অবশ্য তাহাদের আপনা-কুদর রীত্যসুষায়া অস্পত্ত এবং জটিল রক্ষে) কোন না-কোন লোকিক মত খণ্ডন করিতে প্রাদ পাইয়াছে—ইহাতে তার ভুল নাই; কিন্তু সাক্ষাৎ কল্পে (এমন কি দুর কল্পেও) ব্দর্শনকার মেনসম্বন্ধে একটি কথাও উল্লেখ করেন নাই। ত বুজ্ঞানের গতি-বোধক কাব-ণের কথা পূর্নের সাহ। আমরা বলিয়াছি—ঐ গুকার অবহেলা বা ত্রেটি গোলারই পোষকতা করিলেছে; পতি রোধক কারণ-দে এই;-প্রবর্ত্তক মূলতত্ত্ব-গুলি—গ্রেড়ার ক-খা-দুদ মৃষ্টিতে আয়ত না করা ও চক্র মেলিয়া ভাল कार्तशा गापिया; कि कार्या कतिएक इन्हेर्टर এবং कि উদেশ্য সাধন কবিতে इनेद्र छान्। 🕹 शतिकात-ताल ना काना। कातन, यांन छा सद দর্শন-ব্যবসাধীর৷ তাহাদের প্রায় কি তাহা জানিতেন, তবে তাহা তাঁহারা বলিতেন, তাহা তই নয়—তাহা ভাষার। কবিতেন। কিন্তু সে-বিসয়ে হয় ভাঁছারা একেবারেই চুপ্, নয় এমনি ইতত্ত ত করিয়া কথা বলেন যে, তাহা **অপেকা** চুপ থাকাই ভাল ছিল। বদিও তাঁকারা মহোচ্চ প্রতিভা সম্পন্ন এবং "অবিনশ্ব বস্তু সকলের গ্রশান্ত স্রস্তী" তথাপি অনুোধ্যতা-দোবে তাঁহাদের পশ্চান্নাস্ত অন্তিম দানেরমূলা অনেকাংনে হ্রান প্রাপ্ত হইয়াছে; তাঁহাদের প্রকৃত কার্য্যের অর্দ্ধেক-খানি কেবল তাঁহারা হত্তে লইয়াছিলেন বলিয়া এক্লপ ঘটি-য়াছে। মানিলাম ভাঁহারা আমাদিগকে সভ্য क्षाम कतिशाष्ट्रन-निःगत्सर छारा उँशिता ক্রিয়াছেন; কিন্তু বতক্ষণ সভাকে ভা-হার প্রতিদ্বন্ধী অমের সহিত তুলারত করা

না তাই ততক্ষণ তাহা সংস্থাংশে না হউক **অনেকাংশে বৃদ্ধির** অগম্য গালে। উপরি-উক্ষে দর্শন-কারেরা সেই প্রাত্থনদ্বী ভাষ-গুলিকে **চক্ষের সম্মুখ হইতে সরাই**য়া রাখিতে তিনি गठ-शकारत श्राम श्रीशार्हन, हर्द छना। ্রি সকল এবং **আর** আরে অনেক দর্শন্বার-দিপের সম্বন্ধে **নাধারণতঃ** বলা গাইতে পারে যে, ভাঁহাদের শাস্ত্র কাহারে। বোরগম্য হইবার নহে , শাস্ত্রকালের নিজের আ लारक का महरहे—ज्य यान बिन्हास ব্যক্তি আপনার প্রদীপ আগনি হ'কিয় পাতিয়া বাহির করিয়া ভাগে অস্ফরান-ক্রেরে 'দঙ্গে করিয়। জানে, এবং আপনি তাহার উপকরণ সকল ওছাইয় ঠিব্কাং, তাহা-হইলেই যা'। যে কোন সত, হউক্ না কেন ভাষার তাতিখন্বী ভ্রমই তাহার আলোক; এ জন্য, সতেরে চিন্তার মধরে এবং তাহার প্রদর্শনের সময়ে, তাভ্রনিদ্গণের, এইটির প্রতি স্বিশেষ সাবধান হওয়া উচিত যে, তৎকালে ভাঁহারা যেন অভিমাত্র গৌর-বকে আশ্রয় করিয়া ভাষের জিন্তা এবং প্রদর্শন হইতে সরিয়া না দাঁড়ান; প্লেটো ম্পোনোলা লাইব্নিট্জ হেগেল্ এভৃতি মহারারা নিশ্চয়ই প্রূপ করিতে গিয়া আ-প্ররাই আপ্রাদের গভীর জ্ঞান-চর্চা মাটি क्रियार्ट्स, এवः उज्ज्ञना - यसुया-माधातगतक বিস্তর ক্ষতি ভোগ করিতে হইতেছে; ভা शाम्बर व्यनमान-পद्मां यांन जनातल इहेज, তবে ভাঁহাদের স্থমহৎ জ্ঞান সাধারণের প্রভূত উপকারে আসিত, তাহাতে আর স-ন্দেহ নাই।

এই তন্ত্ৰ সভা মিথাবৈ তুলনা সংখ্যাপক।

এই জন্য এই তন্ত্ৰ উহাঁদের ও-পথে না গিয়া অপেকাকৃত নিম্ন-বৰ্ত্তা অন্যবিধ পথ অৰলম্বন করিতে প্রয়াস পাইয়াছে। ইহার কেবল চেপ্তা—সত্যকে বোধ-স্থলভ

করা; তাই, ভ্রমের সহিত প্রথম এবং স্পষ্ট ভাতিযোগিতার গুণে দতোর উপরে যেরূপ আলোক নিপতিভ হয়, তাহাই ইহার প্রধান ্নভর-স্থল। ইহা প্রতিদ্দশী মিগার মাহায্যে মতাকে পরিস্ফুট করিতে তভিলায়ী। সপক্ষ এবং প্রতিপক্ষ উভয়বি ক্রিডাস্তের সন্ধিবেশ-পদ্ধতি কভক্ষ-ট। নৃত্য-ৰাণেৰ বটে, কিন্তু উপরিউক্ত বিবেচন।-টি ভাহার মূল-প্রবর্ত্তক। অবিমিশ্র দার্শনিক ব্যাপারে ব্যাপ্ত হইতে হইলে ঐ-টিই তাহার এফমাত্র বিহিত প-দ্ধতি; করিণ, সাধারণ বোধ মেচনের পক্ষে উহা সবিশেষ উপকারী, আর উহা দার্শনিক আলোচনা-তুনভ সংশ্রাত্মকতা হৈব এবং জব্যবস্থিতি সমস্তেরই অপহত।। পদ্ধতি যাহার সংকল্প কেবল সতোৱই প্রদ শ্ন-ভ্রমের প্রতি-প্রদর্শন নহে-ভাষাকে ঐ **সকল প্রয়োজনী**য় কাপারে বঞ্চিত হইতে হয়।

### স্বৰ্গ ও নৱক।

্রু যে অশীভিপর বৃদ্ধ দেখিতেছ, আহা উহঁরে কি ভুন্দর মুখ-জ্ঞী! বনন-মণ্ডলে বি পবিত্র ও মহৎ ভাব উপছিয়া পড়িতেছে ! मुर्विष्णुर्व विमनानरमद हिस्स् रहमन ज्लेष्ठ ুপ্রতিভাত। ঔহাতে বিষাৎের চিছ্ন নাই. ডুল্চিজার কালিমা নাই, নৈরাশ্যের অন্ধকার महि। এই वृष्क-वश्राम छ देशाँव भवीव कि তেজ্ঞপুর্প! দেহের কি মনোহর কান্তি! যেন পূর্ণ থাখেরে প্রতিমূর্তি। ইহার যেরাপ ৰাহা মহত্ব্যঞ্জক সৌন্দৰ্য্য, আন্তরিক সৌ-ন্দৰ্য্য ও মহত্ত্ব তদ্পেকা অধিক। ইনি সমস্ত জীবনে কখন জানিয়া শুনিয়া কোন পাপ-কার্ব্যের, কোন অপকর্মের অনুষ্ঠান করের লাই। আৰীবন অন্ধুৰ ভাবে ধৰ্মের সেবা कतिया प्रानियाद्यमा क्यन द्वान कर्डवा कारधार प्राट्ना करईन नारे। यीष भक्ति

ও সাধাানুসারে চিরকাল আত্মীর সকলের স্বদেশের ও মানবজাতির কল্যাণ সাধন করিয়া আনিয়াছেন। "রিপুগণ কথন ইহাঁকে বলীভূত করিতে পারে মাই, রিপুগণকে ইনি সক্ষদা বশীভূত করিয়া রাখিয়াছেন। श्राता छान कथन धनुक रायन नाहे, বিবেক-বলে ইনি শত শত প্রলোভনকে পরাজয় করিয়া অনির্ব্বচনীয় স্থুখ ও আনন্দ লাভ কবিষাছেন। পৃথিবীতে এমন কেহ নাই যে বলিতে পারে যে ইনি ভাষার প্রতি কথন কোন অনায়ে ব্যবহার করিয়াছেন কিন্তা ভালেকে কোন একারে মনঃক্ট দিয়া-ছেন। ইহার ঈশ্বর-বিশাস অতি গভার, पृष् ও षादिवित्त । इंहीर बीटान कछ यहेना হট্য়াছে যাহা অবিশ্বানীর চল্ফে বড়ই ভয়া-নক, ও বিধাতা-পুরুষের ঘোরতর নির্দয়তার পরিচায়ক, কিন্তু ইন্টার এমনি বিশ্বাস বল যে रेनि रम मक्ज घटेनाय केश्रदा**द नियुत्**यत নোল্বা দেখিতে পাইয়াছেন। ভাঁহার দয়ার পরিচয় গাইয়াক্সেন। অতীত জীবনের কার্য্যান বলী চিন্তা করিয়া ইনি ভাহাদিগের মধ্যে এমন একটাও কার্য্য দেখিতে পান-না যাহার जना हेनि पुःथिछ वा अनुष्ठ छ हरेट शांद्रम यर्ज्यान कीवरन देनि देगाँव अर्थावरल, विश्लाम-বলে, বিবেক-বলে ও পবিত্রতা-বলে পারম সুখী, আর ভবিষাতু জীবন দমনে ইনি কিছুমাত্ৰ চিন্তিত বা সন্দিগ্ধ নহেন—ভাৰ-যাতের পারলোকিক আধ্যাত্মিক স্থাবৈশ্যা ইহার বিখাদ-চক্তর সন্মুখে সর্বদা জল্ভ-क्रात्थ श्रकानिछ। इति श्रीय कोयत्नव श्रवित অতীউ ভাবিয়া, পবিত্রতর বর্ত্ত্যান উপভোগ করিয়া এবং পবিত্রতম ভবিষাৎ দর্শন করিয়া পর্য স্থী। ইহাঁর আত্মা সর্বদাই শ্রেমে উমন্ত, শান্তিতে অভিষিক্ত, আনন্দে ট্রং-ফুল্ল, আশার উল্লিস্ত ও সবরে অভিনিবিষ্ট। এই পৃথিবীতে ইনিই সর্গের প্রতিরূপ।

আর ঐ গৈ তিকটী রদ্ধ দেখিতেছ, উঃ উহার কি কুংশিত আকৃতি। উহার মুখের निटक मृष्टिभाक केविटल केविटम टेकनम आधना হইতে ভয় ও স্থার সঞার হয়। কি বিকট মুখ-শ্রী। নত প্রকার নীচ ও অপবিত্র ভাব ছইতে পাবে গেন ভঙ্গমস্ত ইংার মুখ দিন। ফুটিয়া বাহির হইতেছে। ইহার বরন্মওলে ष्यानटस्य हिडू बाल गारे, छेश विघाटन विहाउ ও অৱনত। বয়স অধিক হয় ন।ই, অ্থচ এ ক্যক্তির দেহ একটেরর মকল লক্ষণাভাজে। পু-রীর কি মলিন ও কাস্তিবিহীন। বেলয়ভিত্ত অস্তা: ইহার বাধ্য শ্রী-ছীনতা অশৈক। ইচার আন্তরিক শ্রী-হীনাত। স্থানেও জনিম। भाभावतान, अवस्थायुक्रीतन विश्वि स्वीतन অভিবাহিত ইইগছে: কট্ৰ ক্ষেণ্ট হাকে বলে এ বংক্ত ছাহা বৰৰ জানে নাই। ক্ছোর প্রতি কি কর্ত্তত গ্রহা কগন জানিয়েত্র কিয়া ভদমুদারে করিয়ে করিতে এ শাক্তি कथन कही करत नाहै। अध्या नर्समा ই্ছাকে পরিচালিত কার্যাচে। বিপুণালের । বশানুত হইয়া এ বাজি শত শত পাপ কর্মা করিখাছে। কত লোকের প্রতি জনায়া-. চরণ করিয়াছে। কত লোকের প্রতি নৃশংস नानहात कांद्रशास्त्र , जारा नेना गाप्त ना । क्षेत्राद्ध होत्रात्र विश्वाम नार्ड, भवकारण देशाव আছা নাই। স্থতরাং পৃথিবীর নানা বি-পদগাতে ইছাকে অশেষ আন্তরিক যন্ত্রণা ভোগ করিতে **হইরাছে।** বছকলি পাপ ক্রিয়া করিয়া এখন ইহার পাপর্ত্তি সকল ক্রনে নিজেজ হইয়া আসিতেছে, এখন অ-তাত জীবনের কার্য্যাবলী চিন্তা করিয়া ইহার হাদ্যালেশন্ধ হইটেই কিনান জীবনেও हेराब प्राचन कार नारे, द्वारण कब्ज-রিত, চিস্তায় ক্লিষ্ট, নানা ুসাংসারিক তুপ-ভিত্তে ক্ষত বিক্তি; আর এই অতীত ও वर्कमादनके दर्शात बच्चनाव निर्मेश रहेशा वथन

ভবিষাতের নিকৈ এই বাভি গাহিলা দেখে তথন ইয়ার আর পবিভাগের জন্ধগারে না।
ইয়ার বিশাসভাল আরা ভবিষাদে লেখিলেরে
কেবল জন্ধদার। এ ব্যক্তি ইয়ার ও ব্যক্তি ক্রিয়ান ও বিষয় জাতিত বর্জনান ও ভবিষ্যা জাতিবা ক্রিয়ান ও ভবিষ্যা জাতিবা ব্যক্তিবাই আদিবালী আদিবালী আদিবালী আন প্রকালনাম বিচলিত, কত পাপকলী জন জন্দাত নাম পরিভূপ্ত এবং জনাভি নিবালনদ ভ নিবালনাম ভিলিত কর পাশকালী জন ভারতে ভ নিবালনাম ভ নিবালনাম ভিলিতা বিষয় ভারতে জনাভি নিবালনাম ভ নিবালনাম ভিলিতা বাবের ওবিত্তপা।

#### দেব-পথ।

কাল কাল দেশ দেশ অভিক্রম কান্ত, বে জানে কোধাও ভার আছে কি না শেষ । কোথা হ'তে আমিভেছে কোন্ শ্রুনীগেতে রাথিয়ীতে আপনার অভীতে উদ্দেশ।

থরণ মরির আছে কেন্তারে তারু শব্ধে অধ্য শিব অনুত জাবন। ডানগে আনন্দ আর এমৃতের পার শিপান্থ পথিক তারে বহে অনুক্র।

আপন সক্ৎ-বিভা করিয়া বিকাশ ত রহিয়াছে চির দিন নীরব জা্গ্রত, লক্ষ্যহারা হ'য়ে ভাই বিখ্যুরচির মরণের অন্ধকারে হয় না নিহত।

বিমল জ্যোতির মানে ঠাই নাহি পে'রে আঁথার মুনিছে হেথা সংদার প্রাক্তন; সংদারের অনুবাজে এই দেব-পর্ব, ধর ভাষা যদি চাও বাঁচিতে জীবনে!

# ব্রাহ্মনমাজ এবং ইহার অতীত ও রহমান।

রো**ন্ধা**মমাজের প্রথম বালে তর্কের কাল। এতদেশীয় জনেনেই আন্ত্রন উপহত ছিল। , **অনেকে** প্রাসাসিত গোলাসিক ধর্মে কৃপ্ত না হইয়া খিষ্টার পোভালিক বা আত্রা কলিতে-হিল ৷ . সেই সময় সংঘটে হন বাং সকলকে প্রায়ত বর্মে স্থাপন করিশার উল্লেখ হিন্দু-সন্ত্ৰি ভ্ৰমল তৰ্ক উপস্থিত কৰেল ৷ ভাৰা: **উट्टिश** ड्रांस-निवास । विस्तृत्यः, विनेत्र সেই ভাগ বন্ধন্ন হইয়াছিল বৰং সেই শাসের এক্রড বর্ণগার আহং দেও ছটা ষায়। কিন্তু রাল্লেড্ন লাগ চিন্দ্রন্ত্রের য়ে অবস্থায় উলিভ হন তথ্য স্থিত মুক প্রকা**শ করা** ভাঁহার প্রে সহজ ছিল ন দেশকাল ভারার মধ্পুর এতির্ব। তিনি মনের সকল কথা প্রকালত সহিত বানতে পারিবেদন মা । হিদ্যুর মিগুট উচ্চিরে এবেশ-দার শাস্ত্র কারণ স্থানি বলি মাপেকা एशन मार्ट्यहरे शामाना क्षिक जिल। स-ভবাং দিনি নেই শাস্থ্যাণে গা কিছু বুঝা-शिक शाहितका छिङ्गारे के छात्र श्राटक वर्ष হুটত। এইরূপে ভিনি শাস্ত্র ছারা একেখন-বাদ সিদ্ধ করিলেন বটে কিন্তু শাস্ত্রই আবার ভবিষাতে বিশেষ অনুথের মূল হুইয়া উঠিল। রামযোহন রায়ের অবশয়ন এধানত বেদ ও ্বেদান্ত। নিজ্য ভাই বেদের প্রামাণিকতা এই বিশান তংকালে লোকের অস্থিমজ্জায় প্রবিষ্ট ছিল। কিন্তু রামমোহন রায়ের কার্ন্য-ल्यानी भंगारणांडना कतिरन किंडूरल्टे বোধ হয় না যে ভিনি এই সাগারণ বিধা-সের অনুসরণ **ক্রিয়াছেন।** তথাচ তিনি ্ষথন দেশকা**লপাত্তার অনু**রোধে এই বিষয়ে যৌনাবলম্বন করিয়া যাল তখন লোকের মনে বেদের নিতাতার উপার বিশাস অটল ছিল।

তাহার লক্ষা যে কোনরূপে হউক দেশব্যা উপর্বা নিশ্মল করিতে হইবে। তিনি বনিয়েছিনেন ধৰ্ম উন্নত না হইলে নিজাব হিন্দ্র (জে পুনরায় সভীকত। আমিবে না। লোকে নেদকে নিতা বলিয়া আকার করুক আর নাই বরক তাহাতে কিছু আইদে স্তা না ৷ বেদ-প্রমাণে যদি একেশ্বরবাদ कां वरिक का तर्वगारन अरे हेक्टे शहम লাভ। মুখ্রত িনি এই জন্য বেদের উপর চোন রাপ বাঘাত করিতে নির**ত** ছিলেন। কিন্তু এদিকে ভাছার মহমোগী স্থাভিত র'মদক্র বিদ্যাব্যগাল উহিলে মুচ্টের পর ्रायामगारक ता मकन **छिन्रामन (एन** छाहा পাও কবিলে দেখিতে পাওয়া যায় যে তিনি শহরের নামে বেদ ও অনুভবকে ঐশ্বরমিদ্ধির শ্রমাণ বলিখা নির্দেশ করিয়াছেন এবং ভা-शत छेलाएटमात चारम खारम स्लक्षेकात এই হছাও আছে যে মনুষা চরমে ঈশ্বরে লীন ২০%। বিদ্যাবাগীশ প্রাচীন ক**ল্লে**র বোক্ষণ পণ্ডিত। যে শিক্ষা রামমোহন রায়কে স্থা-গীন বদ্ধি দিয়াছিল কিছু নিন পূৰ্কের ভাষাণ পভিতের সেরূপ শিকা ছিল না। ফলত তিনি যে একজন বৈদাতিক ছিলেন দে বিষয়ে বিশেষ সন্দেহ হয় ন।। এই বেদান্ত-বিং পণ্ডিত যে উপদেশ ও আলাপে লো-যের মনে বেদের নিভাত। ও বৈদান্তিক ধর্মের ভ্রেষ্ঠত) সূদ্রূপে মুদ্রিত করিয়া যানু এই বিষয়ে ভাঁহার শাস্ত্র-বাখাানই প্রমাণ। যাহাই হউক বেদ নিতা এবং ত্রাক্ষসমাজের ংশ্ব বৈদান্তিক ধর্ম ব্রাহ্মসমারে প্রথম ইভিহানে যে এই কথা পাঠ করা যায়, সন্ত-বত এই টুকুই ভাছার মূল।

ইহার পর ত্রীমৎ প্রধান আচার্য্য মহা-শাবের কাল বা ত্রাক্ষামনাকের সংস্কার ও

<sup>·</sup> विन्तानोधीर्मन अऽ• वार्याम रमय । .

কার্যোর কাল। ইহা একটা প্রাদিদ্ধ কথা যে এক সমান কোনও আক্সিক্ ঘটনায় हैहाँ बरन अक्छ। त्यांत छेपांगा णाहेटम। (मरे छेनामा पूर्व कतिवात जना हेहाँत ধর্ম-জিজ্ঞানা উপস্থিত হয়। ডিনি বি-দ্বেম ও পক্ষতাদি দোম শ্না হইরা সরজা যনে বছদিন নির্বহনে ধর্মতত্ত্বে ছব্ भक्षान् करतन । हिश्ति कल छ। होतं आश জোন এফল এই মহামতি সচিতাল জগ্ৰের জাহিত পেটেংর একতা উপলান্ধি কাংগাভিনেন এবং ইচার সঙ্গে সংস্থ हेर' ७ विकास । अरे समुद्र रेट ७ ७ छ ध्यथंड खंशे बद्धत मही। स्थ है। स्थाद अवही रिङ्क्षण १४। जाराई साजा। ८० जान-खारन धरित समाद्धान कंस्माच। अबारम চেতন-পর্না আদ্বন্ধান ভারা স্বস্পার ঐতি-পাদন প্রিলা - কিনি ক্লি-স্করপে এক-রূপ নিংশ গয় হুইলেন। পরে জীলের ধর্মানান্ত বেদ বেদান্তের ত্র্লোচনায় প্রবৃত্তি হয়। তিনি এই সকল শ্লান্তে আলনাকই ক্ষিতি জন্মভাবের বিকশি দেখিতে প্রাই-য়ছিলেন। প্তরাং তদ্যধি ইহার উপ্র ভাহার প্রগাড় শ্রেদ্ধা জন্ম। পরে এই সমস্ত শাস্ত্রের শ্রতিপাদ্য অদিতীয় ত্রন্ধের উপাদনা হয় শ্বলিয়া ত্রাক্ষণমাজের স্-হিত তাঁহার সংগ্রোগ ঘটিল। ত্রাক্ষদমাজের পক্ষে একটা বি-এইটা শেষ সময়। त्रासरगांदन त्रारहात श्रास्त्र মস্তিকের উপর ত্রান্মসমাজের উৎপত্তি কিন্তু প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের স্প্রশিন্ত হাদ্যের উপর ইহার ছিতি। রামমোহন রায় শাস্ত্র-দিকু মন্থন করিয়া বুদ্ধিবলে এক অক্ষাকে উ-দার করেন কিন্তু ইনি প্রাণের পিপামা শান্তি করিবার জন্য প্রথর অনুসন্ধানে অন্তরাত্মার পরমাত্মার দর্শন পান। এক जन खान-श्रमान जात वक जन जीव-श्र-

धान। भन्दकारक ७३ ०० किलानागर खुপतिहार्था अतः एनाम्द्रक चेन्नामहे लोन র্ব একই রূপ। ফল্ড এট স্থাং স্টার্ভ ব্রা**ন্সামান্তর<sup>্কী</sup> মুগান্তর** উপপ্রেড চইর্যান্তর : तागरमाञ्च बारवत है जा दकरन विकास है है म भारत, अकतार जिल्लि (अर्थक नार्कान স্কুরে একেখরবাদ প্রান্তী করিছে ধান। নিস্তু ভিনি ভর্নহে পালে যে সম্ভ ভারতিনা আছে বেশকালের অপুরোরে ভাষ্য পরিষার কবিতি প্রয়েশক্ষণী। ভারান আসাৰ্য মহাশ্য প্ৰথমত ভাষ্টেই মংজ্যাৰ আন্ত করেন। ভাল্ব স্ক্রত সংহার্থ তাত্যের প্রতি পরে ও প্রতি ৮০নে এই সংস্কৃত शिक्षक भाके करा शहर कर उस বেলন্তই এই এলের ভাগ ও এতিষ্ঠা। রাণ্যোহন রায়ের তর্ম্যে খাত মে নমজে জ্ঞানবিরোধি ২৩ ও বিশ্বাস আসিয়াছিল এই এছ ডাহার জীংন, প্রতি-বাদ। ইতিশার্পর উলিগিত ইইয়াছে যে 'প্রাথান আগার্য, বহাশ্যের ধ**র্মাশিক**ক করং আগ্রা। তিনি স্নাচন্তায় ধর্মকে পান। বাহ্য ও আন্তর প্রকৃতি এই বিষ**রে ভাঁ**হার ষবেপ্ত আত্মক্লা, করিয়াছিল। ইহা ছারা তাঁহার দৃঢ় প্রতীতি হয় **ধর্মে**র উৎস স্বয়**ং** আ**ত্মা।** তথন তিনি জলদগ**ন্তীর** স্বরে প্রচার করিলেন বেদ অনিভা। যে কোন দেশের যে কোন গ্রন্থে সভ্য আছে , তাহাই গ্রীক্ষের শাস্ত্র। বেদের ন্যায় কোরাণ বাইবেল সকলই ত্রান্সের শাস্ত্র। ব্ৰাফ্ৰমাজ এত কাল বেদ সম্বন্ধে যে ভ্রান্ত যত পোয়ৰ করিতেছিল এতদিন পরে তাহার মূল শিথিল হইয়া পডিলা

এখন প্রশ্ন এই ষে এ দেশে বেদ নিতা বা অপৌক্ষেয় বলিয়া বছকাল যাবৎ আদৃত কেন। আমাদের বোধ হয় ইহার একটু বি-শিষ্ট কারণ আছে। প্রাচীন শাস্ত্রকারেয়ন



ধর্মনির্বয়স্থলে বলিয়াছেন, যিনি জ্ঞানী ও गाधु, याँ हात अक्लांड ও विरुध किছू गाज नाहे, जिनिहे अन्द्र धर्म्बन अनुमान করিতে পারেন। আমরাও বলি এই রূপ অধিকারির নিকট ধর্মানুমানে বেদের প্রামাণিকতা যৎসন্ত্র। কিন্তু এরূপ অধিকার मकरनंत्र भरक यूजल नग्न । এই জনা पृद्रपर्शी শাস্ত্রকারেরা যথেজ পরিবর্তের মুখ হইতে নংখন্ম ও সদাচারকে রক্ষা করিবার আশায়ে বেদ নি ল বা অপোক্রমের বলিয়া একটা শা-সন রাথিয়া যান। কেবল এই দেশেই বা কেন অন্যান্য দেশেও লোকে সত্ত ধর্মা-শাস্ত **অভ্রান্ত বানিয়া স্বীকার করে। তবে বিভে**দ এই যখন কুতাপি কোন্ড ধর্ম-শাস্ত হয় নাই তথন এই ভারতে বেনের এই মহিমা প্রাসা-রিত হইয়াছিল। কণ্ড এইলে প্রচার একটা শাসন মাত্র। ইহার পুড় উদ্দেশ্য धनिकातिनिकात अना धर्मित अकें। वात्रका ছাপন। নচেৎ ধর্ম ও আচারে লোকের একতা না থাকিবারই সন্তাবনা। পূর্বের বলিয়াছি প্রধান খাচার্য্য মহাশ্যের কোনও একটি আকম্মিক ঘটনায় ধর্মা-ক্ষিতাসা উপ-স্থিত 'হয় এবং তিনি বিষেধ ও পক্ষপাতাদি (माध मृना इहेशा महल यरन वर्णान्नकारन প্রবৃত হন। ইহার ফল তাঁহার আত্মজ্ঞান। অধিকারিতার পক্ষে এই টুকুই যথেপ্ট প্র-মাণ। স্থতরাং ধর্মানুমানে ভাহার হং-প্রত্যয় পর্যাপ্ত ছিল। কিন্তু এইরপ অধি-कात जकत्नत्र शाक खना नाह। हेहा মনুঘা-প্রকৃতির একটা অবস্থান্তর প্রাপ্তির श्रमिक द्रार्थ। क्रम कथा माधन-मार्थक। এই জন্য প্রধান আচার্ষ্য মহাশয় বেদের ্নিতাতা অধীকার করিয়াও স্বয়ং অটল রহি-লেন কিন্তু বেদের সমাজে তাঁহার উজনাপ (चायना शृष् ऋटन जानानाएक धक्छ। विश्वत-

সমাজে যথন এই ঘটনা হয় তথন এদেশে स्जानकती विष्ठा (कवन देश्ताकी। अ**टकर**ा (पनीय धर्म-भारत्य व वर्षा छ। अहे हिल ना। তাহার উপর আবার ইংরাজী শিক্ষা এ দেশের ধর্ম্ম ও এ দেশের আচারের উপর त्नारकत गरन अकने। वि**रक्ष क्याहेरल्ए।** कुमध्याहत । निरन्तन अद्देतल या निका देशह স্বাং কুন স্থান এবং ইহাই বর্মানুমানের সংগ্রেতক হইর। উঠিল। স্বতরাৎ ত**ংকালে** ্যবন ইংরাজীশিক্ষার বলে ভা**ল্যদিগের** -भरता जरनरा नाहितन । ७ शिहेरक धर्मा-शिक-কের পরিত্র হণিকার অর্পণ করিলেন। আমরা বলিয়াছি যে বেন বেদান্তে আপনার হৃদি-ভিত ধৰ্মা-ভাবের প্রতিবিদ্ধ আছে বলিয়া উল্তে এধান আচার্য্য মহাশয়ের হৃদ্যের অনুৱাগ। এতহাতীত বেদ বেদান্ত অবলমনে ভাষার আরও কিছু পুচ উদ্দেশ্য ছিল। রামনোহন রায় হিন্দুধর্মের ও হিন্দুসমাজের সংকারক। তিনি ভাহারই প্রদর্শিত পথ অনুসরণ করিতেতের। স্বতরাং এই লোক-হিতৈষণ। বৃত্তিতে অটল বলিয়া ইংরাজী শিক্ষা ভাঁহার উপর কোনও আধিপতা করিতে পারিল না। তিনি ধদিও এক দিকে বেদের অনিত্যতা ঘোষণা করিলেন এবং স্কল দে-শের সক্ল শক্তি—যাহাতে ঈ্বরের সত্য আছে তাহাই আঞ্চের শাস্ত্র বলিয়া স্বীকার করিলেন, কিন্তু সেই বেদই ভাঁহার জীবন **७ चारमाक रहे**श। तरिम । **छिनि अरमर्थ**ः সমাক গৃহীত হইবাৰ জনা এই ফিলুশাস বেন বেদান্তের প্রসাদাৎ অধ্যান্ত্রিক ধর্ম ব্ৰাক্ষধৰ্মে ছিল্ম প্ৰাৰের সঞ্চার করিলেন 📳 कना रेहारे शक् स्रोतायुत्राम । कि **जाहात्र मिनागर्यत गर्या घटनारक है** টুকুর মর্মা ব্রিতে পারিলেন ন।। ভিনি त्य द्वरनंत नाम कावन नार्यका क्रिका ঁ কর পরিবর্ত্তের বীজ রোপন করিল। আন্ধা- এছকে—বাহাতে ক্রানের ক্রানের

म्हि अष्टरमु खारमात्र भाग द्वानिशा निर्मिन कतियादान है हावह यना छ। हादम्ब श्राप्त ্ব মঙ্জীয় প্রবৈশ করিল। স্তরাং তদবধি धर्मा क्रिकात क्रमा अधानक नाहेरल अरनक बार्यात व्यवनयनीय हरेया छेठिन। किन्ह বাইবলের ধর্মাশিকা হিন্দুর নিকট কোনও ष्यः सं कार्याकरी इत्र ना। विरिवन (४ किन হিদরে ধর্মাশিকার উপযোগী নয় তাহারও কার্ম্ম আছে: দেখ, প্রতেকে লোকেরই সাধন ও সিদ্ধ এই তুইটা অবস্থা আছে। সিদ্ধাবস্থায় कूमि कू बाह्मा वा शक् या नारमरे जैवतरक ডাক, য়ে কোন ভাষায় টাধার স্তুতি বা বন্দনা কর তোমার প্রাণের তৃঞ্চি হইবে। কারণ তথ্য ঈশ্ব তোমার করতলনাল্ড আমলকের नाम ध्रेम आह्म। नाम वा जाया अक्रो ব্যবধান ঘটাইয়া তাহা হইতে আর তোমাকে मृदत क्लिंग्ड भारत ना। किन्नु मानरनत ষ্ববংগ ঠিক্ এরূপ নয়। তুমি অবনী যে কোন দেশে যে কোন ধর্মশাস্ত্র ছইতে সত্যটা পাইতে পার ফিন্তু ভাহা হইতে ভাবন পাইকে না। আবার সভা যতক্ষ না জাবন আনিয়া স্কারী তাবৎ তাখাতে কোন वित्सय छेशकात नार्री भागवा रेमानवकाल হইতে 🛊 হস্তন-চুপ্তের ন্যায় দেশীয় ভাষা ও দেশীয় ভাবে পুঁछे हरेश पाकि। ভাব-সংশ্রবে পেলীয় ভাষা ও ভাব আমাদের ্প্রাণ র। শনে অবস্থান্তর উৎপাদন করিয়া থাকে। মনে কর শাভি শান্তিক্সলিলে আমরা मत्न रक्मम पृथ हरे किञ्च ভাবে উहात्रहे প্রতিরূপ কোন কণ্ড হলি বলি আমার মনে সর্ববাজা উপস্থিত হউক ইহাতে আমানের मन कथन मिन्नाश कृष्ठ रहेरत ना। करने कन अंदरन नान्धि नकी जागारमत देननद्वत्र र्खन-एक । देश बाता आमारमत आरमक मन র্দ্ধি পায়। কিন্তু বিজাতীয় ভাবব্যঞ্জ কর্ণ-सामा अनि पामारमत रेगमरवत सामूक।

ইংতে অন্থাই কিছু প্রাষ্ঠি লাছে কিন্তু তাহা আমাদের প্রাণের প্রৃষ্ঠি নয়। এখন দেখ সতা কেবল শিক্ষার অন্য নয় উহী জীবনে বাবহার করিবার জন। স্থানুরাং দেশীয় ভাব ও ভাষার পূচ সাঁতিই যথন প্রাণ্ড মধ্যর করা তখন মাধনের অবস্থায় হৈছি যে বিশেষ উপক্ষেমী তাছার আন কোন ও সন্দেহ নাই। বলিতেই কিই ইং। বাতীত মানে ইইতেই পাবে ন

योक्, अरेक्टल रेटबाटबाशीय दारेका भाखानुभीनरेन यथन जाकारैनाक আনন্দ্রাভে বঞ্জি হইলেন তখন ভাষার গতি বাহা কার্যেরে দিলে ফিরিল। নাম সমাজ-সংস্কার। এখনে আরও একট কুথা বলিতে অবশিপ্ত আছে। পাশ্চতি জ্ঞান তো খনেকের অস্থিমজ্জায় প্রাবেশ করিয়াছে এবং ধর্মশিক্ষক প্রধানত বাইলে বা প্রিটা खरे मनिकाकन-रवादन किवन मभाव नदह , আক্রধর্মত ধানিকটা রূপান্তর ধারণ কবিল। ইহা কাহারই অবিদিত নাই যে এ সময় ररेट बाकमगाट थिडे-गरिया अने ७ र्रेस উঠিল। জানন-সমুদ্রে শ্রিপ্তই প্রক তারা। তাঁহার রক্তমাংস পর্কোপলক্ষে অনেক ত্রা-ক্ষের দঝোদরের ভৃপ্তিসাধন করিতে লাগিল। জার্জন নদী পবিত্র বলিয়া গৃহীত হইলেন। এবং খ্রিটের মৃহাদিনে উপবাস একটা थर्भकाया-- व उठमाति बैटमा इहेता छ। छ। छेल । ধর্মের অবে বেমন এই পরিস্তুত ত্যবহারেও আবার এই রূপ। বিধবাবিবাহ, বৈদ্ধাতঃ विवार, मनूर्या-माष्ट्रिक विवार, ज्ञी-श्रादी-नठा, जो-পরিচ্ছদ, জীবন-প্রণালী, এ সকলই ইয়োরোপের অনুকরণে অল্পে অল্লে আদিতে नांत्रिन। এইরূপে धर्म्य वात्र ष्यांना এवः **ব্যবহারে** যোল আনা খ্রিষ্টান সাজিয়া ত্রাক্ষ সমাজ বড় শোচনীয় প্ৰস্থায় উপস্থিত इट्टेलन।

পূর্বে বলিয়াছি কংগ্রভায় ধর্মানুখানে প্র**র্যাণ। স্থত**রাং ত্রাক্ষ বেদের নিত্যতা স্বী-কার করিয়া উহাকে তুগ্য পথের অভ্রান্ত নেতৃত্ব দিতে পারেন না। কিন্তু এই ভারত-বর্ষে আজই যে কেবল ব্রোক্ষসমাজ বেদের এই অনিত্যতা স্বাকার করিতেতে তাহা নহে, ইতিহানে দৃষ্ট হয় অতিপূর্বের বোদ্ধেরাও ঐ রূপ করিয়াভিশ। কিন্তু বৌদ্দেরা বেদের অনিভাতা স্বীকার করিলেও আমরা গৌদ-ধর্ম্মে হিন্দুধর্মেরই প্রচুর উপাদান দেখিতে পাই। ইহার কারণ অনুনদ্ধান করিলে বোধ হয় যে বৌদ্ধের৷ এক সময়ে বেদোক্ত বর্দ্মে বিরক্ত হইয়া উঠে এবং যা**গব**চ্ছের উচ্ছেদসাধন পূর্বক বৈদিক ধর্মের সংস্কারে বদ্ধ-পরিকর হয়। । একটা বস্তম দূষিত অংশ বাদ দিয়া তাহার সারাংশ গ্রহণকেই সং-कात दला गाया "दिशेषात्रा हिन्द्रवर्ध मशस्य ভাহাই করিয়াছিল। वह जना ख्रान षाटह वोक्षमा आत किछूरे नह छैश ७ छन বেদান্ত ধর্মা। এখন ব্রিয়া দেখ রামমোহন রায় হিন্দুসমাকে একটা সমূত্য ধর্ম প্রতিষ্ঠ क्रिटिंग शान नाहै। हिन्नुसर्कात मध्यातह তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল। কিন্তু প্রধান আচার্ষ্য মহাশা তাঁহার এই উদ্দেশ্য বুঝিয়াছিলেন 1 এই সনা তিনি বেদ অনিতা ইছা ঘোষণা করিয়াও হিন্দুশান্ত আশ্রন্থ করিয়া হিন্দু ধর্মাকেট সংস্কৃত আকারে ব্যাখ্যা করিতে **এই कावरन जमाविध अरे** लाशित्नन । चापि खाकाममाज अटक यत्वानी हिन्द् निरंगतहे সমাজ হইয়া ছাতি। এখানকার ধর্মা সং-ষ্কৃত হিন্দুধর্মা এবং ব্যবহার সংস্কৃত হিন্দু ব্যবহার। কিন্তু তাঁহার শিষাদিগের মধ্যে অনেকেই ভাঁহার এই গুড় ও গভীর উদ্দেশ্য বুঝিতে পারেন নাই। এই জন্য তাঁহা-দিশের হল্ডে পড়িয়া ত্রাক্ষাবর্দ্ধে নানা রূপ বিভাতীয় ভাব মিশিয়াছে এবং সমাজ-সং-

স্কারও এই বিজাতীয়তার হস্ত এড়াইডে পারে নাই। কিন্তু ঈশ্বর অন্ধের পথ-প্রদ-শক। তিনি গোপনে গোপনে যে কার্যা করেন কেহই তাহার সন্ধান পায়ন। এই রূপে দেখিতে দেখিতে কিছুকাল পরে আবার বোক্ষসমাজের স্রোত ফিরিয়া আদিল। এখন দেখিতেছি ত্রাক্ষদিগের মধ্যে অনেকের মনে ভাকাংর্শ্মের এই খিষ্টীয় ভাবে নিষেষ জন্মি-য়াছে। অনেকেই এখন গর্ম্মে হিন্দু এবং জীবনে হিন্। হিন্দু জ্ঞান ও হিন্দু যোগ আনেকেরই ধর্ম-পিপাস। শাচ্ছ করিতেছে। ইহার পূর্ব বিকাশ-স্থল পণ্ডিত বিজয়ক্ষয়। আমরা পূর্ব্ব-প্রস্থাবে আধ্যাত্মিক রূপকের যে টুকু অনিষ্ট-কারিতা ভাহাই প্রদর্শন করিয়াছি কিন্তু বিজয়কুঞ্জের বিষয় বিশেষ কিছুই বলি নাই ৷ ইনি ভ্রাফের মধ্যে সরলতার একটা প্রতিমা। যথন যে টুকু মুক্তির পথ বলিয়া বুঝিবেন ইনি ভখনই তাহা গ্রহণ করিয়া থাকেন। ইহাঁকে লইয়া আক্রসমাজে অনেক আনেন-ল্ন চলিতেছে। অনৈক কথা রটিতৈছে। কিন্তু আশা করি অনেক কথাই ভাষার পকে অস-দ্যব। তাঁহার কোন কোন মত র্যে দোষস্পৃত্তি আমরা তাহা অদীকার করি না কিন্তু তই-সভেও আমরা দেখিতেছি তিনি প্রকৃত হিন্দু হৃদর পাইয়াছেন। যেখানে যে তাৰে ঈশ-রের পূজা ও ঈশবের কথা হয় সেইখানে তিনি আপনার প্রাণারাম দিবরকে মেনিন এবং সেই খানেই ঈশ্বরকে প্রশাস করেন ইহাই প্রকৃত হিন্দু সদয় এবং ইহাই হিন্দু প্রকৃত যোগ ও প্রকৃত ভক্তি ৷

প্রথনে প্রসম্বত একটা ঘটনা মনে পাড়ল। আমি একদা কোন খিপ্তীয় ভল্ল-লয়ে গিয়াছিলাম। অপ্রসিদ্ধ কমুইচ সমুহত তথাকার আচার্বা। বিশ্বব্যের সহিত মেহি-লাম একটা ভিত্তধানী বৃদ্ধ বাবে সাধা ইয়া নিবিষ্ট চিত্ত ভল্মেশ ভাসম্ভেন্ন আদিবার সময় নিকটস্থ ইইয়া জিজাদিলাম আপনি বিধন্মীর ভজনালয়ে কেন ?
প্রভাতরে তিনি কহিলেন ঐ বিদেশী ভক্তিমান আঁচার্যা যে আমারই প্রভুর নাম করিতেছেন। আর উহাঁর হৃদয় হইতে যে
ভক্তির শ্রোত বাহির হইতেছে কায়মনে
প্রার্থনা করি যেন ঐরপ আমারও হয়। শুনিয়া স্তম্ভিত হইলাম। ব্রিলাম ইহাই
ভক্তিমান হিন্দুর উদার হৃদয়। বলিতে কি
আজি আমরা বিজয়ক্রফে দেই হৃদয়ের পরিচয় প্রাইলাম। প্রতিনি একজন যথার্থতই
নাজিক ঈশ্রভক্ত।

#### সত্য।

(2)

তয়ে তরে অনিতেছি মানবের মাথে ভানহের আলোটুকু নিবে গেছে থোলে। কে কি বলৈ ভাই ভয়ে মরিতেছি লাজে'; কি বয় কি হয় ভেবে ভরে প্রাণ দোলে! "আলো" "আলো" খুঁজে মরি পরের নয়নে, "আলো" "আলো" কুঁজে খুঁজে কাঁদি পথে পথে, অবশ্বের ময়ে পড়ি দুলির শরনে, ভর্মী একবিদ, অগ্রাসর হ'তে।

বজের আলোক দিরে তাস' অন্ধকার, ভাদি যদি ভেলে যার সেও ভবু ভাল, বে গুরুই জানালা নাই সেও কারাগার ভেকে কেল আসিবেক স্বরগের আলো! হার হার কোখা সেই অধিলের জ্যোভি, চলির সরল পথে অলাভিড-গতি!

্জালারে আঁধার শুনো কোটি রবি শালি বিভারে রয়েছ একা অন্ধীয় স্থানার। ত্বগভীর শাস্ত্র নেতে রয়েছে বিকলি
চিরস্থির শুক্র হাসি প্রেসন্ন অধর।
আমন্দে আধার মরে চরণ প্রাশি,
লাজ ভয় লাজে ভর্মে মিলাইয়া যায়।
আপন মহিমা হৈরি পুলকে হর্মি
চরাচর শির্ম ভূমি ভোমা পানে চায়।

আমার হানর দীপ আঁধার হেখার
পুলি হতে তুলে এরে দাও জালাইয়া,
এই ক্রান ভারা তুনি রেখেছ যেখার,
দেই গগনের প্রান্তে রাখ কুলাইয়া।
চিরদিন জেগেরতে, নিবিবে না আর—
চিরদিন দেখাইবে আঁধারের পার!

# প্রাপ্তি স্বীকার।

আমরা হৃতক্ষতার সহিত স্বীকার করিতোছ থে নিম্নাল্যিত পুত্তক ও পত্রিকা গুলি আমরা উপহার প্রাপ্ত হইরাছি।

- । বিধবা বিশাহের শালীয়তা ও মৃতিমুকতা।
   শালেবেয়নাথ মুখোপাধ্যায় প্রাণীত।
  - २। সামবেদ সংহিতা কৌগুনী শাৰ্থা।

Journal of the Asiatic society of Bengal, Vol LV, Part 11. N 11-1886.

Bibliotheca Indica. Published by the Asiatic Society of Bengal.

- N. & No 567. (Parasara smriti)
- N. S. N. 568. (The Nirukta)
- N. S. N. 569. (Mantakhah-at-Tawarikh)
- N. S. 570. (Zafarnamah)
- N. S. 571, 572 (Akbarnamah)
- N. S. 573, (Tattva chinjamani)
- N. S. 574 (The Asvavaidyaka)
- \* Proceedings of the Asiatic Society of Bengal. Apl 1886.

Report of the Southern India Brahme Samaj fer 1885.

Theosophist—July 1886.
Fellow Worker Vol., I, No. 6.
The Hinda Reformer Vol 1. No. 12.
The Interpreter for April 1886.
ভারতী ও বালক । আবাঢ় ১৮০৮ শক।
বামাবোধিনী পাত্রকা। আবাচ ১২৯৩।
নব্যভারত। জ্যৈষ্ঠ ও আ্বাচ ১২৯৩।
বাদ্ধব। আবিন ১২৯২।
আবান বন্ধ। মান্ধ কাবন ১৮০৭।
সজ্জন তোষ্ণী। বৈশাপ ও ক্যৈষ্ঠ।
তক্ত্র-মগ্রী ২ন্দ ভাগ ১২ সংখ্যা ১২৯৩।

#### আয় ব্যয়।

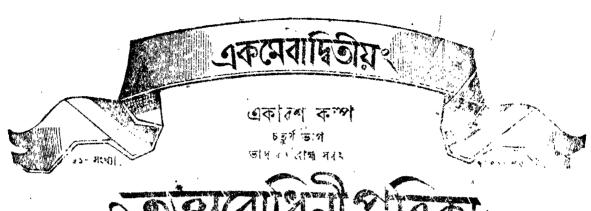
কান্তিক হইতে তৈত্ৰ পৰ্যাপ্ত ভ্ৰাম্ম দূৰৰ ৰঙা

#### वापि खायागगाय ।

00881/0

ए र	<b>●# 4</b> ∑	47	***	- 00	
পূর্বাকা	র স্থিত	• 450	•	হ ৯৩%	V
गम्हि	***	***	in seir.	የድፍው	110
ব্যস্থ	Bh 4	ist Karan Sa	,	२৯५१५	10
<b>হিত</b>	1 >**	,	• •,#	9000	/3
		আর।	•	**	l .
ভাগাস	गंब	***	***	<b>4,03</b>	10
<b>শাশ্বং</b> স্থি	ক দান প্ৰাহি	4 1		·#	
<u>ত্রী</u> মনাহরি	र्षे (मटवन्सनाथ	ঠাকুর	• • •	3004 "	#
gir	এখনগাঁত বি	रेम्। भ <b>्या</b>	<b>শাহা</b> থ্য	204	*
শ্ৰীযুক্ত ত	ব্ৰক্ষাথ প্ৰ			301	12
,,	জ্যোতিরিশ্রন	াথ ঠাকুর	• • •	200	•
শ্রীমতী ড	विभागी (मधी	* 1	***	284	
श्रीयुक्त इ	মিহ্নর রায়,	কেছুপাড়	া পাৰনা	>34	".
,, म	ভ্যপ্রসাদ গণ	रायायाम	••	. २५	
	ीपमग्री (नरी		***	21	٠.,
প্ৰায়্ত ৰ	वि नानविशंजी	বড়াল	• • •	٤/	
, ,	,, চক্রকুমার।			e,	
7	, বেচারাম চ		• • • • •	21	
75 \$	, निवंदक म	2.774	***	· e	J.
	উহার ধনিয়	<b>D</b>		201	
	f		•	4-01 :	

	, ,	>386				
कटनक वांक	***	3				
बीयुक बांद् तिकनान बाब	় ভাগলপুর	۵۱,				
", ", त्रामनान त्यासन		; <b>&gt;/</b> ;				
,, সুরাধাবোহন বস্ত	खान्न	* <b>5</b> % / //				
,, हैं लाक्नक्क निः र	<b>হ</b> গলি	٠, ١				
,, ,, শীননাথ অংগতা		21				
" " अविकाठतन देगव		٠, ٠,				
প্রলোক গণ বাবু রামলাল		28				
প্রিযুক্ত বাবু মহানক ম্থোপা		> <b>&gt;</b>				
, , আওতোধ রাধ	खबर ग्श्र्व	<b>&gt;</b> /				
", " -বেগোপাল নিত্ৰ	••	. 10				
গুভক্ষের দান।	ود فری کا دست سال					
त्रांस नर्भगीत्भादन क्षांसूती						
শ্রীষ্ক বাব ধনিকলাল রার । লানাবাবে প্রাপ্ত।	ভাগদক্ষ					
	U P @	>b/° 				
		₹€₩)/•				
ডত্ত্বোধিনী পত্ৰিকা	• • •	852/0				
প্রকলয়	***	२०५००				
्यन्त्रन	**-	25/489/2				
গড়িত	• •	80010				
ত্রাহ্মার্থ গ্রন্থ প্রকাশের	<b>म्ल</b> ४न	>>>u•				
্লাকাণৰ্ম প্ৰচাৰ	•••	2007				
माजगां	•	229				
गवर्गरमणे रमविश्म बाह्य						
সমষ্টি		9.881/0				
वाशं।						
ৱোন্ধাসমাজ	***	encee				
তহুবোধিনা পত্ৰিকা		935 (9				
পুশুকালয়	A A	who				
्रेयखानव	10.44	282 42				
শাহিছত		236/9				
X.	্ হা <b>মাণ</b> শ্ৰ	W 040				
আমার্থ গ্রন্থ প্রকাশের মূলধন						
विकाशमा धारात	•					
माञ्चो 🗼	,					
मनष्टि		SANG.				
	4	क्रमाथ शिक्ष				
1.3	1.04	OF THE PARTY AND ADDRESS OF THE PARTY AND ADDR				



# ज्ञात्राधनी भाका

सद्धावाकक्षत्रिक्षात्राक्षाः । इति विश्व का स्वाति हिन्दं स्वयास्त्र स्वात् । स्वयं नित्यं ज्ञानसनमाः ज्ञित्र खालक्षान्यवयः स्वयं । हिन्दे स्वयं स्वयं ज्ञानसनमाः ज्ञित्र खालक्षान्यवयः स्वयं । हिन्दे स्वयं स्वय

## আদি প্রারশ্যাল।

**৩ আ**বন রবিকাব সাল সম্প**ংশী**ন।

चर १८ तम् विकटनम् १

शामिन जयातिः, राजधारकने "एक (एक-বেলান্**থ সভ্যম**পি ল কেনিং বেদীশ্ৰতী રાન**િં**") <u>"હથાત્મ</u> હાલકાર જાતિના ક બાલિત सम मार्थक रक्षा ना कार्रनाए भारत्य गर्मान् অন্থ উপতিত হয়।" প্রমায়াকে না जामित्र जामदा विमान गाँह, काभित्र छ।-भहा औरन भाषे ; खु अनि भ भए जन्मना बाना'त मदि दिल्ला लाउन। **खे**णामीदमेव नृतास **जाना न**दः , किस्रु 'लादनत বুস্থকে আপের বস্ত করিয়াজানা। শার বিদ্যা সাৎসারিক কার্য্য নির্স্তাহের জন্য কিন্তু ত্রমাবিদা আতার তৃত্তি-সাধনের জন্য। "রপরা ঝক্রেদোষজুর্কেদঃ সামবেদোহ থর্ক-(तमः निका करञ्जावतकतनः सिक्छिः छ्एँमा-জ্যোতিইমিতি অথ পরা যয়৷ তদক্রমবি-গ্রাতে।" জ্যোতিষ প্রভৃতি যত প্রকার লোকিক এবং প্রাকৃতিক বিদ্যা আছে সমস্তই অপরা বিদ্যা, যাহার ছারা অক্ষয় পুরুষকে वाना यात्र जाहारे शता विकृता।

क्कारनह व्यम् इतालाम । जाह व्याट वि.।। व्यक्तित भःभक्ष निकारम्ब ५८नव व्यक्ति। कतिहा पिट्ड लाहत, किछ औरतादनंत्र जादनंत्र भाषाका भिनेशिक भारत हो। यानिक निराम लात्नत-११ र शका यात्नत--यभाजीत रावारन व्यात्मह बिख्यामा, ल्याक्री क বিজ্ঞান নেখানে দল্য-স্তি গালশালার লহাচার আদিয়া দিয়ার নিবস্ত হয়। গ্রাক্তিক বিজ্ঞানকে, আপনার প্রাণ্যাত বিশয়ের পে-কোন সম্চার জিভাসা,করে, প্রাকৃতিক বিজ্ঞান ভাষার একটি কথাইও উত্ত দিতে পারে না—অর্দ্ধিস্টুট স্বরে উত্তর দিতে গিয়া কেবল আপনার অক্ষমনারই পরিচয় প্রাদান করে। বহির্বিষয়ের সংসর্গেই প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের মুখে শনুতি হয়, জ্ঞানের भःभार्ण जाहात सूर्य कथा कूछि न!—ठ।ह। মৃতপ্রায় হইয়া অবস্থিতি করে। এজন্য যাহার৷ প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের অভিযানে প্রকৃত পाछी, खकाविला छीरात्स्य हत्सन । त्या জ্ঞান অসীম ব্রক্ষাও ভেদ করিয়া প্রমাজার মহিমা অনলোকন করিতে চায়, প্রাকৃতিক বিজ্ঞান জানুকে দে দিকৈ তাকাইতে বারণ कुरत ; किन्छ छ्वान स्म रात्रग एटन ना। এই

জনাই জনে এবং বিজ্ঞানের মধেতিত বিবলি।
জ্ঞান চার জীবন এবং এটিত, প্রাকৃতিক বিভানি ভাগিলৈ আনিলা দেয় যুক্ত এবং বিষ্যাদ;
ভানি ভাগি কেমন করিয়া প্রহণ করিবে ?
ভানি-প্রীতি এক নিজে পেমন অনন্ত জীবনের
ভিংদ, জার এক নিজে পেমন অনন্ত জীবনের
জমত উপজিবিকা; জ্ঞান লি এটেই জালনের
জমত উপজিবিকা; জ্ঞান লি এটেই জালনের
করিবে, জনত খালাধানের উদ্দেশ চাঙ্গা
ফ্রিকাকেই সার ক্রিবের: ইই। জনভ্র।
ফ্রিকাকেই সার ক্রিবের: ইই। জনভ্র।

/অপর। বিসাণ মধ্যেও এমন সর হার . जा हि, बाहात किए। निमः भाग विभात भारत প্রিমাত হওল হাইটের পারে। কিন্তু দিল-√র(রুখ পণ্ডিরের। সে সকল দার অবলম র্মারয়া ফেলিতে প্রার-পণ চেই। করিখা थारकन्। विद्यारन्य विश्वताले १५५७, मङ्गन-ঠেবৰ, বিজ্ঞতার পানিচায়ক নির্ম সকল বিশ্বাস্থ্য জারে। পর রাজ্য সক্ষর্যাপী এব মুখ্যময় ভানময় সভা একং শক্তির জ,তল্লা-নান সাকা বলিয়া পরিগুঞীত ভালৈ, ভাষা মহে, ইনং-সর্ক্ষ ভাষ্যিক বিপান সেই अभूका, स भूमा कित्रद्र १ १५७ व श्रीयोद অপেনার তনে।গহরবে প্রবেশ প্রবিক পান ফলাইয়া আক্ষালন করিতে থাকে। কেত এব কেবল মাত্র অপরা বিনাবে অভুশানন অন-র্থের মূল; প্রবিধ্নন এবং সংবারের জনা বেমন অপরা বিদ্যা এয়োজনীয়, আত্মার জন্য (महेक्कल लव' विना अटहा**ज**नीय।

দকল বিদাহি একদিকে বেষন তত্ত্বন্দী, আর এক দিকে তেমনি কার্যায়খী। জ্যোন্তির বিদা। একদিকে আকাশব্যাপী প্রকাণ্ড তত্ত্ব দকল মন্দোমধ্যে আগাইয়া তোলে, আর একদিকে দার্যুদ্রিক নোকা চালনার নিয়োন্তিত হুইর বানিজ্যের সৌকর্যা দাগন করে। বন্যান বিদ্যা একদিকে যেমন জড়-জগতের

ধাত্-প্রকৃতির নিগুড় তত্ত্ব সকল আবিষ্ঠারী করে, আর একদিকে তেমনি ঔষধ নিশাণে নিয়োজিত হইয়া চিকিৎদা কার্যের সহায়তা করে। লোকে যেমন অনেক সাধা-সাধনা করে। উলাগানকে যবে ফিরাইয়া আনে, মনুষ্য সেইরূপ জ্ঞানের তত্ত্ব-সকলকে বাহির হটকে ঘরে আনিয়া তাহাকে সংসার-কার্যে

অপর। বিদার ন্যাস পরা বিদ্যাও এক-দিতে ৩ হন্ধী আর একদিকে কা**র্য্যমুখী। পর!** বিদান ভত্ত-গ্রাম সংশ আমাদের দেশে ব্ৰহ্মপ্ৰান বানয়া প্ৰশিদ্ধ প্ৰবং ভাছার কাৰ্য্য-এপান অংশ থাবালে যোগ বলিয়া ভাষিত। আমাদেশ ল'ভালাভ, ইচ্ছাানজা, রাগ-ছের ইড়বাদি মন্ত্রের প্রতি উদামান হইয়া জ্ঞা-নের আলোচনা করিলে—ভদ্ধ কেবল স-তেরে জন্য সভারে অসুনীসন ক্রিলে— মতের ১৯**৬ আমাদের প্রভারের দ**ূর্ভা ১য় । নির্পেক ব্যক্তির সাক্ষা যেমন সম-বিদ্য প্রত্যানভা**ত্তন, নিরপেক্ষ জ্ঞানের ক**থা নেইজগ সমাধক শ্রেষ্ট্রনা কিন্তু জ্বানের. কথাতে হাদি আয়াদের কোন কার্যা না দর্শে, জবে ভাগতে আহাদের প্রভার দূর **হইলেই** दा कि जात मा ५६ ति रे कि। अरे कना, গ্রাভিকে গেমন ঘর হইতে ক্রমে ক্রমে বাহিরে বিস্তার করা আর্থশ্যক, জ্ঞানকে তেম্নি বাহির হুইতে জনে জমে ঘরে আনা আবশাক। আমাদের পূর্বভিন ঋষিতা **সূর্যা** চল্র মেগ বিত্যাৎ অগ্নি বারু নদী সমুদ্র পর্বত অন্তর্নাক্ষ পুথিবী হইতে পরব্রেক্সা-তত্ত্ব আছ রণ করিয়া অবশেষে **আত্মার অন্তরতন<sup>্ত</sup>্রেন**্ড নিকেতন সেই পর্য-তত্ত্বে অধিষ্ঠানের ভূন্য উৎপর্গ করিয়া দিয়াছিলেন। সভ্যের শ্বৃতি थान्यातक पृष् कतियात चना नितरशक जाएक ब्डानीट्लाइना कता रायन चार्तनाक, दर्जनीन मर्जाटक घटत भाहेगात कना किन्द्रक्तर्गत

স্থাকে দিয়া সভাকে স্থায়ার অভান্তরে ধরিয়া জীক আবশাক প্রকৃত পকে, পের্যাত্ম হেম্ম বাহিরে আছেন, তেমনি তিনি আমাদের আত্মার অভান্তরেও বর্জমান আছেন; ক্লিন্ত প্রতির অবিদায়ানে খবের লোকও বাহিরের হইয়া যায়, প্রীতির আক-र्शत कार्यितंत्र त्नाकं अवस्ततः यदेशः निष्धः । প্রতি অপ্রতিই অন্তর-বাহিবের নির্মণান-কভা ৷ প্রনালা যাহার যত প্রিয় ভাছার ্তত নিকটে গড়ধান, সংধার সত অঞিয় তাকা হটতে তত দরে বর্তুগান। জ্ঞান সাধ রণতঃ তানতেতে যে, প্রথান্তা সকলেরই আন্তরতম আরা, প্রেন বিশেষ করিয়া বলি-তেছে সে, যাহার ভিনি প্রিয়ত্ম ভাঁহারই 🐗তান বছরতম। অত এব (এ.মের পথই) পরমাত্তক অন্তরে আনিবার একমাত্র পথ। য়াবিচ নির্পেক জ্ঞানের ক্যায় বিশাস করিব। है हा आगता स्थित कानिएक छि (य, शत्रभाञा অন্ত্রেরে আত্মার অভ্যন্তরে পর্তথান আছেন, তाहा हरेता ७ १ व्यान १ रहे छ। भारत १४, लिनि जाशारपत निक्षे इहेट मरत विह-য়াছেন; 'শ্বত এব জ্ঞানের ব্রুব সতেরে প্রতি মনকে সেইরূপে নিবিষ্ট করা আবশাক— ঘাহাতে দেই সত্যের আকর্ষণ আত্মার অভ-বতম প্রাদেশ পর্যুক্ত পৌছিতে পাবে , যা-হাতে আমাদের স্থানমল' ভাঁতি প্রত্থান করিয়া দেই জীবস্ত সভাকে আলিসন-পাশে বন্ধ করিতে পারে।

ত্রজ্ঞানের অনুশীলন পরমাত্মার প্রতি
ক্রমাদের প্রভারকে অচলের ন্যায় দৃঢ় করে,
এই তাহার মহৎ ফুল; অধ্যাত্ম-যোগ আভাকে পরমাত্মার সহিত প্রেম বন্ধনে আবদ্ধ
করিয়া আত্মার, আনন্দের উৎস উৎসাহিত
করিয়া দেয় ও অধ্যার সমস্ত অভ্যাব, মোচন
করে, এই তাহার মঙ্গন্ময় ফল; একটিকে
ভাজিয়া আর একটি স্রচাক রূপে সম্পান হ-

ইতে পার্বে না—উভয়ের সোগেই উলয়ে । সর্ব্যাঙ্গ-স্থানর হয়। জোনের প্রতার মূল্যন ই স্কল্প, এবং প্রেমের গোলান-প্রানা আয়-বয়ে স্কল্প, উভয়ের কোন টিই উল্লেক্সীয় নহে।

हिशादयमन क्षत्र मध्य दा, हासहरू ह আছা অপূর্ব, ইহাও তেমনি ধ্ব সভা যে, পর্ণালা পরিপূর্ব ; ভাহা সদি হইল করে আনাদের সাধন্য-কর্মে যে কি ভাছা তবে जागारनत निक्छे चरणाहत शांक्रिक भारा भाः; (मर्थे भारित्र्वे मंफ्रनामक भवगाः। मिनि वागामित छ। दन अन्तर्राप अन्तरमान হুইতেছেন ভাষার সহিত আমাদের আলাব মশ্বন্ধ নিবৃদ্ধ কর।, তাঁহার ওয়ত প্রাদ্ধ বিন্দু গারা আছার দ্বস্তু শুলাব মোচন कवा—इंशाई जागारमंत्र शहरा। नेददाः রাধনা এই সাধনার নিয়মিত প্রবাহ, কড়বা অনুষ্ঠান এই দাধনাৰ বিধরণ-দেচ্, তবং অধ্যাত্ম যোগ এ**ট্র-সা**ধনার ঘলাভূত প্রোভঃ-সঙ্গম। আমাদের ভাগো যদি ব্যন্ত এরপ শুভযোগ উপস্থিত হয় যে, জামাদের প্রতায় এবং স্পৃহা, জ্ঞান এবং (প্রথা, মন ভবং প্রাণ সমস্তই খয়ত-দাগর গরমাত্রাতে এনতানে সাম্মালত হইয়াছে—তাবৈ সেই ভ =-যোশই প্রস্কৃত অধ্যক্তি গোল। অগ্যাত্র-যোগের স্থ্নিস্তন শান্তি এবং স্তকোমল প্রেয়ে অবগাহন ৰুবিয়া সাদক যথন উপান করেন, তথ্য তিনি ঈশর-প্রমাদে পাপতাপ হটতে বিমূক্ত হইয়া, মৃতন চক্ষু – নৃতন আনন্দ্ৰতন জীবন পাইয়া, আপাদ ম-क्षक मताशाष्ट्राखंड गूठन इहेशे, उथान क-রেন; তথন

"স মোদতে নোদনীকং হি বুকা। তরতি শোকং তরাত পাপ্যানং গুহা-এছিভোনিমকোহসূতে। ভবতি।
তিনি আনন্দনীয় পরমাঝাকে াভ করিয়া
আনন্দিত হয়েন, তিনি শোকু হইতে উত্তীর্ণ

হয়েন, তিনি পাগ হুইচে উত্তীর্ণ হয়েন, এবং জনত্ত প্রতি-সম্পায় হুইচে বিমৃক্ত হুইয়া অমূত হয়েন।"

হে পরমুজন! ভূমি আখালের মগলের धक्यां भूमानाव,— श्व क्लिक्ट भरत वर्क्यान, सङ्ग्लित भट्टा वर्ष्यान, सहरूत स्था नर्लगान—मकन गहार र, मकल शहिरह, সকল কার্থোতে ৫৩খোর ২, ১০ ব্রুদ্ধে নাম্প্ মৃত্তি ভিতর ইইতে এলাশ পাইলা উঠি-**्करह, मभाकु** क्षात्त्रत व्यापतम् काशास्य গোপন করিতে পরাভব যানিতেছে ৷ তেও मात भोन्भना याद्याक प्यानादका प्राप्ता र्यार्थ करत, (सप्टे अविभन (टाइएन एटम चा-भार्षित कालरह उध्यक्त करिता १५७: इसि আমাদের অন্তরে আনিত ত হটারা আমাদের ুপুজা গ্রহণ কর, আমবা ১ গ্রামার চরকে ব্রেষ্ট बन ममर्थन कतिया जना भाषक कति ; एपि কুপ। কলি। ভক্ত হাধ্যের এই ৪,৫ ন। পর্ন क्द्र।

ওঁ এক**মে**বাদিতীয়া।

#### দর্শন-সংহিত।।

এল সংহিত্যর তেন্টি মুখ্য হাও।

দর্শন-সংহিতা তিন্টি মুখা খতে বিভক্তি!
এই যে ভাগ-বিনাস ইহান ব্যান্তিমতা এবং
নাবহার-সোক্ষা কেবল নতে কিন্তু ইহান অবশান্তাৰিতা এবং বিকল্ল-শূন্যতা প্রাদর্শনের
জন্য কিঞ্চিৎ ব্যাখার প্রয়োজন। তড়-জ্বানক্ষেত্রে কিছুই কাহারে। স্বেড্রাধীন বিবেচনার
উপরে ছাড়িয়া দেওয়া হইতে পারে না।
জিজ্ঞান্তর সমুদায় বিন্যান-ব্যবস্থা, এমন কি
প্রত্যেক পদক্ষেপ, অখণ্ডনীয় নিয়মের বশবন্ধী হওয়া চাই—কিছুই মদ্চ্ছা-মূলক হইলে
চলিবে না। সে বিন্যান-ব্যবস্থা লক্ষ্য-বস্তুর
নিজ্ঞ-কর্তুক নিয়নিত এবং প্রবিভিত্ত হুইনে,

লক্ষরিতার দৃষ্টি-পদ্ধতি তাহার ভূপর ছ-স্তক্ষেপ করিতে পারিবে ন। ত্রুনা

\* বেশ্বপ তার নির্গালী লক্ষ্য বস্তুর উপরে নিজন কাব, বেদার ধশনে ভাহা বস্তুতন্ত্র ব্যায়া উক্ত হল্যাচে, দলা; —

"নতুবস্থ এবং নৈৰমন্তি নাৰ্কীতি বা বিকল্পাতে। বিদ্যালয় প্ৰামন্ত্ৰাপেক্ষা, নাৰু বৰ্জ-মাণাপ্সা-জ্ঞানং প্ৰথম ব্ৰাপেক্ষা; কিং ভৰ্মি প্ৰতেখনেম তথা লাগ জানো একাম্মন্ ছাণ্ডা প্ৰামোধানা। বেভি ভ্ৰা জ্ঞান নবভি। ভ্ৰাপক্ষো বা হলোবেভি মিখ্যা জ্ঞান, কা চৰবভি হজ্ঞানং, ব্যৱস্থান। এ তুভা ব্যৱবিশ্যান প্ৰামান, ব্যৱস্থান হ্ৰাণ্ডাৰ, —

বস্তাকি তি শাহার নাম্" কিন্তা শান্ত বলিরী বিক্রিণ ব্ না । প্রক্রনা প্রতাব্তিকে (ল ) প্রতাব্তিক্রিণ ব্ না । প্রক্রনা প্রতাব্তিকে (ল ) প্রতাব্তিক্রেণ হৈ না । প্রক্রনা প্রতাব্তিকে (ল ) প্রতাব্তিক্রেণ হৈ । প্রক্রাক্রিকে প্রক্রণ বলির করে প্রক্রিণ করে । প্রক্রেশ বলির করে প্রক্রিণ করে । প্রক্রিণ করিয়া করিয়া করে। তালে নাম্ম বল্লির বা করে। তালে নাম্ম বলির বা করে। বলির বিলির ক্রিণ বিলির ক্রিণ বিল্লের বিলর বিল্লের বিলর বলির বিল্লের বিলর বিল্লের বিল্লের বিলর বলির বিল্লের বিলর বলির বিল্লের বিলর বিল্লের বিলর বিল্লের বিল্লে

বস্ধাত্র অধার অসেন্দ্রের **যাস্থা পুরুর্বের** रेख्निम भर क्षाता वर्षावर्ष diagorsonal, i এন মান্তাল এই জাল-শ্রের **আ**ত্তন পর্ম স্থাপট্ট ५ माळाड्रम करवरा ८५ अझा ८५४ व्यवस्था कांत्र। फिन्नारकत्र सन् राघित अभारत (नंदनन्त)। उक्क (स्राप्त ना ালি এ বি জাল প্রাথার ভাষেক্তর যেম্ব স্থাটন ঘতর--৭:১১ গ্রন্থ ইডার্লির মতের প্রাক্তি সেন্দ্রপ শক্ষণ ।। তর্গের্ নায় (তেনেম তেন্ত্র দেকের আগেছা আক 至二十一年 对那一个时间 网络对哪中 麥布斯 বিঃ: বি ভিক্সপুৰ্ব পাত্ৰ তথ্য নিৰূপৰ **।** বাজাপীয় **বৈ**ৰণ্ডিক ভালার সাহত **পরিচিত অ**ং ক্ষেত্ৰ, ভাইটাল কো এইমান বলিখেই ভাইারা ব্রিডে अधावदबन दर् अङ्गांक - भा Universal proposition. াক না সাক্ষতভামিক এক নিবিক্স সিদ্ধা**ন্ত।** ভট্জ রহাত্যার সাক্ষতেমিক সভোরতা প্রাতপক্ষ पार्क-शंख : किंख इत्ताकीर र शहारक वृद्ध Paraccoular proposition— মর্থার প্রভাত বা মাংশিক एक याक्षा (कान परण का थाएँ। --,क'न करण वा थाएँ। না –তাহার প্রাতপক্ষ **স্থাব্যা** গড়ে নহে। "কোন ्यान मध्या वृक्ष" अहै क्या एउं "(काम काम -मध्या दक्ष नरह" धारे कथा—ध ध्र कथा शतलारतंत्र विकासी नरह, देवन ना जुड़ेहें अक मोल पड़ा हहेदात , शाक दक्त नामा नाइ। **किन्दु "बहुरा जी**व-वि**टम्ब**" धार करा, वादर "मञ्जा कीवि नाहर खह कथा, ब प्र कथा शतम्मरतत बिर्ताधी। ेे बना "मध्या सीव" रेश त्यमन मध्या विवयक अकृष्टि छन्। "मध्या तुक" देश राजार नरह : ८४न ना दनदारक विकास नहः त-महरा प्रा करेला ७ व्हेल ब्रोहर के किए के लिए ए ही লোকিক মাত্ৰ, অৰ্থাৎ লোকে জাহাৰিখাকে ভয় ৰুলিয়া

এখানে যেরপ ভাগ-বিনাদের প্রন্থা হই-ভেছে তাছার ম্থা অনুয়বটির প্রতি দৃষ্টি করিলে শান্ত দেবিতে পাওয়া যাইবে সে, তাহা ভিছ্পতন্তির নাই; তবে তাছার বি-শেষ-বিশেষ অস-প্রতাল পরবর্তী ভত্তবিং-দিগের হত্তে রূপান্তর প্রাপ্ত হইলেও হইতে পারে—হয় হউন্ তাছাতে কিছুই আইগো ষায় না। কিন্তু বর্মান গরিছেদে টি বহুতর ব্যাখ্যা-সাপেক্ষ। নিক্ষের নম্নটি পরিছেদে ইছাই স্বিশেষ বিবরণ আনুত্রপিক প্রকা-শিত হইল; তদ্তে এই আরের সাধারণ মণ্ড বিভাগ এবং ভাছার ক্রম-প্রতি স্পার্থ-রূপে বৃথিতে পারা বাইবে।

অত্তিত প্র নে-কর, কিন্তু প্রকৃত পক্ষে ত|হা

মূলত মু-কুকোন চরমে বাবিষ্ণত হওগা মন্দ্রে বাহা ইতিগুর্বে বলা হইপাছে তা-

भागिता व्या एके भगाउ, -केशन अक्टि हुई।छ--জড়পিত মাত্রেরই ওজর আছে; পুলিনীর কেক্র-জ্ঞানে কৌন বঁছর গুরুও থাকিবে পারে না (অর্থাই ्षे तंश्वत कीत-दकता श्रामितीय एका मा वर्गाम कर्मा र इस इस वंद्वत एकाइ शांकिएक भारत मान्यशा । इहा । । इहा । । इहा সিন্ধার। অতএব্ভাষন ক্রি.৬ গ্রেন শহর গ্রে-নাত্রেরই গুক্ত ক্রছে" ইহা ভঙ্গলের বারে বহতে **भाइत नार्गा इस् क्रिन्द समावधी** एवन दूरवा श्रम खडकन व्यक्तिक क्टेट्यू नीरित का ने आहे. विचार्ड व्यव्यक्ति १००० महिमन्न बाठा, क्वन मा भूलाई देशन विकल ५००० न। ्य ङ्गात्नव विच्यक् में ख्टत आसारमर्वे भाषास्थातः **छाद। छवळान-भएम**ा वाठा नरह। शतभाकारी भ-ভোর জান -যাহার কোন কালেই একটুও নত চড় হঠতে পারে না—ভাহাই তব ক্লান, পুসরাং ভাষ্ পুৰুষ-তন্ত্ৰ লহে (অক্ট্ৰুৎ পুক্ষের ইচ্ছাধান নংহ) কিন্তু त्र जित्र। स्वानीम् प्रभीय उदावर क्षान् अक्षे विस्मय कतिया धामनेन कतियाधन (य, उत्रखान वज्र-**छत्र, अथवा** गांक। धंकर कथा-छ इङ्गान **आ**रशोक्ट्यत्र। ः कान्डे এইটি निर्मिष क्रिक्क धानन्न क्रिक्सिक्न दयः उद्यान मार्थः जीमक व्यवः व्यवभाषां नी। वर्तमान श्राप्त वित्तव कविश्रा दिवादना इटेशाइ त्य, उच्चकारनव প্রতিপক স্ববিধাত-গর্ত্ত। একই কথা। তম্ব-ক্লান্-मरमन म्था वर्ष असम म्मड न्याटक भाना सहरतः करवत (अर्थाए अवगाषायी नाका जोतिक आभी नाका এবং নিবিকর সভ্যের) জ্ঞানই তত্ত্তান (Reason); ध्वर के व्यक्तांत्र मठा व नात्त्व डिशनिष्ठे इस डोड्स्ट्र দৰ্শন শান্ত বা তক্ত লান শান্ত (Metaphysics) ক

हाटि तुकाई यहिट शह त्य, च म॰ हिला असान একটি বিজ্ঞান-ব্যাপার, মাহা ই ইউন্টা-পিট সন্মুখে করিয়া আমানে বিবেই উপ্ विष्ठ इत। धाँत महत्त कर्मित १ हेर्क------कां अखंगेतक अक्षण के विशा श्राध्या प्राप्त যাহাতে ভাহার গোলা পিট আন্তেত স मुत्थ षांग्रेता। कि तम छन्छ। शिष्ठे - मान প্রথমেই, আমানের সন্মুখে উপস্থিত 😗 खवः शा**शतं** छन्दे। छत्र । वाषा जावनातः ? প্রধানাকারে কলিতে হটলে মেটি ভেট গে—এল কি ও সরপতঃ এটি চরম এখা किस खागाएमत काइन देश उद्द-कारन প্রথম প্রধান ই প্রেম্মর অব্যবহৃত উত্তর যাহা প্লাক্ষরিতে ঠোলিয়া ফেলিলা সম্প্র কণ্ডে-টি উদ্য ইয়া কেয়, ভাষা এই ;—সাম্ আছে ভাষাই মত। । ত প্ৰাম্মাক্রপে আছে তাংটি মতা। ইহাতে তার সংশ্য नाहें। ७३ छें छ त मना यात अकि धन টানিয়া আনে, বে-**টি** এই,—কিন্তু কি খাছে ৷ এ এশ আপাততঃ, স্টোক-বাক্য ভিঃ, প্রক্ত উত্তৰ পাইতে পারে না। এ में छदाद धराता भाषा जातम महे। हेहातक অবসা প্রাক্ষা করিতে ইইবে। ভ্রোল-যালে পিশ্চাং-জাইনা প্র**দেশের না**য়ে ভাপা-ততঃ ইহাকে সন্মুখ হইতে ঘুরাইয়া রাখিতে इंट्रेल, खपवा भ•ाद भतित्वय भातिक उत्त নাম আপাততঃ ইহাকে খুলিয়া রাখিতে

শ অথিৎ সত্তাই দত্যের প্রিচারক। সংক্রিং না থাহা চিরকান বভ্নান। সত্তা কি ? না চিরুক্তন বভ্নানতা। বাহা সমাৰ্ক্তপে আছে—অথাং বাহা কোন কালে "নাই" হইবার নহে, তাহাই সনাক সতা। আমাদের শাল অনুসারে-৪ মতা (কি না নিতা অন্তিজ্ব) সত্যের প্রিচম-চিক্ত। সত্যা কি । এ প্রশ্ন এখন ঠেলিয়া রাখিয়া—শত্তা কি — এই প্রনের্গ্র শ্লীমাংসার প্রের্ভ হওয়া বিধেয়। সতা হ'চে ধর্মা—সত্তা হ'চে তাহার ধর্মা, লক্ষা বস্তুর ধর্মা—নিজপুণই আনের প্রথম কার্যা; এ কলা, সত্তা কি — ইহাই প্রথম জিল্পাসা,—ইহার মীমাংসার উপরেই "সত্য কি" ইহার মীমাংসার

37 **48 6 66** 

ফইবে। কিন্তু এই প্রশ্নের উথাপন। তত্ত্ব-জ্ঞানের একটি স্থাবিস্তীর্ণ থণ্ড জানিয়া দাঁড় করাইতেছে, দে খণ্ডটির উদ্দেশ্য হ'চে—বাস্তবিক সতা কি—ননীচীন অস্তিভ কি—তাহার দিছাস্ত-নীমাংসা। এ খণ্ডটি অস্তি-তত্ত্ব-বিষয়ক, অর্থাং প্রায়ত গক্ষে আছে কি

জ্ঞান-তত্ত্ব স্বভাবতং ঘদিও ১৫ম, কিন ওওও:
তাহাই প্রথম ; অত্তর কাফাজে প্রথম হঠতে
স্মান্ধ সুরাইয়া আনিতি হইবে।

ত ভুদ্জানের গোড়ার কাফ এই--যেগন ইতিপুরের বলা ইইয়াছে নগীমাংসা ৬ প্রের সমস্ত দলবলকে এরপ করিলা উন্টাইলা রাখা, যাহাতে প্রথমটি চর্মে পড়ে ও চরমটি প্রথমে আইনে; এটি করিতে হইলে এগনি সব উত্তর পুঁজিয়া থাছির করা আবশাকে, যাগ শ্রন্থ গুলির মামাংসায় আপাত্তঃ হত্তকেপ না করিয়, ভাষাদিগকে দুরে ঠেলিয়া রাখিতে পারে। ঘুর্ণন-গতিকে- -কভারতঃ যাহ। চরমে পড়িয়া থাকে ভাগা গণন এথমে আনীত হ-ইবে, এবং স্বভাবতঃ যাহা ভাগমে আনে ভাহা চর্মে নিক্তিপ্ত হউদে--তথনই ভাহাদেন মীমালসার সময় উপস্থিত হইলে। কালণ, গে-সকল এশ্র মধ্রে বিচাম্য ভাইরো সভন্ত, ও হাহারা সভাবতঃ তত্তা আমিরা উপস্থিত হয় ভাছার। সভন্তা; হুগ্রের নামে এইরূপ সাধ্য যে, শেহোক্তের মারাংসার সমুদায় মূল উপাদান পুরেবিজের মধ্যে অন্তভূতি দ্বিয়াছে; কাজেই, পূর্বোজের বিচার-কার্যা অব্রে চুকাইয়া না দিয়া শেষোক্ত-গুরুকে 'স্কুবৈ আদিতে দেওয়া হইতে পারে না। ক্রিক উত্তর এরপ ছওয়া চাই বৈ এক-িকে যেনন ভাই। পূর্ব্ব এখাকে প্রতিহত করেবে, আর-এক দ্লিকে তেগালি শুরুন একটি श्राद्यां मन्त्र प्रान्यन विद्या प्राप्त छ । इंद्रीया थना द्वीन सा वा थिया दे

पृक्षेत्र-चन, यथी; - ८ श्रेष्टि मध्दकर्ण करें त्यं, কি আছে ? আর, ভাছাকে ঠেলিয়া রা**ণিবার**্ উত্তর এই-যাহা জ্ঞানে বিদ্যমান ভাহাই আছে। কিন্তু এ উ্তর একদিকে বেমন অস্তি-তত্ত্রক সন্মুথ হইতে সরাইয়া দেয়, অমনি আর এক দিকে নৃতন একটি প্রশ্ন (বা ভারাংশ) আমাদের সম্মুখে আনিয়া উপস্থিত ক'র: দেটি এই, জ্ঞানে কি বিদ্যমান আছে ? জ্ঞান কি দুৰ্গ এইকপ গুজিষা তত্তজানের আর একটি সম্প্র খণ্ড আনিয়া দাঁড় করায়; कटन ७३थारभटे पूर्वत्मव श्रांत्रमाधि ; ज-তাতঃ, ছোয় একং জ্ঞান সম্বনায় প্রথম প্রশ্ন কি ভাষা বাঁজয়া পাইলেই আমরা তত্ত্-জ্ঞানের ৩.ফুড আরম্ভ-সান - নিকট্ডন জি-कामा विरात - ३ एक शाहा अहे अखि खान-তেন্ত্রের মূল নিস্ম-গুলির অনুসন্ধানে এবং বা্থণনে বাংপুত্র। ভাহাতে একদিকে এইরূপ গ্রতিপয় ইইয়ালে যে, জ্ঞা**নের যে-গুলি** অবশাস্থানী নিয়ম, মে গুলি সমস্ত জ্ঞানেরই নিয়ম, সমস্ত চিন্তারই নিয়ম; আর-এক দিকে এইরূপ প্রতিপন্ন হইয়াছে যে, জ্ঞানের যে-হাল আগন্তক নিয়ম, সে-গুলি গুল্ক কেবল जानाद्रण्डर स्वाटनव निषय-जामाद्रप्रवर्धे वि-ভার নিয়ম। বিজ্ঞান-শাস্ত্রের বর্ত্তমান বিভাগ ভলান-তত্ত্ব বালয়া প্রায়েছ; অন্তিতত্ত্ব বেমন অন্তিত্বের সিদ্ধান্ত-নির্ণায়ক, জ্ঞান-তত্ত্ব সেই-রূপ জ্ঞানের সিদ্ধান্ত-নির্ণায়ক। এবং ভেত্তয় কি, এক কণায় – জ্ঞান কি, এই 🕾 **এখ্রের এত্নত্তর প্রদান ইহার\*কার্যা।** 

<sup>\*</sup> সতা চলম লকা; ভাষার অনুসন্ধানে আপাতভঃ
কাত হুগুলা, সভাের ভাল বাহা স্থামানের অনুভল-গ্রা
কি না সন্তা—ভাগার প্রতি মন্যোনিবেশ করা কর্ত্রা;
আবার সন্তার অনুসন্ধানে আলিভিভঃ কাত হুইয়া,
সন্তার সাকী বাহা আমানের জানে প্রকাশমান—
কি না জান প্রহং—ভাগার প্রতি সন্মোনিকেশ করা
কর্ত্রা। মতএব, সতা অপেকা সন্তা এবং স্থা
অপেকা রানি আমানের জানের নিক্রিকা প্রকাশ

খণ্ডটি যে-পর্যান্ত না সমাক্রপে বিচারিত হইতেছে, সে-পর্যান্ত অন্তি-তত্ত্বের নিকটে ঘাইতে—এমন কি তাহার দিক্ শানে তাকা-ইতে—নিষ্ধে।

জ্ঞান তত্ত্ব **এবং অভি-তত্ত্ব** এই ছইটিই তত্তজানের মুখ্য বণ্ড।

জ্ঞান তত্ত্ব এবং অস্তি-তত্ত্ব এই সুইটিই তবে তত্ত্ব-জ্ঞানের প্রধান চুইটি শাখা। ইহা স্পাওঁই বৃদ্ধিকে পারা ষাইতেছে যে, কি আমরা জানি-এটি যতক্ষণ না আমবা সির করিতে পারিলেছি, অথবা সাহা একই কথা— বতক্ষণ না আমিরা সমাক্ তল্ল-স্থায় জ্ঞান-তত্বে সমস্য বিবরণ নিঃশোষত ক্রারিতে পারিতেছিঃ ভতক্ষণ - কি আছে—ইহার আমাংসায় আমাদের অপিকার জন্মিতে পারে না, অথবা যাকা একই কথা—ভেডকণ আমরা অস্তি-তত্ত্বে প্রবেশ পাইতে পারি না। তখনও অস্তি-তত্ত্বে প্রবেশ পাই কিনা-তাহাও সন্দেহ। · ধাহাই হউক্ না—জ্ঞান-ত**ে**ত্ব মানাংসার দার অভি<mark>বাহন না</mark> করিয়া আ-মরা সমীচান অন্তি-ভত্তে পোঁছিতে পারি না। ক্ষারণ, কি আছে ভাহা অত্রে আমরা জানিব—ভবে তো ভাহা কথায় ব্যক্ত করিব, তাহা জানিতে অন্তঃ চেঙ্টা করা চাই---নহিলে আমরা ভাষা বলিতে অধিকারী হই না; আবার যতক্ষণ আমরা— ভিশনা কাহাকে বলে, জ্ঞান ক্লি, জ্ঞান-ক্রিয়া এবং े ভের-বিষয় কি, এই প্রাক্ পরীকা এবং মীমাংদা করিয়া উঠিতে না পারিতেছি, ততক্ত্ব ক আছে তাহা আমরা জা-निए ७ विकाती हहें सा। এই मत श्रास्त्र বে প্ৰয়ন্ত না উত্তৰ খুঁজিয়া পাওয়া য়াই-তেছে, দেপৰ্যাস্ত—একথা বলা কোন কাৰ্যো-करें नटह रव, ब्ढाटन बाहा विलुमान छाहाहे স্থাক্ অন্তিত্ব।

জ্ঞান তত্ত্ব কড়ঃ অভি-তত্ত্বের প্রবেশ-দার হইটের পারে না কেন।

কিন্তু জ্ঞান-তত্ত্বর প্রশ্ন মী যাং গা, সমাপ্ত হইবার পরে ও—জ্ঞানের সমস্ত নিয়ম জানিক্ত এবং প্রদানিত হইবার পরে ও—কি আছে এই প্রশ্ন হত্তে লইতে এবং তাহার মীমাংসা করিতে আমবা কি এব জিলও সেনী অধিকার প্রাপ্ত হই পু একটু বেনী অধিকার প্রাপ্ত হই পু একটু বেনী আধিকার প্রাপ্ত হই বটে,—কিন্তু তাহার আমি একটি কথা আছে, কথাটি দহন্দ নহে, তাহা ছাল্য বত্ত্বর প্রশা দুর্লুজ্যা প্রাণ্টীর দিয়া গ্রেষ্টি গ্রাণ্ডাত্তে, দেনটি এই ;—

ছইকে প্রব --ধ্যান্থ আফাদের জানের অংগাচর তাহাই। সমাক জান্ত্যা

এরপ ছওয়া কিছুই বিচিত্ন নহে খে, शहा आमारनत क्वारनते करणाच्य लाहारे সমাক্ অস্তিয়। আমাদের অভ্যান আতা-ত্তিক প্রাণাড়—আমাদের জ্ঞানু-অপেকা ভাষা वल-भविधारम विल्डीमी। इहीरक जात का-হারে হিক্তি ষ্ইতে পারে না ত জ্ঞে-তত্ত যদি আমাদের জ্ঞানের দীমার অভা-ন্ত্রে থাকে, তবে আমর। কানে তত্তকে হাতে পাইনেই অন্তি-ভত্তকেও মেই সঙ্গে হাতে পাই , ভাগুরের অভান্তরে যদি রব্ধ থাকে, তবে ভাঙার আমাদের হস্তগত হইলেই রত্বও আমারের হস্তগত হয়; কিন্তু অন্তি-তত্ত্বদি আমীদের জ্ঞানের সীমার অভ্যন্তরে মূলেই অবস্থিতি না করে, তাহা হইলে জান-তত্ত্ব শুনা-ভাণ্ডার মাত্র – তাহা আমা-**रात्र रुखभे इंटेलि**रे वाकि, जात, ना रुए**लिरे** . বাকি। মনে কর, হতানের অর্থ, তাহার যাহা নহিলে হয়, তাহার সীমা, উদ্দেশ্য এবং ক্মতা, সমস্তই আমরা হির-হার করিয়া निया चाहि, छाहा हरेला अक्रेल हरेट उ পারে হইতে পারে কেন হওয়াই মন্তব (ए, म्याक् व्यक्तिक व्यामादमत् काटनत मीमा

17 TH 8 1

অভিক্রম করিয়া আর্বাদের ব্যক্তানের প্রাচীন বৈর সাড়ালে পলাইয়া কহিয়াছে। কি আছে এ সম্বন্ধে হয় ে। আয়য়া কিছুই জানি না শ্রভরাং বিভ্ই ইলিটেড পারি না। জামাদের প্রতামর হইবার পথে এটি একটি ঘোরতর প্রতিবন্ধক। ফাল এই তিই এয়াবংকাল সমস্ত ভাই-জিজাফাকে ধরালাহা করিয়া আদিতেছে; অস্তিকের আর্কা পর্যান্ত হলাক প্রতাম করিয়া আদিতেছে; অস্তিকের আর্কা পর্যান্ত হলাক প্রতাম করিয়া আদিতেছে; অস্তিকের আর্কা পর্যান্ত ইয়াজ্যন করা পরাম্বনিস্ত । অত্তাম এ ফ্রান্ত হলাক প্রান্ত হলাক প্রতাম করা পরাম্বনিস্ত । অত্তাম এ ফ্রান্ত করা পরাম্বনিস্ত । অত্তাম এ

এই বিষেচনা জ্ঞানতত্ত্ব নাম্ক জড় জলন। স্থার-একটি ৭৬ আনিবা নিতেক।

আমাদের অজ্ঞানের অভিত্ত ততাাক করিয়া অথবা ভাষার প্রতি চক্ষু নিধানন করিয়া শহে, কিন্তু ভাষার সহিত গাদাতে চোখোচ্যোথ করিয়া, ঐ দুন্তর ভ্রাত্তবদ্ধ ক অভিক্রম করিতে হইবে; আর চোখোচোধি কৰিবাৰ এক ষা\ উপায় তা এই,- ভাহাৰ প্রাচার অভাতরে खरूमकान ६,८%। भार অজ্ঞান কি –িক বিষয়ে আমানে, জ্ঞান নাই रा उठान धाविए आरत ना- रें: अंतिका করিয়া দেখা এবং স্থিদ্ধরতেশ প্রেশ্বরণ করা এইরপে, সংগুর্ন বুতন একটা বিষয়ের অ্রুসন্ধান আমানের ইত্তে আসিয়। পড়িতেছে; ইহার নাম অজ্ঞান-তত্ত্ব এবং ইহাতেই এই গ্রন্থের ম্যাখও প্রাক্ষিত। अहे अनुगन्नारनत कन मर्श्कात \यथाचीरमा সন্বিশিত হইয়াছে।

এখন অফি-তাৰর প্রশ্ন বিশেচিত হইটে বারে।

এখন আমাদের গন্তব্য পথ আমাদের স্থান

ন্মুবে দিবা পরিকার এবং সোজ। দেখা দিতেছে। জ্ঞানে কি জানা যাইতে পারে—জ্ঞানতত্ত্ব তাহা নির্দ্ধারণ করিবে। জ্ঞানে কি অজ্ঞাত

থাকিতে পা**র্ট্যে—অজ্ঞান** তত্ত্ব তাহা নি**র্দ্ধা**রণ ক্রিবে। <sup>\*</sup>স্মীচীন অন্ডিয় – হয় আনাদের खाद्न विकासाम—नश खासादकत खत्ने खः বিদ্যমান, সুমের এক; স্থতরাং হয় তাহা জ্ঞান-তত্ত্বের চরণ নিদ্ধাত্তের সহিত্ত-নয় তাজোন-ওত্ত্বের চরম শিদ্ধান্তের সহিত—সম্-ভানে মি লিয়া যাইবে (পরে **আমরা** প্রামাণ করিব যে: জান-্ত ও এবং অজ্ঞান-তত্ত্ব এই চুই বিপ্ রীত প্রেক্ত এক <mark>তমের আপ্রয় ভিন্ন গতান্তর</mark> নাই)। । । র র সচি জান-ভত্ন এবং অক্সান-ভত্ত উত্তেখনই চলম ভিজান্ত একই হইয়া দঁভায় (পাত লেখা যাইবে যে দলে ভাছাই হ্ইলাছে তবে, স্থাচীন অন্তিক আগাদের জ্ঞানের ্রাচরই হউক্ জার অপোচরই 🧽 ाशतः लाभातनं किछूहे जामित्व धा-টিয়ালা। উভয় **পদেই** আগ্ৰা ম্যাচান আন্তরের পরিচয়-লক্ষণ স্মুস্পত্তি প্রমাণ্ ছার। অৱলৱৰ কৰিয়া ভাহাকে অৱভাভা**ভৱে আ**-নিতে পারিব; ভাহরে গতের আমরা একটা বিলেয়ণ মুক্তিত ক্রিয়া দিতে পারিব—তাহা হইলেই হইল। **তত্ত্ব-জ্ঞানের এক মা চরম** প্রান্দ্রালার জনক সে জন-সাধারণের নিকটে প্রতিক্রত-তংগ্র ঐ বিশেষ**র্**দান। অস্তি-তত্ত্বে সমস্তই স্পষ্টরূপে ভাদ্দিতি **১ইবে---এখানে** তাহার চরম পুর্ন্ধাঞ্চে বিরুদ্ধ ভাছার মধ্যাশা করিয়া ন্ত্র করিবার প্রয়োজন করে না। এইটুকু কেবল বলা যাইতে পারে খেয়, কি: আছে এই প্রশের মীমাংসাতেই তত্ত-ভানের চর্ম প্রথ পরিকার-রূপে মীমাং-নিত ইট্যা যায়; সেই চরন প্রমটি—যাহা, দেখা দিতে সূর্ব্ব প্রথমেই দেখা দেয় 🔞 यासात मून छेभागान-नकन वामाद्रमत रखें-গত না হওয়া পৰ্যন্ত যাহাকে গাথিতে হয়-ভাহা এই.

#### थछ-जायत श्रेमतावृद्धि।

বর্ত্তমান পরিচেহনে কেবল এইটি পুনক্রিক্তি করিবার অপেকা যে, তত্ত্তান তিন
পণ্ডে বিভক্ত,—এথম, জ্ঞান তত্ত্ব; দিতীয়,
অজ্ঞান-তত্ত্ব; তৃতীয়, অন্তি-তত্ত্ব। এই যে
ভাগ-বিন্যাদের ব্যবস্থা, ইছা বংজি-বিশেযের ক্রচি অথবা মনোরথ অনুসারে প্রবর্ত্তিত
হয় নাই; নিরপে ভাগ-বিন্যাস ব্যতিরেকে
গতান্তর নাই বলিয়াই—আর-কোনরপ জ্ঞাপদ্ধতি তত্ত্বভানের প্রশ্ব-সকলের সহিত
ক্রিন্য় হয় না ব্যিয়াই—তত্ত্ত্তানকে উহার
অনুবর্ত্তি হ্রতে হইতেছে।

থ ওত্তরের পার্থকা-রক্ষা প্রয়োজনীয়।

উল্লিখত-খুলার চিন্ন অন্য গে-কোন প্রকার খণ্ড-বিভাগ যুশুনাই করিতে যাওয়া হয়, তখনই কিন্স সোনোযোগ উপস্থিত হয় তাহ। আর বলা বার না,—তখন মৃতবস্ত্র গতি-শুদ্র ধাহা ঘটে তাহা হইতে উদ্ধার পাওগা ভার। এরপ বাদলে অভ্যাক্ত হয়না বেষ, জ্ঞান-উত্তের (অর্থাৎ জ্ঞান এবং ভাহার নিখ্যাবলী বিষয়ক গ্রন্থ সকলেও) শীমাংলা স্থাসপান ২ইতে না ২ইজেই পান্ত-তত্ত্বের প্রশ্ন-মামাংসা হজে লইবার এবং ভাস্তিজ বিয়য়ে নতামত প্রকাশ কারবার যে, একটা অভ্যাদ, যাহাকে প্রায়শই শ্রেয় দেওয়া হইয়া খাকে—কথনই ব্রীতিমত দমন করা হয়না, ভাহাই তত্ত্তান-সম্বনীয় সমস্ত গোলো-ধোগের মূল। তত্তভানের গতিরোধক কার-নের বিষয় যাহা পূর্বেব বলা হইখাছে—এ কেবল তাহাৰ্ই একটা অঙ্গ বা ফল; গড়ি-রোধক কারণ দে--আর কিছু নয়-মূল ছিঙাইয়া অন্তে উপনীত হইতে যাওয়া। বর্ত্তমান প্রছের আলোচনা-প্রমূদ্ধে এইরূপ বিপরীত পদ্ধতির বিষম্য ফলের ভূরি ভূরি দৃষ্টান্ত আমাদের চক্ষে পড়িরে। পুত্রব এইটির প্রতি সবিশেষ প্রাণিধান কর করেবা শে, অন্তিত্ব-বিষয়ক খে-কোন ৪ প্রাই ইউক্—
আর যে-কোন মতই হ উক্—সমন্তই জ্ঞানতত্ত্ব স্বীয় বিবেচনা ইনতে বল পূর্বক বহিক্ষৃত করিয়া দিবে। জ্ঞান-তত্ত্ব প্রেম জ্ঞান
এবং জ্ঞের অইয়াই ব্যাপুত থাকিয়ে।

এই **তিন পড়ে স্থাভাবিক অ**মব্যালনে।
• সংশোধন।

তত্ত্বভানের কার্যা, প্রবর্কক কারণ এবং প্রকরণ-পদ্ধতি, এ-তিনটি বিষয়ের মন্ত্রে জ্যার্য়ে গেল্সমন্ত মন্তব্যে প্রকাশিত হর্মল তত্তপ**লকে** সাধাবণতং– এবং বর্ত্তমান প্রচেত পরিত্য-লক্ষণ ও স্বিশেষ বিনরণ গ্রদর্শিত হইল তদ্পলকে প্রেশ্যতঃ— এখনো अगन अविधि कथा तलिवात साम् माम স্বতন্ত্র একটি পরিজেল অবিকার করিবার উ-পযুক্ত; মেটি এই,—তন্ত্র খ্যানর প্রকেকে খাঙের আদি হইতে ভাত পর্যান্ত স্বাভাবিক চিন্তা-প্রনভ অনবধানভার সংশোধন কার্যা নিম্পানশ্বরা চ্ইয়াছে। জ্ঞান এবং জেয় সম্বলীয় আমানের বে-সকল স্বাভ্রিক অনব-ধানতা, জ্ঞান-তাত্ত তাহা হতে তুলির। নইয়। িক কৰিয়া দেওয়া হইয়াছে ; অজ্ঞান-সং-ন্ধীয় **আমা**দের যে-সকল থাভাবিত অনব-ধানতা, অজ্ঞান-তত্ত্বে তাহা হতে তুলিয়া লইয়া ঠিক্ ক্রিয়া দেওয়া হইয়াছে: আব, অন্তিত্ব-সম্বন্ধীয় আমাদের যে-সকল স্থাছা-বিক অনবধানতা, অস্তি-তত্ত্বে তাহাটিইস্তে তুলিয়া প্রীয়া ঠিক্ করিয়া দেওয়া হইয়াছে।

এই ভারে সিদ্ধান্ত নকল সলন মনে বিদ্যুমান থাকে না, এই আগতি উপলক্ষে মন্তব্য।

আর একটি কথা আছে; কথা-টি নিতান্ত উপেকণীয় নহে। কিন্দ্রাম্ম ব্যক্তি এই বলিয়া ক্থা-মনোরথ হইতে পারেন যে, এই তত্ত্বের চরম দিলান্ত গুলি এতই যদি সতা, তবে সৈ নিকান্ত গুলি সভার পক্ষে যে-মন-টি হওয়া প্রার্থনীয় – তেমল প্রবল রবে

ध्वरः क्षेत्रिक-क्रत्भ यहनागरमा मर्कक्षण विमा-यान थादक ना दकन करन, दनाकिक वाव-हात-स्नां ब्रेसिन्डि चाहा शावनरे मनूया-कोत्रत्नत्र धक्षिण्ड जश्रानत् निर्दर्भके वश्रान অধিকার কর্ত্তে জ্বাহা যতক্ষণ-ধরিয়া চলিতে থাকে, ততক্ষা ভেন্ত ও-সব সিদ্ধান্ত কাহারো मदन सान भाष ना १) देशाँव श्रांत राज्या এই रम, **डाहोरमंद** मन्द्रेकन मरमागरधा विमा-गान शाका आर्थनीय 9 नेरह, প্রযোজনীয় 9 ग्टरी ्रे पिकार्छ-छनि याँन उँ।शांत मत्ना-मदेश नितस्त्र कारीक्रक शांदक, उत्त लाश-त्मत्र छिल्छत्न उँ। हो देशान-म्हाट्ड उर्छत्ना ভার হয়, ভাগা হইলৈ তিনি অপপনার এবং जारमात निकटि विषय अक ज्ञान दरेशा | मंड्नि। এक-पित्व (ययन, मार्याना काञ-া কর্মা এবং আচার ব্যবহারে ব্যাপুত থাফিবার সময় আপনার বা ত্নোর চক্ষের সমকে বি-ু জ্ঞানের দিছাভ লইয়া ক্রমাগত নাড়া চাড়া ক্রা অতাব স্পাক্তি ভোগার পাণ্ডিতা-প্রদ্-শুনি; আর-এক দিকে তেমনি, বিজ্ঞানের িদৈবায় নিযুক্ত \থাকিবার সময় লৌকিক-, সিদ্ধান্ত স্থলত স্বভাগেলানকল— বৈটকখানা <u> जेवर हामे-वार्टेब विधि-वादको मकल — भिट्रा-</u> বার্ণা করিয়া **র্চনা, অ**তীব অপকৃত্তী ক্রেণীর বু দামত।-প্রদর্শন। শান্তীয় দিদ্ধান্ত এবং লোলকক সিদ্ধান্ত উভয়কে পর্বস্পারের সং-मर्ग क्टेंट कित-विद्युक्त कितिशे वाथा जा-্রশকে। ুক্তিভার দিন্তির দশ্ববৈ যাহাবি-। भारत हरें दिए हैं। व्यक्तिक मुख्य बनिया क्लारन छन्निक क्याहे अभारन टाराने यास किहे श्रद्धावन क्राठीड जारा जहात गतन रितन कि धरिन ना । कथा अथात निकासर जलागिक । उतित खानके क्यारमे नार्वक छ। हात्र लिन्द्राटक अकार अभारन धर्मात मद्भारी नेहरू ; विति तमरे सम्बद्धित विश्वाद ্রাদ এখানকার কোন শিকাত্তের নিশ্চাতার (

विक्रदेक माका श्रमान कतिए वार्टिक पटक ভাহাইকথায় কৰ্ণাত না করাই বিশেষ मटलात वान्ध्या तर्मा क्<sub>री</sub>तर्ग मटक আমরা আমাদের মলোক্তি-সকরকে সর্বদা সমুহত রাখিতে পারি না বলিয়া, সেই অপ-রাধে আমরা **যদি সতাকে ক্ষতি-গ্রস্ত হুইটে** দিই, তবে তাহাতে সত্যের মাহাত্মোর প্রতি আমাদের অতি অরই শ্রদ্ধা প্রকাশ পায়, আর, সত্তেরে গতিও তেমনি হয়। সভ্যকে মকুষেরে ষৎসামান্য রাগ-ছেষাদির মুখ-পেক্ষা করিয়া থাকিতে হইলে ভাহার আর তুর্গতির সীমা থাকে না। আমাদের মন সর্ক্ষদাই অথবা প্রায়শই সতেরে 'মহৎ পরা-गर्भत উচ্চ শিখবের' সমযোগা পদবীতে আর্জ থাকে না বলিয়া সতেরে প্রতি সন্দি-হান ২ওয়া লোকের এক**রূপ অভ্যাস দাঁড়া**-ইয়া গিয়াছে; কিন্তু এটা দংশয়-বাদের কিছু অতিরিক্ত বাড়াবাড়ি। **মুনুম্যের মনো**-বুত্তি সতোর গভীরত**ম রংসোর**্ভিতর जनाहर ज लादा मा-यान लादा जता तम কচিৎ কলচিৎ যুগ-যুগান্তর-ব্যবধানে- আৰ ভিত্তি অনেক সাধ্য-সাধনায়, এই কারণে ব্দনেক ভদ্ববিং, এবং তা' ছাড়। আহ্বৈ। अन् নেকে, সভাকে সভা-মতাই অসভা বলিয়া रिव कित्रश्चे विनिधा **पाटकन**। **प्रमा**ना वि-জ্ঞান শার্মের বেলা আন্ধারা তো তাহাদের প্রমণীকৃত সিদ্ধান্ত শুলি ওদ্ধ কেবল জানি-ুটাই পরিবৃত্ত হই, সেগুলিকে অনুক্ষণ হৃদয়ে জাইত ব্যাধিবার তো কোন ৫ রোজনই भारती करि ना ; पर्गन-नाटकात (वता पायता रमजल की इदि रकन १ एक रकरन मर्जन-শংক্রের বেনা লোকে এইর শ্রনে করিতে शूर छदशन (रो) महाटक समरक मृद्धिमास कतिरठ-मेडाइके उक्कारमत प्रता अविचारमत शत-कमात्र क्षारिक गरशा खानिएए-- छ। राजा वैथन क्षा के लेक-काब मटलाब लेक

ক্রিছুডেই রক্ষা পার না : ভারাচের আগেন সালের অক্ষানার অপরাধে সভা ধেন বড়ই अवताती। किछ । न १८३ वेस १ अक्स हो दक्षी भागख्य देखा भाग-छाट धण्यास्य भद्रा हे नद्र। १०११, ह यहि मदन करते १४, প্রত্যাপ্তরের ৮ ১৩ মতেশকলের বিদ্যা ষ্টান্ত - মতে প্রত্যাহন আইপ্রত্যান গণাত বু-বিশ্বস্ত বুলে বিভেন্ত । এই টুন্দ বিশ্ববিভিন্ত হয়, কিংবা এ সাৰি সাম বাবে ১ - এতাটোৰ স্থাপিত হৈ ত স্থার প্রথিতী এড়া ৮ কাল প্রয়ো ী নাল মান্য লোল ষ্ট্রিক্রন্ত ,কল্ড পরিজ্ঞান্তর । ইন प्रमुख्या । हिरुद्ध विकास । अस्रे १०५७ का नंदा आदि मान्यादे अने का का की है। 解析 化邻角甲酚二甲二甲基酚酚二甲甲烷 @ इ. वर्ष र विद्या अन्तर । अर्थ अ काराहरू কাত ভারত সম্মাত তালের। করা হয়।

#### छेपार । खेराह।

নিলেলিপিটে বিষয়টি এলান্ডার কৈল উপয়োগা ৷ পুলিল নাল ভালা ৷ লছ आर्ड मगुरु आवारमद महा १६८१ - ० छि-মাত্র প্রভূত বেলে ধ্রেমান ১ ুলোছ यता कारन जानि (४), काशरे हैं है। बिस সেটি আনর। হাদ্যাখ্য কভিজে পারি ম।; ০লেড**ক্ষ দ্বিবার** লৈ লে ভানের) ভাষের বিপার্ত-টাই কদয়ঞ্জন, করি। বিজ্ঞানের সহ**ত্র** হণ। ঠেলিয়া (মন্ততঃ আমাদের স্থগ্র-দীন অবভাষ) অংশরা মনে কবি যে, আংশরা অটল স্থির রহিয়াছি; এ বিশাস-প্রগঢ় চিন্তা শীল জ্যোতি-বেঁত্তা--যিনি সুথস্পাৰ্শ পর্যাছে নিষয়—ভাঁচারও যেমন, আর, এক-জন মুর্থ ক্রয়ক যে খড়ের পাদায় ছাত পা ছড়াইয়া পড়িয়া আছে—তাহারও তেমনি, **छे छ**रवदरे नयान । क्यां जित्त हो नकन-मंग-য়েই কিছু-জার জ্যোতিবেঁত। থাকেন না। যথন তিনি তাহার মান-মন্দির হইতে নাবিয়া আসেন, তখন তিনি তাঁহার আঁক জোঁক.

भिकाच योगीरमा, भगकुरी वर्ग (१०) विहा গ্রুষ্য আল্মন্য তথান, উল্লেখ্য যে চল ক্ষি रुहैया हुनियाद्यः ज्ञाहारा करमानात्वन छना । তথন তিনি, ভাবেন, ভোগবালা ক্ষেন্ কলা ক'ন, ঠিক ভারে-ভার লোগেক মং 🕬 🔻 कान्त्रान तवर अभिनीतक, माम'ना गरः तः (१) ভাবে দেখে তিনিও ঠিক সেই ভা 🕻 🤆 (थन। ५४न, ७'शत डिकीय मन, ५८५क, १५) কেন্ত্রের ও এইরূপ গতি। তেনি সকল ১৯১৮ ভয়জা থাকেন লা। ভালাব সমেনা স্থি कर्राधन (वनाम्न १९३) खदन्य ८१४, दरा घरहेराज भारत (य, लिन होको । धोन्यामाद्रन्यहें मता - प्रातन, खर र अ ८० ४ २ ८८०, स्था राष्ट्रिकोस । अध्याप १४० १८ १८ गर्क श नामा भारतारकार तथ-५८क ८४८५ । र्शन छा-ং বিসকে সেই চাক্ষ কেনিডে ও বেন ; ভাঙা গ্রিণা পারেন ওকে (একেই কো লোকে ানন্দ্ৰারবে দোষ গ্রিভে ভব্গৰ) জাহা इरेटल छाशत नाग छनिया शक १८८८६ मुक निवनाष्ट्रिया जिल्लास अस्ति । विन्तास्टर् ে িন্তা এবং **সত্ত্যের** এখন এব বি উদ্ধান্ধণ আছে বেখানে তিনিমনে করিলেই সনিয়ো चारतास्य कतिएक शास्त्रमः, देशहे साथहे ; তা তিন্ন, ভাঁহাকে কিন্ধা ভাঁহার অনুযানী। पिशदक स्मेरे উচ্চ-এদেশে **क्रमाश**ऌरे स्म অবস্থান করিতে হইবে--এমন কোন কথা-वार्ज। नारे। कति कि खंडेशहरू केवि १ कथन्हे मा। कविष्टे जिमि इसम जात (क्या-তিৰ্বেক্তাই হউন—নীচে তাহাকে নাবিতেই श्रुरे**त, जा**त, **उद्स्वा**नी कि छ— (गर्टे तिश्रामी উচ্ছি তি যাগা ভাঁহাদের দাধের রাজা—সে-शान इंटेटल नीटल नावितः इंटेटर, जात **म्यार वार्षात्र वाहित्र डा**न्स्पत्र कीवास्त्र অধিকাংশ কাল অতিবাহন করিয়াই তাঁহা-দিগকে সম্ভু**ট থ**াকিতে হইবে। "কি**ন্তু** তত্ত-জ্ঞানী যখন তত্তভানী হ'ন; যখন তিনি

48 + 6W

्र विक्रिक्त शहिरश्च शहिस्त कर्टम ; स्थम , নভিধিক অবলোকন-বাদ্বে ভারাই হ'ন, এবং কি দেখিলেন ভাষা জালন করিছে আরম্ভ করেন। তখন ভাইতে । রপ্ত ব্যৱসা প্ৰকাৰেৰ প্ৰবৃদ্ধ হন্ত । উচিত- যাং চুষ্ট একণ্ াল**জন্ম, ভগন আ**ৰে এত , সঞ্জিক জন্মতা ভাইার মুখে শোভা পাইতে পারে না। পান क তবে এইন্নগ্ৰহাল আন্ত আহিব যে रक्षक खर्मामधरी है जाडे भ अस्ति अस्ति। শাসাম কভিনিতি শীৰ্ডে সম্পূৰ্ বিভিন্ন কু সমুবোর 🕩 হার বালে la— বারা **প্রয়**া-টালর ব্যাপোরা হইকে পত গোমগতের তা**হ** গালা সায় না - ভাশার ভিলার র নিল্মের (১৯) একত সভা এবং ফড়ব্ৰাফ হারের বিব জ্ব भिष्ठापार) त्यांक व्याधिशतः । सम्ह । १० ५ ভাগানত জোলা জ নিয়ন্তি তেওঁ নাগ स्ति कि-क्या।

এই ওল্লাক প্ৰসংঘাৰ অগলাগ ক্ষাতি গ্ৰাহণ ১০৮ জন ব্যৱস্থা

্ৰেট প্ৰহ থেৱাণ দক্ত দিবলৈ সংক্রিচি 西文 计四价语句 电影性证明电话的第三人称单 कर् वड़ रह भी किया के श नार, के भ ब्दा व कि विश्वास हुनै शत है का । तदा व्यादना है। কেহা ব'্রভ পারেন, "ভেলোর আপনাঃ চিন্তাৰ বিষয়ে এবং ভোষার আপন্তা জ্ঞানের বিষয়ে কথা কহাই তোমাকে সংক্রে, ভা নয় ্জুমি স্কুল্ জ্ঞানের--স্কল্ িলার--নিব্যুষ্ निर्कार्त्त किरिड वारिटिड हैं। ऐर एड कि ভোষার পর্বন প্রকাশ পাইতেছে নাং रेशाह क्षण्यास्त्र वाकाग करे त्या त्य स्थानरे इंडिक्ट दूशन, लगा ता छिन्नाई इंडिक ना (क्रम) दकान-ध्रव हि एटानटक **वा द**कान-१० हि हिन्दु तक का" मत भारति । यक निभय-मकानद জনিবার **হ**ই ভি বঞ্জি ভারিমা দেওয়া, উহা অংশেদা জন্ত হ'বক পান্ধার স্থানি 🚛 রেণ, (त्र-मकल व्हिट्टसद क्या क्यांच्य उद्धाय कृता

২ইতেছে ভাহারা আবশস্তাবী সভা—ভাচা-নেব প্রতিপক্ষ স্থবিদাত গত্ত্ত ; এজনাঁ, কেন্ট্রি জ্ঞান সম্ভবতং গে-সকল নিয়মের আধকার **ভ্টতে** শিলুত হইতে গালে—এরল মনে াৰাই পাগলামি । আৰু বুদ্ধিল শ যে অংশে এটেলন লক্ষ্য সে জেলনে একপ নামে াল প্র**ে**গা: কক্ষো। • **জ্**লালের তারশাভারী ২০, ধ্ৰম ১০, তে কোন-জ্ঞান কোন লাচ লো বিদ্যুত 更强力 组织制 医有对性病 一种调,在何可能。 আন অজ্ঞান, দেনৰ বিল - টিলালাৰ কোন-化氯苯酚 阿斯萨尔 一点 可能 医生物性 电 নিয়া 😿 🖽 এন্দ্রীর 💎 🕟 🛪 🐔 🔭 🧸 😉 🐠 স্বাহ্যতে সাহা । তাও এছা। **অভা**ৰত যে সকল राज्य उपन्ति वर्षाता वर्**य काश्कृत** ले भक्त ্ৰসংগ্ৰহণ ভাৰত **হৰ্ষ ত মুক্তি বিশার জ্**লিভাগেৰ নের ১৮ নে ক্রান্ত । স্থার ১৯৫৮ - ১৯৮ **- ৩**৮৮ চ বিশ্রম ১৮ - ৬,৫ ৬৮কে খটেইন ৮ কেল মন্থ্য १८४ शहक्षे शहके छ। भागति गिष्ठ छि ১৬৫০৭ নাত্র **গুড়ের** শাসনাক্ষা<mark>ত এক</mark> · 11 mm 10 2日 可食: 1 mm

खाकाला !

ব্রাহ্মান্ত ।

তিন্ত জনগার।

বিপুশান্ত ।

প্রধান প্রস্তাব ।

মদান

আনাদিপের গোট স্বান্ধারিক আবামহন্ত জান আছে। আনতা ঈশবের পুরু, আমরী

আন্তর মতবের এবটি চিন্তাৰ মামলী; এ জন্ম বিক্রার তার কার্তার করে। বিক্রার স্থানিক ভাষাল (Authoromoly) বিক্রার করে। করি করি এই এক জ্বুর এরে সকলে অন্তির, জাহারা স্থানেতে আন্তির-ল্পন আলেপ করিছে অধিকারী নাইন, কেননা অন্তির সভাবের চিন্তা-গ্রম প্রভাগ মানুষিক। জাহার বিলি এব করে এক, কথা, জার একরার আন্তির কলা বা বালার, ভাগানের আ আন্তা-গোড়া বিক্রারিত লাইন ভার বালার, ভাগানের আ আন্তা-গোড়া বিক্রারিত লাইন ভার বালার বালার বালার আন্তান্তর নাইন ভারার বালার বালার

জ্ঞান ধর্ম ও পবিত্রতার অধিকারী, আমরা স্থান জীব এবং আনরা অমর, অতএব আ-यवा महर এই तथ अकर्षि खान ने यव जागा-- নিমের আত্মায় গুড়রূপে নিহিত করিয়া দিয়া-ছেন। এই আল মহত্ব-জ্ঞানের উদ্দেশ্য .এই যে যাহাতে আমানের মনুষাপ, যাহাতে আ্মানের প্রকৃত মহত্ব, ভাষা যেন অবিকৃত থাকে। তাহায়েন বিনষ্ট নাহয়, তজ্জনা ব্যায়ণ স্কলি সমত থাকিব। বিভাগাসুগ ভাচাৰ এই আছে-মহত্ত-জান বিক্ল কৰিয়া ्बर्धा । अहै तिक्रालित गांध भन्। अही भन ারপু কর্ত্ত পারগালিত ২ইনে আমানের শাংকতে প্রায়ত মত্ত তাই৷ সদ আমানের किस्यावयातम् अस् ४३८म रशस्य स्था আমা নারে মানে অধিব্যাত্র অহতার উপ-াহত হয়, আকতে খাহাতে আমানের মহান নাই তাহা মধ্য মনে করিয়া তাহার জনা আমতা গোরত বোধ করি। মূল চিপুত্র অধীন ইইলে দাখাদের প্রকৃত মহাভের কারণ জ্ঞান, ধর্মা, ও গালিজা মতটুকু ধানে ভঙ্ हेक । **बना** पारा फिल्ला बदन खरुदा । छ त-<sup>বস্তু</sup> হয় এবং গেহ' গেহস্কারে স্থাত হট্যা আমতা **মনে** কলে যে আমরা জ্ঞান ধক্ম প্রিশ জন্ম উন্তির পরাকাষ্ঠা লাভ করিয়াছি। আবার যাহাতে আ**যালের মহ**তু নাই, যালা অসায়ী ও অলাব, মুর্থাৎ বন সম্পত্তি, স্মাতি ভালিকপাতি **সাংসারিক স্থ**র সম্প্রদা, ব**ং**শ-মর্যানদা ও পদগোরব, এই সকলকে প্রস্কৃত · मश्दलंत कातन छानिया धानता जे मक*र*लंद জনা গৌরব বোধ করিতে থাকি। আমা-দের আত্মায় ঈশ্বন-নিহিত আত্মাহত্ত্ব জ্ঞান বিকৃত হইলে এই দশা প্রাপ্ত হয়। আমাদের পৰিত্ৰ আত্মনহত্ত্ব জ্ঞান যাহাতে এক্লপ বিকৃতি প্রাপ্ত না হয়, এবং এরপ বিকৃত হইলে যাহাতে আমরা তাহান দে বিকৃত্তি শীস্ত্র দুর করিতে পারি তাহার জন্য আমাদিগের

मितिस्य किष्ठी ७ गङ्ग निकाल कहा स्रेयत-निक्षिष्ठे कर्जना।

भेषत-अधि पश्चिमरङ् আখাদিগের छत्रान आयापिरणत यद्याला १ १०००, किन्न উহার বিকৃত আকার যে 💴 রিপু তাহ धार्मारमञ्जूषात धरम्यभागत ८ ५५ । भारत মহন্ত-জ্ঞান ধৰিক্ত ও সালাধিক শ্ৰেম্য शका कतिहार आतिहत किएम जागा हरान তত্বত মহাত্র লক্ষা ভট্টো কেন্দ্র আনতা জ্বান্, কন্ম ভ প্ৰিছেডা - ভীম্বতি আৰু ফ্ৰিটেড প্রারিশ, কিন্তুন আন্তর্ম পুর্বিজ্ঞান ইপ্রত্যাপ্র मित्रा भरिष्ठत सिद्ध भगवन, विद्या जागः। প্রিবাদ ধ্রানাতা সম্প্রা মাধ্যতাই জ্বারের পলেন উপসক্ত ২ইব, নি দে আমৰ, ইন জালনে কেষ্যে এবং অনুভ জী নেওচ সুখ্যাস শাভিষ্য কারতে পারিশ, সেই নিমেই আমা িপের চেঠা ও গর দেশবার প্রধাবিত হয়। নেং এদিকে চেষ্টা ও বছ থাকিলে আছবা পদ্ম-প্রাথ থাকিয়া স্থুখ শ**ন্তি ও আনলে**র प्यतिकारी हरेटक अथन **रहा। जात श**ि পাষরা অম্যাণ্ডার অংহা-মধ্**ত্র-জ্ঞান** কিকৃত করিটা উচ্চ মদ বিপুতে পরি**ণত ক**রি ভাষা হটানে খন জান, জন নর্ম ও অল্প পরিত্রত। নাত করিল জানত। মনে করি যে আমত। মহা জানী, মহা বাৰ্মিক, ও মহাপ্ৰিত ন্তি-নম্পন এবং এইরূপ অমূলক সংস্কারের বশবর্তী হইয়া আম্রা জনন ধর্মা ও প্রি গতায় উৎক্ষ সা**ধনে** প**াল্য হ্ই।** दाव शशास्त्र सम्ब नाहे क्वींबर माहे, भन तिश्रत अधीन इरेटन, आमहा तमरे मकत পার্থিৰ অমাৰ ও অহাণী বছনেত গোলৰ ও মহত্ত আছে ভাবিয়া তাহাবই ৬ কৃত্যা কবি। তিইরপে ধন, যশ, পদ গ্রভৃতি পাথিব বঙ্কর গৌরব করিতে এবং ভাষ্ট্রিগরে মহৎ ভাবিতে শিধিয়া আমদা আমাদিগের চির-কালের অমলা ধন জ্ঞান ধর্ম পরিচলোর

মহত্তিপলন্ধি করিতে তাহাদিগের গোরব তামুত্ব করিতে তুলিয়া খাই। এইরপ হইলৈ অজ্ঞান, অধর্ম ও অপবিত্রভাব নিকে প্রাথাদিগের গতি হয়— আনত্ত জন্ম আব্যা-ত্রিক অবনতি প্রাপ্ত ১ইডে পানি এবং পাপ-শির্মি পতিত হইয়া মহা তুর্গতির ভাগী হইয়া হাক্ষার করিতে গ্রিম।

্ৰ প্ৰাক্ত আত্ম-মহাত্ৰজান জ্বাবের দিকে আমাদিনের আত্মার চণ্ড উন্মীলিত রণ্থে, यन, तिथु श्रामानिगटक जिन्नतान्योन इंग्रेटक বঞ্চিত করেঁ। আল্লেম্ছড়-জ্ঞান আমাদিণে ব আ্লার নিত্ত আধ্যাত্মিক মহত্তের পরিম। मर्का जागक है तार्थ, यह जिल्ला भाषित तरहत **चराग्ने, जनात** ने इन्हाती शतियाह कामाणि আত্মাকে আবদ্ধ করিলা কেলে। আল্ল-মহত্ত ভোন আমাদিগতে সংগ্র দিকে আ'রু ট করে, মন রিপু আম।দিগকে পুলিবার দিকে টারিয়া রাখিতে চার। আখা সহত্ত্ कान चार्मीनिशक चामानिश्वत चीटरनव প্রাচ্চত মহান উদ্দেশ্য সুর্ব্বদ। অরণ করাই।।। দেয়া নদ রিশ্ব আমাদিগের দে স্মৃতি হরণ নবে। **আন্ত্র-মহন্তু-ভ্তান** আমাদিপকে স্তথ भाष्टित भरण तका करन, यन दिला जागा-াদগকে ডুঃখ, সন্তাপ, ও অশান্তির পথে नहेता याद्धाः অত এব আৰু মহৰ-জান विमर्व्ह्न निया कथन छाडात दान सम ति-পুত্র অধিকার করিতে দিবেক না, পাত্র ব্রাক্সধর্মের এই জাদেশ, এই উপদেশ।

ত্রাক্ষা থিনি তিনি কখন মদ রিপুর অধীন হরেন না। আমি অনন্ত ত্রক্ষাণ্ডের রাজা অনন্তদেব পরমেখরের পুত্ত, আমি জ্ঞান ধর্ম ও পবিত্রতায় অনন্ত উন্নতির অধিকারী, আমি স্বারীল জাব, পশুদিপের নায়ে নিন্দিপ্ত পশু-দংস্কারের জ্বনীল নহি, আমি অম্ল, ন্নন্তকাল ঈশ্বরের রাজ্যে থাকিয়া আমি অনন্ত উন্নতি লাভ করিতে থাকিব, তাল

ইহাই তাঁহার ওকত মহত্ত্বে কার**ণ্ট্রানিয়া** শান্তভাবে এইয়ে ভাঙা পোষণ ক্রিয়া, সেই মহত্ত যাহাতে লাভ কাবতে পারেন, भिष्ठे यह एक या हात व मक ना अ एक कि सु-সংবে কাৰ্য্য কলিচে গংলেন। ভিনি কথন জ্ঞান ধর্মা ও পবিত্রত। লাম করিয়া ভাষার জন্য অহম্বার করেন না ্যান না তিনি জা-নেন যে জ্ঞান ধর্মা ও লাক্তভায় তিনি যত দুর উহাতি লাভ করিয়া গাজুন ন। কেন, ভাহতেনর প্রেম আরও তিয়তি সম্ভব, এবং পূৰ্ণ জ্ঞান প্ৰকৃতি প্ৰিয়াল্ড নিকট ভাষ্ট षाणि भागासा, प्राप्त छेपराप छले वि**भान** জিলনে উচ্চা আপেক্ষা উদ্দেশৰ অভান **ধর্মা** ও প্রিম্ভা সম্পন্ন ভীব মত তহিবাছে। তিনি थान त्योर कार्यन ना, भट्यत त्यात्व क-তেন না, প্র-মর্গাদার গোরে ক্রেন না, छेक करमंत एशोदाद करान गा। मकरकत (४ भारतका भारे, साधी तकान মন্য নাই, প্রকৃত সোন ম, দ্বানাই, ভাইা তিনি সমাক্ প্ৰেন। বিধ্যাধন-সম্পন্ন হইনে ৪. ২০০৭ মানী হইনেও, কিন্তা পুথি-গার মর্কোত পরে অধিরত হইলেও ভিনি भितिदानत भारत, धनशीदनत नाम ७ छक्त-लम-नुगर वर्ष क्रव नाम नाम अविनोक इरमन । তিনি গ্র'ন, ধর্মা, ও পবিত্রতাতেই মানুষের गर्ड जौनिशा छारोरे अर्फन कतिए ध-রিতে জীবন-পথে অগ্রহর হই: ৬ থাকেনা তাক্ষরশ্ব এছণ করিয়া, বোলা বলিয়া জগতের নিকট পরিচয় দিয়া যিনি ত্রাহারশ্রের উপ-দেশামুদারে মদ রিপুকে এইরূপে পরাভিত করিতে না পাতেন, তাঁহার আত্মার উপর মদ রিপুর প্রভাব এইরপে বিনষ্ঠ করিতে না পারেন, তিনি আক্ষধন্মের ও জান্ধা নামের অবসানন। করেন। তিনি কখন প্রকৃত রাশ্বে ব্রাক্ষ নামের উপযুক্ত হইতে পাবেন মা

### স্বাস্থ্য ও বৈবাহিক বয়স।

কি দে স্বাস্থা থাকে এ প্রবের মীমংগা বভ কঠিন। "অনেকেই পলেন মিডাহার মিতাতার ও ব্যায়ামাদি নিয়ত অভ্যাদ কর এবং আর আর নিয়ম পালন করিছ। চল যাস্থা থাড়িবে। কিন্তু গদিকে আনার দেখা সায় সে মনুষোর পক্ষে সকল কাল ও সকল অস্পায় ইহাতেও পরিশেষ কাজ হয় না। अब भक्त जिनारीय इस एक। त्यम स्थाल था-কেন আবার কেই বা তাঁদুশ স্ফল গান না। किछ पणि शाहीन कारन एकरन স্মান এট এক্ষের প্রাথ্ন উঠিয়াছিল এবং भावुदर्स्त हरे हेगात भी भाषता कतिया यान । এই অংগ্রেক্টের এক ঝুসি কহিয়াছেন, লাস্ত্র কিনে থাকে ইহা নির্ণা কলিতে চ্টালে, অত্যে সাম্যের মূল স্ত্রাপুরুকের বৈবাহিক বয়ুস अवशादन अतिनाक । कातन होशुनार्भव शहरा অচোর আ**হার ও চে**ই৷ ভালাদের পুন্ত ভিদ্যুরূপ ইইনা থাকে (১)। তেই সুন্তুক্ ৰবিদ্ৰ' **স্থাকে**ৰে প্ৰশ্ন শীশাংশা বৰিতে হইলে সক্ষাত্রে বৈবাহিক বয়স নির্ণয় করা চাই। কারণ চেপ্তার সহিত ওয়সেরই গুরুতর ও ধ**নিষ্ঠ যোগ।** কিল এই আয়ুর্কোদপ্রবেতা প্রষি এই বৈবাহিক বয়স নির্দারণে কেবলই যে মনুদোৰ পাতুষার প্রতি লক্ষা করিণাছেন তাহা নহে। তিনি ইহার সহিত জনসমাতের অবস্থ। অর্থাৎ দেশকাল গাত্র মথায়থ ব্রিবার ाको भारेगारधन। स्टबार बागूर्व**रन**त বাবস্থা অতি গভীর ও বাপেক। আমরা ইহা বিরত করিবার পূর্বের এখনকার সমাজদং-ক্ষবিকেরা বিবাহের এই বয়স সম্বন্ধে যাহ। িাৰান্ত করিয়াছেন অত্যে তাহার আলোচনা कदित।

এখনকার কুতবিদাদিশের মতে পঞ্চদশ

বর্ষ স্ত্রীর বিবাহকাল। সর্প্রেম সংস্থার দৃষ্টিতে ইলা প্রতিকুল কাল ৭০ 👉 🕬 একাদ্যনের শেরপ পাবিবারিক জ্ঞা গ্রাহ ইট বৈবা-হিক বয়স ভাছাৰ পাশিক্ষা একিবাৰ ছইল। দীভায়। আমাদেব এখনত ক্রি সংসাব षाद्ध। देश (म भीत किस म १०१४ (म मञ्जादमा ७ जहा । ऐस् ५७०० । ११ वृति যে পাশ্চার মভাতা ইতা মন পিনিল ক্রি**তেছে** কিন্তু ব্রুষ্ট্ पतिरा भन्न ष्ट्रत प्रतिभाद भीभाग्या धरीएक प्राहा धप्रत्न एमनः प्रान्। भरिन्छ। ८,७७१५ ছইলে ইওলেপের সহিত অ্নাস্থর পারি বায়িক অবস্থাগত কত ত্রাপদ ব্রিক্তে তথ,কার ্পার্ব্যবিক ভিত্তি পারিবে । আর্থিক কিন্তু এখানকার নৈছিল। সার্থ পিতাপুত্তের মধ্যেও বিভেদ আনি-য়াছে। কিন্তু এখানে নিংখান, ধর্ম বা কৰ্দব্যবোধ উভয়কে মিলিত কৰিয়া ৱাখি-য়াছে। স্তর্গ এইরূপে ব্রিনে খামাদের পারিবারিক ভিতিন্ন **স্থদ্**ছ বোণ হয়। কিন্তু ইগাও ধীকার করি রাজনৈতিক শক্তি ইহার অপুকল নয় ৷ সংকও ইচ্ছা না থাকে তথাত অাষাংক পক্ষে বর্ত্তমান পারিবারিক বন্ধন বাধ। ২ইয়া ভেছদন করা সন্তব। অরুশ্য, আপাত দৃষ্টিতে ইহাই বোগ হ**ইতে পারে** কিন্তু ভাহাও ঠিক্ ছইতেছে না। কারণ **স্থ**গতের নিয়ম এই যাহা সং বা নদল তাহা এককানে সায় ন। যদিও কোন বাহ্য কাঁরণে আগতেত যায় কিন্তু তাহার পুনরার্ভির থুব স্ভা-वना थातक। - विष्क भारत है स्थीकात करतम আমাদের বর্তমান পারিবারিক প্রথা যদিও কোন কোন অংশে দোষস্পৃত্ত কিন্তু ইহাতে গুনের ভাগ অধিক আছে। কিন্তু সে কথাও ছাড়িয়াকেও। হিন্দুর মর্মাণত বিখাস এই বে পোষাবৰ্গকৈ অন্ধ-বন্ধ-দান একটা নিঃস্বাৰ্থ श्रीकार्या। শামি অন পাইৰ আমার বৃদ্ধ

<sup>(</sup>১) আচাৰাহাৰচেষ্টাভি: যাদৃশাভি: \* \* \* \* । বীলঃমৌ সমুখ্যাকাং ভাৰা: প্ৰোহণি ভাদৃশঃ।

পিতাযাত৷ বা আক্ষ ভাতা অন্ন পাইবৈ ना अ पृणा का किन्छ। हिम्मूब लारन महनीय হয় না। যদি কেখল এইটুকু ধরিয়া বিচার করি তাই। হইলে 🏚 সালস ক্রিয়া 🕽 বলিতে পারি না যে, জ্যারষাতে এই ধর্মবিশা-দের ব**লেই** শত<sup>্</sup>শত রাজনৈতিক বাধা অতিক্রম 🖟 করা ুআন্মাদের পক্ষে সম্ভব ? 'এ বিষয়ে আরও একটু গুঢ় কথা আছে। ইওরোপের অন্নকট্ট প্রতিযোগিতা নিব-কান। যাহার ক্ষমতা অধিক লক্ষমী তাহারই। किस्र जार मा किन् अक्षण नहा। देश अथन **অসামীন**। বিশেষত শাসন ও বাণিজ্য একের হত্তে। দেশের অর্থ ও শস্য আর দেশে थाटक ना । कि जनारे कंट्र नर्खवााशी हरे-বেছে। ভাষা অক্ষম স্তরাং সে অন পায় **বা**ন্ধেশব্যাপক কৈতেওঁৰ সময় এ বিচার থাকে ना । । श्राञ्च अहे अधीनजाह हस्य ४०हे ক**ন্ত বাড়িকে ত**তই স্বার্থপরত। প্রবল ন। হইয়া মনুষ্য-প্রকৃতির নিয়নে দয়াই বন্ধিত হওয়া ভাতায় ভাতায় মিলিয়া দিনাত্তে क्रित्रज्ञाला निवादन कदिव এই ভাব প্রবল হওয়াই থ্ব সভব। ইহাধর্মপ্রাণ ভারতবর্গ স্থানরা পাশ্চাত্য সভাতার বলে এ দেশের এই পারিবারিক বন্ধনের মূল যদিও কিছু শিথিল ইইতেছে কিন্তু কে সাহস করিয়া বলিতে পারেন যে ভবিষ্যতে ইহা এককালে নিশ্মল হইবে ৷

এখন বক্তবা এই, যে, এই একারবর্ত্তিতা ভূবিষাতে টে কুক বা নাই টে কুক সে বিষরের সবিস্তর, যামাংসা করা এ প্রস্তাবের উদ্দেশা নয় কিছা ইছা হৈক যে ইছা এখনও আছে, এবং শীলাই ছে ঘাইবে তাছাই বা কে বন্ধির। এখন আই শুলুকু বিষয়ের অনুসরণ করি। ইতিপূর্কেই ক্ষিয়াছি প্রকামবর্তিতার সহিত অহার প্রতিকৃশ্যের আই প্রকামবর্তিতার সহিত অহার প্রতিকৃশ্যের ক্ষিয়া হিলাব্যার

**এहे अन्यस्ति है। मूल धर्मा अविश** अकामवर्जि शतिवाद्धाः नाना **श्रुक्त जित्र** देशाङ्ग থাকে। কিন্তু । পা বা কৰ্ত্বাবৃদ্ধি যদি ভাহা-দিগকে নিয়ন্ত না করে তাহা হইলে পারি বারিক স্থিতিভঙ্গ অপরিষ্ঠ গা। এখন জীলো-কের পক্ষে এই পঞ্চদশ া বয়সটা কি ৰস্তু তাহাঁও এক্ষার স্থির চিতে বুনিয়া দেখ। এই नगरत शक्ति निम्ना जीत श्रद्धि भक्त यात भन्न नारे जिलांग रहेशा छ हो। कन्ननात অনৌকিক চক্ষে নয় যদি দারল ভাবে বুঝ, নি-য়ত যাহা ঘটিতেছে যদি তাই ধনিয়া বুঝ তাহা হইলে দেখিতে পাইবে ধর্ম ও সংসক্ষেত্র বৃংহ্মধ্যে খাকিলেও শতের মধ্যে অন্তত উন্-নকাইটাকে এক্কডি এই বন্ধদে ভোগপ্রবৰ করিয়া কেলে। স্তরাং ইহা স্থির কথা যে এই বয়দ স্ত্রী**লোকের ভো**গবৃদ্ধি বাড়াইয়। তুলে। এই ভোগের সহিত স্থার্থের অবিচ্ছেদ্য সফর। এদিকে থামাদের দাধারণত যেরূপ অবস্থা তাহাতে পাঁচ্টার মধ্যে এন বুলের সর্ব্বাঙ্গীণ ভোগ চরিতার্থ হওয়া সম্ভবই নয়। স্তরাং এই ভোগবৃদ্ধিই কৃষণ এ স্তীৰ্কে সার্থপ্রকণ করিয়া **ফেলে। স্থারীর বার** সার্থ প্রবল হ**ইতে থাকে তথন ধর্ম্ম বা** কর্তুব্যবোধ আর বড় একটা স্থান পায় এখনও সামানা গৃহছের কেছ কেছ যে পৃথক অন্ন হইয়া পড়ে ভাছার মূল অনেক ছলেই এই দ্রীলোকের ভোগ-श्चित्रु 📆 🛪 अर्थ। ्ऋ उतारः वर्खमानः सर-क्रांब्र्ट्करी शकनमवर्ष स्त्रीत्र विवाहकाल नि-র্দেশ ক্রিয়া সমাজসধ্যে এই মহৎ দোষ্টা আর্থ ভাকিয়া আনিতেছেন। এই ভোগসুর ন্ত্ৰী আদিয়া কেবল আপন্তৰ ভোগ ও ভর্জাকে বুঝিতে থাকিবে ৷ সার্থের উৎশীর্তনে ইহার নিকট অবশ্য-প্রতিগাল্য পরিবার প্রার্থ **উ**र्लिक हरेरव अवश् **अरनक विक्रुशा**र ट्याक यात शत ना**र अनाजाटर कटडे किन**-

পাত করিবে। স্তরাং এখনও সথন এদেশে একাগনতি সংসাদ আছে এবং শীনেই যে ইংলিটাপিয়া যাইবে তাহীরও সপন প্রেরতালাত কর করি দেশে প্রেরতালাকের এই ক্লেলপ্রের প্রকলিক দশ বলকে বিধাহকাল স্থিব করা সঙ্গত হয় দিছি। কিন্তু অতি প্রাচীনকালে তেই ভারকে একজন আয়ুর্বেদি এবালা প্রাথির এই প্রের্কিন্তে করে উদয় হইয়াছিল এবং বর্ট্যনে সংস্কাত করে ক্রেন্স অল্পার এবং বর্ট্যনে সংস্কাত করে ক্রেন্স অল্পার এবং বর্ট্যনে সংস্কার করে বর্ট্যনে অল্পার

网络沙漠 化二次多 网络人名德 黃河 春日 च अक्रकेट १५५० पुरुषान ने ने**्गा**र्टर 15 国内书 原作 化合合体 (1941) (新闻) \$P\$(图1) भारत से कार कार्य कर अपने चित्रकों का निवसार न यः म जानतावरावव नयः श्रीनाशस्त्रः । उत्तरः । আনেকে এই বৈদিত সিদান বাং বিহ-্চাল তিগৃহত বলিয়া সাম্যালিকে উল্লেখ্য क्षित्र भारतम् । बिल रेलीत्यः कत् उत् चेत भाग विलया विहर ्वनहारी जिस প্রতা **ব্রিটে**জ্যাল এটা প্রভারত হর্তীয় পুর্য এই জ্ঞাঞ্চ্যাস্থ্য স্থান্ত ভল গার্লামান করে ওংগ্রে হাল্যান গার্ভালায় - महे १११ । सार योवस 一种相似的 医红色 रुष् न जिल्लान १४ भा। 一些四月 克萨西耳 ক্রিয় অধাৎ হান্বীর্য। ২ইবা আবিত গাবে। অতত্ত্ব হেডেশবর্ষের সুমুন্যস্থাতে গ্রাক্তা ষকওঁবা (২)। ুএখনে আমনা ভুইনী বিচিত্ৰ বিষয় **পাইতেক্তি।** প্ৰথম ছাসৰে বিৰাহ, দিতাম যোড়শে গার্টাধান। ও-স্থলেও তুমি বলিতে পার ভবে যোড়শ-वर्ग विदाहकाल ना इच्च किन ।" किन शुक्ति हैं

ष्ट्रे हरिशादक **अस्म**्या ११/जनः । हन्**रस्**त्र लिख निविधा । हा कार के अवस्थान সংক্ষারকাদ্রবের মতে দ্রাল্ড ট্রলাম এই যোড়ণেও সেই দেখি। এট এন ট্রান্ট ক আন षावरी हित्र स्रोत विवाहकाल क्रिक्स आकृत ভাষার সৃহিত ধর্ম জব এ সার্ফ বয় কর্ कावश्रीरास्त्र । अथन विकास सरमान सरमान भवरक है तित्रिणमा वहेंद्र । जामादान नहिंद वार्तिक तक्षान भण्डार्ग रूप एउट ए छिन्दा । প্রক্রিম। কিন্তু প্রতিত কোনতার মান लाहे तह तक एक एक छ । ते ने नामा নে যেবৰ সাম্মেত্ৰ প্ৰিয়ে স্থাপুতে আলি शहरता थनिएड हैंग, स्थमध एन्ड्रिट हरी हेक्सी अहै। भी सारवर गाल शाहर 所換的 としもは別がいて、一般は1975年の 一座教育 ভারতে হৈ ভিহাব । বে হাইছে। গালের 🔻 ে সেই ইফা ব'বে সাংগালে সহিত প্ৰ মুখা। তিন্ধ স্থায়েল চাৰ **লাগলালা (ম.৬/শ**ম্ र्गा (१८) ते द्वारा अस्ति । अस्ति । विकास स्वति । विकास स्वति । প্রত্য তাদিলা তে জানের নির্ভত ব্র**ুজ** ልፍሎ (\*) ፣ #በ.(৩ **የ**ነር∃ **এ**?ኒ ውርድ**ፅ ፣** ग्रासाल प्राचन करा उन्होंने के न्यार्टमा इंश्व েতিকসভার । তারাস হেডিল হর্নে মিজেই कालहे ज्याना गान्य भागान किए बालान क का नाम र रहे या। । वहीं खना हिसालीत-एक विभावना ए १ ५ वर्ष वश्चाति धन-এম হাৰণ্ডামুখ্য এবং প্ৰিবাৰেছ লেয়কর গুইন্ लाकः सर्वेदान भारतः। । । ध्ये में नेलः। शरिवज ना क्षेट्र छ। हारक यर १४६ । नाम हिर्ल পারা বাহ কিন্তু পাকিলে আর সংক্রে ভারা হয় **না। যাদ্মই হউক এইরতেপ** ভ*র্প*ে ধর্মা অর্থাও কাম শিক্ষার নিমিন্ত ভাদশ হ্ৈত **পঞ্চল পর্যন্ত অভী**ত হইর। <mark>যায়। পরে</mark> তা হার সামিদকর্মন। এখনও যে এই বেলেন্ডে **উপদেশ হিন্দু পরিবারে যথায় শুক্তিপালি**ও श्हेरण ए जारा नरश किन्न देशात यमूत्रण

হ) শত বিংশ তিশব্যি ছানুশব্যাং প্ৰীং আবহে।
প্ৰাণ্ধাপকাম প্ৰজা প্ৰতিপ্ৰ।
ভূনবো দুশব্যাহাং সংপ্ৰাপ্তঃ প্ৰাবিংশক্তি।
দুশবিংও প্যান গ্ৰুত কৃষ্ণিতঃ দ বিপদাতে,
ভাততা বা ন ব্ৰিং জীবেং জীবেং বা ছুৰ্বনৈজ্যিঃ
তথাং অত্যন্ত বালায়াং গ্ৰাধানং ন শান্তাহ্য

proper Switz

षात्नकि। शास्त्र बाह्यः वास्त्र वासन শত শত পাৰ্শ্বার অপেক চত অল বেইনে कन्सात विवाही निया छ छ । वास वास उरे तन **ट्रमारक**्रिनश्रभ श्रीमान कतिरुख्या । এएमट्रमा जातक द्रमाक क्षेगात निवाद्यत शत स्वि भगाभन मा इहाता हिला यूथा वर्गन बिदालरन গুড়তি কতক**ওলি** নিয়ম প্লেন করিৱা थाटक। अने सम्ब निश्च शालन कतिएड जिया कनार भूनीभाष्याद्दत कान छल्ला छ হয়। প্রে প্রেহার স্থানিসংক্ষেম হটিল थाटक। ७ मिर्गेक स्थातात भातीबालक्षीत्र বির ক্রিলা**েন বে** হলি স্থিতি পারিবারেক वाध्कनाति मन्। मलिस सी कति छति छोछ र भूमध्यश्का**टब्रव ग**िल स्वता**व्य ट**ील वा शर्म । কিন্তু সাম্বের চৃষ্টিতে বৈশিক ঋষি এই কেন্দ্র मुख्य से हरे । स्वाडनर्यक आनि समानद्य खार । 'त नीनाम निर्फाण मार्म म শতবাদ স্থান একেশ একড়িব হাটা তাপ च जिल्ला कार्य मार्थ एक असम्बद्धा क e ইয়া । এই ভালপৰৰ্থই সভা এনে । প্ৰায়ন চেত্ৰ ्राङ्कान भिन्ने भागः जनाकाक।

এখন সুনি এই বলা স্থানতে পাব থে
একাংকলি সংসাদের উপ্পোর্গ শিকার
বিষয় করি সালা বলিলে ডাঙা বি প্রাকোল
কর পেতৃপার ইনি পারে লাগ ডি প্রাকোল
কর পেতৃপার ইনি পারে লাগ ডিজনা
ভালার কল কল কলবাললি পিতৃগুছে না
ভালি পারে এমন না। কিন্তু ইনার ভিতর
একই মুক্তা কথা আছে। প্রাকোল পিতৃগুছে না
ভালি পারে এমন না। কিন্তু ইনার ভিতর
একই মুক্তা কথা আছে। প্রাকোক পরিবারে
কতকণ্ঠলি সাধারণ ও ক্তক্তলি বিশেষ ভালি
আকে। ভতরার সেই বিশেষভূকে শিক্তা
করা কি মেই বিশেষভূকে জনা পারিবারিক
সামার্লালে সন্তই নির্ভর ক্রে। এই জন্ম
পিতৃপুত্রের শিকাকে সম্পূর্ণ শিক্তা রন্। এই জন্ম

না। বার একটা কথা এই যে খৌথিক শিক্ষী অংশক। কাষ্ণত শিক্ষারু বিশেষ গুকুর আছে। পিতৃগুচে মাণা বলিলেন বভরতে ভা্জু করিও, দেববকে স্নেহ **করিও**, যাহার সহিত ষেত্রপা সংস্থাই ভাষার সহিত তদুজুরূপ ব্যবহার কলি । কিন্তু ভর্তুগুহে বজা কহিলেন যাও ঐ তে ার সভার, উট্টাকে শুল 🔍 🔊 করে, এই তেগমার জে হের % ৪০০ দেবত, ইহাতের ভোমার **হলে**ড .স্থিতা দেলাৰ পানৰ ফড়। সৌধিক িন্ড, প্রেক্ষা এই রূপ কর্মিত শিক্ষার বন ি পাৰে নয় ৷ এই সমস্ত ভঞ্জি ও জেগের পা ্টে**র**গার গাড় সংশ্রে**ব**্নিবন্ধন ভঞ্জি স্লেহ এডডি মান্সিত র**ডিওলি কি অং**গকা-হাত গতেজ হয় যা। ক্ষত বালে। ভাই-পুরে বাংকতেই সমস্ত **মং**দ্বতির নিবিছে चनुनामन होते । एकिश देवनिकं अधिक्षोत পানে ঘাদশ <sup>কাল</sup>েশনাল **বির করিসা**ছেন। খার আবিধণে ভোগলো**নুপ যেভিনে**ইছা কুচ্ছ সংবৰ্ধ এই জনৰ গোড়**শকে** পরিহার अर्दिश (८% न ।

পাতে যে ঘানশ বস কনাতে বিবাহবাল সিত্ত
ছইলে গেই বালিক। স্ববং পাব-নির্কাতন
কার্তে পাবিরে মান কনাতে বিবাহবাল সিত্ত
কার্তে পাবিরে মান কনাতে স্বাং পাবনির্বাহন করা উচিতে কি না সে বিচার
এ স্কুল প্রত্তাবে হুইতে পাবে না ভবে
ভোমাদের নির্বাহতনের অর্থ এই যে যাহার
স্কিতি চিরু জীবন থাকিতে হুইবে ভাহার
দেশে-ভব-বিভার তিলোগার মতে ভাহা লাদলে কোনও মতে মুখ্বে না। কিন্তু এসকে
ভামরাও ভোষার একটা কথা জিভ্তামা করি,
প্রক্রেই কি ভাহা হয় না রূপ্ত বেনাহ
ভারিকা ব্যন্ত ভ্রুল করিছা দেয়া হির
ভিত্তে ব্রিয়া দেখা এই দেশি ভব-বিভার
ভালিকা ব্যন্ত বিভার আন

ত্রক আপত্তি এই বাদলে স্ত্রীর ভুর্নুত্ব জ্ঞান
ক্ষণে নাং প্রভুত্তেরে আমিও বলিব পাছিত্ব
পারের সাহত ভর্তুত্ব জ্ঞান পার বৎসরেও
হয় কিং স্থেকাং তা বিষয়ের একটা স্থল
জ্ঞান পানর ও বার উভয়ন্তই সমান। এই
জ্ঞান বলিভেছি ঘাদুশ বর্ষ যখন ওদেশের
পারিবারিক একাংহর উপসোলী তখন স্থীর
পানে হালশ এবং পুন্তবর পালে লঁচিশ
বিবাহকাল হওলা উচিছ। তবে সংগানের
ভারাবে এই কন্যাকাল ইত্রার্থ হইলা শাহ
ভাগতে ভোমার সোল বিবাহ ক্রিয়ানের সাহ
পারের জনাভে কন্যা তিরকোমান্ত ভ্রাণ্ড
হই বিরম্ব প্রতির নাং কলত হিন্দ্র প্রতে গ্রহ

भाक देशनिक अशिकारण ए प्रमा विराह्ण्य त्रशाक्षक मोमा मा व्यक्ति दरन । किन्स नामरा দেখিতেছি এট খুদৰ খুখাতে এই নিদিন্ত विवा**र** वयमणे नमयम चार्यको असः जनभी বৈজ্ঞানিক তৰ্কত উপত্তিত হইয়াছিল । তাৰ কহিয়াছেন গার্ম্বস্থানের কেশ ন্ত্রেন্দ লোম অস্থি ও সাম প্রস্তুত কলি কলার সকল পিড়গ (৩)। ভার মানে (।।।৭% যেদ মজ্জ। ও হাং প্রায় হ ্যাম্ম প্রায় সক্তর মাক্স (৪)। তিনি লানিয়াছেন লভাবেন অবয়নগত এই পিতৃজ ও, মাতৃও ভা শগুল গরে কিনোৰ ভাবে হাত হইনে তবে সে खर रहीत । धरेषी दिखानिक भीमारमा कि ना भि विश्वता मत्स्य किन्नु व्यागात्मत किन्ने ইহা বিজ্ঞান খণেকা দম্বিক ক্ষিত্ব-ব্যঞ্জক বলিয়া বোৰ হয়। যাহাই হউক তিনি যে স্ত্ৰী পুরুষের বিবাহোপখোগী বয়োনিকেশ করি-রাছেন তাহা যে সম্পূর্ব ক্লোকাল ও পাত্র-

মঙ্গত ইহার কোনও মালত নাই। তুঃখের বিষয় ক্লড়মান সভ্যান ত্রের মী-যাংদায় তাহা সম্পূর্ণ উলেগি ১ ১ই১৮ছে। এভদভৌভাইহাতে অবিদ্রা ীপের আছে। বর্তুগার সংক্ষার্তের। ১০০০র ব্যস legalari করিতে পিছা এমান্ডে ব**শ্ব**নীতে অংশেক সাজ্যাবিজ্ঞানের ১০০ সংখ্যা এই ব প্রিয়াছেন। প্রিন্তু সম্বর্তির প্রতিক বুলী कारिक खडारी दिन्स्त সন্ধান কে বিষ্**তে** আৰুও বৃদ্ধ ব্যৱহাণ মাণ্ড কা করে, এপাক্রিয়ান বা কারের জ গতিপ্ৰাণ্ড ৰাজীৰ কৰে ২০২ এই পাহা ल्हा, अंदिक आ स्ट्रिंग देखें। दिनदेश त्रश्रामतः अनुकारिक का । अन्यास्य व्यापा मिश्रिम ( फाला (ब्राह्म) । १ ५ छ भ क দটেচ্জন্ম্যালটে **ন**বলীবন্ধ ১০ ्षाप्रा अक्टबर क्वेन्द्र अस्ति । जेन् । भार करा १७०० जुड़े १६५ र १ कि त নিতা ইটক আৰা বামাণ্ডা, ১, বিক र्केश विश्वभिष्य निराष्ट्र दला श्रेष्ठ हर वर्ष्ट्रभारन আলেবের সমাণতার বেরূপ অবস্থা ভাষাতে ভতিক্ষাৰ স্থান্নভাৱ সহিত এই বয়স্থা অন্তার প্রিচ্ছ মহিলে সেয়া ঘটনার বিলক্ষ্ मुख्यातमा भारत । यदः अदमक वाल भनिद्राप्त য়ত্রণ পর্তথ্য ক্ষেত্র এ বেপ্ত সাধাৎসায় কাড্টিয়াছে এই থে, বেলা লোব পরিছার করিছে এয়া অব এছটা ভরেণর এই জনা र ति भागा। দৌষের প্রশ্রের সান্। জিক প্রশ্নের নীসাংলা করিকে কেল বিজ্ঞা-(मत शक्ति पृष्टि ताथिरंग 'ठिकिटन मा । अर्च-নীতি প্রক্ষিত হইবে কিনা ভাচাও দেখা **हाहै। अनुग्रांख हरें हैं** पृष्टि पृष्टिनी जि যার তবে ভাহার থাকে কি " কিন্তু হিন্দু ঋষির মীনাইপাঁর ৭ দেখি গদিবার সম্ভাবনা है। निभ्धा कथा औरनाट

পিত্ৰত আপোকা ভাউনাত বৈহাতিত শাম্ম

<sup>(</sup>০) গৰ্ভদা কেশক্ষ গোমাহি নথ দন্ত শিরা নীয় খুমনীরেতঃ প্রভূতীনি ছিলাণি শিতৃজানি।

<sup>(</sup>৪) মাংল শোণিত মেনে। মজ্জান্তৎনাতি যক্ত্ নী-ভাষকল প্ৰজ্জানি কলনি নাকলানি।

ं तकात जना अका तिर्मा गरनाद्यांनी इत W किन् मगारकत तरक दाई अकीर जत गर्लीत কারণ ভর্ত্তাহ ভাষার সাংসারিক জীবনের मुशा त्का । ज्या विश्वता कतिएक भातित्व তাহার তিন কুলির মুথ উজ্জল হুইবে । হিন্দুন্ত্রীর ইছাই এর বিখাস। অতএব ভূমি যদি ঘাদৰে কনাৰি বিবাহ দিয়া তাহার नमेख मध्य जिन्न जान करितात जम्म ভার্ত্তিহে রাথ ভাষা হইলে আত্মরক্ষা ভা-होत् **भरक महस्र** इहेर्र । এখনও দেখ হিন্দুর ভিতর বিবাহে 🛊 পর কনাকে যে বিপত্নতহে বড় থাকিতে দেয় ন। ইভার কারণই বিই। যাহাই হউক, বর্তুনান সংস্কারকের। विवारहत , वर्शानिकीतः । यथन धर्मानीजिरक উপেক্ষ্য করিয়াছেন তথন তাঁহাদের সিদ্ধান্ত বে কোনও জনসমাজের উপযোগী নয় ভাষা স্থানিশ্চিত। সুক্ষা বুঝিতে গোলে ইহা স্মাজ-र्गेगिठटनत्र अनः। नम्न हैश मयाजनस्मत जनाः। ুবু নিয়ম যত শীন্ত এ দেশ হইতে তিয়ে-হিত হয় ততই অদেশের ইঙ্গল।

্রামরা উপসংহারে সংস্কারকদিগকে একটা কথা বলি । হিন্দু স্মাজের ভিত্তি रेनिकि। हेश कु उन्छ माना हैशत ভিত্র কোন রূপ সংস্কার আছিনতে ইইলে नर्सार्थ धर्भात्रं नित्क नृष्टि होणिएक इट्रेट । ইওরোপের সামাজিক / ভিন্তি আর্থিক। ছাহার দৃষ্ট্যান্তে কোনওরূপ পরিবর্জন আনিলে ইহার বংক তাহা কথম সহা হইবে ন।। কিন্তু সমূজি এক স্থলে কোন কানেই দাঁড়িয়া থাকিবার নয়। তুমি ইচ্ছা না করিলেও ইহা আপন্ত্র শক্তিতে চানতে থাকে। কিন্তু তা विनय्न नियायदेवत्र नात्र विश्ववर्षे जातीवर्षीत ट्यांक्क बना विक नहेंगा शहें ना। हेरा जानबाद नाजिएक हन्द। जाते इत्क क्षन निष् कॅनिट्र ना। अद्भ लागात केश्न (करन छाहात करूक (काइन कहा। क्षित्रकान वृत्रिया जाहाहिक्य। द्वीपत्व और

ক্ষোথিত নৈতিক ৰীজ যাবং চক্ৰসূৰ্য্য দুখন क्रेन প্রসং করিবেন।।

#### প্রাপ্তি স্বাকার।

**পামরা** রুডজ্ঞার সহিত স্থীকান করিছেছিয়ে নিম্বিতি প্তক ও পত্রিকাগুলি উপহার প্রাপ্ত হট্ য়াছি ট

- ১। বাদ্ধবর্ষ দ্বন্ধীয় প্রলোভর। প্রথমভাগ।
- ২। উদ্যাপা-- শ্রাপ্রেমনাগ শাস্ত্রা প্রাণীত।
- পু এপ্রাবনা —পুর। ভাষতীশচক্র বোষাল
- । মদ থাও নেশা চুটবে না। জীপ্রিয়নাথ চক্র-বভী প্রণীত।

এই গ্রন্থ কিব মহাকবি ছাফেজের আাম এক व्यानीकिक मामत व्यामनानि क्रियाह्न । हेशत छन्। এই त्य व्यना महित नात्य देशक (नमा कृष्टित ना। আমর। গ্রাণকের এই মদ পান করিইত **অনুৱোধ** করি।

- e ! Revised Prayer book. Compiled by the La Charles Veysey, B A.
- b) Vojvey's Semmens—1885.
- 9 : Theisuc Church The order of public worship &c --

Bibliotheen Indica, Published by the Asiatic Society of Bengul.

- N S. N. 575, (Lalita Vistara)
- N. S. N. 576. (Zafarnamah)
- N. S. N. 577. (Prithiraja Rasau) (
- N. S. N. 578. (Uvasagudasao) de "
- N. S. N. 579. (Chaturvarga chintamani)
- N. S. N. 580. (Nimkta)

Proceedings of the Asiatic Society of Ben, gal May, June 1886.

Theosophist, August 1886.

Fellow Worker, July 1886.

ধর্মজাচার া আগাড় ১০৯৩।

वामाद्वाधिमी পতिका। जावन ১२००।

थारमधिम।।

ন্রা ভারত।

व्यक्ताव ।

ি আগায়ী ২৭ আখি**ন সক্ষ**ৰবার "ৰা ধর্ম সমাজের" চতুর্থ সাম্বংসরিক উৎস্ক वर्णायुत्रानी अट्डापयन अनामनाइ हेंद्व । বোগদান করেন ছবু নিভান্ত প্রাথনীয়া



# তভাবোধিনী পাত্রকা

इद्याणकासिद्सप्रधासीत्रात्यत् तिष्ठनाशीभिदिदं सम्म सङ्जत्। तद्दंश नित्यं ज्ञानसनन्तं ग्रिषं स्वतमितिरव्यवसिकसेवादित्यस् सन्देशिप सर्वात्यम् सञ्जात्रयसम्बेषिकः सम्बेशिकार्दभ्यः पूर्णसप्रतिसैसिति। एकछ तस्येवीवासम्बद्धाः पार्विकसेदिकात्र ग्रामश्रवति । तिविकत् प्रतिक्व य प्रियकार्धाः साधन्य तत्र्वासन्धेकः।

# ... ञानि जुमिनम् अ

ণ ভাদ্রে রবিবার ত্রা**ন্ধ** সম্বং ৫৭ ।

আচার্ট্রের উপদেশ।

खाकार्यका रत्नम "बाञ्चा यां पदत कहेताः. त्याक्रत्यामस्त्यानिविधानिक्याः। श्रेया-ज्ञारक पर्यन खंदन सनन् अ निविधानन् क-রিবে। প্রথমে পরম্যাকে দর্শন করিবে। च्छात्नद्र विषय यथन क्यान-भविधातन छेश-শিক, তখন তাহার প্রতি চক্ষু উন্মীলন ক-बा'त नाम पर्यन । शत्रमाचा रथन जामादपत জ্ঞান-সন্নিধানে উপস্থিত, তপ্পন তাহার প্রতি कान-एक कियोनन क्रितलरे शत्रमाञ्चादक ক্লিব করা হয়। পর্যাত্মা আক্লাদের আ-স্মাতে স্বৰ্নাই উপুহিত; কিন্তু গোহ-অন্ত-কার মাঝখানে আদিয়া ধখন তাঁহাকে আ-জুলি করিয়া কোলে তথ্ন প্রযাজা আমাদের নিকট উল্লেখ্ড থাকিয়াও অকুষ্টিত; আ-वात राधन छोड़ा छोड़ा वास विकास (अयात वारगार शित्रा। रगार अपना कर

করিলেই আসরা তাঁহার দর্শন লাভ করিয়া কৃত কৃতার্থ হ**ই**়ু

আমাদের জ্ঞান নানা জাতীয়; সকল জাতীয় জ্ঞানকে আমরা দর্শন বলি না; যে জ্ঞানের লক্ষ্য-বিষয় আমাদের সরিধানে উ-পস্থিত, সেই জ্ঞানকেই আমরা দর্শন বলি। चात्र - जाली स ज्ञान पर्नन नट ह ; कात्र न, ज-মুপস্থিত বিষয়েরই স্মরণ সম্ভবে। ভারনা-জাতীয় জ্ঞান দর্শন নহে; কারণ অনুপস্থিত বিষয়কে উপস্থিতের মত করিয়া মনোমধ্যে कन्नमा कन्नान नागरे जीवना ; पृष्ठे विषय जातनात विषय नत्र, जन्हे विषये जावनात विषत । अयुगान-काजीय छान पर्गन नरह ; कातन कार्यानं जावनातरे मन-पूकः; पृष्ठ विषयात्र मणकामूख जन्हे विषया हावना, रययम श्रुक्त नश्केन्द्रक चार्रक छात्रना, हेरात अपूर्मान । अपूर्माक खारमा-विट्राय खेंछताः जारा मनेन नटरा

हार्गन उंटर कि ? उटकत पर्गन करें गर्छ-बार्गन पानता पानता श्रीन कतिया पानि । किंग उटकत प्रथा केंद्र स्था, बाह्य नहेंद्र ; उदाकी उटनत प्रथा, पाटि, पानक नहेंद्र ; उदाकी उटनत प्रथा प्रदेश जाना राजा अक्रान मत्या बार्टक्र चारक के करने देशा के श्रकात रख देशा, তাহা অতীর কর্ম কলা যাহা বৈশী शाहि जम कार्र किथिए शाहे ना ; क्या আশার শ্রেনিক্র কত কি উদয়াত হইয়াছে जाना जांका बार्म नाहे। बरनत एक .অপেকা চকের দেখা স্থিরতর; কলা যে দ্ৰ চি**ন্তা**্ৰেরপ<sup>্</sup> পূৰ্ম্বাপরক্রমে আমার भरनाभरका (पर्वा विद्यारक, अमा स्मतं भ्रा-পর-তানে সে-সর জিতার দেখা পাওয়া অস-ন্তব ; কিন্তু দশ বংগর পুর্বের 🐠 সমাজ-यन्मित्तत त्रशास्न त्य क्षेड्रीत स्मिथ्या व्यक्ति किक् रमहेथारन दम्हे शाही इरिम्थ তেছি; অত এব চকের কেন্দ্র মন্ত্রের দেখা অপেকা হিরতর। আনার দেবা চফের দেশা অপেক্ষাও স্থিরতর িএমুর্ন কত বিষয় আছুর। চকে দেখিয়াছি—এখন বাহা কেবল ক্ষাক্তিক ই কথকিং দেখিতে পাই, এক স মধ্যে যাহাকে আমর। ঐতিনিয়তই পদরে Cमरिकारि - এथम रह का माजममूर भारक ना त्मरम हारात पूर्वन भा अशा विमल्दा। কিছু আত্মকে স্থেতিবার জনা কোন কা रमहे मुद्र शारे एक हम ना। ब्रिविश-पर्गन वाबाटनव निद्धात वाज्ञाधीन नटर, এই অনাই তাহা অনিশ্চিত র আত্মার দর্শন मानिएमत निष्यत्र आराज्यधीन, अटे जनार विश चित्रजत । चा मारमक प्रकृत (पारत प्र वस्त्र जन्मन रहेटाई भारक जारमारका स्नाराक विषय जाना । इत्रेड शाद्य गानिशा अपूर्व विकास निकारिय विकास अपनि कर के नीटक आवाद मन प्रदर्श हक् व प्र-त्रव क्रीएक त्राबकुरके हैंगे त्या क्रमर्थन स्टब्स क्रम क्रांटन क्रिकारमेक स्था, स्थान क्रम अस्ति मूर्वा स्वामित्र क्रिया क्राव क्र केरन कार प्रदेश कार कार के कार कार कर

ক্ষার আমোক, এবং আতার চকু সৰ-पहें बनागाद वर्डमान, धुक्ता आयू-पर्न चामालिक माननाटण्य नीमिछाधीन। <u> बर बहुन्द्र रम्था जूनिका हरकड़ रम्था चित्र-</u> তর, চক্ষের ধেখা অপেক্ষা আত্মার দেখা बाह्या विवेष्ठित । मदनवे देनेथा बाह्यांका, ত্তের প্রথার সহিত আত্ম-দর্শনের অনেকটা मार्च चाट्ट। हटकर दम्या সন্মুখ-স্থিত প্রাচীরকে আমরা প্র-ত্রীক্ষ দেখিতেছি; আত্মার দেখা স্বতঃসিদ্ধ জ্ঞান,—আক্সাকে আমরা স্বতঃ উপলব্ধি: করিতেছি—আক্সারই ছারা আক্সাকে উপ-লব্ধি করিতেছি। প্রতাক্ষ জ্ঞান এবং স্বতঃ দিছ জ্ঞান এই তুই প্রকার জ্ঞানের মণো সাদৃশ্য এই যে, উভয়ের কোনটিরই বিষয় অনুপঞ্চিত নহে, উভয়েরই বিষয় উভয়ের স্কিধানে উপস্থিত, দৃধি রক্ত চক্র সলিধানে উপস্থিত, আল্লা আল্লার সমিধানে উপ-স্থিত। প্রতা**ক জ্ঞানের সহিত স্বত**র্মসন্ধ জ্ঞানের এইরূপ সাদৃশ্য আছে বলিয়া সতঃ-দিন্ত জ্ঞান শাস্ত্রাদিতে অনেক ছলে প্রজাক ख्यांन वा मर्गन श्रीतका निर्मिक रहेशद्रका কিন্তু প্ৰত্যক্ষ জ্বান এবং ৰজনিম জ্বান **उट्याह मर्सा स्थान मामुना कार्या,** ट्यान श्राटक कारक , श्राच्या कार्यात्मा विषय সময়ে উপবিত হয় এবং সময়ে অনুপ্তিত हरू, - ब**रे** मशाख-शन्मतं अथमः **पाणारण** সমিধাৰে উপস্থিত কিন্তু কিয়ৎকাৰ শক্তেই অনুপ্ৰিত হইবে, কিছু সতঃদিদ জানেই तियम विद्रकारको आमोदन मनिदादन जन वित्रं थावित्व। अधाने स्वादनके महिष यक्तिक कात्मर शहेत्रभ द्वारा नरक केरुत्वत गर्वा परशक्तक विकास मामृना चाट्ड क्लिमा कडाकि आ चटगक चाद्रक**्षण्य**न निकास

অভ এর পরনাম্রীকৈ দর্শন করিবে ইহার অর্থ ্যুদ্বারা পতঃসিদ্ধ জ্ঞানে আর প্র-ভারেট দশ্ম করিবে । মনকে নির্মান ক-বিষা শ্ৰদ্ধা ভক্তি এক প্ৰীতির সহিত পর-माञ्चारक पर्मन कतिरव । ४० रिमह ज्लादन আমরা বেষ্ট্র আমানের আজানেক লোক-তেছি—তেমনি আমাদের আজার অংশ্য প্রকার অভাবও দেখিতেছি ; আনাচেত ন্ন কথনো বিধানে আছেন, কথনো ভূতে নিজ-भान, कथटना ज्यानटन्त छिदकुतः, परानाटपत ·**जाजा** करेतान स्थ-११४-१४ गामित प्रस्क নিশত বিভাৱ হুটা চেছে ্ স্তগ্ৰন কালে আম্বর, আমানের বারার অবর্গতা সাক্ষাৎ উপলব্ধি । ३ এবং মেই জাগার্ভার প্রাণ-শ্বরূপে পরিপূর্ব মহান পর্বাস্থানে সাক্ষাৎ উপলব্ধি করি; এইনপে উল্লেক্ত ভাষরা প্রত্যক্ষ উপলার কুনিবয়া ভাষাকে এবা ভক্তি खर लोजित मश्चि लागम कति—के शाक অচেত্র হৃদয় সমর্পন করি, উচ্চোর চল্লুর ক্ষাঞ্জে প্রামরা **আমা**দের শিল্পারের ক্ষান্ত অভাব-সমস্ত বেদন।--ই গু ক্ত করিয়া দিই। তথ্য তিনি আমাদিগকে সংস্থা করেন-শান্তি-বারিতে তিনি আনাটেনর আগ্নাতেক প্রিপ্লাভ করেন - অয়তেখ উৎ্যাজিৎনারিত করিয়া দেন। জ্বাহাধার ভাই বলিতেছেন

শির্মানে রকে প্রথমনিন্নোহনীশ্রা গোচাত মুক্ষানঃ। জুঠা বলা পশ্যতান্ত্রনীশ্মস্য মহিমানান্ত বী্তশোকঃ॥

"জীবাত্মা পরমাত্মার সহিত স্থান নকে।
নিমগ্র রহিয়া এবং দানভাবে মুহানান হইয়া
দর্মনি শোক করিতে থাকে, কিন্তু যখন দর্মা
শেবা ঈখরকে এবং তাঁহার মহিমাকে নেথিতে পার, তখন ভাহার আর লোক থাকে
না ।" জীবাত্মা পরসাত্মার সহিত স্থান
হকৈ অবস্থিতি করিতেছে ইয়ার আর্থ কি প্
এক স্থান-বিত, তুই বস্তর এক্টিকে ছাড়িয়া

বেশন, আর একটিকে প্রভাক করা সন্তবে না, রক্ষকে ছাড়িয়া রক্ষ-নিঃহত লাগা প্র-ভাষ্ণ করা সম্ভবে না, সেইক্রণ প্রমালকে ছাড়িয়া জাবাস্থাকে ওতাক হরা সম্ভবে না তেন্**না জীবাস্থার** যাহা কিছু সম্দ্রটে প্রদ সংস্থাকে এবং ভাঁহার প্রসাদকে জপেকা বরে। চিত্র**করের** চিত্র মোনদর্শা, কবিল ক-विका-सांसूर्या, अवर भागकात भी छ-स पूर्वा (ब-মন সভাবের সোলধ্যের অন্তর্নাশ জীবা-স্থার ভাগে-প্রেম সেইনপ পর্মার্ক্তর জ্বান প্রেমেন্ট ভানুপ্রকলো। সভাবের মৌন্দ্যাকে ছাতিয়া খেমৰ ভিত্ৰকরের ভিত্র-সেন্দর্গ विदुरी नाम, सार्क्षण श्रेत्राञ्चाक हाड्या कोताला । तक्षे नाम । अकारतत त्रासरी থদি কোথাও না থাকে, ওবে চিত্রক্রের <mark>চিত্র</mark> ক্তির কবিডা: এবং গায়কের গীত: সমস্তই त्राथ इहेश। भारा : भारा, खंछ। त्वत स्मीन्मर्यात লাছত উচারা ধতগনিপ্ত-রূপে সংযুক্ত গাকে, ভৰণ উহাল মজীৰত। প্ৰাপ্ত হয় ; সেইদ্ধপ পাশানের আত্মা পর**মাত্রার সহিত** যত প্র-গাড় রূপে সংগ্রেপ্ত থাকে, ভাহা ততই মজী-ংক, প্রাপ্ত হয়। আনাদের **জ্ঞান যে-অংশে** মজীৰ ব্ৰাম, **আমাদের প্ৰেম**্ যে-অংকো াদার প্রেম, আমাদের আল্লা মে-**অংশে** ২০০০ অভ্যা, দেই অং**শে** তাহা প্রমান্তার অনুপ্রকাশ এইরূপে জামরা পর্যাভাতে জ্ঞানলোকের স্থ্য রূপে, জাল্লার জ্ঞাবের পরিসমাপ্তি রাপে, আত্মার প্রব এবং অপরি-বত্নীয় আতার রূপে, কতঃসিদ্ধ জ্ঞানে সাক্ষাৎ উপলার করে।

তাখার বস্তু দেখিবা মারা আমবা যেমন তাখার মোল যাৈ মোহিত কই, পরনাজার দর্শন-মাত্রে আমবা, তাঁহার প্রতি সেই প্র আরুষ্ট হট: তখন, আমাদের ক্রিন মন প্রেক্তেশালিরা বোমল হইয়া যায়, তখন আ-মরা ভাঁহাকে আয়াতে চিরকাল প্রেম-বন্ধনে

-

বাঁদিয়া রাখিতে ইচ্ছ। করি। কিন্তু পর-**যাত্মাকে** চির-আলিঙ্গন-পাশে বন্ধ করিয়া রাখিতে পারে—তেমন প্রেম কোথায় ৷ পর-মা**ন্তা নি**ে েমন অদীম প্রেমের আকর তেমৰ আঃ বৃক্ত ভাছার প্রেন্ত কোটি অংশের : থেশ পাইলে আমনা দেবতাদি-भारत वर 👵 ९ ४ना हहेश घारे। शतभाषा যথন ভাহার অতুলন মহিমা এবং মণ্যয় মৌন্দর্যোর স্থিত <mark>আমাদে</mark>র আস্কান্তে জাবি-ভুতি হ'ন, তখন আমরা ভাষাকে ভাক্ত-ভরে প্রথম করে, তাঁহাতে ক্রম সম্পণ ক্রি, তাহার অন্ত প্রাদ-বালিতে দেহ মন পবিব্যাকার, তখন ভার আমাদের আনদের · সীমা **থাকে না** : কিন্তু আমাদের স্বাস্থ্য আজা এক কালে কত আনন্দ ধারণ করিতে পারে ? উষার পবিত্র নিশ্বাসে প্রার্গিক্ পার্যক্রিয় **रहेशा ७८५ अवर**्मिह निश्वादमह खिना जल-চিত হইয়া **সায়।** প্রযায়া আ্যাদিগকে দর্শন দিয়া **আমাদের** আত্মানে যত দ্র পূর্ণ করিবার হয় ভাষাকে পূর্ণ করেন, যে আত্মার যত দূর ধারণ-শক্তি তাহাকে তত দূর কৃতার্থ করেন, অবশেষে আমাদের দর্শন হইতে অ স্তবিতি হ'ন ; – তথন আমরা কোণো ছিলান আর ,কাথায় আসিয়া পড়ি! সুর্ব্যের অন-র্শনে পৃথিবীর যেরপে দশা হয়, পর্মালার অদর্শনে আত্মার দেইরূপ দশা হয়। गांभा यथन अनुर्यन होन, ज्यन जाभारमत কি কর্তব্য ে আমনা কি নিরাশ হইয়া পড়িয়া थांकित १ अवायाधर्य बनिएउएइन ষ্ণাকে দুৰ্গন্ন করিবে।" কিন্তু যথন্ ভিনি<sup>\*</sup> पार्मात्मत एक रहेट प्रवृहित र'न, वर्षन ष्यायत्री कि कविष्ट १ अखीकाशचा बुनिए उद्देशन अवन अनः ममन किरिय । अन्न-बाहा-मृहे अख्य चर्न स्म अद्रश्रे श्नर्माति म्लृश छ-ুদীপু হয়, দু**র্গন-দান** কুরা প্রমায়ার कार्या - विश्व मनेन न्यूराह्म चरका रहेए

ना दम्खा चार्नादम् काचा ; चारा-छेशान-क्ता (यसन हेसने नरेट्यांश कतिया मर्तिमाहे অ্থিকে প্রজ্ঞানিত রাখে, সেইরূপ ঈশ্বরের গুণানুবাদ শ্রেবণ ছারা ঈশ্র-স্পৃহাকে সর্ব্বদা প্রদীপ্ত রাণ। কর্তবা। তাহার পর শ্রুত বিষয়ের মনন করা কভবা । অণুপস্থিত পিষ-য়কে ভাবনার ক উপস্থিত করিবার নাম মনন। পরমালা এখন আমাদের অভ্যক্তক হইতে অন্তর্ধিত হইয়াছেন, তখন ভালার कथान्धरान आयोरतत स्ट्रा छोहार पर्यन-स्मार वन कविशा छिती, धरे छन। उथन নির্ভান প্রাক্তেশে পিয়া আল্রা উল্লার মনন-কাষ্টো প্রায়ন্ত হটা: বাহাল দর্শন-বিরহে ভাঁছার চিন্তাই তাম'দের সভাব হয়। আহার উদ্দাপন হইলেই চিক্ষে প্রয়োজন হয়; এং সেই চিয়ার প্রগড়তা এবং এলাগ্রতাই निनिधामन्। क्लाः। अत्र एट्ट्रव व्यक्तिरंगः চিন্তা প্রথম এংগ্রেডা সহকারে ঈর্বরকে भरमागद्धा, जाञ्चान'क्राब, क्रेश्व ख्थन्। भाध-বেব খাত্মতে গুনবার **আবিভূ** 💝 ন। ভিয়ন ক্রচণ্ড রৌজের পর প্রতিশ সংক্রিয়ান শ্র যেমন অভিক**্র রমনীয়, প্রী**ত্মের **স্থি**রে দেবভার বর্ষণ থেমন অধিকতর রম্বীয়, বেই-क्रां भत्रमाञ्चाद अस्रोतं उथन ७८७ त संबद्ध ्रक्तु**रभक्ता अधिक**जन तंत्रनीह इडेग्र**ं डेटी** তথন ভক্তের কত্না আনন্দ; তিনি তথন थना धना **बरेशा भूनकात्र ने घट**तत हतरा धन्छ 🛊 ন, পুনর্বার তিনি ঈবরকে জনরে বরিয়া 🔏 ক্লাবেন, পুনর্ফার ভাষার মুখ উজ্জল হয়-कीशात मरनित्र कथा क्लाहे अंक्स छ महाहित् হইয়া সর্বতে মূক্ত স্থীরণ যাতায়াত করিছে 🎄 थाटक-काहात महीरत का कि एत, काराब : জীবন জন্মের মৃত কৃতরতার্থ হয়।

হে পরমান্ত্র ''আবিরাধীর্ম এবি'' ভূবিত হাদয়ে আৰু আবিয়া ভোলাকে ভাকিতেছি ভূমি আমাদের নিকট আবিভূতি হও ক্রিয়া মার চরবে প্রাণিত করিরা জ্বামরা জীবনকে
নার্থক করিব তুমি আমাদের নিকট আবিভূতি
হও : হে ভক্তের সর্বাধ ধনু—তুমি আমাদের নিকট প্রকাশিত হও ! তোমার মধ্যে
আমাদের মধ্যে যেন মোহ-ব্যবধান না
থাকে ; ভোমার দর্শন-লাভের জন্য আমরা
এখানে সমাগত হইরাছি, তোমার চরবে
প্রাণিপতি করিতেহি, ভূমি ভোমার প্রাণাদনারি বিতরণ করিয়া আমাদের সমস্ত কামনা
ব্যবহা

ওঁ এক মেবাৰিভায়ং।

# मर्भन-मरहिङ।।

ব ৬২ ৩৮মর প্রেক্ট অব**শ্যস্থাবী নিম্নের স্**যান অনুধান্ত**্**।

নিস্থিনেস্বাজি বলিতে প্রেন্ ८४ । १५ जटलद् कावा- मिणत्र क्यां- षद्या-रावि भाग भक्तरक अन्तर्भ श्रृष्ठ वर्गा छ-भाग काउरा मेछ कडारमा कि जक इरे আবশকে হ আব আন ভানের সদলে কোন মতানত প্রকাশ সা করিয়া প্রক্রিখনি (क्वल मनुभा-ख्वात्नव मुक्दक के महत বিষয়নের আধিপতা সপ্র্যাণ করা হায়, তবে তাহাই ক এখাকু বি পকে খণেও न**टर** १ े**ंडाङ।** यनि इंद्रपक्षे रेश, उद्द अद्ध-माधात्रगण्डः मकल ख्वारमत ऋस्य छ-मकन নিয়ম চাপা**ইতে না** যাওয়াই তো ভাল। ্কিল্প, ভাতঃ, তাহা যথেপ্ত নহে। আমা-দের কার্টেগ্যাদ্ধারের জন্য এটি সংস্থাপন করা নিতান্ত-পক্ষেই আবশ্যক (অতীৰ স্পান্তী-ক্ষরে এটি আমাদিগকে স্বীকার ক্রিতে হই-তেছে) নিতান্ত-পক্ষেই আবশ্যক যে, একা दिवन मन्त्रात छान नर किन्न नकन क्षानरे-कान गावरे के नकन निष्ठात

এ জন্য উপরে যে ইন্সিত-টি বশ্চাপম। প্রক্রিপ্ত হইল (কি না—শুদ্দ কেবন মনুসা-क्कारनवर्षे कुथ। कर्श रुडिए) १ एस छ। হাতে সন্মত হইতে পারে ।। তব্ও যার এথানকার এই পদ্ধতির বৈশ্রচস্থতে জিজ্ঞাস্থ ব্যক্তির মনের ভিত্য কোন ওচার বোঁকা থাকে, তবে আমরা ভাষাকে ১৪ প্রামর্শ দিই ষে, প্রতিপক্ষ-বিদাতে চর নি, ল योश जागता है जिल्लार्स (प्रथानेगाहिन्दे नाम সকল-ভা**নের গকে**ই একাড অলুজানায় কি मा- এ विषद्ध जिन जानामि कि दरान ভাষা এটবার স্থির-ভিত্তে 🛎 দিয়ান কেন্ডা : পের্ব। মান্দ্রেই হউক খার অমাক্সিকট कर्षेत्-रकाम क्रांस्ट १४०२ ११५८७ र ८ लंद छिच्यद्व र महा दान्स করিটেছ পারে গ হিন্দি প্রাথনিই বানিদেন-कथन्थे मा १ । उटलहे इही हार हर १५० ह প্রকারিশ্বলের বিশ্বস্থা মহার হারের হারেল নিবিংগলে বল্লা,। স্ভাস্থারণ্ডঃ স্কল स्वाटनम्ब मन्त्राक अञ्चल । यकि । क्षेत्र हिन्दकाट्र स নিধ্যে (দেখন জ নিংম দির) বলবন্ত। সং-স্থাসন করিতে থারি, ভাষা ইইলেই তেন সমস্ত বিভাল মিটিয়া গেল, ভুলামানের প্-ক্ষ্ট স্থির-তর রহিন। এখানে দল্ তাদ শাক যে, আমাদের এই **ড্র** পূর্ব্বাহেই ७७ किছू-चात गानिया लग्न मी (य. शकू: -জ্ঞান ছাড়া আর জোন একাব জ্ঞান হাছে ু এ তন্ত্রের কার্যারভের পক্ষে ওরূপ মানিধ্য লওয়া আবশাকই হয় না—সূতরাং উহা অপ্রাদিস্কি । কিন্তু তা বলিয়া—। তন্ত্র এ কথাটি বলিতে ছাড়ে না যে, মণ্যা-জ্ঞান ব্যতীত যদি (বহুতে বা সম্ভবতে) আর-কোন প্রকার জ্ঞান পাকে, তবে তাহাু, ঐ-সকল নিগমের বশবর্ত্তী ভিন্ন আর-কিছু ু হইতে পারে ন!; কারণ, ও-সকল নিয়ম জ্ঞান-মাত্রেরই, এবং চিন্তা-মাত্রেরই, সন্তাব্য-

ভার নিদান; উহাদিগকে ছাড়িয়া জ্ঞানও মন্তব হয় না, চিন্তাও সম্ভব হয় না।

अनम्बं कि-त्मारयत मात्र अकिकमन।

এই তন্ত্রের বিরুদ্ধে এই আর-একটি আপত্তি উপাপিত হইতে গাঙে যে, মনুষা-বৃদ্ধির অতীত ক্লিয়াকে মনুষা-বৃদ্ধির আয়-তাধীন করিয়। প্রতিপন্ন করাতে—এ তন্ত্র-ট্রি অসম্বতি দোখে লিও ইইয়াছে। এ ভন্ত ও-রূপ কোন দোমেই লিগু নহে। এ एन नंतन अहे (य, मनू (सात त्कि अपि तन् ব্রিতে পারে যে, অনেক বিষয় বাহা তাহার নিজের অগমা, তাহা আর-কোন উচ্চতর বুদ্ধির গ্রা হইলেও ইইতে পারে; এজনা নে-সকল বিষয় যে, একান্তই বৃদ্ধির অগমা, অন্ধণতই বৃদ্ধির অগম্য, তাহা নচে; তবে **কি না, ওরা উচ্চতর বৃদ্ধি**—যদি থাকে; **শ্বিণ, তাহা বৈ—আছেই আছে—**এরূপ সি-বাহ আংগ ভাগে মানিয়া লওয়া এখানকার **অভিনৈত নহে। ও-দকল** বিষয়, আমাদের নিজ'বৃদ্ধির, যদিও অগম্য, তথাপি উছাবা বোধগর্মার কোটায় স্থান পাইবার উপযুক্ত। বায়ার্কের এই তন্ত্রের মতে—বেশগমান কোটার ভিতর তুইটি কুটুরি:—প্রথম, স্মানাদের আপনাদের বৃদ্ধির গম।; দিতীয়, জাঁমাদের আপনাদের বৃদ্ধির অগ্না হট্যাও (বস্তুতঃ বা সন্তবতঃ) আর কোন-না কোন বৃদ্ধি গমা। এই দিজীয় কুটুরির সামগ্রী-গুলিকে আমরা সাক্ষাৎ সক্ষমে ধুনিতে भाति ना वर्षे, किन्छ अहै। वृत्तिर् भाति दर, তাহারা বেষিগমা, কুমানাদের আপনাদের वृक्तित्र अमा ना इंडिक्-मंथात्यां मा मृक्तित नगा । এই कुन् देनचा या है एक हर (य, दर्गाय-शमा कोहात बिकासता क्षेत्र यकि प्रेणि, किन (कांग्रेटिन अकि नाम कामका दकारोत श्रीक्षमा क्या गरा करा अथक तर्भ विदेशका, क्रांड्रा एक क्रिवर भागा

নের আপনার্থের বোধাতীত চইয়াই কান্ত নাই — তাহা একান্তই বোধাতীত—স্বরূপতই বোধাতীত ; একান্ত বোধাতীতের আর-এক নাম স্ববিরোধী বা অসপত।

শাসক্তি-দোষ আমাদের নহে কিন্তু আমাদের প্রতিশক-দিগের

💆 💆 দাসতি দোষ যে, আনাদের নহে কিন্তু আমাদের প্রতিপক্ষিত্রের, তাহার প্রমাণ এই যে, চিন্তনীয় এবং অচিন্তনীয় এ তুমের মধ্যে সচরাচর সেরূপ দার্শনিক বৈলক্ষণা নি-দিট্ট হইয়া থাকে, তাহা এমনি এক ইষ্টি-ছাড়া ব্যাপার যে, তাহা নৈয়ায়িক শ্রেণী-বিভাগের কোন নিয়মেরই প্রতি জক্ষেপ करत ना, ও তাহার উৎপীড়নে দর্শন-শাস্ত্র এ-যাবংকাল মরণাপল হইয়া ্রহিয়াছে দার্শনিক পণ্ডিতেরা বস্তু-সকলকে (ব**স্তু-স**ক্ত এখানে অতীব ব্যাপক অর্থে ব্যবহৃত – অর্থাৎ, छात्नत विवत्त-भाजरे अशान वस्त्र) मार्गनिक পণ্ডিতেরা বস্তু-সকলকে তুই শ্রেণীতে বি-ভাগ করিয়াছেন; যে সকল বস্তু আমাদের আপনাদের চিন্তনীয় তাহারা একদিকে (এই সকল বস্তুকেই প্রকৃত রূপে চিন্তুনীয় বলিয়। ধরা হইয়াছে), আর, বে-সকল বস্তু আমা-দের আপনাদের চিন্তনীয় না হুইয়াও অন্য কাহারো-না-কাহারো চিন্তনীয়-ইহারাএক-সিকে; তাহার মধ্যে শেষোক্ত ভোগীকে জাহারা একেবারেই অচিন্তনীয় বলিয়া ৃত্তির ন্ধুব্লিয়াছেন। ইহাতে ফল কি দাঁড়োই**তে**ছে ভাষী একবার দেখ; – যাহা শুদ্ধ কেবল আষাদের আপনাদের অচিন্তনীয় ভাছা ঐকা• স্থিক অচিস্থনাথের কোটায়-ত্র্পাৎ সবি-तारी अवः वर्ध-गृत्मात्र कोहात्र-चारक . পড়িয়। বৃহিতেছে। তিটা নিঃসংশয় বে, ष्यायादनम् ज्ञाननादनत चित्रस्मीत्र किन्छ पानि কাহারো চিন্ধনীয় একপ তল্পের সঙ্গে আমী দের আপনাদের চিত্তনীয় উত্তের বসং করে-

কটা সম্পর্ক আছে, কিন্তু তাহার সঙ্গে স্ববি-রোধী তত্ত্বের আদর্বেই কোন সম্পর্ক নাই; ইইলে হইবে কি—আমাদের তত্ত্বক্ত ভাতারা দে দিকে আদর্বেই দৃক্পাত করেন না। তাহারা, চিন্তনীয় এবং অচিন্তনীয়, এ দুয়ের মৈধ্যে এমনি এক লক্ষণ জেদ আনিয়া দাঁড়ি করাইয়াছেন সে, তাহাকে লক্ষণ ভেদ না বলিকা লক্ষণ-সন্ধর বলিলেই ঠিক্ হয়; এই ভাম নিদ্যান্ত-চি দর্শন-শাস্ত্রকে নিভাত্তই বি-পদে ক্রেলিয়াছে, এমন কি কিয়ংকালের জন্য ভাহাকে সর্ব্বিসান্ত করিতেও জোট করে নাই।

श्रम्भ-नश्करतम् छेन्। ध्रम्।

মনে কর, কোন প্রকৃতিকত্ব বিং —ভারা-भ्रक अवर शहरीम—धरे छुट्टे खनाद वजह বৈবেওনা কানে ভারাত্মক বস্তু সকলকে নিশ্ন-কিখিত চুই শ্রেণীতে বিভক্ত করিলেন :--(১) ধাহা খামাদের আপনাদের কর্তুক তে: লনীয় (এই একার বস্তুকেই ভিনি এড়ত লকে ভারাপ্রক ধলিয়। বার্ষ্য করিলেন) : (২) ধাহা ভোলনীয় বটে কিন্তু আমাদের আ-প্রাদের কর্তৃক নছে: আর মনে ভর ধ্যু **পে**য়োক্ত প্রকার বন্ধ সকলকে তিনি নিলি শেষে ভার-**ধীন নামে** সংগ্রন্থত করিলেন। তাহা যদি হল, তবে হিমানী ভার হীন, গে-হেতু তাহা আলাদের আপনাদের কর্ত্তঞ जटणाननीत्र जयरा - यहि। अवहे हर्गा --हिमालत अमिद्रिकत जालमादकत केईक भट्डा-লনীয় অত্তর ভাহা হরপতঃ অভোলনীয় জগতে, স্বরপতঃ অতোলনীয় কিছুই সে, नाहे, जाहा मूटन कविछ ना ;-- यिन जाहा প্রকৃতি-তত্ত্বিং পতিতের বড় একটা - আহেন আদেনা। সৌম মঙ্গল প্রভৃতি বার-সকল পরপতই অতোলনীয়। অতএব ফলে 🛊 জ্বা-हैं एक कहें - (क, के नकल पावल-शाश-দিগকে মান্ত্রা সোম নকল বৃণ প্রস্তৃতি নাম দারা নিৰ্দেশ করিলী পাকি – হিমানস্ত ভাহা-

দের অপেকা একটুও বেশী ভারাত্মক নহে।
চিন্তনীয় এবং অচিন্তনীয় এ-পুএব মধ্যে
দার্শনিক পণ্ডিতেরা যে-প্রকার প্রাক্তের অন্তর্গ বারণ করিয়া পাকেন, একা হিন্দ ভারত ।
প্রকৃতি-বিজ্ঞান যদি এইপ্রকার অন্তর্গ বেশ্রী
বিভাগ কার্যো সংগ্রেশতঃ রাভ ইইল, ত্রে
ভাগা আজ কোপাস থাকি লগা দশনি-শাল এখন সেখানে আছে — উলা ও ইপ্রেন

আবৈ সমস্ত তথা চন্দ্ৰবি নিয়ম স্কলতে বং এ এইড়েয়ি প্রিণত ক্ষিণতে।

अहे भव (अलगारवर अहित्स, क्रिअप নিয়ম-সকল ভাতু পুনীলেলভিলাৰ নিক্ট এব প্রকার খেলায় মামজী। ১ইখা দাঁড়াইয়াবছ। সাহা শুদ্ধ কেবল আয়ানের আপন্তারের অচিন্তনীয়, ভাহার সহিত্ত এলান্ডক ভাল-ন্তনায় ব্যাপান-সকলকে ভক্ষতে শুড়াইপা ভাঁহারা বলেন এই যে, এমন এনেক বিষয় আছে যাহারা এচান্ত-পক্ষেই অভারনীয়ে, অগত এটি আমাদের না ভাবিলেই না থে. ভাহারা আছে; वर्गाए कि बा- इ मत জভুজানীদিগের মতে—চিন্তার নিয়ম সু-সাবে যে-বিষয়ের ভারনা হইতেই পারে না, তাংগ্র অভিডঃ আমাদিগকে ভাবি-তেই হইবে। ভাঁহারা আমাদিগকে এমনি একটি বিষয় ভারিতে বলেন, যাহা ভাঁহারা পরক্ষণেই বলেন যে, তাঁহা ভাষনার অনু তীত। এক কথায়, ঘাহা "ভাবিতে পারা যায় না" বলেন, তাহাই ভাবিতে বলেন। ইহার অর্থ – ডিন্তার নিয়ম-সকলকৈ লইয়া বালা-ক্রীড়া-- সমস্ত শাস্ত্রটাকে লইয়া কৌ-হুক-পরিহাদ-- এ ভিন্ন আর কি হইতে পারে ? ইহার এক্টি দৃপ্তান্ত ;—এই একটি नियम निकांत्रिक इट्टेन (धे, आगता आगारणत ্রুপ্নাদের সহন্ধ-বহিভূতি কোন কিছুই ভাবিতে পারি না; কিন্তু এই কথাটর ধর্নি

বলা হইতে না হইতেই আমাদিনকৈ বলা হইতেই যে আমাদের আপনাদের সাধান হিছু ত বল্ধ আমাদিনকৈ ভাবিতেই হইবে এবং তাহা আমরা ভাবিয়া থাকি। ইহার ইতের অবশাই কিছু না-কিছু গলাদ আছে। ইয় বলো নিয়ম যাহা নির্দারিত হইল তাহা নিয়মই নহে, নয় বলো যদি তাহা নিয়মই হইল তবে তাহার বন্দন ছে-দন করিয়া আমানা কোন কিছুই ভাবিতে সমর্থ নহি। কিলু তত্ত্ত্তানীরা আপনাদের কথার বন্দনে আছিল-রূপে গরা-বাঁবা দিহত পারংপকে আছিরা অপনার। বড়ই ভরানা দের কথাকে তাহারা অপনার। বড়ই ভরানা আপনাদের কথাকে আহারা অপনার। বড়ই ভরানা আপনাদের কথাকে তাহারা অপনার। বড়ই ভরানা আপনাদের কথাক সঙ্গে স্ক্রাচুরি থেলিতেই ভাহারা সবিশেষ ভংপর।

ভত্তজানীদিগের অসহতি-দোব অপ্রতীকার।।

কেহ হয়তে মনে করিছে পারেন যে, क्र-त्य दशानद्याल वा लक्ष्य-मः केत्र योहात क्था এড়কৰ ধরিয়া বলা হইল, ভাছার আতী-रुपत्त भव बाटह। पहात श्रेडीकादतव भव कि नाहे। **उद्धा**नी वित्र পুরেন যে, "একান্তিক প্রাচিন্তনীয়" এই যে, केकि क्या, इंशात वास एम् (करन जामादनत অপিনাদের কর্তৃক অচিন্তনীয়, তাহার অধিক আর কিছুই নহে। "একান্তিত অচিন্তনীয়" শব্দের এ যা অর্থ করা ছইল—ই্ছাতে দাঁ-ड़ाहरजर्द्ध (य, **डाहा "**केकांखिक चेहिखनीय" নয় – ভাহা শুধু কেবল আমাদের আপনা-त्नर चित्रक्रिकोतः; **এরপ বিষ**রের क्रिक् অ্বর ভাবিতে না পারির কেন-ক্লছেনে चायता जारा जाविएक नावि है यारा मर्ज-সতাই/একাম্ভিক **অচিম্বনীয়, এক কথা**য়— যাহা প্ৰবিৰোধী, ভাষাৰই প্ৰতিত্ব আৰম্ ভাবিতে পাৰি ৰা ; বিশ্ব বাব পৰিৰোধী

ৰতে ভাষাৰ অভিত আৰু সক্ষিত্ৰ সকলে

विशेद आन्मादम्क कानिद्रमान्य विनाम

নামৰ খনি ভাৰিতে পাৰি, তব্ও তাহা সান্ত্ৰী शरविक स्वाटक (वार्थाह जरनात खान-रंगावत বলিয়া। অনায়ানে ভাবিতে পারি। কিন্ত একান্তিক অচিন্ত্ৰদীয় এবং আমাদের আপ-नाटनत-कर्क्क खिल्छनीय এ हिरेटि शुक्र লক্ষণাক্রান্ত বিষয়কে এক করিয়া কেলা কি ्रेटेव्स काना १ फेंडरम्ब गरना ग्लाहेरे यथन কাকণ-ভেদ রহিয়াছে, আর সে লক্ষণ-ভেদ र्रापन खर्थ-लूर्न, । छंथन तम वै। प- छि पहा छिया কেলিয়া ভাষা এবং ভাষকে বিভ্রান্ত করিয়া তুলিব্র এর্থ কি ৷ সাহা আমাদের আপনা-দের অচিন্তনায় হইয়াও অন্যের চিন্তনীয়, তাহা তো চিত্তনীয়ের কোষ্টাতেই স্থান পাই-বার উপযুক্ত ; কারণ কোন-একটি বস্তু যদি কোন দুত্রে চিভনিয় হয় (তাহাকে আমরা অন্যের চিন্তৃনীয় বলিয়া চিন্তা করিতে পারি— এ সূত্রেও যদি তাঁহা আমাদের চিন্তনীয় হয়) তবে সেই সূত্রে তাহা চিন্তনীয়ের কোইয়ে অবশাই স্থান পাইতে পারে। অচিন্তনীয়ই প্রকৃতরূপে অচিন্তনীয় এবং প্রেরই বালয়াছি-ভাহার আর এক নাম স্ববিরোধী।

ेिकाव निषम क्यानात निष्ठान लेति।

প্রশ্ন "যে বিষয়ের ভাবনা হইতেই
পারে না, ভাহা-ভাবিতেই হইবে" এ কথাচির অসমতি-লোম ঘথন চক্ষে অসুলি দিয়া
দেখাইয়া দেওয়া হয়, তথন ভভ্জানা যেরূপে স্বপক্ষ-সমর্থন করেন ভাষা এই ;—
ভাইাকে ঘখন থুব কসাক্ষি করেমা মরা মার,
তথন ভিনি এই বলেন যে, "য়য়য়ভালা করেমা
য়য় না" এই কৈ কথা বলা হই ন, এইখারেই
ভাবনা-শব্দের অই প্রকৃতি লাকই ভাষা।
বিষয় ভাহার পার এই কে কথাটি বলা হয়
য়ে ভাহার অর্থ—কয়না, ব্রেন্তের সম্ভেক্ত
ছবি থাড়া করা। ভাহার এই স্ক্রিক্ত

বাকাটি আঁহার পলের ন্তন একটি আইরব चामादम्ब मृष्टि-दक्षा चानव्यन कविद्युष्टे ; পূর্বে-আগরা মনে করিয়াছিলাম যে, চিন্তার निश्चम-**मकटल**बे निश्चष सम्ब विश्व के विश्वा ८५-খাইবার জনা তিনি আমানিগকে আহ্বান করিলাছেন, এখন দেখিতেছি—তাহা নংগ্ ভূষু কেবল কল্পনার নিয়ম-ধকলের মর্মা উদ্ধা ণ্ড করাই ভাঁহার উদ্দেশ। এটি भूकी द्विरे बार्यापण क नुकारे। यना हरे७, एका बहरन कान वादायुवाकतहे असाकन হইত না, তুাহা হই লে এতিপ্ৰেফর সকল कथा है कानवा नार्वराद्ध भिटबार्शका का ।-कामा विक, मा जातर ३, ना खट्छ, ८५ वि. क छोटा तुरुग्यक्ष वेला इस नाई। बदवालिका वी আগা গোড়া বলিধা আধিতেছেন যে,তিনি -কল্মনার নহে কিন্তু সালি-রাত্তর—মনোরখের , নহে চিন্ত ।চলার – নিঃম-নকল বির**ভ**ীকার-তেছেন: অতথা, ২য় ভারের সূচনা-পর স্বাণরোধা, লয় বেভান্ত, লয় সাহা তিবে भागा। १४८क दमशास्टबन विश्वादेश, जास णामानिमदक न। दुनसाईका. किंत लाद खनांग विष्ट्र-पादा वागता स्तिथटक छाट् सा--ভাহাই খামানিগকে দেখাইডেছেন। ইহা আমানিগকে শিখাইবার কোনী ত্রয়োজন নাই বে, যাহা স্পানাদের কল্পনার ভতীত ভাহা আমাদের চিন্তার **গমা হইতেও** পারে। এই मध्य भेडालेक आभवा **अथ**श्रीत-ताद् निकितादन निद्यातारी कतिराजिस। किन्छ हेहीदनत भूत्थ यथन जागता छनि त्यं, याहा আমরা আদুবেই ভাবিতে পারি না—তাহা আছে ইহা আমরা ভাবিতে পারি; ইহা শুনিবামাত্র আমাদের জ্ঞান স্ববিষয়েত্র সং-महाक्छ इहेशा छत्त्र। वित्मव কে।ভে कान गटनाविखानीक लका कतिया अ मकल क्था वना हरेएउट ना; ध-मकन क्था तकन-गटनाविक्ञानीत मखदकर थाएँ ; जा-

মাদের কথার লক্ষ্য সমস্ত তছটার প্রতি যত—বিশেষ বিশেষ উদ্ধাননিব্যার আনত তত নহে। তিন্তানীয় এবং আন্তর্গাণ ব দুয়ের লক্ষণ-সংকর স্টাইবার জিপারতে এন প্রধানতঃ দারী ইফা বলা অ্বটিন।

ें ध्व एक्ष हिन्द्रात नियम स्थानीत स्वीधा ना स्टार ह

ं , ध क्ष क्रिन्नाः नितम भक्तारवः लक्षेत् वाला आधः करम् मा। এ एस मधा गत भारत किरा**हे ग**्रंथ वाल, कतर पास् गान स्थाप लड़ है । कारण हिकी की बेहराबार कावित्व भावनेतः साँ देश काहा उत्तर्भः भाग स्कृष्ट सा राजा। समाप्तर हो। হিজ্ঞ মানোৰিজ্ঞান ও **ৰ**ল্প ত্ৰুৰ 3.中国《内藏征电子》作为国内(Propies of ভক্ষা ক্ষুদ্র। এ তন্ত্র ক্ষেত্র মাকলকে জান্ত্ৰপ কৰিয়া প্ৰাক্তিগৰ বল 🛶 হে में इंदर रहेतात बनार दान 'श्रीराजित शाका, আহুতে এইজন কার্ডন ক্রীভিন্ন তার কে, মাণার পশবং ভইবার, জনাই কাংগদের প্রিয়া। ইয়া এইএপ **শিক্ষা পে** স্বার্র भाग वह उन्मारिक्ट बस्या जीवन्त्र भारत, मदमात्वकःदम्ब माहि बन्दम रस्या दस्य ना (म, त्वित भ्लज द्वः । अक्राक्ष भन्न ভারেতে পারে এবং ভাবে। व्यक्तिकार वर (१, यह। १५ अल्पेन कार् তেই আৰম্ভুগ্নাকের।

प्राप्त वामास्त्राच्यत वाङ्गान एक-सक्ताक स्वाप्तिक क्रिक्ता कार्यन

আর-আর তন্ত্র-দক্ল ত্রেক বিষ্টেই
পরস্পর পরস্পরকে শ্রন্তন করে। আনা
দের এইটি ধারণা যে, বর্তুমান তন্ত্র সকলবিষয়েই অপগুনীয়। এ তন্ত্রের মনো এক ত্রি
পক্ষেই যদি খন্তন-যোগা কিছু থাকে, তবৈ
দেনটি এই তন্ত্রের মূল দিদ্ধান্ত। একটিমাত্র লক্ষ্য-হানের প্রতি সমস্ত প্রতিবাদের

শর-সন্ধান করিতে পারা তত্ততালো বিশিক্ষ শ্বিধার কথা নহে। এ তন্ত আনুনার আর আর সিদ্ধান্ত-গুলিকেও বেমন করে। আর আর সিদ্ধান্ত তেমনি—হুখুওনীয় বিশিষ্টা আনে; কিন্তু ইহার প্রতি যদি-বা কহিবের আর কাহারো সন্দেহ থাকিতে পাবে না করে, ক মুল সিদ্ধান্তটিই এক যা কেবল বিবাদ্ধান্ত মূল-সূত্র সকলকে সংক্ষিপ্ত করিয়াছে বলিয়া—তাহাদিগকে একেবারেই উন্মূলিত না করুক্ অতীব অল্পের মধ্যে সংকুচিত করিয়াছে বলিয়া—বিনীত-ভাবে আপনাকে শ্লাঘিত মনে করে।

### উপক্রমণিকার উপসংহার<sup>।</sup>

বৰ্ত্তমান তম্ৰ কেমন করিয়া মূলে (অর্থাৎ নিতান্ত পৌড়ার কথায়) পৌছিতে কৃতকার্য্য হইয়াছে, ভাছার বিবরণ প্রদর্শন করিয়া এই উপক্রমণিকা দাস করা ঘটিতেছে। কারণ, মূল কথাটিতে কেমন করিয়া পৌ-ছाटना इरेशाएड विकिट्ड शांतित्वरे মূল-কথাটি ভার করিয়া বুঝিতে পারা যা-ইৰে। কৰে, জিজ্ঞান্ত ব্যক্তি এটি মতক্ষণ না বুঝিতে পারিতেছেন, ততক্ষণ হয় তো মুল-কথাটি ভাঁহার নিকট যদৃত্তা-সভ্তুত बिनिया প্রতিভাত হইবে, হয় তো ভাহার बत्न अर्देत्रल अंक है। दर्शका थाकिशा यारेटन दंब, बूल कथाणि सरबाक्त्-विव ना हिरेशा अना-বিৰ হইলেও হইতে পাৱিত। কিন্তু কেমৰ कतिशा के मून-कथा छिटक दुनी छाटना रहे-शाद्य, रेश धर्म क्रिन क्लेडिकटल ट्रम्बर्ड পাইবেন, তথন ক্রান্থার সমস্ত মংশাই ত্র-क्लार जितारिङ रहेशा वारेतः प्राप्त किमि (बरिटरन (ए. क्यां**जार क्या क्रिक्** किहूर रहेएक नाम नाम

্ন্দে উত্তীৰ মইবার সমত।

शास (यमन रना इहेशाइ—कामें खरे जिल्ला है । अथा अर्थ । अर्थाद अरमह উহাকে জানতত্ত্ব প্ৰবেশ পূৰ্বকৈ তাহার চন্ত্ৰম শীমায় উত্তীৰ্ণ না হওয়া পৰ্য্যস্ত তা-হাতে লাগিয়া থাকিতে হইবে। এই খণ্ডের যেটি আলন্ত ব্যাপী দৰ্কময় গুলা, দেটি এই বে, জ্ঞান কি দ কিন্তু এ প্রশ্নটি, ইহার বর্ত্ত-মান আকারে, অতিশয় ভ্রান্তিজনক, তুরায়ত্ত, এবং তুর্বেরাধা। আনরা উহাকে ধরিতে ছুঁতে পাই না। কোখায় যে উহার মৃষ্টি-স্থান তাহার ঠিকানা পাই না। উহাতে ছোটো বা বড় কোন-প্রকার ব্যক্ত অব-য়ৰ নাই। এই সূতার পুঁটুলির আরম্ভ স্থান কোথায়— খাই' কোথায় ? कि मुजाब शूँ हेनि, ना भाषरंत्रव लाना ? কারণ, যদি পাথবের পোলা হয়, তবে ইছার জটা ছাড়াইতে <mark>স্থাওয়া পও</mark>শ্ৰম মাত্ৰ। কামানের গোলার **বাটা ছাড়ানো মনু**যোর অন্তুলীর কর্মানহে। তা निक् ইহা সূতার-ই পুঁচুলি; তবে কি না—ইহান খাই খুঁজিয়া পাওয়া স্কঠিন; তাহা বে-পর্যন্ত না খুঁ-জিয়া পাওয়া যাইতেছে দে-পর্যার্কু পুঁটুলি-ির জটা ছাড়ানো। অসাধ্য ব্যাপার। । আর কিছু হউক্ স্বার না হউক, এইটি বিশেষ করিয়া দেখা উচিত যে, ঐ পুঁটুলির উপার আর বেন পুঁটুলি অভানো না হয় এ বিষয়টিতে লোকের মনোযোগ অভি ইছা আমরা পূর্বে এক স্থানে ইঞ্লিড ক্রি-য়।ছি। অলমার ছাড়িয়া লাদা কথাৰ যদিচ আমরা খেখিতে পাইয়াছি ধ্যু জান कि—हेराहे खख्ळात्मद्र त्माजाव क्या, क्र थानि, छान कि- ७३ चन्नाडे, त्वान-दर्गान, এনঃ ব্যাপক প্ৰবেশ্ব কৰা কোড়াৰ কৰা কি eften vists avander

করিয়া বিভাগ করা কঠিন নিহে পরস্ত সেই খণ্ডাংশ-গুলির মধ্যে কোন্টি প্রকৃত-পক্ষে মূলাংশ—অর্থাৎ গোড়ার কর্থা—ভাহাই কু-

त्थ्रति। शाकात कथा श्रे किशा शाम नाहे। क्षित्वात मद्यापिम् थे काहित्ना पारिक পড়িয়া গিয়াছিলেন। উহার মধ্যে কোন্ খানটা যে বঠিন, তাহা সজেটিস্স্প র দে-থিতে পাইয়াছিলেন; কিন্তু তাহার শীমাংস। যে কিরাপে হইতে পারে ভাহ। তিনি দে-থিতে পা'ন নাই, অন্ততঃ তাহা ডিনি ্লাখাও প্রকাশ করিয়া বলেন নাই। তিনি শুল্ল করিলেন ''জ্ঞান' কি ?'' শিষা উদ্ভৱ করিলেন 'জ্যানিতি এবং আর আর বিষয় যাহ। আমরা এতক্ষণ ধরিয়া বলা-কহা করি-তেছি, ভাহাই জান।" ইহার উত্তে সক্তে-টিস যাহা বলিলেন তাছা দিব: লগ্ধ-সঙ্গত ও ঠিক্ সজেটি সেরই মতে।—বদিচ তাহা ফল-দায়ক নহে। সঞ্চেটিম্বলিলেন "খুব বদা माणा-मरकारत, शूर मूख-रूरस, वनिए कि – রাজ্-রাজভার মতো, তুমি উত্তর এদান করিলে। শুদ্ধ কেবল একটি বস্তু আমি ভো-মার নিকট, যাজ্ঞা করিলাম—ভুনি কৃত না বস্ত আমাকে প্রদান করিলে। আর, আমার মতো একজন বুড়া মুর্থের প্রতি তোনার এই যে-• উদ্ধান্ত আচরণ, এ-কেই আমি বলি একত महत्व।" এই गिष्ठे ज्रद्भानात निवा किছू ज-প্রতিজ হইলেন; তখন সক্রেটিন্ আপনার মর্ম কথাটি খুলিয়া বলিলেন। তিনি বলি-.লেন "বামার মন্মটি যে কি তাহা তুক্তি ধরিতে পার নাই; জ্ঞানের বিষয় क्रिक তাহা আমি তোমাকে কিজালা কৰি নাই, জ্ঞান সরং কি ইংহাই ক্লেবল ছাত্তি তো-गाटक विकास के विद्यादि।'' विकासिमारि মদিও ঠিক্ লক্ষা-ছান্টির প্রতি অনুসী নি-द्भिन कडिएएट - क्योंनि इंशास्त्र क्रिक

কোন কল দৰ্শিতেছে না; কারন, এদিকে
যথন — গুক্লপিয়া মিলিয়া ক্লিয়োগ প্রশানীর
যত কাছ ঘেঁলিয়া পারেন (শ্ব গে বেলী কাছ
ঘেঁলিয়া তাহা নহে) তর্ক বিতর্ক তালাই তে
ছেন, ওদিকে তথন—প্রশ্নটি মানে হ্রত্ত অন্তঃসলিলা নদীর নাায় পুণিবী-গরের ভলাইয়া
গিয়াছে; পুনর্যার যদিও তাহা সময়ে সময়ে
প্রেটোর প্রবন্ধ-মধ্যে দেগা দিতে উঠিলতে
কৈছে নে কেবল কণকালের জনা— মল্ল একট্
ইসারায় দেখা দিয়া তল্কণা আমনি পানিনে
পুনইটাবেশ করিয়াছে। প্রেটো ভল্লভাবের
গোড়ার কথা খুঁজিয়া পানিন নাই—ক্ষাত্র
কোথাও ভাহার প্রকাশ নাই।

ণোড়ার কগাব অরুস্থান।

অভএৰ জোন কি-এ প্রবের মামাণসা আমাদের আপনাদের ছারা কি পর্যন্ত হইতে পারে তাহ। একবার চেট্ট। করিয়া রুদুখা। যা'ক্। পূর্বের যাহা বলিয়াছি—ঐ গুর-টিরই মীমাংসা এই সংহিতার প্রথম খণ্ডের মুখ্য কাগ্য। তবে কেন উহাতে আ-মরা একেবারেই কোমর বাঁদিয়া প্রবৃত্ত না হই। জিজাস্থ ব্যক্তি মনে করিতে পারেন যে, যদি উহা অপেকা সহজ প্রশ্ন খুঁজিয়া পাওয়া যায়, তবে তাহাকে দিয়াই গ্রন্থের গোড়া পত্ন করা প্রেয়—ইহাতে আর ভুল নাই, কিন্তু যতক্ষণ পর্যন্ত তাহা খুঁজিরী পাওয়া না যাইতেছে, ততক্ষণ যাহা আমা-দের হস্তাভান্তরে আছে তাহাকে দিয়াই আপাতভঃ কাৰ্ষ চা**লাইলে ভাল** হয়। কিন্তু ভোহা যদি করা খায় তবে উত্ত-জ্ঞান একটি ৰদুদ্ধা-মূলক কভি হইয়া উঠে; তাহা এমনি একটি ভদ্র হইয়া উঠে যাহার মূল-পত্তন वर्ष्यामे नियर्गत वनवर्ती नरह-त्कवन ভত্মলোচকের স্থবিধা এবং স্বেচ্ছার অনুবর্তী এর্কী ঘটনা তাৰ্জানের যাথাপ্য এবং মা-राष्ट्रात नीय निषास्ट रानिषनक। उदा

७ व ब्लारना जिल्लाम- प्रकटनत विरम्ब ए ने हे করে-ভারতের মর্ব্যাদা অপহরণ করে-ভাহাদের বাহ্য অবস্থা হইতে তাহাদের প্রা-পতে বিযুক্ত ইতি। অত এব জ্ঞান কি – এ প্রের্ক আপাততঃ ঠেলিয়া রাখিবার মুখ্য ক্লারণ ভাহার জটিলভা নহে, আর, নৃতন একটা প্রাথা আনিবার কনা আমরা বে বাবা হইতেছি, তাহার মুখ্য কারণ তা-होते. गह्य-गयाका नटहा , खरना, शू-ৰ্ব্বোক্ত অপুকাহত জাটল, এবং শেয়োক্ত অপেছায়ত সহৰ হইবারই কথা। কিন্তু द्रम विरविजना लीन कहा; रम विरविजनाय ক্ষানর। পূর্ব-প্রশ্নটিকৈ ঠিলিয়া রাখিতে এক দুতন একটা প্রক্রের অবেষণে প্রবৃত্ত ছাইছে অঞ্জাতা বাধা নছি। সেজহা এবং অধিয়াৰ সাভিতে নহে কিছু, অগত্যা, যদি না ক্ষাৰা এরপ করিতে শাধা হই, তবে আযা-দ্বের কাষ্যা-পদ্ধতি যদৃচ্ছা-মূলক হইবে। কিন্তু या बाराद्व वरे उद्घानत्क यथार्थ मठा ধলিয়া প্রতিপাদন এবং গ্রহণ করিতে হয়, তবে তাহাকে ওরপ হইতে-দেওয়া হইতে পারে না ৷ তত্ত্তাম-ক্ষেত্রে কোন ব্যক্তিই धमन दर्गन वस्तरक मठा विनय् प्रधिकाही নুহে, যাহাকে সত্য বলিয়া, না-ভাবিলেও না-ভাবা যাইতে পারে। তত্তভান-কেঞ্ছে কেইটু এমন একটিও পদ্ধতি অবলম্বন করিতে অঞ্চারী মহহ—যাহার পরিবর্তে আর কোন প্রমাতি আবলম্বন করিলেও করা যাইতে ু শারে 📗

ভান কি এইটিই গোড়ার প্রস্ন কাইতে না গারে কেন ?

কৈন তবে আনিরা — জ্ঞান কি — এই প্রস্ন

প্রক্রিবারেই হজে লইনা তাহার আলোচনায়

প্রার্থ্য কাইতে পারিতেছি কাই এই তাহার

যথেও কাইন নে, প্রস্নাট লোগানা করে । এই
প্রার্থ্য কাইনি কাইনি কাইনির সাহতে
ভারতি জাইনি স্বার্থনার কাইনির সাহতে
ভারতি জাইনি স্বার্থনার কাইনির সাহতে

(काम केवाद अशेशकारहा के प्रटड पाकर । हरेट**७ शास्त्र नाज श्री**का चार्य लग्णगावाहरू खेराइ **वर्ष अवाधिक । धरे क**ना **खेरात वर्ष**-यान व्याकाटक छैहा क्रीहादत। त्वाथ-भवा हरे-बार नटहा कारकर खेरा रहेट वामानि গৰৈ বুলভ্যা ফিবিয়া দাঁড়াইতে হইভেছে; কারণ, যাহা বুঝা যায় না—তাহা লইয়া কিছু-স্থার অন্তেশালন চলিতে পারে না। স্ত্তর্ব ঐ প্রশ্নটিকে আপাভতঃ পরিত্যাগ করা আ-মাদের স্বেচ্ছার কার্যা নহে – তাহা নিতান্তই অনিবার্গ ়ে তেমনি আবার, ভাহার ঋলে নৃতন একটি প্রহের অবতারণা তথ্-যে-কেবল আমাদের স্থবিধার জন্য করা—তাহা নহে; তাহা না করিলে নয় বলিয়াই \তাহা কয়। তাহা ভধু-্যে কেবল আমাদের প্রাথনীয় তাহা নহে, তাহা фকেবারেই অল্জ্যনায়। पर्यन-माञ्चरक कंटन्रीभवाधी इहेट्ड इहे**टन** তাহার যেমনটি হওগু চাই, আমাদের আ-লোচনা-পদ্ধতি ঠিখু সেইরূপ; ভাহার " কোন স্থানে স্বেচ্ছা-মূলক কিছুই নাই—ভাষা वारिमाशास व्यथनोत्र निवर्षत दलक्षी।

ও প্রবেদ্ধ মধ্যে ছইটা প্রান্ধ প্রজ্ঞান বিষ্ণাছে।

বেল প্রান্ধ আমানা অব্যেহন করিতে ছি তাই।

—জ্ঞান কি—এই প্রম্নের সহিত অবশাই কোননা কোন সম্পর্ক-পূর্রে আবদ্ধ; কারণ, অক্রান্তই হউক আর বাহাই হউক—জ্ঞান কি—
ইহাই আমানের প্রথম থণ্ডের মূল করে।
ন্তন প্রশ্নতি নৃতন কিছুই নহে, তাহা ঐ মূল
প্রান্তর প্রদর্শনের উপযোগী সম্পার্ভ এবছ
বৈধি-গ্রাম মুর্ভান্তর। হির-চিতে নির্বেশন
করিয়া দেখিলে দেখিতে পাওয়া মাইতে

জ্ঞানিক—ইহার অর্থ ক্রেক্ত হাইতে পার্ভি
ক্রান্তর প্রথম বার্ভিক বিভিক্ত পার্ভিক
ক্রিয়া কেনিকের হুইতে বিভিক্ত ক্রিকে
ক্রিয়া ক্রেক্ত হাইতে বিভিক্ত ক্রিকে
ক্রিয়া ক্রিকের হুইতে বিভিক্ত ক্রিকে
ক্রিয়া ক্রিকের হুইতে বিভিক্ত ক্রিকে
ক্রিয়া ক্রিকের স্থানিক ক্রিকে
ক্রিয়া ক্রিকের স্থানিক ক্রিকে
ক্রিয়া ক্রিকের স্থানিক ক্রিকের ক্রিয়ার ক্রিকের ক্রিয়ার ক্রিকের ক্রিয়ার ক্রিকের ক্রিয়ার ক

ঐ হই প্রমের কোন্ট প্রাসঙ্গি । জ্ঞান কি এই দুর্বেগ্য প্রশৃটি নিম্ন-লিখিত ডুইটি সুহজ-বোধা প্রাণে বিভক্ত হটল; প্রথম, জ্ঞানাকত প্রকার ? দিতীয়. শকল জাতীয়া **ভ্লানের মধ্যে** এক অভিন্ন অব≠ য়া কি? এডো ছইল; এখন দেখিতে ফাটৰে— ঐ তুইটি প্রহের মধ্যে কোন্টি আয়াদের এখনকার এয়—কোন্টি জগ্ন-তত্ত্বের নিকট-एम श्रेश १ इत ७-ि न्य ७ ि पूर्वत । १कि-ন-িএকটি তাহাতে আর জুলু নাই; বেননা छ ठीय कोन लादभार मछापान भारे । दुर्कान्छि তবে আমাদের এখানকার প্রকৃত প্রস্থা? ইতিপুরের আমবা দেখিয়াছি যে, মরে**টে**শের भिषा महभा विविद्या कित्रियां हिटनेन (य, श्रथ-गिष्टि जब्द इलारमत्र श्राह्म । अरक्तिभ् অতিরে ভাষার শিষ্যের স্কুন ভাঙিয়া দিলেন; কাৰণ, ভত্তপ্ৰানের নিকট আসর। কিছু-আর ज छेलदादम् अर्थो नहित्य, छान-श्रविङ रेडिशन गाकतन शक्ष नाना-माथाय वि-ভক্ত। দিতীয় প্রশ্নটিই তবে তত্তভানৈর প্র-कुछ अब-यान्छ मृद्युष्टिम तम विषद्यत कान कां जान चामानियादक श्रामन करतन नाहै। धरे कि कि कारने मुन्तिन मा है होत इत्न न व किन्नूरे मार्टिश भी अपने छेवत प्रचित्रं धक्यात ज्ञान्त्रीत काल की चरवानित अकि केथान-वात माहक देवांच व्यतान धरे त, जारा भू जिल्ला सामन जिल्ला हेशत भूदर्स चात्र अकृषि साम

क्षित्क शादा-लिए এर ह-बाग्रदम्त मम्ब অবিবর একমাত্র অদিতীয় বঁকণ সাধারণ मधा-पृत्र पहिन गर्धार-रान वास्त्र किहू আছে কি ? আমাদের অনুসন্ধানের ফল কা র্যাতঃ কিরূপ দাঁড়ায়,তাহারই উপর এ প্রশ্নের মীমাংসা নির্ভর করিতেছে। যদি ওরূপ কোন সাধারণ মধ্য-ভূমি না থাকে, কিন্<u>ন।</u> যদি কোগাও তাহা খুঁজিয়া পাওয়ালা যায়, তবে তত্তভানের অভিত্বই অসত্তব ; কিন্তু যদি ঐরপ একটি কেন্দ্র বা সাধারণ লক্ষণ ধ্জিয়াপাওয়া অসভব না হল এবং কেহা খুঁজিয়া পাওয়া যায়,তবে তাহুজ্ঞান নিৰ্কিছে বর্তিয়া থাকিতে পারে, এবং তাহার মূল প্রক্লের উত্তর হইতে যতকিছু ফল পোহন করিবার আছে তাহা দোহন করিয়। আপনার ভাঞার যথেজা পূলা করিতে পারে। ভানের ঐরপ একটি কেন্দ্রখান আহে ইহার প্রমাণ এই যে, এরপে একটি কেব্রুছান খুঁজিয়া পা ওয়। গিয়াছে।

জ্ঞানের অবশাস্থানী ধন্ট ভত্তভানের **উ**ত্থান ছার।

আমাদের সকল জ্ঞানেরই অন্তর্নিহিত মাধারণ কেন্দ্র, নাধারণ লক্ষণ, গা সাধারণ অবয়ৰ অবশ্ৰু এইরূপ একটি মুখ্য উপাদান— याहा ब्लान-गार्डबर शक्क व्यवगास्त्री। जबरा यारा এकरें कथा—जुाहा এই क्रभ এक है मुथा छेलानान (य, (य-र्कान ख्लानहे इस्के ना दकन—तम छ्वान इहेट एम छनामानि অপহত হইলেই দে জ্ঞানের নির্দান-প্রাপ্তি व्यन्ध्यनीयं, এवः (य शर्याख ना रमरे व्यश्नात जिलानाणि जागातक किताहैया दम्अया हय. নে পরাস্ত তাহার পুনরুদীপন একাস্তই অয়-ছব। তত্ত্ত্বানের মূল প্রহার উত্তর-সরূপ के त्व भून-केलीमान गार्क वागामिशतक পুঁজিয়া থাহির করিতে ছইবে, তাহাজে ব্রুপ লক্ষণাক্রান্ত (অর্থাৎ একান্ত অবশা-डावी) इहेट इहेरव, त्वनना दलक्ष ना

ইয়ান তাল পর্তথান সংক্রী নায় আদুপ একটি কঠোন প্রতিযুক্ত তারের কোন কালেই আসিবে না সেরপ নাত্ইলে তার্থা সক্ল ভ্যানের একনার অধিতীয় ক্ষেত্র-হান্ দাঁড়া-ইবে না। পরীকা আঁখাজ্যে মূল সিদ্ধা-কার যাথাথোর পোষকতা ক্ষিতে পাবে, কিন্তু অনুশান্তাবী জ্বানিই তাহার যাথাথা সংক্রাপন করিতে পাবে।

ক্ল প্রায়ের প্রায়ার।
ভবজানের মল প্রায়, নিকটতন প্রায়,
তবে এই ক্লেন্ড বিভিন্ন জাতীয় জ্ঞানেব
কাণা এমন কাটি অবয়ন কি, যাহা একমাত্র
অনিতীয়, অপান্নরের্তনীয়, এবং বাহাকে চাড়িয়া
কান চইভেই ক্লাবে না। এমন-একটি
কান ইলান কি কাছে যাহা জ্ঞানের সকল
পরিষ্টানের মধ্যে কানিবর্তিত থাকে; সকল
জ্ঞানের অপ্রবর্তনীয়
তত্ত্ব কি?

এই প্রলের উদ্ধর ভবজানের একমাত্র উত্থান দার এবং ভাষা কইয়াই এই সংহিতাব প্রথম দৈলান্ত।

উপরে বাহা বলা হইল তাহাই তত্তজ্ঞানের প্রথম প্রশ্ন; এবং প্রথম প্রশ্ন তা ভিন্ন
আর কিছুই ইইটে পারে না; আর, এই
প্রশ্নের উত্তর তত্ত্জানের একমার উপানভার। প্রথম সিদ্ধান্তে সেই উত্তরটি প্রদত্ত
ইইয়াছে, এবং তাহাত্তেই প্রথম সিদ্ধান্তের
উৎপত্তি এবং পর্যবস্থা।

উপক্রমণিক। সমাপ্ত।

ক্রমশার।

সমূজ সংকার।

বিটিত কৰিছি সমাজের প্রাণ। ব প্রাজের বিটিভ আহিছ বিটিভ নাই তালে ভোনেই বাই আহছ বিটিভ নাই তালে প্রাক্তিক সমাজ উল্লেখ

উভাই অপরিষ্টারী অনেকে ব্রেপ এব क्रिकिमीम स्वत्राध हेरा स्व । বাস্তবিক হিন্দুসমাজের পর্কে এই দোষ নি-ঃ তাঁকে অমুলক নহে া বছদিন হইতে দেখা ষ্মি ক্লৈ এই স্যাত্ত স্ময়োচিত পরিষর্ভনের पढ़ें किरमारी। यकि आहे सिंहू निन्धि ভাঁৰে চলে তবে ভবিষাতে हेश्रत काल' विद्रभेष व्यर्गामा थाकिरतःन।। কারণ সমাজ মধ্যে নৃতন নৃতন অভাবের সৃষ্টি হয়। কৈছ মান্ধাত।র সময়ে যে নিয়ম প্রস্তুত হুইয়া আছে তাহা দারা এই সমস্ত নৃত্য মৃত্র আছিতাব দূর করা সহজ হয় না। আইতরাই তাহার সময়োচিত পরিবর্ত্তন আবশাক। তাহা না হইলে সমাজ দেঁকে मा। এই পরিবর্ত্তনও আবার দেশকাল পাতামু-সাবে দির ও ধীর ভাবে হওয়া চাই। তদ্বাবা সাধার**ণের স্থবিধা কি অস্থবিধা কাঁড়াঁক** তাহার আলোচনা করা ঢাই। নতেৎ তদারা भयात्कात दकान विदर्भय कल इस ना। कलाउ প্ৰাজ্**তত্ত্ব বুৰিষা ওঠা সহজ ব্যাপার লয়** 4

এখন হিশ্বভাতির ভিতর পুত্র কলাই
নিবাহ একটা বিষম বিজ্ঞানী কারণ এক এক
হাতে। ইতার প্রাণা কারণ এক এক
হার্থের মধ্যে প্রাণ্ডর বিভাগ। আকরের
মধ্যে রাটার বাজেল প্রান্ডতি কএকটা জেণী।
কারত ও অন্যানা কর্পেরও আবার এইরণ জেণী। ই জেণী-বিভাগ শাকাজে
পুত্র কলার বিবাহে বিশেষ অসুবিধা দাঁড়াইরাজের স্থাতিই এখন কার্যাকের প্রশন্ত না
ক্রিলারে এইরণ অবাস্তর প্রশন্ত না
ক্রিলানাই। পার্লানে ক্রিলার জেণীর কোল
ক্রিলানাই। পার্লানে ক্রিলার জানিব ক্রিলার নাই।

কুন্তা হইতে পাঁচজন জাক্ষণকে জান্যন ক-রেন। এই দমস্ত ত্রাহ্মণ অ্যাজ্য-যাজন-দে।কে পৈতৃক ভূমিতে আর বদবাদ্ করিতে পারেন নাই। সেই সূত্রে তাঁহাদের গেড়ে বাস। কালক্রমে ইহাঁদের বিস্তর সন্তান সভতি হইয়া উঠে। এই আদিশুরের সম্ভবত ৩০০ শত বংদর পরে মহারাজ বল্লাল সেন ১০১৯ नकारक रणीरज्व भिश्षांगरन व्यविद्वार्ग করেন। তিনি কানকুক্রাগত ঐ পঞ্ ভাকাণের সন্তান সন্ততিদিগকে রাড়ীয় ও বারেন্দ্র এই ডুই শ্রেণীতে পিভক্ত করিয়া উচাদের বুলপরম্পরাগত বিদ্যা লিন্যাদি मल्ध्य अनुभारत (कोनीनग्रानित व्यवस्थ क-রিয়া দেন। শ্রেণীবিভাগের মূল দেশভেদে বসবাস। অর্থাৎ গাঁহার। রছে দেশে বাস কবিয়া ছিলেন তাহারা রাট্যে এবং বাঁহারা বলেন্দ্রিতে গণে করিয়াছিলেন ভাহারা পারেন্দ্র ইউটেন। ুফ্লত রান্ট্রণ ও বারেন্দ্র এক পিডারই পুত্র। এই শ্রেনীবিভাগ সহয়ে একটু মতভেদও আছে। অনেকে শলেন ঐ পঞ্চ আঞ্চন অমাজ্য-যাজন-দোহয় পৈতৃক ভূমিতে বসবাস করিতেশা পারিয়া পোড়ে অবস্থিতি ও এই স্থানেই বিবাহাদি করেন। **সেই সমস্ত বিবাহিত** স্থান গৰ্ভ-জাত সন্তানেরা রাচ্**দেশে বাস** নিবন্ধন রাটায় হন। ভার ঐ পুরু ত্রাক্ষণের পৈতৃক ভূমি কানাকুন্তে যে সমস্ত সন্তান সন্ততি ছিল कामज्ञस्य वरतन्त्र पृथिए आमिश वाम করায় ভাঁহারাই বারেন্দ্র হন। যাহাই হউক এই বিষয়ে মতভেদ থাকিলেও উহাঁরা যে একই পিতার সম্ভান তদ্বিয়ে কোনও मत्मर नारे। अरे पूरे त्यनीत वाकन ন্তীত আরও তুই শ্রেণী ত্রাহ্মণ আছেন। ইহাঁরা বৈদিক ও সপ্তশতী। বৈদিক আহ্মণ দিপের সম্বক্তে প্রবাদ এই যে যথন দাক্ষিণা-ত্তाর চোল বংশীয় কোন রাজা গৌড়দেশ

জয় করিয়া রাজ্য প্রতিষ্ঠা করেন ভাঁহার নহিত কতকগুলি দৈদিক লাজন এদেশে আদিয়া ছিলেন। আর কতকগুলি পশ্চিম দেশ হইতে আইদেন। এই জনা ইছাদের মধ্যে দাজিশাতা ও পাশ্চাতা এই গুই বিভাগ।

উপরে যাহা ধলিলাম ছালতে ইঘাই প্রদর্শির হইল যে শাস্ত্রে ক্রেণাবিভাগের কোন ব্ৰেস্থা নাই। ইয়া মহাবাজ লড়াল মেনের ব্যবস্থাপিত। শাস্ত্রে হখন হে 🖰 বিভাগের কথা নাই তথন পরস্পারের মণে আদান গ্রদান বোনও মতে দোয়াবহ হটতে পারে মা। কাবণ সংহিতাই হিদ্দমাজ শাসন করিয়া আসিতেছে। সেই সংহিতায় আদান প্রদান হলে ভোগীগত জবাসর বিভা-পের কোন কথা বলে না। এখন বক্তবা এই হিন্দুসমাজের শান্তমর্গদো একা করা উচিত না হল্লালের মধ্যাদ। রক্ষা করা উভিভণ্ন শাস্ত্র-মর্ঘনে। রক্ষায় একটা বিশেষ স্থাবধা আছে। শাস্ত্রাত্র কেবল কম্পের নয় ভারত-বর্ষের যেখানে যত ত্রাহ্মণ আছে সকলেরই সহিত একটা সময় বন্ধন ছইতে পারে। কিন্তু বলালের স্থান অতি সন্ধার্ন। কেবল বঙ্গদেশ। তথাধাও আবার সকল ব্রাহ্মণ সক-লের পক্ষে নহেন। এইরেপে ক্ষেত্রপ্রশন্ত কর। বাতীত ইহা দারা আরও একটু উপকার হয়। হিন্দ্ৰসমুজ বহুকাল ধবিষা অতি সন্ধীৰ্ ক্ষেত্রে মধ্যে আদান প্রদান করিয়া আদি-তেছেন। বৈজ্ঞানিকের দিদ্ধাস্ত এই যে বছকাল ধরিয়া একই দেশের ওকই বংশের **त्रकः मध्यारव** यथन क्रमनः श्रीनवीर्गः श्रहेशः পড়ে। এজনা বিভিন্ন দেশে এবং বিভিন্ন বংশে আদান প্রদান আবশাক। কিন্তু যদি ব্ৰাহ্মণাদির অৰান্তর শ্রেণীবিভাগ ভাসিংগ मकल (नर्भंत मकल खिक्किशानित गर्भा शेह-म्लात जामान थारान एटन छाष्ट्रा इहेटन ८ई

बन्दर्गमी बिनाब तथ्य प्याचात (ध निक्छ হইয়া পৃষ্কির বীর জাতির মহিত সমকক্ষতা করিতে পার্টিকে সে বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই। এপ্র শিক্ষিতদিগের মধ্যে অনেকে-রই বলবীগা 🖢 স্বাস্থ্যের দিকে দৃষ্টি পড়ি-भारकः। किस्त रेष्ट्र पिन ना यहानकृष्ठ मकीर्ग त्याद्ध वक देवताहिक दमाधरूक जैया निज হুইতৈছে তাবৎ উছারা বলবাফ লাভের নিমিত যা কিছু কক্ষন কোনও মতে ফুত-कार्या शरीरा भारतिस्य ना ।

এ বিষয়ে আরও এক টুবক্তব্য আছে। প্রকৃত হিন্দ্রশ্রের মর্ণ্মে মর্ণো সর্বতে সামেরে শুলা পাওয়া যায়। এক সময় সমাজবন্দ ভীনামাজিক উন্নতি সাধনের নিমিত বর্ণ-বিতাঁলের বিশেষ আবশ্যকতা হইগাছিল। লবং **ই**হার ছারা**ই স্মাজের অশে**ষ কলাণি নাধিব হয়। কিঞ্জ এই বৰ্ণবিভাগ থাকিলেও विदारीत देवान वर्गाची हिंग ना दवः ५५ हिरक्रमण वर्षाकृष्टे एवं गरत अकरे। भागान আক্ষত ইইড। কালসংকারে এই বিবাহ রহিত **টুইয়। যা**য়। এখ**ন** হিন্দুসমাজের মেরপ ভারগতি তদ্রে ইহা মুক্তরে বুলা श्रात त्य भिष्ठबृष्टेरव्रव सर्वा विवारहत श्रूकः--প্রবর্ত্তনার এখনও সময় আইনে নাই, কিন্তু হণীৰ ভাগের মধ্যে এই অবান্তর ভোগীবিভাগ ा भवात किंक् भग्न इ**रे**शारका व्यानटकरी त्रविशाहित हैराहि योहा भगाव्यव जनक অনিপ্ত সংবিত হ**ই:তুহ**ছ। অতএব <mark>ফাছাতে</mark> বর্ণের ২০বা এই খবান্তর বিভাগ নত্ত হয়ু र्ভाष्ट्रद्र असुनंद व्याद्यत्त्रहे अक्ट्रे दण्कीवान \*হওয়া আবশাক। \এই: অবান্তর বিভাবেগুর্ कना वर्दात्र महसा अक्ट्री देवहरीक वहकान इहेट श्रु हरेहा माहिएला है है। बादा-**(क्वम रा जुनादका अनिहे पणिक्टा जारे** वावार्त रहेटलाह । क्रांत अरे धर्मात मूल हिन वास्त्र व्यानी क्रांचन। क्रिक दिन रहेन

गत मर्काव गाया । अवस्त मध्यान क्रिया একটা कथा रसां । अञ्चानित्रक हरेरव मा। সমাজসংস্থার একটা সতন্ত্র কার্যা নয় ব ইহার জন্য আড়মর ও উপদেব করিয়া বেড়া-ইলে কখনও সমাজের কোনও উপকার অতৌ ধর্মারকার হড় কর। इंदेर ना সমাজ-সংখ্যার ইহারই প্রাসুদ্দিক ফল 🕩 ত্বতৌত ইংাঃ সভ**ন্ত** অ<mark>স্তিত্ব নাই। কিন্তু</mark> वर्त्तगारम नगाज-भाषात्रत मार्थ असन मकन কার্যা অভুন্তি চত্তা তেতা ধাহার সহিত্র ধর্মের কোন কালে পোন মথক নাই। সমাজের বদ্দে একটা উপাদৰ পানয়ন বাতীভাতাছার : ফল আর নিমুই ন.হ। ফলত ভবিষা**তে যদি** চেন্দ্ৰলপ ম এ, লাভাৰণ্যত হয় এই বৰ্জ্যাৰ বি দীবিকা ভাগার খেরে প্রতিবন্ধক হইবে। অতন্ত ভিচিত্ত মা**বধান হও**য়া বুদ্ধিশান स्टिप्तर्हे सर्भार

একনে আমৰা আহলাদের স্থিত একাশ বার্তেটছ হ্রুদ্যাতের তিতিশীলভা-দোর णाननी ए इत्राह्म छल एक इरेशाइ । हातीश লেণী, সম্ভ<sup>ৰ</sup>ত্তিদিগের সহিত **সিশিতে** আরম্ভ করিয়াছেন। প্রকাঞ্জের কোন কোন সম্রাত্ত লোক কৌনীনোর উচ্ছেদ বাধনে ষয় করিতেছেন। এতদাভাত সম্প্রতি আরও একটা শুভাবর বাাপার ঘটিয়াছে। ইল শ্রেণাভক। ইয়ার গণ-প্রদর্শক জীনন-হর্ষি দেবে জনাথ চাক্র। কানাকু<del>রা চুইতে</del> रेष भक्र खाक्षन बाबा भामिभूद्वत राज्यमांस्तार्थ टगोफ्टन्ट्यू खाइटमन क्यारमा स्थानिक क्रि 👳 हुनात्रायम् भाक्षांना वरतनतः होदर्छकः। 🕮 🗷 ६ দেবেজনাথ ঠাকুর ও ভট্টনীক্ষরণের অংশুন ষট্তিংশ পুরুষ। ইনি-রাটায় শেরী ক্রিণ্ড ৩০ প্রাবণে ইহাঁর পৌত্রী প্রামতী ক্রেডিড়া रमवीत्र गरिष्ठ कृष्टनगरतत अक्षान क्षिमात्र , नटर किस दिस्पूर्ण दिकाब लटक विदेशम अधूक आश्वरकाम किस्तीत विवाह रहेगारेक।

हिन कि व विश्वविद्यानक इटेट अम, ७, चनीव नाज कविद्या खानत्व पातिहास्वत । পাত্ৰী খুৰিক্ষিতা পাত্ৰ উচ্চ-শিকা প্ৰাপ্ত। **এই क्रिन (य रहकर्ता) कित हहेर्द रम दिस्ता** गत्मर नारे। भर्षि (परवस्ताथ ठाकूत निद्धत विमा वृक्ति अर्थ ७ कीवन मिन्न अ দেশের স্নাতন ধৰ্মী রক্ষা করিয়া আসিতে-ছেন। ইনি সমাজতত্ত্ত বিচক্ষণ ও দেশকাল-क्रुनी। मगाजमध्यात देशीत अभीतकातह আসুনদিক ফল। ধর্মারকা করিতে গিয়া ্<mark>যতটুকু সংস্কার আবশ্যক তদিষয়ে ইহাঁর</mark>ু বিশেষ দৃষ্টি আছে। ইনিই মহারাজ বলালের 🕪 🧀 শত বৎসর পরে এই শ্রেণীবিভাগ ভাঙ্গিবার সূত্রপাত করিলেন। এখন বঙ্গদেশে ৰাস্তবিক ষাহা অভাব এই মহাক্সা লদুয়ের মর্শ্বে মর্শ্বে তাহা অমুভব করিয়াছেন এবং নিজেই তৎসংস্কারের পথ-প্রদর্শন করিলেন। রাচ ও বরেন্দ্র ভূমির ভাতারা সমস্ত ব্যবধান দুর করিয়া এত দিনের পর একহাদয় একপ্রাণ হুইল, এবং বছ দিনের পর কবি ভট্নারায়ণের এক বংশধর হইতে এই বিবাদ সম্পূর্ণ ভাঞ্চিয়া-গেল।

गांथान-मञ्जूती।

্ব্যাথ্যাকু মূলক পদা।
বিংশ ব্যাখ্যান।

নিশ্ব বহান, হুবের নিলান, তিনি বিনা যত আব।
বিপ্রা তবন, যশোমান ধন, মহে নহে হুখ সার ॥
বাবে যদি জীব। অমুক্তের বাম ।
সংসার ভারতে যদি তব কাম ॥
তাঁহার চরণ লও হে লরণ।
তাঁহারে অর্পন করহ জীবন ॥
উত্তব্য করিয়া জানের নর্ম

**ेश्रिक कर्मक कतर मन्त्रि है** 

दसर्थ के प्रकाटन (कर्म डोस्शन। বিভরিছে ক: খ্যাংশু ভগন ॥ नम नमी मर इब श्रावाहित। বরবার বারি করে নানা হিও। বস্তম্ভরা কল ফুলে প্রশোভন। **"তাঁহার জ**গৎ স্থানর কেমন। জনতে বীহার মহিমা প্রচার। জীবে যাঁর ইয়া কৰণ। অপার॥ ভিনিই ভোষার হৃদরের ধন। ভাঁর কাছে থেতে বলেন বচন।। তিনিই ঈশর, তিনিই মহানু। মুক্তিশাতা তিনি হুখের নিদান।। তাঁহারে জানিতে, তাঁহারে সাধিতে তাঁর হুণা নাম প্রচার করিতে, হয় নাই ভব জনম এ ভবে ? তাঁর প্রতি তুমি উদাসীন রবে ? বে কিছু ভোমার-- সব যাঁর দান, তাঁহারে করিবে তুমি প্রত্যাখ্যান ? 1 जिमि आरीमधा मितनम (छामादत । **ত্মাপন ইচ্ছায়** ভজিবে তাঁছারে॥ সেই তাঁর ইচ্ছা করছ পালন। প্রেমে তাঁর পাথে কররে গমন।। প্রেমে তাঁর গলি কর কাষ তার। এই ছব কাষ-নাহি অন্য আর ॥ কেন ক্ষুদ্র ভাবে হইয়া মগ্ন, দিবানিশি অশ্রু করিছ বর্ষণ গ ভবের ভাণ্ডারে ছেন জ্বা নাই। আত্মার পিপাসা যাতে মিটে ভাই 🏨 🗪 কিঞ্চিৎকর স্কুন্তে এ সংসার। নিতে পারে স্থা গভার অধার ? **जाजा। छारे (मध ७५** जात होत । যশোষান বলৈ তৃতি নাহি পায়॥ यत्रीहिका नय स्ट्रियत इन्टन, 🕟 किन बीं जिल्हा विकास शिक्टन १ अक विन्द्र जन जेटर ना मिनिद्र । बाजात निकास गटक नियासित ।।

বিষয় গশ্পী, আখ্যা ক্রান্তরে ব নাহি দেয় ক্রখ একটিন ক্রান্ত। ক্লেণে হর্ষ শোক ক্লেণ্ড আশা। ক্লাশায় নিয়াশা আবার শিপাসা ক্লেণে প্রেলোডন ধর্ম কাডি লয়। প্রুথেব ছুক্তিন অন্ধকাব ময়।। এইত গাতিক সংসারের হয়। শান্তির নিবাস কড় ইহা ময়।।

মচ মোরা তাঁর পথে নাহি যাই। প্রবৃত্তির পর্যে আগে মোরা বাই।। च्यारशं मध्यारवा शत्यं श्राटविश्या। গহন মাঝারে পর্ম হারাইরা।। কণ্টক ফুটিয়া হয়ে জ্বালাতন। ভবে ফিরে থেতে করি আকিঞ্ন।। পথ নাহি পাই, দেখি ভারিবাব। ভিনিই ক গুারী, নাছি কেছ আ?॥ সৌভাগ্য ভাহার, এ হেন সময়ে। ভাটক দহামহে কাতৰ হৃদ্ধে।। ৰ্থা ক্ৰোথা নাথ ! অনাথ শারণ । শাস্তির শতি, পতিত প্রাংন। বিপশ্বে পাড়ছি কর হে উদ্ধার। লয়ে যাও এবে স্থপতে ভোমার॥ আরু হ'ল ক্ষতে সংসারের যায়। ভাত প্রয়া চরণ-ছারায ॥ আমিয়াছিলাম তৃষ্ণা নিবারিতে। ना क्यांमया खट्य (नान्त्रीय-वाहिट्ड ॥ ক্ষাম-কণ্ঠ এবে কাতর প্রাণ। অমৃতের বিন্দু ভূমি কর দান।।" বে কাডরে তাঁরে ডাকে এক চিতে 🖥 সঙ্গার সাগরে ভাষারে ভারিতে॥ #गा-इक सिंहा जारत जूनि न'न ! কাটি দেন ভাৰত্যয়ার বছন।। । जाराना अन्य अन्य कार्याच्या वि

THE WAY WHAT WENT THE TO श्रेष लालांक दारे न्द्रण केवना । अ Cदेवी Cनीक करने के के इसे ना । कड कडाशिक्ष कबरे शक्ता म रक्ष दलि योट्ड ब्रेट्फ निवे हैं वि । কতু ভাব কাছে শেলাখাত পাই।। সংসার নহে ও প্রথের আলর। (इन क्रिलिय-शिम श्राम्य ।। অবিচেচ্ন মুখ পাইলে হেথায়। পাছে জাব আর তাঁরে নাছি চায়।। করেন থুখেতে কণ্টক গোজন। তুঃখ কশালাতে আত্মার শোধন।। বিষয় আশার না হয়ে স্থলার। জানিবে সংসার নাহি হয় সাব।। সংসার প্রীকা শিবিবার স্থান। ইথে থাকি জীব লডিবেক জান॥ हु-८**थ८** अपिष्या महानिका **उहिल्ला**। তাৰ পানে চাহি এটা থাকিবে॥

केषादत रेष्ट्रा मध्मादत धाकिया। প্রের্ডির সহ সংগ্রাম করিয়া।। তাঁর দিকে ক্রেমে হ'ব আগুবান। **डाँह दल क्या र व वनीशांग ॥** সংসার মায়ায় আরু না মঞ্জিব। স্থান স্থানী তাঁহারে করিব॥ কিন্তু রিপুলহ লংগ্রাম করিতে। ছু:খ প্রলোভন শতেক সহিতে।। হীন-বল যোৱা কেমনে পারিব 🏲 ছুর্বলের বল তাঁছারে ডাকিব। রে আত্মসূ ! তাঁরে করঙ নির্ভর । তিনি বল দেন বলেব আকর।। সম্পাদ মদায় কথন বহিতে। **इटब्ड क्यदा डेंग्सदा पातिए।।** বহিলে বিশয় ঋটিকা ভীবণ ভারাকাতে গিয়া লইনে

के जियम जीवक प्रमुख्या करूर प्राप्त कर्मा क्षेत्र ভাষি কাৰ্যা কিছে ভোষারে।
ভিত্তি বিনা কার করনা দিতে কারে।
বিষ্কার ছুই পর্কে ভর।
করিরা উঠিছে আকাল জীক ॥
পূব চুংখ উত্তে করিরা আশ্রয়।
ভীর নিকে বেতে করম নিশ্চর।
সম্পদ্, সোভাগ্য, হুংখ, অঞ্জ-জল।
সবে হোর্ন হয় আজার মঙ্গল।

ক্রমশুঃ।

### সমালোচনা।

বিদ্যাবতী আবিয়ার ও তাঁহার উপদেশ। প্রায়ত বাব নক্ডচন্দ্র বিখাদ প্রণীত। মূল্য /০ স্থানা। আবিধার নামে যে একজন বিছ্যী স্ত্রী ছিলেন, ভাহা (वांश एवं आत्न कांत्रन ना ! देशें प्रमुख कींचन-गुङ्खान्छ भा छत्र। यात्र नाहे, याहेगात्र उकान छेभात्र নাই। লেখক বহু কটে বাহা কিছু সংগ্রহ করিয়াছেন ভাহার অনেক স্থল উপন্যাসসংশিষ্ট। ইহা সতেও छिनि आगामिरभन्न धनानामार्थ। এতৎপাঠে आवि-যাবের সময়ে ভারতবর্ষে জী-শিক্ষার কতদুর উন্নতি ইইবাছিল, ভাষার বিলক্ষণ পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া साम । हैनि थनात मन-नामधिक ছिल्नन । आमानिटनत न्तरम भागि शूटक कीवनी त्यथात थाथा शांकिछ, তाङा रहेरन भागता भाग धरे तमनी कृंगि जिल्लाकत আদ্যোপাত জীবনবৃত্তান্ত পাঠ করিয়া অধিকতর স্থা ইইতাম। চানক্যের সোকের মত ইহার উপদেশ-গুলি দারগর্ভ। আমরা আশা করি এদেশের বালক दानिकांशन अ ममक छेंगरमंग राम यरवत महिल भार করেন। এরাশ প্রক্রিকা যত প্রকাশিত হয়, তত্ত্ব ভীল।

# প্রাপ্তি স্বীকার।

নামলা কভক্ষতার নাহত দীকার করিভেছি যে নিমলিথিত পুত্তক ও পরিকাঞ্জনি উপছার প্রাপ্ত হই-নাছি।

)। सीयन गराव। श्रीक्रमातश्चम श्रम कर्डक निषिछ।
२। भागीत सीयरम, अभवारमत्र निर्मा प्रिजीव
माध्यस्य। भूमावस्य सर्वावसीम संबोध दृश्क श्रीक्रिया।
अस्तिस्य सर्वावसीम संबोध दृश्क श्रीक्रिया।

6। স্থি-স্থিতি শ্রীশুচুক মুখোপাধার কর্ত্তক অকানিত।

- c r Hindu Religion by Doens Note.
- ७ । भारती मारिका आसीत महिक। विदेशकार एक मिर्ट के इस सम्मापिक।
- १। जीतास्त्रक वर्धाः अन्नताथ (मरदत्र विवत्रम् । जीरेकनामहत्र मिश्ट कर्द्रक खनीछ ।
- ्राः, श्रामन-जूकान। बिल्वियमीय ठकवर्ध वाता . व्यनीतः।

Proceedings of the Asiatic Society of Bengel July, 1886.

ভারতী ও বালক। আবেণ ১২৯০। প্রচার। 🐇 🍇

সক্ষনতোগিণী। <sup>ূ এ</sup> গুনবাভারত। ভাল ১২৯৩।

নবাভারত। ভাল ১২৯০। আলোচনা। ঐ

সূৰ্বা-বিদ্যাবিদ্যাক্ত্ৰৰ বা ওঁছ-শান্ত। তৈন্যানিক পত্ৰ। ১ম সংখ্যা।

Hindu Reformer, August 1886. Fellow Worker, August 1886 Theosophist, Sept. 1886.

### मर्वाम।

আমরা অতান্ত হঃথের সহিত প্রকাশ করিতেভি त्य जामात्मन यन अका अकाम्लाम बीयुक्त (तहाताम हत्हीता-ধাায় অকালে ইছলোক পরিত্যাগ করিয়াছেন 🗓 বহু দিন হইতে ইহার আদি ব্রাক্ষমাঞ্চের সাইত সংযোগ। इति এथानकात अक अन बाहार्या अतः धाहातक हिल्मे । जीवन पृष्ठेतन देशेत मृद्धात कातन। व्याख আয়ু তিন মাস হইল্:তিনি এই বোগে যার পর নাই কই পাইভেছিলেন। কিন্তু গত ১৮ ছাত্রে রাজি ৯ টার গমর সর্পদত্তাপহারক ঈশ্বর ইহাঁকে আপুনার তেলাড়ে লইয়া সমস্ত জালা যত্ত্ৰণা হইতে মুক্ত করিয়াছেন। আমর্ কায়মনে তাঁহার প্রলোকগত আত্মার ৩৬ কামনা করি। তিনি এতাবংকাল আমাদিগের মধ্যে থাকিয়া ব্রাহ্মধর্ম্ম প্রচারে সহায়তা করিয়াছেন। এই তত্ত্বোধনীতে তাহার অনেক উপদেশ ও অনেক প্রবন্ধ প্রকাশিক আছে। অতঃপর সেই ওলি হঃখের महिल छँदि। एक अप्रथ कवारेश मिट्य । जिम्म विलक्ष স্তুত্ত বলবান ছিলেন। আৰহমান কাল মংগ্য মাংস ম্পূর্ণ করেন নাই। এরপ লোকের অকাল মৃত্যুতে कायता वाखविकरे नाथिङ रहेनाम। हेनि छेरमारी छ পরিভ্রমী ছি: अन् । जीवरमत्र ध्रात्र अर्धाः भवाशा वर्षाः वाय कविषा एक । इंदांत अवादान (बद्धांना । देनि उथाप বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা ঔষধালয় ছাপুন প্রভৃতি প্রভ্যেক সংকাৰ্ফো যোগদান করিয়াছিলে। ত্রাজীত বেহালা। ব্ৰাশসমাজ ইহারই ডভাবগানে ছিল 💯 তিনি এপন यथायह शाकृत जिचत छाहात नहांत्र रुप्ते। आमारत्त्र এই শেষ জ্ঞাৰ্থনা।

W . Area	i su
ু পুৰুষ্	ব্যয় 1
<b>বৈশাৰ হ</b> ৃতি আয়াচ প	·
্বাদি ভাগ	ন্য।ত ।
আয় 🖟 📜	52811 5c
शृक्षकात 🐯	Dooll 6
मगष्टि 🖊	0,520,30
ব্যয় 🗸 🔐	5931/50
<b>ৰি</b> ত	2:01.1120
আ	
खो <b>कागगांधा</b>	% 1 98€/ Œ
	75° C
्यानिक   <b>गीन ।</b> अपूर्क <b>प्रात् (सरवेश्व</b> नीण शाक	5.4
	পা হুবে <b>ৰা</b> টা) ১৮
সামধ্য বিকশান।	The state of the s
के विकास वनमानी हता	\$\
্ৰ শুলীক ভূষণ চটা	•
শ শ মণিপান মলিক	
"" " বাদকলাল পাই	'
" ় " বাজকৃষ্ণ আলে	۶۰,
ু " পারি <b>নো</b> হন রা	য়ি • ১
ं भी बिठल समी प्रभी कृष्टिम भूर्या	locrosite 50.
गेलकरमा नामा	[शासम्बद्ध ३ <i>५</i> ८
की एक नोर् मर्गिका तान	*1
" जिल्ला मान	গুণ্ড 🦎
প্ৰাক্ত।নিক দান।	errina da
্টা <b>ছক বা</b> বু ক্লণ্টজনাণ ঠাকু শিল্প সংগ্ৰহনাথ ঠাকু	
্ " খশঃশ্রকাশ মূহে	**
" ब्वाटनवर्षका मूद	.याशाया ह
🏥 " সংবাদ্ধতক মুক্তে	थाभाशा <b>य</b> ४,
" " প্রনেদ্তর ক্র	
नानांशांदत आखि	ž nela
(b) (b) (c) (c) (d)	482 <b>/</b> ¢
<b>তছ্বো</b> ধিনী পৃত্ৰিকা	550No
পুস্তকালয়	७२॥७/०
यक्षा निय	8°માર્ગડ
গছিতি	asness
ত্রাক্ষধর্ম গ্রন্থ প্রকাশে	ात्र मूलयन 💝 🤭
ভ্ৰান্মধৰ্ম প্ৰচাৰ 🔭 .	
দাতবা :	
शवर्गरम् । स्वतिः म वा	TS A
রামায়ণ 🎤 🗼	20
ं े त्रसर्थि .	2781 70
ः याश्वयः	Con Island

· 1, <b>4</b>	याञ्च			
<u>ভার্ম্যমাঞ্</u>		£	80000	¢
তৰ্বেখিনী প	পত্রিকা	***	sand	
পুস্তকালয়	***,	<i>4.</i> *	*	K&
্যন্ত্রালয়	***		· pho	
গতিত্ত		•••	99 a/	•
ব্ৰাশ্বাধৰ্শ্য গ্ৰন্থ	প্রকা <b>েশর</b>	মূল্ধন -	211	Œ
ত্রাক্ষাগর্ম্ম প্রচ	र्व :		(60 /m	
দাত্র	•	•	* 4	,
त्राची पन		•	<i>~</i> 1	0
अस्ति	Topic of the Control	and the second s	৯৪২।৴	٥
,		🗐 র	নীন্তনাথ ঠা	কুৰ .
			গ্রুগরাধ্যক	į

### বিজ্ঞাপন।

আলি হব আখিন মঞ্চলার "বালী পর্যা মমাজের" চরুর্থ মাজংস্থলিক উৎসব হ:

ইবে। পর্যাপুরালী মহোদালন উপাসনায়
বোলনান করেন ইহা নি ইত্তি প্রার্থনীয়।

উন্থিরালাল মুখোলালায়ন।

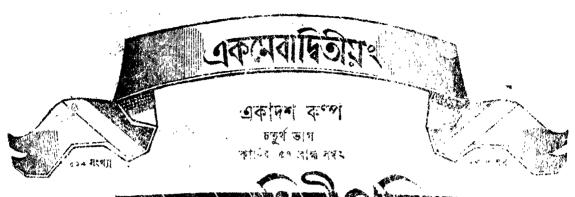
সম্পানক।

ত্যগামী ২৮ এ জাখিন ব্যবার কালন। ভাষ্যমন জের ভনবিংশ মাহুংসারক মহোৎ-গর ভশ্পত্যে প্রতে ৭। ঘটিকা ও সায়ংকালে ৭ ঘটিকার পর উপাদনাদি কার্যা আরম্ভ ছইবে।

> विदातीलाल व**त्म्हाश**वास नग्नामक ।

আগামী ৩০ কার্ভিক সোমবার বেহালা ভ্রাক্ষসমাজের ত্রয়স্তিংশ সাত্মহদরিক উৎসবে অপরাত্ম তিন ঘন্টার পর ভ্রার্মধর্মের পারীয়ণ হইবে এবং সন্ধা সাত ঘন্টার সময়ে ভ্রক্ষো-পাসনা হইবে।

> প্রিরাম চট্টোপানার সম্পাদক।



# ज्ञायाधनी श्वा

भद्रतापकासाटनम्भासोद्रात्मक् कि १६१६/साट्य भवीसस्कृत् । १२४ मिल्ड सक्तल प्रिव करान्य १००० १०० १०० । उन्नेयाच सन्दर्शितक भवात्वयस्य वस सन्दर्शितसम्बद्धपूर्णसमितस्य , १३०० । अस्ट ।

धर्मिकर्माणलात्र मनमञ्जल । समित्र प्राप्तिनताच्च के एक द्रस्थमण्डल सालन

# जाति आधारामाज ।

8 ज्ले क्षिम स्थितहरू ५ का भगान र १३ अस्त्रीमध्य स्थलम्

यांचा मण्डाभारत सगुराल लाज हो ক্ষালনে দে<mark>খিতে প</mark>ালা লা কেন্দ্ৰ 《秋·香·新加斯·西西·香·西州南部 新维二部文献 》 न, तर्र १ मारमे- मांचन हरी, भने, आर् म्बु-कोव कार्यात स्वतं र रहित्र · 新加州 1995年 1 \* (\*) \*(\*) এক্তৰিক আনুৰ্বি অপ্ৰান্ধ কৰে, বায় रकरे एको धार्म हार्थ का कराई कार्र अल अभा कर्न रेपकार प्राप्त करते किता ही उरेन में छन्। महिला भेका भिल भन्भी सन जान-कारम करान अवर छाछित तिरावि सहैशा দাঁডাম: স্থানের ঐক্থানক অনুনালন কাল এনে শক্তি এবং ডাক্তর বিরোগী হুইয়া নাড়ায়; ভক্তির ঐকাণাশক অনুশাল**ন কা**ল ক্রমে জ্ঞান একং শক্তিক বিরোধী হইয়া में।जाय। जागादनत तन्द्रभात भारक मञ्जानाय, स्थानी मन्त्रनाय अन्य जल्म नन्त्रनाय हैशाव দৃষ্টান্ত-হন। কিন্তু আত্ম ধর্ম্মের উচ্চ আদর্শ উक श्रकांत्र कान जानस्मित्रहे

শিতার প্রদানবাং ব্যাল প্রালিভাগে সুসালল শ্রেষ্টিত গ্রে

মতা হইতে বিচ্যুত চালৈ না, ধর্ম হ- ব ইতে বিচ্যুত হইবে না, ৬৬ কর্ম হইতে বিচ্যুত হইবে না;—ইহা কত না লাজকে অপেকা করে। ভার্ম্মধর্মের উপদেশ এই যে, যে ভিক্তি কর্ত্তির অনুষ্ঠানের বিলোট্রা সে ভক্তি ভক্তিই নহে--যে জ্ঞান ভক্তির বি-রোধী সে জ্ঞান জ্ঞানই নহে।

স্বর-জানের প্রধান লক্ষণ—প্রদ্ধ। ষ্টার আছেন— হুলাতে গলের ঐকাভিড স্-ক্তি প্ৰবিধাস-ইছাই অভ্যা এ বি-খানের ভিতর ঐক,স্বি, ১৮,১৮ লবন্তি বিষয় কোন প্রকার, ছিব জ পান পাইতে शाहर भगु-- भा" क कशारी क विशाहनर केन গামার পান পাইতে পারে না বাক্তর্না छारे बहान 'अर्डीड जुलालाध्याम कथर তত্রপলভাতে" যে বাজি বলেন ্য, তিনি আছেন, ভাৰেম অন্য ব্যক্তি হালে কি ১.-কারে উপলব্ধ হইবেন : এইরূপ একান্তিক সন্ম -- গরে বিশ্বাসই ঈশ্বরের সমস্ত িপানি অনেদের জ্ঞান নোকে সমকে উক্টিন कांब्रया (नया "ना" (यथारन नार्टे, 'नार्टे নেধানে থাকিতে পারে না.— হতাকে, জান প্রেম শক্তি ইত্যদি যত প্রাচৰ সদংক্ষ लका -मध प्रदे केंबदार करोबाहार fire भाग विशासि, कष्टित, जङ्हा, ज्यानिक, ला-ভূতি অভার-সুৎক কোন ত্রকণই পিছতেতে वर्ष्ट्रिक भारते मा। अप्रेक्षण, जेन्द्रद्वत चाल ह এবং সাহাত্মের প্রতি প্রাহিত বিশ্বাসের नागरे भाषा।

নিগরের প্রতি ভালা জান্তলে, উংগ্রেক ।

কি লানাদের কি লেপ মাধক ভালা আনা
দের কাল্যক্ষা দা , তখন জান্তা দেখিতে
পাই সে, কিল মহান প্রভু, জনা । ভালার
কোন্ত জান্তিক; জান্তর ভালার অভিপ্রেক
পথে চলাই আনাদের পাকে সক্রেক অভিপ্রেক
পথ চলাই আনাদের পাকে সক্রেক অভিপ্রেক
পথ ছবেষণ করেন কা সেই পথে চলিতে
অভ্যাস করেন ভালার ধর্মাব্রিক ভালার চালিত
ভালা করেন ভালার উত্তেজনার চালিত
হাবে না—ভালা হির করিয়া তদ্পুসারে
চলিব—ভালা হির করিয়া তদপুসারে

সহায় করিয়া ঈশরের অভিপ্রেত পথে প্রাণ-প্রেন লাগিয়া থাকার নাম—নির্চা। প্রজান-গর্ত্ত, নিষ্ঠা। শক্তিপের্ত্ত। আমাদের আজাতে যে এক স্বতংসিদ্ধ জ্ঞান-তেনালি আছে, লাং হি শদ্ধার অবল্যন ; ববং আন্মাণের জাতে স্থানি যে এক নিয়ানিকা শক্তি আছে বছা জানাদের মন আনাদের আপান্ন করে লাগিব লাগিব

মালাদ অন্যাস ক্তিপ্তে গল্পাপ এ-क्षा प्रश्नात को के लगा का १७४ वेहित THE FET & COLORD TO THE HERE থাও ছে, বৰং ভাৰ্টা ডিনি প্ৰায়েও প্ৰায়ে ১৮৮ জবলেৰেন কৰিছে খাকেন, শিল প্ৰশি १९१३ का-क!१०११ ल क्षांम कारत--- जेव-तहार १५ मेरी शक्षा, एत का १ ते विशिष्टा कानगणम গ্রেন্ট প্রথিধাতে কর্মেপ্র সভাল নাই-- ঈর্বত সে রগে সভু মতেন, তেনি আন भारत्व शत्रास्त्रीत्यो मञ्जामा शक्ः-श्वाः সংশ্লেষ্ট স্থান সাহিত্য হ্রস্টি স্থান সাহিত্য হ্রস্ট্র . अमराधः रुपः, क्षान् अपादद्वा पार्यः पंष्टः । ভাত্রিক অনুবাদ কলো। পূর্বে তিনি ক-देश-(वार्य ,य भाग भागकाम । भ निमाणि रामम, এখন তিনি ভান্ত বিক অবল , এ সাংগ্ৰহ সেই পথ অবস্থান (বেন) - মোন ব্যার্থ প্রাপ্ত সারেৰে সাধ্য যথন ঈশ্বারে শ্রাস্থ্য স্থান অবন লোকন কৰেন, অখনই ভিজি বুলিড়ত পা-বেন গে, ইনিট আমার কেম্ব ভজনীয় : ज्यमहे जाँगत मत्मायका प्रेचतासुतान छ-फील धरेता छएं : देशतर नाम एकि।

সাগকের আন্তরিক ভক্তি ঈশরের করুণা; আকর্ষণ করে। ঈশরের করুণায়ত সর্ক্রিই উন্মৃক্ত রহিয়াছে; গাঁহার যে পরিমাণে পি-শৌনা, তিনি সেই পরিমাণে তাহা পান ক-

किंद्ध (व श्रेषोस्त नाशकेषदात्र क्षांत्र कक्ष्मा-नाक्ष्यक्ष निमश स्टेश वाह, हम शक्क जिन विवासक्तिक काव १न ना। সাধকের **কমিচ কৈছে** যতই উৎক**ৰ্ম** লাভ করিতে বাকে-স্থানের প্রতি আহার আ-কৰা ঘতই গাৰেক হইতে থাকে—তত্ই ক্লি স্থানকে নিকটে পা'ন, ত তই ভিনি স্বরকে আপনার বলিয়া—আত্মার আত্মা ক্রনিয়া – হানয়সম করেন : এইরাপে তাঁহার ভক্তি ক্রমে ক্রমে প্রীতিরূপে পরিণত ছ-ইতে ৰাকৈ। শ্ৰদা নিষ্ঠা এবং ভক্তি তিনই প্রীতির অন্তর্ভু ত—গ্রীষ্ট ডিনের একটিকেও क्षािक्ट शास ना । यथन है मार्क केनंबरक অন্তরতম প্রিমতম স্কল্পেরলিয়া শ্রীতি ক-রেনঃ তখনই তিনি তাঁহাকে পরাংপর পর-মাত্মা বলিয়া ভক্তি করেন, এবং ভাঁহার অমুগত দেবক হটয়া কর্ত্তব্য সাধনে তৎপর হ'ন। প্রীতি কোন ভাল সাম্প্রীই নষ্ট করে না—সকলকেই যত্ত্বপূর্বক রক্ষা করে; প্রীতি ভক্তির আর কিছুই অপহরণ করে না—কেবল ভয় অপহরণ করে, প্রীতি ক-র্ত্তব্য-সাধনের আর কিছুই অপহর্ণ করে ना-क्यन कर्फात्रण जनस्त्रन करत । द्रेयत-ভীতিতে মন্ত্রণার আত্মার যেমন উৎকর্ষ माष्ट्रिक रहा, श्रमम चात्र किছूटि नहर । विवादक व्यक्ति श्रामाह्य मनुत्यात व्यक्तित छे९-কর্মনামিত হয়, ঈশরের পথে চলাছে মতুযোর मिलात स्टेकर्ग मास्त्रिका, नेपत-शोजिएक नम्भ वाषात उरकतिमानिङ रहा। नामक रथन रेनव-शीरित्य-नास्त्राधिक हरे काद्रवादक ভাষণিক পরাক্রম আছা হইতে নিযুক্ত করিয়া CENT, VALUE OF THE SERVICE Merin william metera andise with AND STREET, ST RECOGNITION WITH SECURITION OF THE PROPERTY OF

তোলেন। ঈশর স্বয়ং বাঁছার চকুর চকু প্রাণের প্রাণ এবং আত্মার আত্মা হইয়া স मा चलाव स्थापन करतन, छाहात किएनद অভাব ? ঈশরকে যিনি হৃদয়ের সহিত প্রীতি করেন-ভাঁহার কিনের অভাব ? আ-ত্মার উৎকর্য ঈশ্বর-প্রীতির অবশান্তারী ফল। কিন্তু সাধক যতই কেন উৎকর্ম লাভ না ঈশর তাহা অপেক্ষা পরাংপর পর্ম উৎকৃষ্ট; এজনা আপনার আত্মার উৎকর্ষ गांबरकत लस्कात छेशयुक्त नरहः; जेशतह সাধকের লক্ষা, আত্মার উৎবর্ষ यात । आजात छे एक र्यना धटनत जना जे बेत-প্রীক্ষি নত্মে কিন্তু ঈশ্বর-প্রীতির উপযক্ত আধার হইবার জনাই আত্মার উৎকর্ম সা-ধন , এইরূপ হইলেই সাধক ঠিকু পথে দণ্ডা-শ্বান হ'ন। যে প্রীতির উদ্দেশ্য আপ-नात छदकर्व रम श्रीज श्रीकिही नरह, প্রিয় ব্যক্তিই বে শ্রীতির সর্বাস্থ সেই নিফান প্রীতিই প্রকৃত প্রীতি। স্বাদ্মার উৎকর্ষ দ্বর-প্রীতির অবশ্যস্তাবী ফল, এবং সুবর-প্রীতির উপযুক্ত আধার—ইহা সভা; কিন্তু षागारमत षाञ्चात छे कई रे विषे षाभारमत मूचा लका हरा, जांश हरेतन क्योमना এ कुन ७ क्न फू कून हाताहे, जाहा हैहे**.ल जा**मता षाष्ट्रात छरकर्षा विकार हरे, खुवः विचटत्रत गरवादम्ख विकेष हरे। निकास नेमन-धीिं बण्रवात गर्सारकृष्टे बावका

হৈ প্রবাদ্ধন। তোলার প্রেন্থের বিগাই কইয়া জালরা এখনে স্থানত হইভাতি। ভোলার প্রেনায়তই পারাদের আ
করি জীবল। পাশভারে কর্তান্ত হইরা
নামরা ভোনার বাবে জালনীর হইন জাল ছান পাশাদের প্রতি কর্মণাবারি বর্হন করে।
ভাগিত জনতে ভোনার এক বিন্দু কর্মণা-বারি
ভাগিত হইলে আর্লনের মানার উবলিরা
ভাগিত ইবলে আর্লনের মানার উবলিরা
ভাগিত ইবলে আর্লনের মানার উবলিরা
ভাগিত ইবলে আর্লনের মানার উবলিরা \* মোহ মলিনতা অপসাৱিত ক্রিয়া – নিজীব হৃদ্যের জাবন সরপ হইয়ী— শ্রী আমাদের আলাতে আৰিভ্তি হও, ভাষী **रहे** लिहे ুশামর। চিক্ল জীবনের মত কৃতার্থ হইব।

ওঁ একমেবাছিতীয়ং।

# मर्गन-निश्वा

অপুরদেকের মন্তব্য!

্শাঙ্কর দর্শনের অধৈত-বাদ এবং বর্তমান मर्गत्नत देवज-वाम, ७ प्रत्यत मत्या कितान ঐক্যানৈক্য ভাহা পূর্বাহে জানিয়া রাখা **ভान** । प्राम्ठ्या ७३ (स. माञ्चत पर्गत्नत সহিত বর্ত্তবান দর্শনের যেখানে ঐক্য সে-ুখানে পুরুষ প্রকা, তেমনি আবার, যেখানে **षरिनकाः (नथारन थू**वरे षरिनका !

্র (১) উভয়ের ঐক্য।

শাহর দর্শনেও বেমন—বর্তমান দর্শনেও তেমনি নিবার-শর্ক অতীব ব্যাপক বাবহৃত হইয়াছে। জড় বস্তুই যে কেবল বিষয়-শব্দৈর বাচা, তাহা নহে; স্বপ্নের বস্তু সকলও বিষয়-শ্রেণী-ভুক্ত। এমন কি— বর্ত্তমান খণ্ডের চতুর্থ সিদ্ধান্তে আছে

"All blanks, all nonentities, require to be supplemented by a "me" before they can be sogitable, just as much as all things require be then supplemented.

ইহার অর্থ এই যে, জ্ঞানে প্রকাশ লা रेएड रहेरन रल-मकन यगन कार्य নক্ষ্ কৰেন্দ্ৰ একটি লা একটি "আমিইর प्राथना मा रहेरन है नव । हैरार के जिल्ला कर जिल्ला है, जन्म-मकन (एयम बार्टनारकेत्र विचार व्यक्तकात्र, लाइन्द्र चान्त्र নিপ্তৰাতা, উক্ষেৱে অভাব শৈতা, অড়-বন্ধর অভাব শুনা আকাশ, জিলার অভাব শুনা কাল, এই সকল অবস্তুরাও) জ্ঞানের বিষয়-খেনী-ভুক্ত। পঞ্চদশীর আক্রার ক্রেপ্তির

অন্তকারকেও বিষয় ভোগতে নিজেপ য়াছেন, যথা,

"হুৰোখিতদা দৌষুপ্ত ভয়ো বোৰো ভবেং বুকি: मा ठाववृत्त विषया २ववृत्ता छात्र ।

মুহুতি কালের অনুকার-ব্রেক্টি ইতেতিত জাতির স্থতি-পথে উপনীত হয়; পুৰ্মজ্ঞাত বিষয়-সকলেরই স্থতি সম্ভবে; অভএব, ত্ৰুপ্তি-কালের অন্ধকার ইমুপ্তি-कारन क्राप्त हिना।

্রতইরপ, উভয় দর্শনের মতেই দাড়াই-তেছে যে, জড় বস্তু, স্থপ্নের জার, ভাবনার বস্তু, আকাশ, কাল, ইত্যাদি যত প্রকার जनाज-विषय जारह जा'रम व**छ ह**ें इंडेक् আর অবস্তই হউক্-সমস্তই বিষয়-শ্রেণী-ভুক্ত। কিন্তু অনাত্ম বিষয় সকলই কি কে-বল বিষয়, আত্মা কি বিষয় নহে ? বর্তুমান এন্ত্রের জ্যা**ন-তত্ত্বের প্রথম** সিদ্ধান্তে দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, সাবঙীয় ভেরু বিষয়ের মধ্যে আতাই কেবল একমাত নিরভন-ভেরে 🔭 নিম্ম-লিখিত কথোপকখনে এই সিদান্তটির यापार्था सम्माने थाजीतमान स्ट्रेरिक

অনাত্র-বাদী। আমি উপন্যাস-পত্রি এমনি নিগগ ছিলাম যে আমি যে পটি করিতেছি—সে বোধ তথন আমার ছিল না।

আত্মবাদী ॥ এখন অবশা তৌমার শারণ হইতেছে যে, তুমিই পাঠ করিতে-ছিলে?

यंनाश-संती के त्र कि কথা,—এখন বাদ তাহা কাৰ আর্থ না হইবে, তবে ক্রিরপে আমি তোমার নিকটে তাহা জ্ঞাপন ক্রিতে পারিব ?

🎥 আছা-বাদী 🖫 ভূতা ব্যৱই কোঁণছন হয়, জ্ঞাত বস্তরই অরণ হয়,—এই তে জানি। তুমি বলিতেছ বে; পাটাকালে ভৌ মার এ জার্ন ছিল না বে, ছার পাঠ জারী Coe, चंपर अपन देखांना कार्या राज्या (व, ज्यिरे शां) कसिए कि यक याहा देखान साह

হিল না, অকস্থাৎ এখন ভাষা ভোমার স্মরণে উলোধিত হইয়া উঠিক। যে ব্যক্তির সহিত (তाबात (काम-कारमई नाकादकात नाई, নে ব্যক্তিকেও তুমি তবে স্মান করিতে পার। এ-টি তোমার কাছে আমি আজ নুতন শুনিতেছি। এ যদি বলিতে যে, উপ-নানের প্রতি তোমার পোনেরো জানা মনোবোগ ছিল এবং তোমার আপনার প্রতি ্ৰুদ্ধ কেবল্-এক আনা মাত্ৰ মনোযোগ ছিল, र्छाहा इरेटन कान शिन हिन ना; किन्न ज्ञि विलट्ड एर, शाठे कात्न जुनि मूलिरे ভান না যে, তুমি পাঠ করিতেছ, আর, নেই না-জানা বিষয়টি এগন তোমার স্মরণে আ-বিভুত হইতেছে! অগ্রে দাক্ষাং জ্ঞান পরে স্থান – এই তো জানি সম্ভবে : কিন্তু দাক্ষাৎ क्टारनत नाम-गन्न नाहे – अथह भारत। এটা তো কিছুতেই আমার ক্ষুদ্র বুদ্ধির গলা-धःकद्रग इहेटल्ट न।।

অনাত্মবাদী॥ বলিয়াছ ঠিক্। উপ-ন্যাস্ব-পাঠের সময় নিশ্চয়ই আট্ম জানিতেছি বৈ, আমিই পাঠ করিতেছি; কারণ, অত্রে যদি তাহা আমি সাক্ষাৎ সম্বন্ধে না জানিক, তবে পরে তাহা কিরুপে আমার স্মরণে উপ-স্থিত হইবে? পাঠ-কালে, উপন্যাদের প্রতি व्यागांव रवक्रम स्वीदनद्वाः व्याना यदनांटवान ছিল, তাহার তুলনায় আমার আপনার প্রতি चडीर धरगामाना मदनाटवान हिल - ७३-मांब, चार्शनात क्षेत्रि ग्रत्नहे त्य चामात बरनारवात्र हिम ना हैश द्वान काटकत कथा नरहा अथन वृत्तिमान द्व, वास्त्वान एक देव देवतन, जामादनदे चातरमञ्जू नक्छन, विश् नार वाहा क्षणाच कार्यम् भावत गरी : गुडरार शकाकेचान स्वयन महिल्ह ग्रि, नाष्ट्रकान् इं दमरेक्न मानावद्यार BARAUT TOTIO THE SEALTH 

হারই সঙ্গে জানি যে, আনিই জানিতেছি।
তের বিষয় অনেক আছে;—ঘটি একটি
তের বিষয়,বাটি একটি তের বিষয়, ইত্যাদি;
কিন্তু তাহাদের কেংই নিরন্তর তের নহে—
ভবান-মাত্রেরই অবিভের্না নহচর নহে;
যাবতীয় জের বিষয়ের মধ্যে আয়াই কৈবল একমান্র নিরন্তর-ডের্ম। পঞ্চদশাব এবকার তাহার গ্রন্থের একস্থানে বলিয়াছেন।
"স্বিদিখা স্বমান্থানাং বাহাণ বেদ নতু কচিং"

स्तापनात्क नो कानिया त्कश्हे यना त्कान विषयत्क कानित्क भारत ना।

তবেই হইল যে, জ্ঞাতা যাহা কিছু
জানে তাহারই মঙ্গে জানে যে, "আনিহ
জানিতেছি;" জাত্মা, জ্ঞান-মাত্রেরই, নিবস্তরজ্ঞেয়। এইটিই অনিকল বর্তুমান এছের
প্রথম খণ্ডের প্রথম নিজান্ত। নিল্প-লিখিত
কতিপয় পংক্তি বেনান্ত মুর্শান্তর ভাষা হইতে উদ্ধৃত;—

"দুলংগ্রতারাপেক্সা চ প্রতাগার্থনা বিষয় হং অবীষি ?"

"ন তাবদয়ং একাজেনা হবিষয়ঃ। অস্মৎ প্রত্যন্ত্র বিষয়ত্বাং।"

#### তার্থ।

প্রায়। যাহা "আমি" ভিন্ন আর কোন কিছু ব-লিয়া নিদিষ্ট হইতে পারে না, সেই নিকট্টম আস্থাকে ভাম বিষয় বলিতেছ ?

উত্তর। আত্মাথে, একাস্তই বিষয় নহে, তাহা নহে; বেহেতু আত্মা অত্যংগ্রহ বিষয়। অত্যং-প্রতায়ের অর্থাৎ আত্মজানের।

এইরপ দেখা যাইতেছে যে, বর্তুমান দর্শন এবং শাস্ত্র দর্শন উভয়েরই মতে আন্তর্মা ভোষা বিশ্বয়। এখন জ্ঞানের নবিষয় কত প্রকার ভাষা দেখা যা'ক।

জ্ঞানের বিষয় তুই ভাগে বিভক্ত,—
আত্মা এবং অনাজ্ঞা। অনাজ্ঞানিষয় তুই
ভাগে বিভক্ত,—বাভবিক (যেমন দৃশা স্পূণ্য
ইজাদি) এবং অবাভবিক (যেমন কাল,
শক্ষ অবকাৰ ইড়াদি)। বাভবিক বিষয়

তুই ছাগে বিছক —প্রত্যক্ষ (যেমন উপস্থিত দৃশ্য-স্পৃণ্য বিষয়) এবং পরোক্ষ (যেমন জন্ম-পস্থিত স্মৃত বিষয়)। অবাস্তবিক বিষয় তুই শ্রেণীতে বিভক্ত; মানোময় (যেমন স্থারে বস্তু) এবং অভাব রূপী (যেমন শূন্য কাল, অন্ধবার, নিস্তর্কতা, ইত্যাদি)। এই শ্রেণী-বিভাস্টি নিম্নে লতাবন্ধ করিয়া প্রদাশত হটা ;—

এই গেল জ্ঞানের বিষয়। এখন জি-कामा এই या, शारनाकुछ कारनड विध्य-चन्नकातु अ अारनत दिवस, कछ-वस् । अा-নৈর বিষয়-শুনা আকাশও জ্ঞানের বিষয়-अ योग इस्ल, - ख्वारनत अनिर्म 'उत्व कि ? বর্তমান দশনের মতে যাহা প্ররোধী ভাহাই জ্ঞানের অবিষয়; এক-পৃষ্ঠক পদ্র অর্থাৎ যে পদ্মের কেবল একটি মাত্র পৃষ্ঠা– তদ্বাতীত দিতীয় পৃষ্ঠা নাই—ইহা জ্ঞানের অবিষয়; নিও ৰ বল্ত, অৰ্থাৎ যাহার অন্তিভ আছে কিন্তু না তাহার আপনার জ্ঞানে—না অনা কা-ছালো <mark>জ্ঞানে কোন জ্ঞানেই সে</mark> অন্তিত্তের চিন্তাতাত বিষয়ের চিন্তা জ্ঞানের অবিষয়, ইত্যাদি। <mark>এই স্ববিরোগ্র স্</mark>ববিষয় যে কিব্নপ জাহা প্রথম খতের চতুর্থ-সিদ্ধান্তের শেষ ভাগে স্থাইরণে নির্মাচিত

"Does this contradictory nondescript exist?

This system is as far as any system can be from maintaining that matter per so is a mementity—a thank. All blanks, all nonentimes, require to be supplemented by a fine" before they can be objitable, just as much as all things or entities require to be thus supplemented. But matter for se by its very term, that which is an apprecianted by

any "me;" therefore it, certainly, is not to be conceived as a nonentity. If idealism be a system which holds that matter per se is nothing, we forswear and denounce idealism. True idealism, however, never maintained any such absurd thesis. But does not true idealism reduce every thing in the universe to a mere phenomenou of consciousnessy suppose it does, -does it hot also reduce every nothing in the universe to a more phenomenon of consciousness? The materialist supposes that, according to "idealism, wheh a loaf of bread ceases to be a phenomeron of consciousness and is locked away in a dark closet, it must turn into nothing. He might as well fancy that, according to idealism, it must turn into cheese. Idealism does not hold that when a thing ceases altogether to be a phenomenon of consciousness, it becomes another phonomenon of consciousness, as this supposition would imply. No-in the absenre et all consciousness, the loaf, or whatever It may be, lapses, not into nothing, but into the contradictory. It becomes the absolutely incogitable - a surd-from which condition is can be redocined only when some conscious ness of it is either known or cenceived."

ইচার সংক্রিপ্ত মর্ম্ম এই সে, জাতুরি বে সমতে কোন জানেই প্রকাশ পাইতেতে ना. त्म नगरम जोश किक्रण १ कार्न विष् ज অড় বস্ত যতঃ কিরূপ 🕈 হয়—তাহা "কিছু." অধাৎ ভাব-পদার্থ ; নয়—তাহা "কিছু না वर्था९ वसकातामित नाम ं वाषात-भमार्थ; নয় তাহ্য "কিছু অণ্চ কিছু না", অর্থাৎ বৰ্ত্তমান মুহুৰ্ত্ত ষেমন যখনই আছে তথ-नहें नारे- बार्ड जर्ग नारे- खेश कि मिन अकता विद्राय-अमार्थ ;---छान-विष्कृ छ জড়বন্ধ, স্বতঃ, এই তিন শ্রেণীর কোন্ শ্রে-ীয়া অন্তৰ্গত ? ভাহা "কিছু"র দল-ভূতা ना "दिष्टु-ना"त मन-पूछ, ना "किष्टु ज्यार किङ्ना"त पमञ्क १ यपि का छा, जार्र "किडू," তবে नीज़ात्र खहे रव, खहा खड़ा हो। फिर नाहर कान-ट्याएस अवरेश विश्व जीश रहेता जोहा मान **व्यक्ति एक** व्यवस्थ

না; বিদিবল যে, তাহা "কিছু না," ত্বে দাঁড়ায় এই যে শুনা আকাল—শুনা কাল—
অস্কলার—এই সকল অবস্তর ন্যায়, তাহা
তাল-গোচর অভাব পদার্থ; কিন্তু তান্দ্র
বহিছু ত অড়বস্তর স্কলপ-লক্ষণই এথানে জিতালা, জ্ঞান-গোচর কোন কিছুই এথানে
কিজ্ঞানা নহে; তাইই দাঁড়াইতেছে যে,"কিছু
অথচ কিছু না" ইংাই তাল-বহিছু ত জড়বস্তর
স্কলপ। তাল-বহিছু ত জড়বস্ত ভাব পদার্থও
নর, অভাব-পদার্থও নর,—তাহা বিরোধ-পদার্থ। বেদান্তদারে অবিদ্যার থেকাপ লক্ষণ
নির্দিষ্ট ইইয়াছে, তাহা অবিকল ঐক্লপ,
হণা;—

'সদসদ্ভ্যামনির্নাচনীয়ং ত্রি গুণাত্মকং জ্ঞান বিরোধি ভাব-রূপং যৎক্ষিকিং।"

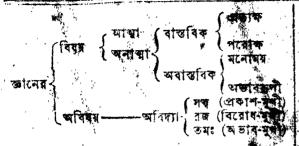
অব্।

তাহা আছে কি সাই তাহা বলৈতে পারা যায় না
অথাং কিছু-অথচ-ক্ষিছুনা এইরপ বিরোধ-পদার্থ;
তি ওপাত্মক অথাং প্রকাশ অপ্রকাশ এবং অভিনত।
এই-জিনাবিরোধী শক্ষাক্রান্ত; জ্ঞান-বিরোধী ভাবক্ষী একটা কিছু।

অবিদাকে ব্রিপ্তণাত্মক বলিবার, তাৎপর্য;
কি দেখা বা'ক্। জ্ঞান-বহিত্ ত জড়বস্তা সে
ক্রংশে জ্ঞানের নিকট হইতে লুকাইয়া থাকে
সে অংশে ভাষা ক্রমান্তণ;—"কছু অগচ
কিছু না" এই যে, অবিদান, ইহার কিছু-নাঅংশটি তবোপ্তশু; স্ববিদ্যা যে অংশে
ভাষা নিকট ভাষাশ-যোগা, নে অংশে
ভাষা নক্তা হৈছাশ-যোগা, নে অংশা
ভাষা নক্তা হৈছাশ-যোগা
ভাষ নক্তা হৈছাশ-যোগা
ভাষা নক্তা হৈ বালা
ভাষা নক্তা হৈছাশ-যোগা
ভাষা নক্তা হৈ বালা
ভাষা নক্

**টিই রজে: তণ । জ**ড়বন্ধ, সরপতঃ **्य जर्दम**े छोहा काटनत चटगावत, दगरे **षर्म, व्यविनाम्भटक**त वाहर (भ-वर्म ভাষা জ্ঞানের গোটর দে আনো তাহা অ-\* विमा नट्य। कान व्यर्ग-मिन्त्राः ; क्ला-নের জাংস্পর্শ মাত্রে অবিদ্যা বিদ্যাস পরিনত হয়—স্ববিরোধী অবিরোধীতে পরিশত হয় – অনির্বচনীয় স্থনির্বচনীয়ে পরিণত হ্য। জ্বানে প্রকাশ পাওয়াই অবিদ্যার মৃত্যু, এবং অবিদার মৃহাই বিদার জন্ম। গর্বেই অবিদ্যার মৃত্যু প্রেচ্চন রহিয়াছে বি-प्राप्त वीख क्षेत्रज्ञ विष्याद्य – मङ्ख्य टाव्हन রহিয়াছে। সত্ত্ব-গুণের প্রাস্কর্ভার (অংগ্র জ্ঞানে প্রকাশ পাওয়া) যদিচ অবিদারে মহা-স্বরূপ, কিন্তু দেই মৃত্যুই অবিদারে জীবনের একমাত্র উদ্দেশ্য। সভ্গুণ-প্রধান অবিদ্যা সতীর সহিত উপমেয়; রজোগুণ দক্ষের দহিত উপমেয়; জ্ঞান শঙ্করের সহিত উপ-पक्ष त्ययन मक्षरतत वित्ताधी, गर्छा-ওণ সেইরূপ জ্ঞানের বিরোধী; দতী যেমন পতি-প্ৰাণা, **সত্ত্ৰ-**প্ৰধান অবিদ্যা সেইরূপ জ্ঞান-প্রাণা; সতী যেমন প্রাণ-ত্যাগ করিয়া উমা হইয়া জন্মতাহণ কলিয়াছিলেন, সত্ত ভণের প্রাতুর্ভাবে অবিদর্গে সেইরূপ প্রাণ-ত্যাগ করিয়া বিদ্যা ছইয়া অন্য-প্রহণ করে। অবিদ্যা কেবল जीव সমিধানেই অবিদ্যা, ঈশর-সন্নিপানে তাহা বিশুদ্ধ সত্ত্ব-গুৰ-মাত্ৰে পৰ্য্য-ৰসিত; কেন না পূৰ্ণ জ্ঞানে সমস্তই প্ৰকাশ-শান কিছুই অপ্রকাশ থাকিতে M11"

এইরপ দেখা যাইতেছে যে, জ্ঞানের— বিষয় সমজেও বেমন—অবিশা সম্বন্ধেও কোনি উভয় দর্শনেরই মতের ঐক্য বিষয়কে। নিমে জ্ঞানের বিষয় এবং বিষয়ে সমস্তই লতাবন্ধ করিয়া প্রদর্শিত



এই তো গেল জ্ঞানের বিষয় এবং আবি-ষয়। এখন আত্মা এবং অনাত্মার পর-স্পারের সম্বন্ধ বিষয়ে তুই দর্শনের কিরূপ ঐক্য তাহা দেখা যা'ক।

নিম-লিখিত চুইটি শ্লোক পঞ্চদণী হইতে উদ্বত।

"অহমৃতি রিদষ্ তিরিতাস্থ:করণং দিধা। বিজ্ঞানং স্যাদম্ম তি রিদংস্তি শ্বনো ভবেং। অহস্প্রভার বীজ্ফ মিদস্ ভেরতি ক্টং। অথিদিদ্ধা স্বমান্ত্রানং বাহাস্থেদ নতু কচিং॥" অর্থ।

অন্ত:করণের বৃত্তি ছই প্রকার, — প্রহণবৃত্তি (অর্থাৎ আয়ানিবরক বৃত্তি) এবং ইনষ্তি (অর্থাৎ অনাত্ম বিব-বৃদ্ধতি)। অহম্ তিই বিজ্ঞান এবং ইনষ্ ভিই নন ইছা অভীর স্পষ্ট বে, অহম্প্রতার (আয়াজ্ঞান) ইনম্ তির (অনাত্মবিবরক জ্ঞানের) বীক্ষ স্বরূপ। কারণ, আপ-নাক্ষে না জানিয়া কেরই স্থানা কোন বিষয়কে জানিতে

প্রদেশীর এই করেকটি কথা বর্তুমান
প্রছের বর্ত্তমান খণ্ডের আপাদ মস্তক অধিকার
করিয়া রহিরাছে; অভগ্রব উহার অর্থের
প্রক্রিয়া রহিরাছে; অভগ্রব উহার অর্থের
প্রক্রিয়া রহিরাছে; অভগ্রব উহার অর্থের
প্রক্রিয়া রহিরাছে; অভগ্রব নির্দেশ একটি
ক্রিন্তাকে লইয়া র্যাপুত হয়—এইটি অহক্রিন্তার-একটি অনাজ-রিময় লইয়া ব্যাপ্ত
ক্রিন্তার-একটি বিশ্ব ভিন্তির মান্তির
করা মান্ত্রনাল ক্রিন্তার-ভারত্তর অন্তর্ভার
পূর্বক বিশেষ বিশেষ ক্রিন্তার বিশ্বরণার
ভাষার পৃষ্টি-সাম্বর্গ করাই বিভান্তের প্রক্রমাত্র

तं रमेंने निकान हुए (কেন্ কোডিয় বিজ্ঞান) ভাৰাৰ নাম্য তত্ত্তলি ভূঁটিয়া ফেলিলে, বিশেষ বিশেষ বিষয়ৰ খাছা অবশিষ্ট থাকে, তাহা বিজ্ঞান-নাবের অবোগ্য। অতএব,জ্ঞানের যে আংশ সাধারণ তত্ত্ব-গর্ত্ত তাহাই বিজ্ঞান-শব্দের 🖟 वाहा ; जात, त्य ज्ञान वित्मव वित्मव दिवश-গার্ব তাহাই মনঃশদের বাচ্য। অহম ভি যদি সাধারণ-তত্ত্বতার্ত্ত হয়, তবেই ভাই। বি-क्छान भूटकत रोहा, नरहर नार्क कार्क, शिनि ইউরোপের একজন প্রধান-তর্গা ভর্মির ভাহার মতে অহন ভি ("The Think waste আমি চিন্তা করিতেছি বা আমি আনিতেছি,— এই ব্যাপারটি) এমনি একটি ব্যাপকতম সাধা-রণ তত্ত্ব যে, তাহা বিজ্ঞানের সমস্ত মূলতত্ত্ব-রই ভিত্তি-মূল। অতএব পঞ্দশীর এই যে একটি কথা সে, অহমুভিই বিজ্ঞান, ইহাকে "(मरकर्तन" विनश छेड़ाहेश ना निशा हेरात তাৎপর্যের প্রতি যত্নপূর্বক প্রশিধান করা কৰ্ত্বা। একটা কোৰ অৰাম্ব-বিষয় ধর---वागापत कामानास्तर मह (शगन घष्ठे; शाकित्म अ शाकित्व शादत भावित्न अ मा-बाकिएक भारत-पर्छेद शर्तिगर्छ शह থাকিতে পারে পটের পরিবর্তে আর একটা किছू शक्दि शदित अञ्चत घरे-भगिष विषय-मुक्त कारने किटनेत् विद्वात सम्दर्भ विट्रांच विट्रांच विषय महाने स्यादार नामा विश्व अपलब्ध कि यहि व्यक्ति तर्व कत् नदह। তেছি ক্ষমনও আমি আমিতেটি বে, আমিই कानिकहि,--श्यन आबि के व्यक्तिकि कर्म ६ नामिकीहरण है रेन, बार State; your tails arrayof ("The Library of Co were arrests, Rel काटनब रेखें -विराम अभरतम् विराम ह OR BENEFIT

মহত্তি সাধারণ তত্ত্বর্জন পূর্বে বলিয়াছি (अवः विख्वान गांत शांब है व्याभारमद अ कथाव यापाला मुखनान क्रिटिक्टि) (य, क्लाइन्द्र (य परन नारात्रन छड-गर्ड छाहाह विस्तान-भरमद वाहा ; , आठ हर भ्यनभीत व कथाहि षकार्वे (य, षहकृष्टि विख्यान। जर्मृतिहे रि मून विद्धान, केश वर्डमान अन्ति अथम খণ্ডের অন্তম বিদ্ধান্তে শ্লীতিমত প্রমাণ করা হইয়াছে । পঞ্চশী তাহার পরে বলিতেছেন रा, "बर्ख्य अधि-वीषव सित्र बृट्छ त्र जिल्लू हेर" ইহার অর্থ এই যে,আক্মজ্ঞানই অনাস্মজ্ঞানের বীজ কি না ভিত্তি-মূল ; এই .বচনটির সপক্ষে বর্ত্ত্বান প্রস্তের প্রথম সিদ্ধান্তের গোড়াতেই খাছে যে,জ্ঞাতা যাহা কিছু জানে, তাহার দেই জ্ঞানের ভিত্তিমূল স্বরূপে আপ-নাকে কিছু-না-কিছু জানা তাহার নিতান্ত অবিশ্যক; সংক্ষেপ্তে, অনাত্ম-জ্ঞান মাত্রই আ**ত্ম** জ্ঞানের অভ্যন্ত্র-দাপেক্ষ।ু এই**রূপ** দেখা যাইতেছে যে, আত্মা এবং অনাত্মার পরস্পর সম্বন্ধ বিষয়েও তুই দর্শনের কোন यठ- एक नाहे। ध्यादन दम मचक्रि **छा**द्र-একটু স্পান্ত করিয়া খুলিয়া দেওয়া আব-শ্যক। সাধার্ণ-তত্ত্ব (যেমন "যে জড়-পিতের ঘনত এবং বিকৃতি যত অধিক তাহার আ-कर्बन-मार्कि कुछे श्वतन" क्रूष्टे क्रिकि माधावन তত্ত্ব) নিয়ন বাজ করে, এবং তাহার অভুগত ৰিবেৰ বিবেৰ বিৰৱণ (যেমুন অহাদির शिकिविधि तेम नियम मानिया हत्न ; नाधा-वर छन्न निशासक, এবং তাहात खरीनस विरम्य विरम्य विवत्रन निग्नमा ,—जूरग्रद गर्या ध्वेदेकल निवस्या-निवायक मुख्य । माधा-रे जब-गई परेषु छ रा मून विकान এवः क्रिय तिर्द्धा नियमगाउँ क्रिया विशेष मान 4 Octif Rome, with C. Chart Saball निर्माणक प्रमुख, अपूर्ण के कि केर हैं (शिरुष्टिया विकास) निरामक वेक्स

(मदनाइंडि वा इन्तिय प्रिड) नियम। পर्वास पूरे नगरबत मत्वा क्वतम क्षेकार छन-लिक कता राज- चरेनरकात विकृतिमार्गः पृष्ठि- (গाচর इहेन ना। এখন क्या अहे (य, यानिनाय—प्रस्पृत्ति देपपृत्ति निशासकं **মৃতরাং** পূর্ব্বোক্ত বৃত্তি শেষোক্ত বৃত্তি অ-পেকা উচ্চ প্ৰবীষ; কিন্তু তাহা বলিয়া কথনো কি এরূপ হইতে পারে যে, অহম্ভূত্তি আপনার সেই উচ্চ পদবীতে ঐকান্তিক ভর করিয়া দাঁড়াইয়া ইদফ্তির সহিত একেবারেই সম্পর্ক পরিত্যাগ পূর্ব্বক একাকী অবস্থিতি করিতেছে? সদি বল যে হাঁ----তাহা হইতে পারে, তবে তুমি খটেড-वानी ; यनि वन (यः, ना—ভाश शहेराज भारत न।, जरत जूमि दिल्लामी। এই यে এक हैं। न।, এই সুক্ষা সূত্রটিতে তুই দশনের সমত মত-ভেদ লম্বমান রহিয়াছে।

### (२) डेंच्डरग्रंत कटेन 🗀

এখন আমর। বিলম এক সংকট স্থানে
উপস্থিত হইয়াছি। এই স্থানটি অ-বিরোধে
পরিপূর্ণ। পঞ্চদশীর গ্রন্থকার এইমান্ত্র বাললেন 'অবিদিয়া সমাজানং বাহাং বেদ নতু
কচিৎ " আপনাকে না জানিয়। কেহই
অন্য কোন বিষয়কে জানিতে পারে না; \*
ইংাতে প্রতিপন্ন হইতেছে যে, আরা আপনাকে জানে—আত্মা আপনিই আপনার জ্রেয়
বিষয়। স্ত্রাং আত্মা জ্রেয়-বিষয়ের প্রেলীভূক্ত। 'আরু, ইতিপূর্বের আমরা দেখিয়াছি
যে, শঙ্করাচার্যা স্বরং আত্মাকে জ্রেয় বিষয়ের
দল-ভূক্ত করিয়াছেন—"অ্মাৎ প্রতায় বিষয়ন
ভানের বিষয়া; কিন্তু অন্তিপ্রেই পঞ্চদশী
বলিতেছেন।

"প্রাম্বাহত্তিখাৎ বিধাতে নাহতাব্যতা। ক্ষাত্তানাজ্যতাক্ষণ অজ্ঞোন খণ্ডরা॥ ক্ষাক্ষাত্তিক জ্ঞান স্বরূপ, এই ক্ষান্তিনি শুক্র सरहत काहाब भना काकाकाह दनिवाह जिन रस्त म - कारार अधिव नार बाला। नरह ।

व्यक्ति जनोध-विक-तिकत हरेए जिन (देश क्लीन, जाहारे जनाज नियय-भकनटक कारन : किंक कान-रहेटल जिन्न धनन कि-वस बाट्ड प्राच्या कान्तर कान्तिर ? प्छाटनद অনা বৈদি জাতা নাই বলিয়াই জান भट्छ । जारना अस्तिष्ठं नारे बेलिया नटर। देशाएक माँजाहराज्य कर त्य, ब्लाटनत ৰান্তিৰ আহে অৰচ সে অন্তিৰ কাহারো भाग कि नगर नट्ट, त्यट्ट छान व्यट्छ । कार्य द्वाकिए जाना कर्क বিশ্বাৎ প্রনাসা কর্তিক) জের না হওয়া অপ-রাধে একেবারেই অফেরের অন্ধকৃপে বল-পূर्कक निकिक्ष **रहेल।** दिल्लामी अ गांशा-तिर्विवारम् गृहेख पिट शाहर ना-छाहे विश्व-निषिष्ठ वामानूवाम ;-

दिख्यां मी औहा स्ता कईक रख्य নহে কিন্তু আপন কর্তৃক জেয়, তাহাকে কি তেন্ত্র বলিতে পারা বার না ?

क्रिक्ट्रवानी ॥ दतम शांता माहेरव ना ? আপনা-কর্তৃক্ট হিউক, আর, অন্য-কত্তৃক্ট रुष्ठेक, टब्ब्ब (व+त्म टब्ब्ब्ब । **এ ভ**ে অভি महक क्या म्लाहे शिष्यी चारह।

दिल्बानी ॥ प्रेमिः विनादिल्ह—याद्यां चा-পনা অৰ্থন জেল ছাছাও জ্যে, যাহা অনা-कर्व (का डाराज क्या, -पाटका, उर्द,

कि ? बहिब्ह्यामी ॥ शहा प्याणना-कर्त्व्छ (का महर, बना कर्षक ७ एकर नरह, जाराहे

विका । एक कि वाका वाका वाका वाका वाका कर वा विकाद क्षेत्र एका एका है वाक वाका वाना कर्क काराहत क्षा कर कार्या कर कर कर कर कार्या कर कर क बहिन्द्रा, उत्त कि शाका मानाना वर्ष के वा

अदेवक्यानी ॥ वर्गे वनिक्रा है "वरक्र रहेत्य है, यात्रमा वर्ष-

क अ (कार निक्-मना क क्न क नद्र।

रेवज्यामी। किस प्रि पार्शनह यिन-য়াছ "অবিদিয়া স্ব্যাস্থানং বাহাংবেদ নত্ नष्ट्र कहिए" जाननाक ना कानिया (कर्हे অন্য কোন বিষয়কে আনিতে পারেনা। তোমার আপনার কথা অনুসারেই দীড়াই-তেছে যে, আত্মা যেমন অন্যান্য বিশ্বাকৈ জানে,তেয়নি তাহার দকে দকে আপুনাকেও জানে: তবেই হইল যে, আত্মা আপনা-কর্ত্তক ভেয়। আর, এইমাত্র তুমি বলিলে, কাঁহা আপনা-কর্ত্ক জের তাহাও জেয়; অত্তাব তোমারই কথার দাঁড়াইতেছে যে, আঁত্মা জেয়। এখন তুমি তাহার উল্টা বলিতেছ--এখন বলিতেছ আসা অস্ক্রেয়! ইহার কোন্টা ঠিক্ গ

व्यदिन्द-नामी॥ ७ पूरे कथात्र गरमा-বিরোধ তো আমি কিছুই দেখিতেছি না। আমি কি বলিয়াছি ? আমি কেবল বলি-রাছি যে, আত্মা যথন যে-কোন অনাত্ম-বিষয়কৈ জানে, তথন, তাহারই সলে গৈ আপনাকে ভানে। কিন্তু যখন সে কোন जमाज विवहत्वहें ना जातन, छचन कि इह हैं তখনও কি সে আপনাকে আনে ! নিক্ল-शाधिक खारनद **উन्दाद मदन गटन हैन्स्** किंद অন্তগমন অনিবাহী, একং ইদস্ভির অন্ত-গমনের সঙ্গে সঙ্গে অহস্তির অন্তর্গনন -जनिवारा । भगावि-काल हेममृ डिब उटाई-(मह मरत्र मरत्र<sup>्</sup> किए छिए छेप मिलु इहे, उपम दक्रम अव्य कि निक्रभाषिक स्वान क्रान्ड वाहर स्थापन वास्त्र प्राप्त ক্ষেত্ৰালী। তুমি বলিতেই সাধা, বেৰ ভিন, তৰ্নও তেমনি বাকে-বিধা

ৰ ভিত উন্নুলিত হইয়া যায়, এ কথা আমি সর্বান্তঃ বরণের কহিত শিরোধার্যা করিতেছি ; কিন্তু তুমি বে বলিতেছ বে, অহন তি অন্ত-ছিত হইলেও জ্ঞানের অন্তিম থাকিতে পারে—এ কথায় আমি কোন ক্রমেই সায় দিতে পারি না ; তাহা তথু নয়, যে-কারণে আমি তোমার পূর্কোক্ত কথা শিরোধার্যা ক্ষারতে বাধ্য হইতেছি, সেই একই কারণে আমি তোমার শেষোক্ত কথা শিরোধার্য্য করিতে অসমর্থ হইতেছি।

milda hon

অহৈতকাদী। দে কারণ-টা কি ভাহা ব্যক্ত করিয়া বলিলে ভাল হয়।

ছৈত্বাদী।। বাক্ত করিয়া বলিতে আমি যে, কুঞিত, তাহা মনে করিও না; তবে কি ना-श्राहेश विनिष्ठ এक है मगत लागित, ভাষাতে যদি তোমার আপতি না থাকে. ভবে সংকোচের অনা কোন কারণ নাই— সমস্তই ব্যক্ত করিয়া বলিতেছি ;—

কোন একটি বস্তু ধর—বেমন রক্ষ ; রক্ষ মাত্রেরই এরূপ কতক-গুলি লক্ষণ থাকা চাই, যাহা শাল তাল তমাল প্রভৃতি সকল রক্ষে-ब्रहे माधावन लक्ष्युः, এবং मिहे माधावन ल-का शिलव मस्टिंदिक आयवा मः कारण वृक्ष्य বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকি। কিন্তু এরপ একটা রক্ষ আম্বাকে দেখাও দেখি যাহার एक (कर्म के माधातन नक्ना हि (तुक्क न-क्र १- छिंहे) खारक, उडिज्ञ विर्मान लक्ष्म ध-কটিও নাই ? ক্থনই ভাষা পারিবে না। বদি বট রক্ষ দেখাও, জবে, তাহার যেমন इक्ट बार्ड ज्यान जाहात मदन जाहात क्षेत्रक मार्टकः मनि दम्बनाङ्ग दम्बाकः ज्ञादः, তাহার বেমন ব্ৰহম আছে, তেমনি ভাইার नत्त्र हाराक क्रियमाक्ष्य अस्ट । असम् खेकिए हम एवं यागादक त्रकारक ना-विदेव ना, पाराव अपूर देक्पन अवार का

এ विश्वन (नशा-श्रान-छ्वारनवेश खविकल এইরূপ। **ন**কল বুকের সঙ্গেই যেমন বুকর্ত্ত লকণটি ক্রমাগতই লাগিয়া আছে, সেই-खाट-।।। माऋहें জানিতেছি" এই জ্ঞান টি নিরন্তর লাগিয়া আছে; আত্ম-জ্ঞান সকল জ্ঞানেরই সা-ধারণ ধর্ম। কোন একট যেমন ভদ্ধ কেবল তাহার সাধারণ ধর্মাটির (রুক্ষাত্তর) উপর করিয়া তাহার বিশেষ লক্ষণ্টির সহিত (যেমন শালত্বের বা তালড়ের বা আর-কোন-কিছুছের সহিত্ত) একেবারেই সম্পর্ক পরিত্যাগ করিতে পারে না, গেইরাপ কোন জ্ঞানই শুদ্ধ কেবল তাহার সাধারণ ধর্মাটির (অহম ভিটির) উপর ভর বরিয়া ভাহার বিশেষ লক্ষণটির ধহিত (নট-জ্ঞান, তাকাশ-অন্তর্কার-জ্ঞান, মনো-রাজ্য-জ্ঞান, এই প্রকার কোন-না কোন জ্ঞানের সহিত, এক কথায়—ইদম্ভির সহিত) একেবারেই সম্পর্ক পরিভাগে করিতে গ্রারে না। রক্ষত্ত ভিন্ন যাহার আর কোন কিছুত্বই নাই—এরূপ রুক্ষের অস্তিত যেমন অসম্ভব, তেমনি **অহ**-পৃত্তি ভিন্ন যাহার আর কোন রুতিই নাই এরূপ জ্ঞানের অন্তি**২ অসম্ভব। কোন** পত্রই ধেমন এরূপ হইতে পারে না যে, শুদ্ধ কৈবল তাহাব একটি-যাত্র পৃষ্ঠা---তা'ছাড়া দ্বিতীয় পৃষ্ঠা নাই, **সেইরূপ কোন** রক্ষট এরপ হইতে পারে না বে, তাহার কেবল রক্ষত্বই আছে—আর-কোন কিছুত্বই नारे,- कान खानरे अक्रम रहेर्ड भारत ना যে, শুদ্ধ কেবল তাহার অহন্ত তিই আছে— हेमचृष्ठि भूत्नहे नाहे। এ विषया তো-মার পামার মধ্যে মত ভেদ নাই। তবে জুমি কেমন করিয়া এমন একটি প্রের অ-শ্তিক স্বীকার করিতে ছ যাহার তুই পৃঞ্চার কোৰ পৃষ্ঠাই নাই – এমন একটি স্বুক্ষের অ-ক্সিম্বীকার করিতেছ বাহার রক্ষণ্থ পর্যন্ত

न है अमन्ध्रकार कार्यात विश्व श्रीकात াবতেছ গোহার পাহার তি পদান্ত নাই। তোশার # চ এইপ সিদ্ধান্তের আমি কোন वर्ष हे शिक्या शाहरखंड ना। त्य-कान निर्देशीयनात् जात्म मा स्वतार जीश-नार अख्य छेलन्स करत ना -- एम छ्वारनत প্রিক পর ব্যক্তি কিরপে উপলব্ধি ক-ি কেই যে জানের অতিহ উপ-ক্রিনা, সে জ্ঞান আছে ইহা কে বিশ্ব ভানেই জ্ঞানের থাকিবার স্থান। शायनात छाटन दिनागान ना **খাতিব তিবে আ**র কোণায় থাকিবে ? क्षाम् भागनात क्षाटन नाहे- ७४ टकवन তোৰা মুখের কথাতেই আছে এএল থাকি বা কি, আর, না থাকিলেই বা কি কান নিৰ্দ্ধে আপনার অভিড উগ-লুবি করিছেছে না, যাহার অভিড —সে কার **উপ্লব্ধি করিতেছে** না, অথচ তুমি শ্বিতেই বে তাহার অন্তিত আছে যেন দ্বি তৃষ্মি তাহ। উপলব্ধি করিতে ছ: দেখি-**তেছ অন্ধকা**র—ব**লিতেছ আলোক! "অন্ধ**-कार बालांक" এ कथा जूगिर तला, जा-বি বার, আর একজন অনামানা মহাণুর-वर्षे वर्तून, अक्षकांत्र (य-ा अक्षकांत्रहे।

সাধিতবাদী॥ ত্মি কি. তবে কলিতে চাও বে, ইদম্ভি-পূন্য নিরুপাধিক জ্ঞানের ক্রিডিয় মূলেই সম্ভবে না ? বেদে কি আছে শ্রুবণ কর।—

"रेडिंद का व्याद्ध देनच किकिनागी र गामन त्योदमी-प्रमुख नागीत्मकृत्मनामिकीयः। भवा अन क्रशन्स व्याद्धाः १४

আই লগাৎ পূৰ্বে কিছুই ছিল না। এই জগৎ উৎ-প্ৰিক্সপূৰ্বে, হৈ প্ৰিদ্ন শিষা। কেবল একই জ্বিতীয় গঙ্কাল ছিবোন। তিনি জ্ঞাবিতীন মহান আছা।

ব্ধনাই দং বলিয়া কিছুই, ছিল না, তথ্য অব্লাই দক্তি ও ছিল না ৮ ডুটি আপুনিই, বলিয়াছ বে, ইদহাতিঃ অভিনিটানে অই- মৃত্তিও থাকিকে লাহে না; ক্সত্তরাং আৰু
মৃত্তিও ছিল না । কিন্তু আহল তির আবিদানানেও এক নাত্র অবিভীয় জগ-বিহীন
মহান্ আআ ছিলেন। প্রথমে, তোমাকে
আমি জিজোসা করি ধে, পর্যায়া জ্যানস্কুল এবং সৃষ্টির প্রের্ড তিনি বর্তুমারা
ছিলেন, এ কথা তুমি মানো কিনাং

देश्ववानी॥ - क्रियत स्वान-स्त्रम् धवर তিনি নিতা কর্ত্রমান এ কথা আমি একেবা-রেই অকাট্য বলিয়া মানি। "কথ্যসতঃ সং জায়েত" অসং হইতে কিরূপে সং উৎ-পন হইবে—এইটিই আমার প্রথম প্রস্তাব। উৎপন্ন যাহ। কিছু তাহা অবশ্যই কোন না কোন সদস্তর শাক্ত হই তেহ উৎপন্ন হই-য়াছে—শূন্য ২ইতৈ অকস্মাৎ উৎপন্ন হয় छे । यस बाव यक बाह्य का हा दिन्द्र উংপ**তি**র পুরের যথন কোন **ভারই ছিল না**. ত্ৰনও আকাশ ছিল-কাল ছিল-এবং অক্রিশ ও কাল কোন না-কোন সতা এবং পরিপূর্ণ ছিল। এইটিই প্রথম শ্ভিতে ্রান্তার। দিতায় প্রস্তাব এই যে, সত্তা জ্ঞা--নকে ছাড়িয়া একাকী থাকিতে পারে না। তোমার আমার যদি জ্ঞান না থাকে তবে তোমার আমার সমকে যেমন কোন অস্তি-ভুই থাকিতে পারে না; সেইরূপ মুলেই যদি জ্ঞান না থাকে, তবে মুলেই কোন**্** স্তিত্ব থাকিতে পারে না। বাহা স্কৃষ্ট কৌন-कोटन जारन गारे, जारन ना, जीनदा ना, ভাহার অন্তিত্ব কেবল মুখের একটা 🙀 <u> শাত্র—তদ্ভিগ আর কিছুই নহে ৷ কৌশ্র</u> জীবই যখন উৎ্পদ হয় নাই, তখন সুকু ्रव्याच्या काश्वात कारन विमायान किसे? (न नजा के हिर्देश खाटन विश्वान हिन ना वका । यात, आहा दिनायांक विमानाक विकेश दलाउँ छ। अवरे वराः अकात च-गुर्वा न जा : विशेषां व्याप्त विशेष

্রানতা—জনানে প্রকাশসানতা; বিদ্যান্

ক্রাংজ্যাধাত গুরের একই অথ। অত্যার
উৎপত্তির পূর্বের নিত্য নলা বিদ্যমান ছিল,
ইহার অর্থই এই যে, তাহ। নিত্য জ্ঞানে
বিদ্যমান ছিল। যিনি স্পাম আকাশবালি সভার সাক্ষী ভিনি সহান্ আলা,
এবং যিনি সেই সভার নিতা নিয়ানক ভিনি
জন্ম-বিহীল আলা, ইহাতে আন সংশ্য নি গ

खरेन ज्यानि ॥ विशे जित्य द्वांस गाति।

देश, बहे खन्न इंडिश्मि हिंद श्रांस अक खनिजीव जग-विद्योग स्थान् धाद्या दिलाम;

जित्र है है । प्रस्त स्था कि स्थान अकाकी

दिलाग, जित्र भाव लि है । विन मान सेम्द

दिन गा-दिनम्बि । दिला मान जान कि

द्वांस कि विद्या (प्रस्तु)

रिकामार्गिता। अध्यक्षात्र कि ८० हिनाजिक भाषा भागवीमक (०) धनि स्काम ती जात কল, ভবে ভাগার গলে অহলু জি এবং ইদ ক্রতি চুইই দ্বীকটে কয় . (২) বাদ জ্ঞান ক শীকার কর, ভবে তাহার সাঙ্গ ৬২% ডি এপং ইদরেতি দুইই অফীকার কব : (৩) কিজ यकि महाब सीकात कब बंधि अस्तृति छत्। देमगृत्वि अयोकान क्य--शनि वन ८८, श्रेष्ठ আছে কিন্তু ভাগাৰ পুঠা নাই—তবে আমি **ट**कवन **. है** भारत विश्वाहित सोन । एर अवन क-तिर (श. १म छ्यान क्यानरे अटक्---(म भेज পত्रहे नद्धाः अहे छन , भूत्सः किहुहे हिन ना हैश श्रामि भागि, किछ बेलाइक ख्वात्नक हेन्स् हिल्ना हेश श्रामि भानि भार भिन दल (य. कीत-काटनरे अञ्चलि अतः ইৰন্দৃতি আছে, কিন্তু এশরিক জ্ঞানে উভ-**दा**त कानिष्टि नारे, उत्त किन का ला हत्यात्नाकरे रकवन जाननारक जवर भूध-रीटक প্রকাশ করে, সুগালোক আপনাকেও প্রকাশ করে না—পৃথিবীকেও প্রকাশ করে ना के के इंग जानेनात्क श्रकांन करत्र ध्वरः

পুशिवोदक धकान १८व, ५१८। (म मूर्याह নিকট ক্টডেই লিজ এলস্ত জাবের জ্ঞান যে, আপনাকে এ , অনুচ্চ এনাৰ করে, তাহা ঐশচিত ভানেবট ব্ৰুছাত্ৰ ঔপরিক জ্ঞা**নের - হহল্**লি এবং ইবন্ত্রী ন্যানরভি, জীলের অহম্পুরি নতে ইনক্তি ভাগারণ মনুমতি, সুমোর ভাস্তান এবং ভানকতা মূল-একাল, স্কোলভাল 🔸 এবং ক্ষাসকলা লোহাতিই অসুপ্ৰকাৰ। সংগ্ৰিক। 的打事事 网络科尔尔利约 医闭外内部: এখারক জ্বান বি সংখ্যা গ্রেম র'ভ শন্ত केंद्री कर्षेत्रक्षे पात्रा । १ ८ ५ ७०१ वर्षे पात्रा ५५ Mar ( P. Carata Say 1 . F. 1 . F. 1 . May 1. सर्हाः एकर कि का का अर्थ प्रतिपत्त भद्रवासह कुल्ला है । १ क्रिकेट १५५० ४ 植物黄金 超级制度 化二二苯二二酰 美国人 পাধ্যা স্থাতির হয় স্থাপের কাল্স ন্দু নায় সে দুৰ্বা কিচ তালী গ**হ**ি পুস্ত কৰিল আৰি, মধ্যেক ব্যাহ কর্মাই আপুত এইব তাদ हाइड विक्री प्राप्तित भाग मात्र पुरिवदन নের জেলুচনটে জন্ত কালনে ভাইটো अवार्याक्ष शहरहे था। इ

्रिक्ष कर अवशास । १ व्यक्ष्य भेन्द भ्रायण काल मिन क्रिकार

ি তিনি বিশ্ব কৰ্মনের সংখ্যা তুলা ক্রিয়েল, তিনি, আর্থানের করিও এর একান আর্থ কিছু করি ক্রিয়েল।

ইংগতে এতিপন হ ইংগতে গ্রেন্ড অগ্রহ উৎপন্ন হ্ইবার গুলেপত তাহা ঈশরের তালো চনায় বিদ্যোন ছিল ৮ বেদে যাহা ইদং প্রলিয়। নিদিপ্ত হইয়াছে, তাহা আন্দলে এপনকার এই ইদং—এই স্তপ্ত জগ্রাং কিন্তু এটি ভ্-লিলে চলিবে না সে. এই স্তপ্ত জগতের মূলে ঈশরেব আলোচনা ভালা বর্ত্তমান ছিল— য়াছে;—স্তির পুর্বের্ত ভাহা বর্ত্তমান ছিল— এখনো ভাহা বর্ত্তমান আছে—এবং চির-

কাল্**ই তাহা বর্তমান খা**কিবে। জ্ঞান-ক্রিয়ার তুইরূপ প্রতে ; ব্রুপ্রাপ প্রতি এই যে, **षद्ध श्रेष्ठाक-इंडि निवित्रकृते** हर १८२ गरनी-इंटि श्रीवृत्क है इस, श्रीद बीटी श्रीवृत्क হয়; ইহাকাৰিক ক্ৰম-প্ৰতি। আৰু প্ৰক্ৰা পদ্ধতি এই বে, প্রত্যক্ষ-বৃত্তি মনোইতিব আশ্র**য় সাপেক্, মানোর্ত্তি ধীর্**ভির আশার সমপৈক,—ইঙ্গা ভাত্তিক পছাতি। বা সিক दिहादि बार्ख शासक जदर महिक्री, अदर मन ७४९ घडमांगर, भर्म भीविक अनः আত্মা: ভাত্তিক/ **বিচানে**— বভো আন্ত গারে আ**লিড্—খতো আত্ম** এবং ধারতি, পরে মন এব: অন্তর্জাণ, পরে প্রত্যেক্ষ এবং বহিজ্ঞাৰ ৷ ইপর কালের পরপার-স্থিত, এ জন। কালিক বিচার ভৌহার সহিত সং-লগ্ন হয় না . এখনের বি**স্তি-ক্রি**শার সম্প্রে অন্থে অন্তর্জন পৰে বহিৰ্মাণ, এই তাত্তিক পদাতিই সবিশেষ সংলগ্ধ হয়। **ঈ**গ্ধরের णादना**हना-ख्रा९ छोड्डात** बी-मंख्टित कन. **७२२ 'अहे टिहर्लगर' डाहात्र उ**र्लापिका শক্তির ফল; উভয়হ ই্বিং শক্তের বাচ্য। শারাদির অনেক স্থলে বির**প্ত** পাওম যাস বে, এ জগৎ ত্রিভগাহাক কিন্তু ইখনের আ . লোচনা-জগৎ শুদ্ধ কেবল সত্ত্ৰ-গুণাত্মক ---কেননা সে জগতে স্কলই স্থাকাল-কিছুই অপ্রকাশ নাই। শাস্তাত্মণারে, আমাদের অন্তৰ্জৎ মলিন-সত্ত্ব, অৰ্থাৎ অঞ্চাল এবং ঢাকল্য দারা কলুষিত অবিশুদ্ধ প্রকাশ, এক কথায়—মন ; ঈশবের অন্তর্ভাগৎ ভদ্ধ সভ্ অৰ্থাৎ সৰ্ব-বিষয়ক পূৰ্ব প্ৰবাশ ! সেই শুদ্ধ मजर के बटतन हैन १ ब्राइटिन आमिस विध्या। पानिस विषयं मा बैलिया स्लाउर विषय विनटन जाद्रा ठिक् रह-दक्तना जामाद्रमत अधान-কার কালিক বিচার ক্রবরের মহানু সৃষ্টি दार्गिरदेव महिन महिन्द्र रह है। अने मूह — ইখরের ইদ্যুভিরই বিষয় প্রভাগ তাহ।

নির্বা এবং প্রযাজা তাহার নিয়ামক ; মালন সত্ত্ব (অর্থাৎ আমাদের খন) দেই শুদ্ধ সত্ত্রী এতিকৃতি, এবং জীবালা প্রমা-্মারই এডিকভি; স্তরাং যলিন সংব নিশ্যা এবং জীবাজা ভাহার নিয়ামক। প্রত্যে নিয়মা ইদ**ং**য়ভিকে এবং তাহার সঙ্গে ভি<sup>ক্ত</sup>ি বিধানিকা শ**ভেকে ঈশ্বর ২ইতে পূথক** ক ্রানেশল ভাষ্টার অহম ন্তর প্রতি লুয়ি দেবদ্ধ বহিনে য**হা** পা**ওয়া দায়,** জীলেবৰ নিয়ম ইদক্ষিত্ৰ এবং **ভাষা**র সংস্কোগার পিয়ামিকা শান্তাকে জাব হইতে পুথন, কাল্য, শুদ্ধ কোনে ভাষা। অহমুনি 🗸 লোভ দুঠি নিবল বাহিলে, আনংবা ভাচাই পাতা যাগ; িও সে যাহা গাভ্যা শ্য— ভাষা এননি এলাল পাই যাইটো চাৰণ একটি নাৰ পূঠা- অগাং হাহ। গাকান কুন্মুন অংশেক্ষাও অসমত বুলপার স্থিরের সহিত জানের কৈরপ লগস তাহা পরি-ष्कात नाम विश्वास हिंदी क्षेत्र हैं भी भोद्य और देश एक महिल महिला । 'দীশবের লারগুর্ব আ**নন্দময় তেও** সাত্ত্ব **এবং** জাবের স্তব্ধ ও খ- নেহেজ্যিত মনের মধ্যে — কিন্দাৰ আকাৰ-পাৰ্টোল এতেদ ভাষা ক্ৰদয়-প্রম করা **আবশ্যক**। স্থলবের ইদযুত্তি মূল বাদশ, আমাদের ইদংগ্রন্ত তাহার অকু-লিপ্রি মাত্র। ঈশর সংসারের পরপারে থাকিয়া যেরপ লেখা লিখিতেছেন, আমরা সংসারের এ পারে থাকিয়া ভাহারই লাগা বুলাইতেছি। বিজ্ঞান-বিৎ পণ্ডিতেরা **ঈখ-**রের চিন্তা হটতেই চিন্তা শিক্ষা করেন, ক-বিরা ঈশবের রচনা হইতেই, রচনা শিক্ষা করেন, মনীঘা মহাত্মার। ঈশবের ঐশীশক্তি হইতেই ইশ্রিতা এবং বশিতা শিক্ষা করেন 🗠 नेपहरत अभीनकिये मृत, नकि, कारोबे हे पर्म कि है मून है कर्त कि, - छोरा द बना के यह चना कृषिति। मिक्ते अने नरहन हारा

সর্কাংশে তাঁহার খাপনার, এজনা তাঁহা স-ম্পূর্ণ রূপে তাঁহার কর্ত্ত্বাধীন। আমা-प्तत हेमचृ छि नगक्तरं श्राभारपत स्थीन ন। ছওয়াতে আমরা, কথনে। বা তুঃখে, ক-খনওবা মোহে, আক্রান্ত হই, এবং আমাদেব নজির অপুনি<u>তারশভঃ—তাহ।</u> অভিজ্ঞা করিতে কখনও বা পারি, কখনে। বা পারি ना। পরমারাব ইবজ্ডি ভারার সম্পূর্ণ কর্ত্তবাধীন স্থান্তবাং তিনি পারপূর্ণ বানন্দ-ময়। যে ব্যক্তি যত ভাষার প্রাধীন ইন-শ্বারকে (বর্ণাৎ মধনার ভিন্ত) সংগত কবিল ुन्देगर व अएएर अन्क हार, रम रहे कर जा-ত্মাণের ভবাই শু**নী প্রতি স**ঞ্জিত হইলা তাহাৰ পত্ৰ-শতিবৰ দিগুৰিত ক্যিন, জোলে। মৃত্যু গভই ঈ্যৱের প্রতি শ্রহ্ম।-নান্ এবং ভক্তিমান্ ছইয়া কামননো-বারে। ভাষার অনুগত হয়, তত্য ভাষান নিয়া-লোহা শক্তি প্রবিদ্ধিত হয় েত্তহার চেংগ্রে ইদপুত্র উপর কড়েছ লভে ২নে , ৬৬ছি **६म ५**९६ वर स्थापन १५५ हरेएड मो छन লাভ করিয়া জাল্পায়ত উপতেগে কলে। ণিপ্ত সনুষা খলই উংকৰ্ম বাভ কক্মা ৫ চন, স্বীপর ভাষা অপেক্ষারু পনাধ্যর পর্য छैश्कृष्ठे ; এ अनु। मन्द्रात निद्यत छ **८बा९कर्व मणु**रर्गाद#हदम लएकात उपयुद्ध नद्ध, এक क्याग्न-इद्रम आहर्ग नद्ध। छेच-ন্দের প্রতিত আদা উল্লি এবং এনিভিই সাধকের মুখ্য সক্ষা, ভাহার আপনার উ কৰ্ম তাহার আমুয়ন্ত্রিক উপ্লক্ষ। সেই मूना नायक मार्थकेट भनुस्कात मर्स्साछ कार्या : यनूरसंत बाञ्चात छेदकर्ग याहा टमहे लका-माधानक वानाकारी कल, जाहा परमह नटकात्रहे छेळ्छत् माथ्टनत् भशाय ्वनिया मग्धिक लार्थनीय । क्षेत्र शामारम्ब का भाव छेश्करर्धत खना नरहन, कि के नेपटवत গুতি অনুবাগ বৰ্ডনের জনাই আত্মান উৎ-

কর্ষ নাধন, এইরূপ হর নেই নাধক চিক্ পথে দাঁড়ায়। নিজাম ইখন প্রীতিই নব্যা জীব-নের নর্বোচ্চ আদশ।

# उभिनम्बाज ७ जात्रत्वात मह।

আমরা দম্প্রতি মূত প্রধান ব দারের ভ্ৰ**ম্খা**নি **জা**বেলছ**রিত (**দ্র্যিত্র মা किं। हात्र क्षीतके बारा विकास स्वार केरण जातात উপকলা উচ্চা হৌ গ্রেমন্ত ; এই জন এর জে উ**্স্তবের** সহিত ভাহা সাঠি ব্যালগে । किन्ह्र राष्ट्रिमान, अंतिकाधाराय । ४८० वः ४८ म सम्बद्धाः इत वक्षिक भागम् न मार्थः এমবে ভেলমত কেটা বাং ট্রেণ আন্ লকেহ্টন, সারত পাতিক এন প্রচাল কণিত ভিপ্তার সক্ষপ তেওখানা আগ্রেপ্রেচ বেন নাট : শাল লাভ প্ৰসায়েশ্বৰ স্থিত স্থান **অল**ং পুণাৰ প্ৰিচি হৈছাল ছিল, ভগন উট্টার **জীব**নী ফামরা পাইবার সম্পূর্ণ একটা লাশা রাশি । ना निनात शुरुकाञ्चन माहारे श्केत किन्नु प्रदेन। ক্রন্য গাঁধর। ভ'তার জীবনচরিত দেখিলাম। भाठे कतियां अदे जना विश्वित उदेसाय (व व्यम जक्ष्य वात् भिष्क क्षाटनीत छित्रकृतन দিয়াছেন, তখন এরাপ ভ্রম প্রমাদ ইহার ভিতর কি রূপে ছান পাইল চ্ছনত ইছাতে অক্ষয় বাব্র সম্পূর্ণ সাহায়া লাছে বালুয়া এই গ্রন্থপাটে **আমাদের** ভায়াস এবং ইহার ভ্রান্ডি প্রদর্শনে জামাদের এই প্রস্তাবের। অবতারণা ৮ কিন্তু এই এতে ভানের সংখ্যা অল্ল নয়। সকল ভ্ৰম দেখাইতে আমাদের সময় নাই, আবশাকও নাই। মহাস্থার স্থীবন চরিতের সহিত আক্সমাজের ইতিরুত্তের বিশেষ সংযোগ আছে। যথন তাহা প্রকাশ হইবে, তাহা দারা আলোচা অভের নোষওলি নোকে স্পষ্ট বুঝিতে পারি-বেন। আমরা আপাতত কএকটা স্থুল স্থুল ৰিষয়ের ভ্ৰান্তি দেখাইয়া কান্ত হইব।

्रेशक्**ष** के **कर्**ज

ত্র করা ইবে। এই মনে করিয়া অক্ষা বার কিছু কলা ধরিয়া ভারার সহিত ভূ বিতর্ক করেন এবং বিদাধিক ভূ বিষ্টের করা। আক্ষা বর্থন রাজ্যসমাজে প্রতিষ্ঠ ইন, তথ্য সর্বাবেশ মাজের ধর্মাত অবিভ্রম দেখিয়া সন্দেশ করিতে পারিলেই সমাজের ভ্রান্তি দূর করা ইবে। এই মনে করিয়া অক্ষা বার্ কিছু কলা ধরিয়া ভারার সহিত ভূক বিতর্ক করেন এবং বৈদান্তিক ধর্মো ও বেদে ভ্রান্তি

চরিতাখা**য়ক এই** কথা লইয়া ওক্ষা गृत्र शूर दशीक्षत्र इषित ८५८। পरिश्वास्त्र কিন্তু ইং্র√ভিতর সতা কি ভাংার কোন काचा करतमं नाहै। अचेरन क यहा जा है বলিতেছি ওপুন। কোনত একটা 'এক-खिक घष्टेनार यहिंच (म्टलक्समाण हिल्दाक মান এক সময় ভোর একটা ঔদাস্যের ভার উপাহ্বত হয়। ভগিবন্ধন তিনি পাথিব স্থে অতৃপ্ত হইয়া কিছুকাল নিজনৈ গর্মা-প্রুদর্জন করেন এবং অচেট্রায় আছার মধ্যে তাহার অনন্ত উৎস দেখিতে পান। তথনও আক্রদমাজের সহিত ভাঁহার সং-খোপ ঘটে নাই এবং তথাকার ধর্মাই বা कि खाहात किছू जातन गा। তিনি বাড়ির মধ্যে বসিয়া আহ্ছেন এমন সময় একটা পুথির পাতা বায়ুবেটো ওলট পালট খাইয়া তাঁহার সম্মুখ পিয়া হার। ঐংস্কা বশন্ত তিনি তংক্রাৎ তাঁহা তুলিয়া ্দইলেন। কিন্তু তথৰ্ণ ভাঁহার সংস্কৃত ভাষায় বিশেষ কোন অধিকার জন্ম নাই। স্তবাং এ পত্তে কি শেষ ছাছে, তাহা ব্ৰিকার জনা স্থাতিত রাম্চক্র বিদ্যাবাগীশকে ভা-क्न এवः विमावातीम वाविद्या छाहा वारिया

করেন। ঐ পত্ত ঈর্বোপনিযদের প্রারম্ভ। জীগৎ দেবেজনাথ ঠাকুর আহার তুই একটা মলের ব্যাখ্যা শুনিবামত্তি এই জনা বিশ্বিত হইলেন যে তিনি ইচেত্রীয় ব্যৈরূপ ঈশরের সরূপ অবধারণ করিয়াছেন, এট গ্রন্থে স্থস্পপ্ত তাহাই আছে। তখন রব অনুসন্ধিংস্থর. রড়ের খণি-লাভের আনন্দ উপস্থিত ইইল। তিনি ভাবিলেন, বেদের অস্তভাগে যথন এই, ना जानि मगछ तरा कि केम्ला भेनार्थ এইরপ অনুরাগ ও দাঁথেছে সমস্ত বেদ জানিতে ভাষা ইচ্ছা প্ৰদীপ্ত হইয়া উঠিল: ভিনি বংশভার সীকার করিয়া कड़ इंडी इस । , ह मसंध दनम পांज्यात जना ধার'নাগাতে পাডাইটা দিলেন এবং ভয়ং ও শিক্ষার ১ (হালে এ স্মক্ত **ধর্মা**ভা**ন্য ব্রিকা**র ताहै। एडिएड वर्षाल्यान । उद्देशाय किंडू কান অভিয়েশিত উইলা যায় এবং **ঐ নম-**্মর মধ্যে ব্রাহাসনাজ ও অক্ষরকুলার দত্তের महिक उपात मरदाश इत। एयम मनाष মধ্যে লোকের বেদের নিভাতায় বিশাস ও বৈদাকিত প্ৰা অবল্ফনীয় ছিল। এই বিশাস e eট ধর্মা ভারত্তনের মূল রামচক্র বিদ্যা-বাগাশ। আমরা পূর্বে পূর্বে গুস্তা ভাষা। রট বাকে এই বিষয় সপ্রমাণ করি-য়াছি। অতঃপর এই বেদ । শশন্ত লইয়া জীমং নেবেক্রনাথ ঠাকুরের সহিত অক্ষয়-কুমার দত্তের তুমূল তক উপস্থিত হয়। व्यामतः हेलि शुर्स्तहे विलवाम बीमर দেবেক্রনাথ ঠাকুর ঈফোপনিষদে আপনার সহজ বিশাসের প্রতিভাষা পাইয়া বেদ ও বেদান্তে একটা অটন শ্রদ্ধা স্থাপন করেন। সমগ্র বেদে যে কত অমৃত আছে, ভারু করিবার জন্য ঐ ধর্ম-পিপান্থর একটা আঁথের পিপাদা হয়। এতদাতীত ভাঁহার বেদের উপর প্রগাঢ় শ্রদ্ধার আরও তুইটা কারণ ছিল। क्षेत्रं, करमनास्थातं । त्यमं अरमरनत्र गर्क

भूका उ अस्तर्यक्रीम शतित्र सक्ताजा। ब्रुआडोड कान स्ट्रेटड काणि काणि त्नाक याहाक नाट्य मलक प्रमाठ कटत, निवटभन्न वातम वक्षमूह्द नमझ ना र्छक चलु 🖟 যাহার কএকটা সম্ভ্র ভক্তির সহিত উচ্চারণ मा कतिता अहे विभाग तारकात काणि काणि লোক আজিও জীবন-ব্যবহারে প্রবৃত্ত হয় না. ভারতের ধর্মা-সংস্থাপক ও ধর্মা-রক্ষক **खाकार**नत वःरम अभिता औग र प्रतिक्तनाथ ঠাকুরের স্বভাবতই দৈই বেদ রক্ষার্থ একটা অস্তরের যতু দাঁড়াইয়া ছিল। দিতীয়ত তিনি মনে করিয়াছিলেন, রাগ দেয শূনা সহজ্ঞানে বে বর্ণোর অনুমিতি হয়, ধদি হামতা বেদে তাহাই পাই, তবে তো এদেশে আক্ষধর্ম গ্র-চাবের আর কোনও **অন্ত**রায়**ন্টপস্থিত** হই**তে** भारत ना। कात्रन (वम् मक्रान्टि शृखा ७ শিরোধার্য। একজন ধর্মাপ্রাণ ও বিচক্ষণ লোকের ধর্মাদংকার ও ধর্মাপ্রচারে যেজপ প্রণালী আশ্রয় করা উচিত, শ্রীমং দেবেন্দ্র-নাথ ঠাকুর ভাছাই করিয়াছিলেন। কিন্তু অক্ষয় ৰাব্র প্রকৃতি স্বতন্ত্র। তিনি পাশ্চাত্য বিদায়ে শিক্ষিত। এখনকার অনেক পাশ্চাতা ভ্যানাভিথানীর নাায় উহারও না জানিয়া ও না পড়িয়া বেদে একটা বোর বিদেব ছিল। তাহার প্রাপুগত ইছো ষে তিনি ভাক্ষদমা-জকে পাশ্চাতা বৃদ্ধির পূর্ণ বিকাশের ক্ষেত্র করিয়া তুলেন। কিন্তু বেদ তাঁহার অভী দিদ্ধির বাাঘাতক। এই বেদকে বহিষ্ণত कतिनात जना बैगद (मटन सनाथ ठाकू दिव সহিত তাঁহার ব্যাপক কাল তক হয়। এক জন খনী খনন করিকে গিয়া তথ্যগত রত্ন-প্রভায় শেহিত ও রড়োদারে কৃতপ্রবর্ এবং जात अक्षत उचारा दक्ष पिरान ना, তৎ্মভায়ও বিশাস করিলেন না, ডিনি Cकरल पूर्व थाकिश **जा**शांक पनि श्र-त्तरेण निरम्भ कतिरण्डलः अरे कूम्ल

জুর্কের এই টুকুই রহ্মা। কলত এই তক দারা

নয় কিন্তু নিজের আলোচনার এবং বারাপদী

হইতে প্রত্যাগত বেদজনিগের রেদ বাহাার

শ্রীমং দেবৈক্রনাথ ঠাকুর বুঝিলেন, কর্মা ও
জ্ঞান এই উভয় কাণ্ডায়ক বেদের সমগ্র নয়
কেবল সতা জ্ঞানই লোকের মুক্তির জনা
প্রচার করা আবশাক। তথন বহু দিনের
নির্জন চিস্তায় সহজ জ্ঞানে তাঁহার যে ধর্মের
অনুমতি হইয়াছিল, তিনি উপান্যদ হইতে
তাহারই অনুকুল মন্ত্র সকল অগ্রিমর ভাষায়
বাহাা করিতে লাগিলেন। সেই সমস্ত
সক্ষলিত মন্ত্রই বর্ত্থান ত্রাক্রধর্ম গ্রন্থের জ্ঞান
কণ্ড।

এইরপে মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর কে-वल अरमभागुतांश ও करेन धर्म-वृक्ति-धार्गा-দিত হইয়া ত্রা**লাদয়াজ গ**ধ্যে বেদ বেদা-ভের মর্যাদা রক্ষা করেন এবং রামচন্দ্র বিদ্যাবাগীশ হইচে এতং সংক্রান্ত যে সমস্ত ভ্রান্ত সংক্ষার বদ্ধমূল হইয়াছিল, আত্মতত্ত্ব বিদ্যা নামক পুস্তক ও প্রবন্ধ রচনা ছারা তাখা অল্লে অল্লে দূর ক্রিয়া দেন। পা-শ্চাত্য-জ্ঞান-দৃপ্ত অক্ষয়কুমার এইরূপে যদিও ভগ্ন-মনোরণ হইলেন কিন্তু এখনও তিনি নিরস্ত হন নাই। তিনি উপযুক্ত অন্ত শন্ত লইয়া ত্রাহ্মসমাজে প্রতিষ্ঠিত বেদোক্ত মনে ত্রক্ষোপাদনার উপর আক্রমণ করি-লেন। **কি** ভয়ানক -আসুরিক বেদ-বিষ্কেষ ! কিন্তু বে বেদোক্ত ন্ততি ও গায়ত্তী মন্ত্ৰ দার। যুগ যুগান্তের 'ঋষিপণ ত্রকাধান ও ত্রকানাড করিয়াছেন, এই ভারতের রভেন্ত প্রতিপালিত হইয়া জানি না কোন্ ধর্মকাষ হাদয়বান্ বাজির ভাহার প্রতি বিঘেষ-বৃদ্ধি জন্মিতে পারে। স্থামরা পূর্বতেন ঋষিদিগের ভূলনায় माधन-विद्यान कृष्णां कृष्णं जत्र । यागता (मर्रे আচিস্তারপে ত্রন্ধকে মূতন কি আর ধলিব, কি छ्य क्तिन, उटन यनि असिनिद्धात रमहे भविज

উচ্ছানে আপ্নার ক্রিক্তিক কথকিং বিশার हेटल भावि, अहे कि भागामरगत भरम লাভ। আমরা ত্রমান্তিও ত্রমাপ্তার গ্রহেষ ্এই মাত্রই বুঝি। 🏋 কন্ত অক্ষরকুষারের ভালা महिष्ठ ना। जिन्द्रदेशनरक्षद ভ্ৰাক্ষম্যাত্তে কেইছি শীক্ষালা,ভালায় নিজীব উপাসনা প্রবর্ত্তিউ করিমার চেরা পাট্যারিলেন কিন্তু তাহাতে বহু জোয়ালেও ক্রুলার্য্য হন নাই ঃ আশ্চর্য ুতে সমস্ত ব্যেনজে আ-চীন নিরাকাজ্য ও নিঃসঙ্গ লোকাদগের ধর্মাল ভাব জনৎ ও জীবন্ত অন্মূর্মে প্রসন্টিভ, যে সমস্ত মন্ত্র কোটি কোটি সাধককে পৃথিবীর পাপ ভাপ স্থালা সম্ভবা হটুতে মুক্তির পথে लहेंद्वा निश्रांद्रहः, त्य अस्छ अख यूशयूनात्छन **ভাব-সংশ্রের ক**রি-সুদ**ে**রর একটা ম্পৃহনীয়/পদার্থ হট্য়। আছে ; জানি **লা,** যাহার। কড়োরতার বলে প্রুয়। লিভে **দ্রতী** তাঁহারা আজ কি **স**না সেই সমস্ত বেদ-নক্ত্র **প্রায়**ংসৈ বোধ-স্থলত ক্রিতেও কাতর। ফলভ এই বিষয় যথ চিন্তা করি, ভতই ইহা घात्रा विश्वांक्षक रत्यारकत्र सरन्मान्दाश ७ প্রা**তি-ক্ষেত্র এক্টিড পড়াবেরই** পরিচয় भारी!

বিশ্বে থাহা প্রদর্গন করিলাম চরিতাপারক ব্রিনেন, ইহাতে অক্ষর্মারের কিচ্
যাত্র বিশ্বীর প্রেরিব নাই। ফলত প্রমং
দেবেলনাথ ঠাকুরই আক্ষনমাজকে এই স্
নত মহা বিশদ হইতে রক্ষা করিয়াছেন।
এই সূত্র ধরিরা ক্ষান্ত কাল অনেক আল প্রকাশো ঘোষণা করেন যে দেবেলনাথ ঠাকুরই আক্ষ ধর্মে ছিকু সন্ধীর্ণতা মানিয়ান ছেন। হিন্দু সন্ধীর্ণতা নামে এই বে একটা ইফবলীয় কথা, ইহার লৈ গুরুত আ কি, কি
উদ্দেশে রে ইছা প্রযুক্ত, আমরা ঠিক ভাষা বুরিতে পারি না। এক হইতে পারে,

সভ্য লইয়া আফান্দর্মের একটা ব্যাপ-কতা প্রদর্শিত হইলে থাকে, জীমধ দেবে-ক্রানাথ ঠাকুর ভাষা দেখান না। বৌধ হয় এই অভিপ্রায়ে বলা হইগ্নাছেয়ে তিনি ভাকা-ধর্যে হিন্দুসন্ধীর্ণত। আদিয়াছেন। কিন্তু আন নরা এ কথারও অথ বনি না। কারণ প্রকৃত হিন্দুধর্মা বর্তুমান এচলিত প্রকৃতি ধর্মা অ-পেক্ষা ভাসংখ্য গুলে উপার। ইহা কোন भ्षाः करे (वय कर्द भा। लंदन **ज्य** निहाल भार, हेश श्री अना श्राकी विस्त्री नह, उदय प्रमा **धर्म**त २७) हिन्त निष्ठे **प**ानदनीय হয় **নাই** কেন। এইটা ভোষার **থ্ব বৃথি**-नाड जून। जना गटमंत्र मठा हिन्तुवर्ण्य गटबहे পরিমাণে আছে। हो ध्यर्क अभ्युर्व हत्रफ-८७मी शर्चा । विकासवान (विकास (सीता) हिम्मू দার্ধানকদিগের নিকট পরাস্ত **হ**ঃ, **যখন এ** নেৰে ঐ ধৰ্মের উচ্ছেদ-দশা উপস্থিত, দেই সময় শেদ্ধবর্শের সত্য প্রচুর পরিয়াণে হিলুধর্মে এবেশ করিয়াছে। হিন্দুধ**েমি**ব দার অতি উদার। তবে ভূমি বলিতে পার, ভিন্ন দেশীয় বংশ্বিশ সভা ই-সাতে নাই কেন। এ বিষয়েও আমার উত্তর আছে। যথন হিন্দুধর্শের অভ্যুদয়-কাল, ভখন পৃথিনীতে কোন ধর্মোই স্থাষ্ট হয় নাই। যদি তথন **আ**ৱ কো**ন উ**ৎকৃত্ত ধ**শ্ব** থাকিত এবং ভাষার সভা যদি প্রহণ-যোগা হইত, তাহা হইনে এই ধর্ম 🦈 তাহা "লইত ना, रेहा जिमादक (क विनन। जिमि अ কথা প্রমাণ নিরপেক্ষ হইয়া বলিতেছি না दिवस, इंड्रिक्ट (वटनंत्र क्यां किंग् क्यां क ছিন্দুরা এই অস প্**তি**র নিমিত কোন রোয়-কাচাঠ্যের নিকট অনেক জ্যোভিষিক্রসভা धार्व कृतिहाटकन। हेश बाताहे द्यार इतः, যদি তৎকালৈ আর কোন ধর্ম থাকিত তাহার म्या अर्थ कार्य हिम्मूधर्कात श्रांक व्यंत्रस्त जानका एक वर्षात क्षान कविन ।

टिक्, देश बरेनिकशीयक कार्यक केंगा. दलके मसुब हिन्द् । दर्पत कि इहेबाहिक मा धरेशाहित, गङ्ग**ि जानि**तात रेखा नारे । ভবে এই পর্যান্ত ব্যোগ হয়, যে জাভি বহি-ব্যাপারে এক রূপ বিমুখ হইয়া কেবল আত্যো-নভিকেই জীবনের সার জ্ঞান করিয়াছিল, दमह जां कि दा कार्न दारनहें मछ। शक् ना তাহার যে অসমাদর করিবে, ইহা কিছুতেই সম্ভব যনে হয় না। ফলত এ বিষয়ে হিন্দু ঘর্ণের হার খুব উন্ত ছিল। উহা এই রূপ উদার বলিয়াই গীতাশ্রুতির জন্ম এবং ভাহাতে স্পট্টাক্ষরে বলিতেছে, যে যেরূপে ঈশ্বরকে ভজনা করে, ঈশ্বর সেইরূপেই তা-ছাকে অনুগ্রহ করিবেন; কারণ কেছই ভাঁহার পথ वाठीত जना फिटक यात्र ना। এই টুকু হিন্দুবর্শ্যের সর্ব্বভোমুখী উদারতার ভাব। কিন্তু প্রচলিত অন্যান্য ধর্শা প্রাণান্তেও এরণ वितार शास्त्र मा। दनहें मथन्छ भर्त्यत बन्ध কণা এই, ছুম জামার আশ্রেরে আইস, তবেই তোৰার মৃতি কি একদা গীত এই হিন্দু নৰ্কেই বীজনত্র দর্বতে সামা। এখন তুমি বলিতে প্রতিবে হিন্দুর মধ্যে এত জাতি বিদেয কেন। আমি বুলিব এইটা তেম্মার ব্রিগার ज्ल। हिम्मूर्य**में मकत गर्या ज़ंदलको** मर्काएटन छेपात किंत हैरें में रा किছू निर्तित्पत गालात, **ाहा बाहाद्व । बिल्ह्या धर्मिमी** धेरनत खना অভিস্কৃত্যর সহিত আচারকৈ রক্ষা করিয়া শাৰে প্ৰভাৱন প্ৰভৃতি দ্ৰব্য শারী-১ রিক জী হৃদ্ধির কারণ। ইছা দারা আতা-সং-ब्राइ बाम्राज घटि। बेरे बना रिन्द्र भारताङ **े प्रकल निरंदर मानिया छन। जारणाक । ' ८ए** षांकित्व अरे नगुष्ठ कर्तात्र बार्यक्र, देशना णाशातक (अक्ट वा खडे विनिष्ठ) विद्याल करत us: ofun ofen cum mari vielera সহিত বিশ্ব মান এইটের একট্র বিবেশের ভাগ ইছা জাতিগত নয়জাতির আচারগত।

'তোমরা হিন্দুখর্মের এই অংশকে সঙ্কীর্ণতা বলিতে চাও বল কিন্তু আমরা তাহা বলি নাৰি পু**হুটা দেশের** জৰ বাহুর জিবস্থাভেদে ও ধর্মামাধুনের জন্য একান্ত ওপরিচার্যা আমরা ভাহাকে সন্ধীৰ্ণতা বলিতে পাৱি না। र्छेकू, रिभूता वह श्र्वीविध मकन खाउ হইতে যে একটা স্বাত্স অবলনন করিয়া আছে, এই আচারই তাহার মুগ্য কারণ। किन्छ (य नदी विभाग चरक वह काग स्ट्रेटन সমুদ্রের অভিমূপে চাল্যাছে, সংস্থার না থাকিলে কালজ্ঞে তাহারও কোন কেনে স্থান সন্ধীৰ্ণ হইয়। পড়ে। আমরা এই হিন্দু আঢার সন্তন্ধে সাহা বলিলাম, তাহা অতী-তের। কিন্তু হিন্দুর হতে খখন রাজ নিয়ম नाष्ट्रे, देशारित माध्य गथन मध्यातिक नाष्ट्रे, তথন বৰ্ত্তমানে এই আচারে যে অপেকারড अश्लीर्वा में । इंदिर हैश विक्रिय नरह । किन्द ইছার মূল নিয়ম নির্দেষিঃ স্বদেশামুবাণী অজাতি-বংসল মহর্ষি দেখেন্দ্রনাথ ঠাকুর এই প্রকৃত হিন্দু ধর্মাকে সর্বাংশে সকল ধর্ম অপেক। এইরপ উদার দেখিয়া একমাত্র তাছারই মতো বিশ্বজনীন ব্রাক্ষধর্মতে পুর ক্রিয়াছেন। এই সুত্রটুকু ধরিয়া যে তো-মরা বল তিনি তাক্ষধর্মে ছিন্দু সঙ্গীৰ্ণভা আনিয়াছেন ইহা তোমাদিগের হিন্দু-ধর্ম্মের প্রকৃতি না জানার পরিচয়। একনে আরও একটু কথা আছে 📅 পূর্বেক অনৈ-তিহাসিক কালের উল্লেখ করিয়া বলিয়াছি ষে যথন হিন্দুধর্শ্যের অভাদয়, সে স্থয় যদি কোনও উৎকৃষ্ট ধর্মা পাকিত এবং তাহার मजा यनि धर्ग-(याना इहेज, जाहा हरेल मिट माछ। हिन्दरास्त्र अन्नश्रुष्टे हे छुड़ी अम ख्व ছिल ना। এই টুকু हिन्मुधर्यात छेमात প্রকৃতির পরিচয়। কিন্তু কল কথা, হিন্দুর আত্তানতির জন্য সতা গ্রহণের ক্লাবশ্যকতা विद्यामा এवः अथन ७ नाहे। क्रिन श्रापता

र्वेक्ष शावनात गुजी नां कतिशाहित्नम / श्वितीत अना दकान बाठि कि तमत्रभ माध-नाजकथन गर्कात स्तापना कित्राहिन? এতদেশের সেই বিশেষ অবহায় যে সমস্ত উজ্জাল সভ্য আবিস্কৃত ছইয়াছে,তাহার তুল-নার সকল দেশের সকল ধর্মাশান্তের সভা কি নিভান্ত নিজ্ঞাত নয় ? উপনিষদের ্র**ত্রিন্য রেক্রের স্বরূপ**–এতিপানক গ্রন্থ কি **আর** ু**র্পাছে ? তবে বা**হিবে হস্ত প্রদারণের আ-ক্ৰাকতা কি । গৃহে মূৰ্ত্তিমতী অনপূৰ্বা কিন্তু অঠরজালা নিবারণের জন্য অন্যের দারে ভিকা, ইহা কিরপ উদারতা। ত্রীমৎ ্সবেন্দ্রৰাথ ঠাকুর এই বুঝিয়াই ভিন্ন জাতীয় প্**র্ম এছের মতেঃ একটা আকাজ্**লা রাথেন নাই। তাবে তোমরা বলিতে পার ত্রাক্রধর্ম यथन माष्ट्रीपायिक नय, हेहा विश्वकनीन धर्म्य, তথন সকল ছাতির সকল ধর্মাশান্ত্রের সতা ইহাতে সংগৃহীত হওয়া ভাবশ্যক। কিন্তু ্**এবিষয়েও আমাদের ব**্রুবা আছে। মুক্তির নিমিত জ্বান 😎 ভক্তি তুইই চাই। জ্বানের ু**উল্লেও অক্ষ**েভাগুর বেদ বেদান্ত। আর **ভক্তি আমার পুরুষ**ার-সাধ্য। আমার চেট্টা থাকিলেই তাহা হংতে পারে। ব্দবস্থায় পঞ্জাদ্য সংগ্রহ কর। ধর্ম্মের একটা বারসাদারি, ভিন্ন আর কিছুই নয়। তবে ভোষরা বলিতে পার, পৃথিবীর সকল জা-্তিকে অক্ষেডের আক্ষ্ণ করা আমাদের नेका। এই জন্য সকল জাতির ুশ্ব এতিছর নতা সংগ্রহ ভাজধর্মে বিশেষ ই য়েক্ন। প্রভূতিরে আমি স্থলিব, আবার यह तुष दा रिष्ठरनामे ना। य अकजन एति-जतात दिनाक बेटबाब, छटेर डाहान मूटश नकेल कार्याट क अवस्थितित (धरे धकरे) न्दर्भ क्या त्नाची साह, विकेश के दिलाका BALL STOR BIRDS ना, रजामध्यात परंप एका करका करें।

শোভা পার না এখন ষদেশের অসংখ্য লোক প্রেক্টা বর্ণের অভাবে হাছাকার করি-ভেছে। আগে তাহাদিগকে শান্ত কর, পরে বিদেশ। কিন্তু বলিতে কি, ভোল্ নরা নানা উল্করণে ধর্মের বে এক অভুত খিচুড়ি পাকাইয়াছ, তাহার নামে সদেশের লোক তাহার ত্রিদীমায় আদিতে চায় না। হায় এই কি তোমাদের সদেশা-সুরাগ।

যাক্, এখন প্রকৃত বিষয়ের **অনুসর**ণ আবশকে। চরিতাখ্যায়ক বলিয়াছেন ; এক-বার, জগদন্ধু পত্রিকায় বেদ অভ্রান্ত ধর্ম্মশান্ত নয়, এই কথা লেখা হইয়াছিল। বাবু ভাহার প্রতিবাদে অম্বীকার করাতে দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর তত্ত্ববোধিনা পত্তিকায় গেই মত খণ্ডন করেন। . জগদকু পত্রি-কায় যে কি লেখা হইয়াছিল, এখন ভাষা **ज**िन्दात - प्रशादना ना**रे।** কিন্তু আ-মরা চরিতাখ্যায়কের নির্দেশ ক্রমে তৃত্ত্ব-বোধিনীর প্রত্যুত্তর পাঠ করিয়া দেখি-লাম ৷ এ বিষয়ে যাহা বক্তবা, ভাহা পরে বলিতেছি; কিন্তু অতাে কিন্তাদা, জগদন্ধ পত্রিকার প্রতিবাদ যে দেবেক্রনাথ ঠাকুর করিয়াছিলেন, এ কথার মূল কি ? চরিতা-খালেক, বলিবৈন, ইহা অক্ষর বাবুর মুখের কিন্তু চরিতাখ্যায়**ক জানিবেন**, মুখের কথা মথা তথা খাটে না। প্রামাণিক কাল, প্রমাণ অপেক্ষা করে। স্মামরা প্রথমেই বলিয়াছি, রামচক্র বিদ্যাবাগীশ লোকের মনে বেদান্ত ও বেদসংক্রান্ত একটা ভ্রান্ত সংক্র স্কার বদ্ধমূল করিয়া যান। প্রীয়ং ক্লেকেনার ঠাকুর সমাজে যোগ দিয়া ক্রমণ দেই সংস্কার দুর করিয়াছিলেন। কিন্তু চরিতাখ্যায়কৈর वाका-अभारत अभवस्य शक्तिकार कर्तिहर विकारमाह सामग्रेकातीय स्रोहास्टर ७ व-বোগিনীতে ক্রিক্রেশ হইরছিল: বদি তাহা

श्रीहर (नरवत्सनाथ ठीक्रवद दहना व्यन्त्रा - স্বীকার করা যায়, ভবে আছাতেও বিশেষ লোঘ দেখিছেছিলা । ফলত অগহন্ত পত্ৰি-কার লিখিত অংশের প্রতিবাদ করিয়াছিলেন वेनिया हिंदिणाशायक प्रतिस्तिमाथ है।कृतिक ভাত বলুবার- বিশেষ গ্রমাণ পাইয়া-ছেন। কিন্তু "ভরিতাখ্যায়ক দেখুন, জগ-ষ্ক্রপাত্রকার প্রত্যাত্তরে কি বদা স্থয়াছে। ইহাতে বাহা বলা হইয়াছে তালার মার এই-- পর্মেশ্বর মনুষ। মাত্রেরই মনে সামা-নত ধর্মজ্যানের সামর্থ প্রদান করিয়াছেন কিন্তু মোহ বা ভান্তিগণতঃ তাহা কলাপি আছেন হয়; সকল সময়ে জ্ঞানের প্রকৃত याः र्षि रय ना । अहे मभग्न भहाजात्मद वाका বিশেষ ফলোপধায়ক হইয়া থাকে। এই মহা**জনকৈ তপস্বী ঋষিই** বল বা বেদান্তের **ত্ৰেগ্ৰাই বল, ভাঁহাৰ কথিত বাৰ্য বা বেদ দাঁপ-**কং মোহান্দকার দুর করিয়া দেয়। এই প্রতি-বাদের উপনংহারে এই একটা ক্যাও আছে---পক্ষপাত ও মেহিশুনা হইয়া বেদ-ভাবকে আলোচনা করিলে তথাগে যুক্তি-সাধ্য সমু-দায় বিষয় আমাদিণের বুদ্ধিনত্পান দিয়া **रख्न महिक मण्युर्ग के हा इश** । करे श्रकात প্রাম্থতের যে কি দোষ, আমরা তাংগ বুলিতে পারিলাম না। ইহা অতি স্পাট্ট কলামে নকলেরই হৃদয়ে ধর্মা বৃঝিবার শক্তি আছে, কিন্তু অবস্থা ও শিক্ষার ২দোষে সকলের এই শক্তির প্রকৃত সদৃত্তি হয় ন।। জনা ঋষিধাকা শ্লীকাধা। কিন্তু योगारमञ्जू वृक्षिनिष्णश मिक्षारखन महिल क्षेता করিয়া লওয়া জাবশাক। চরিক্লাখায়ক দেখি-রেন, ইহাতে বেদের দাসত করিবার কোন क्या बना इस मारे। धर्म मेंसूया-वृष्टितरे मन শ্বিষাধী**নতা ও অ**ধিকার দেওয়া ছইয়াছে। আর ঐ প্রহাতরে বে ব্রেলা শব্দ আছে তাহার টিপুণুরীতে ত্রক্ষ। শব্দে ইর্কার

ভার বলিয়া- নির্দেশ কর। ছইলাছে। ইহার দারা দর্শভাইলাকে এই কথার ইন্ধিত করা হইল যে প্রাকৃতি করা হইল যে প্রাকৃতি করা হইল যে প্রাকৃতি করা হালেও তাহাই ছিলালে লিবলানানে অভিনিত্ত আছে। এই লালিত প্রাক্তি আছে। এই লালিত প্রাকৃতি হালিত প্রাকৃতি হালিত প্রাকৃতি হালিত তাহার গুড় কেলেগ্রা এই সকুয়োর ধর্মা-বোধ এই প্রকৃতি হালিতই উইপেন হল। এখন চরিতাখান্ত্রক লাভা বলা শৈখন তিনি শে সর্বাক্তি প্রমানের লানা শ্রীমাই কেরেজেল লাগ চাকুরকে লাভা বলিয়া খির করিছে গান, তাহার বল্ কতের।

চুরিতাখায়ক ফলাল দেকেনা। সাহরক্তে সাধারণের নিজ কলেন এটিপন করিন
বাম চৈঠা পাইলাছেনেন, তাল, যে নিজান্ত
অমূলক: এই ছলে তাল, টকটো নজাব প্রমান
দেই। এবং ইলা লাল ইকটো সপ্রমান হইকে
বে অক্তরে বাবু ছারা জনাত্র ইইলে বেদ-দংক্রান্ত সংখ্যার সপ্রনাত হয় নাই।
সঞ্জীব প্রমাণ ভাক্তিল জন বুদ্ধা রাজনারায়ন
বাবু। তিনি এক সময় এই বিশ্রে গাহা
লিবিষাছিলেন, নিজে তাক্ষ্য উদ্ধৃত
করিলান।

If it we cannot approve of the length to which the thick and than panegyrists of Aksbeya. Babu are going in their praise of those services. They say that he was the sole cause of the abandonment by the Somaj of the encourant doctrine of the infallibility of the Vedas. Now the old Brahmos did not belt the revelation of the Vedas as they represent them to have done. We quote in support of our assertion the following passages from the Vedantic Doctrines Vindicated:

when Indian literature and, in hed, all literatures were only (as it were) in a same of germination, it is impossible to prove the divine origin of these sacred works by any historical testimonies, the value of which was not understood all the time, or indeed, by any other evidence than what they themselves afford

\*\*\*

by the drift and tendency at a reasonableness

"The only ground of which the truth of any system of belief an be maintained is that founded on the puture of the doctrines inculcated by it.

If the dectrines of theology and the princeples of morality tanglet in the smeet volumes referred to appear to be consonant to the dictates of sound region and wisdom, if these tenets and precepts leave, the uniter achable character of truth in them the man sho has received them; and continues to place his trust in them, will have no reason to fear the vituperative surmises of impodliness in respect to his religion.

"The knowledge derived from the sources of impiration deals with everual truths, which require no other proof than what the whole erection and the mind of man unpersated by following reasonings afford in abunda see."

The above passages are quoted from the very paraphlet, in whice the revolution of the Vedas is principally maintained. We quote another passage from a work published by a Christian Missionary no testionary can be more strong than this one afforded by the missionary of another religion

Though the Brahmos claim the Vedus as a revelation of divine truth, they look primarily upon the works of nature as their religious teacher. From nature they learned first and because the Vedus, as they assert agreed with nature, therefore they regard them as inspired. Rev. Mullen's Essay on Vedantism Brahmoism, and Christianity.

Now it was certainly not a heroic feat on the part of Akshay Baha to induce people above opinious were so lax with respect to the initiarity of the Vedas as a revolution to reject the doctrine of their infallibility.

চরিতাখায়েক আর এক সলে বলিয়াছেন শীমং দেবে জনাথ চাকুর এক সময় সৌলো-কলিগের পক্ষে পূজা চন্দনাদি দ্বাবা ইথরা-রাগনার বিধি দেন এবং শীধর ন্যায়রত্ব দ্বারা কাঁচড়ারাড়ার কোন এক বৈদা পরি-বারে তন্ত্রেক ভ্রেমন্ত্র অহণ কলান। প্রকৃত কথা এই। একনা শীধর ন্যায়রত্ব ভারিয়া ভারতে ক্রেমন্ত্র ক্রিন

कान देवना शाँउवादबंद कान कान खी**रमांक** व्याकारार्यात अनाली-कार्य ने यदेवत आवाधना করিতে অসমর্থ। डाहा पिशतक यात्रि ग्रहा-নির্ব্বাণ তন্ত্রোক্ত পুষ্প চলনাদি ছারা ত্রাক্ষের উপাসনা করিতে বিধি দিয়াছি। ইয়া ত-নিয়া তিনি বলিলেন যে অশিকিত স্ত্রীদিন গের পক্ষে নিরীখর ও উপাসন-শুনা হইয়া থাকা অপেকা সদয়েব ভক্তি ভরে (প্রাণা-চন্দ্রাদি দারা ত্রেরে প্রতা করাও বরং ভাল। প্রকৃত কথা এই ম'ব। চরিভাখায়ক ববিবেন ইহাতে বোজানগাজে কুল চলৰ ও নৈবেদোর ছড়াছড়ি বরার কোনও প্রসঙ্গ হয় নাই। অক্ষয় বাব ইছার যে কি নি-বারণ করিয়াছিলেন, জামরা তাহা দ্বিতে शाहिलाभ मा ।

চরিতাখাটক ছাব এক ছাল এই ভাবের একটা বাল্যাছেন, বোমাদ্যাজের যা কিছু আৰ্ণাল্পিট সংক্ষার সমস্তই কেব**ল অক্**য বাবর বিদ্যা ও বুলিবলৈ সাধিত হয়। প্রত্যু-ত্তরে ইচ্ছা না থাকিলেও কর্তুবের **অমু**-রোধে আমরা একটা কঠোর কথা বলিতে বাধা হইতেছি। অক্ষধ বাবুর ম্থন ত্রাকা-সমাজের স্থিত সংযোগ, তখন হইতেই ভাঁহার ভাবে ও কার্যো তিনি ইংরাজীতে याशादक बहुल मर्भारवानी छोशाहे हिएलन। পুরাতন তেলুবোধিনীর প্রতি পূর্চা খুলিয়া দেশ, যুত্তগুলি ভাষার রচিত বেমান্ডেতি আছে ভাষাতে কেবল<sup>ু</sup> নবকিগ**লয়োগেলিত**' প্রভৃতি লালিত পদবিন্যাদের দুটা পরিবৈ কিন্তু কুত্রাপি গালীর হাদতে সৌন্দর্যা ও পৌরভ নাই। তিনি কথন ঈপরের, মঙ্গল अक्रार्थ विश्वाम करत्रन, कथन नां करत्रन। কখন প্রার্থনার আবশাক্তা স্বীকার করেন, कथन नाउ करतन । धरेत्रथ छाँग छ ু আমা এই সম্ভে রতকর জীবন চায়ত ফাতে वक्षी बटगार्न मुक्त गरिनाम। जारा वर वक्ष

प्रमन बाह देवान क्रान जाकुक ब्देश आर्थनात के

কাৰ্য্যক থান টোহার নেতা ছবল
টোহার ঘারা টোহাননাথের আ্বাটাছিক
নাজার ঘারা টোহাননাথের আ্বাটাছিক
নাজার ঘানার করা হা মনে করা আনর।
নহাপ্তার বিবেচনা করি। তিনি বে তার
কার্যক্রিক হোর প্রতিপাহা ও ভারা
কর্মক্রেক হোর প্রতিপাহা ও ভারা
কর্মক্রেক করার সক্রেক রাজনারায়ণ বার্
ক্রেকিক বিহাস সক্রেক রাজনারায়ণ বার্
ক্রেকিকিক বাহা লিখিয়াছেন, নিজে তাহা
ক্রিক করিনীয়া

The Babu long ago abjured his belief in Brahmoisin and turned an agnostic. This change in his opinion could be proved by passages in his work on Hindu sects—

He abjured Brahmoism long ago, but he was tenaciously fond of appropriating to himself the sole glory of having introduced certain reforms in the Somaj, the doctrines of which he latterly hated. This was rather inconsistent in that eminent man, the glory of our country.

खिनमः शास्त्र वकि। क्षा वित्न । क्षा क्रम क्रमात े पढ़ धक कन विदान विष्कर्ण ७ स्ट्रांग्यक ছিলেন। ্রক্টাছার গ্রন্থাবলী দার। বঙ্গদেশের त्य श्राप्त के के कार्य हरेशारक, हेश कि ना শ্বীকার করিরে ? তিনি যে বঙ্গভায়ার সম্-ধিক পৃষ্টি সাধন করিয়া যান, ইহাও অপলাপ করিবার নয়। ফলত তিনি আর্বাদেরই অক্ষয় বৰি এবং এই আদি তামাসগাজের সহিত में दर्गात र क्या के कारोब जाती , से मिल्त ती क मिक्छ रहा, अटै मंगल कथा चारन कहिला मानामिटगहरे यह स्कोच रहेशा चेटि । किन कुछिन प्रवासीक्रमन स्थानक्रमी स स्ट्रेंडि भारत ना । विनि ब्रोह्म नारशन, जार्थनक्रम क्रोहारे बेनिया शाब्दीब अस्ति। इतियान देवी कारेनी करे of the process confin bear the THE SHOOM THE STATE OF 

প্রকর্ণন করিলায়। একেণে অনুক্রান চরিছা-মারক বেন প্তকের বিভীয় সংস্করণ নং-লোকিত আকারে প্র করেন। ইহাতে বর্মের মর্যাাদা ও সভেরেই মর্যাাদা রক্ষিত করেব।

#### বালকৈর প্রার্থনা।

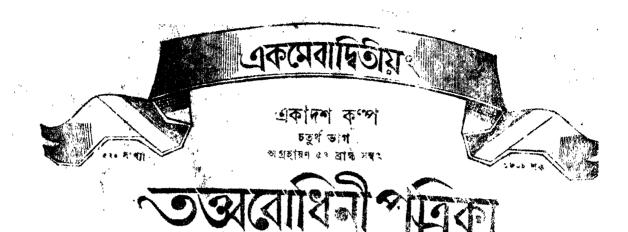
দরাময়! আমাদের এত ক্লুত্রত্বেও তুমি আঁমাদিগকে পরিত্যাগ কর না। । আমরা প্রতি মৃত্যু র তোমার আদেশ লজন করি তথাপি তাম আমাদিগকে তোমার ক্লেইয়া অমৃত্যায় ক্রোড়ে হান দান কর—তোমার পবিত্র সিংহাসনের নিকটে পাতকীকে দাড়াত जायादित लड्डा नारे-यर्छ हैट नाउ। नारे- मनुषाय नारे, जारे वामना ज्यनल ক্ষুদ্র পরিত্যাপ করিতে পারি না—স্বার্থে জনাঞ্জনি দিয়া সভাকে প্রাণের সকে আৰু লিঙ্গন করিতে পারি নার নীচতা কুদ্রা-শয়তা তথনও আমাদের হাড়ে হাড়ে মিশিয়া থাকে। ভোনার ক্লাপ্তির আমাদের আর গতি নাই – আমাদের হৃদরের ক্ষতা স্থাৰ পরতা বিনাশ করিয়া তোমার সম্বাচন উপযুক্ত কর।

## বিজ্ঞাপন।

আগামী এওকোর্ত্তিক সোমবার বেহালা কার্মানমান্তের এয়ন্তিংশ সাম্বংসরিক উৎসবে অগরাছ তিন বন্ধার পর আলগর্ণোর পারায়ণ হইবে এবং মুন্ধা সাত ঘটার সময়ে প্রয়োধ

> श्रीकीयाम् हा**हे**।श्रीयासः श्रीमानसः

		প্রস্থাত চতুর্থ ভাগ	o) a	*
আদি ব্রাক্ষদমাজের বিজে	<b>&lt;</b> !	জ্ব-সঙ্গাত শক্ত্ৰণ ভাগ	* 42	
	4	-र्तपुरमन	1.	go 4
		ক্ষিবিংশতি বৎসব্যের প্রাক্ষিত কুলার	· /c	
বাৰ্ষণৰ প্ৰথম ও বিভীয় খণ্ড ভাৎপৰ্য্য সহিত	i	ा-(८(६ न जास	ey o	
त्राक्षकः अवस्य जानकात्र वयः वारामा गारयः (भूज छ निका (जयनात्रः व्यक्षातं खः क्षांदश्या	1		Rs As. P	)
,	ا ابع	er	. waki <b>ne</b>	
স্ক্রিন। অক্ষরে) প্রক্রিম প্রথম ও বিভীয় খণ্ড ভাৎপ্র		A Discourse against Here	10	
शक्ति (ब्रे स्ट्रांस कृति वृत्ताः)		in religion		? <b>?</b>
নাক্ষ্য প্ৰথম ও দিনীৰ প্ৰ ভাৰপট	;	Hindon Theism	», ³	*
স্থিত (লাল কাল অক্ট্রে)		Theast's Trayor Book	، ا رو	*
বাম্বের গ্লুপুর্ব (স্থলত মুন্য এব প্রকাশিত)		Segment the Prince	<b>3</b> ), *	17
च्या अपन्य क्षेत्र । ज्या विश्व क्षेत्र । ज्या विश्व क्षेत्र । ज्या विश्व क्षेत्र । ज्या विश्व क्षेत्र । ज्या	b <sub>4</sub> .	Doctrines of Christian	<b>4</b> 5	
भःखु ७ ग्राक्षक्षी ((प्रत्नाशत व्यक्षता)	he	Resumention Physiology of Libbatev	, · ·	γ,
সংস্কৃত তাজাৰ (টীকা সহিত)		Tulustat Mawharddin	4	٠,
बाक्राला तः क्रथम ध्राप्य ध्राप्य स्थिति ।	jo i	新なお記載 おび もいわけい (最大に)	· lo	do.
ব্যক্তিশ প্রাক্ষধর্ম ভাইক্টা সহিত	1.	शे र्रंदर्भा १९करम् स्रोध्यक्षः ७ क्रिक्ट		
दान्त्रश्ला वानाय म अ	10	अन्यत्वाकर्तन्तः । अन्यत्वाकर्तन्तः		, ,
अभिवास वार्थान-त्यंत्र लक्ष्म	}. }.	অঞ্চলকারে গ্রামান প্রিয়হণ	1	1/0
अभितर्भात नामानकिलेख अस्तर	g c	कृष्य नक्ष्रक्रियास । त्राचाम करवार्थाने व	Ś.	, ,
अश्विक उन्तर्भगोद्भात उन्तर्भम	110	भूक विद्यासकार । भूक विद्यासकार		je!s
শাল্প বাম্বান শুপুর (ভাল কাগ্রু জ	1	Machine Co		
्राह्मवरम्यव वर्गायास्य । १९८८ (श्रुवाम् वर्गायाः	•	्रा १८७८काविसू श्रामितिस् राज्याताः	तांनय∙" ⊪	}.¥ #
अभारतित सायाम मन्त्र्य (इट > २०४४०)	in	काशक्तर भरेष "का अंग भिन का लेव	त केमिनिवर ।	ļ, s
্ৰাধা)	<b>3</b>	ाक्षरकार वर्षाः अध्यक्षराज्यस्य		A.
्रीक्ष के (स्थान श्रीषा)	300	"इंश्का निमद"	- A	ه رج ز
	1100	्राप्तित्वार्थिक विकास अञ्चलक महिल्ला	·	
ACMINICATION OF THE PROPERTY O	("0	क्रथकत्वसीय भाख् टक्स विवद	Ç 50	1,40
ঋষ্ঠান-প্¶ি	>	पक्त <b>ा</b>		) A c
শাংগাংগৰ শ্ৰশিকাতা ব্ৰাহ্মসমান্তের বস্তৃতা	1./0	क्राहमस्यान्नहिष्यां भाषान्त, "	8	
	e/o	लाकत्वम पर्यम बीयुक्त महरमध्य प	त उर्देक	
व्याक्तिक ब्राह्माशानना	10	স্থানিত ···		510/
ক্রেবন্দী ভাষংগ্রহ	باله ملي (	भारकामाध		310
SINTRICAL ACT C	***	"শাভিনা-সূত্র" (৬ জিগামাং দাত্র	()	> ,
রাজনীয়ামণ বস্থাৰ বস্তুত। ১ম ভাগ ভবানীপুর সাধুৎস্রিক সমাজের বভা্ভা	J.	(दणाक इङ्कावनी अब कहा "मिक्काक		
	1.	भाष्याहारणात सिन्द्रश्चनाहिक स		
द्वाभागम्भा	n <sup>l</sup> c	'हलाभनके' छटनाविनी स विद		
Hate Market and the Control of the C	•	विकासिक्ष अस्ति।		3119
হৃত্তি সচিত কঠোপনিবং	•/∘	त्यमास्म इतिका ३५ क्य	. * * *	١
গ্ৰনাপ্ত অক্তে	/5.	「4世(東京東) 4時 - 46 - 4 <b>報</b>		₹1• •#C
প্রেরচন সংগ্রহ		্বৰ প্ৰটাৱস্থ		<b>5</b>
जक्तकी १ मञ्जून हान दौरा (क्ट हान न्र	( <b>18</b> ) -{ -	্ৰামধৰ্ম গাঁডা (নব প্ৰকাশিছ)	44F '	-



व्यक्षकारक सिद्ध सम्बद्ध स्थान स्था

# শীরামপুর ব্রান্সমাজের সায়ং-সরিক উৎসব।

অ**দ্যকার উ**ৎসৰ আনাদের অন্তঃকরণে এই স**ত্যটি মু**ক্তিত করিয়া দিতেতে যে, ঈশ্ব-ताथामनाई मनूमा जीवत्मत मात छ दणका । কিন্তু যে-কোন উদ্দেশ্য হউক না কেন ভাষা সাধন করিছে গোলেই কতক্তাল আগোজ त्नित्र आ**रहाजन २**३। नारमातिक सूर्ण ज्य-শতা **উপভো**গ করিতে হ**ইলে** গৃহ এবং আর আর উপকরণের আয়োজন আবশক। केर्यदेशभागन। নির্ব্বিদ্ধে সাধন করিতে হইলে, আসুদঙ্গিক নানাবিধ আযোজনের প্রয়োজন হয়; ধর্মা অর্থ এবং কাম তিনেরই প্রয়োজন হয়, কিন্তু অর্থ এবং কৃমি ধর্ম্মের অনুগত হওয়া নিতান্তই আবশ্যক। ष्यर्थ-कडे माझ বদি আমাদের বৃদ্ধি বিভান্ত থাকে, কুণাতৃষ্ণ। ৰারা যদি আমাদের মন অভির থাকে, ভবে जीरा ने बदबी भागना वे भाग अपूर ৰনক; কিন্তু অনুস্থানা বদি আত্মা কলুষিত পাকে তবে ভাহা আরে। জন্মনক ; আমর। विशास अफ़िल नेयदात नाशास आर्थना পরিতে পারি, কিছ' পাপাচরণ ক্রিকা

মাধের নে পণত ব্র হইয়া স্থা। জনেব गिष जटनात छाछि निर्मार नातकात नात, ्र ফোন লড্ডায় আসরা ঈশ্বরের করণার প্রাণী श्हेत, जा महा यति जानतिया नियस निमध থাকি ভূগে কিড়পে কাম্যা প্রমান্তার প্রম্ लविस <u>(धम-नृष्टित चनू</u>लम (बार्गां गहा कतित १ व्याज्यत नैयद्वाभागना निर्मित्य সাধন কারতে হইলে ধর্মের আয়োজন সা-কাৎ সন্দরে প্রয়েজনীয়; দরিজ ব্যক্তি অর্থ কৰে বিভান্ত হইয়াও ইশানকে আকিতে পানে, তৃষাৰ্ক্ত পথিক মক্লভূদিন মধ্যে পাড়িয়াও नेरबदक जांकाज भारतः, किस भांभी वाङ्कि भेगदरत (श्रम मूथ "मर्म् ७३० वज्र-মুদাতং" উদাত বজের নায় নহা ভ্যানক **एएए** । शाशी वाकि विख्या ध्यारमत पिटक তাকাইতে পারে না। অভত্রর ইবরোপা-मनात अधिकाती हरें एक श्रेटिक अनुरुख চিত্তে পাণ হুইতে নিয়ন্ত হ ওয়া এবং আগ্রহ সহকারে ধর্মের আয়োজন করা নিভান্ত পক্তেই আবশকে। নিতান্ত বিষয়া লোকের। একদিকৈ ভোগেছে। চরিতার্থ করিবার জন্য वर्ष छेशास्त्र कटतन, वा দিকে জাখে-পার্ক্ত দের সমর্থা-লাভ করিবার জন্ম সংলগ্

পযুক্ত ভোগ-ছারা শরীরের স্থান্থ রক্ষা করেন; এই প্রকারে উংঘারা কামোজেশী অর্থ এবং অর্থোদ্দেশী কাম এইরূপ এক ঘূর্ণাচকৈ নিয়ন্ত্রিত হইয়া অন্ত প্রহর ঘূরিতে থাকেন। আবার, অনেক বন্যন্ত বর্গজ ভোগেচহার চরিতার্থতাকে, জীবনের লাক্ষান বার জানিয়া দমস্ত ধন এখনি ভোলে কার অনির্বাপ্য জটরানলে জন্দিভুক বর্গে ঘাকেন; ইলাদিলের প্রানি আধান্যন্ত্রির উপ্রদেশ এই সে,

শি কাত্ কামঃ কাম্যান্তিত পালেন সাম্যতি হ হবিবা ক্ষণভোগি ভূয় এবাভিস্কাত গ

কাম্য বস্তুর উপভোগ দারা কামনার কখন নিয়তি হয় না, প্রভাত য়ত-গ্রাপ্ত षशितं नाशि बादा। त्रिक्टि स्ट्रेटिक योदक।" **স্তৃত্যার ভো**গের সা**গরে** ধর্মন অংশ র ভেড়ে অধোগতি প্রাপ্ত হইতে থাকে, ভংগত তার্ অতি ভয়ানক অধোগতি। অর্থ ২ইতে কামে এবং কাম হটতে অংগ মুনিয়া বেড়ানো মধ্যো-গতিওনহে, উর্গতিওনহে, তাহা ঘ্রাগা 🖘 কিন্তু কামের দিকে অর্থের একলান, ভোড প্রাকৃত পক্ষেই অধোগতি। ঘুৰ্বা-গতিব অর্থের দিক্ অপেকা ভোগের দিক সম্বিক প্রবল ইইলেই তাহা অধ্যেতিতে পরিশত ছয়; আর, ভাষ। ধর্মের প্রসায়ী হট্লেট্ **উদ্**গতিতে পরিণত হয়। ধর্ণাই কেবল व्यर्थ अवर कार्ग छिल्दाहरू अरि छेहा नित्न-केंबरतत जिल्ला- कियाहेत्र। (नद्य । ञ्रेश्वतः প্রীতিই ধার্ম্মিক ব্যক্তির মৃখ্য উচ্চেশ্য এবং তাঁহার ধর্মা অর্থ এবং বাম তিনই দেই উদ্দেশ্য সাধ্রের উপায়। ঈশরোপাদনাই ধার্ন্মিক বাক্তির জীবন; ঈশব-প্রাতি সে चैतित्तत অন্তরঙ্গ এবং ঈখরের প্রিয়ক।র্ব। गाधन एम खीबरनात विश्वकः। আশার, ধর্মাই সেই প্রিয়কার্যা সাধনের অন্ত-রক; অর্থ এবং কাম ভাছার বহিরক। ধার্মিক বাজি ন্যায় পূর্বক অথ উপার্জ্যন করেন, অনায় কার্যো লিপ্ত হ'ন না; বৈধরপে দোগেছা চরিতার্থ করেন, অপবিত্র কার্যো লিপ্ত হ'ন না; সাধ্যাসুসারে লোকেয় হিত্দাধন করেন, কাহারো প্রতি অহিতাচরণ করেন না; এইরপ উপায় অবলন্ধন করিলা তিনি আপনার আত্মাতে ঈশরের প্রেম্ম্থাতিনি আপনার আত্মাতে ঈশরের প্রেম্ম্থাতিনি আপনার আত্মাতে ঈশরের প্রেম্ম্থাতিনি আপনার আত্মাতে ঈশরের প্রেম্ম্থাতিন আপনার আত্মাতে ঈশরের প্রেম্থাতিন আপনার আত্মাতে ঈশরের প্রেম্থাতিন আপনার আত্মাতে ঈশরের প্রতি বাবিত গাঁন; তাহার অব্যাপ দিন দিন ভিত্তা হইতে উল্লেভ্রেম্বেশ ঈশরের প্রতি বাবিত গাঁ; কমে তিনি সম্পত্র পাপতালা হইতে মুক্তা হইয়, ঈশরের সহিত কামনার সম্লায় কল উপভোগ করেন।

पर्ना (स. वर्ध ०४६ कारमत एटकवारसंहे विदर्भ । जोड्। नाइ। प्रेन्ट गुलामनाई एउँग्रेड प्रवय लक्षा । व्यामा यादा निवस्यालामगात নামে বাল-জনক, ও। : কথনই ধন্মের উপ-দেশ হইতে পারে না। ধর্ম ক্রমই এমন ক্ষা সনে না গে, অর্থোপান্তনে মন্ত্র করিও না: কেন্দ্র দারিজের অব্যক্তিতে মনুযোর यन के बटा लासनात अनुभरणाधी वृष्टेशा भएए। ধর্মা ভাষ্মত কথা বলে না লে সায় আর ভোজন কভিড না; কেননা অর্লাচ পূর্বক বিসাতু পদ ভোজন করি**লে শরীর নন স্থ** পালে না, ইহাতেও ঈশ্বরোপাদনার ব্যাঘাত জন্ম। বর্মা কেবল এই বলে 🖰, অন্যায় পূৰ্মকৈ পৰ্য উপাৰ্ছন ক্ষিত না; অসামা কর জন্য ভোজন করিও না; কেনুনা তাহা इटेटल बरना-पर्यथ बालिरनात्र मक्षांत इटेरत, ও আস্লাতে ঈশবের আনিষ্ঠার চাকা পডিয়া याष्ट्रेरत । त्राक्षक्षम् अमन**७ कथा वरणच रय** "আয়ুত্যোঃশ্রিচদরিজেং নৈনাং ম**ন্যেত ত্র্গ**ভাং।"

"আমরণ ধন-সম্পত্তির চেষ্টা করিবেক, তাহা সূলভি মনে করিবেক না।" কিন্তু এই যে, আমরত ধনসম্পত্তির চেষ্টা, ইহা কিলের অন্য ং শুলা কি কেবল ভোগেছা চরিভাগ

করিবার জন্য ? না ; জ্বিরোপাসনরে বলা অপহরণ এবং সাহায়ে সাধ্যমৰ জন্য ৷ তে সমা**জে সৃষ্ণতিপন্ন** সাধ সজন, ঠুচ প্রস্থ-শরীর প্রাসম্মতিত নমনারীর সংখ্যা যত ক্ষিত গেই **স্থাক ঈর্থরোপাদন।র তেও ই**পিয়ুজন বেল লা (श मंगोरजत अर्थ अन्द काक रार्वत अनुसार ভাছাবই নাম আধি মুদ্দত প্ৰত্তি ব্যাস্থিত ঈশ্বরোপাসনার উপস্বতা কেম্বর জানু স नगारक वर्ष ७८, वर्ष भएकर १८, स्ट्र তাহারই নাম জন্মা জন্ম ন ন্দেনি, मगाज; जेवदाशास्त्रा एक कि नगर्का চকের বিষ। আর্মীলে ১৯৫লত ১০৫ জ্ব স্মাজের সহিত্য অবদ্যান্ত স্মাত্রণ অব্না कबिशा देपरिदर्भ सार्थ । एवं देशिशा खादुवर , ना क्रिया शांति (के शांत ना ८४, क्यानवात भगाव गांग भगावा लयनदाव भगाव १०१४ হিক স্থান্ত। আপ্রান্তর গৈলে ুক্তিন काटन प्रकटान बालन बालन नराम जानिका व्यर्थ छेला र्क्सन कविछ , १९ बीहे रूथन की तरना मूथा ाधि हिल : आत ७०० एतजीना करम ংশ্বের জনুগামা হইড , ৺জার্বণ "জার্থ'' कतिया (लाकिनिया) व यहाँ र ४ व व व व व व व व व ুরা। এক্সেণেরা হা অল ,যা অফ করিয়া কৈ**র্মের ধন্দায় খু**রিয়া বেড ইবিতন না, ভারাচা **ष्यरायन्, ष्यराश्यः कार्यः नियुक्तः** याकिश স্বধর্ম পার্নীন-কারতেন, তাহাতেই স্বচ্ছলে তাঁহাদের জীবিকা নির্দাই হইত। ফাত্রিযের। রাজ্যের শাসন ও পালত ক্রার্ক্তা নিযুক্তী পাক্ষা কৰ্মা পালন কাবতেন, তাহাতেই তাঁহার। অন্ধ্রোদে সংগার নির্পাচ করিতেন। दिरमाता क्रुधि नीनिरका नियुक्त थाकिया सर्वन्ध পালন ক্ষিতেন, তাহাতে উংহালের যথেপ্ত অর্থ উপার্জ্জনা হইত; এবং তাঁহাদের অর্থের কিয়দংশ ত্রাহ্মণ-সদলে, কিয়দংশ রাজ-সদলে গমন করিয়া, সরস্তী এবং লক্ষা উভয়েরই टर्मियात्र निष्कुङ इहेछ। भूक, প্রভুর আ্ঞুয়ে

लत्तर्का पात्न कविशा, नितानका कार्यन-योग নিৰ্বাহে ল'ছেব। জনগ্ৰন্থল প্ৰায়াৰ বিশেষ কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত জিবিকার জন নারী**জা** টুরেলর প্রা**স্থাস**র 到1.6年 1966年 人名日本日本日本日本日本日本 त्तराभागभारतः सांश्राहरः । १८८१ । जनसः ্ৰিছা , কই প্ৰেপি ভা আৰু বাজিৰাজ িক্তেইত ৮ - সংক্রেই : ম**্প্**রে भन्ते अन्य १८० भन्य । अन्य अन्य করিকের বাংলাক বাংলালি বাং স্কাতি नियम स्थापण १५ अस्य सिक्त छैनी 化分离化 有性的 网络大大麻 人名英格奇人 使作。1697年1月1日 1月1日 1日東南 धेशत्याः भवः বিক্রিকে চলিত। কথ্যবাস সম্ভাব ধে र्मा ७ तमकोटाच १६ मि. ७०१ ०० छे १ तथा। **নহে লে ব্যক্তি** ও **সে**ট্টির ভার অংশপুর্বার্থন না কলিকে সাল্লালিক্ত্রান क्रिया दम नाकि अ६ १०० मा मान्य यह নিয়োগ করিয়ে লাখলারে । সানাম স্ট্রের **নিবে**র **强调14 \*** 

লান্দ্রকার দেশ শনি বলপূর্বক বিশ্বকার বৈশ্বকার বিশ্বকার দেশ দেশ করালো আরা; তবে কি ভাষা হইতে ভালা ভারে ও প্রতালা করা বাইতে পারে ও কিন্তু আছা চলিব লালাছি তাহার জনা শোচনা হরা রগা। উপান হইতে পত্ন লালা হইতে উপান জগতে চিরকালাই চলিয়া আগিলেছে। বাইলান পান যে ভালা উপানের পোপান লছে, ইয়া কেইই বিলিব পালিকারী লগহ। আমরা অথন নিজিত গালা, ঈর্ষর ভ্রমান নিজিও গালেন মানাভারিত বিশালা মানাভ্রমির মালা লাইছাতে। ইন্যাল পারা উল্লোলন করিয়াছে। ইন্যাল পারা উল্লোলন করিয়াছে। ইন্যাল ভালাকে পারিকাল করেন নাই, আমরা দেশ ভালাকে পারিকাল করেন নাই, আমরা দেশ ভালাকে পারিকাল নাকরি, ভালা হইলেই আমাদের মঙ্গন

ইইবে; তাঁহ। ইইলেই তিনি আমাদের কাণ্ডারী ইইয়া আমাদিগকে তুংখ শোকের পারপারে সইয়া যাইবেন; তথন দ্রামার্ণর ভারত সিংহার্গনে পুন্ন ক্রতিষ্ঠিত হেইলে— তথন সমস্ত ভারত সমাজ একাহন ক্রেণ্ডা ঈশবের জয় বোষণা করিয়া দেশের সমস্ত দিথিদিক কলাগে পরিপ্লাবিত কালেন। ঈশব করন সেই ছেই দিনের সূক্ষানি। প্রতিগ বাসের শিনিং বিশুর নায়ে আন সের শরনের ভ্রেনি অভিরে অপহরণ কর্মন।

🕹 विकृत्यवाचिछात्रः।

# দৰ্শন-সংহিতা-জ্ঞানতত।

√িধিকাও ॥ ১॥ ভানের মূল নিয়ম।

যে কেন্দ্র জ্ঞাতা যাহা-বিছু জানে, তাহারই সঙ্গে তাহার মেই জ্ঞানের ভিত্তি-মূল-সরপে আর্থনাকৈ কিছু-মা-কিছু জানা তাহার নিভান্ত জানগাক।

মন্তব্য এবং ব্যাখ্যান।

অধিন অথবা আমি—এই বিং সেই

নাবারণ মধ্য-ভূমি, সেই নিরজালারিজাত

সামারণ মধ্য-ভূমি, সেই নিরজালারিজাত

সামারণ মধ্য-ভূমি, সেই নিরজালারিজাত

সামারণ মধ্য-ভূমি, সেই নিরজালারিজাত

সামারণ মধ্য-ভূমি, সেই নিরজালারিজাত

কানা মিলিয়া এক হইসা অবস্থিতি

রো যাবতীয় জেয়ে বিষয়ের মধ্যে আগ্রাই
কেবল একমান্ত নিরস্তর-জ্যেয়। আপনাকে

লোনা ব্যতিরেকে তোমারই হউল—আগ্রাই

ত্তুজানের মূল প্রার্থায়া নির্দারিজ হইলার স্থানার প্রার্থায়া নির্দারিজ হইলার মূল প্রার্থায়া নির্দারিজ হইলার মূল প্রার্থায়া নির্দারিজ হইলাই প্রার্থার স্থায়ার বিদ্যারিজ হইলাই প্রার্থার স্থায়ার বিদ্যারিজ হইলাই প্রার্থার স্থার বিদ্যারিজ হলাই প্রার্থার স্থায়ার বিদ্যারিজ হইলাই প্রার্থার স্থার বিদ্যারিজ গ্রাই প্রার্থার স্থায়ার বিদ্যারিজ প্রার্থার স্থার বিদ্যারিজ গ্রাইলিজার স্থায়ার বিদ্যারিজ প্রার্থার স্থায়ার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যারিজ প্রার্থার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার স্থার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার বিদ্যার বিদ্যার স্থায়ার বিদ্যার বিদ

many with a magney into manner 國門者 田田 蜀河 "司马南帝 医红 া বিবাহি কাল কাল জাল জাল হইটো এয়া, STORY OF A CANDON POLICE WITH STORY BOOK Charling Arming Blot was this 有關 化气气 电影 医内性 數位的 医试验 网络中国公司 CPP "祝红人"的 安徽 数1分钟 为 为为 人们注意。 ·Mile दिवासक १४ कि।मा अधिवादि असे को को को को समिद लेक और भाषा अधिका प्राक्ति । १३५८**क** ४ है, होहि ३ ्राष्ट्र एक एक भारत्यकः भारती राग्या व्यक्तिः सार्वाह মাহিনী, প্রের্ডার প্রেম্ব সংক্ষা এলের এবং প্রেম্বর अधिने क्षांने नाम करे का रामने राजा स्मारका गाउँ राज करता, आकेरल, अवस्था कातर स्वतंत्र भागे, अहर उह জন্ম আত্মা **শব্দের ব**্রোঃ বৃহিন **ক্রমি আরো** শব্দের वाठ। सदर, भाकी काशित शाक्षी भागत वाका। अह-ল্ডীয় জভ'বং গান্ত্ৰ প্ৰেই ব**্ৰিয়াছেন ুহে** -Conscionars है, अन्तर शकी कानहे, आया। স্থিত্য ভালি, মন্ধিং বিশা Consciousness সাংগী জ্ঞান : স্প্র

শক্ত প্ৰশাদ্যে। পেদ্যা বৈচিন্ত্যাজ্জাগন্তে পৃথক্।
তত্তে বিভালা ওৎস্থিত প্ৰক্তপ্যাম ভিনাতে।
তথ্য অনেহনে বেদান্ত ন স্থিৱং জাগন্তে স্থিৱং।
তত্তে দাহতক্ত্যোহ দ্বিদ্ ক্ৰেক্সণা ন ভিদ্যতে।
অপ্যাপি চন্ত নেন্ত ভানাবোধো ভ্ৰেত শ্বতিন্
না চাৰবুদ বিদ্যাভাগে বিদ্যা তলা চতঃ।
স বোধে বিদ্যালালা ন বোধাৰ প্ৰবোধনক।
এবং প্ৰান্ত ক্ৰেণ্ডালা স্থিত ভ্ৰদিনাত্ত্বে স্থানাক্ষালাক্ষ্য ভ্ৰদিনাত্ত্ব স্থানাক্ষালাক্ষ্য ভ্ৰদিনাত্ত্ব স্থানাক্ষালাক্ষ্য ব্ৰহ্মালাক্ষ্য ব্যাহার্য স্থানাক্ষ্য ব্ৰহ্মালাক্ষ্য ব্ৰহ্মালাক্য

৪৯খিলোনা **তি**নিধী বিভিত্ত পালিবেন থৈ, ৮০৮খনে বৈলান-১৮৫লান প্রাণ্ড জেনে চ আত্মাৰ নাম বিতীয় এমন-অব-একটি জবি-িচলিত লক্ষেত্ৰাৰ আ**ই। ভিন্ন** দেশিৱৰল ১৮ জিল কটি ছাড়া--- ২০ জন্ম জন্ম ্য আপন, ভল্ল আৰু কাহ'লো এতি ক্ৰ'ন (১৯৫) বন, আন সহ সন্ধ লাভ প্ৰত के किन प्राप्त किन एकण नरह ए एक है होशोह के कि कि **एक कि कि** পানবেন নাং পের "আমি বাহাই কেন আনি 🛊 আৰী তাত্ৰৰ প্ৰতিয়ক্ত। 🦠 েন স্ব ना-एकिताई माम-- व बढाने हैं है। क्षीना ए नुस्र-।"

ক্ষণির এলগাড় । র (১৮ ব জারা তাদ ১ বিংগ বাং ্ জীবীর পাঁচের প্রাথার । 变色 期下的一种分别 医肉 网络种口指 कर्र दश अवस्ति निर्मेश करातक राजने का प्र কোন স্থান-জিল্লাই । এই প্ৰশ্ব নাত হৈছে। অব্যালয়ত হৈছে হ'ব। তেওঁ এই ১৯১৫ ।

资,《文事报题 斯西斯阿伯·《 对下加热期间,一点 go (1) with greatly are in the first of the contra ्रेनः ग्राम्क विक्रिक (अध्यात ८३ अस्ति । व्यक्ति । । । । । स्वराक्तादम् । प्राप्तानुः । व 🏞 १८ ८४० । । । नगुण्य क्योरिक प्राधिदया और १६०१र । १ त. १८ । १ त. विशा १६ केट्रें १ अस्टित भावत १५ ४ . १ २५ २५ महास्त्र । मामा, तेमरे खामरे मा १५ १७% । १४% । १४% । তুই বিভিন্ন কা**বে**শণ প্র**শান** গে, জান, জান চ া**ংহ—শংগ একট** (জিলা মুদ্রিস কালেও এর সং**মূপ্তি-কালের অ**বলভার বেন্দ্র ওলালেও এই ি ংতি-পথে উপনাত হয়, ব্ৰেডি নালে পুন্ধান াকি : ঋ্নতে অংগের করে । ঘল এ স্কলিক **भारका**र ्**ब्धि-लाता** भाकार अवला विरामान था है। कार्र (७/६) निर्माकिर केर्ने नेभन प्रतर्भ प्रादिक कर है। त्य स्थान को ते एकारण की भाषा, रमरे का मने अर्थ-कारधत मोक्ता, क्षाक्त अनिर्दे अवैश्विकारणय माक्ता। विवार्वतन Charte eren, Granco micito acces, fo co भा<sup>क्ष</sup> वर्ती - कार्यहर्ण **कोरमस्य लार**का मार्के । जेत ेषाना व्यवस्थातन्त्रस्य द्यमन माक्षीकातन 🚉 🖰 रेंचे नाम निर्मा एक्ट्रेंबंड - **एम**हेंबा**ल । ज्याम** अन्त सुन्न न्यज বছৰা শত্ৰাক্ত কৰি চেণ্-স্বয়ক্তকাৰ সাক্ষাপ্ৰাই পর্ব বা বর্গ বর্গ উদয়ও হয় না — অভান্ত হয় লা भाको छानहे जाजा।

्रां । व्यापा प्रयुक्तांन् च्युकां । १००० कर्युक्ता ावनाम के एक एक किन्सिन के के ने स्व ब्याच्या अभिताक्षित्रक्षीर एक दुन्दर अब्दार अन्य ता अन्य किलाइन्ट कार्य**न्त्र** कार्यक्रिया अस्ति क्रा া নীয় আহাই এই এখন নেম্বালেখ বিষয়েও হ্যান না হয় হয় হয় হয় আৰু বাব আৰু আৰু

> CATALON CARLO O SOLITOR OF SALES · (中 称简称)。 多洲百个代人

ानाही **स्थाप** प्रतिकार के प्रमान्त के कहार है जिल्ला करते हैं। इस करते हैं है · "看你一句说是一句,我是什么一个。" र्दाच्या विहास्तर इन्हें अपन्य पास्त पास अन्त · 化工作符号 有效的现在分词 化二次 网络海鱼 हर्भावे — सामाल भारत्य । १००० मा अन्यान , प्रमुक्त करार **कारन है** । १९९८ केंद्र ५, ५०% প্রাচ্চের এই মইচেড়া এলার চারিকার माशिक अभाग विद्युत के अपने वि लाने छ हो। १३ व्हार्यन्त १५० कि है --जा शतकत्मा १ १ व पार - जाता १ ६१३ ३१ किला हो । इस महाराज्य

> राज १२ व च प्रश्नीन इक्कान । क्षान । १८१५ । १८१३ ,बार्का र व्याप्त । वा मरन ११ मशा

> तथाउन - देशक जानांख छेथालिन : ইতে পারেরতে খগন আমনা কাজ লকে বিরেক হানির অথবং বিষয়-চিক্তার নন্দ धार्कि, जयम अटनक मग अपन पटि देवा, . है।-८२. ध्के -- जुनन कि किन एक किन-भिन इन्त्रा परिकार अपन जाराद्वार अपन व्यवकान करें रें उटा करा, अक सुद्र किया व

### তত্ত্ত্বাধিনী পত্তিৰ





শার্মার প্রতি মনো-মিবেশ করি। এ আ-পত্তি দি প্রথম সিদ্ধানের প্রাণে আহাত ক্রিত উদ্যত,—ইহার পরিহারের উপার কি

#### আ: ভির পরিচা : nek

গ্ৰেম সিদ্ধান্ত যদি এরপে বলিত যে, षांगारतत्र वाशनात णाशनात श्रीत एत्या-एक यन मर्क्क हि स्टाहे करण <u>अवर</u> तज्ञ-বৎস্তাপ নিবিষ্ট থাকে, অথবা, আংল্ফ আপ-गाया में विषे आश्रीतिम स्था लेखीयी प्राप्त বিসয়, তবে ঐ জাপ ্ টি প্রথম দিছায়েত্র পক্ষে নিভাত্তই সারাত্মক হইত। र्टेटन शनोकाटक मार्को माना कृतिरलर, এখন সিদ্ধান্ত-টি একেগানেই প্রমাণ-বিরুদ্ধ বলিয়া প্রকাশ পাইত; কারণ, প্রায়শই এইরপ ঘটে খে, আপনাদিগকে আমরা ছতি 🖜 ্ এাহ্য করি। িন্দু অলু গ্রাহ্য কশ্ সভার, **অরে, একেবারে**ই অগ্রাহ্য কল। ১৮ তন্ত্র বর্তমান সিদ্ধান্ত কেবল এই ২ ন বলে ্য, যে কোন জ্ঞাতা হউক্না লংকান্ জ্ঞাতাই কেশ্যাত্রও নিতান্ত আছু জ্ঞান ব-জিত-নিতান্ত আতা বিশ্বত-ফৌতে পারে नाः, **यर्**स **काष्टांत मन वाष्ट्र** वियद्ध खाला-স্তিক নিশ্র- তথনও নহে। জারা নিজুতিব ্**নাজা ্ষত উজেই চড়ানো** ১উক্ না – তাই। আংশিক এবং ক্তিম বট আর টছুই হ-ন 🙀 **ইতে** গা**রে না, ভাহা** এল ভিক হইতে পারে **ब्ला-तास्त्रविक स्टेट**ः ला**टर**ा। यास्त्र যে এতাক জিয়া, শাসাব যে ভারনা, তাহা তাহার আপনারই প্রতাক ক্রিয়া—আপ্র-নারই ভাবন।; স্মতবাং প্রত্যক্ষ মাত্রেতেই— ভাবনা-গাত্রেতেই—আপ্নাণেক্ষা নিপুত্-রূপে প্রছম রহিয়াছে। ইহাতে এগাণ হইতেছে বে, যণন আমরা বাহা বিষয়েতে প্রসাঢ় রূপে নিমগ্র অধিক তথ্যত গোমতা াছ-क्कान इहेटड अरक्वारत है विनाकृष्ठ रहे ना।

वर्जगान निकास और शिशास विनयार मित्रस এবং ইহার জনা সম্বাম করিতে গুলুত। আমাদের জাগ্রৎকালের প্রভ্যেক মুহুর্ত্তে – ज्यागारमञ्ज गमछ छात्मेन नरेक गरक -আত্মজ্ঞানের একটি প্রশান্ত-বাহী নির্বিবাদী স্রোত্তবহিয়া চলিতেছে, এবং সেই আছা-জ্ঞানই আমাদের আর আর সমস্ত জ্ঞানের ভিত্তি-ভূমি ৷ \* আমাদের হস্ত-স্থিত কোন বস্তুর ব' হা**র্যো**র প্রতি জায়াদের ম**নে**র পোনেরো আনা উনিশ গণ্ডা চিন কড়া অংশ নিবিও থাকে থাকুক্—আন'কেন মনের এক কড় বা পারে: অক্সামণ তে৷ আর্মানের আপ্ৰাংগেৰ ভালি নিবিষ্ট থাকেও হুট্রেটি চালা প্রামার্থর প্রক-সম্পর্নর सामा के निर्दे गर्यारे— मात किहरे जामन। र हिंगा।

#### ল'নত সুহ্বাল বাজো**পেকার ক**বেণ গল

নই তে মান্ত দেখিলায় হে, আনিদের মন্ত্রন ভারতি হামরা আগনার। কোন কালেই জামাদের জাপন স্বর কোন হৈছিত সারিয়া পড়িনা; তবে কেন আলাদের কলে মনে হা যে, আনরা প্রায়নই লাজ-বিশ্বত হ আগনাকে হে আমরা দেখিয়াও দেখিনা, তাঁহার কারণ আর কিছু না— মন্ত্রা-প্রকৃতির নিসেই এই সে, ঘারিও সহস্ বাস অবহেলার প্রসূতি। যাহা আমরা দ্বনার মধ্যে আমে না; আল যাহা কিছু স্থানাদের মধ্যে আমে না; আল যাহা কিছু স্থানাদের মধ্যে উপস্থিত হয়, তাহার নৃতন্ত্রের তার-

#### ইতার অর্থ

বাংল বিষ্ণ ক্ষীর, হত কিছু জ্ঞান—সমন্ত্রী আত্ম-জ্ঞান-সাপেক। আপনাকে না জানিয়া কেইট্র বাংক বিষয়কে জানিতে পারে ছা।

शक्तर्यान निश्च निश्च वहन-हि और कथाबरे मरहामत्र :---

শ্ৰহংপ্ৰাচ্যৰ ্জাইনিদ্ধুতেইতি ক্টুং। **স্বিদিদ্ধ।** স্বমান্ত্ৰান্ধ্ৰ নত ক'চৎ গ্ৰ

जगा जन्माहबर जारात शक बाबारक गत्नीद्वाद्भात खोक्क्या इस के योश्व पन्न চুল্ভ, ভাহাতেই আমাদের মা আইও হয়; जात, याहा जाइता जह शहर तिथए हि. তাহার প্রতি আমাদের তাঁছিলা ক্ষমে। হাই শুতন তাহাঁই আমাদের চকুকে চমকিত করে; যাঁখা আমাদের চিন-পারিচিত তাহা আমাদের চকে লাগে না। আইপ্রহরিক ব্যবসাধেরর ন্যায় –্রুন-চক্ষু ছোল্লাইয়। দিতে 🥫 কৌতৃহলের আঠাহ মন্দাইয়া দিতে – এমন ,আর কুত্ই নাই। ইয়াৰ উদাহরণ থেখানে সেখানে পড়িয়া আছে। এখানে বেবল এই মাত্র বলা **আবশ্যক** যে, বাঁচ বহু সন্মুদ্ধ যাহাই কেন উপস্থিত হউক্ না---ভাগেরই অপেকা িকী আপনার সহিত অধিক পরি-চিত, তাই ভাষারই অনোজা ভিলি আপনাব श्रीक जल भरमारयात्री। जीनवा १५००-জনেই অপেনার নিকট নিরতঃ উপস্তিল ভাই আগণাকে দেখিয়াও দেখি না 🖛 আ-মানের জ্ঞানের মূল নিয়মকে আম দ একপ অবিক্রেদে মানিগ লি যে, আমরা ভাষাকে मकारे कति ना । काशादमत गटनत ८८८। গ্রচলিত ভাব গতি, ভাছাতে আমবা আপুনরো (यम आभारतत अवारना जिकते (कर्षे निधि। এটি, আপনার সহিকে আপনার গলাগলি

বেশান্ত দৰ্শনে 'দেশন প্ৰেয়-লায়' নানক আছিল বিশ্বতির একটি জনিহিবল প্ৰেমিক আছে, গোট এই ৮—

দশজন ব্যক্তি এক সংস্থা নিবিয় প্ৰতে লালকোন দিন পালকাৰ বালি এক সংখ্যা নিবিয় প্ৰতে লালকোন;

কিছ কি কাতিবা—বিনিই গণনা করেন তিনিই আপ্নাকে পরিতাপ পূর্বক ইতর নম জুনুহক প্রনাক্তিরাই কাম হ'ন, ও 'আর এক জন কোপায়' বালিয়া নিরান্ত হ'ন; এটি কাহারো মনে হইডেছেনা বে তিনি কাপিনিই দশম ব্যক্তিন বিন্দিণিতে জ্যাহে—

ুৰ্ণনিব সংখ্যা ছতজালো দশমো বিভ্ৰমান্তল।
নি বৈভি দশমোহুলীভি বীক্ষামানোহুপি ভালব ॥
কুল্পন ব্যক্তিংকাপনি ছাড়া নয় জনকে দেখিয়াও নয় সংখ্যায় এলপ বিভাত হইডেছেন যে, ইহা
ভিনি দেখিতেছেন না যে, ভিনি নিজেই ইশ্য।

ঘনিষ্ট তার—নিরব্চিছ্ন সহবাসের—চির পরিত্র চলের— গুনিবার্সা ফল। যে সুজে সন্সা আপুনার জ্ঞানে আপনি বাঁধা, ভাহা গতই কেন সুক্ষ হউক্ নাকু কোন কালেই তাহা ছিন ছইতে পাবে না।

आं**यां वरहणांत्र विकीश का**लत् े जिस्ताव कालगाना । १॥ এখানে আন এনটি বিষয় বিবেছ: শেল-টি এই খে খামানের জ্ঞানের অভ্যন্তবে তুইটি প্রনেশ দেশিতে পাওয়া নায়: একটি शामित डेनिविष्ठ डेलिश्च रेल्लिन्यम ir- ৷ সকলেতেই ওমায়ীতত, ১,৩৫৫৩ চাল ই ৮ 'পাষা ,\* আৰ ৬ গটি সাকেল চুচাল্ল প্রতিষ্ঠাপন -ইজিকো জননতে বে ৫০০ निर्व विकेशिक्या छात्र। बारश्या काक्सभावर श्राप्तक्षि क्याचिक द्यान्यकार्यात एएएए० र মৰ আকেপ্ৰয়ে ৷ মনুবং এপেল'ৰ ৰঞ্চ ब्राक वर्षन करिएक भारत स्थल करिएक পালে; ফিল্পু পাণ্ডনা, দ দর্শন করিতেও शास्त्र मा. रुपर्य कहिए७ । शास्त्र मा । भंतीहरू गारा पाश इंडिम्बन्धमा म्राप्ट আন্ত্রিব **নান সভাবতই ইন্ডিয়ের বিষয়-**भव्दर रुपर९क्ष्य राष्ट्र प्राप्त : अक्रमा धा**भारनत मार्**मातिक कन्त्र कार्काद স্মান-নালেন অভ প্রহ্ব-মানত প্রাকৃত অব 🛊 হায়--আগর। আপনার প্রতি শতি অন্নই মনোনিবেশ কবিতে অবদর পাই। এইরূপ নেখা ধা**ইতে**লছনে, তুই করেশে খামরা স্থাপ-নার প্রতি এত শল্প মনে প্রেগী;—এক কারণ এই সে, প্ৰিপ্তভা এবছেক্ত তুল্ভিঃ জ্বায় এক কারণ এই যে, পার্জ্য ইন্সিরের স্বর্গন প্রথম ব্রিকাধের। বিজ্যান্ত্রী এবটা দিবতে ভব খণ্ডম ৫ ছু ত

কেনে কোন দশনকাব কৈ নধানকাব এ সিদ্ধান্তের বিরোধী ২ত প্রদানকাব এ দেখা যায়। ইস্কাল বাজন এই যে, প্রথমে আ্যারা কেবল ইন্দ্রিয় সংক্ষান্ত উপরক্তিন গুলিই (অর্থাৎ বছিনিয়য়ের ছালগুলিই)

জ্ঞানে উপলব্ধি করি; তাহার পর, যত-ক্ষা না পুনর্বার, সেই উপরক্তি-গুলিকে 5 ক্রে **আনি**য়ন করি, তভক্ষণ আমরা া প্ৰাকে তাহাদের জ্ঞাতা বিলিয়া উপল্কি বার না। ইইারা আমাদিগকে এক একার चमावा मांदन कतिए वंदलन :- त्य नकल উপরভিত্র উপন্থিতি-কালে আম্ন। এতা निस्तक का श**नात किन्छा, छिश**तीक वर्ष नाहे, দেই : ফল উপরাক্তর , অনুপশিতি চ'লে ভাষ্ঠিখনে অপিনার বলিয়া স্মরণ করিতে বলেন। প্রেধি ধাহা নাক্ষার-জ্ঞানে উপস্থিত ২০ **নাই**, লক্ষ্যতে জাহা কেইট খুৱৰ কৰিতে পাবে না। সাহ যোগু উপরক্তি-গুলির উপ স্থিতি-কালে ঃ ং দিগকে আমরা আগনার विभिन्न, भा व्यानिभाग जात शास जो मिशहर কেমন করিয়া আপনার বলিয়া স্মরণ করিব 🕫 শ্বরণ বলিতে **এঁথানে** আর তে৷ কিছুই নর---্**নই** উণর**্জিগুলির** সহিত প্রামাদের দ্বের াহাজান্য গৰের **উপল**ক্ষি কৰিয়াছি ভাষ্ট রই বলণ, কিন্তু আপনাকৈ উপনেতি না কৰিল <mark>আপেনার সহিত অন্য কোন</mark>্কিছুৰ সভভ<sub>া</sub> উপলব্ধি করা অসম্ভব; অভএব বাদি পরে ভাবিয়া দেখিলে এইরূপ ভালিপর ২৫ সে, ঐ উপবক্তি-গুলি আমাদের আপনান আপ-নার সম্বনেই ঘটিয়াছিল, তবে ভারাদের প্রাথম উপস্থিতি-কালে প্রশা তার্লদগকে (मागत) अपनात पालना तिलगाई उललिका কেরিয়াছিল।ম। সাক্ষ্য হে প্রের্থ যাত্ত বলিয়াছে, স্মরণ তালাই পালারাইভি কলিতে भारि ; श्रातम अख्याक-श्र्व म् उम ८०१- अथाह বালিমে পারে না: স্মর্গর একটি কথাও ্ৰথা **কুণ্ড নহে**, তাহাৰ একল কণ ই লেখা (या । 📆 📆 श्रुर्विकी मार्काद स्वानरे पात-্রা একমার শিক্ষা গুরু। কথিত উপরক্তি-গুলির প্রথম উপুরিতির সময় জামর। নাকি শানাদের আপনা আপনাকে নেই উপরক্তি

গুলির গৃহীত বলিয়া উপলব্ধি করি, তাই
তাহাদের প্রবংশর সময় আমরা আশনাআপনাকে ভাছাদের গৃহীতা বলিয়া স্মরণ
করি। তবেই হুইতেছে যে, তাহাদের
প্রথম উপস্থিতি-কালেও-তাহাদিগকে আমরা
আপনার বলিয়া উপলব্ধি করিয়াছিলান—
স্থাতরাং তথন-হুইটেই আমাদের আতা জ্ঞান
কার্স ক্রিয়া আলিতেছে।

াঁগিয় তথ্ৰটির ডিনিন্ন ব্যাবালিয়াই প্ৰথম দিয়াজের বল বিভাগকৰ ॥ ইয়

. ভারম (মদ্ধান্ত**িকে পর-পরবর্তী আর**া কা। কিন্তু ১৯৫৬ বিযুক্ত ক্রবিয়া ওছা যদি। Chr. (Str. 19) (संदर्भात (Str.) अकर सिवज कही য়ার ভাগে ভাষে। জাতার অকি**কি**ংবার ইইয়া हाड़ो । १९७, खाल नाख असीत द गार ভিত্তিভূমি — এক প্রস্থা পরবর্তী সংগ্রামান শুলির পোলা অবস্থন—এই ভাবে খাদ ভাহার লাল দৃষ্টিলাত কলা যায়, তবে ভাহার মালে এল জীওন তলং ভামেবোর বাহিন ात्माच संराम भाग गर गा। उहें भिन জালেন্ট ফাতদর মুচল এবং **স্বর্গটো সন্মত**— ইয়ালের ভিনার বর্তমান ম**ংহতার সকলই** सिङ्क लोगर १८६ । विद्याद **ेल्रायाहे गमछ** তন্ত্ৰটির হৈছবাল ইংবাৰ পাতবুন্ট সমাজ ভাষাটির পতন ৷ এ সিদাস্টির নিজের নিসেং তেমন-কেশ্ৰ জাৰ্থ-পোটাৰ নাম দেন্দ্ৰখন জি জাৰা পাজি ७१ ८६ सहस् क तिरायम (स. "अहे ४२ मा - छ दिस्स মিছে কেন আৰু পাওখ্ৰম**্তক আঁচেডেই** ব-মিতে পাটন শিষ্টাটেছ 🖺 তিনি **হয় তে৷ মনে** ক্তিবেন যে, 'আগতা সমস্ত জ্ঞা**ন এবং সমস্ত** প্রত্যক্ষ ক্রিরা বাংগর কিরেরা" এই তে এক-রত্তি কথা, কিন্দু ১হাব পটা **ও পাড়পর দে**ল পিলে মনে হয় যে, কি না জানি ব্যাপার i\* ভিত্তাস ব্যক্তিকে **অনুমরা এই বলি কে,** ভিল এগো'ন, পরে পরে কি আনিতেকৈ ভাষা দেশন, ভাষাৰ প্র যথা বলিবার হয়--

বলিবেন। বৈত্তমান সিদ্ধান্তটিকে কত থে

ক্রেন্ডার বহন করিতে হইবে—তিনি তাহা

দেখিতেছেন না আমরা আহা দেখিতেছি,

এজনা, ইহার পত্তন-ভূমি দৃত করিবার জনা
আরো গুটি চুই কথা আমাদিগকৈ বালতে

ইইতেছে —ইহাতে কেহু আমাদের অপবাধ

এহন কবিবেন না।

ে এ সিদ্ধারণি পরীক্ষালালা আওওঁ ছইতে পারে না, পরীক্ষাভারা বাং আবে। দুর্গত ই ভয় ॥১০॥

ন্ত্ৰান সিদ্ধান্ত লি লিক্ বাল সম্প্ৰী নেৰে সম্প্ৰিক কটি। বা না বিদ্নালি লি কি কিব কুম্ উল্লালিক লাকা কৰে। বাল ক্ৰিলিক স্বাহালিক আগবাৰে কেলাৰ আন হয়েক স্বাহালিক আগবাকে কিলাৰ বস্তুক জালিকে প্ৰক্ৰেন লা। কেন্দ্ৰ মুক্ত প্ৰী সজ্জান-ভাবে আপনাকে এক গ্ৰেই গ্ৰান ইনিক বহিন্দ্ৰ কৰিব আৰু আল বিষয়ের বিশেষনায় লাইভ ইইকে পালেন না। উল্লাভাবে লিকে ক্ৰিবেন লে

 मुख्या (त्रिकाट्यपंक लाविष्य पद । त्रिक्ति कः र्क्षिक्ष्य अधिर्वत भाग मार्च ্রারেখা ভাগের তুই এটেখন নারা বালা বালান্ত ১০ ভাগাই সরল রেখা 🖟 গতি নিজ্ঞানে . 🚓 🕬 🕫 🗥 (य, हरामांस तक क्लांस किंछू ७५० वाता-०) इक्टेटल, राज्य, त्यमन छाल्यहाछ त्यमन एक्टर किरदा त्रभाग्न विकास अरकि ना कि छई। ८ छह নজীপ **ভৌৰ্ল ক**ঞ্জিল তাথান্দের মে'ট শুরুত্ব বেরূপ <u> প্রায়, ভাহাদের দংযোগ-লাক বথর জনত ভাহার</u> न्मिधिविक् इटेटले शास्त्र ना। विकारनत १०४, श व १८व এই দকল সাখান্য সত্য দেখিলা বিভানেৰ প্রতি বাঁহার অভতি জনো, তিনি বিভানের মিতাভুট অন্ধিকারী। বিভিন্ন কোন সভাকেই 🖣 কিংগুলের भरन करिय ना, जिनिके विकास्तद खद्राई अधिकाती। **क्ल**मनां कि सून् हिंह इस भक्त गठाई जान्निता हान-**মনে এবিত** বিভিন্ন । করু বত্যের করু ছারে ন**ত্তক অ**বনত না করিয়া, শুরু সত্যের বিশাল সন্দিরে অবেশ করিতে পারা নাম না। গোমুখী প্রদেশের গলা গৰীই নহে, ভাহা একটি ক্ছ নালা মাত্ৰ; কিছ তাহা বুলিরা ইহা অস্বীকার করিতে পারা যায় না বে, णाराहे गेर्नात भूग व्यव्यवन । कें<sub>लिक</sub>

> প্রাজন র **সভঃসিদ্ধ উ**ল্লেট প্রচন্ত্র না স্থা প্রচাদ্ধাসক

কিন্তু বৰ্ত্তমান গৈছে ভ্ৰিটিকৈ প্ৰচলতে, বৰ্ত্তী মুলাড় যে গ্ৰান্থ-গুলির ভিত্তিমূল । দেন উপস্বজ্ঞা হুটালে হুটালে, ভা**হা**র বেরূপ হুপান্**যাম** িল প্ৰান্ধ লাপকতা আৰশ্যক ১৮৮ भका । ১৫০। ৬ সেই ভাষাকে দিছে। তার-: ९९ (स) (त ल १४वाम (१) (**इंग्रि**क (६)) শক্ষিতি এক্টিক ক্ষেত্র ক্ষেত্র প্রতিষ্ঠ ाख वर्षा । १६८० । १८७० । १८८ छ । প্ৰক্ৰী বিলেপ সকলেৱ লোক উন্নেশ্য আ। সতে পারে লা। তাহা সংগ্রহণ **দিদ্দান্ত<sup>কি</sup>কে** আন্তঃ একটি ব্যক্তিন महा कतिया गाँउ करा हा हा हो--- कन है। भारत छेशत है खबार प्रमान जाति छ। १ স্থাপন কলে চাই লাউখনে এলপ ক'ল প্রতিপন্ন কর কাই যে, ভিলাল বিগলের পক একেবারেই অবিরোধী এবং অঞ্চত 🕦 🛪 🕫 কথা এট যে, বভ্নান সিদ্ধান্ত-টি এমানের कान अर्थका बार्य ना, छैदा निक्ह সর্বপ্রথন প্রমাণ-দার, এজন্য আর কৌন

ছার দিয়া উহাত উপনীত হওয়া যার না।\* उदि ने दक्ष मिविशा छिहात छाट्लमा नामा कती भारेटज शहर तथा अज्ञात खेरात र्भेट शिक्षका - प्रिकेट्स स्थान । गान्य जिल-म् खंड निश्मश्रीतिहरू लार नाम जारि তির মূলত প্রকালের ক্রেড প্রাথাবিক্তা— खिलात ५ व्यक्तिके दम देखा । जिल्हा व विकटक কাহাতে৷ কোন কোণা জনিত লাবে আত হদি কুৰা ভাশা এক দন্যে প্ৰণ কোন शिक्षी छान छ। छिन छ दिहर प्राहारक लिलि है। इस अहर के व क्रीनिगंड रोहर सरस्म, एट्ट 🗀 🖂 👑 🥸 जिल्ला के बिद्धा भारतम् । ११ हरे द्वा ্মম ও জ্ঞাতি থাকিবার 一、八、河流 (4) ৰ্ণকাৰ **ক্ৰাৰ্থ-স্থা-ছি** আছে: ২০০১ ভাঁচাৰ ্সমত্ত জীব**নের মধে**। একবারও কেন্টা উচ্চাঃ খবরে ৬ । সতে ছিলা খে, ১৪ জন ১ ব নিজের ভার । এ এরপ কল্পনা কি একি এ महारू १ : क्रिक् । हिन्दा उद्दे '४४ व ४ उद्दे । ा ला एक्स (काम अंति प्रशास का क्रका किविद्या **किंग**ा अध्या किंग्न লিয় জানিতে ছন না' প্ৰতিব্ कर्ति,अर्द्धिक **अध्यास**न २०१५ । १०५४ । भवासा जरम्म जालमा कर रहा राष्ट्र रहेरी-भक्ति कोत, प्रथम मून छोक। हा अधा माँ हो छ। জিপলার চেরে। বিস্থান ভালার অংগলার रिक्रिश चिनलिंक भे। वर्देह, १८४ रम याप्रियो जाशाद्धं जिननिक्क कृतिहार करत र । "वर्गन क निर्ण हैं । ने का निरा चारि विपूरे আনিতে পারি ন।। ক্রেষা যাইচিকিছু ঞানে,

তাহারই সঙ্গে, ইছাতাছাকে অগ্নতা। জানিতে হয় গে, সে আপনিই জানিতিছে।
সকল জানের সঙ্গেই লাক্সজান অবশান্তাবী।
প্রথম সিদ্ধান্তটি যে, এইরূপ অবশান্তাবী প্রতীয়মান ইইতেছে,—এমনি অবশান্তাবী
যে, ভাষার বিপরীত পক্ষ প্রিসেন্ট্র অর্থাৎ
তিন্তি কর্ম শুন্য গুলাপেন্তি, এ যে হইভাছে ক্রের গ্রেরন প্রার্থ প্রস্থানাং।

ता के अक्तिमा । तुक्की । ॥५२॥

ত্তি কে দার্থানক সংগ্রে বিরাধেক লৌ
রাম নাজে তাল একটি ভাম দণ্ডার্থান
রাম্যারে তাল রা মেই সকল লাহের উম্মূলন
কর্মান হৈ লাইছি। উপাক্তমানিকার প্রতিন

ক্রের প্রতিশাক বিজ্ঞান্তিক লাহার সম্মূপে
প্রতিশ বিজ্ঞানিকার বারে,
ভাবে বা বাহে দর্জ্যান সিজ্ঞানিকার বারে,
ভাবে বা বাহে দর্জ্যান সিজ্ঞানিকার বারে,
ভাবে বা বাহে দর্জ্যান সিজ্ঞান্তের মন্ম অভীকী

বিশ্বনাধন কর্মান সিজ্ঞান্তের মন্ম অভীকী

#### প্ৰভিপক্ষ নিশ্বাপ 👉

জ্যান-সিদ্ধির জনা এক ১. বে আবাপনে নালানট গে, একটি জ্ঞাতবা বিনেল এবং নত কঁল জ্ঞাতা। উভতে পরস্পার স্থিতিনে উন্ধিত পাকিবে, কিন্তু তংকালো জ্যাতা কে, মাপনাকে আপনি জানিবে, ইয়ার বি-শেষ নে না বাগা-বাগে নানী।

এই প্রতিশ্ব সিলাস্কৃতি গালিক **চিন্তা এবং** গাল্ডাব্জার্মক মন্দ্র গণ্ডারক্সা

জাকিক তিন্তার মানান্দারে, তথু তা
না— প্রচলিত মনোবিজ্ঞানেরত মতাবুদারে,
জান মিদ্ধির পক্ষে ঘাঁহা নিতান্তই নহিছে
নয়, ভাহাই এই প্রতিপক্ষ দিল্লান্ত ভাজ
করিপা বলা হইল। জ্ঞানের একটি আঁশ্যু

<sup>†</sup> আশ্য় শকের মর্থ অভিবাদে এইরলা পাওয়া। যাগ,—আধার, মন, বাসনা। জলাশার (জলের আশান) পালতে যোমন জলমার জলের ভাষার বুঝায়, জ্ঞানের আশা বিহাঞ্ সেইরণ জ্ঞান্য জ্ঞানের আধার বুঝার;

(খেমন তুমি, আমি বা আর ধে কোন রাজি) छाटनुतः धकि विषय (त्यमन् घडे, भडे वा আর হাহা কিছু), এই তুইটি পরস্পরের সন্ধি-कुछे इरेटेंबरे खाराज कम माँए।रेटक-धान। माधात्रेने लाकिपिएमद जन् गरनानिष्ठानी-ু দিগের মতে- জ্বানোগ্রনিত্র মূল একজি ইহাৰ অধিক আর কি ই নকে। এই বলি যেঁ, বিষয়কে (বট পটাড়িকে) জা শ্লিতে হটলে—আশ্রাক (জাপনালে) আ-হার সঙ্গে জান। চাই-ই চাই। প্রতিপাত मिकाछाँ धारादिय व कथात क्रिकांक म्मा कि कि दे दरन ना । इस अं अंभिक गिक स्विधि यनि ज्लाहे द्वारण आभारमत कथा अधी কার করে, ভাগা হইলে ব্যিতে। পাব। পায়, কিন্ধ তাহা দে কৰে না তবে আম দেৱ क्या कृष्टि कविशा श्रीकृति कर्लक् छ। । । । ক্ষে ২; : কেবল গোজা বিলন দিতে চেই। করে; এই এনা ভাহার সহিতে পারিলা । ৩১! ভারণ কিন্তু ভাবে বুঝা সাইতেছে ৫৭, গান মান্তের কথা অধীকাৰ কৰিবায় দিকেই আভ পক্ষ সিদ্ধান্তের বেশী কে। চ। প্রচলিত ধনেল विख्डारनव मलागुनार अहेटान अस्तिनम सर र्तम, प्लाबन्न (Subject) वनर विमय (this ) छ-**७८४ शतकात महिनाटन छेलांदछ इ**हेटन. कथरना वा ज्ञानश विधरत वान निश सा-भगारक जानिया थारक; कथरना वा यान-द्भाटक दोन निया विषयक के १०५१ शाटक ; কি**খনো বা আপ্লীনাকে এবুঃ** বিষয়কে যুগপ্ত - **অর্থাকে কিল্ল মনো**বিজ্ঞানের প্রাকৃতি ক্থা এই বৈ, আশার (অুণাৎ ভরাকা) বিষয়-🥞 সরিধানে উপস্থিত থাকিলেই জ্ঞান সিদ্ধা रहेटें शाद्य-जा'रम जाज्ञान महत्कृत्हे উপস্থিত শাকুক, আরু, আত্মফান-ব্যতিরে-

खिजात राशास कार्न निनीन थारक जाहरि कारनत जानत (Subject), वाहिरत स्वचारन कान विनीन देश जाहरि कारनत विका (Object)। কেই উপস্থিত থাকুক—ভাষাতে কিছুই
আইন্সে যায় না। মনোবিজ্ঞানের অতি,
বিষয়ের সরিধানে আন্নায়ের উপাহিতি যেনন
জ্ঞান-সিনির সক্ষে নিতান্তই এয়োজনীয়—
আন্তেই আন্নান্তি কেন্দ্র প্রাক্তিনির করে। তালেনির স্বান্তি
বাতিবেক্তি আন্যান্ত করে। তালেনির করে। কর্তিক বিদ্যান্তি করে। কর্তিক বিদ্যান্তি বার্তিক বিদ্যান্ত নার্তিক বিদ্যান্ত নার্তিক বিদ্যান্ত নার্তিক বিদ্যান্ত বার্তিক বিদ্যান্ত নার্তিক বিদ্যান্ত বার্তিক বিদ্যান্ত নার্তিক বিদ্যান্ত বার্তিক বিদ্যান্ত বিদ্যান্ত বিদ্যান্ত বিদ্যান্ত বিদ্যান্ত বার্তিক বিদ্যান্ত বিদ্যান বিদ্যান্ত বিদ্যান বিদ্যান্ত বিদ্যান বিদ্যান্ত বিদ্যান বি

পাথ্য দিৰ্ভিত চেদৰ চন্দ্ৰনে - সংগ্ৰহ কৰা চন্দ্ৰিক হ আহিচাৰ কিছিপি সংকলি চন্দ্ৰিক হ সুন্ধুৰ লি শীৰ্মিক

क्षात्रक भारती । अहे । अहे । धार्ष्यितक कियानिक १५३ १० व छित्त्रप িনিস ভার্টিল সরম দি-न हैं। ছাত তাৰণ<del>--ভা</del>হাতে ইহা স্থানি শ্ৰুত भादा याद ल डीविकाश्व र एक क्या । কেননা এবং প্রতিপক্ষ ফিড়ার স্ট্রে যাতা-রন্ধ কবেলা বীতিমাত স্তিল-মানা ভ্রান্তৰ ক্লিটোট মনোলি ছালের চরণ দিকাজে বগভা, ব্যান্ধা পড়িকে হব; বেন্দ্র জন্মান নের প্রথম বিদ্যান্ত হইতে যালোরও করিলে বদি নিতাও আস্তিল প্**থ অবল্**ষন করা গায় তবেই বা লাচেৎ কোন প্র নিয়াই মনোবিজ্ঞানের **চরীয় সিদ্ন**িজ্ঞ रिश्नी७ २७॥ घारे, ज्रुभाव ना। यांन विन ता, आमारिन्द्र धायम प्रिकाछिट्टि মনোবিজ্ঞানের ভিত্তি মূল, তবে প্রকাবভেরে वैना श्री (य. गरमादिकान्यः, क्षेत्रकट्कत्र जक শৈষ; এরপে কটুন্তি গুরোগ ন। করিয়া এই कथा तुनारि नगार भभक त्य, जागारवत क्षथम প্রতিশক্ষ দিদ্ধান্তটিই মনোবিজ্ঞানের ভিত্তি-মূল ; ঘদি, 'দে দিদ্ধান্ত একটি স্বিবাত-গত্ৰ মূর্ত্তিমতী ক্ষমবধানতা ভিন্ন সার কিছুই নহে. लैंगरमः यद्गारिक्छादनत

নিক্ষান্তই অসতো জড়িত হইয়া পড়িয়াছে।
এননিকে প্রচলিত মনোবিজ্ঞান, আই এক
দিকে যথাৰ চিত্ত-জ্ঞান; মনোবিজ্ঞান
নোকিক-চিন্তা স্থানত ভ্রম-সিদ্ধান্তের পক্ষ অবলক্ষন করে, তত্ত্বান বিশুদ্ধ জ্ঞানের প্রকল্
তত্ত্ব সকলের প্রিচয় প্রদান করে; প্রথম
প্রতিপক্ষ সিদ্ধান্তি বিজ্ঞানের ভিত্তি-ভূমি:
ত্রের মধ্যে যে, কিন্তাপ মর্যান্তিক বিলোধ,
তাহা দিতীয় দিল্লান্তে সুটিয়া বাহির হহবে।

নপক্ষ এবং প্রক্তিপক্ষ টুইন্নপ করতেন্তর প্রভেক্তির চিক্লালীসভান

সপক্ষ এবং প্রতিপক্ষা সুইরণ সিক্ষাক্ষর বৈপরী ডা ক্ষান্তরতে নিক্ষেশ কবিতে ইইলো এইরপে দলা সাইতে পারে হৈ, যাক আমক मना भटाई छाति—मशक भिकास एए।ई আমাদিপকে বলে; আর, প্রায় স্থানরা ভাবি 😁 ভাবি, कि हु राजितक शांत भा, खारी में क्षेत्रिशक निष्ठां छ जागानिशतक मंडर बिनशा हिंद्र करिए इ বলে; অৰ্থাৎ স্বাক্ষ নিৰাপ্ত বাল্যানিক চিড্ পরিচাচক, পতিপক্ষ নিছাত্ত কাল্পান্ক ভিন্তার পরিচাহক। জাতার সাক্ষী;— প্রথম েতিপক নিদ্ধান্ত বলিক্ষেতে যে, আমরা আপানাবে 🕕 जानिहा अनीमा दश जानिहा अर्ग b ; न्या वर्तन प्राम्राहत भटन वर वरते, दिस् বাস্ত্রবিদ ভাগা একটি অসভৰ ব্যাপার। সহস্য আম্রা ভাবি যে আমনা আপনাকে না कानिए। पाकि धनामा यह ख्यता ११ - १करे क्रेसा—बायता अविषे अति-রোধা ব্যাপার ভাবি, ⊢বাক্তবিক ফে, ভাবি, जाहा नरहें—रकनेना याहा प्रवित्यांशी छोहात ভাবনা इंटर उहे, भारत न्री – श्वन कारिटिह विहेत्र वक्षे जान कि हा मनदरे अद्याध फिर भाव। किस मलक भिकाल यादी बटन, তাহ আগনা সভ্য-সতাই ভারি-সতা সতাই कानि।

পিথাগোরীয় সাংখ্য নিশ্বান্তের সহিত প্রথম সিদাত্তের সাঁচুশা ন ১৬॥

অভ্যেষ কি-প্রকারে জেয়-রূপে পরিণত হয়—তাহারই নিয়ম ভীথম গিদ্ধান্তে ব্যক্ত হইল। আপনাকে উপলব্ধি করা হউক— ভাষা হইলেই সমস্ত বিষয় (সম্ভবতঃ) উপ-लाक-माना इरंदा -छान-माधा इरेता: जात আননাকে অনুপ্রাক্তি করা হউক্—ভাষা एहेंद्रा १०१० विषश्चे छिवलकि मात्रा इहेंद्र मा - ऋ। न भाषा इहेर्द मा। शिथारगात-(मर अके तम, १६० मिए ए रम, में भारि ংক্রের ভিতি হ'ষ, ইং, বভংগন সিনান্তের षाः विकास विकास । अक्षेत्र सिन खबारनार १,४१ राज्यप्रिटिश कविया जाता शतः एः सध्ति ना अक्षरे शास्त-ना অবেচ্চই পাৰ্চত **তাহা হইলে কোন** বিদু াহতক শক্তে পাব যাই বা কোন কিছে-त्व है । इसर या , देश श्रीका शत भारत सम्ब क्रिका र एकिन सं, जार्जिकाक, जा क्रिका जाए. কাল্, বৰ সূত্ৰে আ, কে বাবে, ভতকাৰ কোনা -৪ এটা এক বলিয়া ওছাত হটটেও গাইন মাণ্ একছ এখন প্রান্ত্রণ, তব্দ প্রেক্টিও कारक कराजरी व्याच-मनकः, दन्न ना, प्राप्तनः कङ अवद्यार अनार -- ष्टान्टकत खाउा-০০ই ৩০ হওয়া চাই, নতুবা **ভাহা**রা 'খ**নেফ** ट्टेंट्ड भार ना : এইक्रभ . **(न्था** शहिट्छट বে, জ্ঞানতে সভাইলে—জ্ঞা**নের** যোগ-সূত্র প্রভাগরণ করিলে—প্রকৃতিতে ঐকান্তিক আ ভিনারতা দিল আন কিছুই থাকে না-একত্ব পাকে না—অনেকছও থাকে না। , ঐকৃতি যদিবা আমাদিগকৈ বস্তু আমিয়া रमञ्चलवानि"এक"वल श्रानिश मिरक शास्त्र ना । लिशात्मादम এই कुषा बलन । इँहाँद মতে জাতাই কেইছ কেইত একত্ব আরোপ ক্রিতে পারে; এক্টেব্র, জাতা অনেকত্ত ত্রকভের আরোপ করে (কেনন অনেকডের

গোড়াতেই একড বহিয়াছে—একড় ভিন্ন
ভাবেকড় ইতিই পারে না); তবে কি ? না
বাহা একও নহে—ইনকও নহেও এইরপ
ভান বিরুদ্ধ ব্যাপার, তাহাতেই জ্ঞাতা একড়
আরোপ করে; আর, পেইরপ করিয়াই
অক্তেয়কে ভেরুর করিয়া তোলে, অর্থ-ধূনা
প্রাদ্ধারীজ্ঞাকে জ্ঞান-রাজ্য করিয়া তোলে।
পিথোগোরীয় মতের বিপরীত অর্থ-বোধ ॥ ১৬॥

পিণাগোরদের এই মতটির অনেকে আশ্চর্য্যরূপ উন্টা অর্থ সুঝিয়া থাকেন ৷ এই ্মত্তর ব্যাখ্যা-কর্তারা সচরাচ**র এই**রূপ ব্রমিয়া আদিতেছেন খে, প্রকৃতি পূর্নাকেই কল্প-সকলের সংখ্যা গন্ধ। করিয়া ঠিক্টাক্ করিয়। রাখিয়াছে; সেই সকল কম্বরণ অন্মাদের সম্মুখে উপস্থিত হয়, তথন আমরা তাহা-ু দিখাকে পুন-গণনা করি মাত্র; এরূপ একটা "অকিঞ্ছিখন কথা একজন উজ-শ্রেণীর ় ত**ত্তভের মুখ হইতে বাহি**র হওয়া যেন সভ্য **নতঃই ুুুুন্ন্ত**ৰে ! কেমক ক্রিয়া বন্ধ-সক্র '**অজ্যেতা হইতে** ফেল্ম**ড়ে উপনীত** হয়--এইটিই এখানকার ৫ া; ইছার কি এই উভন্ন যে, ভেয়তে উপনীত হইবার প্র শ **হইতেই** ভাহারা জেম হইয়া বদিয়া জাছে 💆 তবে, जन कित्रदूभ बैत्रक हम् ने हें। व्याहेवात শময় ব্যাশ্রী-কত্তা এই বলিয়াই নি-চিত্ত থাকুন্ ্লা কেন যে, জল পূর্ব্য হইতেই বয়ফ হইয়া ু**ন্দাছে। তাহা তো আর হ**ইতে পারে না কলের পূর্বতন তরল অবস্থা হইতেই ভাঁহাকে তাঁহার ব্যাখ্যার গোড়া গভন ক-্রিতে ইইবে। এরাণ সত্ত্বেও, পিথাগোরসের बे दे बक्षि निकास (यः (स्वरूप मर्था)-িবল উহার অর্থ উণ্টাইয়া দিয়া উহাকে হান্দ্রস্পান করিয়া দাড় ক্রানো হইয়াছে। লংখ্যা (অর্থাৎ একত্ব বা অনেকত্ব) বস্তু সক-ৰেব্ৰ জ্ঞান-বহিন্ত অবস্থাতেও বস্ত-সক-লের গাতে স্কৃতি থাকে—এ কথা পিথাগোর-

দের কথা নহে। তাহা যদি হইত, তবে বস্ত নৃক্রী শাড়াপ্তভিই জ্ঞেয় হইত; তাহা হইলে "মজেয় কি প্রকারে জ্ঞেয়-রাণে পুরিণত হয়" এরপু একটা প্রকার জ্ঞেয় সিদ্ধান্ত পারিত না। পিথাপোরসের সাংখ্য সিদ্ধান্ত অসম্পূর্ণ হটতে পারে, কিন্তু জিহা প্রাচীন-কালের একটি প্রকাত চিন্তার কল তাহাতে আর সন্দেহ নাই। পিথাপোরসের সিদ্ধান্তের সাঁর মর্মান্ত পভিতের। উহাকে নিতান্তই এর্থ শুনা করিয়া ছাভ্িয়াছেন। প্র

পিথাপোরীয় নির্মেষ বাগ ও হর হিন্তি (১৮ ম -

এই এপন দিকান্তে সে নিরম্ভ বিনাধ্য হলল, ভালা পিথাপোর্নীয় সাংখ্য নিয়নের উচ্চতির ব্যক্তি, এবং স্পাই তর বিদ্যালা। কোন বভ্ততে হালি, এবং স্পাই তর বিদ্যালা। কোন বভ্ততে হালিই আন বলকে, নায় অনেন বে নামিই, কলিয়া জ্বাত গলাক, নায় অনেন বের নামিই, কলিয়া জ্বাত গলাক স্ত্রেই আভ্তাত হিলা, এল বালাগা জ্বাবারি ন হইতে পারে; আর, জ্বাতব্য বিষয়-সমূহের প্রন্তাত্যে এক বলিয়া অব্যারিত হইলে, তথাই ভাহায়। স্যালসের অনেক বলিয়া অব্যারিত হইলে, তথাই ভাহায়। স্যালসের অনেক বলিয়া অব্যারিত হইতে পারে: প্রশ্ব ব্যব্য সমষ্টি অনেকা ক্লিকা এক বলিয়া জ্বাহারিত হইতে পারে।

্ৰুনান দেশীয় ভারজনিধের গছে বর্ষমান প্রতিষ্ঠান পুরুষভাষ্য ১৯॥

মাবাধানকার অন্যান্য সদৃশত যে সিদ্ধান্ত সকল উল্ভেখন করেয়া আগরা জাগান দেশীর্থ তারুজ্ঞদিলের প্রাভাগ দেখিতে পাই। রাজ্যান দিন্দান্তের পূর্বাভাগ দেখিতে পাই। রাজ্যান দংহিতা এই প্রথম সিদ্ধান্তিদিকে ফুল্ট বেন নৃতন বিষয়ে নৃতন্তিলে প্রয়োগ কর্মক না, কিন্তু তাহা বলিয়া জাহা যে, স্বাধিশেই ্ৰিন্তন, তাহা নহে। কাট কিইমান সিদ্ধা-তের কতক কতক আভাস পাইয়াছিলেন, কিন্তু জ্ঞানের—যৌগিক এবং ক্লিটিক— "এই দূই প্রকার একত্বের প্রভেদ দেখাইতে গিয়া তিনি বড়াই গোলে পাড়িয়াছেন। ১

ু কান্টের মতে জ্ঞানের একর গৃইরূপ; বাহ विषय गुः क्रांख जारन्त अक्ष - व्यर्था कारमत विचित्र বিষয়ের প্রত্যাবে ই এক – এবং এক এক ব িয়া ভাষার प्यटमक-७ छोडोता नकटल शिलिमा १ . ज. कर मध्ये -- (ब**ेंग्रिश (बे. वा**द्य-विसय-वर्षिक वक्ष -केलोई करा-हित মতে থৌগিক একছে: বিভ্নাতার নিজের নে, এমত, **্ভার। কাণ্টের মন্তে রা**দ্দিক ও চন। একটা চান্ডার আমরা এক বিশ্বো গ্রহণ কবি; ডিক আমবং নাল মুমে ভাষার মার্থানে একটি বেপা কাউলা ভাইত্রক লভ **ছইটি(আর্দ্র) ক্রেন্ত করি, ও** প্রত্যেক সদ্দর্ভাকে বাং অর্ত্র মুখ্রা বালাবা নির্দেশ করি, তথে ভাষা এক 🗀 বাল প্রিবটি ছুই আছা মুদ্রা হুইয়া পাড়াইবে। এক টকে । ধ**লিভেও<sup>্</sup>্রায়**রাই ভা**হা বলি**— ছই খন্দ্র যুদ্র বান্তেও আমিরাই আহা বলি,—টাকা নিজে একএ ন: তহও নতে; আমাণা যদি ভাহার চুই অভ্যন্তবে প্তশ কাৰিয়া না- **দেখি**- তবেই ভাষা এক,-- লচেব ভাগ ত্র। অভত্রব **টক্ষির যে**, এক**ছ**, তালে টাকার নিছের একর নতে কিন্তু, জামালের জালোপ কথা এক: ; এইরূপ ভাষ-কর্ম্বর বে-একড বাইবিষ্যাতে জুপ্রি দেওয়া হয়, ভাহাই যৌগিক একত্ব; কিন্তু আগার নিজের একত্ব সেরুল থহিব হইকে জুড়িল দেওক: धक्य नत्र-वाद्याविक धक्य नाठ,-वादात दन १ মোলিক নতে-ভাষা ক্রিক। ক্রেফ কান্টের এই কণাব ভিতর একট্র হোলোযোগ মাতে। বহিলিবের C. अक्ष, "राहा कारमतहें अक्षा-कांश कांग कर्न वांधर्वियामा । ब्राह्मा १४ वर्ष । प्रका : दश्य জিলাসা এই বে, আহর্মান সেই বে, একাই, ভাহা কি नाम्बत २६८७ महिका (१९४१)—म ७१६) नार्काण्य অন্তর্ভ হ কান্ট বলেন ভাষা ব্রাইন হটতে স্থিয়। रमध्या संबंधाः राज स्थेशिक। विच वर्षमान खेळ কারের শ্রুতে, বহিকার বলিয়া নাডাই জানের অন্তভ্যার বহিক্তে বুলায়; এখানকার মাত জান-বাংচ্তি, বহি क्षंत्र के कारमन विषयं नार्य-काश वांतरवाधी ध्वतः व्यक्तिर्देशीय व्यविना। (भेरे विश्विधी अदः व्यक्तिर्देश চনীয় অবিদ্যা –যাখানে আমত জান বভিড় ত শ্বহি-শাল্প বলি-ভাষা একেবারেই জানের অবিষয় ; ভাষা यनि खारनव विषय इतेष, ७८१३ वना यारेटन शाक्तिक যে, তালতে, ৰাহির হইতে একার মুড়িয়া দেওলা ইইল ८७(ছ; ।कड वाखविक ८३ (स, छ।न-मश्रूछ ।वसब्रें বিষয়-এক হ সহফুত বিষয়ই বিষয়, স্থাতরাং একছ বিষয়ের অন্তর্ভ ; এই ছিষাবে ভাষা কঢ়িক। এখানে ्यक्री**ট हमन्।** 'का वन्यक्त' (य. क्कारनंत्र व्यक्तियः (ध. क्षेत्रिमा), একার পাহার আন্তম্ভ জ নহে; ্স্রভারাং জাহাতে— দেই अध्यस्य अविषय अविभाटि - अक्ष वाहित इहेट

कारकेत अध्यास दन समिकि चर्थ थूँ जिया निर्धाता चलाधा वालाइ এই স্থানটি তাহাদেরই সল-ভূক্ত। হত্তে এখানকার প্রদর্শিত জ্ঞানের মূল নিয়-ঃ भागि त्यान कार्सीत है इस नाहे। দর্শন পাস্ত্রে উহা ভূমিষ্ট হইতে-না-হইতেই গুল প্রাণে প্রিত হইয়াছিল,—উহার নি-্রম-চিন্ন্স্ আগজ্জ **হইতে-না-হইতেই উঠা** আশ্লাশের কতৰ ভাষা আকৃষ্ণিক বিবে-हनाय र कि हाला अखिया अल्ला ५ वैशा लिया জিল ৷ কিবড়ে (কাট্টেব ড্ৰেমীস **পরবর্তী** ভাত্নিং) উধাকে মুঠাৰ মধ্যে পাইয়াছিলেন, কিন্তু হাবাইল, কেলিলেন: আবাল পাই-লেন-আলার বালাইলেন এইলপ করিয়া ক্রমান্ত্র ভারত আট-দশগানা প্রস্থ পার মর্গায়া পেলা ; ডাহার পর যেই ডিনি উহাকে কার্তে নাগা নিবার জনা প্রাক্তর হুইয়াছেন... জনান উলা জালার হও হইয়া থাসিয়া প্রতি-

कृष्णिमा (त अम्म दश्य-दिश युवर माना : किन्न का कि स्व আ ে বিধিক এক কাচিক শ্ৰু প্ৰত্যে ক্ৰিয়াছেন -ভাষা তিনি জ্ঞানের বিষয় উপলক্ষেই প্রয়োগ করি-গাছেল-জানিয়া উপগঞ্চে নহে; ছুহটি অক্ভাৰ (Coment) - উভায়েই জানের বিসয়-এবং ভিতারে প্রস্পারের সৃষ্টিত যোগ্যক---এই উপলক্ষেই তিনি হৈবীলিক শন্দ প্রয়োগ কাব্যাতে। "অড-পিও মার্ট্র-त्रह रूपन बाह्य" धर्मान कर्निए । ज्ञानतं विवय अवर क्षत्रकार कारनात विषय — बारे प्रवे तिकाशत त्यांगा (देनबाबिक जाराम-"नामानाविकतः।") निक्षिण ६३-टिंहि किर्देश खारगत "नियत" चेशनरकर कान्छ হলেন বেটা গুৰুষের ভাষ জড় পিজের উপর যাহির হউতে চাপাইয়া দেওনা—তাই তাহা বৌগিক শলেষ বাচা। কিন্তু, জ্ঞানের "নিষয়ের" উপরে তে। একত্ব বাহির ছইতে চাপাইয়া দেওয়া হয় না-জানের অবিধ-ব্যুর উপরেই একত চাণাইয়া ভাহাকে বিষয় করিয়া 🕾 रिखाना द्यः । अ क्रमा क्याटनत (काम "निषय" छेपनटक कंक्या तला मञ्जल नरह रा, 'खाशांत ध्वक कृष्टिक नरह কিন্ত বৌশিক। কাডেটর যত কিছু গোলমাল-সমজের স্তাপাত এইখান্টিতে। **কান্টের সংদে বর্ত্তমান প্রস্থ** কারের কোলার কোলার বিরোধ আহা প্রিক্সিরা र्थानमा यनिएल इट्टान अपनक कथी निकार स्पे कल किश्रमी छाशत शान सरहः अथात्म किल विकास नह अकट्ट वास्तिन गरि। तथा रहेन जीहार पर्यक्र A STATE OF THE STA

য়াকেঃ মেলিড তাহার যৌবনের প্রথম उनारगत मगत जामार्टनत अरे निकारखत जन्-রূপ একটি সিদ্ধান্তে ভর করিয়া অনেক ভাবি মহলাপারের পূর্বাভাস উক্টারণ করিয়া-ছिলেন। किञ्च चाञ्च প्रकान वर्गत बिहा জনৎ তাঁহার গ**র্জনের অনুর**প বর্ণন প্রতিকা **ঈশ্র করুন্জগতে**র গে করিতেছে। আন। একট্ৰৰ ফলৰতী হয়। দৰ্শন-শাস্ত্ৰ গুপুৰে কেবল একটা বিশাল মত জখি নছে, ভোহ। প্রমাণ করিতে এই অনীতি বর্ণীয় ঋ্ষি পেমন স্থারিক, এমন আর কেংট্ भट्ड,--এकडू-शर्जिटकदान **अग** श्रीकाब वर-রেন। তেতেগল েবিভু ভেতেলের বিষয়ে— বুৰিতে-প্ৰকিলে প্ৰাণ গোল এমন একটা কথা আজ পর্যান্ত কে উচ্চারণ ক্রিয়াট্রে ? ভাঁছার श्वरमनीय कान वा क नार--विस्माय कोन राक्ति नरंश-- जिनि निष्ण क्षां किति। एवन কিনা সন্দেহ। ভাঁহার এডের এখানে ও-খানে সেখানে এক-একটা শিখর মুর্য্য অগে-ক্ষাও সমুজ্জল-কিন্তু নামগানের সমস্ত বাব-ধান্ এমনি অন্ধকার দাগরে নিমুগ্ন যে, কোন দিক্-দশ্লী শলাকারই সেখানে বাকস্মুভি য না; আর,দেখানকার বায়ু এমনি গে: ভাহাকে শ্ন্য বৈলিলেই হয়—তাহাতে, মতুষা-ব্দির नियान-किया हैलिए भारत मा। (इट्संटनत **বিষয়ে এখানে কোন** কথার উদ্লেখ না কণিয়। চুপ থকিছি ভাল। হেগেলের মতের সহিত বর্ত্তমান সিদ্ধার্কের কত দূর ঐকা বা অনৈকা তাহা **ঠিকু করিয়া ওঠা অসাধ্য ব্যাপা**র। কার্ক্ত হেগেলের ভিজের যতই কেন সত্য থাকুক্ না,--যেমন তুগ জাল দিয়া তাহা হইতে মৃত্,নিঃসারণ করা যায় না, দেইরূপ ্রেগেলে**র অভ অ**ধায়ন-মাত্র করিয়া তাহা **इइेट वर्ष वाहित कता याग्र ना। ८१८ गटन** द গ্ৰন্থ মহন ক্রি আবশ্যক; তত্ত্বিংগণের वह गाउँ गर्ना निक क्टरातन

প্রন্থ বিপর্বায় 'দ্যতিবিক্ত মাত্রায়। হেগেলের ব্যাথানুসারে সভা ব্লাভে যাওয়া
অপেক্ষা—লাপনার বৃদ্ধি-রাম করিয়া সভা
জ্যা করিলে সভা মেনেক শ্রন্ত ম্লো
পাওয়া যাইতে,পারে। হেগেল রেন ভা
ছার প্রবিদী কালের উত্তরানিকার নিগের
যান কিছুও 'দ্র - ম্যাওই —ক্ষুর্তেশ্য ভারা
লাক্ষায় বিষয়-স্বন্ধীয় নতে। শিক্তান ভার জ্ব বিষয়-স্বন্ধীয় নতে। শিক্তান ভার জ্ব বিষয়-স্বন্ধীয় নতে। শিক্তান ভার জ্ব ববং কিদ্বেশ ও বা স্থান কিছু বিষয়েন বিষয়ান ক্ষায় নতে। শিক্তান ভার ভিতর ক্যানের বিষয়েন বিষয়েন ক্রিন জ্বান নিক সম্বন্ধানের পদ্ধিত বেশ ক্রেম্ব জ্বান বিশ্বের ম্যোধান আক্রার ক্রিন্ত ইইলে ব্যাবক্র যে যে গ্রা জ্বান্তান, মে রয়ে উল্লেখ্য একেব্রেই বিল্ল ।

এখন সিন্ধান্ত সমাপ্ত!

五祖祖 1

₹.

## गर्होका ।\*

13

প্রত্যেক মান্তের মঞ্জরই স্বর্গ নিরাল ক্রিনিতেছে।
লাত্যেক মং থ কালাই স্বর্গ। ক্রান্তর প্রতিকাকে জন —
প্রান্ত শিশুতের সঞ্জন লেও লগ ক্ষ্য পাইবে। ক্রিছ মাতৃশ্রান শিশুতের সঞ্জন দুর করি ০ এর ক্রা; জন্তার ওজ
ক্ষ্য পাইবে। বিশ্বান্ত্রীকে মূল্যে পৌত্তির ক্রে প্রতিব জন্তরে স্বর্গ প্রতিব। বিশ্বান্ত্রীকে মূল্যে পৌত্তির ক্রে সের্গ
জন্তরে স্বর্গ স্থা পাইবে। ক্রিনিক ক্রে সো
চন্দ ক্রা; অস্তরে স্বর্গ স্ত্রণ পাইবে। ক্রিনি মানবিকে
ধর্ম প্রিথ আক্রুই ক্রা; জন্তবে স্বর্গ স্থা পাহবে।

আৰু বিদৰ্জনই জীবনেৰ প্ৰত্নত মহন।
(৩)

প্ৰবিদ্ধ ক মহ্ৎ-কাৰ্মোৰ প্ৰস্নাঞ্জ বাহিংৰ নাং, **অন্তরে।** 

্ নির্ত্তী অ্মলতের সহিত ও অবংভ্যার দহিত সংগ্রান করা, ত্যাগ স্থীকার করা, ত্র্বলকে বল, অর্কে ৮৪,

विविध् संख्याच स्टेट्झ मंद्रशिक ७ अस्वातिक ।

আশাদীনকে আশা প্রদান করা, অজ্ঞানাক্ষার সূত্র कविया कामारिनाक विष्ठात क्या -- मिः लार्थजारक भारे नक्न कतिता मछि थाकार सामास्य की वरनद कार्या।

्रिसियं ভारपूर्य कत्रिया ध्यास्य व्यासियन कर् ुकनमा जैसंदेशक आरका विद्युष क्रीयोग्डाय मह ८० ।

অসংখ্য লোকের উপর প্রভূত বিস্তার করা মহছ नरह ; व्यमःशा त्नारकत त्या कताहै महत्।

ধনী কে ি তিনিই ধনী মাহার ঈশার প্রাত্ত সকল ক্ষমতা, প্ৰকৃষ্ণ বৃত্তি গুলি স্কলি প্ৰিত্ত তথ এবস্থায় অবাহত ক্ষেত্ৰীভূত ভাবে কাণ্যে নিষ্ক ।

অতি সামীনা বিশ্বাসত ন্যানের আদেশার্মানে কার্যা কর, ভালা ছইলো প্রধান বিষ্ঠে নাাবের প্র প্ৰিত্যাণ করিয়া কার্যা কাঁয়া অসম্ভব ২ইবে।

जन्द हर्ट जन्ता की सिन्निन मध्यार एवं कराहि ্রভিভাষিত ব্যক্তির কার্য।

প্ৰদি ংপান্ধ্ৰীয়ৰ মাজিষ্ট্ৰে ছণ্ড কৰে। "মণ্ড বংগ । তেওঁ বানকট হ্ৰতে সভা এছণ কৰেন। । ्द्रा दम क्रेबरताव दंशीमक, ठाई। इंडरण रम निकारी মিখ্যাবাদী ।

**∄(>>)** मधूर्य त्य कार्यु निहित्य काश् रे कर्तात्व, १०३० इहेरन एक्स एवं कि कि ति उ 图(图) 计约束 পাইবে!

भक्रदात केंद्रभटनाई मन्त्रा मन्त्रीएम कविएन, छ।ए इंडरण भन्नम ट्यामात महनामी इंडरन

र्व ७ दर्भेशा जात्मका क्रेड भूगाचाग श्रेषाच वर्ष ्रे विद्याद ति । किंद्य मिस्य कि रेप ! ति अङ्गङ क्षितावान अभार्थ आहत्वटन कि एक हम ना\।

्व क्रेश्रदत्र विश्वाम् कट्य दंग कथ्य शिवीश द्वत्र ना।

मक्न मार्ट पूर्व पनि केवाबात उनक् भून विश्वीम था-किल लाग महाने प्रिरीट किरहे हाथ त्नाटक की পুষ্থ হইত নার্গ

कतिएक ना, जनने कृषि जिन्दात्व निक्ष की र्यना कति खना (य १८१ चित्रत सामवे साठित इ: ४ रेग्रींटन कर," दिन ना पूरि के व्यक्ति कत्रिका अधिकाती नह। (59)

এখানে তুমি ঈশবের আঞ্রিত, পরকালেও তাঁহারী শিকটতর আশ্রয়ে তুমি বাস করিবে, তবে ছে শানব, **ৰেন ভীত** হইতেছ ?

( >> )

যাহাব ষতটুকু ঈশ্বৰতা, তাহাৰ তত্টুকু পৌদ্যা। ( 22 )

लिक व्यविक्रम अमब्दे यटका उम के पाइते ; क्रेयन ई গুলেশ এম সন্মু; সন্ধর্ স্লোছিল শিক্ষানতোঃ এগতই भारतहरू शहा

१वनाम (मीहर्याः ८०० नेप्राव व्यवसास्य पावि-চয় পের, তেম্নি এং পুরের'ণ এক **ক্ষুদ্র ব্**রিক্তিও ঠ(ছেল পণ্ডা প্ৰদাশ করে:

েপ্রামণ দ্বাল বস্তুর আদি 's অস্তা।

েল আন্মা ভরতে পালে ৷ বিলি **সকল ব্রাও সকল** 

((40)

সংগ্র হৈতি প্রেম গতই দুড় মইংব, ভতই ভুমি भिष्याति (तक्रियेको हर्यदेव ।

र स्तिका मधुत कि १ ८ धन। गर्वा लिका के बजा के का कि १ वया जीवन । मर्व्वारमका महार कि १ विश्वका मल्लालका ऋगमात्रक कि १ में ४४ खना 6 छ।, भरत्री भकाता।

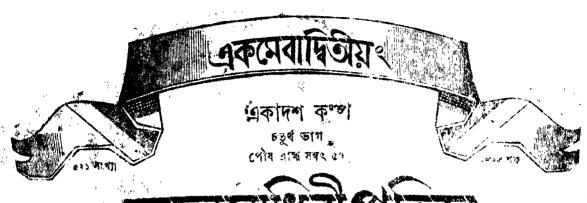
( 3,0 )

খন্যকে কটা দেওয়া খাণেকা আপনি বই ভোগ করা ভাল, শাহ্নৰ ভীকা বুরেইনা।

## বিজ্ঞাপদাৰ

আগামী c পৌৰ ছবিবাৰ ক্ৰমা ৭ ঘটকার প্ৰ वर्ग्यमि विकासाध्यम् छन्। वर्गम् नीवस्त्रिक वाक्रममाञ व्हेरव 🗱

वन्हान वीकान्याय ( जीवार्ड नाथ बर्ट्स्प्राभाषाय সরস্থাতীস্থল ১৮১৮



# २० खताथिनी शावका

वश्चवाणकिसम्बद्धासीक्वान्यत् विश्ववासीसदिदं सर्वसम्जत्। तदव निन्धंश्चानसन्तः । भवं सातकवित्तरः केवसेवाः इतायम् सन्विवापि सर्व्वावियम् अन्यात्रयसम्बद्धित् सन्विवासम्बद्धाः सादभूतः पूर्णस्थातिनस्ति । एकस्य सन्येवापः सन्या

## তাদি ভ্রান্মদমাজ।

্ড অপ্রায়ণ রবিবার ন্যাক্স **দম্ব**ে ওপ ।

भागार्याल डेल्प्सन्

আমা: স্কৃদি আমাদের সমস্ত অবস্থা भर्गाात्नाःना कतिशा स्मेथि, छ।ह। इध्रत्न cनिथिट भाष्टे रैंस, जामता वौध्टातत मसरह ্রপতেরই অধীন। সুর্বাণ্ডলের কোপায় কি সাম্যের রাতিক্রম হয় —পূথিবীতে আমর। ভাহার ফল ভোগ করি: কোন্ দেশেব কোথায় কি বিপ্লব উপস্থিত হয়, তাহার ্তরঞ্জন্দিল্ল আমাদের ক্ত্রু কুটারের ডিভি-সুখ-সোভাগেরও মুল কাঁপাইয়া দেয়। ভাষৰ ক্লতের এক প্রান্তে উপিত হইলে, ক্ষার বার-এক প্রান্ত তাহা জানিতে পারে। कि जान्तर्भा वह दम, बहुत्रल खलतिहाना भनानज्ञ भारत बालान रेकुक बड़िज हरे-द्मा अधिया भागिनात भागितात भागिताला विकात कतिएक हारह ना। यनुशो पाशनात পরাধীনতার আবক চিন্ন জীবারের প্রতি ঘট-नार्डिं अक्रिक - दिश्टल क्ष वर मृत्रम् इ ভাহার কল ভোগ করিতেছে—অথচ আপ-নার পরাধীনতা স্বীকার করিতে তাহার প্রাপ

বিশ্বোগ হয়। এরপ হয় ফেন্স ইহার অবশা কোন নিস্ত কাগে পাদিবে। তার্কিক, সে কারণ-টিতে ক্যাক্ষার বলিয়া এক কথায় উড়াইখা দেন; তিনি বলেন যে, সাধীনতা-ম্পুদ্ধা মনুদ্ধার একটা তুরাকাজা। মাকে,--প্রাণে কথিত জগতে যে ক্তীব পুরাকালে পর্বতেরা , পক্ষ-বি) শস্ত ছিল, 🚞 পরে ইন্ডের নিকিন্তানজে ভাছাদের পক্ষ াবিপ্ৰত হয়। গেল ; জীবীনতা স্পৃথা মন্ত্ৰ (मात्र अमायक मरनाद्राव्हित शक-स्वत्रभ,--विख्वारत्व दरख् जाश हिन्न-मूल रहेश बना-শার্যা হয়। বিজ্ঞান প্রাক্তিকের বলিতেছে যে, সম্পায় জগৎ কঠোর কার্য্য-কারণ-শুলা-লায় ওত-ত্রোভ, – মনুষ্য জগৎছাড়া নতে, मकन वस्तु (यमन शहाधीन-मनुषा । महेना भ বিজ্ঞান যে, অজ্ঞানের দলে श्राधीन । মিশিয়া উচ্চৈঃদরে পরাধীনভার জয়-কীর্ভন कतिरव हैं हो किছू है आमुन्धा नरह, च दक्तना অভ্যানের দল-গোলে চিরকালই প্রসিদ। আশ্ভয়া যাহা-তাহা আল-এক বিষয় ; চারি-দিকের পরাধীনতার মধ্য হইতে স্বাধীনছায় ভের ক্রিয়া বিজ্ঞান কিদ্ধণে আছুরিত এবং विश्वि इहेर् शाहिल हेराहे पाक्रिया।

35 44, 8 514

বিজ্ঞান মনুষ্টোর স্বাধীনতার বিপক্ষে মুখে যাহাই বলুক না কেন, কিন্তু কার্যাতঃ তাহার সপক্ষেই সাক্ষা প্রাদান করিতেছে। স্বাধীন চিন্তাই বিজ্ঞানের প্রাণঃ; বিজ্ঞান ষদি স্থা-ধীনতার বিরুদ্ধে কোন ক্রা বলে, তবে সে তাহার আপনার প্রাণে আখনি আঘাত করে; যাস্তবিক বিজ্ঞান তাছা বলে ন:। বিজ্ঞানের ভিতরকার কথা এই যে, কোন বন্ধুই এমন নছে যে, তাহা একেবারেই পরা-ধীন কিন্তা একোরেই স্থানি,—জগতের मकन वल्र हे भारत्भाराधीन । वाहार विका-दैनর ভিতরকার কথা জানেন না, ভাঁহারা र्हा भरन कतिए भारतन स्म, श्रायती है मूर्यात ज्योन - मूर्या शृथिनीत ज्यीन नरह। কিন্ত বিজ্ঞান আব-এক কথা বলে। বিজ্ঞান ৰলৈ এই থে সুৰ্যেৱে জনতিদূৰে সমস্ত সৌৰ অগতের ভার কেন্দ্র অবস্থিতি করে; দেই ভার-কেন্দ্রের চতুর্দিকে সূর্গের মহৎ জাক-र्शन (यथन शृथिती प्तिराज्य — भृथितीय ক্ষ আকর্ষণেও দেইরপ সুধা যুরিতেছে। মনুষোর গাহঁছা এবং সামাজিক বাাাারে এই পরস্পারাধীনতা আবো জাজ্লতের-রূপে (परिषटकः প्राथशा यात्र। এক দিকে শিশু যেমন বাতার অধীন—আর এক দিকে **মাতা তেগনি শিশুর অধীন; শিশুর এ**বটু প্ৰিছু হইলে**ই মাতার**িপ্রাণ বাহির হইয়া খার। এক দিকে প্রজা যেমন রাজার ছারীন, আর্থ্রক দিকে রাজ। ভেযনি প্রার অধীন; প্রজার তুর্ভিকে রাজার রাজত্ব ছুরির। যায়। পুনকল বস্ত পরস্পারা-मीन कथात वर्ष है खहै त्य, श्राटाक वस कि-जार्म अधिन - जात अक जर्रन भन्न-सीमा ताका मन्ताः रच क्रमात सरीन नरह-व्याज मन्द्राभाग ताचात व्योग मरहः एव चःरम श्रामात चडीन - रम चःरम बाबा शबात स्वीन नरह— एउडाः म पश्रम

রাজা সাধীন ; তেমনি আবার, যে সংক্ষে রাজা প্রজার অধীন--দে অংশে প্রজা রাজার অধীন নহে – স্মুত্রাং সে অংশে প্রজা স্থা-धीन। शृथिवी य **षर्म जात-म**म्छ तोत জগতের অধীন, সেই অংশেই পৃথিবী পরা-দীন; কিন্তু যে অংশে **আর সমস্ত সৌ**র জগৎ পৃথিবীয় অধীন—মে অংশে পৃথিবীর ভাল মন্দের উপর সমস্ত সের জগতের ভাল गम निर्ভत करत-एम खःएम शृथिती श्वीन। भक्न रखहै এकांश्रम श्राधीन, আর এক অংশে পরাধীন। সাধীনতা সকল বস্তরই অন্তরঙ্গ, পরাধীনতা সকল বস্তরই কিন্তু আর আর বস্তুর সহিত মনুদার প্রভেদ এই যে, ম**নু**দাের আ**ত্মাতে** त्महे योगीन अखत्र श्रा**रमणे क्लानाकृत** পরিন্দ্র ভাব বারণ করিয়াছে। **মনুষ্য আপ**-নার পারীনভার মর্প্রেস আগনি আমাদন করিয়া অখনত হইয়াছে—প্রাণ গেলেও আর দে ভাছাকে ছাড়িতে পারে না; **সমু**ষা আপনার সাধীনতাকে জ্ঞানের মুষ্টি-মধ্যে পাইয়াছে—সর্বসংহারী মৃত্যুও সে মৃ**ত্তি হইতে** সে অমূল্য রভূটিকে কাড়িয়া লইতে পারে ना। मनुषा नाज महैचा मुखनाय जानामें মন্ত্রক **জ**ড়িত হইয়াও আপনার পরাধীনতা স্বীকা**র করিতে কেন-**যে এত পরা**লুখ, তাহা** এখন স্পা**ন্ত বৃদ্ধিতে পারা সাইতেচে। মনুষ্য** আপনার অভান্তরে এযনি একটি অপূর্বজিকু দেখিতে পায় যে, ভাহার প্রতি দৃষ্টি কৰিছে: প্রাণাজ্যে নামুখে হইতে এ কথা বাহির হইতে পারে না যে, "আমি পরাধীন।" দেই চকুটি মনুদ্রের অন্তরাজা। মনুযোর চি দিকে পর্থীনতার ঝ্ঞাবাত তুম্ল কোলা रत विद्या गारे जिल्लाक के हा व শান্তি নিকেতনে স্বাধীন্তা ক্রিয়ন্তর করিছ **एटि—त स्वा किल्ला मिन्ना स्टेना** ALE I

জগতের প্রত্যেক বস্তুই একাংশে স্বাধীন আম এক অংশে পরাধীন ; মনুযাও সেইরূপ এकार्टन सारीन-जात এक जर्दन श्वासीनः, কিন্তু মনুষোর সাধীনতা জ্ঞান-জ্যোতিতে প্রদীপ্ত, আর আর-বস্তুর সাধীনত। অজ্ঞান-जयकारत প্रकृषा ् कानगन् गमुषा १४१ অজ্ঞানাত্ম শাহ্য একৃতি উত্তে পরস্থা পীন; মনুসা একাংশে প্রাকৃতির অধীন, আর-এক অংশে প্রকৃতিকে আপনার দংগীনে চালনা করিতৈছে, স্ইন্থই উভয়ের গর পারা-্রাই প্রস্পান্ধীনতার মূল জয়ে য়ণ করিলে দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, গুদ বুদ্ধ মুক্ত সরূপ পর্মাগাই সর্কতোভাবে স্বাধীন পুরুষ—মনুষা যে সংশে ভাহার সহিত যোগযুক্ত সেই অংশে স্বাধীন, এবং যে অংশে ভাঁহা ছইতে বিজিল্প সেই অংশে পরাধীন। জগতের সুসস্ত স্থীনত ওদ বৃদ্ধ মুক্ত ভূমা মহান্ প্রক্ষের মঙ্গল-জ্যোতির উচ্ছ্যাস ; এবং সমস্ত পরাধীনতা সেই মঙ্গল জোতির ছায়া। কর্মচারী থেগন কর্ম-ক্ষেত্রে পরাবীন এবং বাটিতে আসিয়া সাধীন, गयुरा (महेक्रल निश्मात-त्कर्व भवादीन-**ঈখরের অমৃত নিকেতনে স্বা**রীন। ত্রন্ধা-নিষ্ঠ, জ্বাদ্ধ পুৰন্ধী জগৎকে, পরের, রাজ্য মুনে করেন না-ভাই আপনাকে পরাধীন খনে করেন না। অক্ষাৎ, তাঁহার পিতার রাজ্য বজুর রাজ্য—তাই ভাঁহার আপনার, রাজ্য; তিনি কগকে স্বাধীন ভূমের বিচরণ করেন স্বাধীনভাবে সকল বন্ধীর মিগুড় তত্ত্ব অনুষ্ণে করেন—পাপের আর্ত্ত ভিন্ন আর কোষাও ভাছার বারশ নাই ; বালক নেমন পিতাকে সাধীনু-ভাবে দকল বন্তরই তত্ত্ব প্রিজ্ঞান। করে, মনুষ্য দেইরূপ করিয়। ঈশ-বের নিকট হইতে প্রকৃতির সৃষ্ট্র ডম্ব একে একে অবগত হয়। ঈশ্বরের ভক্ত সম্ভানের निक्षे नकन अगरहे जालनात । **198** (4)

জ্ঞান বলিতে পাৰে যে, সুধ্য তো ভোমা-হ**ইতে** লক্ষ যোজন দূরে অব্যথিতি করি-তেছে, দে আবার ভোষার গাপনার হইল কিরূপে হ শুদ্ধ কেবল ঘটনা জ্বেন দৈব-গতিকে সে তোমার চক্র উপকারে আ-দিতেতে –এ ভিহ আর কিছুট নচে 🖰 ইচার প্রভুত্তেরে ছাম্বা বলি যে, আ চান্ধের ভাপে ক্ষিক ব্যবধানকে, বিজনে, তুমি খাদ সভা माछ हि । अलक्ष्मभीक्ष अतिमान यदन कहा, ५८४ ত্মি এখনও প্রকৃত বিজ্ঞানের ভানেত পশ্চাতে পড়িয়া আছে: তোমার মধন চলা फू हिंदर ७थन स्लाहे दर्माथट इ. १११ टेंटर ८४, সমস্ত ব্যাণ্ডের কেছ কাছারে। নর নহে। শুক্ষবিজ্ঞান্ যন্ত্ৰ-ভিন্ন আৰ কিমুট্ৰ গেখিতে कारन जा-जाहे स्म शता १५ कतियाहि অস্থির; তাহার ফ্রন্তীভূত চন্দেলত দ্রুর মধুর জ্যোৎক্ষা পদার্থ-বিশেষের কম্পন বই আন কিছুই নহে; মনুসোর প্রাণের কথা কর্জনলী-যন্ত্রের উচ্ছবুদ বই আর কিছুই নহে। কিন্তু বাঁহাদের চক্ষু আছে ভাঁহায়। দেখিতে পা'ন যে, সূর্ধা চন্দ্র তারকা ওয়ধি বনস্পতি সকলে নিলিয়া এক অনুপম শোভা উল্গীরণ করি-তেছে; যাঁহাদের কর্ণ আছে ভাঁহারা, গুনিতে পান যে, সূৰ্য্য নকান্ত্ৰাপে উদিত হইয়া উচ্চা-দিগকে বলিভেছে"**আনন্দি**ত হও:"চ<u>ল্লে মধুময়</u> -জ্যোৎস্নায় ভাঁহাদিগকে বলিভেছে আনন্দিত ছ্ও: "মুক্ত দমীরণ মৃত্-হিলোলে তাঁহাদিগকে বলিতেতে "আনন্দিত হও"; এবং ওষধি বনস্পতি গ্রীবা নত করিয়। মর্ম্মর ধ্বনিতে **८मरे कथा**बरें श्नः श्राः अपूरभाषन कति-তেছে। এয় সেত্রিধরণ এবাং লোকানাং অ্সুস্তেদার—লোক ভঙ্গ নিবারণাথে পরমাত্মা **'मिक्-अक्तल करि**शा समस्य धावन कविर्द्धास्त्र, जारे भक्र**ार्ट** मक्रान्स स्वन-ध्रामार् गय-স্বরে কণ্ঠ মিলাইয়া ঘোগ দিতেছে । সমস্ত মঙ্গল সমাচার পরম পিতারই প্রেরণা। কিন্তু

যে ভাগানান বাক্তি সাক্ষাৎ সেই প্রাণদাতার অয়ত্তাশাদ-বাণী প্রাণের অভ্যন্তরে ভিনিতে পা'ন, তিনি সংসার-সমুক্ত নির্মেত তরিয়া या'न। जिनि मर्जात्नाटक शांकिश्रीहे लक्ष-লোকে বাস করেন। তিনি বলে। "এগ ख**मार्**लाकः" **এই खमार्**लाकः "७५।९ है। ५७० **নেতু**ং তীত্ত।" সংগারের সেন্তু **উ**ট্টার্ন रुष्टेशा "खकः मन् खनत्सा उव उ व खक रा সে অৰক্ষ হয় "বিদ্ধঃ সন্ অবিদ্যো লক্ষতি" বিদ্ধ যে-বৈ অবিদ্ধ হয়, "উপতাৰ্গা সন - **অনুপতাপী ভ্**ৰতি'' **উ**পতাপী গে—ংস অনু-পাতাপী হয়; ৈতিয়াং বা এতং সেবু, ভী-ত্বাহিপি নক্তং হাছবেং!ভিনিপাদ্যতে" এই নেতু উত্তার্ণ হইন্ন রাজি দিবা হইয়া উঠে, প্রিকৃৎ বিভাতোহোষ ত্রক্ষণোকঃ" এই এক-নৌক একবার এক-থে জ্যোতিতে উদ্বাদিত-িচরকাল্ট দেই জ্যোতিতে জ্যোতিয়ান্ 🖰 এ**ন্দর্শক পর্বিশালার জোতিশা**র বা**জ্য**; তাহাই মহুষ্যের স্থাণীনতার মূল আবাদ হান। সুরী থেগন তাছার কিরণ সকলের निनशकान; अव्यक्तिक स्मिट्सल भगल জগতের সমস্ত \ স্বাধীনতার নিলয়ভান--मुक्तित निष्कं निर्क् नि

হে পরমান্ত্রন। ত্রি আমাদের পিতা, ত্রি আমাদের বন্ধা, তাই তোমার নিকাল আমারা প্রার্থনা করিবেছি তুমি আমাদির প্রদান করিবেছি তুমি আমাদের পাপ তাপ হইতে মুক্ত করে, ও তোমার প্রদান মুবছরি আমাদের আআতে প্রকাশিত করে। স্থেপ তুঃথে সকল সমহেই তুমি আমাদের পিতা, সকল সমরেই তুমি আমাদের বন্ধা, তুমি আমাদের নিকটে আকিয়া আমাদের মুমুর্ আত্মাতে প্রাণদান কর ; তোমাকে নিকায় হিলামোহ-শ্যায় ব্রশ্ন হর্না পতি। তুমি দর্শন দান করিয়া আমাদের করে। ও এক্ষেবাছিতীয়া

## দৰ্শন-সংহিত জান-তজ্ব। শ্ৰীন্ত ॥২॥

#### फ्लाटनत विधया।

আমরা সচ্রাচর যাহাকে বলি জ্ঞানের বিষয়, জ্ঞানের বিষয় তাহা দ্বাড়া আরে কিছু অধিক। আশায়-সহকৃত বিষয়ই বিষয় প্রত্যক্ষেব কিছা ভাবনার বিষয় একদিকে— এবং জ্ঞাতা আপনি একদিকে—এই দুয়ের স্নাঠিন বিষয়; ইহার কমে বিষয় হইতে পারেন।।

#### ागान।

জ্ঞানের মল নিংম য'হা পুর্বি সিদ্ধান্তে অটল-এণে সংখাশত হইয়াছে, তাহা এই যে হে-কোন বস্ত হউক না কেন ভাছাকে অানিতে হইলে তাহার নঙ্গে আপনাকে না জানিলেই নয়। ইছা মথন দিয়ে যে, সন্মু-খস্তি বিষয়কে এবং আপনাকে এক-সঙ্গে নং জানিলে সন্মুখন্ডিত বিষয়কে জানা হইতে পারে না—তখন তাহাতেই প্রতিপন্ন হইতেতে ষে:প্রতাক্ষের কিন্দা চিন্তার বিষয় একদিকে— এবং ভ্রাভা আপনি একদিকে; এই চুয়ের मगष्टिहे छ्वाटनत मग्ज दिवश—छ्वाटनत छ-কৃত বিষয়; অথবা, আমহা ধাহা কিছু জানি তাহাই আশয়-সহকৃত বিষয়; তাহাই শ্ৰেডা-কের কিবা ভাবনার বিষয় এবং তাহার সংগ্র আর একটি বস্ত — সেটি ভাগে আপনি। অত এব ভয়ত। আপনি বিষয় মাত্রেরই 🐠টি সমগ্র এবং সার-ভূত অংশ।

অপিচ; মনে কর যেন—একটি প্রত্য-ক্ষের কিন্তা ভাবনার বিষয় উপলব্ধি করী হইতেছে, কিন্তু ভাহার সঙ্গে আপুনাকে উপ্লব্ধি করা ইতিহেছে না। এর এটনা প্রাথম বিদ্যান্তের বিষোধী; কেন্না প্রথম

े जार्था अस्ति करिया - सम्प्रा विषय । स्टब्स् विष्टार अस्ति विकास करिया । अस्ति करिया परि व्याप परि । দিলান্ত বলে এই বে, আই জ্ঞান দকল জ্ঞানেরই সঙ্গের সঙ্গী, ও ভাহাকে ছাড়িয়া কোন জ্ঞানই সিদ্ধ হইতে পারে না। কিন্তু প্রথম শিদ্ধান্ত অটল-রূপে সংস্থাপিত হই হাছে—কুলাপি ভাহার জন্যথা হইতে পাবে না; অত এব জ্ঞানের জ্ঞান-সংগ্রিধানে গাহা যপন উপস্থিত হয়—ক্ষানা জ্ঞান-সংগ্রিধানে গাহা যপন উপস্থিত হয়—ক্ষানা জ্ঞান-সংগ্রিধানে নারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞানা-মারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞানা-মারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞানা-মারাও ভাহার অন্তর্ভুত; আর, জ্ঞানা-মারাও ভাহার বিষয়—ভিনি-সাহা-বিছু-জ্ঞানিতেত্বেশ-ভাহার-সংস্ক-ভিনি আপনি—
ভ্রতিম আর কিছুই ইইতে পাবে না।

প্রিনি ধার। কিছু চানিং চচ্চেন-তাহার সঙ্গে-চিনি-ভাগোনা এই সাত্তি শসকে সমাস্বদ্ধ

ক্সা হুইল কেন্দ্ৰ ৮ : ৮

मञ्जदा (१४: नतिथा। न ।

সর্ব্ধ সাবারণতঃ জ্ঞান-মানেরই বিষণ হি,
তাহা প্রপত্ত করিয়া নিংদিশ করিবার জন্য

ক্র সাতটি শক্ষক স্থাস দূরে গাঁপিয়া গক
করিয়া দেওয়া হইল। উহারা যুদ্ধ পুণক্
পুদক্ বিনাস্ত হইত, তবে, মর্ব-গুদ্ধ প্রাতপাদন করিতেছে, তাহা পাঠকের তেনন
বোধ-স্থান্ড হইত না। আমাদের কণা
কাহারো মন্যুনীত হউক বা না হউক্ কিন্তু
কৈহ যে, তাহার অর্থ এক ব্রিতে আর বাধবন—সে পথ আমরা রাখি নাই।

विषयं विगाल कारनज ममध विषयं वृक्तिक रहेरव ॥ २ व

বিষয় বলিতে এখানে জ্ঞানের এককালীন সমগ্র বিষয় বুঝিতে হইবে; যেকোন মুহুর্তে ঘাহাকিছু আমাদের জ্ঞান-সন্ধিধানে উপস্থিত হয়, তাহার আপাদ মস্তক
সমস্তটাই বিষয়-শব্দের বাচ্য। আমরা,
উপস্থিত বিষয়ের বিশেষ কোন-একটি অংশের প্রতি, অপেকাফ্বত অধিক মালা মনঃ
সমপ্রপ্ত বিষয়ের যে অথনটি বাহ্য-বন্ধ, সেই

অংশটিতে আম্বা বেশী মাত্রা মনঃসমপ্র কিন্তু ভাহা বলিয়া সেই করিও বটে। অংশটিই সে সমতা বিষয়; তাহা নহে: ভাহাকে বিষয় না বলিয়া বিষ্ণাংশ বলাই উচিত। বিষয়ের যে অংশটি থাহা বস্তু, দার্শনিক ভাষায় ভাষা পরাত্ Objective আংশ, বা পরচ্যে অংশ, বলিয়া খানাহত হুইতে পাবে; তিঙিল তাহার আৰু একটি खर्म-श्रांत क्रिंग भागान्त प्राम्त श्रांत অক্লই সন্মোনিবেশ তবি কিন্তু ধাহাকে ছাড়িথা त्वान क्वानचे भिन्न हम मा- जानीनक फावण ভাষা প্ৰভাৰ উট্টোল্টাড় কংশ বা এটাচ অংশ সমিয়া বিজেষ্ট হটকে পালে; প্রভাক **जर्म** এবং शतांक् कर्म, जर्म याहा अवस् वर्था—हालोहर व्याल त्यर भवारा जान এই ছয়ের মনষ্টিই সম্প্র বিজ্ঞা। ১ কথনা

\* প্ৰত্যক অৰ্থাৎ ইংৰান্ধীতে মাহাকে বাসে সিচ্চিprotive---প্ৰস্তু Objective (

"লে প্রাগ্যশিলো বালা প্রভাগ্রোধ বিধাজিলাঃ। কুন্ধতে কম ভোগায় কথা কর্ত্তুপ্রভাগতে।"

were in all .

প্রাকলনী কোষণ কাহ্য-দ্বনী) প্রত্যক্ রোধ শুন্য (অগ্রাথ অন্তদ্ধি শুন্য) বালকের। ভোগের-তনাই কন্ম করে এবং কংখের সন্যাই ,ভাগ করে।

প্রাক্শন হলতে যেমন প্রাচী শন্দ উৎপর হইরাছে.
প্রত্যক্ শন্দ হইতে সেইরগ প্রতিটি শন্দ উৎপর
হইরাছে। প্রতাচী শন্দের ছালত অর্থ পশ্চিম দিকু।
উদীরমান হর্ণাকে সন্মুথ করিয়া দাঁড়াইবে পশ্চাণ নিক্
এবং পশ্চিম দিক্ একই হইয়া দাঁড়ায়: পশ্চাণ শন্দ এবং পশ্চিম শন্দ উভয়ের মূল-ধারু একই। প্রতীচা শন্দের পোড়ার অর্থ—প্রতিকূলবত্তী; পশ্চিম চিক্ প্রাদিকের প্রতিকূলবত্তী তাই প্রতীচা। প্রতান শন্দের মৌলিক অর্থ এই:- প্রতীকাণ প্রতান প্রতান ভাঞ্চি (গমন করে) ইনি প্রত্যক্। এখন প্রতান্ শন্দের দার্শনিক অর্থ কি—ভাহা শন্তিই ব্রিতে পান্দ বাইতেছে;—উপনিবদে আছে—

ন, "পরাঞ্ছি থানি বাতৃণৎ স্বয়স্ত্তমাৎ পর্যান্ত, প্রাতি নাজরাত্মন্। কণ্ডিৎ ধীরঃ প্রত্যগাস্থানমৈক্ষৎ আর্ভ চক্রমৃতত্ব মিছন্॥" ই্টার স্বর্থ

যাহ। একই কথা সচরাচর যাহাকে আমর। বিষয় বলি তাহা বিষয়ের একাংশ-ভিম আছু কিছুই নহে, যদিচ সেই অংশটির প্রতি षान्त्रा (तभी माळा मनः ममर्थन कति। छा-শয়-সহকৃত বিষয়ই প্রকৃত পক্ষে বিষয়, কেন না তাহাই সর্বাঙ্গীন বিষয়। সচরা-চর মাহাকে আমরা বিষয় বলি, ভাহাকে বিষয় না বিলয়া বিষয়ের পরাচ্য অংশ বলিনেই ঠিক হয়, আর, সচরাচর যাহাকে আমরা আশয়-মাত্র—অর্থাৎ শুদ্ধ কেবল জ্বানের আধার-মাত্র—বলি, তাহাকে বিষয়েল প্রভীচ্য **অংশ বলিলেই ঠিক্ হয়।** কিন্তু সচরাচর আশের এবং বিষয়ের মধ্যে যেরূপ জ্ঞাতৃ-জেয়ের ঐকাত্তিক প্রতিদ্বন্দিতা ঘটানো হইয়া পাকে, ভাছাতে, বিসানের মধ্য হটতে একেবারেই বাদ পড়িয়া যাল: মুভরাং ওরূপ ঐকান্তিক প্রতিঘদ্দিতা ভ্রমা-

ষ্মধু পর্মাঝা শৃহ্য ইক্রিলসক একে ক্লিকিব কবিলা দিরাছেন, ভাই কাহাবা প্রাক্ষি সিচ্চন্দে world) দুশন করে। কোন কোনে ধীব সাম্ভ্র ইচ্ছা করিছা মাহির হইতে চফু ফিরাইরা প্রভাক্ আছোতক দেবিলা-ছেন।

বালে বিশ্ব হুইছে মনশ্চক ভিরাইছা আলোকে দেভিতে হয়, এজন্য দিপ্যাচ্চলে কল মাজতে প্রত ্দ্ কতিবিশ্য সভ্যবাসী, আত্মা ভাহার 🚁 চকুনবারী 🐇 তাই প্রতাক্। প্রতাক্ আত্মা-কিনা জানেব প্রত শায়-স্বরূপ (back-ground) আঞা; Subject কিন্দ জ্ঞানের ভিত্তিমূল স্বরূপ আছে।; গভবের নশাথ একই। পরাক শক প্রভাক শদের পরিবলী পদ कारकरे छारात रेखाओं अन्तिनक, (Micetter, का इन আর কিছুই হইতে পারে না। প্রভাক শল্পের আর একরণ মর্থ করা ধাইতে পারে, -প্রতিবেশী বলিতে निक्छेडम अधिवानी वृकाय; अञाक् विनदेश क्यारित्र निकरेडच निवन नृकित्व अष्टाहात उपिति-उक्त मर्यार्थन : কোন ব্যত্যর হয় নান এই কারণে Subjective ্যানা ইহার অত্বাদ-প্রত্যক্ অংশ অণধা প্রতীচা অংশ, Objective part ইহার অক্তাদ পরাক অংশ व्यथवा नदांठा व्यथ्म, अहेजन हरें(नरे ठिक् इत्र)

ত্মক এবং স্ববিরোধী, আর, তাহা তত্ত্বজ্ঞান-প্রথন বিষম একটি বিদ্য।

জানের ভিত্তিমূ**লের প্রতি প্রনিধান-স্তরে জানের** বিষয় কিরপ **নৃতন স্মাকার ধারণ করে ॥৩॥** 

জ্ঞানের তিত্তিমুলের অবধারণ যাহা প্রথম
সিদ্ধান্তে হইবা চুকিয়াছে তাহাতে করিরা
বিষয়ের অর্থ জনেকটা পরিবর্ত্তিত ফইবারই
কথা। দিতীয় সিদ্ধান্তে সেই পরিবর্ত্তনটি
স্প্রীক্ষরে প্রকটিত স্ইয়াছে। সচরাচর,
বিশ্ব বলিতে আমন। বিষয়ের একাংশ
মাত্র বুকিগাই জান্ত থাকি। শুদ্ধ কেবল
বাহা জানাদের সন্মুখে উপস্থিত হয়, তাহাতেই আমরা বিশ্ব বলিত ভাহা সংস্থা
আনশং আপনার। যে জড়িত আছি তাহা
আনশং আপনার। যে জড়িত আছি তাহা
আনশং আপনার। যে জড়িত আছি তাহা
কানবা দেখি না। এনবাবংকাল বিষয়
বলিতে আমরা আইনবাতিরক্ত বিষয়ই
বুরিষা আসিতেছি; এপন-অব্ধি বিষয়
বলিতে আমনা আর সহয়ত বিষয় বুরিব।

প্রচ্ছিত বেনা এবং দার্শনিক গণনা ॥৪॥

জ্ঞানের ভিত্তিমুলের বিবেদনা গতিকে বিয-য়ের কিরপে কর্থ-পরিবত্তন ঘটে, তাহা স্পষ্ট রূপে ব্যুতে হইলে, বিষয় এবং আশহের প্রচলিত গণনা-পদ্ধতি শ্বার, তাহাদের দার্শানক গণনা-পদ্ধতি, দুয়ের মধ্যে প্রভেদ কিরপে তাহা দেখা আবশাক। রভান্তটি এই যে, আমরা গাপনাকে আনিতেছি এবং চতুদিক্স বিষয় সমূহ জালিতেছি; প্রচলিত গণনা-শ্বাতি এই যে, যে-প্রশান লাতে আমরা এক বস্তুকে আর আরু বস্তু হইতে ভিন্ন ব্লিয়া গণনা করি, সেই প্রার্থন বস্তু হইতে ভিন্ন বলিয়া গণনাক্রি। দার্শন

<sup>\*</sup> শাসনাচার্য্য ভাষার বেণান্ত ভাষোর উপক্রমণিকাল স্পষ্টই বলিয়াছেল যে, "ন ভাষণক একাছেব।
বিষয়ং" বিষয়ী একাছেবি হৈ বিষয়ে নহে, ভাষা নহে।
"অসং প্রতাম বিষয়বাদ্য বৈষয়ে বিষয়।

নিক গণনা-প্রতি কিন্তু - আর-এক রূপ। भरत कंद्र जिनिष्टि वहिबंख, म्, ९, त, এই তিনটি তসন্ত অকার দারা সংভিত্ত হুইল, এবং জ্ঞাতা আপনি "অ" এই অক্ষর দার। সংজ্ঞিত इप्टेन । शहलिंड शक्कांड खनुमादत गर्गना कतिएड म्मेल, ने जिन्ही विश्वक्रिंक धरक একে গণনা করিয়া তাহার পর আপনাকে ুগণনা করিলেই চলিতে পা**রে** ; ভাহা হইলে এইরূপ দাঁড়ায় যে, প্রথম, স ; ছিড়াল ৩; छलीए, त ; एक्षं. ख । किञ्च मार्गानक भगना-নন্ধতি আর এক প্রকার–৩:ঘা এই:— প্রথম, ম্+ অ'; ডিতীয়, e+ জ; চুতীয়, র + অ; সংক্ষেপে.—প্রথম, ম; দ্বিতীয় ক ভূজীয়, র ; অর্থাৎ (১) অকার-সহকৃত (কিনা আত্ম-নহক্তা স. (০) অকার-সহকৃত ৩. (৩) ্ষক্র-সহক্ষেত্র। গণনা-কংলে বে মৃত্ত্রে আমলা "দ্" এই বহুটির প্রতি অঙ্গুলি নি-**र्फिश कवि (मर्टे म्ड्र**क्ट्रि छोट्। 'म'' स्ट्रीया দাড়ায়— মর্থাৎ অকার সহক্রত (কি না আত্তা-স্হত্ত হৈ ইয়া দাঁলায়; ভাছার পর যখন সে বস্তুটিকে ইণ্ড্য়া "ৎ" এই বস্তুটির প্রতি অস্থুলিনিদিশে করি তখন ভাগা "ত" ইইয়া দাঁড়ায়; এইব্লুপ, যে কোন মহুতের যে কোন আন হুউকু না কেন-আত্ম-সহক্ষ গাহা-**र छेक्-ध्रक्ति-किंदू ८म हे ब्लाटन**ब ८म हे स्टूट्टंब भम अ विषय । यिन, म्, ९, त्र, ८ रिनिष्टि বস্তুকে অমিরা একই মুহুতে যুগৰৎ গ্রহণ করি, তাহা হইলে দার্শনিক গণনায় — সু + ৎ + त्+ थ, এक कथायु— म, अहेक्की माज् हें(व। 'शांगि-वाहक औ (स्मुख, छेंश अकल भगनातर नोख बाजा, उरा विषय-मारजतरे ুজুংশ, এবং জ্ঞান-মাত্রেরই ভিত্তি-মূল 🗞

ৰিতীৰ প্ৰতিপক দিৰাত ileil

দিতীয় প্রতিপক্ষ নিদান্ত লৌকিক চি-ভাৰ-অনন্ধানীতা হইতে প্রসূতি, এবং তাহার প্রাত্রনিদ্ধ চার--দিতায় সিদ্ধান্তের যাথার্থ্য জাজ্জন্য-রূপে পরিকাট্ট হট্যা উটে; ভাষা এইট্র--

প্ৰেণিপুক্ষ গিদ্ধান্ত গণা

স্চর্চির শহা বিষয় বলিয়া জন্ধানিত হুইয়া থাকে তাহাই সম্ভা বিষয় , বিষণের বিষয়ত শুদ্ধ কেবল উহাতেই প্রাপ্ত। প্রভাকের বা চিন্তার বিষয়ত ভোজাত হুই তে বিচুতে হুইলেও, ভাহার বিষয়তে কোজ দেশে প্রেড মা । আশ্যান্ড্ডে ব্যয়ত বিষয়।

বিষয়ের এনটি ছাল্পান প্রতি চ রু মুদিছা তার্রি হাল-একটি ছাল্পান প্রহার সর্বাণশা মনে করা, লৌকিক চিন্তাহ ত্নবধানতা দিন আর কিছুই নহে; দিল্লার ঘিদ্যান্ত এই লৌকিক জ্মতির সংশোধন কলা ছইল; প্রথম প্রতিপক্ষ দিদ্যান্তের জনববানতা—জ্যানের ভিত্তি-মূলের প্রতি; দিল্লায় হাতির জাববানতা—জ্যানের ভিত্তি-মূলের প্রতি; দিল্লায় ব্যতি গ্রাথম প্রতিপক্ষ বিদ্যান্তা কর্মান্তা হিল্লায় ব্যতিরেক্তে—আজ্মতান নিতি মলের জ্যাপ্রয় ব্যতিরেক্তে—আজ্মতান বন ভালের জ্যাপ্রয় ব্যতিরেক্তে—আজ্মত্তান বন ভালের ভ্রতি সাজ্মতার ভ্রতি পারে।
দিল্লিক স্থান ক্রান্তার ভ্রম এইটি যে, জ্যান ব্যত্মান বন ভালের ভ্রমিক স্থানের প্রতির ক্রমের প্রতিষ্ঠান ক্রমের স্থানির হিল্লায় ব্যতিরের ক্রমের প্রতিষ্ঠান ক্রমের স্থানির হিল্লায় ব্যতির ক্রমের প্রতিষ্ঠান ক্রমের স্থানের হিল্লায় ব্যতির ক্রমের স্থানির ব্যয়ত্ব সিন্তা হইতে পারে।
বিষয়ের প্রতিষ্ঠান ক্রমের সিন্তা হইতে পারে।
বিষয়ের বিষয়ত্ব সিন্তা হইতে পারে।
বিষয়ের বিষয়ত্ব সিন্তা হইতে পারে।

প্ৰথম প্ৰতিপক্ষ নিদ্ধান্ত অসতা, তাই, বিতীয ুপ্ৰতিপক্ষ সিদ্ধান্ত অসতা লগা

ধনি প্রথম প্রতিপক্ষ দিয়ান্ত দতা হং,
তবে দিতীয় প্রতিপক্ষ দিয়ান্তর তিতি
মূল পর্বতের ন্যায় অটল। কিন্তু প্রথম
প্রতিপক্ষ দিদ্ধান্তের বৈনিপাতে দিতীয়
প্রতিপক্ষ দিদ্ধান্তের কোথাও আর দাঁড়ান্
ইবার স্থান নাই। জ্ঞানের তিত্তি-মূলের
আশ্রম-মাতিরেকেও—আন্ধ-জ্ঞান ব্যতিরে-কেও—আন্ধ-জ্ঞান ব্যতিরে-কেও—আন্ধ-জ্ঞান ব্যতিরে-কেও—আন্ধ-জ্ঞান ব্যতিরে-কেও—আন্ধ-জ্ঞান ব্যতিরে-ক্ষাতার প্রকে সভ্যব-সাধ্য হইত, তাহা হ-

ইলে, বিষয়ের প্রতীচ্য অংশ বাদ দিয়া তা-হার পর্যচ্য অংশ টুকু স্বতন্ত্র উপলব্ধি করাও তাঁহার সাধা-মূলভ হ্ইজ। কিন্তু প্রথম িট্রতিপক্ষ দিদ্ধান্ত প্রথম সিদ্ধান্তের বিলোধী —জানের একটি স্বতঃস্থিত এবং অরশাভাবী मट्डाइ विद्राधी—এ बना डाह्मे मडा हरेड পারে না; আর, ছিতীয় প্রতিপক্ষ সিদ্ধান্ত প্রথম শ্রুতিপক্ষ সিদ্ধান্তের উপরেই প্রতি ষ্ঠিত, এজনা তাহাও অসতা এবং স্বিরোধী विनिश जिक्कार्या। हेहा व्यक्ति प्रशास-ইতেছে যে, আমাদের প্রথম নিদ্ধান্তের যাথার্থা থাকার করিতে হুইলে, দিতীয় প্রতি-পিক বিদ্বা**ভটিকে** কোন মতেই রক্ষা ক-ব্বিতে পার। যায় না। শীহার। অংশাদের গোড়ার কথাটিতে জীবা অবনত করিয়াহেন, — छारनद विश्वन-तैभाष्माव दिलास के शिवा (ग, ब्लोकिक फिल्लोब भक्त खननश्चन कहिरतन, নে পথ একেবলেই অবরুদ্ধ; অগত্যা তাহা-দিগকে বিভায় নিদান্তের পক্ষ আশ্রয় করি-তেই হইবে।

> উ প্রতিপক বিভাস মনে বিজ্ঞানেরও সভ বাভ কবিত হছে। গ

ত্যানের বিষয়-সন্থরে, বিতীয় প্রতিপক্ষ
সিদ্ধান্ত মনুগের একটি প্রাকৃতি-প্রলভ জম
ব্যক্ত করিয়াই ক্ষান্ত নহে—উহা মনোবিজ্ঞানের ও মত ব্যক্ত করিতেছে। মনোবিজ্ঞানের ও মত ব্যক্ত করিতেছে। মনোবিজ্ঞান আশাহ এবং বিষয়ের মধ্যে কেবল
এইরূপ একটি প্রতিদ্বিতি। সংস্থাপন করি
রাই ক্ষান্ত হয় যে, একটি আনিতেছে—আর
একটিকে জানা হইতেছে,—প্রথমটি আশায়—
বিতীয়টি বিষয়; এ-ভিম, কোখাও পৌর্জ্রপ
কথা বলে লা বে, যখন বিষয়কে আনা
চাই,—কোথাও এরপ কথা বলে না যে,
আজার সন্পান্তয়-বাতিরেকে বিষয়ের বিষয়া
কিছি চিদ্ধ হয় না। প্রথম প্রতিপক্ষ সিভাতে

(पणा निवाद्ध (स. श्रष्टनिक मदनाविकान লোকিক চিন্তার দলে মিশিয়া ভিভিমূল দেখিয়াও দেখে না – এইটি মনো-বিজ্ঞানের প্রথম সোপান-পর্যক্ত : বিতীয় ্রতিপক সিদ্ধান্তে দেখা গেল যেইননে-বিজ্ঞান লৌকিক চিন্তার সম্পূর্ণ অসুবর্তী হইয়া ভেয়ে বিষয়ের প্রধান একটি অংশ দেখিয়াও দেখে না এবং ভাহার আর-একটি অংশকে তাহার সক্রাংশ বলিয়া অবধারণ করে ইংাই মনোবিজ্ঞানের ছিতীয় সো পান-পংক্তি। এখানেও गरमाविक्वारमत क्या- थन। भान (भान । मत्न विख्यान न्याहे ্ৰকং বিশেষ নাৰে, আৰু মাৰেক **না জানিয়াও** িলয়কে জানা গাইতে পারে টু ভবে কি ! न।—"(य जारन भारे, प्यानम अवर याहारक জোনা হয় জাগাই বিষয়" এই ক্থাটির উপর মনোবিজ্ঞান আপনার মতের সমস্ত ভর সংস্থাপন করাতে—প্রকারান্তরে मांडाहेटजरह त्य, त्य जारन डाहाटक-यथीद জ্ঞাতাকে—না আনিলেও বিষয়-জ্ঞান নিবিম্নে চলিতে পারে । যাহাই ছউক্—পরে भारत ज्ञमनरे श्रकाल भारे त्व (य, ज्यमनात প্রচলিত মনোবিজ্ঞান কাৰ্য্যন্তঃ প্রতিপক্ষ সিদ্ধান্তেরই মতাব্দ্ধী, আনি माकार मचरक ना इडिक्-धकावाखरब-गत्नाविकान विजीय मिकारलय यापार्था अ-দিতীয় সিদান্তের স্বাক্রি । করে। অভাব স্থাপুর; ভাষা এই বে, আশার-সঞ্-কৃত বিষয় ভিন্ন জ্ঞানের বিষয় হইতেই পারে ना; अमे किश्व अक्षे। क्यां कथा नरह কিন্ত দিতাখই সরশান্তাবী—কৌন খানেই हेशात अनीया महात ना ; बार हैशा রিপরীত শক্ত নিতান্তই স্বার্থিয়ে এব वर्ष-गुना।

#### পত্ৰ।

দেওঘর ২০ কার্ভিক, ব্রা, সাঁধিণ। এনবেশর, ১৮৮৬ শাল।

মান্যশ্রেষ্ঠ শ্রীযুক্ত বাবু তুকড়ি গোষ সাধারণ ভাক্ষমমাজের সম্পাদক মহাশয় সমীপেযু।

निविनय निविनम,

ঁ আপনার ২২ অক্টোবরের মুদ্রিত পর প্রাপ্ত হইয়'ছি। এথানে আমি ছাড়। ডুইলী মার জ্বান্ত ও ডুইটী জ্বাক্ষাব্যাগী ধ্যক্তি আছেন। ভাষাবা আপনার পর সম্বন্ধে কোন মত্প্রকাশ করিছে অভিলাধী নহেন।

ভাগতিকেৰ মধ্যে প্ৰত্যৈক ব্যক্তির নিজ নিজ শিক্ষা, খণা ও কচি অনুসারে এক ্ত্রকটা স্থানিত অংক্রের তাতি হোল্যা পড়া বিভিন্ন নহে। কেহ বাকা থাকিয়া বৈদা-ন্তিত বৰ্ণের ভাতি হোলয়া প্যাত্তন, কেহ বৈষ্ণৰ ধৰ্ণার প্রতি, কেছ খ্রীষ্টীয় বর্ণোর প্রতি। ক্রিয়া কলাপেও প্ররপ। কেছ মংপূর্তিপে নৃত্র পদ্ধতি অনুসারে গাছছা ক্রিয়া সম্পাদন করেন, কেছ বা প্রাতন পদ্ধতি ছল্লাংশ পরিবর্ত্তন করিয়া তাহা অনু-সরণ করিতে ধর্মের হানি বোধ করেন ন।। ত্রাক্ষদিগের মধ্যে এই প্রকার সকল ক্রেকই আছেন। এই প্রকার সকল লোকই একণে সাধারণ জালাস**মাজে আ**শ্রেয় প্রাপ্ত হইয়া সাধারণ ভারাষ্মাক এই সংজ্ঞার সার্থকতা সম্পাদন করিতেছেন, কিন্তু অপেনরি। যে ত্রাক্ষধর্মের মৃতসার ও প্রচারকৈর কর্তব্য প্রস্তাব করিয়াছেন ভাহাতে আশকা ছই-बार्ड मानावन खाक्तमारका व विवयनीन প্রকৃতি ব্যাহত হইরে।

্ আপদার কোরিড পত্রী পাঠ করিছ। বুঝিয়া উঠিকে পারিলার না যে আপনার) ভাক কার্যকে বলেন। নাপুনার। ভাক্ত ধর্মের মুক্তমারে বিধি দিয়াছেন "ধ্রা ও জাতি নির্নিশেষে সকল শান্ত ও বাজিন উপদেশ হইতে সাদরে সত্য গ্রহণ করিবে।" আমি জিজ্ঞাসা করি যদি কোন ব্যক্তি আধাাত্মিক ধনের জন্য অন্য কোন জাতির নিকট ঘাইনার আবিশাক নাই মনে করিয়া, আমাদিপের ভজিভাজন প্রধান আহ গ শহাশয়ের ন্যায় কেবল ভিন্দুশারে ছইতে সক্য আহাশ করেন ভাষা হইলে উচ্চতে আপ নারা রোজ বলিয়া গণ্য করিবেন কি না। রোধ হয় করিবেন, কিল্প রোজসর্কের মত্যারে আপনারা বিধি দিতেছেন "বর্ণা ও জাতি নির্নিশেষে সক্র শান্তা ও ব্যক্তির উপদেশ হইতে সাদ্যো গত্য প্রহণ করিবেন।"

আপনানা আকাংশিব মণ নাবে লিখিয়াছেন "দিশবের সাহত জান প্রেম ও ইচ্ছাতে
সন্মিলিত হওপাই মুক্তি ।" বোন কাক্র যদি
বলেন যে পাণ হাপ ও সংসারিক ছাখ ক্লেশ ইইচে নিজতি প্রাপ্তি পূর্দ্ধিক চিরকাল জ্বনান্
নন্দ উপভোগই যথার্থ মুক্তি (জীবমুক্তি এই সিজেল জ্বন্তু ত) তাহা হইলে আপনারা
তাহাবে জ্রাক্ষ বলিয়া গণ্য করিবেন, বিনা দ
বোন হয় করিবেন, কিন্তু জ্রাক্ষাধর্মের মতসারে
আপনারা লিখিয়ান্তেন 'নিখুলের গহিত জ্ঞান
প্রেম ও ইচ্ছাতে সন্মিলিত হওয়াই মথার্থ
মুক্তি।"

হাগন বা আমধর্ণের মত্যারে লিখি য়াছেন "নিধেক বানী ঈশরের ইচ্ছা।" উহাতে ঈশর মুপ্রাণনের কথা লোন স্থানে উল্লেখ হরেন নাই। যো বিষয়ে কিছু থাকা করের, মেহেতু তাহা আমাধর্মের একটা প্রধান মত । কেবল ঈশরের ইচ্ছা পলিলে উপরামু-প্রাণন ব্যায়, না। যদি কোন আম্ম ঈশর আমাদিগকে জ্ঞানালোক ও ধর্মবল প্রেরণ করেন এবং আমাদিগকে ওভ ব্দিতে নিযুক্ত করেন এবং আমাদিগকে ওভ ব্দিতে নিযুক্ত ভাঁহাকে আপনার। আক্স বলিয়া গণ করি-বেন কি না।

আপনার। প্রচারকদিপের কর্তুরো লিখি য়াছেন "ঈথরের প্রাপ্য সন্মান ধর্মা-প্রচার-কের। গ্রহণ করিবেন না।" ঈখর-প্রাপ্য সন্মান কাছাকে বলেন ? আমাদিলের দে-শীরি প্রথামুসারে যদি কোন আক্স ধর্ম্য-প্রচারককে প্রাণিপাত করেন তাহা ঈথর-প্রোপ্য সম্মান মনে করেন কিনা ? াদি কেহ প্ররূপ প্রাণিপাত করেন তাহা হইলে হা রাক্ষারশ্রার্থমাদিত কাষ্য বলিখা গণ্য ক্রিবেন কি না ? এই বিষয়ে প্রার একটু স্পাই করিয়া বলিলে ভাল হয়।

আপনার। বিশ্বিরাছেন যে ত্রাজাধর্ম প্রচারক "অনুষ্ঠানে জাতিলেদ প্রশ্না দিবেন না।" যদি আগাদিগের ভক্তিভাজন প্রধান আঁচ, ইট মহাশ্যের ন্যায় কোন একান্ত ভ্রমান্থার ধার্ম্মিক ব্যক্তি অনুষ্ঠানে ভাতিভেদ পালন করেন তাহা হইলে নাহ প্রান্ধানি মুমোদিত কার্ম্য বলিহা গণ্য করিবেন কিনা হ বার্ম করিবেন না। কিন্তু অনেক প্রান্ধা প্রান্ধা হয় করিবেন না। কিন্তু অনেক প্রান্ধা প্রমান করেন যে সালান্তিক বিষয়ে যাহার যেমন নিবেচনা ও করি দেই নপ কার্য্য করিলে প্রান্ধার ক্তিবের ক্রিনে হয় না।

আপনার। লিখিয়াছেন দে 'ত্রাক্সার্শ্নপ্রচারক যে সকল সামাজিক সমুষ্ঠানে বিবেক
বা নাতির অবমাননাকর। হয় তাহাতে যোগ
লিবেন না"। এছলে জিন্ডানা এই যে বদি
কোন ত্রাকা কালার কনালে চনিত্র পরিত্রা
হাথিবার জন্য নিজের বিবেক অসুসারে ত্রয়োন
দম্ব বংসরে তাঁহার বিবাহ দেন ভাষা ইইলে
আনুনালিকের দৃষ্টিতে তিনি বিবেক ও নাতির গ্রমাননা করেন কি গ্রাদ আপনারা
বলেন যে অধিক বয়নে বিবাহ দেওয়া ত্রান

চরিত্রের বিশুদ্ধতা রক্ষার কৌন হানি হয়
না তাহা হইলে বক্তবা এই যে অনেক ত্রাক্ষা
এখন আছেন যাহারা বলেন অধিক বয়সে
বিবাহ দিলে চরিত্রের বিশুদ্ধতা রক্ষা করা
কঠিন হয়, অভএব রজোদর্শন হইলেই বিবাহ
দেওখা কর্তব্য। আপনারা ভাঁচাদিগের
বিবেকর প্রতি সন্মান প্রদর্শন করিবেন
বি না ?

যদিকোন ত্রাগা স্ত্রীলোকদিগের চরিত্র
প্রির রাথিবার জন্য নিজের বিবেকামুসারে
গমনাগনন ।বধ্যে তাঁহাদিগকে দাধীনতা
দিতে অনিচ্ছুক হয়েন ভাষা হইলে সে অনিজ্যা জাপানার। বোগাধর্মের বিরুদ্ধ জ্ঞান
করেন কি প্রোয় ম্য করেন কিন্তু জনেক
ভ্রান্ম এমন আছেন ইংহাদিপের বিবেক বলে
ধ্যে নারী চরিত্রের প্রিক্রতা রক্ষা জন্য এরপে
স্থানীনতা প্রদান অবিধ্যে। ভাহাদিগের
বিবেক প্রতি আপনার। সম্মান করিবেন কি

যদি আমাদিগের প্রধান আগেষ্য মহাশাসের ন্যায় কেন্ন ক্রান্ত ভ্রজাপরায়ন প্রাশিক
ভ্রাজানবংশীয় ভ্রাজা কেরল কৌলিক রীতির
ভানুরোধে পৌরুলিকভার সহিত কোন সংশার না রাখিলা আপেনার পুরের উপবীত
দেন ভাগা হইলে ভালাকে ভ্রাক্ষ বলিরা
সীকার কলিবেন কি না ?

এইরূপ আপনাদিগের প্রেরিত **তাক্ষ**ধরের মতসার ও প্রচারকদিগের কর্বন্ধর বিরয়া শত শত প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করা ঘাইছে পারে যে এইরূপ কোন প্রায়ে কি না, এবং এরূপ কার্যা করিলে প্রায়াকি না, এবং এরূপ কার্যা করিলে প্রায়াকি না, প্রবং এরূপ কার্যা করিলে প্রায়াকি নাও ঘদি কোন বিশেষ সনাজের কার্যানিকাহক সভা ছারা নির্দিষ্ট মত অথবা কার্যপ্রেশালী অনুসরণ না ক্রিলে কোন ব্যক্তিক্রাক্ষরেশ অনুসরণ না

धर्मायूरमानिक कार्या न। कटतंन बला यात्र ' তাহা হইলে সাম্প্রদায়িকতার একশেষ হয়। তইরপ সাম্প্রদায়িকতা অন্য ধর্মে পোযায়, ত্রা**কাণ্ডের** পোষায়<sup>্</sup>না। রা**ন্**মেহন রায় ভাষা শব্দের সৃষ্টিকর্তা। তিনি ঐ শক্দের "ব্ৰ:ক্ষর উপাদক" এই অর্থ করিতেন। সা মাজিক নিমায় কোন ব্যক্তির যে মত ১উক না কেন, কোন এচলিত ধর্মের এতি জোন वाक्तित शक्कभाठ थाक्क मा (कन, निहान।व **चन्छ मे**बाइद **উপा**मक ब्हेल्ब्से खिनि छ -हारक खाद्या नीलएडन। आभाग यपि जीज শব্দে আর কিছু বুঝি ভাষা ধইলে ঐ শনেষর বলেখার আমানিখের পরিভাগে করা কর্তবনে ঐ শক্ষের স্থাষ্টিকতা যে কথে উহা বাব ছার ক্রিভেন আগর; মেই অর্থ জালার**ণ ক** রিতে পারি, সংখাত করিবার কোন অধিকার नाइ। जामिलाक्षणनाव यउन्त भारतन खाकाराध्येत जनास्थ्रनिहिस्कारका को एर ছেন। আহি, সম্প্রদায়, মত নিজিনেধ্য গ্র কেই নিলাকার জনস্ত উপরের উপাসনা ক-বিজে অ'শ্লাধা । গ্লাদি ভ্রাক্ষণেয়ে **স্থাসিলা উলাসনা করিতে পারেন।** জ্ঞানি खाक्रामाद्याव विद्नष यातुर्ष्ठानभक्षा भारत् বটে কিন্তু যে ভা**ছেলা**রা তেনে, অনুসরণ না করেন, নিজের বিবেকাণুসালে প্রাচীন প-দ্ধতি কেবল আচার মাত্র জ্ঞান করিয়া ওদপু-भारत शार्ष्य जिल्ला मण्यापन करवन छ। হারা ত্রাহ্ম নহেন এগং আমর। বলি না। चानि वाकामगारकत खाकांशन्ध नीक चारह, কিন্তু তাহা বীজ মাত্র। প্রত্যেক ত্রাহ্ম আ-পনার জ্ঞান বৃদ্ধি অনুসারে তাহা বিকশিত করিয়া লইতে গারেন, জাক্ষধর্মের ভাবের मद्रम् यिन थाकित्महे इहेन। জিদারতা বি-यरम गांधादन खाकामगारकत बर्डगान श्रकृष्ठि र्णात्नको यापि लोकनगारभत नाम । यपि আপুনারা ব্রাক্তবর্দ্ধের জনাত দারিকতা রক্ষ

করিতে ডাহেন ভাষা হটলে স্বাধারণ মমাজের বর্ষান প্রকৃতি অবলম্ভ রাখুন ! যদি কোন বিশেষ মত শ্রেণিনারা ভালার জন রিতে চাণ্নে আপ্নাদিনের মধ্যে মাহালা সেই বিশেষ মাভাবলুকা (কোন বিশেষ মতের অনুষ্ঠী গোক ত্রাক্ষাদিগের মধ্যে অল্লই পাইবেন নারণ আমি দেখিয়েছছি এক একটা ভ্রাক্ত এক একটা সম্প্রদায়) ভারার। সার্বর <sub>ক্র</sub> বোলাদ্যাজ অধ্যাহত রাধিয়া একটী প্রভার সভা সংখ্যান করিয়া ভাহাকে 'প্রাাই-गडा। अहे गांव नाथ दिला स्मिर्च विद्यास भड প্রচার করিতে পারেন ভাহাতে কোনু,ক্ষতি চ্ছবৈ না। কাপন্তা ভাজালাত্মি সভ मात ७ धारांतर्कत .कर्जुना भाषा । निर्मातिष ক্রিবেন তাহ। থাকিবে না। থালেনে आध्यानितार माना घरेतन्ते का एव छै हिला लाइ। लिहिबर्डन इल्ट्रिस खरेत्रम পরিবান্তনের পর পরিবার্তন চাণ্ডের। ক্রিটি ম্বক্সিটির অব্ধি থানিবে না। প্রেণ্ড প্রান্ত্রক ক্ষেত্রেক (Challes bear तिहार राष्ट्री कवा बुश्वा, तिर्भाष्ट्रकः कारानाहाः সাধারণ তাক্ষ্মনাত্রের প্রাক্ষা সাধারণ তা ক্স-মহাজ্যক এজল শৃদ্ধন-ব্য কর। উচিত হয় না ভাষাতে স্থান প্ৰারাত্তা**মোর স্থান পা**ওয়া কর্মন, বাদল বিষ্ঠে মিল থাকিকেই হইল। নিবেদক

#### 🖹 রাজনারায়ণ বন্ধ।

পূর উপরে যে, সকল আগণালিক অথবা সায়াজিক কথা উথাপিত হলৈ সেই সকল বিহরে আমার নিজের মত বিছু প্রকাশ করি-লাম না, থালে বলিলাম তাহা সাধারণতঃ সমস্ত ভাজন্মাজের প্রতি লক্ষ্য করিব: বলিলাম।

এই পারের প্রাপ্তি সংবাদ দিলে এবং তাহা আগনাদিশের ২০ নবেশ্বরের সভার পাঠ করিলে পরম বাধিত হইব।

## विविध ।

আমরা গত ভাজ মাদের উত্তর্গ্রেধিনীতে সা**ন**শ্বার সত্যের অপকারিতা <sup>গ</sup>লেইবার নিমিত্ত একটা প্রবন্ধ লিখিয়াছিলাম 🎼 পুনা श्रवामी बीयुक्त वाच भीननाथ भएकाशायाय গত আখিন মাদের ধর্মপ্রচারকে তাঁহার প্রতিবাদ করিয়াছেন। তিনি বলেন পৌরা-্র নিকেরা রূপকচ্ছলে যে সমস্ত নীতি নিকা দিয়াছেন ভদারা লোকের যথেষ্ঠ উপকার হয हेकामि। मीमनाथ दातू जासारवद छादक त्वाव र्श्वीका जिल्ला मुर्छिट उपरापन नाहै। जाला হ্**ইলে ভাহার ন্যায় বিচক্ষণ লে।কের** কল্চ क्षेत्र ख्रा हरेक मा। श्रीति अन् कामन काट्या खट्या भाषाना पत नाष जभरकद আভার লইমা অনেক উচ্চ নাতিব উপদেশ মার্বা যে জগতের উপবার হুইসাতে আছল: ভাহা অধীকার ক্রিনা। রনেলেশ মহা ভারতীদি গ্রন্থ পাঠে বুকা হায় সেনিজি शरहात गरधर थाकिएन (नारकत क्षायाना হয় কিন্তু আন্চিন্ন বক্তবা পন্য প্রকার। আমরা কহিয়া ছিলাম উপনিয়দ যেরূপ নান ভার ও ভাষায় ঈশবের স্বরপ নিরপণ বার-্রিছেন পুরাণ সেরপ পারেন নাই। িনিন क्षंभक वा जनकारतत काञात नहेता এই हहे-য়াছে য়ে লোকে অত্রে সেই অলম্বারের আভূমি মোহিত হ্রীয়া যায়। তাহার অভ্য-ন্তব্যে কি যে সূত্য আছে তাহার অনুসন্ধার্নে আর তাহার অবসর হয় না। আমরা এই क्यात छत्नय कहिया त्राधा कृत्छत मृख्टिक अमानकाल जानिसाहिलाम अवः अरे अछन সত্যে লোকের যে কতদূর খনিও হইয়াছে णहां अत्याहि। यागम् वर्दन मीननीय বাবুৰ ভাতীতির নিমিত প্রাচীন প্রন্থ হইতে এইরাপু আরও একটা প্রচল্ল সত্যের নিদর্শন भ न्या**ष्ट्रेटा वाख्य रेटा बाग त्नाटका** द

মোহ জ্মিবার সন্তাবনা আছে কি না ডিলি আপনিই বৃথিয়া দেখুন। বিষ্ণুমুভিতে এক-স্থলে প্রকাষনাল অভ্যাস করিবার উপদেশ গ্রহকার প্রথমে স্পষ্ট কথায় বলি-লেন আত্মাতে ঈখনকে না দেখিলে মৃত্তি किछ এই बकाशांन महल नह। এই ব্ৰিয়া তিনি প্ৰথমে কহিলেন স্থল পু-থিনী হ**ইতে** আরম্ভ করিয়া সূক্ষ আকাশে লম বি অভাগ কর তাহা হইলে একানানে দিল ২ইবে। অগাং তিনি মনে করিল ছিলেন সূল পুথিবী ইইতে আরম্ভ কারয়া গণেকাঞ্জ ব্যাপক ভূচে সনাধি অ**ভাগুস** मध्य मेरेटन। कातर पुरिची करणका **कैन** খনাথাৰ, জ্লা অভে, কা ভেলা **ব্যাপক,** ভে**জ** প্রেপকা হার ব্যাপক, বাধু ম্পেকা আকাব कर माध्य वाकामत्क म हिन्द ধারণ করিতে পার্চাবে দে এই পঞ্চতের অতীত শ্ৰতি ইংবে অন্তৰ্মতা অন্ত্ৰণী ব্যাপক -ত্রক্ষকে ধ্যান করি**তে** পারি**নে। এথমে** এই-লপ উপ্ৰেশ দিয়া তিনি ধানিদৌকর্ব্যের निमिन् जानात कहिलान यनि हेटाउँ । সনাধি অভ্যাস না হয় তাহা ছইলে শছা চঞ গদ। পদানারী চতুন্তু জ বিষ্ণুম্ভিকে ব্যান ক-রিবে। তাহার উদ্দেশ্য এই যে শশু চক্রাদি 🖫 আকাশাদি ভূতের আারকচিহ্ন। যিনি এই \*চতুভুজ বিষ্টুট্ডি অবলপনে ধাান অভাান করিবেন ভিনি যথাবং মুর্ভিমাত্রকে ধ্যান कत्रित्न छलित न। किन्न (य खन्ना अरे पाका-শাদি ভূতের অতীত অথচ ইহাতে ব্যাপ্ত এই বিষ্ণুমূর্ত্তি অবলগনে সেই খ্যালক বৈলাকেই ধ্যান করিতে অভ্যাস করিবে। এখন দীন-নাথ বাব্ বুঝিয়া দেখুন এই অলক্ষারে প্রচর্ম সত্য দার। অগতের অনিপ্ত আছে কি हो। গ্রন্থকা উদ্দেশ্য নিরাকার দত্যস্ক্রণ खटचात्र धानी जिनि धार्य म्लेडेरे रान्ट्रिन আপ্রার আপ্রার আত্মাতে এই তক্ষদর্শন

न। इन्ट्रेस कुछ नाहै। किन्न जिन नेर्क्तनाथांत्रदशक अहे भाग क्राम इहेनाव নিমিত ব্যাক্ল চইয়া উঠিলেন। ্যাহাতে জ্মশ ইহা লোকের অভান্ত হয় ্রীধ্যানুসারে ভাহার উপদেশ দিতেও জেটি করিলেন না। কিন্তু ফল দাড়াইল কি ? ম্বিসাতে লোকের। ভাঁহার ছাভিজায় বাঁশ্ব ন। ভিনিপে অভিপ্রায়ে শব্দক্ গদা-शाती विशुश्चिकिक वर्गन कतिए दिनशः एक रम कित भारत श्रमत धाना वर्गाक एडिएड शाउस मो। जाशत तमरी यूल भू लिंद्र राज भरेरा। वस्ति । वतः ५०४ ५,८५ द्यारी कुल भारताहे जाता भा रहेत्र प्राध्यम । रहे एना आसाहिक क्षणक नामक उपन्त বলিছ। তিনাম দেনি মন্ত্রের বিভাই এই হজ स्रोत ,त्न हेश बाता के हिल्ला है। में वर्गाव रूप भा च्या ८० छ। अन्नत्रको (माकान्ट्रवट) **ই**८।द्वा এই ব্যায়ালের প্রশান ব্যাপ্ত হয় স্থালের ১ছার জনভাবেকি সে সভা আছে সভাব অনুসন্ধানে থাক ভাষ্টেদর অবনর গতে मा। अरेषुक्रे रेशत अन्त्रिवादिक राज्यागरा এই সম্পরের অভ্যার্থিক কলকে জানক কল্ বলিয়ছি। ভাছার প্নাণ্ডি নিস্পারে।-लगा विश्व मीममाथ नान्द्रक नकरी कन्त्र विकिशः त्रक्कवः दबाद किट्टिक छ। है। , इन्स् জাতি তেরপে ধর্মাও ঈহরকে ব্রিয়াছল জগতে অন্যাপি আর কোন আতি সেরপ বুৰিতে পাৰে নাই। তবে যে ধর্মকেত্র ভারতগরে মূর্ত্তিগুজা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে এবং মৃত্তিই যুক্তিদাত। বলিয়া যে লোকের মনে বিশাস বন্ধমূল হইয়। গিয়াছে তাহাতে প্রাচীন প্রবিদিগের দোষ নাই; দোষ পরবর্তী লোকদিলের। তাঁহারা চক্ষে অঙ্গুলি দিয়া ধর্মী ও ঈশ্বর সম্বন্ধে যাহা বুঝাইয়াছেন আমরা অজ্ঞান ও কুসংস্কারে উপহত; সহজে তাহা व्चिवांत्र रहेश शहिना धवर रवसल नागरन

নক্ষালাভের উপদেশ দিয়াছেন প্রাণের আশুকৃতির অনুবেশনে ভালার দিকে ঘেঁদি
না,এই জনা কুল উপাদনা এলেশ সাম্পাদ
লাভ করিরাছে।কিন্তু এলেশে বিপ্রের উপর
পিরেন সেই সমস্ত প্রকাশনী প্রাণ এলন্ত শার্থিক জীবনে জ্ঞান্তি। আম্বা এপন্ত সলি সরল মনে উলোদের নদ শেব বিস্থা উপাদশ প্রদা করি ভাষা স্থান এশেবর অনুবান কৃত্তি। বাবে পাকে না শার্থিক শব

ভিড়িতাজনমার বাজনাস্থালি লেলিইকা मधा रिक् भाष भारत हर हिन्स न्यान राष्ट्रा का किर्णित करा। येकान केर्णान्य का न भ्रम् । (प्रतृति स्वास्त्रा सामगा व वित्रान) र লিডিজ ভালাট লি গান্ত্রী এই সামিছিত্র মিলের স্থাতি প্রতিষ্ঠান নারী কোলে সমূ পু ভাৰতি গৰালাৰ নাৰ প্ৰতিক্ৰিয়া তেওঁ গোঁৱ जार प्रकारक कता अन्य भारतीत अधिक अधिक মৰ নীতি শ্ৰুনী,ত কুমি ও শিলেৰ টিল্লতি সালে কৰা এই সভাৱে প্ৰাণাল নক্ষা এইবো I र ज्ञा ने न राज (१ कना गाउँ हिस्स्का जिन এইরপ সলাসান উৎ এই মান্ধাননের আন্ধা ক্ৰিসাহেল ভাষ। খনাল কড় দৱ ছইবে হা-বৰ্ণা ভাষা একটা দেন্তার বিষয় বিৰু জান মরা ভাষার এই উচ্চ আশানের স্পান্তঃ-क्रनरम् ध्रभाकति । ्यथम् भाभन्ति हास তার বলে আমাদের অনেক উৎকর্ম ক্রংহা सूथ जनकार में ए हिंगाइड , अधन यहमानु दाशी विश्वामील वास्क्रियार प्रविष्टे जाहाद का বিষয়ে প্রাণপর যদ্ধ ও চেত্রা আবদাক। আদি ত্রাহ্মসমাজ জন্মাবধি এই মহৎ উদ্দেশ্য भाषरम रक्षशतिकत इरेशः चार्छम । হিন্দু রাজনারায়র বাবুর এই শাশ। যদি ফল-**४९ इश ७। ६ इं.स. ७ हे जा**नि खाकागगा-क्टित्र **अत्नक्षेत्र अस्म अस्मिश्च इ**हेटव ।

ু হৈ ছোৱ বিল্লবের সুময় সভা স্মিতি বা বে কোন উপায়ে হউক গিনি এই হিন্দুজাতির বিনাশোমুক ধর্ম রীতি নীতি রক্ষার সূচনা করিবেন তিনি বাস্তবিক এ দেশের একজন পর্ম বন্ধা অনেকের সংস্কার ইংরাকী শিকা দেশের উপকার ও অপকার তুই করি-তেছে। আমরাও তাহা অসীকার করি না। किन्छ এই इन्न हिन्दूत नाम्नि विनि हेरदाकी ভাষায় উচ্চ শিক্ষা পাইয়া সদেশাসুরাগের এইরপ উচ্চ আশা ধনহে ধারণ করেন আ-**यता छांशारक** तरंद्वत नगाव भाषा वस्त করিতে প্রস্তুত আছি। যথা ছিন্দু সাম্ভিতে হিন্দু সাবারণের হৃদয়ে কিন্ত্রপ ভার ম্জিত করিয়া দেওয়া হইবে রাজনারায়ণ বাব্ তাহার একটু নিদর্শন দিয়াতেন। আমগা আ**গ্রহের সহিত নিল্নে তাহ। হইটে কি**ঞ্চিত উদ্ভ করিয়া দিলাম।

"হিন্দু নাম আমরা কথনই প্রিত্যাগ করিতে পারি না। হিন্দু নামের সঙ্গে কত হাদর আহা ও মনোহর ভার অভিত রহিয়াছে। হিন্দু নাম উচ্চারিত হইলে আয়ানের মন্দ্রু সম্মুখে সেই সরস্কতী-নতী দীর-বাদী আদিম লাহ্যানিগের বরণীয় মুক্তি আবিভূ তি হয়, বাহারা ঈশ্বরের সহিত মনুযোর নিক্র শথরে অনুভব করিয়া ধলিয়া গিয়াছেন—
্ "শ্বং হি নো পিতা বলো ২ং তি লো মাতা," "ম্বা পিতা পিতৃত্যঃ পিতৃণাম্ "স্বাহ্ন স্থাং মাধা প্রভাতি" "হং ক্ষা হং তবান্ধি।"

"তুমি আমাদিণের পিতা, ত্থি আমাদিণের মাতা," তুমি স্থা, পিতা, পিতৃগণের মধ্যে পর্য পিতা," "তোমার বস্তুতা অতি স্থাতু,""তুমি আমাদিপের আম্রা তোমার।" কিন্দুনাম উন্তারিত হইলে আমাদিশের মনঃ শুকু সম্মুখে সেই তিত্তির অধিব ব্যুণীয় মুর্তি আমিয়া উপস্থিত হয়, যিনি বিশ্বয়া গিয়াহেনি; শুক্তা ভানমনতঃ এই বাবেদ নিহিতং ওহারাং

পরমে ব্যোমন্ লোহলুতে স্থান্ কামান্সহ কথা। বিশ-চিতা।"

যিন নত্যশ্বরপ, জ্ঞানন্বরূপ, শ্বনন্তররপ: পর্ম ভ্রন্সকে আপনার হৃদয়াকাশে স্থিত বলিয়া মানেন, জিনি সেই জ্ঞানসরপু ঈশ্ব-রের সহিত সকল কামনা উপভোগ করেন।'' হিন্দু নাম উজারিত হইলে আমাদিগের মনচকু সম্মুখে সেই বরণীয় আধ্যযুর্ত্তি মা-ওুকা আদিয়া উপস্থিত হুয়েন, যিনি বলিয়া-ছেন, "লাহ্যং শিবমবৈতং" তিনি শাস্তপরূপ মাল্নস্ত্রণ এবং ভাইছত স্ত্রপ।" - মধন আমরা এই হিন্দু নাম উচ্চারণ করি, তথন আমাদিলের ঝুলিকেনে ব্যান্তস্থান্দরজ্ঞান কলাপৰালা বান্দের ব্রশীয় মূর্ত্তি **আসিয়া** আ'বলতি হয়, বি)ন বলিং'ছেন, "আত্মনঃ ভালিকুলানি গাবেষাং ন স্মাচ্যেরং।" "**আ** প্রার মঙ্গলের হাছা এ,তিকুল, পরের এগ্রান্তি তাहा क जिल्ला मा। " यथन व्यागता अरे हिन्सू নাম উচ্চারণ বরি, তখন আমাদিগের মন-\*७कु मुद्युर्थ सङ्द्रश्रामान **अथह श्राधीनाञ्चा** বনিষ্ঠের বরণীয় মৃদ্ভি অ'সিয়া উপস্থিত হয়; যিনি বলিয়াছেন,

'বৃভিত্ত উপাদেশং বচনং বালকাদপি অন্যং হণনিৰ ভাজামপ্ৰভূকেং প্ৰথমনা ৷"

"বালক যদি যুক্তিন্ত বাকা বলে, তাহা উপানেয়; আর সমা ব্রহ্মা যদি শ্রুক্তিযুক্ত বাকা বলেন, তাহাও তৃণের নাায় পরিতাগে করিবে।" হিন্দুনাম উচ্চারিত হইলে, আগানের মনশ্চক সম্মুখে সেই নবান পূর্বাশ্ দলশ্যাম বীর প্রশান্ত-মূর্তি আবির্ভূত হুমেন, গিনি পিতৃসতাপালন নিমিত্ত চ্রুদ্দশ বহুসর কাল অরণো অশেষ ক্লেশ সহা করিয়াছিলেন ও সংঘত মনের এবং পরস্পার বিপরীত ভূণের সামঞ্জন্যের সর্বোত্তমান্তীতি প্রদর্শন করিয়াছিলেন। হিন্দু নাম উচ্চারিত ইবেন, আগাদের মানসক্ষেত্র সেই সংশ্রেষ

কুল প্রতিষ্ঠিত হয়েন, যিনি कानीत निर्दामित दशमित्वत निर्दामित, ষিনি ধর্মবক্তার প্রধান, বাঁহার কথিত শ্রীম-हरावकृती जा मकन काटनत मकन मुख्यानारयत হিন্দুক্তিক স্ববিপ্রধান ধর্মগ্রন্থ বলিয়া মান্য হুইয়া আদিতেছে এবং বর্ত্তমান পাশ্চাতা সভাতার কালেও ভারতবর্ষে ও যুরোপপণ্ডে উভয়রই খীয় প্রাধানা রক্ষা করিয়াছে; যিনি ভক্তি ও প্রেমণ্রের সংস্থাপক অথচ রাজনীতিজ্ঞ ও কৌশলীদিণের চুড়ামণি, म। হার বিচিত্র মহিম। কবীক্র সকল সীয় তীয় হচিত প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড এতে যথোপযুক্ত রাপে বর্ণন করিতে পরাস্ত হুইয়াছেন, যাহার পরমান্ত ক্ষরিত্র মহামকোগানাম পঞ্জিতগণ मुकाक्षरभ रातरण्ड न कतिए हित्रकान है होति মানিয়াত্তন ও মানিতেত্তন। হিন্দু নাম উজারিত ছইলে, আমাদিগের মনশ্যক্ষ সন্মুথে নুধিটির সাসিয়। আবিভুতি হয়েন, বাঁছার নাম ভারতবর্ষে ধর্ম শকের ভাতিবাকাওরপ ছইয়া দাঁড়াইয়াছে। হিন্দুনাম উলেলিভ हरेल, तिहे जालाक-भागानः शुक्त जागा-্**দিগের মনশ্চকু সম্মুখে** উপাত্ত হয়েন, যিনি মুধিষ্টিরকে আপনার মৃত্যুসাধনের উপায় বলিয়া দিয়া অসাধাৰণ মহত্ত প্রকাশ করিয়া-हिलान अवरं भवनयाति करकाक यखनात सना হইতে পাওবদিগকে অশেষ অমূল্য ধর্মোপ-দেশ প্রদান করিয়াছিলেন। ঐ নাম উচ্চা-রিত হইলে, সেই মহামনা রাজ্যি জনক আমাদিদের স্তিক্তিতে উপবিত হয়েন, যিনি প্রানুপ্রারপে বিষয়ের প্রতি মনো-যোগী থাকিয়াও, এক মৃত্তি স্থাতি যোগ ছইতে বলিত হইতেন না। এই নাম উচ্চা-त्रन कतित्न, महाजा श्रुक्तत्रवादक चात्रन हत्र, ষিনি এলেক্জাভারের নিকট শৃত্যুলবন্ধ হইয়া वसीजाद नोठ इहेरन वावर वारमक्षाश्वात 'তোমার প্রতি কিরুপ ব্যৱস্থার করিব' এই

কথা জিল্ডাদ। করিলে, "এক রাজা অন্য রাজার প্রতি যেরাপ ব্যবহার করে, দেইরাপ করিবেন" এই উত্তর দিয়াছিলেন। হিন্দু নাম কি মনোহর। ঐ নাম কি আমরা কথন পরিত্যাগ করিতে পারি ? এই নাম ঐট্রান্ন জালিক প্রভাব ধারণ করে; এই নাম দারা বাঙ্গালি, হিন্দুখানী, পঞ্জাবী, রফ্রান্ন মাছান রাট্টা, মাজাজী— সম্ভ হিন্দুগণ একজ্নস হইবে; তাহাদিগের সকলের এক প্রকার উন্নত কামনা হইবে; সকল প্রকার আধীন নতালাভ জনাতাহাদের সমবেত চেবা হইবে। অভত্রব পে পর্যন্ত আর্থনে, শানিতের শোধ বিন্দু আ্মাদিপের শিরায় প্রসাহিত হবৈর, বি সেই পর্যন্ত আমরা এ নাম পরিত্যান করিব না। ক

### মহন্বাকা।

( 25)

মঙ্গল পাধনই ধংশার প্রাণ।

( 24 )

উন্নতির পথে অগ্রমর ইইবার ক্লা প্র্রান সহায কি / সভাচেদ্ভিৎসা।

( 46)

যে ভয়ের বলীভূত সে খোল গুঃখের ভাগী। স্থিদ রেল বাজ্যে ভয় করিবার কিছুইনাই।

( 30)

ধীয়েক ব্যক্তিকে স্থান্ন ইতে হয় না, বর্গ ভাঁছার **হুদরে আপনা হইতেই অ**বতানি হয়।

(00)

ধার্মিক ব্যক্তি ঈশ্বন্ধের প্রদানের ক্ষরিকারী হামন এবং তাঁহা কর্তৃক প্রিচালিত হয়েন।

( 40 )

े किये के बार्का निकार कना धरनाशास्त्रन, धरनाशाः कार्तत्र केना कीवन नरह। धरे गश्क मठाठी कर स्थाक क्रिया-संशिधारक। ( 92 )

আমি প্রায় কখন ছুংখে পড়িয়া অসম্ভোষ প্রকাশ কবি নাই। একবার দারিন্তা জন্য পাত্রকা আহরণ করিতে পারি নাই তজ্জন্য অমাবৃত পরে বহু পথ লমণ क तिए इहेबा छिन विनिया वर्छ केंग्रे इहेसा किन । यथन के कि दे दे विषय विश्व करिया किलाग, जन्म करिया श्रमानात थात्र कतिया निश्मशीन अकति वास्तिक **দেখিতে পাই। তাহার দশা দেখিয়া আ**মি পারকার অভার ভুলিলাম এবং ঐ ব্যক্তির সহিত ভুলনার আনার প্রতি ঈশ্বর হে দ্য়া প্রকাশ করিয়াছেন দাং বি এন্য उंश्वित धनावीम पिलीम।

( 30)

निधन भाभीत जनमाञ जहर । कु

(30)

**, क्षत्ररकत** डेक्क को ७ वसीत छ। रक्षामान से मरशो निनय পাইখাছে, হে ঈশ্বর, জ মি জানি ন। ন্যাকি গুমানা कि लेकाई दृषि।

(00)

নে জীপনাকে অন্তথী মনে করে, মেন ক্রা

অক্সেখী!

150

त्नहे वाकिन निराधक, ध्र मत्र 3179991

আমরা অমন্ত্রীভিয়তির পানিকারী, ইহাটা ইম্বরের স্প্রতম গিলম ৷

্ৰ মাজুকের পা**ৰি**শি পদ্ধ হড় উচ্চ ভাঙাৰ 'বালীনতা <sup>গ</sup> 医多 带孔

্য **শ্বীয় বিৱেক শক্তি চু**ণবার, **সে সং**জ্ঞাই **হা**র্যে।

भग कर्षा अवन्टः चर्ड्यन्किम माम्रो दल्सा (२१) र्थन किन्द केन्यदतत ध्वमनशै कजनाम्य नियम, है। त्य दाक्ति नक्तर्गतिकत इरेबा ग्यामामध्ये अरुष रह केन्द्र ানৰ কাৰ্য্য সাধন করিছে খাকে, ভাষার পকে ধর্ণনি সাধন বিভুকাল প**রেই সহজ্**শীন্য হয় এবং **আরেও** ্ষিত্রকাল পরে স্থাকর ও আনিন কর হইয়। উঠি।

তুনি মহ'ব কাৰ্য্য/সম্পন্ন কৰিছে পানিতেই মা विषया विषय स्टें असी। जिलात मृत्रिकाटक मार्गाह्म कविया।

প্রস্তুত করেন নাই। তোমান্ধ যেরপু ক্ষমতা, বেরপু স্থবিধা ভাহারই উপযুক্ত বাদহার করিতে করিতে অগ্নর হইতে থাক—স্বশ্ব ভোমাকে পরিভাকিন্দ্রি-८नम भाः

(8>)

প্ররত ও স্থায়ী উয়তি অনেক বিলম্বে ও অনেক करहे ज्याल अलग्री यात्र ।

আনাদিনের চরিত্র আমাদিগের চিন্তা, বাকা ও বালের স্মতির ফল। অভএব এই তিনটিকেই নিয়-१६७ ८ एमतिहालिङ कविरव ।

কেবৰ সামায়ক ও কণ্যায়ী ভারোজাকে চরিজ शिक्षित का करें। देखांत यह छोटे, आधारणात्मेल कमार्ट চাট, ৬ এশান আবিধাৰ চাল। **তথালীত** চাৰিম 管理者 化银 利尔斯拉

নম্ভায়ত্মগুর ওগ্লিম আগ্রস্থীন জান স্বাৰ্ रीत करा विश्वासन नाहरूप डीका हैते ने लक्ष करी m. mar Garage

### জেশতি।

িগিয়ে আনত প্রাণ ফ্রিফান পান হসিতে কুম্মানল গিলাছে সরিল। --ললিও সংশানী আর থাকে না কো কোথ। বিরহ-বিধানে সব পিলাছে ভরিল।। শামল প্রান্তর নাই, মরুময় **খান** চারিগারে আন—ভাব নাহি গান্ন কেহ: অঁধের গহররে শুধু পিশাতের দল कविरक्ष विक्रवे नुष्टा-द्विटें स्थान स्क्रष्ट । त्थरक **(थरक** भीगहर विकास कार्या कार् ছড়াইছে চারিদিকে গরলের রাশ; অয়ত লুকায়ে আঁছে গরলের ভয়ে অমূত বিহীন হ'লে হলয় হতাৰ ! ' কোপায় জোডিরময়—অনন্ত মহান আইস—চাহিয়া দেখ ফাদয়ের পান: তোমার ছোাডির ক্রাক্তর এরে দান पेन्टिन चत्रने द्वारित लिमि प्रवनान।

# राशांन-मञ्जती ।

্রীসুক্ত প্রধান আচার্যোর ব্যাখ্যান-মূলক পাল।

विश्वा ग्राभाग ।

र श्रम क्षार्थिस भारभत श्रास्थात ३३० शायास श्रम

পুর পথ সংস্কোটে চার ছেন্ত্রাধার।

কেন্দ্র পথ জাবি চুল্নিন্দ্রের গেন্সারে।
জোলাবের ব্যালি, সাম্প্র সাধ্যা বিক্রি
প্রিবের মৃত্র স্থা ভ্যান নি

্ছয়ের স্থানীর ব্যাধার সমূর কালেছে। তথ্যসূত্র নত্তিক লায়ত ভাগেল্লেক চালিছে।

ছ জনার দাধ বলে আবানি কাল নয়ে, যে জন পাঠুলকৈ ভ্রং ভাছানে ভুলি । ত ছাল । যদি ভোল ছেল কেল কালে। শাপান কর্মু দুন্দ স্থার বিহনে। ভারি দয়া নাছি স্থার, জীর নাম নাই কথ,

সাম স্থান বিশ্বস্থান, তার মান স্থাহ বর্তন প্রেম ভক্তি নাহি পাও তাঁহার চনকে দ

তবে সাধীনতা পোয়ে কি হলে। ভোচার।
স্থানীনতা অধিকার হইল কি ছার বি

শীদি পাপ পরিষ্ঠি, ভজ্জ দ্যাময় ছবি-ুভবেইও স্থাধীনতা করিবে হে দার।।

ুঙ্গেষ্ট সাধানজ্য কার্তের ছে সার ॥ ৣ স্থাধীন হইয়া এতের জাপন ইড্যায় ।্

কর্বরে করহ দান আত্ম সমুদার। স্থাপন জীবন হন, কর তাঁরে নিগোজ্ঞন

**ब्रह्म (दल्ला कत कस मिम व्य मु**हाग्न ॥

जानित्व समित्रा छेर तिथ तम नम्म । धारिका सर्वेदन बादा किन्नु नम्मस् একাকী আসিলে ভবে, তিন কা সাইতে হবে পথের সম্পুলত, বিনাস না সা: এ দ্যু দিনে এ ব্যান্য মোর লার না এ বিন্দা: ভাষাড় হইয়া হস্ত লুটিন প্রাম্পরে । ইম্বরে শ্রার প্রাণে, এন কবিছু লাই তব মুক্ত ভাষা লোক কলি কা এলা বান ভাই কনি লা লোকে প্রক্রি বানিন । সংক্রি ভাষার প্রেক্তির বানিন।

্ৰাক্ৰাটোৰ নিয়ে টিয়া জুৰ সভিত ■য়ানিশ্ভ পথি নিয়েও জাল ক ছোলি পথিলো () পুটি কোলো, জুলি নাম লোলালো লোলালো ক সুকলালোলো বিশ্বাস লোলাম লোল

পার কার মর মাস করতে লাগ্রিম

উৰিহোস হৈ কোনে, চিব হুদ যে তান্দ্ৰ জায়ু রে কৌসালার দৌ, বিয়ে ৮৮৮ সিও জেলাই स्वाप्तर सूचे अव भीता । । । । । । बालाह । सर ५ जरमः शुक्ति । विद्या अनुस्तात ५ एति **८**श्चर आसामनः १. स्टलाप विकास শিবুলোৰ ভাৰতভ ৰয়ে, ভাতিভ মন। সঞ্জল ।। मान । ता नेष्ठ व्याना करित्र का एवं महाम याने । कल जिल्हा व भारत किसीबाँग कर्नु शह ॥ বিষয়ের ঋতু থকা কেলন আছিছেছে গ্রেন 🕍 देखित कराना भाना। भारताचे जन्मभाभावन त िक्षु योष होत् । श्रीत व्याना वात्रात १ करम कर । হ। জেও জ্ঞান্ত স্বৰাশ্বিদী হইয়া, শায় । অপেনারে নিত্মানি ভাবি এবে। শিশবে। ভাঁতে ছেভে ভিন্ন কেন কিব। ছার বস্ত লয়ে ।। সরবস্থ কি জামার ভার প্রেমন্ত্র্য কারে চ তাৰ প্রেম-দূখ তরে, বিদৰ যোর যায়। খাতে ।।

আমাদের দেব-ভাব বিজ্যতের প্রাচন । দুলাকেকে উন্সীলি জুকা নিংগালিছে ব সুন্ন এই দোনা প্রাচন দেই ক্ষরের ওকে।
মোহেতে মনন কই ক্ষরের কিলে।
মানি মুবা। মানি মধ্যে আহোহিতে গিয়া।
আপনার পুনাঃ পুনঃ প্রেন দেখিয়া।

হুর্বল আপনা জানি কর হাছাকার। কিন্তু জেন দরাময় সহায় ভোমার।। अकारक कत्रह हेक्क् (शटक धर्म-यहा। সে ইচ্ছ। ভোমার হবে অবশ্য সফল।। তার ইচ্ছা এই—তার প্রত্যেক সন্তান। তাঁর প**থে—ধর্ম**-পথে **হ**বে আগুয়ান।। তিনি প্রিয় পুত্র কন্যা স্বার অন্তরে। দেন **শুভ যোগ মতি ভ**রিবার **তরে**॥ হৃদয় খুলিয়া কর তাঁরে আবাধন। লোহের কবাট হৃদি না কর বৈষ্টন।। আসিবেন হাদি তব জানিহ নিশ্চয়। खाकित्व (य (भर्ष) (नन-तन्हे नहामहा। হ্যদর ভাঁছারে ভুমি করছ অপুন। করিবেন ভাহা তিনি অবশ্য এহণ।। কুপুত্র যদ্যপি চায় পিভার শরণ। बर "अभाराय कर--ता उ बि, ठतंत्र"।। বিহুখ ভাছারে পিত। কতু নাহি হ'ন। করে**ন ভাহারে ল**খে ক্রোড়ে আলিস্বর। পর্ম শিভার হয় সেরুপ বাছার। পাপী ভাপী েই চায় ক্ষমা পায় জীর।। প্রেম-অগ্নি যিনি দেখি ভকভের চিতে। চাছেন সে অনলেরে ক্রমিক বার্দ্ধতে।। ভব অনুনাগে তিনি করি বারি দান। ্ কবিশ্বন একেবারে ভা**হারে নির্ক**ণি p শদি ঢাশি তাঁর ধর্ম করিতে বজায়। বলে না দিবেন তিনি তাহার উপায় ? পাণ হ'তে উদ্ধারিতে যদি ভাক তাঁরে। ্ছাত ধরি তুলি নাছি ল'বেন ভোষারে গু ্টীর কাছে গিয়া ভূমি করিনে জন্দন। ্ৰাহি করিবেন ভব জ্ঞান বিমোচন γ भर्थ-हाता हट्य गिम की वर्ग शहरन । কাতর প্রাণে তাঁরে ডাক এক মনে॥ শুনিবেদ নাহি তিনি—ভোগার বচন। काटब कांगि,ना मिटरम कासहा भारत ? জিনি যে কৰুণানয় কাতর-জারণ। অগতির গতি তিনি প্রিক্ট-পাবন ম তাঁর নিকে এক শাদ মদাশি কাড়াঙ "পিডা লও কোলে" বলি জান পানে চাৰ

দেখিবে সহজ্ঞ শাদ ছয়ে অপ্রাস্থ্য । ভোমারে লবেন কোলে জালিয়া সন্থর । আমানের কণা মাত্র শ্রীতি যদি পার । শেক প্রীতি করিবারে আরো বর্জমান ॥ শক প্রীর প্রীতি-স্থা করেন বর্ষণ । অস্তরে বাহিরে সদা দিয়া দরশন ।। এস সবে মলিনভা করি বিস্তর্জন । সরল ক্যানে বাই উচ্চার সদন ।।

### প্রার্থনা।

দ্যা করি কর নাপ। জীবন জীবন !
ভোমারে জীবন ধেন করি সমপুণ।
ভূমি কে জ্যোতির জ্যোতি! ক্যালোকে ভোমার।
বিনাশ বিনাশ মস জনম আঁবার।।
কোমা পানে ক্যমি বেন লাহি নিরন্তর।
পেকোনা খেকোনা নাথ। নরন অন্তর।।
দিন হান গাপনতা করি পরিহার।
একান্ত দিনি এবে হছনু ভোমার।।
বিসমের মরা-জালে আর না ভূলিব।
ভোমাব চরণহারা আর না ছাড়িব।।
এ জাবন ভোমাভেই সনাথ করিব।
নব নব ভক্তি হারে ভোমারে পুজিব।।
আমার সর্বস্থ নাথা। করহে এইব।
আমার সর্বস্থ হও এই আকিঞ্চন।।
ইতি বিংশ বাখ্যান সমপ্তে।

মানাবর শ্রীযুক্ত আদি ব্রাক্ষানমাঙ্গের অধ্যক্ষ . মহাশরের্থ।

मानत निरंत्रम्म।

আদি প্রাক্ষমান্ত গৃহ এত জীর্ণ হইয়াছে
যে ১১ মাঘের মহোৎদরে যে প্রকার বল্প
লোকের সমারোহ হয় তাগাতে সাংঘাতিক
বিপদের সম্ভাবনা। অতএব সাববান হইবার জন্য আপনারদিগকে অসুরোধ জারতেছি বে, আগানী ১১ মাধের প্রাত্তকালের
উৎদব সমাধা করিবার জন্য অনা কোন ছান
নির্দারিত করিতে উদ্যোগী হইবেন। ইতি
২৩ অগ্রহারন ৫৭ প্রাক্ষ্য সম্ভা

প্রিলেক্ট্রিকার সাত্র। জীবিকেট্র ব্যব সাত্র। জানবীনাস্ক্রাবাস পূজাপাদ শ্রীমশহর্ষি দেবেক্ররাথ চাকুর প্রধান আচার্য্য মহোদর শ্রীচরনেসু।

আদি ত্রাক্ষণমাজের সাম্বংদরিক উৎসবের দিন নিকটম্ব হইরাছে — এ উপলক্ষে
সমাজ বাদীর তৃতল গৃহে বহু লোকের সমাগম চইয়া থাকে। কিন্তু গৃহটি জীর্ণ হইরাছে
দেখিশা স্থাকের অধ্যক্ষ ট্রিরী মহাশারেরা
ইহাতে বিপানের আশান্ধা করিয়া আ্যাদিগকে সার্ব্যান হইবার জন এক পান্ধ লিখিযাছেন এবং আগামী ১১ই মালের প্রাক্তঃ—
কালের উংস্ব কার্যা জনা কোন স্থান
নির্দ্ধারিত করিখা তথায় স্থাপা করিতে
বলিয়াছেন। খত এব এক্ষণে আপনকার নিবট আমারদের এই প্রার্থনা ,য আপনি অন্তাহ
করিয়া জা্যানিগের উঞ্জ কার্যা স্থাপা করিন
বার ক্ষা একটা স্থান নির্দ্ধারণ কার্যা কিয়া
ক্রাণ্ডা হরন।

আদি রাক্ষাদন জ কার্য্যালয় সেবক ২৫ অগ্রহায়ণ প্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর বোক্ষাদশ্বং ৫৭ কলিকাতা। সম্পাদক।

> স্থোম্পদ শ্রীযুক্ত বাবু রবীক্রনাথ চাকুর আদি ত্রাক্য-সমাজের সম্পাদক সমাপের :

তোষার ২৫ অনুষ্ঠানের পত্র আমি
প্রাপ্ত হইলার । আগামী ১১ মাদের প্রাত্তকালের ত্রেরোপাসনা কার্য্য সমাধা করিবার
জনা একটি স্থান নির্বাহ্ন করিয়া দিতে আযাকে অনুরোধ করিয়াছ। অতএব আমার
বাটীর বহিঃপ্রাঙ্গণে ততুপযোগী স্থান নির্দ্ধারব্ধ করিয়া দিলাম। সেই স্থানে পবিত্র
জ্রেরোপাসনা স্থানপার হইয়া গেলে আমি
আহলাদিত হইব। ইতি ২৬ অগ্রহায়ন
৫৭ ব্রাক্ষ সম্বধ্।

প্রিদেবেক্সনাথ ঠাকুর।

# বিজ্ঞাপন।

বংকাল হইল আদি ব্ৰাহ্ম-স্মাজের গৃহ নির্মিত হইরাছে। এখন ইহা নিতান্ত জার্ণ। ১১ মা-বের উৎসব উপলক্ষে বহু লো-কের সমাগম হর। ইহাতে বিল-भाग अभिद्रमेत जानका कार्य এ জনা টুটারা এশ্বামে ঐ উৎদন্ োর অনুঠান করিতে নিষেধ ক রিরাছেন। পরে আদি ব্রান্ সমাজের অধ্যক্ষেরা শ্রীমৎ প্রধান আঢাৰ্য্য মহাশ্ৰয়ের নিকট প্রাথনী করাতে তিনি আপনার বাটার বহিঃপ্রাঙ্গণে মাঘোৎদবের স্থান স্থির করিয়া দিয়াছেন। ভাতএব আগাদী ১১ মাঘ রবিবার প্রাতঃ-কালের ত্রশোপাননা আদি ব্রাক্স-সমাজের তৃতল গৃহে না হইয়া শ্রীদৎ প্রধান আচার্য্য মহাশুরের বাটার বহিঃপ্রাঙ্গণে হইবে। এ দিন সৰ্বদাধারণে প্রাতঃকাল ৮ ঘটিকার সময় ঐ স্থানে উপস্থিত হইয়া ব্রন্ধোপাসনা করিবেন।

> জ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

### পত্ৰ।

গারম পূজনীয় শ্রীমশাইবি দেবেজনাথ চাক্র,

শহাশার শ্রীচরণেয়ু ।

शतमे शृक्तनीरहायु-

অসংখ্য প্রবাস পুরঃলার মিবেদন সিদং— ঈশর প্রসাদে ও আপনার ওভ দের্মানালালে বেহালা আলাননাজের ভিৎ্নৰ ধ্বাভিত্তন स्रुंगर्काः इंदेगः दशन । स्रोपश (भारक जा-विन, किन्नु रभ फिरुरगत अभेगई माशाका रय শোক ভাণের লেশ যাত্র ছান্যকে স্পাশ ক ্রিতে,পারে দাই। সকলেট ভালত তিং-সাহৈ তেজীয়ান। বেলা২টা হটতে উপা-भक् अभिक्षितित भगाभग हिंदि হইল। এবং দেখিতে দেখিতে আন-এদের राज्ञित श्राप्त धूर्ग इर्शा (पान 🖒 एकापान জীরাম বাবুমহাশল মুলনকে খালা নিংমে অভর্থেনা করিতে লাগি। দেন। তিন্ত, বা-জিবার অব্যবহিত পর্টের সময়ে ভ্রাক্ষাসমাজে टायाम मधा व जातस देशेश। ও বংশর শ্রীভীগতন্ত্র রায় গানের তার তারণ ক্ষরিয়াছিলেন । বেহালা ও তানিকট্ম শ-লীৰ প্ৰাৰ্থ জন বৰ্ণজ্ঞ ভাষ্মধৰ্মের শ্লোক পাঠে যোগদান করিয়াছিলেন এই डीश्रामिश्राद । अक्शाम श्रृष्टी इंहेर्ड ক্রিয়া লেই(ত বইয়াছিল। श्रीय श्रीतार्ग ্রাত্রীৰে সকলেই বিশেষ ভুপ্তি লাভ করিয়ান ছিলেন। বাঙ্গনা মর্থ ও ভাংপধ্য পাঠের ভার আমার উপর ছিল ৷ বিদেশ इहें द ভীত্রীনাথ বন্দোপাধ্যায়, ত্রীপ্রসন্**তুমার বি**ন याम, बिश्युनाय गड्गड़ि, बीनानविश्वी রড়াল, জ্রীবেণীমাধ্ব পাল, রসা সিডিও न शिश्व दिक्तिमगाद्वतं करशक्षी खिक्क ७ छा-মের ক্যেকজন সভাত প্রাচীন লোক উপ-হিত ছিলেন ৷ পার্বায়ধ্যে সময় জিপাসৰ अ मनक मश्या श्री ४० जन ही

গাব্ধানে মুক্তিও কাক্ষ বিশ্বণ আপনার প্ , বিজ্ঞানীনগানে প্রেমিত হইল দক্ত

वाजिकारक मगाकर्गृह की भगामात्र का-न्तिकिल इहेल । " উপ्राप्ति । जन्मकेमध्याः ৪০০ শতের অধিক ইইবে । শ্রেদ্রাস্থাদ গড়-পড়ি মং শা ও বনুহাটী ভালনমাজের আনি **जार्या बि**भूगाक्यांत गुर्थाशामाश ग्रामशे (व-দীর আসম গ্রহণ করিলেন। উপাসনার ভার মুর্ননাবুর উন্দর এবং বজ্ঞুতা ও উর্বেল ধনের ভার হত্যাভ মহাশহের উপার থাকে। १९७० कि सन् नर्शे रहरू न्य सन्दर्भे यात-প্ৰ নাই সন্থাই ভূইলাভি যেনে । 'সকল বিখ-জেন আলোলন তাল প্ৰীয়া বংসদের মত र र । (हिन, ८५)। विषया है। जानि इश गोरे। ন, আনবাজ উপন্ধে প্ৰায় ১৯৫ জন বাজি काराज्यक थे, हें ८० का मार्गित करतन । किन्न हेश े नका भवादकरे अशोध लिएटा देख অন্ধ্য ভন্ন গায়িতে ইইগ্রাহি**ল** ্ল**ই**ইণ जाभगत का तनादण नित्रमम क्षिमाम ।

বেহু(।) রল: মাজ। সেবকা**্সেবক** । ১৮৮৮ পুরু ২ ৬ গুলুখন্ । উ**্চিন্দা্রনি চট্টোপা্ডা্য**।

বেহাল। এখ ত্রিংশ সাম্বংসরিত্ প্রাক্ষামান্ত্র।

०० कार्तिक त्मामनात अमहास्म क् भारतिहास ।

্ । এক্সন্থাত।

२। व्यक्ति। (श्वारत मध्यमान इटेबा)

ত। প্ৰশাৰ্থকাৰ বিতীয় অধ্যায় হইছে অ**ইম পায়ে।** প্ৰাস্থ সম্মান্ত সংস্কৃত লোক পাঠ।

প্রতি অধাত্রির সংস্কৃত হোক পাঠাকে আলারা

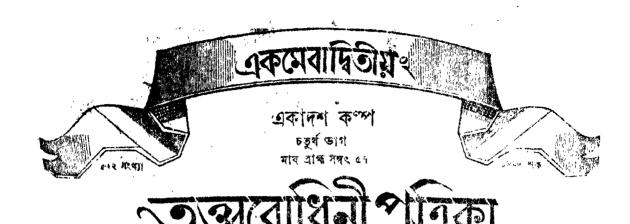
অর্থ এবং সানীবিশেষে তাৎকরা পাঠ।

। । भकेता मुखायमाम इदेश दकाव शाके।

। श्रेगायः

৮ বিশাস্কী ত

ৰ একটোৰাছিল ৷



### আদি ব্ৰাক্ষনমাজ।

ও পেটিয় রবিবাব তারি<mark>কী সম্বৎ</mark> ৫০ । সাজার্যের উপদেশ।

যিনি আমানের আত্মার অন্ত-কালের উপজীবিকা, যিনি দলিচের গন, ফুগাতুরের অলপত ভূষিতের পানীয় বীহাকে পাইলে কাহারো কোন অভাব থাকে না, আত্মার **ুসেই** পরমাধ**নে**র উদ্দেশে আমরা এই উ-প্লাসনা-যদিরে স্থাগত হইয়াছি। বৈ সং"— শুকিনি রস-স্বরূপ ভূপ্তি-হেড়; প্রাতঃকালের নবারণ প্রভাবেঁমন চক্রি-**জ্ঞিন্তের ভৃত্তি-ছেত্, নবোদো**ৰিত বিহন্ন-কো-लाहन देशमन धावदनस्मिद्यत्र जुड्डि-८इजू, অন্ত্ৰিক প্ৰাতঃদৰীরণ বেমন স্পঞ্চাতিয়ের पृक्षि एक्ट्र, एक-वृक्ष-मूक्त्रक्रत्रल स्मा शत्र-মান্ত্রা হৈরপ আন্ধার তৃপ্তি-হৈতু। তিনি मजाः स्वानमन्छः खवा छाहात चाटलाटक ্পান্ধার, জ্ঞান-পিপাদা পান্তি-রাভ করে, তিনি আনন্দরপময়তং ব্যক্তিনতি—তাহার প্ৰত ৰলে আন্ধাৰ প্ৰোৰ-পিপাসা চরিতার্থ भाषाः नियम्बद्ध-छाराज्य नाव-शाम्रक पाक्षतः मगछः भानत्वा ।

অকলাণ দুৱীভূত হইয়া ধান। **অভএৰ** আই্স আমর: ভাছাকে মর্বাভঃকরণের গ-হিত হৃদ্যে অভ্রিন করি। এখন পামাদের শরীরের কোন একটি অঞ্চ কাণ্ডি ইয়া, তথন मक्त अपरे छोरावं वाथ। निवादत्वं अना সচেষ্ট হয়; যখন মধুমক্ষিকার মধুদক্ত অপ-হত হয়, তখন সমত্ মধুমক্ষিকা একতা হইয়া প্রাণ-পণ যত্ত্বে চক্র নির্ম্মাণে প্রয়ন্ত হয়: নেইরূপ আত্মার ব্যথা নিবারণের জন্য—ভগ্ন জ্বাহাকে পুনরুত্থাপিত করিবার জন্য- यनि ज्ञासारमृत सम्स একযোগে মিলিড হইয়া পরম প্রেয়াস্পদ भारमाञ्चाटक बार्खान*े* कटत, उटन कनगाई ভক্তবংসল পর্মারা আত্মাতে আবিভূতি হ'ন; তথন আজা আশ্চৰ্য্যে স্তব্ধ-প্ৰাক্ত হইয়া দেখিতে পায়—ুডাছার পরম ৩৬ এবং পরম স্থাই তাহার জ্ঞানের জন্য সতা আনিয়াছেন—হদয়ের জনা শ্রেম আ-নিয়াছেন-জীবনেয়, জনা মঙ্গল আনিয়া-ছেন এবং তাহার নিজের জনা তিনি সয়ং ্**অ**াসিয়া **উ**পস্থিত হুটুয়াছেন। তথন প্র-**শাঝাকে পাইয়া আত্মা পরম ধন প্রাপ্ত** হয়— ও তাহার দকল অভাবের বুরুরসমাপ্তি হয় !

আমাদের সংখ্যারিক নান। অভাবের নানাদিকে লক্ষ্য; ত্রুক অভাব সমূচিত পুরৰ করিতে গেলে, আর ্কিয়ার অভাবের প্রতি অহর হইয়া দাঁড়ায় ৠ—বে বাজিক অর্থের অভাব পূরণ করিবার অন্য প্রাণ্পণ যত্ন করে সে বাজির হয় তো ত্রান প্রেমের অ-ভাব প্রণ করিবার অবস্রি খাকে না; যে वाकि छात्मत बजाव श्रीतरवत्र कमा निवा-ब्रांजि कर्दशत विक्वारमत बारमामुमाम मन्डक বিভ্ৰান্ত করে; সে বা**ক্তির কাদয় হয় তৈ**। অত্প্রি এবং অশান্তির আশ্বয় হইয়। উঠে ; ইহার বিপরীত এই দেখিটে পাওয়া যায় যে, এক কেবল আত্মার অভীব পূরণেই আ-মাদের সমস্ত অভাবেরই-পুরণ হয়। সাং-मांब्रिक मथल অভাবই तहिम्बी ; वहिम्बी অভার্ব-সকলের প্রাকৃতিই এই যে, এনটির श्वरं पंधिक मादा यञ्च स्वीर्पिठ हरेतन অনাগুলি নিতান্তই উপেকিত হয়। षामदा यनि । षामारमद नमल । षा छारत्त मून বাহির হইতে অন্তরের দিকে খিলাইলা দিই, তাহা হইলে সমস্ত অভাব আছাতে সমাহিত হইয়া একটি-মাত্র অভাবে একা-বসিত হুগ ;--দে অভাব কি পুনা প্ৰযান্ত্ৰীৰ অন্ আ্রার পিগান।। এই একটি অভান আমাদের সমস্ত অভাব-নদীর সাগর-সম্ম; এ অভাব-টি চরিতার্থ হটনে আমাদের সমস্ত অভাবই চরিত। প্রয়। যে ভগবৃত্তক ব্যক্তির এই প্রধান ঋভাব-টি পর্মাজার অপর্যাপ্ত প্রেমভাতার ছারা নিরস্তর আগ্র-র্যান—ভাহার স্থকেই ভ্রবংগীভা ুবলি-য়াছেন

"আপৃথ্যনানমচল প্রতিষ্ঠাং সন্তামাপঃ প্রবিশক্তি ধহণা তবং কানা যাং প্রবিশক্তি করেছিল স্থানিকালি প্রোতি ন কামকানী।"

শির-প্রতিষ্ঠিত আপুর্যামান সমূতে বেষম ভাবেরই বুল আনাব—এ জনরাশি এবেশ করে, তেয়াই কাম্য বিষয় যেমুন আম্মা স্কলিছঃকর

পকল বাঁছাজে প্রবেশ করে তিনিই শাস্তি লাভ করেন, জিনি কাম্য বিষয়ের পশ্চাৎ প্রাশ্চাৎ ধাবমান হ'ন-"তিনি নহেন।" ইছার व्यर्थ এই एवं, প्रवासात कना काकात एवं, কামনা, তাহা সমস্ত কামনার সাগর-সন্ধ-স্তর্গ। আত্মাবেমন সমস্ত ইব্রিয়ের— সমস্ত মনোরভির—সাগর-সন্ধ ; আতার পরমার্থ কামনতে সেইরূপ আমাদের সমস্ত কামনারই সাগর-সঙ্গ। যে ভাগবো**ন্বা**-ভিনর সেই পরমার্থ কামনাটি – অর্থাৎ ঈশার-স্পৃহ!—স্দর-রূপে চরিতার্থ ইই**য়াছে, তাঁ-**হাকে আর কোন কামনার জনা ভাবিতে रवा ना ; किन ना मध्छ निषेत **कन यमन** সাগর সম্প্রের অন্তভূতি, সেইরূপ আমাদের সমস্ত কামনা সেই এক মহা-কামনার অস্ত-ভূতি; এই জনা আমাদের **ঈশর-ম্পৃহা চরি-** ১ তাৰ্থ হইলে সকল কামনাই আপনা আপনি প্রশান্তি লাভ করে। কিন্তু বাঁহারা ঈশর**কে** ছাড়িয়া কান্য বন্দ্ৰর পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবিত হ'ন, তাঁহাদের কামনা কোন-ক্রমেই লাভি-লাভ করিতে পারে না; ভাঁহাদের বিক্লিপ্তা মন এক কামনা হইতে অনা কামনায়, খনা কামনা হইতে অনাভর কামনায়, আশ্বি ঘুরিয়া ফিরিয়া সেই প্রথম কামনায় ক্রমা-গ্ৰু চক্ৰিত হইতে থাকে,—কোন কামনাই প্রকৃত শান্তি-লাভে কৃতকার্যা হয় না; ভাই ্ত্ৰাক্ষধৰ্ম বুলেন

্ "ন জাতু কাষঃ কামানাং উপজোগেন পামাতি; । ছবিৰা ক্ষৰয়েৰি ভূব এলাভিবৰ্ততে।"

कामा रेख गकरमा छेलरेखांग बाह्य काल नात कहरता निद्धि एस ना—टेखांछ प्रके आख नहित नाम चारता होत लेकिएक बारक। विश्व लक्ष्योजात कना चालात रव कालाना अ चलार है बात्यर प्रकार मुख्या जारवहरे देश चलार-अस्ता के चलावित्र है

ক্তিকে চরিতার্থ করিতে পারি এমন আর কোন অভাবকেই নছে; আর. এ অভাবটির হতই পূরণ হয় ততই আর আব অভাবের বৈধ চরিতার্থতার পথ সহজে উত্যুক্ত হইয়া খায়। কোন বিদেশীয় ভগবদ্ধক মহাত্ম। বলিয়াছেন যে শূর্পাত্রে ঈগরের অমূত নি-কেতন অন্বেষণ কর--আর যাথা কিছু তো-মার আবশ্যক সমস্তই যথাকালে কোমাতে আসিয়া বর্ত্তির। ইছার জর্থ এ নয় যে, কলকোর জন্য অদ্য আমাদিগকে ভাবিতে হইবে না—এ নছে খে, আমরা হস্তপদ ওটা-हेश्रा दिनिहा धाकिरम जागारमत मथलुक-র্কুল্য কাষ্য আগনা-আপনি মুনিক্সন্ন হট্য। शहरव-अभरह (१, मध्भात छ। जिल्ला करन গিয়। ঈশরাম্বেষণ ফরিন্ডে হইবে। আমরা मथन मरभात-धन्तनाग्न जिंदन इरे. उरन भटन হয় বটে যে, অরশ্যের নিড়াত প্রদেশে আন মরা শান্তি পাইতে পারি ; কিন্ধ আনাদের নংদার-যন্ত্রণার মূল কি-তাহা ধদি আহরা একবার ভাবিয়া কেখি, তবে দেখিতে পাই (य, जायता केचत इहेट ज याउला इहेशा मध-गांत-कार्ट्स 🗠 इंड 🏻 इंडे विलशा, जागार्जित সহজ কার্যাও কঠিন হইয়া উঠে, ভাল বন্ধও বিষাক্ত হইয়া উঠে, জীবন যন্ত্ৰশময় হুইয়া 👺ঠে। যেখানে কোন যন্ত্রণারই সম্ভাবনা ছिल ना-- विष्य कि क्षाण यन (मणान-হইতেও যন্ত্রণা টানিয়া আনিয়া ছদয়াভা-खद्र स्नाश्त्मत्र जाकात्र भून कतिएक थाएक। এ অবস্থায় আমরা বলেই যাই, আর, গুচেই পাকি,—কোথাও আমাদের শান্তি নাই। कि बाट्य यनि वासन जिसन्दरक क्रिंग्टर वा-स्तान कति, छाहा इहेटल डीहांत বারিতে আমাদের মন এরাণ প্রশাস্ত উদ্ধান ও ইলিশ্ব হয় যে, সংগার-যন্ত্রণার তথ্ন আর विय थाटक ना ; जर्मन सामाटमन मद्भन काव भितिष्ठा यात्र : कर्कटवाक लाग बाह्य श्रद्धा

আমাদের নিকট অন্ধকারাছেয় ও জটিন ব-লিখা প্রতীয়মান হইতেছিল—তথন ডাহা তিমির-মুক্ত, সরল এবং পরিকার দেখিতে পাওরা যায়; ভখন সে পথে চলা যন্ত্রণচ দায়ক হওয়া দূরে থাকুক্—ভাহা ভৃত্তিং আকর হইয়া উঠে। পূর্বের শেরপ মনের ভাব ছিল তাথা শাস্তির মধ্য হইতেও গ্রেণ: আকর্ষণ করিয়া আনিত, এখন মেরপ মনের ভাব—তাহা যন্ত্রণার মধ্য হইতেও শাস্তি আকর্ষণ করিয়া আনিয়া স্থান্য অনতে ভাতার পর্ব করিতে থাকে। আমাদের আলাতে ধদি প্রাণ-সরুপ পর্যালার বিন্দ্-নাম অম্তরণ নিপ্তিত হয়, তবে আমাদেব স্পর্বেন্দিয় হুইনেত ভাহার প্রভাগ বিনির্গত হর্ষা বায়ুর লোয নপ্ত করে—সঞ্জি<u>ক্</u>রি হইতে ভাহার এভা বিনিগত হইচা আ লোকের দোষ নত্তী করে, আমাদের চার্লিকে পুণোর জ্বোতি উদ্ধানত হয়। সমস্ত প্রকৃতির **দার মন্থন** করিয়া যে অমৃত পাওয়া যায়—পৃথিবী হইতে মৌরভায়ত, বারি হইতে যদামূত, অগ্নি হইতে তেলে২মূদ, বায়ু হইতে স্পাণায়ত, আকাশ হইতে শকা- : মৃত, এই**রূপ** যেখান হইতে যত বিছু জ-মৃত মন্থন করিয়া পাওয়া যায়, সমস্ত অমৃত যদি একপাত্রে জড়ে। করা যায়, ভবে ভাহা ঈশরের প্রেমায়তের কণা মাত্র বলিয়াও গণ্য হয় না; অতএব বাঁহার আত্ম। ঈশবের ভ্রেমায়তে পরিপূর্ণ হয়, তিনি যে প্রকৃতিতে নৃতন প্রকৃতি বিতরণ করিয়রন ইহাতে আর আশ্চর্যা কি ? ইতিহাসে দেখিতে পাওয়া যায় যে, ঈশবের তেমোন্মভ একা এক ব্যক্তি কোথায় কোন্ এক কোৰ্বে আ-বিস্তৃতি হ'ন – আর, ক্তিপয় শতা দীর মধ্যে मग्छ পृथिवीत 🗐 फिनिया याय। ५ मधे <u>८भव-च्ल</u>्रक्तीय वस्ठ-तरमत खना अन्द्रत আনরা স্বান্ধবৈ সুমাগত হইয়াছি—তাহার

যৎকিঞ্চিং উপার্জন না করিয়া আমরা যেন
এখান হইতে না উটি। তিনি আমাদের
আত্মার অভান্তরেই বর্তুমান আছেন—আমাদিগকে দূরে ঘাইতে ছইবে না। প্রাণ
আমাদের কত না যত্ত্বে সামজী—তবে,
যিনি সাক্ষাৎ প্রাণ-স্বরূপ, তাহাকে কেনই
বা যত্ত্বপূর্বক ফদ্যাভান্তরে সঞ্চিত না করিবাং তাহাকে আমরা আত্মার অভান্তরে
উপার্জন করিতে পারিলে, বর্তুমান মুছুর্তেই
অনন্ত জীবন উপার্জন করি—তিনিই অয়ত
জীবনের একমাত্র উৎস। অত্রেব ভাঁহাকে
আইস আমরা হৃদয়ের সহিত আত্মার অভান্তর
রতম নিকেতনে আহ্বান করি।

হে পরিষাত্মন্—আগানের ত্যিত আতার জীবন বারি! তুমি আনাদের সমস্ত
হৃদয় পূর্ব করিয়া আমাদের আত্মাতে আসীন হও! আমাদের হৃদয়ের অন্তরতম
কামনা তোমারই পদ-তলে বিলীন হইতেছে, তোমার অয়ত বারির জন্য আমাদের
প্রাণ হ, হা করিয়। জেলন করিতেছে;—
মাতা যেমন শিশুকে অন পান দিয়া শীত্র করে, বিদ্ধু যেমন বফুকে মধুর সাজুনা বাকে।
শীতল করে—সেইরপ তুমি তোমার অয়ত
প্রেমবারি বর্ষা করিয়া আমাদের তথ্য হৃদ য়েক শীতল কর—তাহা হৃইলেই আমরা
ইহ-কাল পরকাল—অন্ত জীবনির মত কৃতকৃতাথ হট।

ওঁ একমেবাদিতীয়ং।

### শ্রের নিয়ম।

নানা নেশের নানা প্রকার আচার-বার-ব্রের পর্যালোচনা করিয়া দেখিলে কহসা হলে হইতে পারে বে, বর্ম-নিয়নের কিছুই হিরতা নাই—এম্বা কেবল একটা কথান কথা। কিছু সেই-সকল বিভিন্ন আচার-বারহারের ুন্ধ। বির-চিত্তে ভলাইখা দেখিলে ভাহার অবিকল বিপরীত দেখিতে পাওয়া, ফাইবে 🕫 দেখিতে পাওয়া বাইবে যে, স্ব্রিট মমু-(सात बलःकतर्ग धरर्मात नित्रम नानाधिक श्र-রিমাণে কার্য্য করিয়া আসিতেছে। আসিকা-দেশের অসুলিয়ারা (**ক্রিট**ারত) বাাধ-রতি ভিন্ন আর কিছুই জানে না ; যাহা উপস্থিত পায় তাহাই ভক্ষা করে; কলা কি থাইবে অদ্য তাহা ভাবে না; খাদা সন্মুখে পাইলে থামিতে জানে না; উপবাস করিতেছে তো উপবাসই করিতেছে,—কিন্তু দৈৰ-যোগে যদি একটা বড়-রক্ষের শিকার সংগ্রহ কৰ্ রিতে পারিল, তবে তাহার সংস্কটা যতক্ষণ ন: উদলন্ধ করে, ততক্ষণ ভাহাকে ছাড়ে না: অদ্যকার পুঁজি অদাই পার ত্রিয়া एक्ट, दलाकात जना कि**डूहे अवि**निश्चे **त्राहश** ना। ইহাদের মধ্যে धनि কোন অসাধারণ ব্যক্তি একটা শাংমারোগের বারে <mark>খিনা</mark>। অংশ ধ্বংশ করিয়া চারি আনা **অংশ** ক্রিয়ার কার জন্য সঞ্চিত করিয়া রাখে, ভবে মে-তাহার অনামান্য কার্য্য কত-না বৈত্য সহি ষ্তা ও মনঃসংযদের পরিচয় প্রদান করে। এইরপ ভার্যাই এখানকার এক মাতা বুর্মী কার্যা। "এ ধর্ম কার্যা—আর কিছুই নয়-কলাকার প্রতি লক্ষা করিয়া অদাকার লোক होइंडिटक मगन कहा; এक्रम कार्यात्र मणा चौर्धित अभिक आज किছूरे नटर । यार्थभिक এখানে নিভাৰ চলিত অর্থে ব্যবহাত হৈছ-रेक्ट्र - अपि दर्गन मर्कान। गतन् थारकं । भनिकाल था'व-- अन भत'व, **रेशा**हे यादात कीयतनई अक्याज जिल्ला जानादनहें त्नादन शार्थनतं बद्दन : अक्ष द्वर्तन कानवात के जिक क्नलहे अक्षेत्रका सार्वनात्स्य विका । 🌁 nit- uichs Brita miscelle feding नहि, (त्रश्रात्व नाहितिक कुनन अवदः नाम

-

প্রভেদ। সেই-প্রেমাদি রতির চরিতার্থতার छन्दार मानितक कुनल निर्देश करते , कि छ স্লেছ-প্রেমাদির কক্ষ্যের ভিতর শুধু কেবল আপনার হিত নহৈ—অনোরও হিত—অন্ত-ভূত রহিয়াছে,—স্তরাং এ-সকল হতির পরিচালনা স্থাকে ছাড়াইয়া উঠে; প্রত্যুত, (एथारन एक रकतन याशनात भातीतिक সুথ-প্ৰচ**ন্দতা মনু**কোর একমাত্র কাম্য বস্তু, সৈখানে অন্যের হিতের প্রতি লক্ষ্মা-ধানের পথ এখনে৷ উন্মুক্ত হয় নাই; স্থত-दाः स्मिष्टेशास्त्रे आर्थत् – थाउँ **श्वार्**थत्— निक मृद्धि पर्नक-मिश्रादन (प्रथा (प्रश्ना এই आर्थाफिन्ने काश्चिक कूमल-ि निर्विष्य तकः कतित्व इहेरल लाखापि ध्रवि-मक-লকে কিয়ৎ গরিষাণে দমন করা আবশাক,— ইহারই নান স্বার্থ দারা প্রস্তুতিকে নিয়মিত করা; নিষয় তো এই—কিন্তু ইহাই এখান-কার পক্ষে এমনি কঠিন কার্যা গে, অতি অল্প লোকেই ভাহ। পারে;—বে বাজি দুই निरमत थामा मन्यूरथ शहित्म अक जित्महें ভাহা উদরস্থ না করে, সে ব্যক্তি এখানকার অসাধারণ ব্যক্তি।

এই সকল জন্থলিয়ানিলের অনতিদ্রে
গুলম কান্টাদের বসতি-স্থান। গুল্ম কান্টাদের বসতি-স্থান। গুল্ম কান্টাদির বসতি-স্থান। গুলম কিশেষক্রেরাতে ইহার। সার্থের আদ্দাদি বিশেষরূপে অবগত হইয়াছে। মুগ্রয়া-লক পশুর
মাংস তো আছেই—তন্তিম গো-তুম ও
ভূটা ইহাদের প্রধান উপ্যাবিকা: হন্তীর
যাংস কিশেষভাগান উপ্যাবিকা: হন্তীর
যাংস কিশেষভাগান উপ্যাবিকা: হন্তীর
যাংস কিশেষভাগান উপ্যাবিকা: হন্তীর
যাংস কিশেষভাগান উপ্যাবিকা: হন্তীর
বাংস কিশেষভাগান উপ্যাবিকা
হালের প্রক প্রক্রের অনেকগুলি ক্রী আর, গৃহপ্তির নিজের একটি
স্বত্র ক্রীর তোল আছেই, ত্রিন, যাহার
যাতক্রিক্রী—তাহার আল্য তত্ত্বলি ক্রী
ব্রের ন্নাই, আর, প্রক-একটি ক্রীর এক-

এফটি স্ত্রীর বাদস্থান। দেই কুটার গুলি চক্রা-কারে সমিবেশিত হইয়া মাপথান কার উঠা-নৈর চারি দিক্ বেপ্টন করিয়া ভাবস্থিতি করে, ও সেই উঠানে গ্রহের গরুরা মুক্ত ভাবে বিচরণ করে। এক কথায় বলিতে হইলে--এক একটি আলয় এচ একটি অনায়ত গোলাল ঘর, ও তাহার চারি দিলের কুটার-मछनी रमरे शिक्षांन घरतत रवहेंन-প্রिम । ইহাদের কুষি-কার্য্য এরপ অপ্রকৃত্তি গে. ইহারা তল-কর্ষণ জ লে না। ইহাদের শ্রীয়া শুদ্দ কেবল লক্ষণাদি করিয়াই পাল পাম না; ক্ষেত্রের কার্য্য, ক্টার-নির্ম্মাণ, মোট বহা, প্রভৃতি যত কিছু কটকর ব্যাপার— मभस्ट स्नोत ऋषा जानाहिया, यानी, वाहित्व পশু হতা: ও গৃহে স্ত্রী-ছভার কাছাকাছি, এই হুয়ের ন্যে এ-পাশ ও প্লাশ করিয়া দিনপাত করে। প্রাকে দিল। মুরে মজুরের काषा करारेशा मरेशत जनारे सारी छाराक ঘরে রাখে ও প্রতিপালন করে—নহিলে তাঁলাকে হর হইতে বাহির করিল দিবার বোৰ আগত ছিল না। সামী আপনার সার্থের উদ্দেশে—গত অল্প বায়ে পারে— স্ত্ৰীকে প্ৰাৰ্থে বাঁচ।ইয়া বাথিতে চেঙা কৰে; ও স্বাদীর উচ্চিপ্ত।বলেষ যৎ-কল্প অন্নের এক-गांड एतमाप्र खी. कीवन अवर प्रवृति निक-স্থলেকার-ক্লেশ বর্তিয়া থাকে। এক তে। আন-পেটা অন, ভাছার উপন্তেটার পার-শ্রম, তাহার উপর সন্তান এতিপালন, তাহার উপর দপত্নী-কলহ, তাহাব বিগব সামীর উৎপীতৃন,—ক্ষীরা যে নধা-গোরন হইতে-না-হইতেই বাৰ্দ্ধকে প্ৰাৰ্ণৰ ক্ৰিয়া गानव-बीला मध्यत्र करते - इंशास्त्र जाहारम्ब কোন অপরাধ নাই; আর, বিবেচনা করিয়া দৈখিলে—ভাছাই ভাছাদের পরম সৌভাগা। এই নক্ল গৃহস্থ কান্ট্রীরা জন্মুলিয়াদিগের व्यद्भक्षा व्यद्भक भित्रमार्थ मन्त्रा भृति कथिन

জভূলিয়াদের ধর্ম-নিয়ম বড় জোর এই পর্যান্ত न छरव रय, धार्डि-विरमयरक सार्थ मात्रा निव-মিত করিতে হইবে। গৃহ**স্থ** কান্<u>নীরা অং</u>প-ক্ষাকৃত অধিক প্রিমাণে স্থার্থের নিয়ন্টি যানিয়া চলে; তদ্যতীত, প্রিথানকার বৃতন আর-একটি ধর্মা-নিয়ম এই ইওয়া উচিত যে, সার্থকে গাহস্থা দারা নিয়মিত করিতে **रहे**त्त,—छेहिं करन नम्र −्रहेट कित्र কালে তাহাই হইয়। দাড়ায়। কিন্তু গাহ-त्याद अथादन निजासूर शैनावशा; - कन्ता-विक्रमग्रह ्रथानकात्रं कना। भट्टामानः श्री এখানে সামীর সহধর্মিণী হাধ্য়া দূরে থাকুক্ 🛨 मानी অংপকাও অধন। 'পুত্ৰ বড় হইলে পাছে সে মাতাকে ঘরের দাদী অপেকা অধিক কিছু মনে করে, এজনা এখানকার শাস্ত্র এই যে, বয়ঃপ্রাপ্ত প্রের পক্ষে গাভার বাধা হওয়া কা-পুরুষের লকণ ; কিছা পুত্রের গোঁপে দাড়ি উঠিতে না উঠিতেই সে যদি মাতাকে প্রহার করিতে দেখে, তবে কানে म स्व এक्জन वीद-श्रूक्य इहेर्र-- এ दिवस्य আর কাহারে। অণু-মাত্র সংশগ্ন (থাকে না। दक्षाना विनया अक्टो एंग, नामकी, खराद যাহাকে আমরা **দং**কুলেডিত ভজাবাবছাল বলি, ভাষা এখানকার জিলীমান স্থান পায়তে - **बेहा**८५व यटेशा ८क्ছ यपि : श्रेतृ वि भारत ना । এবং ক্রেহ-নমতার বশবর্তী ছইরী গাইবৈছার নিয়ন কিন্তুৎ প্রিমাণে মানিয়া চলে, স্থান্তিক किय़ ९- शतिभार्ग शाह दा- हाता नियमि वेदत्र <u>—স্ত্রীকে মর্মান্তিক প্রহার না করে ও নির্দান্ত</u> পদিত্রের মত ন। খাটাম, তবে তাহাই তাই।ম পক্ষে যথেও ধর্মা-কার্য।

অতপরঃ আরব নেশের সরভূমির মুধে একবার দৃষ্টি নিক্ষেপ করা যা'ক। চারি দিকে বিশাল মরভূমি পুধু করিতেছে— তাহার মধ্যে এখানে তিন চারি ঘর সুহস্ম ( গৃহত ঠিকু নয়—তাবুত ) ও আহাম ব্য

দূরে এরাপ আর কভক-গুলি ঘর, বাস করি-তেছে। পর্জ্ঞারের ফল, কূপের বলী, উদ্ভৌর তুগ্ধ, মেষ মাংস, কদাচিৎ কথনো বা উট্টের गारम हेहारनत जीवरनत अक्साज मंचन । কার্টেই, লোকাচার বলিয়া একটা যে,সামগ্রী, ত্থাৎ সমাজের নানা অঙ্গ-প্রভার্কের সংঘর্ষে যেরূপ আভার বাবহার প্রসূত হয়— সেরূপ (कान-किছू, এशान श्रांन शाहेर्ड शाद नाः তথাপি কুল-পরম্পারা-ক্রমে যেরূপ আচার-ব্যবহার চলিয়া আসিতেছে, তাহা এখানে দ-करलवर मछखनीयः; क्लाहादर अभारन मर्स-প্রধান নিয়ামত। কৌলীনোর মর্য্যাদা ইছারা কিয়ৎপরিমাণে অবগত আছে; ইচার দামানা একটি উনাহরণ এই যে, ইহাদের অনেকের নামের সঙ্গে "অমুক্রে সন্তান" এই ভাবের একটি উপাধি গ্রাথত খাকে, - ফেমন বেন্-জামিন্ অর্থাৎ জামিন বংশের সন্তান। এই সকল অসভা আরবেরা যদিচ দুস্থারভি ভিন্ন আর কিছুই জানে না, তথাপি, শুদ্ধ কেবল কুলাসারের কলবভাঁ হইয়। অভ্যাগত আতিখির स्त्रापि **इत्रां**च कारक;— हेशहे **हेश**रिनंत भटक राष्ट्र भर्च-कार्य। এরূপ বাসভা लादकता यनि कूनाठात्रदक्षे मदकाष्ठ धनी-नियम गरम कत्त्र – ज्रात जाशाएत रम कथा নিতাপ্ত অবভার সামগ্রী নহে; এখানকার भरक छारा वास्त्रविक है भदर्वतीक धर्मा-नियम-ভাষা বাস্তবিকই ঈগরের আদেশ; কারণ, এখানে তাহা অপেকা উচ্চ আদর্শ আর किछू हे **इहेटज**्भारत ना। देशारनत सी-পুত্রেরা ক্লেছ এবং যত্ত্বের সামগ্রী—গৃহপজিরা **ङ**क्तित भाषा । स्थार्थ, असारन, नाहरेसात भवीन,—भादीकिक वान सान्तिक cites ज्यीत ; यानिक धार्क वर्गार देश सम्ब World Motors Albus Hebit H कतिरत-७६ दक्तक चालकाक नेमें कि मश्र शृत्यत विकास विदेश वि

ইহারা সাণ্য-মতে অতিথি-দেবার ত্রুটি করে ना। कर्फालनियरण बार्ड "रिवधानवः श्रवि-শত্যতিথিত্র ক্মিণো গুহানু" অগ্নির ন্যায় অতিথি গ্রহে প্রবেশ করেন, অর্থাৎ উাহাকে হদি না শান্ত করা যাগ তবে ভাঁহার নিশাদে शह पक्ष इरेश यारेता इरेल इस कि,--আরব দেশীয় অসভাদিগের আতিগা কিছু অদুত প্ৰকাৰ;—অতিথি যতক্ষণ গৃহে গাকে, ততক্ষণ দে মস্তকের মণি; কিন্তু দেই ছতিথি যথন গৃহাভিমুখে আসিতেছে—গুহে প্রেশ ক্রিতে কেবল বালি—তখন ঐ আবৰ ভন্ধ-বেরা ভাহার সর্ববিদ অপহরণ করিতে কিছু মাত্র লজ্জিত বা ক্ঠিত হয় না; তবে, অভি-थित जान नावर कार्या स्वाक्ताल मन्ध्रत করিয়া -ভাহার পর-ভাহাকে গুহে আনিয়া ভাষাৰ সংখাতিত সংকার কৰে ও ভাষাকে গন্তব্য পথে নিবাপদে অগ্রনর করিয়া দেয়: এই যে করে—ইহাই এখানকার পক্ষে খথেপ্ত ধর্ম রাষা। পরের যে এইটি নিয়মের কণা বলা হইয়াছে, কি না – প্রস্তিকে স্থাণ দারা ও সার্থকে গার্হস্কা দ্বারা নিয়মিজ করিতে হইবে, এ দুইটি নিয়ম এখানে অপেকা কৃত অধিক পরিমাণে প্রচলিত; তদ্যতীতি, এখানে नरवारचिष्ठ जात-अकिं धर्मा-नियम এই रय. কোলীনা ৰাবাঁ (অগাঁৎ কুলোচিত ভদতা-षाता) गार्श्वारक निग्नमिछ कदिएछ रहेरत। গাৰ্ছৰা হইতে কৌলীনা, অথবা যাহা একই কণা—ভক্তা, কিরুপে অল্লে অল্লে উদ্মেষিত হয়, এই স্থানে ভাহার ভাতি একবার দৃষ্টি নিকেপ করা আবশ্যক।

গৃহপতির বর্থন সন্তান দন্ততি বিশুত হট্ম। এক গৃহহর অবিবাসীর। নানা গৃহহ ছট্কিয়া পড়ে, তথন গৃহপতি সেই সকল গৃহহর মধাছলে বাস করিয়া কুলপতি হট্ম। দাঁড়া'ন। তিনি সকলকেই আপনার সন্তান-সন্ততি জানিয়া সকলেকই অপনার সন্তান- করেন; কাজেই সকলে ভাঁহাকে ভক্তি-শ্রদ্ধা করে ও তাঁহার আদেশ গালন করে। তিনি যদি অবিবেচনা-পূর্মক যাহাকে তা-হাকে যাহা তাহা আদেশ করেন তবে ভা-হার শাসন অচিবে উজ্জ্ঞল হইয়া নায়; তাহা ন। করিয়া, যে-সকল মঞ্জ-নিভ্রম পুরু-যাবুক্তমে চলিয়া আদিতেতে, ভাহাই তিনি व्यामर्ग-अम्बीएड माँ । क्वाइएड श्राम श्राम তिमि ऐने पर्वाप वार पृष्ठी छ हातः এই অভি-खाय-ि वाक कातन (ग. "वामिन् वधारन भट्य मर्का---कामात केशत कात तक्हें নাই—মামি যাহা ইচ্ছা করি ভাছাই করিতে পারি, তবুও দেখ---পূর্ব-পুরুস্দিতের মঙ্গল নিঃমের অধানে মান্তক অবনত করিয়া আমি আপনাকে কতার্থ মনে করিতেছি; অভ এব নের্রাপ বর। ভোমাদের আবে। কভ ন। ক-র্ভবা।" **কুলে**র বোন অবাধা সন্তান হদি কোন-প্রকায় কুতর্ব উপাধন করে, ভবে কুলপতি পূর্ব্বপ্রুষদিলের নজির দেখাইয়া ভাহার মুখ বন্ধ করিবার চেটা করেন;— তিনি হয় তে৷ বলেন "পূর্স্বপুরুচের৷ অমুক অমুক নিয়মে চলিতেন বলিয়া তাঁহাবা তিন শত বংসর জীবিত থাকিতেন; তাঁহাদের বাহুংল এরপ ছিল যে, সমগ্র একটা তাল-গাছ ভাষারা অবনীলাজমে উৎপাটন করিয়া ফেলিতেন; তোমরাও সেইরূপ নির্মে চ-লিলে তোমরাও উহোদের মত আয়ুখ্মান্ वनवान् ७ वीर्वावान् इहेटन ।" এরূপ वनवर এবং অকাট্য প্রযাণের উপর কাহারো আর কোন কথা চলিতে পারে না। এই স্থান-**हिट्टि इं** डिहाम-প्রाণाদির नीজ-বপনের প্রথম **দূত্রপাত হয়। এইরপ** করিঃ। ক্র**মে** यथन ट्राहिण थाहाद-रावहाद हो जि-नी जि कूनत्करक वस्त्र हश्च, उथन ममछ शुरुद्र गार्ट्या (मर्टे मकन तीष्ठि नीष्ठि घाता निय-মিত হয়। প্রসঙ্গাধীন, এই একটি কথার

खिला क्यांत खावमाक मत्न इहेल्ड रिं, यक कि कू नना इहेन ममलहे- युक्त निध-हानि का वि एगाँ वा पिन्हा यक मश्कर्म भागा स्थान प्रमान होना। ममल निवतन यानि थात्मा श्री प्रमान होना। ममल निवतन यानि खात्मा श्री प्रमान श्री प्रमान निवत नाहा क्र बात क्यांत्र क्यांत्र नामा क्रिक्त नामा क्यां महित्रा वक्यंत्र क्यां मित्र नामा क्यां महित्रा वक्यंत्र क्यां मित्र नामा क्यां महा। क्यां क्यांत्र क्यांत्र निमान क्यां महा। क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां निमान क्यां निवत महा करें रिंग प्रमान क्यां क्यां क्यां निमान क्यां निवत क्यां क्यां क्यां क्यां निवत निवत क्यां क्यां

এক গৃহ হইতে যেমন নানা/ গৃহ প্রসূত रहेश मकरल अकरे कून-मूद्य वाषक हो, সেইরপ এক কুল হইতে নানা কুল প্রসূত ষ্ট্য়া সকলে একই সমাতা সূত্রে এবিত হয়। এই সময়ে কুলগতিং সিংহাদনে লোকপতি আবিভুতি হ'ন; কুলপতিদিগের মধ্যে যিনি সর্বাদেকা ওজ্বী, তিনি দেশের রাজা হ-देश निष्।'न। এখন রাজসভাই দেশের মথিত সারাংশ এবং অনুকর্ণীয় আ मर्ग। द्रा धाम हाज्यांनीत यछ निसंहर हो, সে গ্রাম সভ্যতা-মোপানে তত অপ্রবর্তী। ক্রমে রাজ-গভার সভ্যতা সমস্ত দৌলন্য নানাধিক পরিব্যাপ্ত হইয়া—তাতাই দেবার সভাত। হইয়া দাঁড়ায়। কিল্প দূর দূর-্শিত পল্লীপ্রামের প্রফার। সে মভ্যতার বড এবলৈ ধার ধারে না; তাহারা পুরের্ব যেমন স্বাস্থ কুলপতির অধীনে, অবস্থিতি করিত, এখনো। व्यत्नको। त्मरे छारवरि व्यवस्थि करता । त्य श्रापन बाजप्रांभीत एक निकर्ववर्धी, त्मरे छान দেশের কুর্লাচার ওতই ক্লোকার্চার ছারা নিয়-बिष्ठ इंग्री शूर्ट्य रंग किन्ति धर्मा निक्करणद क्या तना है आहर, कि ना श्राहित कार्य बाताः यार्थक्ति सर्वे वाता, गार्थकाद्व की-

লীনা ছারা, নিয়মত করিতে হইরে, এ বিনটি নিয়ম তো আছেই—তহাতীত এখানে নবোমেছিত আর-একটি ধর্মা নিয়ম এই যে, কোলীনকে সভাতা-ছারা নিয়মিত করিতে হইবে।

শ্বভাতার নূতন উদ্দেকের সময়, রাজ-ধানীর নিক্টবর্তী কুলপতিদিপের প্রাধান্য রাজারী দোর্দ্ধগুড়াপের অভ্যন্তরে কর-লিত হ**ইয়া** যায়; 'কন্তু দূরবটী কুলগাতি-দিগের 🔌 তাপ মুনোনিক পরিমানে অব্যা-হত থাকে। এই-সকল অপেকান্তত স্থানীন ভুনপতির। দলক্ষ হইয়া গোকপতির প্র-ভাগ প্রভিরোধ করিবার চেক্টা করে। এরূপ অৱস্থায় <del>+</del> জ্রাকলিয়ে লোকপতি, **রাজ**া এবং वात-अक भित्र कुलि-नुष्ट छल्टाई बन-সাধারণকে আগনার আপনার দলে টানিতে মাবশেষ প্রায়া পানি; স্কুতরাং লোকরঞ্জন जूरे मटलबरे ७.धानजग कार्या स्टेश माजाय । हेगात कल अहे ६३ (य, खन-माधादानद छेनद াজা এবং কুলপতি-ব্যুহ উভয়েরই অভ্যা-তাবের পর্য ক্রমশই সংকীর্ণ হইয়। আসিতে থাকে; অবশেষে সে পথ এরূপ অবরুদ্ধ रहेका याय (य, ताला धर्मात अपूरकी रहेता রাজ্য শাসন না করিলে তাহার রাজত্ব কিছু-তেই রক্ষা পাইতে পারে না। কালে আমাদের দেশের ক্ষাত্রয়-প্রভাপ ্রাঞ্জ ক্ষণের জ্বন্তেজ ঘারা সময়ে সময়ে পাঁক পুৰাগিত হ**ই**ত; এজন্য এরূপ **অনু**যান নি-্ল कुछ जमक्र नद्द १४, जडीव धुर्त्वकारम লোকপতির দল ক্রমে ক্রমে ক্রজিয় জাতিতে. ७ क्लीजिंद पन करम करम खामन मा-তিতে পরিণত হইয়াছিল। ুকুলপতিরা হৈ লোকপতির শাহত বাছবলে শাটিয়া উ ঠিতে পারিবেন—ছাহার ছাও অৱই মু-खादना ; कारकहे, श्रष्टाखन विहीन कूनन जिता त्याकरकन कार्या नेमांचक कार्याका

ছিইলেন ও প্রতাপোমত রাজা গে দিকে ू छ उता बदनादगांशी इहेटलन ना। छाटमांश িট্টপনিষ্টেদ আছে যে, বাকাই বশিষ্ঠ (অর্থাৎ ্লাক্কে বশ করিতে পারে—তাই বশিষ্ঠ); াকাকে থিনি বশিষ্ঠ জানেন ভিনি জ্ঞাতি-বর্গের মধ্যে বশিষ্ঠ হ'ন (মর্পাৎ ভাঁচাদিগকে বশ করেন)। ইহাতে সহজেই প্রতীয়মান হইতে পারে যে, পুরাকালে বশিষ্ঠ নামক বিশেষ একজন মহর্ষি থাক্ন বা না খাকুন--কিন্তু এটা ছিব যে, ঐ নামটি প্রধান প্রাধান कुन्रशिक्तित्व छिलानि जिन्। अहे भगत्य, রাজা বাত্রলা দারা লোকের বল-বীস্যানশ ফ্রিলেন, কুলপ্তিরা স্থাব থালা লোকের क्षम्य वर्भ कतिराम्। छन्-ग'दावर्गत सप्तय रिष्टू क्य नामधी नत्य - डोहात बदन दर्भ হইয়া কুলপতির শাণাক বে মনবে সম্বে 'লোকপতির শ্রাবের উপত্রে জ্ঞলাভ করি**ন**ে ইচা কিছুই আশ্চান নহে। গুলপতি-লানটেব সহিত লোকপতি-বিখামত্রেব সংগ্রাণের অ-ভান্তরে কত-যে ঐতিহানিক রহ নাটি-চাপা রহিয়াছে, গৃহা কে বলিতে পারে ? বিধানিত্র नामिष्टे देशिकादल वाक कतिराज्य (य. বিশামিত কুলপতিদিগের ন্যায় হৈলী-ছারা বিষের লোককে অর্থাই জন্মাধারণকে বশ করিতে সচেপ্ত হইয়াছিলেন-কুলপতি দুলগের **নিমের অজে কুলপতিদিলের** সাহত সং-আমে প্রস্তু ইইয়াছিলেন। এতিহাসিক গ্রহা-গাহররে আর অধিক 🙇 বেশ ন। করিয়। এখানে আমার ঘাঁহা প্রায়ত বক্তবা তাহাই বিক্, তাহা এই যে, একদিকে লোকপতির पन, पान क्षिपिटक कूनलाजित पन, अहे जुहे मरलब वर्षाचर्ष इहैंद्र विश्व वर्ष अखा-मयात्व अमूज रहेशा मीख छजानत्मत्र नााय সুর্ব্বোপদ্ধি মন্তক ইতিনিন করিয়া উঠে। **এই শুভ को**नांगि यथन छेले खिड हा, उसन ৰিপ্তৰ শৰ্ম রাজারও রাজা হুইয়া লাড়ায়।

পূর্কের রাজ-সভা-হইতে সভাত। উৎদাবিত श्टेया (पर्न-मय शतिवाधि श्टेयाहिल, अशन রাজা-প্রজার মধ্য হইতে বিশুক্ত বর্ণা উত্তান দিত হইয়া সভাত'কে নিয়মিত প্রিলে লাগিল। এখন ধর্মাই প্রকৃত পঙ্গে রাজা; রাজা ধর্ম্পের সর্ব্ধাপ্রধান কর্মচারী - এই মারঃ এখনকাৰ এই ধর্মারাজো রাজা ধর্মন নিংহা-भाग छेलाविडे शेन, उथन धर्मा छ। शत्र भागत-शिकामरम छे विक्षे इस । शहर्य दोका লোকপতি হই। নোকাচার ও সভাত। দেশ-মগ বি গীৰ্ণ ক'র্য়াজিলেন-এখন তিনি শ্র্মা-বভার হুইয়া ধর্মেল আদেশ এটার করিছে আরম্ভ করিলেন। নন্ব জা এইরূপ এক এন ताल। हिटलन ७ मानव-अर्चानाह मानद-ममा-জের একটি অঘিতীয় ৭৭ং অবিন্ধার কার্ত্তি-স্তন্ত । তিনি কুলপতিদিগের অনিকার স্পর্ত্তী-याता निक्ति कतिया नित्नन, त्नाक्षा ७३७ আনকার নিদেশ ক্রিয়া দিলেন: ফুলপতি-ভিগের আর যোটবদ্ধ হইবার এবশ্যকতা तर्थिन ना, खलता १ हे। इटनत दणा है । श्रा বেল; সকল শোণীর নোকেরই শস্ত অধি-কার স্থানির্দিট কইন ; শান্তি-মূর্য; অভুংদিত হট্ল, ও ধার-রাজা প্রতি**টি**ত চটল।

নিত্রকণ ধরিয়া আমরা কি ফল লাভ করিলাম তাছা একবার গণনা করিয়া দেখা
যা ক্ ধর্মা-সোপানের প্রথম প্রক্তিতে
আমরা দেখিয়াছি যে, লামনিকে আর্থনার।
নিয়মিত করিতে হইকে, ইহাই সেখানকার
একমাত্র ধর্মা-নিয়ম। এক প্রকার করন কীটাণু আছে যাহার সম্স্ত শুনীরটাই উদর;—
এরূপ জীবের উদরকে তাহার শ্রাত্রয়
অঙ্গ বলিতে পারা যায় না - যেহেত্ তাহার
উদরই তাহার শ্রীর, ও তাহার শ্রারই
তাহার শ্রীর, ও তাহার শ্রারই
তাহার উদর; এখানে সেইরূপ স্থাপ্তে ধর্মোর অঞ্গ বলিতে পারা যায় না, যেহেত্
স্থাপিই এখানকার একমাত্র ধর্ম। ঘিতায়

33 30

পংক্তিতে ও-নিময়টি তে৷ আছেই (কিনা সার্থ দারা প্রস্তৃতিকে নিয়মিত কারতে ইইবে, এই নিয়মটি), তদাতীত—এখানে আর একটি ধর্মা-নিয়ম ্এই ছো, গার্হস্থ্য দারা স্বার্থকে নিয়মিত করিতে হইবে। পূর্ন পংক্তিতে ধর্ম সাথ-পানে জ্ড়িত হইয়াছিল; এখানে **নেই স্থলতম পাশ হইতে** প্রত্যাহত হইয়া, ধর্মা, অপেকান্তত দূক্ষা-পাশে—গাইখ্য-পাশে – আটক পড়িয়া বহিল। গাহস্থাই এখানে সাক্ষাৎ ধর্ম—স্বার্থ নর্দের অঙ্গ মাত্র। তৃতীয় পংক্তিতে ও-চুইটি ধর্ণ্যের নিয়ন তে৷ আছেই - কিনা প্রবৃত্তিকে থার্থ দারা ও স্বার্থকে গার্ছস্থ। দারা নিয়মিত ক-🖟 রিতে হইনে ; ভদ্বতীত, এখ্রনে আর একটি ধর্ম-নিয়ম এই খে, কোলীন্য দার।—অথাৎ কুলোচিত ভন্ততা ৰায়া—গাৰ্হস্থাকে কিল मिठ क्तिए इंदेर्ट । अथारन गार्ड इन्लान হৈতৈ প্রাত্তাকত হইয়া, ধর্ম্ম, ভদপেকা भारम-कोनाना-भारम-जाउक *দুক্ষর* তর পিড়িয়া রিছিল; এখানে কৌলীনা সাক্ষাৎ ধর্মা-ছালীয়, ও গাছস্থ। এবং স্বংথ দর্মের অঙ্গ-স্থানীয়। চতুর্থ পংক্তিকে ও-তিনটি धरचंद्र निश्म देश चार्छ्ये कि ना श्रव्रिक्त सार्थ-बाह्य, सार्थटक नाइंद्रा बाह्य, नाइंद्राटक কোদীন্য-ঘান্না নিয়মিত করিতে ভদাতীত, এখানে আর-একটি ধর্ম-নিয়ম এই যে, কৌনীনকে সভ্যতী দারা, অর্থাৎ লোকারাধ্য আচার-বাবহার ছার। - এক কথায় লৌকিকতা/ছারা—নিঃমিত করিতে হইবে। ं अथारम , देकोनीना-शाम हहेर्ड अठाइिड হইয়া প্রা,তদপেক। আরো সুক্ষতর পাশে— मजाकी-भारम-वाठिक भाइमा बंदिन। এ-থানে সভ্যতাই সাকাৎ ধর্ম-ছানীয়, ও কৌ-ब्रीना गार्ट्या अवः आर्थ धर्णातं सक्न-त्यानीय। ংবেখানে সভ্যতীর উপরে—না লোকাচারের उभारत-जात कान निवासक नाहे, मिशारन

লোকাচার রে, সর্বাংশে নির্দেষি হইটে তাহা হইতেই পারে না; এরূপ নির্মান্তঞ্জ লোকাচারের সভারীতি নীতির সঙ্গে অনেক-এমন কুরাতি জড়িত থাকে,যাহা বিশুদ্ধ ধর্মের বশবর্তী হইয়া ক্রমে ক্রমে পরিবভিত হইয়৷ যাওয়া প্রাথনীয়। এ পর্যন্ত যে-দকল ধর্মা নিয়মের কথা বলা হইল, ভাহাদের কাহারেট্ এত দূর চকু ফুটে নাই যে, ভাল বস্তুকে মন্দ কলু হটতে বাছিয়া লইতে পারে; কিন্তু ধর্ম যখন সভাতা-ছইতেও উপরে উঠিয়া নিজের বিশুদ্ধ সরূপে দুগুয়মান হয়— আজু-বিন্যুত অ্ঞাজ-বাদের বেশ ভূগা পরিভাগে করিয়া যখন গৈ নিজ মৃতি ধারণ কৰে, তখন কি ভাল ও কি মন্দ তাহা **সে স্প<u>রী</u>ক্ষ**রে লেখিতে পায়। প্রথম পথক্রির স্থাথ-ধর্ম্ব আপনার শারীবিত কুশলকে (সংক্রেপে শরী-दरक) अवलश्वम कर्विद्या गाँखिया **थारक** प्रिक्रिश পংক্তির গার্হ। ধর্মা স্ত্রী-পুত্রাদিকে এবং প্রধানতঃ গৃহপতিকে; ভূতীয় পং**জির কৌ** লীনা-ধর্ম জ্ঞাতি বন্ধুকে এবং প্রধা**নক্**রী ্যুলপতিকে; চতুর্থ পথক্তির লোকিক ধর্মা: দেশকে এবং এধানতঃ দেশের অবলম্বন করিয়া বর্তিয়া থাকে ; কিন্তু প্রঞ্জম পংক্তির বিশুদ্ধ ধর্মা দেশেরও উপবের বস্তু-ভাহার অবলম্বন কে? धयन मगल्ड हमम একদিকে ও গালিলিও একদিকে - শালি-লিওর সেই অবস্থাটি এক বার মনে ভারিয়া (प्य ! तम व्यवसाय कश-वन दमारकत वार्क-ক্লিত আড়ান্ত কৰ্ম নলী হইতে সভ্য **মন্ত**ৰ উত্তোলন করিয়া বাহির হইতে পা**রে ?** গালিলিও ব্যুক্তীর গ্রায় ছবে ব্লিলেন ति, "मूर्या किन त्रहिकादंछ-भृथियो **आ**हान ज्जित्क प्रिट्**ण्ड्" ७५० डाहात वापनास्त्र** जगट्छत (कर्रे महर् क्षेत्रक क्षेत्रकम वि एक नज़ है जाराब असमाव असमायना अहै जन क्रिम्म होता बिहार गर्फ विकेष परिवृद्ध आहे



বেশু বিশেষে বা কাল-বিশেষে বা জাতি-বিশেষে বন্ধ থাকিবার নহে। এইরূপ বি-শুদ্ধ ধর্মা-নিয়ম যোগ-শান্তে "দার্বভোষ মহাব্রত" বলিয়া উক্ত হইয়াছে; যথা,

ি প্রতে তু জাতি-দেশ-কাল-সময়ানব্জিলাঃ গার্ক-জৌমা মহাব্রতং ।

· প্রথম পং**ক্তিতে** পূর্বের্কার চারিটি **নি**য়ম তো আছেই - কি ন। প্রেরভিকে স্বার্থ বারা, श्वार्थिक शाह्या बादा, शाह्यातक तकालीना घाडा, कोलीनारक मज्ञा बादा, निर्धागक ক্ষিতে হইবে; তথাতাত এখানকার আন একটি ধর্মা নিয়ম এই যে, সভতেতকে প্রমার্থ দ্বারা নিয়মিত করিতে হইবে: প্রথবা ঘাহা এक ই कथा — लाका जातरक मार्स्तर भेगक वि-শুদ্ধ ধর্মা দাবা নিয়মিত করিকে মইবে। भक्रम भ१ किए अनुमार्थ । धर्म-सानीस, अ সভ্যতা কোলীনা গার্হস্থা এবং স্বাথ এ নম্-**एड १** कार्यात अञ्चन्यानीय । भत्रमार्थ आति-कृ ज बरेटन निम्न निम्न ममन्छ । शास्त्रिहरें 🗐 ফিরিয়া যায়; তাছার নির্নিষেয় চক্ষেপ-ড়িয়া, সভাতা হইতে কুরীতির সমস্ত দল-বল ঘর-ঘার উঠাইয়া লইয়া একে একে প্রস্থান করিতে থাকে; এখন সভ্যতা শুর্ম टक्क महाछ।-भारतहे काछ शास्त्र ना, म-**জাতা** এথন স্থমভাতা হইয়া দাঁড়ায়; স্থান্তার প্রভাবে কৌলীনা স্থশোভন ভ-ক্ষা হইয়া দাঁড়ায় ও স্থােভন ভক্তার এ-कारेन कार्यस अर्थ नाथ छल्टार नव-छत क्यान जब मूर्जि शावन करता

করাই পরাকাষ্ঠা ধর্মা, তবে আর ধর্মের স্থিরত্ব কোথায় ? স্থিরত্ব যে, কোখায়, তাহা উপরি-উক্ত ধর্ম্ম- দোপানের ভ্রতি একট প্রণিধান করিলেই দেদীপামান হইয়া উ-धर्मा (माश्रीत्वत श्रीहर्षि পাঁচটি ধর্ম্ম-নিয়ন পাঁচ প্রফার নহে কিন্তু একই প্রকার। মূল নিয়ম একটি সার: মেটি এই যে, অন্তঃকরণের বিশেষ রুক্তিকে সাধানণ দ্বতি দারা নিয়মিত করিতে হুইবে। ইহা অপেক্ষা স্থ্ৰুপাও আৰু কি হইতে পাৱে সে,লোভাদি প্রবৃত্তি অপেকাআপনার শারী-রিক মঙ্গল-ইচ্ছ। সাধারণ প্রতি: ভাপনার শারীবিক মঙ্গল-ইচ্ছা কংপেকা গ্রেছর মঙ্গল ইচ্ছ। মাধাৰণ বৃত্তি; গুড়ের মঙ্কল ইচ্ছ। পেকা ক্লের মজল-ইজা সাগ্রেণ ব কুলের মন্থল-ইচ্ছা অপেক্ষা (৮৫শর: ইচ্ছা সাগারণ রতি; দেশের মঙ্গা অপেক। মার্নভৌমিক বিশ্বদ্ধ মঙ্গল হয়। সাধার**ণ** রুট্টি ; স্তরাং স্কল পংড়িরই ধর্ম নির্ম এই সে, বিশেষ রক্তিকে সাধা ণ-রতি ছাব। নিয়গিত করিতে হইবে। স্ত্রোক্ত অন্তঃনরণের রতি বিভাগের সৃহিত এথানকার এই বর্দ্ম-দোপানের পংক্তি বিভা-গের চমৎকার নিল রহিয়াছে। আমাদের দেশের প্রাচলিত শাস্ত্রাতুসারে,-গ্রথমে প্রাণ, ভাহার পর মান, ভাহার পর অহস্কার, ভাহার পর বৃদ্ধি, ভাষার পর আল, উত্তরেভির क्षशान-भगवीरा जोकः। अथग, आनः;— শরীর রক্ষাই প্রানের ধর্মা; স্বার্থের পংক্তিতে আমহা দেখিয়াছি যে, পশুবং জঙ্গুলিয়া-फिराष्ट्रे **धार**ण याँ हिशा श्रीका है **की** गटनत श्रधान-তम नार्वा । चिठीश, मेन ;--श्राटन वैक्तिश থাক। তৌ আহেই—তাহার উপর স্ত্রী পুত্রের मूर्ण पर्यन के बिहा मना क श्राप ताथी गाई हात पृक्षीयः अध्कात ्री वाहित्तत বিষয় দায়া উপরক্ষিত হওয়া ব্রৌপুত্তের মুখ-

দর্শনে জ্বী হওয়া) য়েমন মনের ধর্মা, তেমনি আপনার পেড়িয-কার্য্যে আপনাকে প্রতি-বিষিত দেখা অহস্তাবের ধর্মা। মনের দৃষ্টি সমুখ প্রানে—সমুখছিত বিষয়-সমূহে; অহস্কারের দৃষ্টি পশ্চাংগানে,—গোরুষ কার্য্য করিয়া অর্ণাৎ কর্ভৃত্ব করিয়া—"আমি এই কাষ্য করিলান" এই ধলিয়া আপ**নার প্রতি** 'ফরিয়া, দেখা, অহস্তারের লক্ষণ। পুরুষদিগের কীর্নির প্রতি ফিরিয়া দেখাও অপেনাঃ পৌক্ষৰ দাৱা সেই কীৰ্ভিতে নুতন জীবন সঞ্চার করা, আর, পুত্র-পৌত্রাদিকে ভাষার উপযুক্ত করিয়া পড়িয়া তোলা, কো-नीरनात क्षात्रान छिल्लमा ; कोनीना अहेक्स धरुप्तात-ध्रधान। এখানে ८३ हि ५२ रा कहेरा ८४. (यथारन शातमार्थिक क्षेत्र शतिकारि इत नारे, रमथादन कम्राहेत नाञ्चानूमायो स्माहिक ধর্মাই সর্ক্রোচ্চ ধর্ম ও সেখানকার প্রক্র ভাৰা ভাল বই নন্দ নহে: তেমনি আলাব যেথানে লৌকিক ধর্ম গরিক্ষ্ট হয় নাই, দেখানে ইউরোপের মধান্দীয় অহস্কার-खधान एकोशिक धर्मा, याहा Ublandry नाटम প্রামিদ্ধ, তাহাই সর্বের্গচ্চ ধর্ম ; স্বতরাং সে খানে তাগাই শ্রেষকার। দেশকাল-পাত্রো চিত শোভন অহস্কার মনের উপর কর্তত্ত্ব করিয়া নাঁচ প্রবৃত্তির পগ-রোধ করে—স্তরাং তাহা ভাল কই মন্দ নছে; কিন্তু যদি অহ-কার মাত্রা ছাড়াইয়া উঠিয়া অধ্যোগ্য তীত ভাৰ ধারণ করে, তাঁহা হইলে তাহা অবসাই নিন্দনীয়। এমন কি, অহস্তারে অতি মাত্র क्षीं इंटरन, यसूत्रा खेनान इंट्रेश छेठिए भारत; Don Quixot-এत छिलनाम देशत একটি পরিপার্টী উদাহরণ। षश्कादित উত্তেজনায় মনুযেরে স্পর্কা কখনো কুখনো আকাৰ ছাড়াইয়া উঠে,—ক্ষুদ্ৰমনুষ্য পরাধ-পর পর্মেগরের হলাভিযিক্ত হইতে লিক্তিভ হয় ন। — তেক ফুলিয়া হন্তী হওয়া ইহায়

কাছে কোণায় লাগে। কিন্তু "আমি ভক্ত मञ्चान" বলিয়া মনুদোর যে-একটা দেশ কাল পাজোচিত কৌলীন অহংকার, তাঁহা নিন্দ-নীয় হওয়া দরে খাকুক, তাহাই ধর্ম-সোপা-নের মধ্যম পাংকি। চতুর্থ, বুদ্ধি;—কৌশল घाता कामा मगाधा कता है दुष्मित धर्मा ; दुष्मित প্রধান লক্ষ্য আগনার পৌরুষের প্রতি নতে, কিন্তু কার্শোদ্ধারের প্রতি। একাকী সকল-কার্যো কর্ত্তর করিলে আপনার পৌলবেরই পরিচয় দেওয়া হয়—বিল্প তাহাতে কার্ম্য जान श्रामा: मकरन मिनिशा भकरतन जना কার্য্য করিলে আপনার আপনার নোর্য অনেকটা চালা গড়িখা যায় বটে কিন্তু তা-হাতে কার্যা গেমন ভাল হয়লতেমন আর কিছতেই নচে: এইরপ স্বোশ্রে কার্যা শ্বনির্বাহ কর। মভাভার একটি প্রধান লক্ষণ। কোনানা যেখন অহস্কার-ভাষান, সভাতা (महेक्षभ वृक्ति-श्राम । भक्षम, जाजा;-মাকিভোমিক মধন, বিশুদ্ধ মন্ত্ৰন, প্ৰবিপূৰ্ণ মঙ্গল, এক কথায় পরমার্থ, বহিভাগতের কু-ত্রাপি দ্প্ত হুইতে পারে না—আ্রাই ভাহার একমান্ত বস্তিস্থান ৷ স্বার্থ যেমন শ্রীরের भक्षत. वार्ध ऋ (यमन मर्भन भक्षत, कोलीना যেমন অংকারের মঞ্জ, সভাতা যেমন ব-দ্ধির মঙ্গল, পর্ম র্থ সেইরাপ আহার মঙ্গল। মনুষ্য-জাতির আত্মার মঙ্গল সাধিত হইলে— মনুষা-জাতির জাঞা নার্ম্ব-লেগিক বিভন্ত গঙ্গ-ইজায় পরিপূর্ণ হইলে -দেশের -কুলের গুছের—শরীরের—সমজেরই মঙ্গল সেই-এক মহা-মঙ্গলের অনুগামী হয়। আর একটি কথা এথানে বক্তবা এই ছে, অহংকার যেমন মনের উপর কর্তৃত্ব করে—আ্লা (যতঃসিদ্ধ জ্ঞানের আকর আত্মা)ুদেইরূপ বৃদ্ধির উপর কর্তৃত্ব করে; বৃদ্ধি <del>বেয়</del>ন উচ্চতর মন—আস্থা टमरेक्र १ किछ असे खर्र । अस्कात गरमद Cकम्पात्म चोषा पुष्का क्मशान-

এইরূপ দেখা যাইতেছে যে, অধিক্রচ। শাস্ত্রোক্ত অন্তঃকরণের বৃত্তিবিভাগের সহিত শর্ম-দোপানের পংক্তি-বিভাগের পোডার্ণমল রহিয়াছে। এখন বক্তবা এই (ब. विट्नित बुद्धिक मोबाबय बुद्धि बाबा नियः बिए कतिए इरेटन- व निश्चि विश्वित (य, (काषा ७ हेशंत्र विन्यू विनर्शतं । भगाणा इहेर्ड भारत ना ; हेशाटक धंन्य-(माधारनत যে পংক্তিতে খাটাও, সেই গংক্তিতে থা-हिंद। ब्ह्यान्ट्रिय अकृष्टि मूल निश्चम अहे त्म, अक्रम ७८ लव एज् फिरक लच्च म ७ न व् इरव ; **এই निश्चितिक यथन मूर्या-२७ ल शहराज** করি, তথন পাই যে, সুগা রহতত আর-একটা মুর্গ্যের চতুঁ। দিকে ঘুরিভেছে; উহাকে খখন ভূমওলে প্রবাস করি তখন পাই যে, সূর্য্য অপেক্ষকৃত পূৰ্বে ও পৃথিবী তাহাৰ চতু-फिंटक घ्रिटिएट ; छेश्टिक यथन हेन्द्र-মণ্ডলে প্লায়োগ করি, তথন পাই ্য, পৃথিবী অপেক্ষাক্ত স্থির ও চন্দ্র তাহার চতুর্দিকে খুরিতেছে; কিন্তু তাহা বলিয়া উপরি-উক্ত ভারাকর্ষণের নিয়ম তিন নিয়ম নহে—উহা এकर नियम। देशहरे मनाय, এ नियमार्डे একই শিয়ম যে অন্তঃকরণের বিশেষ রতিতে সাধারণ রুভি দারা নিয়মিত করিতে হইবে;— ু এ নিয়মটিকে প্রাথম পণ্যক্তিতে প্রয়োগ করিয়া পাইতেছি বে, প্রবৃত্তিকে আপনার ুশারীরিক মঞ্চল-ইচ্ছা ধারা নিয়মি**ত** করিতে চইবে; দিতীর পংক্তিতে এরোগ করিয়া भारेटलिक रव, शरहत बक्न-रोहा पाता जान-নার স্বাৰ্থকে নিয়মিত করিতে হইবে; ভৃতীয় भरकिए धारमांग कतिस्य भारेटाचि (य. क्ट्लब गवन-रेका पाता हिट्टत महन-रेकाटक. निर्माण कत्ति रहेतः, हरू स्थानित् श्राद्यान कवित्रा भार्डिछि द्य हिनादका ना प्रतिक सम्बन्धिक माता क्राम अपन trained wines with

পংক্তিতে গ্রেগা করিয়া পাইতেছি বৈ, সমত মঙ্গল-ইজাকে নিরপেক্ষ সার্ক্সভে মিক মঙ্গল ইচ্ছা দারা নিয়মিত কবিতে হইবে, ইহাই পারমার্থিক ধ্রন্ম-নিংম। প্রের্মার মল নিয়মটি (অর্থাৎ সাধারণ ব্রত্তি ছারা বিস্নায় রুত্তিকে নিয়মিত করিতে হুটবে এই নিয়ম্টি) यनि ओ औष शश्कित धकि कि न जारन ना খাটিত, ভবেই বলিতে পারিভাম সে, ধর্ম-নিয়নের কোন স্থিত্ত নাই; কিন্তু স্থন দেখি-তেছি যে, ও নিগম-টি এমনি অটল ও অপ-বিবর্ত্তনীয় যে, কোণাও উহার বিন্দু-বিসংগ্রিও অন্যথা হইতে পারে না তথন বেনে লজ্জান্ত धक्तभ कथा मुद्रथ जानिय (स. वच्च निशासक কিছুই স্থিরতা নাই। কেছ বলিতে পারেন ষে, গার্হস্থাও তো এক প্রকার স্থার্থ: স্ত্রী-পুত্র তো আমার্ট স্ত্রীপুত্র; স্ত্রীপুত্রের মঙ্গল তো আমার আপনারই মঙ্গল; ইছার উত্তর এই যে তোমার নিজের সার্থ ( অর্থাং আগনি খাত্য়া আপনি পৰা) স্থী-পুত্রের মঙ্গল-ই জ্বা দারা এরুণ ওতপ্রোত হইয়া রহিয়াছে বে. এখন তাহাকে চেনা ভার; তোমার স্বার্থ গুছের মঙ্গলের মধ্যে এরূপ কবলিত হইয়। রহিয়াছে যে, সার্থ বলিবামাত্রই গু**হের মঙ্গল** তোমার মনোমধো উদিত হয়: ইহাজে কেবল ইচাই প্রমাণ হইতেছে যে, তোমার স্বাৰ্থ অনেক কাল-বাবং গাৰ্ছৰ ছারা নিয়-মিত হইয়। চুকিয়াছে; স্বভয়ং ভোনাকে এরণ উপদেশ দেওয়া বাহুলা যে, সার্থকে গার্হক মারা নিয়মিত করিতে হইবে; কিন্তু একজন জন্মলিয়া—যে প্রথম পংক্তির 🗟**র্চে उटि नाह**ें जाश्त शास्त्र के निष्ट्रयाण्डि সর্ব্বেচিঃবর্ম-নিয়ম। কোন পংক্তির নিয়ম কাহারো পক্ষে দহজ,কাহারে। পক্ষে কঠিন--किन्त जोहा विभिन्न जेहात निश्चम एवत এक-हुल**७ वार्किक स्टेड** शास्त्र ना। नियरमत्र क्रिये नः वासिष्ठ हरेन, अथन, जात-

একটি বিষয়ের নীমাংসা কেবল অবশিষ্ট — নেইটি ছইয়া গেলেই তাজিকের মত আগার বক্তব্যের পরিসমান্তি হয়।

স্বার্থ ধর্মা-সোণানের সর্বাপেকা নিম্ন भः कि. अर भारमार्थ मर्खा (भक्रा সার্থ সহজ্ঞার আদর্শ এবং পর-M2 (350) यांग छेश्कर्रात याप्तर्म। लाईश यथन मा-(प्रविन्ताय महक इटेशा माँखांत्र, उथन जाहारे भाई दशह भिकानका; कोलीना अनः न-छाजा जलन लाउथत नगत गरल रहेशा मी-ভায়, তথন ভাছাই কৌনীনা ও সভতোর निकातका; अत्रमार्थ यथन कार्यत नगांश সহজ হইয়া দাঁড়ায়, তথন তাহাই মনু-নিদাবস্থা ও পর্ম পুরু-যোর ষার্থ ; আর, তাহার সাধন সমুকের অনন্ত ক(লের উপজীবিদা। দাণ যে কি --তাহা कारात्कछ दुवारिनात आस्त्रांचन रह ना ; किस পরমার্থ যে কি, ভাহা ি শেষরপে বুলাইয়া गः वनित्न-गमा (भाव छोष्ट्रांत नाना প্রকার বিপর্যাত অর্থ বুনিতে পারেন। পর-मार्थ कि-हेश जान कतिया नुक्रिएंड स्टेरन, প্রাংগের পর্যার্থের দিক্ নিরূপণ করা আব-শাক। প্রার্ম-কথিত প'ক্তি-গুলির (यश्रीत शहमार्थ शकाला जात नाई, स-থানেওঁ পরমার্থের দিহ্ আছে: অর্থাৎ তে-প্রানে পর্যার্থের ভাব পরিস্ফুট হয় নাই, <sup>7</sup>কৈখানেও প্রমাথের দিকে পতি চলিতেছে। ্ত্যার্থ যদিচ পরমার্থ নহে, কিন্তু এরভি ইইতে স্বার্থের দিক্ প্রমার্থের দিক্; সার্থ ছইডে गार्टत्याद फिक् भवगार्णव किक्; गार्ट्या इहेट को नी दनात फिक् शत्यादर्थत फिक्; কোলীনািহইতে সভাতার দিক্ পর্যার্থের দিক্ কভাতা হইতে সাক্ষতোমিক মঙ্গলের मिक् शत्रेगार्थत मिक्। जनशाबाद्ररात एथ् নয়—কিন্তু প্ৰতি অনেইই—লৈশ্য কাল ছইতে পর্যারের দিকে গতি চলিতে থাকে।

নিতান্ত শিশুর, প্রথমে, কেবল স্তন পানের িকেই ঝোঁক। তাহার পর সে মাতাকে ভাল বাদিতে আরম্ভ করে; মাতাকে লইয়াই শিশুর গার্ছফা – কেননা শিশুর মাতাই গুছের দর্শন ধন। তাহার পর শিশু পিতাকে ভাল গাণিতে আরম্ভ করে। শিশুর নিকটে শিতা অপেকা ক্ষমতাশীল ব্যক্তি জগতে আন কেহই নাই; কাজেই "দেই আছতীয় ক্ষাতাশীল বাক্তি আমাই সেহের বশা এই বলিয়া ভাছার মনোমধ্যে অংকা-বের মতে। একটা সাম্প্রী দেখা দেয় : এ অহমার নিতান্ত শিশু-অহ্নার, ইচ্যা এগনেগ বিৰ দাঁত বাহির ২৪ নাই—এটি দেন মনে मालादन अहेशाई सम्बन পাত পা, বেইজগ (পালাকে লইসাই **লিভার** কেলানা। দ'ন্তিক কুনীন খেষত **সমাজকে** জ্বানাইয়ে তোবে, আদুতে ছেলে সেইরপ বাভি মাথায় ক্রিয়া,ভোলে; প্রভেদ কেবল এই যে, শিশুর অহ্মার নির্বিষ, স্থতরাৎ একটুতে শান্ত হয়,—দান্তিক কুলীলের অহ-দাৰ বিষাক্ত স্থতরাং কিছুতেই **শান্তি য়ানে** ন। আমরা দেখাইলাম যে, নিতান্ত শিশুর क्षित्र खेनशारमत फिरक्ट अक्शाख (साँक, -ইহাই শিশু স্বার্থ ; ভাষার পর সে মভোকে ভালবাদিত্রে আরম্ভ করে,—ইহাই শিশু গাছস্থা; তাহার পর পিতাকে ভালবাসিতে **েলথে, ও** ''পিতা, যাঁহা অপেকা উচ্চ আৰু কেছই নাই, তাঁহার অান স্লেছের পারে" • এই বলিয়া অহঙ্কৃত হয়, ইহাই পিশু 📺 🗀 नीना ;—गृटश्त राल्टकता अ**शांटन कून**, क পিতা এখানে কুলপতি। অতঃপর বক্তব্য **এই यে, শিশুর কিঞ্চিৎ বরোর্দ্ধি হুইলে "লে** ষ্ট্রন পর-গৃহের স্থাবয়ক্ষদিগের সহিত ক্রীড়া কলছ ও পাঠাতানে রড হয়, তখন অনে-(कत **ऐक्ता देवां वर्ड जारांत जरका**रतत्र **जै**लेलन रहेश मृद्धि उत्सक रहा, शुक्रमध्य निता स



হিছ সন্থাবে মিলিত/হওয়াই শিশু সভাতা বা শিশু লৌকিকতা। তাহার পর এইরূপ দেখিতে পা এয়া যায় যে, মিখ্যা কহিতে কোন কোন बालरकन्न तमनाग्न शिर्द ; कान कान वालक অনর্গল মিখ্যা কুছে: এইরূপ বালকগণের মধ্যেও পারমার্থিক ধর্ম্ম-ভাবের তারতমা **प्रिंट्ज शिख्या यात्रा । (य तालक मिशा** কংশ্বা - পিতৃামাতার বাধ্য-ভূর্মলভর বালকের সহায়, ভাহার মনোমধ্যে পরিমার্থের ভাব নবোট্মিয়ি। इहेशाटह— अक्रल नानल অত্যক্তি হয় ন।। এই তে গেন বানকের,— যা'ক। শিশুণ বেমন তনপান- শ্ৰাব। **रम्हे**क्षण अर्विभाञ्चन—छे इसर कावन वातन ণের জন। , এটিটি সাবেড় পর্যক্তি। ও পিকে कूनरल द्राविदांत जना स्थमन चर लाउटन, তেমনি ননকে জাল সাখিবার আন্দ্র বিবাহ ; শিশুর যেমন মो⊅।--ध्यात । गहेत्रभ औ--। यत्नत भूना यछ-किছू भग अहे शूर्न करत ;---এইটি গাহঁছেরে প্রক্রি। ভাষার পর রুদ্ধ পিভাষতোর দেবা, জ্বাপনার প্রভুত্ব এবথ कर्ष्ट्र भगर्थन, ७ वृह्ये खेवर छेलात्म-मार्ग পুত্র ক্নাগণকে কুলোচিত ব্লীতি নীতি ও বিদা শিকা দেওয়াই আছি বন্ধুকে সভাব-षात्र। वनी पूछ कता, हेशहे कीनीरनात পংক্তি; তাহার পার দেশহি তৈয়ী নিমা-মণ্ড-লীর গহিত যিলিঞ্চা-মিন্নিয়া দেশের হিতা-মুষ্ঠানে লিপ্ত ইপায়া, এইটি সভাতার প্রতির ; ভাহার পর, অভার নিগৃ আ काक्ष्या सिर्धे हैवात बना भेत्रमाञ्चात महिङ रयात्रवृक्त रथका, এहे हैं अत्रश्राद्धत अर्कि। अधारन अवेहिंह (मथा खावनातः (य, त्य (ध ভার বে বে পংক্তির অধিকার স্থিত—নেই दुन्हें बाव (ब, रनहें रनहें भर्धकरू भहना प्रानिया पारिकृष्ठ रया कारा गरेर ; जार ্রের পর পাজতে মালেকারত অধ্যাস্থ ট

ভাবে বিদ্যমান থাকে—স্বপং জিতে আ-সিয়া পরিক্ষুট ভার ধারণ করে, এই নাত্র। षात अकिं कथा अधादन निरवहा; स्म हि **এই रम, रम** भे किन **रम-**हिन्दम भः किन সে-টি নহিলে আর কিছুতেই আশ সিটিতে পারে না। পার্ধ-ভিন্ন ভার বিছুতেই -মনের – লাশ নিটিতে পালে ন। ; কিন্তু ম-সংকালের আশ মিটাইকে হইলে গৃহ ভাষাব भाग भरह,—शोल्राच्य छेलत कर्छ । कतिया পাহরারের পোট ভবিতে পারে না.—জ্যাতি বদ্ধকে সন্তর্গ-পাশে বন্ধ করিতে পারিলেই অহন্যার রাচিমত পরিতৃপ্ত হর: রাংমনি ামবার, প্রাত্রাথ স্থলন দলনেল-ব্যাপারে ভীক্ষ বৃদ্ধির সমস্ত ব্যোক সম্পূর্ণ ক লে, বুদ্ধির নিভান্ত অপনায় কিন্তা হয়,—অনুসূতা-হাতে বৃদ্ধির পেইভবেনা; সেশের হিত मिदिन कार्र्वा वृक्षित त्यंगन अनत-शास्त्र रहा, पामन यात किहार परे नरह। अथारन जातल-একটি কথা বিষেচ্য; সেটি এই যে, উচ্চ পথজ্ঞির পারিকার নিম্ন পার্কিটাতও বল্যও;— লোকার্থ (অর্থাই দেশের মৃঙ্গল) বুদ্ধির স্থ-পংক্তি-প্রশাভ লফ্যা, কিন্তু বুদ্ধির অধিকার ক্ষেত্ৰ কেবল তাহার স্বধংক্তিতে ক্ষানেছে— रेकोनीना जनर नाईका भरेकि एउन केतिया ত श भार्थ-পर्गाष्ठ लगातिक। 'हेश्व हिक् বিশ্রীত এই দেখা যায় যে, উচ্চ পংক্তিতে निक्त\भ्रष्टिक टकांत थाएँ ना ; जुक्ति अश-জিবৈশি অহঙ্কারের তেজ নরম পড়িয়া যায়; অহম্বারের পংক্তিতে স্বেহ্-মমতার কোমল কশিকা ই্সড়িয়া যায়; গার্হস্য-পংক্তিতে चार्यके आफ्ना हाला अजिहा याहा। এथान, जीत अकृषि लेहेगा धरे ता, भोषात् हा छ-बाता বিশেষ ইন্ধির বিয়মিত হওয়া উচিত, এ ক-थाइ वर्ष ८क्ट त्यम् अक्रभ ना द्यारकन त्य, विद्यान विजिद्य एटबर कविया मानातन র্ভিকে ছাহার ফুলাভিয়িক্ত করা উচিত ;--

এমন অনেক ব্যক্তি আছেন— যাঁচারা আ-পান না খাইয়া না পরিয়া—শরীরের স্বাস্থা নপ্ত করিল —পুত্র পোজাদির জন্য ক্রমাগতই অর্থ সঞ্চয় করিতে পাকেন,—এরূপ ব্যক্তি গার্চস্থার অনুরোধে খার্পে একেবারেই জলা-গ্রনি দে'ন,—ইছা কর্ত্তিয় নহে; তাই শাস্ত্রে আছে

"প্রাপ্ট চাপ্ট কং জন্ম লক্ষ্য চোক্র নেটাইবং।
ন বেত্যাথাই ডং যন্ত স্থাবেদা ছায়াতকঃ॥'
বিনি উত্তম মহাধ্য জন্ম তামং ই ক্রিয়-সেইব লাভ ক্রিয়া আপ্নার বিত জানেন না তিনি লাছ-গাতী।

আবার, এমন অনেক ব্যক্তি আছেন বাহানের স্ত্রীপুত্র পরিবার করেই দিনপাত করিতেছে—তাহা ভাহারা দেখিয়ার দেখেন
না—অথচ কৌলীন্য-অহস্থারের বশবর্তী হটয়া
প্রভূত দান-কার্যাে রত;— এরপ কৌলীন্য
গাহ স্থার শোণিত শোষণ করে তাই শারে
আছে—

শিকঃ পরজনে দাতা সকলে ছাংগগৈবিনি।
মধ্যপাতো বিষয়ালং সংখ্য-প্রতিরপশং।
বে বাজি কম্ছা সত্তেও ছাংগজীনী স্থানেন প্রতি
উপেকা কার্য়া পাজনে দাত্ত করেন, তাহান বে
সাহ্য প্রাপতিতঃ মধ্ কিন্তু পরিনামে বিহ—তাহাধ-

এই রূপ স্পষ্টই দেখা যাইডেছে যে

য়ার্থন্যে উচ্ছেদ করিয়া পার্চ্ছাকে তাহার

ছলাভিষিক্ত করা অথবা গার্হ ছাকে উচ্ছেদ
করিয়া কোলীনাকে তাহার হলাভিষিক্ত
করা,—দাধারণতঃ—বিশ্যে রভিকে উচ্ছেদ
করিয়া দাধারণ রুলিকে ভালার হলাভিষিক্ত
করা, ধর্ম নহে—ধর্মের ভান-মাতা; বিশেষ

ইলিকে উচ্ছেদ করা নহে—কিন্তু ভাহাকে

দাধারণ রুল্ফি দারা নিয়মিত করাই প্রকৃত
ধর্মা কার্যা। পঞ্চম পংক্রির আদ্রাদ্ধি মর্কান

পেফা উচ্চ; পরমাত্রা ভিন্ন আর কোন

কিছুভেই আ্রার আল মিন্টিতে পারে
না; এটি কেবল এখানে উল্লেখ মাত্র

করিলাম, পরিশেষে ইহার গ্রামাণ र्भन कतित। कतामीम् (पर्भीव कैस्ट्-जी. কন্যা ও মাতা হারা আছার আশ যিটাইতে র্থ। আয়াস পাইয়াছেন। পাই সের দৌতু মন প্রান্ত; - আজার সাগর-মপুহা আছ कहा (ग-এक-ट्लिने) निनिद्वत कर्मा नरह। স্ত্রীলোক গ্রেং প্রাকৃত লোকদিলের আত্মার कुश्चिर खना, कम्रोह, शाद् शास्त्रहे जानर्गक्राल े ব্রণ করিয়াছেন,--কিন্তু পণ্ডিত লোকেরা তাহাতে ভুলিবার পাত্র ন'ন, – ইচাঁদের আলার ভৃপ্তির জনা তিনি 'মমুসত্ত্ব' বলিয়া একটি দেব-মুর্জি সাজাইলা তুলিয়াছেন; আর, সভাতার মুস- প্রবক্তম পিতৃপুরুষ্দিগকে कर्छ। कतिशा छोशास्त्रत नारमञ्ज्ञ मस्त्र-तरन সেই মুক্তিতির প্রাণ-প্রাতিষ্ঠ। করিয়াছেন। এ চেষ্টাও এথা চেষ্টা: কেননা সভ্যতার **দেছি** বুদ্ধি প্রন্তে—তাহার উপরে নছে: সভ্যতা বিছু জার পরমার্থ নছে—যে, জাতার পি-পাদা শান্তি করিকো নোকে কথার কলে "প্রবের সাধ ঘোলে মেটে না"—— এ কথাটি দিব্য এখানে ফুলিয়াছে; যে পংক্তির যে টি নহিলে নয়--দে পংক্তিতে ভাষার বদলে षात- अकी किंद्र यानिया माँछ कतारना नि-তান্তই বাল্য-ক্রীডা। আমরা ওরূপ 'গায়ের **জো**র' প্রকটনে ক্ষান্ত হইয়া--মভাবতঃ থে পংক্তির পর যেঁ পংক্তি আইমে, ও সতা-সত্যই যাহাতে যে-পংক্তির অভাব-পুরণ इश, जाहाहै यथा-छ तम अपर्मन कहिलाय। এইরূপ, কি পৃথিবীর নানা দেশ-বিদেশ, কি वाक्ति-वित्मारयस कीवन, राथारनष्ट कामका पृष्टिभाज कति ना कन-रगहेशारनहे एन-থিতে পাই যে, স্বার্থ হইতে পরমার্থের দিকে গতিই—দৈহিক মলল হইতে আধ্যাত্মিক মুক্তার দিকে গতিই—অভত্ব হইতে মুক্তা-ত্বের দিকে পতিই—এক্তির অন্তরতম্ 🖫 দেশ্য; আর, প্রকৃতিকে যদি অন্ধভাবে না

দেখিয়া চক্ষুমান্ ভাবে দেখা যায়, তবে দে-থিতে পাওয়া যায় যে, তাহাই ঈশবের অভিতেও ; আবার, আত্মাতে যদি পরমাত্মার প্রভাব হৃদয়কম করা যায়, তবে বঝিতে পারা যায় যে, তাহাই ঈশবের আদেশ।

পরমার্থের দিক্ নিরূপিত হইল; এখন জিজ্ঞাসত্তেই যে, পরমার্থ বস্তুটা কি ?

জগতে যদিও নানা প্রকার অমপ্রল র-হিয়াছে, কিন্তু সকলেরই গতি যে, মঙ্গলের িকে, ইহা সহজ বুজিতে মকলেরই পারণা इतः जिल्ह हैदाद छेशत उर्क हालाहिएन বিবিষ্ঠ প্রমাণ প্রয়োগ ভিন ভাছার নী-মাংসা চইতে পারে না ; কিন্ত সে-সকল श्रामा क्या देवरा ध्राप्ता अयुगक्षान करत, (करा देवका धनिया **आंट**म्याभास निभित्तेक करत, रकता देशमा धतिहा । अति वा अभाइन करतः मदल-वृक्षि त! सङ्ज-वृक्षि तिस् প্রমানেই শ্রেয়ঃ ছাদয়প্র করে; কুর্ণিল-বুদ্দি বা বিকৃতি বুদ্দি বিনা-প্রমাণেই ভাষা অগ্রাহ্য করে; প্রমাণ যিনি - তিনি সপক্ষ এবং বিপক্ষ তুই পক্ষেরই নিকট তাড়া খাইয়া নতশিরে পগুছে প্রত্যাবর্ত্তন করেন ও চারিদিকের্, জান্লা কপাট বন্ধ করিয়া দে'ন। মনে কর অপরাত্বের কোন একটি নির্দিপ্ত মৃত্তুতে ছাইটা তালগাছের ডুইটা ভূতল-শায়ী ছায়ার দৈখা মাগিয়া এইরূপ ८एश। रशन क्षेत्र होशा-बरम्ब देवरा अविकन ন্যান ; বিনিই ঐক্লেপ ঐ্তুটা ছায়া মাপিয়া ্নেখিবেন তিনিই বলিবেন**্**যে, ও-তুই द्रत्मदः वाद्रजनः चिक्न मयान-त्कर्रे তাহার প্রমাণ চাহিবেন না ; কিন্তু যদি কেহ তাহার প্রমাণ চাহেন, তবে তাহাকে তাহার প্রমাণ প্রদর্শন করা কি ভয়ানক কর-কর ব্যাপার 🕒 তিনি হয় তে৷ জ্যামিতির नाग ७ छटनन नारे, अथह डाहात निक्छे আন্যোপান্ত জামিতির সমস্ত সিদ্ধান্ত-গুলির

মর্মা ব্যাণ্যা করিতে হইবে; ভাহার তুই পংক্তি শুনিয়াই তিনি হয় তো মর্মে ख्लिया विलादन "था'क्-याथ हे इरेगारछ-আমি এখন বিদায় হই!" সহজ বিষয়ের ভ্রমাণ এইরাপ ভয়ানক ক্টিন ব্যাপার। যাহা প্রমাণ করা কঠিন, তাহাই যে অগ্রা-মাণ্য—এ কথার কোন অর্থ নাই। প্রকার অসমল রহিয়াছে—এইটির প্রতি অসুলি নির্দেশ করিয়াই ভার্বিকের। नरमन्-काष्टात घटभडे छ।भाग एमथादना छ-ইল: কিন্ধু জনতে গুলি সহস্ৰ অগদল থাকে, তাচা হুইলেও এটি অপ্রমাণ হয় না ্য নকল অয়স্পলেরই পতি মঙ্গলের দিকে : সকল অমন্বলেরই গতি মন্বলের প্রিক— हेशहे द्वेषात्रत अभीम मान्त्र এवर मङ्गन-ভাবের পরিচয় দিতেছে। অগৎ কিছু-আর ূৰ্ণ সঙ্গল নহে--স্তয়ৎ ঈশ্বর নহে-স্ক্রয়ৎ জগতে মুন্থিক পরিমাণে অযঙ্গল থাকি-বারই কথা; কিন্তু জগতের মূলে ঈশবের অণরিসীম শক্তি এবং মঙ্গল ইচ্ছা বর্ত্তমান আহে বলিয়াই, যাবতীয় অমঙ্গল উত্তরো-ত্তর-ক্রমে মধন হইতে মঙ্গলে পরিবত হই-তেছে। নিরীশ্ব মচলে এই কথাটি অ-কাটা প্রামাণ বলিয়া গৃহীত হয় যে, ঈ-খঃ যাদ সৰ্ম্ব-শক্তিমান্—ভবে কেন তিনি জগৎকে পূর্ণ মঙ্গল করিরা স্টিনা করি-লেন ? ইহার উত্তর এই যে, এরূপ কতক-গুলি কার্যা আছে- ধাহা পাগলে পদ্দেশ कतिए शास्त, दिख्युलाक कान मएउरे করিতে পারে না ; কিন্তু দিজ্ঞ-লোক পা-গলের কার্য্য করিতে পারে না বলিয়া— শামরা কি ভাঁহাকে ক্ষতাহীন বলিব ? গোল-চতুজোগ-ছই পূর্ণ মঞ্স-ছই মহা-कांग-नगरहे जैनारपत कहाना ; চতুकान विनवा माजहे च दशान हजूदकांगः द्वाश-

জগং বলিবামার্কাই অপূর্ন জগৎ বুঝায়; ঈশরের আবির্ভাব অল্লে অল্লে জগতে পরি-कृषे **इहे** एड्डि. कि छ देवदात नर्साकीन ভাব জগতে থাৰিতে পাৱে না, –তাই জগৎ অপূর্ব। গোল-চতুকোণ দেমন অসমত-তুই মহাকাশ যেমন অসকত তুই ঈবর যেমন অসম্বত তুই পূর্থ-মধল সেইরূপ অসঙ্গত। তুই ঈশ্র যেমন অসঙ্গত—তুই পূর্ণ-মঙ্গল দেইরূপ অসঙ্গত। গোল-চতু-**(कांग इंटेरन्ड शारा-- अ**ज्ञल गरन कड़ाई উন্মাদের লক্ষণ,—জাহাতে বৃদ্ধির শক্তি-খীনতাই প্রকাশ পায়-ক্ষমতার পরিবর্ত্তে অক্ষমতাই প্রকাশ শার। গোল-চতুদোণ স্ষ্টি করা তো অনেক দূরের কণা--গোল-চতুদোশের সম্ভাব্যথা বিশাস করা পর্যন্ত **অশক্তির লক্ষণ**িনবুঁদ্ধিতার লক্ষণ। গোল চতুকোণ-- ডুই পূর্ণ শঙ্গল-পাগটেলর জ্ঞা-त्नेष्टे स्थान शाहित्ज भारत, श्रेयरतत्र द्वसर्थ ख्वारन তारा किकारले हान भारेरव ? **ने**य-রের জ্ঞানে, যাহা, স্থান পাইবার অযোগ্য – তাহার সৃষ্টিতে ভাহা কিরূপে স্থান পা-বাহিরে যেমন তুই মহাকাশ অগ-ম্ভব, অন্তরে ধেমনা তুই জিবিজা অসম্ভব, জগতে দেইরপ ছুই প্রায়া অসম্ভব; भावभाषाः अग्रव्हे भून सक्त, विजीम श्र बैजन क नस्त । त्रान-छ्ट्कान कानी प्रक्र-বিপ্র্যায়েরই লক্ষণ, বাহা বাস্তবিক সত্য ভাছা काना (रागन त्यां जिय काना)—हिराहे জ্বানের লক্ষণ। সেইরূপ, যাহা জ্বান-স-প্রত নহে—জাহা করিতে না পার। অশাক্তির লক্ষণ নছে ; উণ্টা অংরো, তারা করিতে পারা যায় - এরূপ পূর্বে করাই/ অশক্তির ল-क्ता क्षेत्र मस्त्रिक हरेश ममल्हे जानि-उट्टन ; किन्न त्राल-क्ष्ट्रकान-पूरे भून महन-अभारत वनीक क्षा, याहा वामा-ट्रेन्बर कारनेत व्यव्यक्ति, शिहा कारा के

রিভদ জ্ঞানে স্থান পাইতে পারে 📆 যাহা তাঁহার জ্ঞানে স্থান পাইবার অযোগ তাহা তাঁহার সৃষ্টিতে কিরূপে আসিবেঁ জগতে যখন পূর্ণ মঙ্গল নাই—ভখন জগতে जगनन जनगरे जाहा; किस विश्वति অপরিদীম শক্তির প্রভাবে জগৎ মঙ্গতে দিকে আরুষ্ট রহিয়াছে—জগৎ নঙ্গলের 🕬 নানা-বিধ বেদনা অনুভগ করিতেছে— নাম বিধ শক্তি প্রকটন করিতেছে;—স্ক্ শক্তির মূলে ঈখরের মহতী শক্তি বিদঃ गान-परे एएथं जेवन मर्खनिक्तिमान्; ঈশবের মহতী শক্তি ভূত ভবিষ্যং বর্ত্তম কোন ঘটনাতেই প্র্যাপ্ত হইতে পানে ন এই অর্থে ঈশরের শক্তি অসীস শাহ অ **চ**এব, '*উ* গর গোল-চঙু**কোণ** স্থান্তী করি: পারেন ন।" বলিলে নহে—বিস্তু "পারে; বলিলেই তাঁহার জ্ঞান এবং শক্তিতে ক*ে* আরোপ করা হয়। পরমার্থ কি—ই ধাি**ন** সতাসভাই প্রমাণ-দারা **অবগত হই**ে ইচ্ছা করেন, তাঁহার প্রথম কর্ত্তব্য এই ে ভিনি শেষ-পর্যান্ত বৈর্যা ধরিয়া ধত্র-পূক তাহার অনুসন্ধান করেন—একটুতেই 🦠 रिध्या ना श'न। जाशनि असूमकान द **স্বতন্ত্র, আর, তর্ক দারা অন্যের মত খ**ুজ কর। স্বতন্ত্র; তর্কের ভিতর নানা প্রফল কুতর্ক এটেবশ করিতে পারে, কি**ন্তু** কুচ্চ অনুসন্ধানের মধ্যে কুতর্ক প্রবেশ ক্রিক্ পথ পায় না। অনুসন্ধান নিকল হটু পারে,—তাহা হইলে সত্য জানা 🙀 না—এই পর্যান্ত; কিন্তু কুতর্ক ক্লেন শতের পরিবর্তে মিথ্য। দাঁড় করায়— महान रम पार्ल निश्च हम ना। देश একী ৰাভিপ্ৰেত বিষয়—বাহা আমরা वृत्रि मेर्, छारा यथन आमहा बनाटक ने हैट बार, जयन जामना कूजन बादा हात हरके धूनि निरमन कतिराहे

ALA MOR

कति : कि ख जामता यथन । खानेशन यदः কোন-একটা বিসয়ের প্রকৃত তত্ত্ব অবগত इट्टें शहे, उथन वामुहा भावदशत्के खा-लनात हत्य (मज़ल धुलि निर्माण करिना। शवह (गंधारम में ज्यूमकाम नरस्-ति-বল জয়-প্র'জগই আমাদের একমারে উ-দেশা, মেখানে আমরা আপনার চক্ষে ধুলি নিকেপ করিন-ভাছাও স্বীকার, ৩-थालि-(कार्षे अलाग साशिक्टे इहेरन-তাশ প্রাণতেও সাড়া গ্রহণে না—এইটি আমার ব মংগল্প। তত্রব পরবার্গ কি --हैश गश्री मन्तर होंसे छाटन लोखर 砂液性 布信机 计制制 করিতে স্তু-প্রতি তিয়ের তহা**রে**গ্রা পরত ইউন্; खना काश्रद व काश्रद खार ह वा नास्टित বুঝাইটেড ১ লেলা, এটো মন্ত্র প্রতিক আপনি ভাষা বাশ, ৬ ৫ ি জেল ৮ প্রসাপত্রকটে 南北門 如此一日門 网络合河南 医神经病 इस्या पाटक- प्रकार्य साटल् खान, धन मार्थ नाहें। अग्रेशन वर्ष एकान अब केतिय হুইদ্যা খাকে, ওবে ভিন্ম খাচানি মেই এক্সেব ভিতৰ ওলাইয়া দেখুল,—ভাষাৰ সত্ৰ নিভান্ত নিজ ১ ধ্টবে না। ভাঁহার এক্ষেব গভীর অভ্যতঃ িচনি যে এক মুহুৰ্তেই তলাইতে পারিতেন--এরপ গ্রিড্যাশ্য করাই অন্যয়; বৈধ্যা গাঁৱলা উহোতে অল অল্ল কমিয়া তলা-हैटल इहेटन,--ज्ञास ग्लांन दम्बारन त्य. নে: প্রায়ে গভীর অন্তিস্তালে ভাহার উত্তর ঋক্যক্ করিতেছে; পেথিবেন যে, সে উত্তর गणुषा-छ्वादमद निष्ठां खश्रमा नहरू। अथन, পরমাথ কি. এই প্রমটির ভিতর কি জোতি শ্বয় রত্ন এচছন রহিয়াছে, ভাহার অনুসন্ধানে এরত হওয়া বা'ক।

পরমার্থ কি ? অর্থাৎ মনুষ্য জীবনের পরম এর্থ কি ? এ এগ্রের ভিতর আর একটি প্রমান্ত্রকার রহিয়াছে ; সে-টি এই যে, মনু জীবনের পরম অভাব কি ? ক্রধান্নপী অভাব যদি আমাদের না থাকিত, তবে ধানা আমা-দের অথের মধ্যে পরিগণিত হইত ন। গুণা আছে বলিলাই ধানেত অন্তেঘণ : পরম জ-ভীৰ আটের বলিয়াই পারন আর্থের আরেধণা। ক্ষান্ত্ৰণ আয়াদের বিশেষ ওক্লাকীণ অপৰি : কিন্তু তাহা ছাড়া আয়ো সমংখ্য জাতীয় সভার আমাদের আছে: লগ গার-**স্থিত** লাজিল কাবা-ভকার জন্য কোন ভাবনা নাট, কিন্তু ভাহার স্থান্ত হাস্থাই জান্ত্রে श्रतिष्ट्रती । अध्यादमत विद्यार विद्यार विद्यार विद्यार का होता है हो तह भारत तह माराहन प्रकार ার পু পরিষ্ বেল্যে ডিজ গ্রামান্ পরি**মিত** --কাটীই আমানেত প্রচ অভাব। **বিশে**ধ True of the con-्रं **ंलंश प्र**ाष्ट्राहे জারত হব বিলে স্বল্থয় হাত, ঘ**লার বিষ্**ধ গ্ৰেষ্টি জন্ম নাম প্ৰতিবেল্ল ন্তৰ্কী সন্মায়িতিক্য মাই, 😁 জাব আলোলের অভাবে (ফি.ন। ष्यक्षात्र है। जिन्न करते सक् जन्नकाह-क्रमी অপ্রের পরের সক্ষরিভিন্ন, এবং ভাষার জ্ঞান্তৰার বিশ্ব- আলে(কা **নিতর্ক**তা-য়টো ডভাটের আধ্য়ে **শ্রবণেন্ডিয়** ভাহার আকাজগার বিষয়-- শ্রন এখানে দেখিতে গৃষ্টাং যে, তক্ষু কেলল অঞ্চলার-রূপী একটি মাত্র অভাবের আবার : কর্ল বেলক নিহুদ্ধতা দ্বপ্ন একটি মাত্র হাভাতের আধার: উভয়ের কেহই সাধারণতঃ সকল জাত বের আধার নহে; কিন্তু " এরা পরিমিত" ইহা আলাদের সকল অভাবের ্লাস্থিত দাধারণ - বি-এই সাধারণ অভাব-টির আগার কে ? অংগাই, চণ্, কর্ণ প্রভৃতি সমস্ত ইন্সিয়ের সাধারণ মধ্যস্ত্র ; াতেই প্রতি-পন্ন হইতেছে যে, আলোই ঐ নাধারণ অ ভারটির আধার; আত্মাই অপূর্ণতা-রূপী অভাবের আধার-। আত্মার এই যে, পরম

অভাব, ইহার এর্থ (কি না আকাঞ্জার বিষয়) কাজেই পর্য অর্থ-এক কথায় -পর্মার্থ। দে পরমার্থ কি ? চাব্দুয় অভাব যে, অন্সকার, তাহার আকাজ্ঞাব বিষয় অন্ধকারের আব-कन विश्वीं ७ ; कि १ न। छाटनाक ; उत्रान আত্মার অভাব যে, অপূর্ণতা, তাহার আক।-জ্ফার বিষয় অপূর্ণতার অধিকল বিপরীত— कि १ -न। पूर्व गन्न । ७७ ६न, पूर्व मननह আত্মার পরম অর্থ—এক কণায় –পরমার্থ। এখন চঞ্ অন্ধকার-রূপী অভাবের আধার, আজা অপূর্ব - রূপী অভাবের আদাব, এ মেন হইল; কিন্তু আনোকের আবার কে? পূর্ব মন্তুলের আধার त्क १ 'बारनारकत स्थात-मुद्दाः भ्र শঙ্গলের ভাগার---পর্মান্তা।

পরমার্থের দিক্ থৈ কি, ভালা গামবা ইতিপূর্বের দেখিলাছি: এরাত্ত ইং র ৴ এগর णिक् श्रद्धभादर्थद्र फिक्, सार्थ क्ष्ट्रेट स (लाइस्ट्रायद দিক্ পরমার্থের দিক্, লোকার্থ স্ইতে নির-পেক মঙ্গলের দিক্ পরমাথের ুলিছ : এখন পাইতেছি যে, পূর্ণ মলদাই পরমার এবং তাহার আধার-- পরমাজা। প্রাকৃতির অভ্য-खरत (राषा । माका । भत्मार्थ माहि - शर्व মঙ্গল নাই; কিন্তু প্রকৃতির সর্বা ভারেই **পরমার্থের বিকে**—शुर्न मञ्चरतात निक्ति—शोज নিরন্তর চলিডেছে; ভাই, অসভা লাগ মধ্য **२हे८७** त्रकाला, अन्यार्थन मना **१हे८**ल नु**र्या**, ष्यञ्चारमद स्था ४३८७ खान, करम करम অভিবাক্ত হইতেছে। কোণায় কোন্ এক অলকিত ভাণ্ডার বহিয়াছে (আছে এই প্লানেই---মামরা মনে করিতেভি কডই না জানি দুরে) দেই পরমাশ্চর্যা অলোকিক ভা-ভার হইতে মসুকোর আজার অভাব-নিতা নিত্য পরিপারত হইয়া আসিতেছে; সে ভাগের পূর্ব ভাগার—দে ভাগার অক্য ভা ভার; তাহার নাম পূর্ণ মঙ্গল এবং ভাহার

অধ্যক্ষ এক অন্বিতীয় প্রমাতা। প্রমাত্মার এই পূর্ব মঙ্গল— যাহা সমস্ত প্রকৃতির মূলে কার্যা করিল। গকলকেই নিম্ন পংক্তি ইইতে ক্রমোক্তি উচ্চ প্রক্রিতে উঠাইয়া দি-ভেছে—এই পূর্ব মঙ্গলের সহিত আমরা যদি আমাদের ইচ্ছাকে একতানে গিলিত করি, তাহা ইইবে— শ্রি সমস্ত অগতের উদ্দেশ্য বার্থ হা প্রেই স্থাল্ডের ইজা বার্থ ইইবে, বিজ্ঞ বরং সূর্যা পানা মে ইছিছিত ইইতে পারে, নিখিল আকাশ রসা তলে নিমন্ন ইইবে পারে, তথাপি পূর্ব মন্ত্রের একটি রেণ্ কলাও বিহ-লিত ইইতে পারে না, স্থাল প্রস্থান্য ব্যক্তির আন্যালিক শত্র সারের দূরত্য চাল্ডিব আন্যালিক শত্র সারের দূরত্য চাল্ডিব

সবংকই প্ৰিতে শানিতেছেন যে, এ भक्षा एक कि । ८२। **इस्त, अमस्ट** वीषे। বেঁটে, বাদ বিল্লালনা হইল। কিন্তু উপসং-ছার্ হলে কাটা খোচা সক্ষরে সূই একটি क्या दला भावनाक। খনেক কাল প্রসব বেদনা ভোগ কার্যা, সার্থ—গর্ফের প্রান্থ করে, গার্চস্থা কোলীন্য এসব করে কোলীন্য শ্লাভাত। প্রাণ্ড করে, সভ্যতা—গরমার্থ প্রথম করে। এই সব প্রস্ব বেদ**না বি**প্লব নামে প্রাদিদ্ধ। ধর্ম্ম-দোপানের ভাত্যেক পংক্তিতে হাঁ এবং নাএই তৃইটি দিক্ আছে; ' ভাহার মধ্যে না'মের দিকে লোকের বেশী মোঁক পড়িলেই লোক-সমাজে বিপ্রব ও মাতা-মাতি উপস্থিত হয়। এত শতাব্দীর করাশিন্ রাজ্য-বিপ্লব ইহার একটি জাজ্জ্ল নান প্রমাণ। গত শতাব্দানে, ইউনোপে, সভ্যতা-পংক্তি হইতে প্রমার্থ-গংক্তিতে উথান করিবার একটা অন্যাবস্থিত উন্যাস--আঁকুবাঁকু-- চারি--দিকে মক্তক উত্তোলন করিয়া উঠিয়াছিল। ্রাক্তবস্থায়, সভ্যতা-পং**ক্তি ছাড়িয়া** দেওয়া बहैराव फिक् (अनिष कवामीन वादकार्व ब्हिटमा देशत भथ ८ पर्नक), ও পরমার্থ পর্যক্ত

व्यवनक्षते कदा हैं। दात्र फिका वाहादमत गरना मट्या हाँ देशत पिक् चामुर्ग श्रमतीरक खेलान कतिशाहिन, (म-मकन ज्यानी त्वारक व भ्रश्या অতীব অল্ল হইবারই কথা। क्लानी त्लान-**দিগের ভ্**তান। ধিষ্ঠিত আদর্শ দাধা বা লোকের। ছু **কেমন করিয়াই** তা বুলিতে পারিলে—কাজেই সাধারণ লোকের মনে না'য়ের দিক্টাই বিপ-রীত প্রবল হট্যা উঠিল। সভাতা ভাডিয়া **८क्ष लिएउ , इरेटा**— अब्रेडिटि कास्तराहर कर মাত্র বাত হইলা জিপিলেও ও পাম্পেলেও ভিতে সাংহোহণ কৰিছে হংলে । পভাৰটি সতি হাও কলেব নীলে গ্ৰাণ প্ৰচিপ্ৰ গ্ৰেল। देश्व क्य कि इंडेन १ अन गार ८,०५ छ। পরেকে সভাত তেতি ও এখবি হয়ীয়া পোলালন । এখন উপায় 👉 🔸 প্রশার্থের আর্গণ 🕞 খনো এত এলেশ হয় নাই খে, তাহ, জন-দাধারণকে উপলে ডানিয়া ভূনিদে, ধা देवरी सादान आकर्षन विकासिक मारा एकियाँ क्रम-मम्बद्धक मेरिज हेर्समहत्त्र विश्वासन एइस् । **भारिता** । प्राथितिका भवळः वाङ्कल ५०३ গৰুগুলি গুনিতে পেছন সমধুর, পাঞাহ পরমার্থ ! কিন্তু ফ্রাস্ন্ধ্রিলবের অভিনান খুলিখা দেখ দেখিবে -- কি ভয়ানক। স্বানি-্র ভার অর্থ স্থেছোষ্টার সমতার অথ নামতা, **ए। इक्षा**रिक वर्ष लाङ्का । वर्त्वमान कलाकी সভাতা পংক্তি হইতে পরমার্থ পংডিতে উৎান করিবার জন্য প্রস্তুত ২ইতেছে: किसा भारतय जिकाक - शांशाविनी भारतह पिक्यक-मार्वेशान । जागतः महाजा (जीक-কতা এবং সামাজিকতা পরিত্যাগ কবিতে উদ্যত ;--অনেকেই আমরা মনে মনে ঠ'হ-রাইরাছি বে, আমরা পারমার্থিক লোক---লোকিকত। বা সামাজিকতা আমাপের জন্য শ্নহে; লোচকে (অর্থাৎ অক্ষম লোককে-ক্ষতাশীল লোকের কথা ফতলা) আমরা फताई ना,--रनाक स्वन छश् रकरल छताई-

প্রে**ই সাম্**ঞী --ভাল বাসিবার মাল্ডা **ন**ে। भटन कत देशन आभत। आगा नत । न ताला যতকিছু আচার বাসখাস গাড়ি-নাঁলি সভাতা সমস্ত ই ছারখার কলিয়া ফেলিলাম্ - ভাছার পর আমাদের দশা के इहेर । नवशास कादन भवगादर्श चाकर्र कि १ वन १ अनुन কৈইয়াছে যে, ভাছা আন চিচাতে তাড়**্ড)-**পথক্তি ইইটেড পর্যাপ-পর্যন্তে এক ক্রেম্থ मितिया गीवर्ष १ क्यमण मा--४३८। १(छ) ভাষা প্রথম দেখা সাইলেছে, অনুন্তুত মুগ্রুগান্তাবের স্থান্ত সভাতে বা, কবে ব্য लाई। एष श्रुलिमां ६ कविष्टा विविद्यान वर्षे शहर । ষ্টালেপে শ্ৰ**ন** সভজেত লভাজন্ত, Debut to (making All + Backers, or one room. ব্যাস্থাকে জেলে হৈ সংজ্ঞান্ত সংস্থা ध्ययम् करिस्ट-भहार्वतः । ५३ अनः हमायसः ভানিয়া আখানের উভিত্ত হা, আমগ্র কেন্দ্র गान भारतानि । स्थापिकरून अंतिकरून এবং সভাত, গ্রাদুর পার এবর। হত রাখিয়া 双尺头 网络戴 网络戴伯伊克 有代本 机前间的 计 ভার ;—পর্বতেন মত্য হাতি-নাতি সমস্ত ই ানিজ্যাল কা কাব্যা—শুল কেবল ভাছাব জসার অংশ-তুলিই ৭ রত্যাপ কবি ও তাং (4 সমস্ত সালাংশ নিস্মৃতি বলিয়া ভাচার উপ-**(तरे** भागार<sup>त्त</sup> मन श**ु**म चात्र कार्य, — তাহা হটলেই আমাদের ইতিহায় প্ৰত্যাথক হটাবে, ও আসাদের অভীও কার্য্য বাচ্ছিত অএশর হইবে। আর-একটি ল । এই খে, কৌলীনোৰ কাল জগন সিখ্যাছ, এখনকাৰ কাল সভাতার কাল। প্রবের প্রের শেষন এফ এক জন অসাধারণ ন্যাক্ত উপিত ২ইয়া। আবে আর ব্যক্তিকে ও এক দূর পশ্চাতে ফেলিয়া বিতেন, এখনবার কালে নেরপ প্রাধান। লাভ করা মহজ ব্যাপার নহে। এখনকার কাল গৌরুষ-প্রকাশের কাল নহে, किन्नु कार्यगन्नादात्र काल ; याशाट विलिश्व-

র: প কার্যোদ্ধার হয় -- তাহার প্রতি দৃষ্টি हाथिश निकटन भैराद्वल इटेशा कारी कवारि এখ-কালে শাভা পায়। यारिक एरिय विश्वता किनीत्नात वर्षान शाह्डाय के मलाजात अमिन शैनावया त्य, িকোন একটি \কার্য্যাসাধনের **অভি**প্রাসে দুশ-कन अकल हैरिएहें कार्यामाद्रत पिट्न ্কাহারো লক্ষ্যু প্রকে না—অপেনার আপনার প্রাধানোর খিকে সকলেরই লক্ষ্য স্থিতিই ইউরোপীয় কার্যানেজে. কার্যোদ্ধার — ভাষার পরে আর যাহা কিছু, এই-মে-এ হটি ভাব দেখিতে পাওয়া যায়, ইহাই সত্যতার সর্ব্যেধান পরিচায়ক। ইউ-রোপীয়'দণের নিকট হইতে আম্রা আর-কিছু শিখি বা না লিখি—এই পরস্পরাধীন তার /ভাবটি শিকা করা আমাদের পক্ষে মিত্তিই আবশাক হইয়াছে। আমার আপ-मेख्र बार्राष्ट्रे दा कि कार्या ७ क अंग कार्या ইতে পারে, এইটি নিরপেক্ষ ভাবে পর্যন্ লৈচনা করিয়া দেখিয়া আপনি আপনার উপযুক্ত কার্য্যে গ্রন্থত হওয়া এবং অন্যক্রে তাহার আপনার উপযুক্ত কালে প্রবৃত্ত হইতে পেওয়া—তাহার সে কার্যো কোন ্রপ্রকার বাধা নিক্ষেপ না করা, এইটি হইলেই সকলে সমবেত হইয়া কার্য্য করিবার পথ---এক কথায় সভাতার সোপান—আমাদের ্রিশে 🔊 অক্ত হইয়া যায়। এরপ হইলে, সভাতা-পংক্তি হইতে পরমার্থ পংক্তিতে উত্থান করিবার পথ এখনকার অপেক্ষা অ-নেক পরিমাণে নিঘণ্টক হইয়া যায়।

# প্রাপ্তি স্বীকার।

কাৰিরা রতজ্ঞার সহিত্ত সীকার করিছেছি যে নিয় লিখিছ ও প্তঞ্চ পরিকাওনি উবহার প্রাপ্ত হইয়াছি

- ১। ঈশর ভোতে ও প্রার্থনা। বাকুড়া ব্রাহ্ম-স্মান হইতে দিভীয়বার মৃত্রিত হইয়া প্রকা-শিত।
- ২। নবগীত মঙারি, প্রথম **খঙা** জী নবীনচক্র দাস প্রণীত।
- ৩। শাঝা-স্ত্র। কপিশ মহর্ষিক্ত। অনিক্র ভট্ঠত কৃত্তি ও বলাত্রবাদ সহিত শ্রী কালীবর বেদান্ত-্রীশ কর্তুক সংশোধিত ও প্রকাশিক্ত।
- হ। জীবন প্রীক্ষা বা ভীষণ শ্বর চতুইয়।
  প্রিয়নাণ চক্রবর্তী ধারা বিরচিত।
  - শতদল। আ হিতেলনাথ ঠাকুর প্রণীত।
- া । ভক্তি ওভক। আগ্রী ক্ষ**াস্থার সেন কর্তি** ব্যাধ্যাত।
- া। নীতি পালে ভুন্টালপাছা। আঁ ঈশা**লচভা কেব্** লিক্ডিডে।
- ৮। মণ বাংলাল। স্থি∷নীব চভুগ সাংবংশরিক কাঠা বিল্পে । বঞাক ১২৯২-৯৩।
- চ। ভোনিও পদাধক চিবিৎসা সার। আঁ গ্রন্থ ক্লিজ বাম য় কর্তৃক সঞ্চলিত।
- 201 Phrenotogical volution of the brain in its mental functions by Nursing chandra Haldar.

Jurnal of the Asiatic Society of Bengal Vol LV, Part 1. No. 111, 1886.

Proceedings of the Asiatic Society of Bengal November 1886.

# বিজ্ঞাপন।

বঢ়কাল হইল সাদি গ্ৰামা-সমাজের গৃহ নির্মিত হইয়াছে। এখন ইহা নিভান্ত জীব। ১১ মা ঘের উৎসব উপলক্ষে বহু লো-কের সমাগম হয়। ইহাতে বিল-ক্ষণ অনিক্টের আশস্কা আছে। এ জনা টিকীরা এস্থানে ঐ উৎস-বের অনুষ্ঠান করিতে নিথেধ ক পরে আদি ব্রান্ধ রিয়াছেন। সমাজের অধ্যক্তেরা শ্রীমৎ প্রধান আচার্যা মহাশয়ের নিকট প্রার্থনা করাতে তিনি আপিনার বাট্রে বহিঃপ্রাঙ্গণে মাঘোৎসবের স্থান স্থির করিয়া দিয়াছেন। 'অত এব আগামী ১১ মাঘ রবিবার প্রাতঃ-কালের ত্রক্ষোপ্তাননা আদি ত্রাক্ষ সমাজের তৃতল গুহে না হইয়া শ্রীমং প্রধান আচার্য্য মহাশয়ের বাটীর বহিঃপ্রাঙ্গণে হইবে। ঐ দিন সর্বদাধারণে প্রাতঃকাল ৮ ঘটিকার সময় ঐ স্থানে উপস্থিত হইয়া ত্রন্ধোপাসনা করিবেন।

> ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। সম্পাদক।

# আদি ব্রাক্ষসমাজের নিযুক্ত কর্মচারী।

सर्गात्रः

শীযুক্ত রাজনাব। গুল বড়।

भ्य १९८३ ।

किल्ब कलसमा ११७३ (११५८४)

" वाकारोम स्थल्यकतारा

,, जनगोरमा**र्ग** ५८५ विश्वासी ।

, सन्धानम् नदस्यविष्या

.. क्षेत्राथ विदेश

,, 'जाराखनाय प्राकृत ।

" প্রিয়নাথ নাষ্ট্রা।

,, पाश्ररणाध कोत्वी।

;, जिभियमाण मृत्राशाशाशाशाशा

्र वनीन्द्रन्थ ठीकृत ।

अल्यान्य ।

वीगुक तरीलनाव क्रीनुद।

सङ्काङी सम्भागक ५ गढ्टपाकः ।

त्रीयुक्त नीनमति ५ টোপাপার i

भन्ता भागा ।

শ্রীযুক্ত শ্রীনাথ মিতা।

# তথ্যমিনী পাত্রকার সম্পাদক। है শ্রীযুক্ত দিজেক্সনাথ ঠাকুর।

্ৰনী পতিকার সদকালী সন্দাদক। শ্ৰীযুক্ত হেমচক্ৰ বিদ্যারত্ব।

### আয় বায়।

শ্ৰাবৰ ৰ্টা**ত ফা**ৰ্নিক প্ৰ**ত আক্ৰ সৰ**ং হৰ।

### णापि जाधानंशाच ।

<b>4</b> (1)	• •••	>988Ne/•
পুর্নকার ছিড	***	२ २५०५ ७
সমষ্টি ়	* * * * * *	492dle '
ব্যে 🖔 🕌 🛶		२०७३॥ ७

### जाहा

	जार ।		
্ত্ৰাক্ষময়ন্ত্ৰ	. 1 4	<b>&gt;</b> %	ગાન/ક
ম	तिमक भान ।		-
<b>अभग्रहर्मि</b> ८०१ यक्तराथ	ঠাকুর		
ান্ধ শঙ্গীত বিদ	क्षां भूद माठा दी	Paky	
ইটিক বাবু স্বরীজনাথ	र्शक्त	\$t*.	si.
" <b>" अ</b> भनीटमीर	क रुट्डालाशाम	٤,	
" " শ্ৰীনাথ মি	Ā	34	
" " देवकुश्रेगीध	সেন	₹√	
<b>সৃ</b> খ	ৎস্থিক দান।	_	
तात त्रमशैदभाशन दर्शेषु	ती छून ভाঙার	₹0,	

প্রাযুক্ত ধার জ্যো। চরিজনাথ ঠাকুর

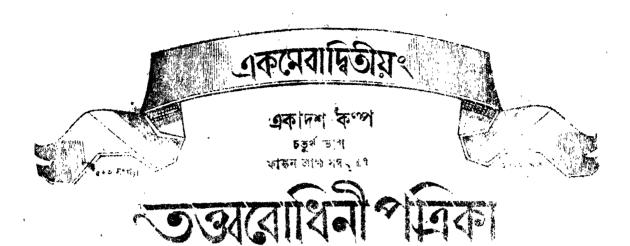
গ্ৰংগদ্ৰৰাথ ঠাকুৰ

कानीगाथ मख

नीलकान म्राधीशांप

	Lacin	<b>*</b> ***
প্রীযুক্ত বাব ক্ষেশচন্ত্র ব	<b>%</b> .	*
ে কিলাপচন্দ্ৰ সিংহ		31
" " নকুড়চন্দ্ৰ বিশাস		*
694	র্মের দান।	
প্রীমুক্ত বাব শ্যামা <b>প্রসন্ন</b> চট্টোপাধ্যাদ		35
्मामाधादत व्याख		क्षान्
	оцинарного и по право оподавану, и	১৩৯:(৮)
ভত্তব্যধিনী পত্রিকা	a > v	રખ્યાહ
ব্সবালয়	***	(())
रखानप	••	৮৩৯।০
্যক্তিত	•••	২৩৯ /৯
রাক্ষ্ণ <b>এ</b> ছ ওকা <b>ং</b>	শ্ৰ <i>মূলধন</i>	७२५०
ক্ষাপ্রতাম এবং বর	# • • P	80,
দাতন্য	***	b- <b>&amp;</b>
- অধ্যাস্থা রাম্যার		2216
मग्रि	e de la composition della comp	>9384d0
, ব	7 <b>% 1</b>	
ভ্ৰামান্যাজ	<b>◆ 4</b> 7m	७८३॥/७
তত্ত্বোধিনী পত্তিক৷	• # •	କ୍ଷରୀବ
श्रृक्षकानग्रं	, ***	* 68/6

ত্রাগান্য ওচনাত ও



व्यानाधकस्थितम् प्रवासीकालान् (त्तानाभूनाक्षित्वं सम्बन्धकारः । लगः नित्यः ताः समानान् विश्वः स्वतः महात्वः । करा सा १ वर्षः १०० वर्षः । वर्षः १०० वर्षः १००

कार विकास के () हात माने भावति । सर्वित अवाद किस दिन १० व्योधा छन् च अपूर्ण सन्तर ।

## আদি ব্ৰান্সনমাজ।

৪ মার ছাপেলার ভাল্ড স্প্রের ন

का उपरमान है भटन है.

আম্যা প্রতিক্রেই আপনাতে আপ-नारक छुदै, इंटिन दर्भागदेव स्वति, स्विशिव সমতের সহিত সংযুক্ত ভাটুৰ, এবং নিধিল সমস্ত হইতে বিচিছ্য লাবে! সমস্তের পাহিত সংসূতি ভারেই পারমাথিক ভাবে, আর ্যুমন্ত হইতে বিজ্ঞিল ভাবই সাংখ্যারিক ভাব। बहै भातमार्थिक छारतम भून देकल यहर প্রমান্তা, এবং এই সাংসারিক ভারের ম্ল কেন্দ্র জাবার।। পরমাত্মার সাহত জীবা-স্মার যোগ -পরমার্টের সহিত সংসারের যোগ—অকাল মহাকালের দ্ধাহত বর্তমান काटनत त्यान-ैहेरार अशार्क त्यान । अ-ধ্যাত্ম-যোগের নানা পদ্ধতি মানা পাত্তে উপদিপ্ত হইয়াছে, কিন্তু যে পছতি আৰা দ-নের প্রকে সর্বাপেকা শ্রের ভাষাই ভাষা-शत्क छैश्रान्छ इहेब्राट्ड ; छाश खरे, --

"अन्दर्वाशस्य भारताशाचा अवे कहाना हो। ज अअ-वरका दरक्वार भारतर क्यारहोकतर"

তঞ্চার ধন্ম সরূপ জীবাজা শর সরূপ

#942 - 17 제한법( - 화학 ) 전문 문원 문항 회사회 회사 ক্ৰীপত আলো **গোই প**ৰ পিছত তালে ভালৰ ফাল্ল প্র**রক্তে** কথ্যতে ১৯৮ রয়ে ( हैं। राइम क्षिप्त कामा लाहायम्बा इन्छ। र প্রসাদ পুৰা হটতে হইলে জানালের মূলকার-নং । অন্তঃকরণ ধৃইতে উচ্ছিত করা দ্বান্দাক। श्रामहिन्द मून कादन कामहिन्द का ध्रमदिया ; অংশ গারমার উচ্ছেদের একনাত্র উপায় এই – প্রমাত্মা হইতে পিচ্ছির হইলে জী বাসা যে কি এগাড় হীনাবস্থা নিপতিত হং ভাষা আপনাতে সাক্ষাৎ উংক্রি কর।। অংপনার একান্তিক আকঞ্মতঃ উপলাদ্ধ করা, লার, পরমাত্মার অপার মাহারা উপ-লান্দি করা—এ তুই উপনান্ধি-কার্যা বাস্তবি-करे किছू बाह, पूरे कार्या नरह--हेश अवह কার্মোর তুই পৃষ্ঠ। আপনার প্রগাঢ় অকিঞ নতার উপলব্ধিতেই পরমাত্মার মাহাত্রেরে উপলব্ধি হয়, এবং প্রমান্তার অপার মাহাত্ত্বার উপলব্ধিতেই আপনার প্রগাঢ় অকিঞ্চলতার উপক্ষরি হয়। এ কথার স্তাদিতা যদি পরীক্ষা করিতে চাও—তবে দিপ্রহর রক্ষরীক্তে একাকী কোন বিল্লিকা-নিনাদিত গ্রহন অরণো প্রবেশ কর- পর্বান্ত

क्राप्टरण अगन अदनक अवना आहर (वशासकी ক্লিক অন্তৰ গতিবিধি নাই—সেইরপ কে। क অর্থাে দিপ্রহর রজনীতে একার্নী প্রবেশ ফর, তাহা হইলেই – এক দিকে আপনি এবং তারু,এক দিকে নিখিল সমস্ত—এই তুমের তুর্ন । আপনার প্রার্গীয় ভ্রিক্সত। (मनोश्रमान इंश्य **छिटितः, त्मृष्टे** निश्वक মুহুটে নিপিল ক্লান্ড ভেদ করিয়া মুখন ঈখ-্রের পরিত্র চক্ষ্মভারত আতার গভীরে নিপ্তিত গ্ইবে —জ্খন পাপ কল্মিত আত্ৰা আপাদ-মন্তক প্রকশ্বিত হইয়া উঠিয়া লুকা-ইবার আর ভান পাইছেনা; এই সময়ে यथन शाधक केरिक श्रदात अक्षात पर्तन केका-**রণ ক**রিয়া পরমাতার অপ। **র** করুণার **অ**ভা-ভারে প্রতিবেশ করেন, তথ্নই ওঞ্চার ধন্ত অবস্থানে ক্রিকারপে শর পরব্রহারণ লভোৱে তথারীভূত হটয়। যায়!

পরমাত্মার সহিত যোগযুক্ত 🗪ইতে ছইলে যায়াই তাহার একমাত্র দার-ভিডিল দিতীয় দার: <mark>নাই। আত্মার দা</mark>র তিনটি--জান প্রেম এবং কর্মা; তাই অ-ধ্যান্ত-খোগ বিধা-বিভক্ত-ভুজান-যোগ, প্রেম-বোগ এবং ক**র্মা**হোগ। শাপনার ভাগাড় · अञ्चलः अंतिन चात निशा नेचटतत मर्वा-জ্ঞতা উপদ্ধি করাই জ্ঞান-যোগের আ-तक-मूख ि धागता धमण स्नानि ना-"पूरे चात्र पुरुष्ठ शांप रुष्ठ" जानि ना-रेश जाना-टिएत अध्यक्ति नकन नटक,-- किख भागती , मठा क्रांनि ना - এक गांडि कुम कुरनेत ७ था-कृष्ट उद जानि ना-हैराहे बाबारमंत्र जल्ल-'ড়ই আর তুয়ে পাঁচ হয়" क्रांत लक्ष्म । हेहा कामता कानिए मा—कानिए हैं हैं ना, এই खना यागता छोटा वानि ता বিষয় আমাদের থেদের কোন কারণ নাই গ প্রাহেনর সভিত খাহার আদৃত্তেই কোন স न्त्रक नाहें अंतर महा श्रीवता श्रामि ना

বৰিয়া ইউনেপুৰি তাৰিকোঁ প্ৰভাই বেদ একাশ করিয়া দাকেন ; কিন্তু পত্ত আর कुर्य भार दर्मन इंडेट र भारत न श्रुक्ती कि अबि रियम है है एक शिरत मा, म्बर्देत्रभ कारनत महिल अटकवादेवर मुल्लार्क-রহিত—এরপ সভা হইতেই পারে না,— অত এব তাহা না জানার জনা খেদের কোন কারণ দেখিতে পাওয়া শায়<sub>ি</sub>না। অবশ্য, এমন অনেক সুক্ষা সত। আছে, যাই आंगारानत कृत्म खारनत चरणाहत,—किस्र याहा একেবারেই জ্ঞানের অগোচর—ঈশ-রের ও জ্ঞানের অ্লোচর—এরপ । সত। হই-তেই পারে না; "ছুই আর ছুয়ে পাঁচ্" যেমন অসপত, ওরগ অন্ধ সত্তাও সেই-রূপ অন্দেদ্ধ অভ্যব তেরূপ সর্বভান-বহিভুতি ম**ত। আমরা জাদি না বলিয়া—** व्यवका जानि ना विनशी-वाबादम्ब (शरम्ब कान कावन नाहै। आसाद्भव देशरण्ड का-রণ কেবল এই যে, আমরা একগাছি ভূণেরও শক্ত তত্তানি না, অণচ্ আমরা আপ-नाटक विश्वराग्न छानी भटन कति। ' आमुद्रा' দে কত অভ্যান, তাহা যদি আমরা একবার প্রণিধান-পূর্বক ছাদয়ক্ষ্ম করি, তবে সেই স্তে আমর। এই মছানু সভাটি হৃদয়ক্ষম করি ষে, ঈশক সমস্তই জানিতেছেন। वाळ এব आयारमर्बे व्यव्यक्तांनाम् इंडिर्तानी वंक्क जावादमंत्र नात्र कृतीक बहु देनहामाशूर्न নুহে, কিন্তু আমাদের অজ্ঞত। **ক্রির-প্রদানে** क्रिया है कार्त शर्रिय शर्रिय श्रीकर्व अ রূপ আশায় পরিপূর্ণ। 

কুলতার মধ্য দিয়া পরমান্তার প্রশানশে যুক্ত হওরা; অভ্যকরণের বাাকুলতা এপানে শর-করপ ও পরমাতার পূর্ব আনন্দ এখানে লক্ষ্য-করপ। কর্মা থার বিষয়া পরমান্তার মঙ্গলময় শক্তিতে যুক্ত হইরা ভাহার আনদিও কর্মা সাধন করা; এখানে আপনার দৈনাই শর-স্বরূপ। এইরূপ যত প্রমাতার মঙ্গলময় শক্তিই লক্ষ্যস্করপ। এইরূপ যত প্রমাতার অবং পরমাতার করনাই সমস্তেরই সার সম্বন।

হে পর্যাত্মন্। এই ভয়াবহ সংসারসমুদ্রে তুমিই আমাদের একমাত্র কর্ণধার।
আমর। অজ্ঞান ও মোহে আচ্ছর হইয়া
বিপথে পড়িলে তুমিই আমাদিগকে জ্ঞানালোক প্রদর্শন কর; আমাদের প্রাণ অধারে
ক্রেন্সন করিলে তুমিই তোমার প্রেম-মুথ
প্রদর্শন করিয়। আমাদের ব্যাকুলতা হরণ
কর; আমরা দীন হীন অসহায় হইয়া আমাদিগকে অমোঘ আশ্রয় প্রদান কর; তুমি
আমাদিগকে পরিত্যাগ কর নাই—আমরা
বেন তোমাকে পরিত্যাগ করিয়া সংসারের
বিষময় পথে বিচর্গ না করি—তুমি কুপা
ক্রিয়া আমাদিগকে ভোমার প্রসাদ বিতরণ

🐣 🏄 ও এক্ষেবাদিতীয়ং 🕞

# সপ্তথকাশ সাংবৎসরিক ব্রাক্ষয়াজ।

১১ মাত রবিবার **৫৭ রোজ ল**ম্বৎ।

এবারে পূজাপাদ ঐমৎ এধান আচার্য্য মহাশরেই বাটার ক্ষুতিভৌস্পে ৯১ মানের প্রাত্যকার্শীন মহোৎ দবক্ষইয়াজিক। তথার অতি বিস্তীর্ণ চন্দ্রাতপের , নিম্নে ও বাহিরে
বাহ সংখা লোক উপবিপ্ত হন। প্রাতঃকালে
এরপ জনতা ও উৎসাহ কখন দৃত্ত হয় নাই।
ভাষানামেরুকি গুড় ও গলীর আকর্ষণ। এই
নাহোৎসবে কোন বাহাড়েম্বর নাই অথক,
লোকের এইরপ অনুরাগ। ইহা বাস্তবিক্ত্র ভাষাের মনে ভবিষ্যতের আশা প্রদীপ্ত করিয়া দেয়। ক্রমণ জন-কোলাহল নিস্তর্ম হইলে বন্দনাগীত আরম্ভ হইল। পরে
আচার্যোরা বেদি প্রহণ করিলে পতিত প্রীহেম-চল্র বিদ্যারত্ব দ্রাহ্যান হইয়া নিম্বের
উপদেশ ও উদ্বোধন পাঠ করিলেন।

ধর্মসাগনই প্রক্ষলাভের কারণ। কিন্তু
কথাটী বড় সছজ নয়। ইহার জন্য ইচ্ছা
চিন্তা ও কার্সের ক্রমণ সম্প্রদারণ আবশকে।
কিন্তু কোন্ উপায়ে ইহা সহজ। মনুযোর
যথন সমাজবন্ধন হয় নাই তখন প্রস্তুতি
তাহার নিম্ন্তা ছিল। এই প্ররুতি হইতে '
সার্গের জন্ম এবং সার্থ ইইতে গাহ্ছার
ভিত্তি নির্মাণ হয়। এই অবস্থায় কেবল
সার্থের আর একারিপতা থাকিতে পারে না।
সমাজের স্থিতির নিমিত্ত পরার্থও ত্রপণেয়
হইয়া উঠে। আমি যথন সমাজক্রমুত্রে আর
পাঁচ জনের স্থিতি সমন্ধ তখন তাহাদের
সার্থ আমার উপোক্ষার বিষয় ইইলে চলে
সা। স্বতরাং গাহ্ছাই আজ্যুত্রাসারণের
সহজ ও স্কর্মর উপায়।

একবে দেখা বাক্ কোন্ সমাজের গাহ'বা বাল্বা ইহার অমুক্ল'। তুমি পূথিবীর
বৈ কোন সমাজ পরীকা কর তথাধাে থার্থ ও
পরার্থের সঙ্কোচন ও প্রসারণ দেখিতে
পাইবে কিন্তু প্রাচীন ভারতের গার্হ সার্থানি
পেকা সভক্র। এখানে পরার্থাই সার্থ এবং
পরমার্থ ভাষার নিয়ন্তা। এই শর্মার্থের
নামান্তর সার্কভাষা মহাজক্ত। অর্থাৎ
ইয়া সেলকাল নিরপেক বিভাল ধর্মনিয়ম।

জীবন নিয়মিই ইইড ি আমি এই প্রসঙ্গে ,অ্ধিক বলিতে চাই না, ছত্তিশ বৎসর তৈবে-িক ত্রত সমাপনের **পর** গা**র্ছয়ে প্রবেশ** ্দ্রিয়া লোকে যাল করিত ভাহারই একটী উল্লেখ করিব। প্রাচীন সমস্ত গার্ছয় কা-র্যোর একমাত্র পৃষ্ঠবংশ প্রক্ষমন্ত । এই পঞ যজ্ঞ শক্তে হয়তো অন্তেকে মনে করিতে পারেন ইহা প্রাচীন কালেম কুদংস্কারোপহত बैक्टी गश्कीर्न किया याता। বাস্তর ইহা ক্রিয়া বটে কিন্ত ইহার প্রসার বিশ্বব্যাপক। পুথনকার পার্ছর নিয়নে সগৃহের অড় জ্বোর প্রতিবাসীর কতকটা শ্রেম সর্মাধত হয় কিন্তু बहे थांडीन शक्कानुष्ठाशी गृहोत गृहा धन्म ক্ষুব্রনির্বিশেয়ে দার্বডে)মিক মঙ্গলে প্রসা-এই জনাই বালয়াছি পর· त्रिक एक्शाटक । मार्थ हैहान निक्छा। कनठ हेश शृहोत रिमनिक विकृतिः जनतिशर्या कार्यः हिन । ইহাতে এইকৈ ও পার্যত্তিক সমস্ত জেয় সম্পূর্ণ লিভর করিভ এবং ইহা ছারা ইচ্ছা চিত্যা জাধা জাধা সম্প্রদারিত হইয়া পর্ম প্রক্রমার্থ লাভের পথ উন্মুক্ত করিয়া ্ৰাদত 🖟

দেব, ঋ্মি, পিভূ, মনুষ্য ও তিৰ্ব্যক্ষাতির নের এই প্রাক্তরে **অন্ত**ভূতি। **उभागान** 🖟 खक्षार्का (पिनटमदा । 🖯 व्यस्त्रम ७ व्यसायम ভাষ্ঠেব<sup>্</sup>। লোকান্তরিত আত্মার,সারণ প্রিতৃ-শেষা 📝 অভাগতের অর্দান মনুষ্ট্রেবা। স্মার পিশুপ্স্যানির ভৃতিসাধন ভুতদেশ। लगरान मणु विनयादहर यिनि क्षित्रिन এह পঞ্যজ্ঞের অনুষ্ঠান করেন জিনি বেকাকে उन्न मर्द्धरााशक 🚱 न्यन्ती । প্রাপ্ত হন। ভাঁছার 🖂 🧸 অন্ত নাই, স্লেছের পান্ধ নাই। किन এक भन्दक आसादम्य हेर क्रीन छ প্রকাস উভয়হ প্রতাক ক্রিতেছেন। এই महान कान्द्रल कुछ जाबनीक लागातरनद

এই মহাজতে প্রাচীন ভারতের সাহতঃ চেঙাই হিন্দু ক্রানারন ও দেবদের। স্কু ক্ষুজ্ব এই কএকটা কাৰো তাহাই শিক हरेशा थादक । छान बाता जनाटक त्यार-मुक्त कर्ता जरशका दलाई कार्य बाद नारे, এই বুকিয়া বট্তিংশৎ বৎদরের সমষ্টি জ্ঞা-নের উল্লেখারও লাহন ও মুক্ত হত্তে ভাহা বিভঃণ করা হইত। ेश खान (यार्ग জন্মমাজে আত্মপ্রারণ। প্রাচীন হিন্দুর হাদয় কেবল জীবিতের শুভ কামনায় তৃথা নয় এই জন্য যে সমস্ত আত্মা পৃথিবীর মারা-বন্ধন ছিঁড়িয়া লোকান্তরে বাস করিতেছে, বেবাং ন মাতা, যাহাদের মাতা দাই ঐশরই মাতা, ন পিতা, পিতা নাই ঈশ্বরই পিতা, न तक्षः, वक्ष नाष्टे भेषत्रहे वस्तु, रेनवाधामिकिः, অগ্ননিদি নাই ঈশরই অগ্ন, শ্রেদার সহিত প্রতিদিন তারাদিগকে স্মরণ ও ভাহাদিগের উৰ্নিদেহিক ও**ড কামনা করা হইত।** শ্রজাযোগে লোকস্থিনে আত্মসম্প্রসারবন গ্রাণীন হিন্দুর দৃঁড় বিশ্বাস নিক্ষের নিমিত্ত পাক করা পাপ আহার করার তুলা, এই कना य अन्नशृनीत जानोकिंगार छाहारमन একমুষ্টি ছিল তদারা বর্ণ ও জাতি নির্কি-শেষে কুৎপিথানার আন্ত ক্লান্ত অভ্যাগত অন্ধ আতুর সকল প্রকার লোককে তৃপ্ত করা इंहेज। हेहा मामाट्याट्ग बाज्यभावन। পুথিবীর পশু পক্ষী প্রভৃতিকে আর কে ক্ল-পার চন্দে দেখিয়া থাকে, উহারা তে মনুযোর जनर्भ अनुरक्ष अन्य के प्राप्त के अन्य अनुरक्ष के अन्य के अनुरक्ष के अनुरक्ष के अनुरक्ष के अनुरक्ष के अनुरक्ष क গার্ছ্য নিয়মে তাহানিগ্রেরও ক্লুৎ্গিপাস উপেক্ষিত হইত না। ইং। কর্মারেট্র আত্মপ্রারণ 🕏

> **बारे** (छ। शक्षक्का अवस्त सुनिहा द्वार **এहे नमेख** कार्या (कवले**हें नमार्थ** खंदर कहें बदार्थ यार्थ चलुकू छ। এই का भूश निवृत्र (क्तम निर्**ष्ट्र के क**िवानीस नग्न किसे नवेख निट्यत समान जाति कविर्देशका

ইহা প্রমার্থে কি না সার্বভোগিক মঙ্গলে প্রতিষ্ঠিত।

हे जिल्दर्तहें विजनाय यहान जामर्ग কুল আক্রণক্তি প্রদারণের চেপ্তাই হিন্দুর वर्ष्ममाधन ७ (फक्टमद।। क्रूस मनूषा अनल কাল ভাহাই করিব। যে কার্যা অনন্ত কালের জনা হিন্দুর গার্হ স্থো তাহারই প্রতিষ্ঠা এবং পঞ্চান্তে তাহারই পূর্ণ বিকাশ। ফলত এই একটি কার্যো ঐহিক ও পার্যত্রিক উভয় चित्सनारे माधिक इहेटल्टा रेश अक पूर्त (यमन आञ्चनाङ ल्यमातन ता धर्मामाध-**নে**র উপযোগী তেমান আর এক দিকে সা-शांकिक छेदकर्न भागतनत छेशद्यांभी। तन्त-সেবায় আধান্মিক শক্তি, ঋষিদেবাল দিন্য জ্ঞান, পিতৃদেবায় লোকস্তিরে বিশ্বাস, মনুমান সেবায় সামা, এবং ভুত্বেলায় বিশ্বভূমীন দয়া ও স্নেল। ইহার একটাকে ছাড়িলে মনুনেরে धर्भाभागने षामछात हरेला छिक्रे। धर्मयुख्यत এই হইল পার্যাত্তক উপযোগিত।। ইহার ঐহিক উপধোগিতা কতদূর তাহাও CF# 1

विभनगराखंद मक्तानां भीतृष्टि कहा (१६ ধারণের অপর একটি উচ্চ লক্ষ্য। কিন্তু এই বিষয়ে মুখ্যত এই কলৈ তি তণ থাকা চাই। ष्णांशाक्षक वल, छान, छानीन मधानसाव ক্রতি সন্মান, সামা ও দুয়ান শক্ষজ্য দারা তাহাও সিদ্ধ হইতেছে। কর্ত্তবা সাধনের হৈতি উপেক্ষা থাকিলে সংসারের ছিতি নত্ত হয়। ইহার জনা আখাজ্মিক বল চাই। भावात मुक्तारणका (मन्द्रमबाई मन्द्रमन त्यार कर्डवाश्राधन्। हेरात श्रष्टात प्रभाना গুলি সহজ এও অগৰ হয়। স্মৃত্যাৎ দেব-নেব। হইডেই মসুবোর কর্ত্তবাদাধনে আ-भाषिक वजा अव्यक्ति वाजील विकाहिक छेशकर्शालकर कहते दास का ना अविद्यातात टनहें कान है शहर नर्ज शहर के किए। वृक्ति

জীবন পরস্পালয় এবাহিত হইয়া জনস্মা-टेंबत धर्मा नीजि ও खाठावानि निर्कातर्ग प्राप्ते কথায় সমাজগঠনে তোমার মহকারিতা করি-তৈছে। তোমার তরুণ জ্ঞানের ইহাঁর নিকট নতমস্তকে থাকুক নত্বা সমস্তই বিপর্যান্ত হঁয় এই জনা পিতৃদেবা অর্থাৎ शिक्ति निविद्धाः मुद्यान । दक्ति त्रदेशानः ना यानिया कनभगाइकत माजिल्ह निर्वादिनत জন্য জাতি বর্ণ নির্দিশেষে অভ্যানতের मुखान नृत्या अथीर मानादका। भाराद अलादन भन्न्या निर्श्वत जाकम, रहाली 5 मा-थांजिक दक्रदनत श्र**र्शास छि**स विक्रिक्त **ह**हेग्र। याश कृशि की होनि छ्० मित्रांत (मर्झ विश्व-जनीन प्रशा भंगल हेशा अविटिक छाल्लि ঐহিক উৎকর্ম-দিদ্ধি বা সমাজব্যিতি অসভব হইল উঠে। প্রালীন হিন্দুর এই প্রথেজ। গার্ছেরে একটা নিয়মে ইহকাল ও পরকাল অনুসূতে রহিয়াছে। এই জনাই ব্লিয়াছি हिन्दूत शाह्य पदमार्थ कि न। मार्क्ट छोगिक विस्क धर्मानग्रस्य श्विष्टितः।

**এই** शक्षरङ्ख्य **चत्रु**केन हिन्दूत् निल्ह कारी हिल। कीरत्नत्र এই सहद छैत्मत्ना সহায়তা করিবার **নিমিত্তই** তাল্র দার প্রহণ। এই জন হিন্দুঞ্জীর অপর নাম সহ-ধর্মিণী হই য়াছে। द्धी**त्नाट**कइ শিক্ষাই শিক্ষা। এখনকার নাায় পূর্দ্রকালে স্থ্যীশক্ষার বিশেষ যে কোন প্রণালী ছিল তাহা বোধ হয় ন। কিন্তু স্বামীর এই দৈনিক শ্রেকার্য্যে তাহারা যার পর নাই হৃদয়ের শिका नांच कतिज। य দোৰ গৃহহর জী नहें করে প্রাচীন গাহস্থার পরার্থপরতা প্রা-লোকের দেই আত্মন্তরিত। নিম্মূল ক্রিয়। मिछ। गृहङ्ब इक **बा**ङ्क श्री बालक क्षेत्रः षाणिथ ७ भण्यकानि ज्ञ रक्टन भटत नम्माजीत कनम्मान क्रिकाद वावसा। এह कना बहार्य मन्त्र विल्लाहरू द्वाराष्ट्रिय द्वारा

निर्द्धन विशाहिन । कन्छ विश्वत नर्पाताल कवाका अवेद्ध किला अवेद्ध विश्वा अवकार्य,
कवाद वृष्ठ का त्वर्य भावत्या, क्रमेर्ट्छ वाकभाक्तिन लक्ष्यकानि क्वा श्रमेर्काल अवेद्ध माज कावा क्षेणा विश्व का स्मात क्रमेर्ट्य किलाय करु मूब ना क्रमेर्ट्स विशाव के ब्राया किलाय करु तात व्य भार्ट्स विशाव के ब्राया क्रमेर्ट्स विशेष के स्मात क्रमेर्ट्स विशाव के प्रमात क्रमेर्ट्स विशाव के प्रमात क्रमेर्ट्स विशाव के प्रमात क्रमेर्ट्स विशाव क्रमेर्ट्स क्रमेर्टस क्रमेर्ट्स क्रमेर्टस क्रमेर्ट्स क्रमेर्स क्रमेर्ट्स क्रमेर्ट्

কৃতবিদা বোকাণৰ, ইছাই, হিন্দুর পঞ্চ श्ह्या अहे अक जापूर्णाह्म विक स्थाद एव मेकेल अभाव सिक्छित दीक निहिन्द कि ধর্মা হৈ জনস্মান হি বাভিগত কি জাতি भिक्त नक्त नाथ है हैशन बक्तक विकास हिन्द निराष्टि सार्रेशक अहे निराष्ट्र चार्यान . তোষকা আজিত যে বিলা ক্ষি মণাল मजा डो ८१ ८कान विचयः व श्रक्तिकोहर की-ত্তিন কর সকলের সীজ এই এক অস্তানে পূৰ্ব বিকাশ পাইয়াছিল। ইণা কি উজ কি भक्ति कि वतगर । ज्ञानाकर रे ७, महा तन्हे कारिएएडं बिक्सिशक बंदर जा गण्डम छा भरा তেই সমস্ত প্রথম্ভির একমাত উত্রা-বিকারী হই নাহ। কিন্তু ভাবিতে সংকশ্প হয় তেইমানের সংখ্যার কুঠার থাত সংগ্রান্থ ও शुरू श्रेत नाई निर्माश। छल्न (य छण्डन अहित्यात व्यापन दमवाहलाम व्यापि ३ जावा क्यांतरमध कात्र जिल्लाहरू। स्विवित्न भूतिभक्ष श्रापनीय रुव, यान श्रूट है कन-সাংগ্রেস্থ জ্ঞারশাক হয় ইহা কথাচ নিশ্ম ল का इ.ज.मा । यान मामबा थाटक वंदर हिशत क्रिक मेन्यामन कर किन्तु जनगटन कमाह निर्मात कात अना। वडमान भागकीत व्यान कृष्टि अप अर्थ शाहीन भक्षार के प्रमी कि क्लाउ हेर त क्ष्मी बढ़ रहेटव। त्निहार इत्रकारिका

ক্ষেত্রান্ত তোৰ্ক্স তদারা সংখ্যুত্ ছমুপ্রাণিত কর বি আমি নিজে অকিকন, আ্মার যা বিছু সমস্তই বিশের জন্য সদয়ে এইএপ দানত। সঞ্চ ন। করিলৈ তুর্গম ধর্ম-ला है। इंटिना तड़ कि ना हिस्सूड **वर्ट** लाहीन गार्राय एक्तिने एक निका। भर्ट्याते कार कुछान किनाव सक व्यक्तितात कविया। এক দিনলের সামাজিক উপাসনায় প্রর্ণ-भवन होते गा। अहे कना तिम पिन, धर्मी আসমার জাবন উন্নত এরা সর্লালেতাবে कर्त्वर । गेपत गक्ष्यत्वर स्वामनाच्या वक्षणास्यः ভালার নিকট আছি লবেঁর কোন ব্যবধান 前便上 建 松水矿 电闪射体 电闪射器 পুত্র জিলেখিই তেখালিকোত্র কর ে কারিশ ১৬৮ বর্ণচারটার সংগ্রন্থ স্থ**ন্দর উ**পায়। (अन्यर कर्णनार हिन्स, मार्का हिन्सू। घड-ত্র ্ৰন্থ (স্থিক **প্রকৃতিকেন্স, বেদাজে**র कान्त्रात अवस् भाई 🐯 । 🗷 हे कर्का 🐯 তাৰি গৱে। বহন ক্ল। ইহাতে ভোনা মুগুল, আমার মঙ্গল, সম্ভে দেশের মঙ্গল । 🦠

আফ ১১ সাহের মহা মহোৎসর। আজ এই সংক্ৰোধ**েৰের অন্তা দেখিয়া জ**দ্য উচ্চ মিত হলৈ। উচিতেছে। কোন কথায স্পত্না করিল উদ্বেল কদয়ে বিচুই আসি-८एउई ला। रखदमगारच वांबाई खालाइ ল্রালার পিতার ক্রেছে আশিয়া মিলিলাম। প্রামরা **অন্ধ শতাকার অধিক কাল ছে গু**হে **এই मही गरहा**९मत्त्र 'बार्**शक्त क**हेंचाम জাজ ভাহার ইপ্তক জীৰ ু কিন্তু বলিডে विद्यात कृषिक हरेव ना असि एन हैं की न शृत्यत पात्रवह जोगात्मत चल्डबँग द्राम क्रिक ८७८ई। अहे खाक्रमभारणम् क्रास्कृतिमार एक्षित हरे उत्वाद **खेलावन के किर्मा** वातज रहेगाहिना ज्यन तह जानित शाहिश दिलन अका देशह विकि ना TOW CHE MAIN WOLLD GO WAT ধানি জাব ইপ্তক ক্ষান্ত আমাদের এই আশা ক্ষেত্রক করিটা দিতেছে। সত্যের দার কদ করে কাহাব সাধা। আর্জ সেই সভা প্রশ-রেরই উৎপ্র। আ্রি প্রারের সন্তি টেন প্রেক সকলকে উদ্যোধিত কার্যা দিলান ভোষরা তাহা উপদোগ কর।

পরমের বিশ্বারদির্গের স্বস্থিত বাদ করুন।

ওঁ স্বাস্তঃ দ্বিশ ফলিং।

## उन्मन्ते छ।

শুর্জনি ন বাদি নটের বার বার আদাতে বিমান আনকেন নিক্ষিত ক্ষমগ্রাই। বিজ্ঞম সীল চালে বান লাল আভাস লাই। ভাগে লিখ ভার নানে প্রতি নিল নান নিবলে, ভাগাধ পুনা প্রির কিরপে, থাচিত , ন্থিল বিচিত্র নালেন, বিরল আসাম বিদ্যাধান নোলভ চলা চিপ্র কিলে করে পোনা, বান কিরপ জীবন মেন। কোহন ভূমি জ্ঞাধান, অন্ত কোগার, জন্ত কোগান,

पड .डामान मारि सार।

রামকেল। -কাওয়ালি।

গনকটো দেনির ভোফারে কলেনি বাদন, গান।
চাহিব নাহে চাহিব নাকে এর দুরাকর প্রশান ;
দৈখিব ভোমারে গৃহ মাঝারে, জননী ক্লেচে নাড়ু , গ্রেম
শৃত সহস্র মন্ত্রী বল্পান।
দেরির উল্লেখন মাধ্যে, সঙ্গর কাজে, প্রভিদিন হেনিব।
শীবনে।

হৈরিব উজ্জন বিমল মৃত্তি হব শোকে তংগে মরণে, হেরিব সজনে নরনারী মৃত্তে হেরিব বিজনে বিরুদে হে গভীব অস্তব আসনে।

্তানন্তর ভাজিভাজন আচার্যা শ্রীযুক্ত হিজেন্দ্র-নাথ ঠাকুর এই উদোধন পাঠ করিলেন।

মাতের গ্রকাদশ দিবদ— নিথিল ত্রাক্ষভবের লোচন আন্দকর মাডের একাদশ
দিবস, প্রেম-ভক্তির প্রস্তাব উম্মোচনকারী
স্থান-কণাট উদ্মোচনকারী অয়ত সাগরের
শীকরবাহী মাতের একাদশ দিবক আমাদের

সন্মুখে, উপ্স্তি। ব্লানিষ্ঠ ত্রাক্ষমগুনীর নৰে। বিষয়ী<sup>শ</sup> আদ্য বিষয়ু<sub>ক</sub>াৰ্য্য বিন্মৃত হই-शहरून, भनी भागी अलाधनगान विस्तृत हरे-अंदर्ग, मीन परिष्य जना महिका छुटन विस्तृष्ठ হট্যাছেন,পরাধীন কর্ণচারী অদা পরাধীনতা াৰপুৰ্ব হুইয়াছেন;—আদ্ধ আমাৰ: এন महत्व स्थाम निर्काटरम अभिमार निकारिक, তার তাঁহার প্রস্থান্য ন্থ-ছে চ্হিন্টে খানাদের भक्षा पुरुष जानतान १६ । दर्-मदन অভাবের প্রিম্মাতির স্থীয়ারের কার্যার भा नहूज एउट ्कन प्रकान करातू न.--প্রিয়া আয়ুটেনর পর্য পিক্রার প্রকা কভার र । ए इ रिपारिश इतिया । — जनशक्ताल जिल ন্যত ক্ট্যাতি -- আল আমালের ভং নাড : लामाद्रत अहे होन हो। खरि हन स्टाह পরে স্থানি**তে---**প্রেপ ধ্রোক প্রসাদাপের এভান্তার—একার স্থারামাল হস্ত এদা এই অমূত ভাওারের জ্ব। উপ্রটিন কবিয়া িল 🔊 जिल्हे ज्यारामन भारता जलामाहात जला-তারের উপর কাধার নের্নিফেষ নয়ন ছাঙোত वार्शाद्य--दम्लाभितेन्शी भाष् बरना एन ৰুদ্ধিতে কাছাৰ অজেম গৰাজ্য **অব**তাৰ ছইনেত ছে ? তিনিই আমাদের রাজা। মোছ-রজনী চেল্ল ভিত্ত করিয়া কাছ্য ব্যান-রশ্বি খাঝাতে প্ৰকৃতিত চু**ইতে**ছে? আমাদের গুরু। সমস্তি অমস্বাটন্টা ত সারণ করিয়া কে আমাদিগকে গঞ্চ প্রে আহ্বান করিতেতে ? তিনিই আমাদের পিতা। কে আমাদের ভূদয়ে আগিয়া সদয়কে শীত্রল করিতেছেন ? তিনিই আমাদের প্রাণ-বন্ধু জান্ত আবলে দেই মাতাঃ কোছে শৈই পিতার মঙ্গল-ছাম্নায়, সেই গুরুত্ব ভ্রান-জ্যোতিতে, সেই রাজার শান্তি-রাজ্যে, সেই প্রাণ-দ্যার অমৃত ুদ্ধরাদে, দকল সন্তাণ मृद्र विगर्कन निष्ठा जान्म भागदेत निष्ध रहेत, हेहादहें जना आग्रांट्यत वह गटहारमव।



अरुक्त, जान जागारनत यन इहेर मगु তুল্ডিল-সমস্ত বিষয় িস্তা-সমস্ত পাপ তাপীমোছ – দীৰ হইয়া যাক, এবং প্রমা-আকে লইয়া ৰাজ। লাগ্ৰত তইয়া উঠুক্। অপ সমস্ত আবাল ভেদ করিয়া - সমাগরা পুথিবী কম্পিত করিয়া—আত্মাংই: ৪ জন্তার ধানি উল্ভ হউক্, সমস্ড 'আকাশমণ্ডল दगरे क्वाने के भून शरीश यां छेक - दगरे क्वान জোতিষ্ণতল সুধা হইতে । ৮ছটা রূপে নিঃসারি গ গুউক—ানাদিনী হইতে ধন ধানা ফল পুষ্পারূপে উথিত হউক্, বেদী হইতে (वन्धानिकाल छएका। यह इछक्-मन्द्री ५-মঞ্চইতে মুখাত রবে উপিত হইয়া প্রশান্ত দশদিক মাধুকো দ্রনীভূত কার্যা निस्उक অন্য আমাদের শরীকের অন্ত্রি আতার আহার সহিত সম্বন্ধ-মূত্রে প্রথত ' **হটতেভে—এই** সপন্ধ-সূত্র জেনতিভায় षड्डि कीतरनद्र अत्यां निनान। ভূমি **মধন্ধ-দূতি** দিয়া **বেমন গৰ্ভুম্ব শিশু**তে মাতার প্রাণ সঞ্চারিত হয়, তাহা অপেকা শতগুণ আক্রা অনিব্রচনীয় সম্বন্ধ-সূত্র দিলা অ্মাটের আত্মতে প্রযায়ার অমত জীবন সঞ্জারত হইতেইছে; আমাদের ক্ষরান অন্ধ-কার সমূদ্ধ কাৰিভাগার হইতে পরিপুরিত इंट्रेंटर - আমাদেব হাদ্যের পিথান। স্থা-ভীর প্রেস-সমুদ্র হইতে পরিপুরিড হইতেছে; जाशास्त्र मोन-शैन चक्कन हा चन्छास শক্তিভাণ্ডার হইতে প্রিপুরিত হইতেছে। পর্ম জেলাম্পদ প্রমানার সহিত আমাদের এরপ অ' ছেদ্র খনিপ্ত এবং নিগুড় সম্বন্ধ যে, তাহা অনোদের রক্তে রক্তে, নিশাদে নিখাদে हिस्स् विकास आर्व थार्व विभारेया बहि রাছে—তাহাকে ছাড়াইয়া লওয়া মুবারত অসাধ্য । পরনাতার পর্য পরাহশর জানcecन के मी या (काशाय ? वांदा के किन्सू थे-माप-वादिए प्रथवीत कृत की देव-लादकत

দীনা কোপার ? আমাদের এই মুন জান৫এনের অভান্তরেই কি যে এক পরমান্তর্বা
অমতের দার প্রচলন রহিয়াছে, সেইখানহইতে অদা পারব্রেলার অমোঘ প্রভাব আমাদেব আত্মতে পরিব্যাপ্ত হইয়া আমাদেব
ম্থানী উভলে করিতেছে; সেই অমৃত
দাবে মামাদের অভঃকরণের প্রাথানা পূজীভূত হইয়া পারম করুলামারের অমোঘ প্রান্থান বারিছে প্রারিত হইছেছে। আইন
আমরা সেই দার উদ্যাতন করিয়া উৎসবের
প্রাণকে—পথ্য প্রেমান্তান করিয়া উৎসবের
প্রাণকে করিব আহ্বান করি— প্রমান্তাকে—
প্রাণকে করিব আহ্বান করি— প্রমান্তাকে—

খ্যোলের গানি খারাধ্য দেবতা, তিনি জাতত আৰম্ভ দেবতা। তিলি অক্টেড্টেন্স অভারতের সাঞ্জি—সচেতনের অভান্তরেও काधक, प्रकाश ७ जिन निक्कि ग्रह्मे। এই সে. এভাতসুষ্টিকরণ, ইহাব অভ্য-ন্তরে তিনি কাগিতেছেন, এই যে নায়ু <mark>রহি-</mark> ভোছ ইহার অভান্তরে তিনি আগিতেছেন, নিখাস-প্রখানের অভ্যন্তরে তিনি জাগিতে-হেন, প্রাণের অভান্তরে তিনি জাগিতে-ছেন, -কোথায় না তিনি ছাঞ্ত-কৰ্মন না তিনি জাওত। আদ্য দুর্গ যথন, নুতন, জাগ্রত হইতেছে, তখন তাহার অভ্যন্তরে তিনি জাগ্ৰত,—কুত একটি তড়াগের কাল-কলিকা যথল উমেষ্তি হইতেক্ষে ওখন ভাহার শভাষ্ণরেও তিনি জার্তিই জানো-ু স্থান আত্মার, অভাস্তরৈও তিনি ক্লাগ্রন্ত, প্রেমরসার্জ হালয়ের অভ্যন্তরেও ডিনি আ-এত, স্বৰ্গত্ৰই তিনি জাগ্ৰত জীবন্ত। "আই পরিত্র দাধুদ্যাগমের মধ্যে এই খানেই এই মুহুর্ভেই তিনি জাগ্রত বিরাজমান-এই नीतनरे जिल्लाक महिमा प्रत्नाक रहेत्छ विक ৰীকে অভয়ীৰ হইতে ত্ৰানোকে উভাগিত

হইতেছে; আমাদের সপ্তজনীয়—ভূভুবঃ
সঃ তিন লোকের সন্তজনীয়—এখানে আপ্রাত্ত বিরশ্বেমান; অতএব প্রজা-ভক্তিতে
বিনম্র হইয়া—প্রেমে প্রাকিত হইয়া জদযের কপাট উদ্যাটন করিয়া আইদ আমরা
তাহার সাসংসরিক মহিমা গানে প্রত
হই, ও তাহার চরণে প্রাতি-কুসুমাঞ্জনি
প্রদান করিয়া জীবন সার্থক করি।

হেমথেম চে হাল।
সংব মিলি গাওরে, মিলি সক্ষ্যাচারা,
ভাকি লহ হ্ময়ে প্রিগতমে।
মঙ্গল গাও আনন্দ মনে,
সঙ্গল প্রচারো বিশ্ব মাকে।

আসাইবি — কাণ্যালি।
ভানেক দিয়েত নাথ, আমার বাসনা তর প্রিশ না।
দীন দশা পুচিল না অক্রাই মুছিল না,
গভীয় প্রানের তুমা মিটিলু লা নিটিল না।
দিয়েত জীবন বন প্রাণপ্রিম পরিজন
প্রানিশ্ব সমীরণ, নালকাত্ত অধ্ব

শ্বামুনি শোলা ধরণী। এত যদি দিলৈ দথা আবো<sup>ন</sup>ীদতে হবে ছে, ভোমালে না পেলে আমি ফিবিব না ফিরিব না।

্ব অনন্তর আচার্য্য নিজের প্রাথনা পাঠ করিলেন।

হে পর্মাজন সিদ্ধিনাত। বিধাতা।
অদ্য তোমার দীক্ষ্মেরিক পূজার মান্দ্র
আমরা এবানে সমাগত হইয়াছি, তুমি প্রমন্ন হইয়া আমাদের পূজা গ্রহণ কর। তুমি
তোমার পরিশুদ্ধ জ্ঞানন্দ্রে সকলেরই
মনোগত অভিপ্রায় পরিকার দেখিতেছ—
আয়াদের যাহার যাহাতে আজার পরিভৃতি
ইর সেইরূপ শান্তি-পীয়্য বর্ষর কর,—এখান
হইতে আমরা কেহ যেন শুনা পাত্রে ফিরিয়া না যাই। যাহারা তোমার চরণের
ভক্ত ইতামার প্রেমি থাকিলেও শুনা ক্রন্তর
বিষ্যাল আমিতে পান্তিনা গ্রামার
তিন্যার

শ্রেমই ভাহাদের জীবন—ভেমার প্রেমই जीशाद्वेत कान, त्रामीक श्रम है जीशादनत ধান, নির্মানক্ষয় অশান্ত সংগারের অভ্যন্তরে ভাহারা কি গভীর আনন্দ ও শান্তি উপু-ভোগ করেন \ পৃথিবীর কর্মশালায় তা-शता कन्त्र कंट्रोन - श्रविदीनः शाख-शानायः তাঁহারা ভোজন করেন— পুথিবীর রঙ্গ-শালায় कांशता नांगा पर्यन करतन, किन्न कांशर मेंत **অন্তঃকরশের নিভ্**ত নিসংয়গ্রভানার । সহবাদ দের বিমল আনন্দ নিরম্ভর জালিতেছে -কিছুতেই ভাষার অগু নাই পরিসমাপ্তি নাই : তাহা বিনা-ইন্ধনে প্রস্থালিত, ভাষা নিভিত্তে कारमं ना ; खांश विना-मिन्याम अन्धानिक. আহা মহতে জানে না; সেই তেখোর ফ নোঘ তেনায়ত বগৈর বিন্দু-মাজের আভি-লাষী হইয়া আমনা অনাকার এই উৎসব- ১ ক্ষেত্ৰে সন্মিলত হইয়াছি—ভোনাম অসীম করুণাই আমাদের একুমাত্র ভয়য় টি জানা-দের এই মহোৎসব তোমারই পূজার মহোৎ-মব,—তুমিট **ট**ছার প্রবর্ত্তক – তুমিই ইছার অধ্যক্ষ-ভূমিই ইহাব অধিনেবভা! আ্মানের **७१** नीन शीन (नर्न-भीनशीन श्रम्रा-अल ভূমি সহস্র হল্ডে কল্যাণ ধর্মন ক্রিবে ভাই আ্মাদিগকে এখানে একত্রিভ করিয়াভ অনিরা জাজ হৃদয় ভরিয়। তোমার অমৃত-রস পান করিক হাদয়-থাল-ভার ভীতি-পুষ্প-হার তোমার চরণে সমর্পণ করিয়া আজি আমরা আঘাদের জীবনকে সার্থক করিব, আর্মাদের चाक कर ना चानना। ८० कीवरनंत्र कीवन প্রাণের প্রাণ; তুমি ভোমার প্রেমার্যুত-কণা বিতরণ করিয়া আমাদের এই উৎসবকে জা-প্রত করিয়া ভোলে।—এবং এই স্বানন্দের ত্রোত যাহাতে ধৎসর বৎসর প্রবাহিত থাকে শেইরূ**ণ উৎস আ**য়াদের অন্তরে উন্মুক্ত করিয়া দেও। অদাকার মত চিরদিনই তুমি আশ্রদের হাদয়ে ভীতি ভতির করিছা

বিতে নাক, আর আমর। তোমার প্রাদেন বলী হইরা—তোমার মতসঞ্জীবনী করশায়ত প্রমায়ত ও আনন্দায়তে প্রাণ পোইরা উ-সিয়া দিগ্দিশুভারে তোমার মহিমা ঘোষণা করিতে থাকি—এই আমাদের প্রার্থনা।

**७ अकृत्म**ना चित्रेशः।

গোড়ুনার তি জাল।
প্রেডি সন্ধান তব অন্ধর্মানী

ভারতে দেখেছি ভোমারে।

ভারত আলোকে হলর শতলল মারে

হেলিড এ কি অপরপ রূপ।
কোথা ফিরিভেছিলান পথে পথে ভারে ভারে,

মান্তিয়া কলরবে।

ক্রমা কোলাংলমারে গুনেছি তব আহ্বান,

নিভত হলর মারে

মধুর গভীর শাস্তবানী।

বোগিয়া বিভান—একভালা।

নম্মন ভোমারে পায় মা দেখিতে

রয়েছ নরনে নয়নে।

হর্মাভোমারে পায়না ভানিতে

ধ্বদের রবেফ গোপনে। বাসনার বশে মন অবিরত বাম দশদিশে পাগদের মত, স্থিয় আঁথি তুমি মরামে সভত

জাগিছ শয়নে অপনে।
স্বাই ছেড়েছে নাই যাব কেহ,
সুমি আছু তার আছে তব সেহ,
নিরাশ্রয় জন পথ যার গেহ,

শেও আছে তব ভবনে ।
ভূমি ছাড়া কেই সাধী নাই আছ কুমুখে অনস্ত কীবন ক্লিন্তার,
কুলি পালাবার ক্লিডেছ প

কৈছ নাহি আনে কেবৰে।

আনি ওধু ত্ৰি আছ তাই আছি,

ত্ৰি আন তাই আনি বাঁচি,

বুজ পাই ভোমান আৰু তত বাহি,

ত জানি তত জানিনে।

আনি আমি তোমান পাৰ নিৰ্ভাৱ,

ভূমি শাস শীমি মাজে কিব নাই, কোন কৰা নাই ভূবনে।

সার্ক-নাপভাল।

অসীম রহসা মাঝে কে তুমি মহিষামর।
জগত শিশুর মত চবলে ঘুমারে রয়।
অভিমান অহকার মুছে গেছে নাতি জার
ছুচে গেছে শোকতাপ, নাতি ছঃখ নাহি ভয়।
কোট রবি শশি তারা, তোমাতে গরেছে হারা,
অযুত্ত কির্নি ধারা তোমাতে পাইছে জায়।

ভৈরবী--দাপতাল।

তোমারে জানিনে হে তব্ মন তোমাতে ধায়। তোমারে না জেনে বিশ্ব তব্ তোমাতে বিরাম পার। অধীম মৌন্ধা তব কে ক্রেছে অসভব হে,

দে মাধুনী চিন্ন নব,
আমি না জেনে প্রাণ সঁপেছি তোমার।
ভূমি জোতির জোতি আমি অন্ধ আধারে,
ভূমি কাজনি আমি ক্রমণার্মী,
কি সপুনী মিলন তোমার আমার।

देश्दरी – यानजान ।

বাণী তথ নাহি শুনি নাথ হে। অন্ধ জনে নয়ন দিয়ে অন্ধকারে ফেলিলে,

বিরহে তব কাটে দিন রাত হে।
স্থান শম নিশাবে যদি কেন গো দিলে চেতনা,
চকিতে শুধু দেখা দিয়ে চির মরম বেদনা,
আগনাপানে চাহি শুধু নয়ন জল পাত হে।
পারশে তব জীবন নব নহসা যদি জাগিল,
কেন জীবন বিজ্ঞল কর মরণ শর্মাত হে।
ভাহহার চুর্ব কর প্রেমে মন পূর্ব কর
হুদয় মনু হুদ্প করি রাখ তব সাথ হে।

দেওগিরি—সুরক্ষাকভাল।
দেবাধিদেব মহাদেব।
অদীম সম্পদ অসীম মহিমা।
মহাসভা তব অনন্ত আকাশে
কোট কঠ গাহে হল হল হল হা

তৈত্ব ।—একভালা।
ভয় হর পাছে তব নামে আমি
আমাদেই ক্রি প্রচার ছে।
মোহৰাল পাছে ছিলে আয়ার, ভব

ক্ষামান তালে কছু নাহিত ক্ষানো,
আৰি কত কীন, আৰি কত হীন,
কেহ নাহি কানে আছু হে।
কা কতে মনে উঠে তথ মান,
কৈহ লাহে আমার করে গো প্রাণান,
তাই আমান কাছে আনা কিছমান,
গ্রাহে প্রতার্ণা করি আপনাহে,
তোমার আগনে বসাই আমানে,
রাথ মোহ হতে রাথ তম হতে
রাথ রাখ বার বার হে।

নিশ্র বিভাস - আড়াঠেকা।

এবার প্রেছি সগা এ ধেলা কেবলি থেলা।

মান্য জীবন লয়ে এ কেবলি অবছেলা।
ভোমারে নহিলে আরু ঘূচিবে না হাহাকার

কি দিয়ে ভ্লায়ে রাথ কি নিয়ে কাটাও বেলা।
রুথা হাসে রবি শনি রুখা আসে দিবানিশি,
সহসা পরাণ কাদে শ্না হেরি দিশিদিশি।
ভোমারে খ্লিতে এসে কি লয়ে রয়েছ্লি শেবে,
ফ্রিগো কিসের লাগি এ অসীম মহামেলা।

আলাইয়া—একতালা।
বলে আছি হে কৰে গুনিব ভোমার বাণী।
কৰে বাহির হইৰ জগতে কম জীবন ধন্য মানি।
কৰে প্রাণ জাগিবে জন প্রেম গাহিবে,
ভারে ছারে কিরি সরার সদয় চাহিবে,
নর নারী মন করিয়া হরণ চরণে দিবে আনি।
কেহ গুনে না গান জাগে না প্রাণ
বিদলে গীত অবসান,
ভোমার বচন করিব রচন সাব্য নাহি নাহি।
ছবি না কহিলে কেমনে কব, প্রবল জ্যের বাণী জন,
ভূমি বা ধনিবে ভাই বলিব, আনি কিছুই মা লানি,
ভূমি বা ধনিবে ভাই বলিব, আনি কিছুই মা লানি,

पिक विश्वक विद्याश नाको प्रशासमान रहेश बिद्भात अहे दिश्वम्नी मार्ठ कविदनन-অষ্ট্র আমরা দেই সভাপুরুষের কল্যাণ-गर पर बढ़ जाकब्द जाकु हरेगा वह छेला-ननाम अर्ल नगर्व इहेशाहि। স্থার পবিত্র মূর্তি চিরকাল টু মমুষা-সমাজকে এইরপে একতে আনয়ন করিতেছে, পরস্প-বের প্রতি প্রেম ও সন্তাব শিক্ষা দিভেছে এবং ভবানাপুশীলনে ও আত্মার উন্নতি সাধনে প্রার্থ্ড করিতৈছে। ধর্মাবহ পর্নেখর ভাঁহার পবিত্র ধর্মা-কলিলের প্রাপ্তবণ-দার উন্মৃত্ত করিয়া দিয়া মনুব্য-কুলেব অশেষ মঞ্চল সাধন করিতেছেন। ধন্য সেই বিধাতা। ধনা সেই করুণাময়, কল্যাণময় পুরুষ। ভাঁহারি প্রসাদে আমরা বিষয়-কোলাহল হইতে মুক্ত হইয়া এই উপাসনামগুলে তাঁহার গুণ কীর্ত্তন করিতেছি এবং তাঁছার চরণে কৃতজ্ঞতাভ্রে প্রণিপাত করিতেছি। সেই মহান্ সত্য পুরুষের মঙ্গল জ্যোতি চতু-फिरक विकीर्ग त्रश्चित्राट्स, रमञ्जू कत्रनामरमञ्ज कक्षना मकरनत्र समरत्र काक्किन हे हेर्ड एक । চারিদিকে কেবল ভাক্মধর্মেরই মহত্, ভাক্ষ-ধর্মেরই জয়। সেই জনাদি জন্ম জাগ্রত **म्बर्ज जाक मगल्ड मिनहे जागादमब मन्द्रास।** नत्रन उन्नोलन कतिरल (मह व्यानस्य ग्र অমৃত্যন পুরুষকে এই পোভানর ভিকেত-न्त्र शास्त्रक भगार्थ (परिएक भारे; बहे শুল দীপপুঞ্জের আলোক-কিরণে তাস্থার व्यम्म (काछि এवः मार् मक्क्रम्भाप्तत सूथ-চ্ছবিতে তাঁহার প্ৰিত্ত মঞ্চা-ভার স্থান্ত্র कृति । वार्षात यथन द्रमण नियोगन कितिया অন্তরে দেখি, জন্মন দেখি যে, সেই প্রাণ शकि सामारम्ब समय-निःशास्त उन्वि रहेशा त्थामाटनाटक समञ्ज यून-बाकाटक नथू-ব্ৰুমিক কৰিতেছেন। বাহিরে ঠাইৰিক্যাভি, अध्यात के दान दला कि नाहित्व छ। दान

আনন্দ, অন্তরে ভাষার আনন্দ। ভান ব্যাহ্রে সমস্ত প্রার্থকে শুভাকরণে স্থলোভিছ ক ু রিয়া ঐতক্ষোতাকে এই।মভাটের,পবিত্রতাটের अर्मक क कित्र के हिन । कित्र देव कि मक्तिक कि स्मारका न क्रक के मार्थ के अर्थ भाग्मात्ना रहेका কিন্তু বেক্ষান্ত বৈক্ষি ভাষাকৈ কেথায় ভাৰেৎ कीर्युखतरण एमचिएक श्रीम १ व्याकार्म अहे যে তিনি ওত্তপ্রাত ভাবে ব্যাঞ্জির্হিনছৈন (मथारन चार्। क्. छेल्लांक क्रिशां हे छ। एणा ব্ৰহ্মদূৰ্যন বি চাৰতাৰ্থ ইয়া ধৰাছিলে ভাহিংকে ्रम्या मर्पेश्रुन निक्षि कश्चिम्ना (म्या नग्र)। संग्रः দয় জগতে ভাছার গুলিরীপুর বিজ্ঞাত্মতে ত। हात ताल (नव। यात्र । स्मार्टी हित्रमहा পরে কোষে আছাতে তিনি সাকাৎ বিরাজ-মান্। আহার অন্তরে সেই একাধান। সে-খানে ভাঁহার নিশ্মল নিরবয়র স্থার মূর্ছ প্রকাশ পাইতেছে। অম্তপানেজু সাধ-কের্তিরে জাকাশে কোন সপ্তথ সংগোল अभूमकान कवियोद ८.८३ हमें माहे। अछ्ट শাস্থাতে দৃষ্টি করিলে সেই অভরাস্থাকে उपरा शाम क्षेर भियात हाराम ब्राहरन অমৃত পানে আহার অনন্ত নিবন ও আমল भालि छेशास्त्रिष्ठ हर्य। देनशास्त्रं दिनि ছাপন মহিনাতেই বিরাজিত। তিনি লোক-७१. निकादगार्थ त्नक्यक्रम विषेशा असूनीय शादन क्रिएंड्डिन । अरे प्राचालिय दमस्त এ পার্নে দিন রাত্রি নিয় নিও ছই ডেছে, 'ও-পারে দিনও নাই রাজিও নাই; অকৃতও नाहे प्रकल्ल नाहे: अशान हुएँड शाल-. সকল প্ৰতিনিহত হয় , ইহা পুশা-ভোতিত সর্কাই পবিত্র রহিয়াছে। পাণুতাপ-রচিত এই তক্ষলোক। এই দেছুর পরপারে ख्ळीर्न हेरेशा एवं प्रकारम व्यवस्थान एव मरमाददत पूर्व द्वार किया दिन कारिक हते; त्व शादल ७ कारव **छ न**जानी दम अपूर्व তাপী হয়। এই দেতুকে বুৱীৰ হুইয়া রাতি पिटनत मुक्ति बारनाक सत्रक न्या अरे

ব্ৰন্যলোক ; প্ৰাৰ্থ কৰি প্ৰাৰ্থ কৰি বাহ-

रेनन राज्यद्वी बोर्च ७ तकः। न चन्नां न मृज्ा ুনিবভিত্ত। অপহতপাপ্নাহৈদ ভকলোক:। ভক্ষাৰা শ্বিভং দেতুং তীর্বা অবংশরনকো ভব্তি। বিদ্ধাপর-বিংদ্ধা ভৰতি। উপতাপী সময়পতাপী ভূৰতি। তত্মাদ্বা এতং সেহং তীৰাপি गङ्गस्दत्रवाभिन्निमाटः। मक्र शिक्षांद्रकाटकाटकाटे वस त्रामा विकास

সংসাবের আপাত মনরঞ্জন বিষয়্**-দক্ত্র** এক দিকে আমাদিণের চিত্তকে **আকর্ষণ** করিতেছে, আর এক দিকে আমাদের প্রিয়-তম প্রমেশ্র। একদিকে তুর্গতি আঁষ্ট্রক দিকে অনুষ্ঠের জোড়ে অনুর **উ**র্মাত। আ-মরা এই তুই খের সলিভলে দঙাংনান। আমাদের মধ্যে গে বেং সংসারের তুর্গতি হইতে গরিতাণ চাহেন ভাঁহাকে শান্ত, দান্ত, উপরত, তিপিক্ **ও মুদ্রাহিত হইয়া ভক্তি**-যোগে প্রমালার সন্তি যুক্ত থাকিতে হুইবে। যিনি এইরূপে পরত্রক্ষের পবিত্র সহবাদ লাভ করিতে পারেন তাঁহারি **জীবনে** প্রম ন্মুল সাধিত ছয়। উাধার প্রেমের ইগন্ধ তথন ডভুদিক আমোদিত বরে এবং তাহার জ্ঞান-নেত্র প্রস্ফুটিও হইয়া অতিশয় উল্লুল দীপ্তি ধারণ করে। তথন তিনি ্ৰেল্যখেনে তদগত হইয়া হৈ দিকে নান नित्कल कटतम त्मृहे फिटकेंद्रे लेव में क्लू निलग्न अवर्यक्त बादिकार मनर्गन करतन है সর্ববে তাঁহার আনন্দ ও সর্ববে তাঁহার ম-হিমা দেখিতে পাইয়া তাহারই ইচ্ছানুগারে, क्षीक्टनत छावद कंट्री निर्द्वाष्ट्र कदान अंदर मरमादुत कलकामना नित्रमृता हरेगा छार्राबह প্রতিষ্ঠিত ধর্মাপুথে বিচরণ করিতে থাকেন স্বার্থপরত আর ভাহাকে কলন্ধিত করিতে भारत ना । , जेकारत्व लिय कार्या गापनर ভাহার একমাত্র উচ্চ হয়। অতএব ভিন্তি ्राक हरेल क्वी क्रायन भाग हरेल

ভত্তীর হয়ে বিশ্ব সম্পানের লে হলাল হইতে বিশ্বত হয় চিবজন পর একো নিতর কালের জনা আনিক্তি প্রতিষ্ঠিত দেখেন এবং এই বিশ্বরাকে ছবে আনিদের বিচরণ ক্রিতে থাকেন। পাপ ইহাঁকে স্পার্থ ক্রিতে পারে মা. ইনি সম্পায় পাপকে অতিক্রম করেন, পাপ ইহাঁকে দ্ভাপ দিতে পারে মা, ইনি সম্পায় পানের সন্তাপক হয়েন। ইনি নিজ্পাপ নিশ্বিটিছ ও পর-বেক্লের সহাতে নিঃসংশয় হইছা পর একো-পাসক হয়েন।

"নৈনং পাপ্না তর্তি সর্বাহ পাপ্ষানং তর্তি। নৈনং পাপ্য তপ্তি নর্বাং পাপ্যানং অপ্তি। বিপাপো বিরুজোহবিচিকিৎদোরান্ধণো তব্তি।

ও এক্ষেবাহিতীয়া।

অনস্তর প্রদাস্পদ কাচার্য্য শ্রীগুন্ত শস্ত্রাথ গড়গড়ি নিম্নের এই উপাদেশ পাঠ করেন।

वना ১১ই गार्चित उत्कादमव। সমস্ত ভারত ভুমির উৎসব – সমান্ত বস্তৃমির উৎসব – প্রতি পরিবারের উৎসব, হাদয়ের উৎসব<sup>।</sup> যিনি রাজগণ-রাজা মহা-রাজাধিরাজ ত্রিভুবনপালক—গিনি সকলের দারিছা-ভঞ্জন যিনি আনন্দরপময়তং, বার भागम रहेट्छ वहे हुठ मकन छेरलह हहे-**ুটিছ** ু আনুনাদেশ্ব খলিয়ানি ভ্তানি मात्रस्य, ब्रिनि-निवश स्मातः, यात ष्यज्ञ (मी-শরের ছায়া এই সৃষ্টির উপর পতিত হই-गाइ, जिनिरे वाशादक अरमत्तर वर्षिशंजी **(स्वर्ण)। जिल**्लिशा काव पाया-द्वात स्थान-न्याद्वा मन्द्र विताय कति-**टिट्टन । केशियों जानुना विद्यत**े जास्त्र वाहित रुक्षिद्व विक्री दार्विद्योह । दम्हे शिव किशा म्यास के बाहर जा माटका सपर-कान नावब के द्यान हिंछ क्षेत्रहरू दगरे

কুর্নে অন্ধ টার্লার পূজা করিব বলিয়া, উংসাহিত, ওেনের সহিত, ভক্তির সহিত, ওেনের সহিত, ভক্তির সহিত আমরা উৎসৱ-ক্ষেত্রে সন্মিলিত হইরাছি। তিনি এখন শিবং স্থলরং রূপে আমাদিগকে অন্তরে বাহিরে দেখা দিতে-ছেন, এবং আমাদিগকে স্লেহের সহিত আহ্বান করিতেছেন। কি মনোহর দৃশা। কি পবিত্র মৃতুর্ভ। এখন অন্তর বাহিরে তাহার সেবিত প্রেমা করিতেছেন। জামাদের স্থলিছিত প্রেমা করিতেছেন। জামাদের স্থলিছিত প্রেমা তাহার দিকেই গ্রমন করি-তেছে।

যিনি আপনার অপার সৌন্দর্যা-সাগরে আপনিই প্রেনে নিত্য বিভার হইয়া আছেন. তিনি মনুষ্যকে কুনা করিয়া, তাঁর এই শোভার ভাণার সংসারে স্থাপন করিলেন, এবং তাহার হৃদয়ে প্রেম দিলেন। প্রেম না দিতেন, ভবে কে এ শোভা অমুভব করিয়া সুথী হইত ? সাতার সাভাবিক গতিই শোভা ও সৌন্দর্যোত্র দিকে। কেবল মান নাহিরের শোভা দেখিয়া ইহা সম্ভুষ্ট হইতে পারে না। ইহা আর । কিছু চায়, আরও কিছু অনুসন্ধান করে 🍃 নক্রল শোভা ভেদ করিয়া সে দেই শোভার আক্তর স্থানে याहेटल व्यादिक हा। दनहे व्यक्त वस-তের দৌন্দর্যা সম্ভোগ বাতীত কিছুতেই ভাহার প্রেম চরিতার্থ হয় না। তিনিই ভাহার পর্ম গভি—তিনিই ভাহার পর্ম লোক। সেই লোকে বাস করিতেই তাহার विद्नांच कानना गश्कत रामन शूरका विमा **जन्मा गटन** छोहात मधुशान करत, जाजा ভেমনি প্রমেশুরে অবস্থিতি করিয়। ভাঁছার कीं जिन्सूया शान कड़िए जान वारम।

দেই কি গ্রাসী—সেই কি বোগী যিনি গৃহত্যাগী হয়া কেবল মাত্র ব্যায়াম-জুলা নিশাস রোধ কাছিল বোগ অভ্যাস করেন গ শুনা—কখনই মহে। তিনিই যোগী— যিনি শ্রেমিক, যিনি এই প্রেমের সাহায়ে সেই শোভার আকর প্রমেশ্বরে উপনীত হইয়া নিঃসংশয়ে আপনাকে তাঁহাতে প্রতিষ্ঠিত দেশুগন এবং নিঃসংশয়ে বলিতে পারেন এয়াসা প্রমাণ্ডিঃ এয়াসা প্রমা সম্প্র একোসা প্রমাণ্ডিঃ এয়াসা প্রমা প্রমা

যিনি প্রকৃত প্রেমিক তিনি তাঁহাকে আপনার পিতা মাতা জানিয়। প্রিয়রূপে ক্ষম-মন্দিরে পূজা করেন। অনুগত পুত্রের নায় তাহার আ্দেশ সকল—কঠোর আদেশ সকল পালন করিয়া তাঁহার প্রসাদ আনুতব কবেন। এবং বিশেষ অনুরাগের সহিত তাঁহার এম-মুখ নিরাকণ করেন।

জামর। যাহাকে ভালবাদি, তাঁহার জন্য কি ন। করিতে পারি ? দেইরূপ ঈবর-প্রেমী – দিনি তাঁহার হৃদয়েশরকে প্রেমের চক্ষে দেখেন, তাঁহার প্রেম-মুখ ভাল করিয়া দেখিবার জন্য – আরও ফুটন্তরূপে দেখিবার জন্য কি না করিতে পারেন ?

উাহার সেই স্কর আনন তার নিকট
ধ্যন মধ্ব, এমন আর কিছুই নহে। সেই
প্রদান মুখ — সেই প্রেম-মুখ ধানি করিতে
তাহার বিশেষ আনন্দ। তিনি তখন প্রেমায়ান।
তাই দৌন্দর্বা-সাগরে নিমগ্ন হয়েন। তখন
আর তিনি আপনার নহেন, সমাকরপে
তার। তাহার অন্তরে তখন কি প্রেমের
গান নিনাদিত হয়, তাহা এ জগতে অপ্রকাশ
ধাকে, তিনি প্রেমে বিভার হইয়া কি
তাহাকে নিবেদন করেন তাহা যিনি বাকোর
বাক্য প্রোজের শোক্ত, তিনিই শুনিতে পান।
সেই প্রেম্বাতাও তখন কি মোহন মবে
তাহার সাধক্কে আহ্বান করেন—কি অপার
স্বেহের সাইতে তাহার নিকটে প্রকাশিত হন,

কি অপ্রতিম গোন্দর্যী দ্বারা তাঁছাকৈ উদ্বাস করিয়া তুলেন, কেছই তাহার সন্ধান পরি না। সে অন্তরের ব্যাপার অন্তরেই থাকে। এবং চির দিনই অন্তরে থাকিবে। কি স্থাধির সন্মিলন। তাঁছার স্পর্শ দুখ কি গভীর—, কি বচনাতীত।। কোণায় প্রেমময় এ সময়ে। তুংখী অকিঞ্চন আমলা। আমরা এখন ভোমাকেই চাহিতেছি, তোমাকেই ঘাচি-তেছি। দেখা দেও—দেখা দেও—দেখা দেও ছে। আমরা ভোমার প্রেমের ভিথারী— চিরামুগত – চিরাশ্রিত। ভোমার প্রেমের স্পার্শ-মণির আলোকে – সেই স্লিগ্ধালোকে, আমাদিগকে শীতল কর।

এই সংশার মৃত্রে প্রতিকৃতি। এই
সংসারে থাকিয়া, কত তুংখ কত সন্তাপই
ভোগ করি। তুমি কৃপা করিয়া আমাদিগকে
ভোমার অ্যুত নিকেতনের দার খুলিয়া দেও।
আমরা তথাল প্রবেশ করিয়া পরম শান্তি
লাভ করি।

ওঁ একমেবাদ্বিতীয়ং।

ইমন কলাবি— (ডওরা।

সত্য মসল প্রেমমর তৃষি

গ্রুবজ্যোজি তৃমি অরুকারে

তৃমি সদা যার হদে বিরাজাে

হপ আলা দেই পাশরে,

সব হথ জালা সেই পাশরে।
তোমার জানে তোমার ধ্যানে

তব নামে কত মাধুরী

মেই ভকত সেই জানে,

তৃমি জানাঞ্জ বারে সেই ভানে

ওহে তৃমি জানাও বারে সেই জানে।

কেদারা ক্রুকা কভালাব

ৰৱণ তার কে **ভাঠে**, তিনি অ**নুদ্ৰ মান্ত** ভাৰুত ভগত যগন দেই গ্ৰহা-স্বান্ত।



তিনি নিজ অন্তমণ মহিমা মাঝে নিশীন, সন্ধান তাঁর কে করে নিজন রেদ বেদা হ, প্রত্রমু পরিপুর্ক অতি/ম্হান, তিনি আমি কারণ ডিনি বর্ণন অভীত।

ভাষীর চিতিল।
ভানন বুরেছে জাগি ভুবনে তোমার
ভুমি সদা নিকটে আছ বলে।
ভাষি জন অবাক নীলাখনে ববি পশি ভারা
গাঁথিছে হে উভ কিরণ মালা।
বিশ্ব প্রিবার ভোষার ফেবে হথে আকাশে,
শ্বোমার কোঁড় প্রদারিত বোনে বোমে।
ভামি দীন সন্তান আছি সেই তব আভাষে
তব প্রেহ মুধ পানে চাহি চিরদিন্দ

শক্তর—শ্রীপতাল।

কি ভর অভয় ধামে, ভূমি মহারাজা,
ভর যায় তব নামে।
নিউয়ে অযুত সংত্র লোক ধায় হে
গগনে গগনে সেই অহুয় নাম গায় হে।
ভব গলে কর বলী ফুরি রগাময়
লোক ভূম বিপদ মূত্যু ভয় দূর হয় ভারা,
ভানা বিকাশে সব বন্ধন খুচে,
নিউতা অযুভ্যুস পায় হে।

নামশ্রসাদী স্কুর।
আমরা মিলেছি আজ মাথের ডাকে।
মরের হয়ে পরের মতন
ভাই ছেব্লুড় ভাই ক দিন খাকে!
আবের মাথে থেকে থেকে
আর বলে ওই ডেকেছে কে।
তাই গভীর সবে উনাস করে
আর কে কারে ধরে রাবে।

আর কে কারে ধরে রাখে !
বেথার থাকি যে যেখানে,
বীধন আছে প্রাণে প্রাণে,
কেই প্রাণের টানে ট্রেন আনে

ति धालित देवन बार्य मा द्यामा धाना मा द्यामा धानमान द्याद पूछ,
नगरनत का द्याद पूछ,
नगरनत का द्याद पूछ,
वनीन धाला क्षत्र छाटन
छारदाव नोटन छार्ट्य द्याद ।
अध्यानियान नायम स्टार्थ

मिरण इ मान मरण बरन

আৰু বারের হেবল ন্বাই মিলে। দেখা দিয়ে আয় লো মাকে।

নোড়--চো তাল।

ভূমি জাগিছ কে।
ভব আঁথি জোাতি ভেন করে স্থনগৃহন তিনির রাতি !
চাহিছ স্থানে অনিমেষ নালন,
সংশ্যাকপণ প্রাণ কম্পিত জাদে।
কোণা পুকাব তোনা হতে সামি,
এ ক্যানিত জীবন তুমি দেখিছ জানিছ,

প্রভুক্ষা বর ছে! তব পদ্পাতে বৃদ্ধিকাতে বৃধি কাঁদিতে আফাদ শ্বার কোলা ধাই!

মুলতান--একতালা।

শামার ছ'জনার মিলে পথ দেখার বলে
পদে পদে পথ হলি হে।
নানা কথার ছলে নানান মুনি বলে
সংশারে তাই ছলি হে।
তোমার কাছে যাব এই ছিল দাধ,
তোমার বালী শুনে ঘুচার প্রনাদ,
কানের ফাছে স্বাই করিছে বিবাদ

শত লোকের শত বুলি হে।
কাতর পাণে আমি তোমায় বখন যাচি
আড়াল করে সবাই দীড়ার কাছাকাছি,
ধরণীর ধূলো তাই নিয়ে আছি

পাইনে চরণ গুলি ছে ।"
শক্ত ভাগ মোর শত নিকে ধার
আপনা আপনি বিবাদ বাধার,
কারে সামালিব, এ কি হল দার,
একা হে অনেক গুলি হে ।

আমার এক কর তোমার প্রেমে বেঁথে এক পথ আমায় দেখাও অবিক্ষেদে, বাদার মাঝে পড়ে কত মরি কেঁদে চরণেতে বহ ভূগি হে।

र्भुववी--क्रीजात ।

ভোষা লাগি নাও আৰি আলিছে
ছথ নাই জীবনে তোমা বিনা।
সকলে চাল যায় ফেলে চির বরণ হৈ,
ছমি কাছে থাক হথে হথে নাথ
পালে তালে আরু কেই নাহি।

বেহাগ – চেডি। দ

দ্বামী তুমি এল আজ, অনকার কলর মানে, পালে রান পাই লাজ, ডাকি হে তোমারে! জালন উঠিছে প্রাণে, মন শাস্তি নাহি মানে, পথ তবু নাহি জানে আপন আখারে। বিফল ধবিক জনম মম, বিফল বিষয় প্রথ. বিফল ক্ষিক প্রেম টুটিরা বাস বারবার। স্তাপে জনম দহে নয়নে জ্ঞানারি বঙ্গে, বাড়িছে বিষয় পিপাসা বিষয় বিষ বিকারে।

মিশ্রে বিন্তি—কাওয়ালি।

চাহিনা অথে থাকিতে হে।

হেল্ল কত দীন জন কাঁদিছে।

কত শোকের জন্দন গগনে ইটিছে,

জীবন বন্ধন নিমেরে টুটিছে,

কত ধৃলিশায়ী ভন মলিন জীবন

সরমে চাহে ঢাকিতে হে।
পোকে হাহাকারে বিধিন শ্রবণ
ভনিতে না পাই তোমাুর বচন,

হার ক্রেন করিতে মোচন

কারে ডাকি কারে ডালিতে হে।

আশার অন্ত ঢালিলতে গোলে

কারে ভাকি কারে ভাকিতে (
আশার অমৃত ঢালিলাও গ্রাবে,
আশীর্কাদ কর আত্র সন্তানে,
শিধহারা জনে ভাকি গৃহ পানে

চরণে হবে রাখিতে হে। প্রেম মাও, লোকে করিতে নাখনা, ব্যথিত কনের ত্রতে ব্যন্তা, তোমার ফিরণ করাই প্রেরণ অল আকুল ফার্থিতে হে।

निष् मझात—(हां छान ।

कित्र निर्म नव माधुरी सर्व (गांडा सर्व तिरंब,
सर्व मुख्य भवन नव गींड नप आनम ।
नव (मार्गिंड विकामिड, सर्व खांव विक्रमिड,
सर्व खींडि खर्वार रिकार्ति।
करितिप्रक विकामिन सरीस खांरगा

তৰ প্ৰেম নহাৰ ছটা। ক্ৰম আৰী তৃষি চিৰ প্ৰাধীৰ, তৃষি চিৰ নহীন, চিৰ ক্ৰমৰ চিন্ন ক্ৰমৰ।

(H-1 (4) -- LEASTH)

আমার যা আছে আমি সকল বিজে পারিমি কোনাতে নাম। আমার লাজভর আমার মান অগমান ইৰ চ্থ ভাবনা।
শাবে রয়েছে আবরণ ক্ড শত কত মড়
তাই কেঁদে ফিরি; তাই ডোমারে না গাই,
মনে থেকে যায় ভাইকে মনের বেদনা।
যাহা রেখেছি তাহে কি হব, ভাহে কেঁদে মরি
ভাহে ভেবে মরি।

ভাই দিয়ে যদি ভোমারে পাই (জানি দা) কেন তা দিতে পারি না,

আমার জগতের সর্তোমারে দেব, দিলে ভোমার নের বাসন।।

শাহানা—কাওয়ালি।
আৰু বুঝি আইল প্রিয়তম,
চরণে দকলে আকুল গাইল।
কত দিন পরে মন মাতিল গানে
পূর্ণ আনন্দ জাগিল প্রাণে,
ভাই বলে ডাকি স্বান্ধে,
ভুবন স্থম্ব প্রেমে ছাইল।

মিশ্র জয়জয় ত্রি—একতালা।
ত্রি বন্ধু, তুমি নাণ, নিশিদিন তুমি আমার,
তুমি তথ, তুমি গাতি, তুমি ছে অনৃত শাবার।
তুমিইত আনন্দ লোক জুড়াও প্রাণ, নাশ শোক,
তাপ হবণ তোমার চরণ অসীম শরণ দীন জনার।.

## বিজ্ঞাপন।

বর্তুমান মাস হইতে বাঁহার। পতাদি অথবা মনি অর্ডার প্রভৃতি পাঠাইবেন তাহা ক গাঁধাক শ্রীযুক্ত ক্রিণীকাঞ্চ চক্রবর্তীর নামে আদি আক্ষমমাজের কার্যালয়ে পাঠাইবেন।

जी बदी जनीय श्रेक्ष

मण्यामक ।

আগামী ১৬ই ফাস্ক্রন রবিবার বর্জনান : ভাত্মসমাজের সপ্তবিংশ রাত্মংশরিক উৎসক ইটবে

**এথাব**ক্চরণ **জীনকা**ত্র



# তভাৱোধিনী পাত্ৰকা

ब्रह्मयाण्यासिक्षासास्य (विज्ञानास्यामिदिदं सभ्ये सन्दर्भ स्थि निर्त्याधीयसम्पत्तां सिव स्वतस्य विद्याय संयक्षेत्र स्थि स्थापिक्ष सभ्ये साथि सन्दर्शनयम् सर्व्यात्र सर्वात्र सम्बद्धिया विक्षास्य प्रतिसद्ध्य पूर्वसमिति । एकास्य तस्येवास्यसम्बद पार्यस्यक्षेत्र स्थापावित । सन्तिन् प्रतिस्य स्थापावित स्वापासनस्य ।

## অভিনন্দন পত্ৰ।

ভক্তিভাজন জীমগাংগি দেবেক্তনাথ ঠাণুর এবানাচ্যার্য মহাশয় জীচরণেযু।

वार्गा!

অদ্যকার দিন আয়াদিকের পক্ষে হুদিন, त्य मिन जागता, मांवात्र खाकामभादकद्व मण्डा-গণ, পবিত্র মাঘোৎদবের আনন্দকর সময়ে, আপনাকে আমাদের স্থানয়ের ভক্তি ও ক্লত-জ্ঞতা জানাইবার জনা আপনার সনিধানে উপস্থিত হইতেছি। দিন দিন আপনার শরীর জরাজীর্ণ ও विद्रमञ्ज हरेट তেছে দেবিয়া আমরা বহুদংখ্যক নরনারী আমাদের ভক্তি শ্রদার উপহার দিইয়া আপনার স্মীপে উপস্থিত হইয়াছি।। আমরা জানি, আমা-रनत ममाश्रारम जानात मरन देश छएकवन। হইবে, তাহাঞ বাপনার পরীরের বর্তমান অবহাতে আর্থনীয় নহে; তথাপি আমা-मिट्रात मेंद्रेश परिनर्क जाननाटक मिथ्रवात খন্য ও আপনার ওই পবিত মুখের কয়েকটা कथा अनिकात जना कुछ छिदसक, (व बाया-निगरक बीरा रहेश बालनात्क अहे क्लन

অপিনার ন্যায় ত্রাক্সন্মাকের হিতকীনী মহাত্যা রাজা রামমোহন রাগ ইহলোক হইতে লংসূত হইলে, তাঁহার বন্ধুদিলের মধ্যে আয় দক্লেই যখন ইহাকে পরিভাগে করিলেন, যখন ইহার অভরের পুর্বলতা ও বাহিরের প্রবল বিপক্ষকুল ই-হাকে অব্যাহ্য দশায় পতিত করিল, যখন দেশব্যাপী ্ঘন নিবিজ্ অন্ধকার ও বিবিধ তুনীতির মধ্যে এই সমাজ মৃতপ্রায় হইয়া পড়িল, গথন ইহার অন্কুরিত দেহে জল দেচন করিবার কেহই থাকিল না, **য**খন উৎসাহ দিবার ও সাহায্য করিবার লোক অধিক ছিল না বরং নিরাল ও ভয়োদাম. ক্রিবার সকল কারণই বিদ্যমান ছিল, তথন আপনি বিধাতার মঙ্গল হস্ত দারা নীত হইয়। ব্রোক্সমাজকে প্রাণের সহিত আলিঙ্গন ক-রিয়া ও ইহার কার্যাভার নিজ মস্তকে নইয়। ইহাকে রক্ষা করিয়াছেন, এবং ইহার দে-বাতে আপনার সময়, অর্থ ও সামর্থা অকা-" তরে নিয়োগ করিয়া ইহার অবসম দেহে জীবন সুঞ্রি করিয়াছেন। ব আপনার আগ-মনের পুরেষ ত্রামাসমাজের আধ্যাত্মিক অবস্থা **শ্তিশয় হীন ছিল। ইহার চেট্রা প্রধানতঃ** 

গুলি বিশুদ্ধ মত প্রচারে পর্যাবসিক্ত হইত। जानिह मजा-यसद्भव वर्षन। विधिन्द्रिक প্রবর্ত্তিত করিয়া ত্রাক্ষসমাজের আধ্যাত্মিক ভিত্তি স্থপ্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন: এবং সেই জীবনের উৎদের দহিত আমাদের আত্মার যোগ স্থাপন করিয়া আমাদের আধ্যাত্মিক পিতার কার্য্য করিয়াছেন। আপনি ব্রাহ্ম-্রিসমাজকে ভানেক কুদংস্কার স্ইতে উন্মুক্ত ্রুরিয়াছেন; আপনি শান্ত্র্যান্ত্র মন্থন করিয়া ্ত্রিনেক দতাায়ত উদ্ধার পূর্বেক আমাদিগকে শ্রীত জীবন নাভ করিবার পথ প্রাদর্শন করি-**ুয়াছেৰ;** আপনিই সৰ্কান্তো নিজ চেঙা এবং বিদ্যালয় স্থাপন ও প্রচারক নিয়োগ প্রভৃতি মারা দেশমধ্যে পবিত্র ক্রাক্সধর্মা প্রচার করি-বার প্রয়াশ পাইয়াছেন; আপনিই সর্বাত্তে ব্রাকাধর্মের অপৌতলিক প্রণালী অনুসারে ু গার্হা শুরুর্টনের পথ প্রদর্শন করিয়াছেন; ्याभिनिष्टे मर्वाट्य विक्ष छेभामना अशाली ুপ্রথমন পুর্বকৈ তদ্মুদারে লিজে সাধন ক-রিয়া অধ্যার্যোগের ভাব প্রকাশ করিয়া-रहन; এবং विक जीवरत कान शींक । प्रेशंतरमवात प्रभावात्ता मृक्षास अनम्भ कविशा ব্রাকাধর্ম্মের প্রকৃত ভাবকে উচ্চল করিয়া-ছেন। অতএর ব্রাক্ষানমাজ আপনার নিকৃট हिद्रनिद्**न**त्र **जना** थानी।

কেবৰ ব্ৰাক্ষণমাজ কেন, সমগ্ৰ ভাৰত্ত্ব সমাজ আপনার নিকট থানী। পবিক্র-সর্কল পরমেখনের আধাাজ্যিক পূজা বছদিন হইতে এদেনে বিশ্বপ্রপ্রায় হইয়াছিল। আপনি ভাহাকে প্রনঃপ্রতিতি করিবার পালে ও ভারতের কর্ম-চিভাকে আপ্রতি প্রেটা বিশেষ গ্রহাত্ত্বা করিয়াছেন পাত লাভ নক নারীয় নার্যায় উল্লেখ্য করিয়ান ইন প্রক্রিক কাক্ষাক্র উল্লিখ্য করিয়ান

কতকগুলি কুসংক্ষারের প্রতিবাদে ও কতকতুলি বিশুদ্ধ মত প্রচারে পর্যাবদিক হইত।
আলা করিয়াছেন। আর্ডের এমন বুলু কর
আপনিই সতা-খরুপের অর্চনা বিধিপূর্বিক
প্রবৃত্তি করিয়া ত্রাক্ষসমাজের আধ্যাত্তিক
ভিত্তি স্প্রতিতি করিয়াছেন; এবং সেই
জীবনের উৎসের সহিত আমাদের আজার
তিছি।

षायता जाननातरे जानगणिक नेडान है আপনারই শ্রম ও কার্বোর উত্তরাধিকারী। আপনি যে গুরুভার, উৎদাহ, অনুরাগ 💇 সার্থ-ত্যালের সহিত চিরদিন বহন হৈরিয়া আসিয়াছেন, আশীকাদ করুন আমরা যেন র্বাই ভার সেইরূপ বিখাদ নির্ছর ও আত্ম-স্মর্পণের সহিত বহিতে পারি। আপনি 🛊 আমাদিগকে যে গভীর আধ্যাত্মিকভার পথ প্রদর্শন করিয়াছেন, আশীর্বাদ করুন যেন তাহা ভাষরা প্রাণপণে সাধ্য করিতে পারি। "ভাহাকে প্রীতি করা তাঁহার প্রিয়কার্য সামন कवाहै छाराब छिशागना"—बह बार्मा मध्य আপুনিই আমাদিগকে পিকা দিয়াছেন পৌ वानीकान करून देश के बेशदम् वामदा কখনও বিষ্মৃত না হই। আইনার ক্লাইোর শক্তি যত দিন ছিল 🗰 দিন স্বৰ্ধতে ভাৱে ত্রাক্ষস্থাতের সেব। ক্রিতে ক্রটি করেন নাই। এখন আপনি জয়া ও সমূহতা বশতঃ যদিও কাৰ্যা হাইতে অৱস্ত হইয়াছেন,তথা শিএখন প্ৰ विभागत कीरम यामानिगतक विकत्त नेपूर প্রীতির উচ্ছল দৃষ্টান্ত প্রদর্শন করিতেটে 🖫 এবং এখনও আমরা ব্রাক্ষসমাক্ষেক বিবিধ निमेक्ष्रीत्न जाशनात श्रामा ७ गारीसः बाल हरेटलिहा जाननि जनने जामा-टमन बट्या चाटहन, देश ভावित्म आमा-"दमत बोनन्स । बाठवार जेनदत्त्र ठतदन बाना-स्त्र और पांचतिक शार्थना, त्र जिनि वर्षनेक नीर्काम धार्मनाटक चामादम्ब महा सहित्। - बार्श वित्तनसम्ब नाशिक कीरानर करे

তুলি বিশ্বনের ও শ্রাবালের মার্বা বিশ্বনিন্দ ও কেই গভাবন্ধকৈর নার প্রদানের করে ও ভালীবিন্দ মন্তবে বারণ করিয়ালের প্রের প্রাথিতি স্বাংশির প্রতি প্রতি ভালার কিয় কার্যা সার্বানে দেহ মন নিয়োগ করি; এবং উৎসা-হের সহিত দেশ বিদেশে ভালার নার প্র-ভার করি; আপনি দেখিয়া স্থা হেউন। যে আক্ষান্যাকের উল্লভিত্তে আপ্যায় এত ভালন্দ, দেই জাক্ষান্যাকের দৈনন্দিন উল্লভি দেখিয়া আপনি জীবনের শেষ অবস্থা প্রথ

আজ একবার আমাদের প্রতি দিসেহ
দৃষ্টিতে চাটিয়া দেখুন; এনন দিন ছিল
যখন আপনার প্রিয় ত্রাক্সধর্ম অতি অয়
সংখ্যক লোকের মধ্যে আবদ্ধ ছিল; এখন
দেখুন ঈশ্ব-ক্নপায় কত শত নরনাণী দেই
পাবত্র আগ্র হৃদয়ে ধারণ করিয়াছেন; দেখুন
কত মহিলা কত পরিবাব আজ এই কৃতত্রতার উপহার লইয়া আপনার সমিধানে
উপস্থিত হইয়াছেন। আপনার সমিধানে
কি সেহাশীর্কাদ করুন। ইতি।

্তু আননার আনীর্বাদাকাডকী সাধারণ ব্রাক্ষসমাজে সভাগণ।

ব্রাক্ষদমাজের প্রধান জাচার্য শ্রীমন্মহর্ষি দেবে ক্রনাথ গাকুরের প্রভুৱতর।

ক্রীতিভাষন

क्षिमः नागासं संस्थानस्य स्व ने व

ह्योग्। इ

STATE OF THE STATE

मानि पन् इरेकाय-रेश क्यापत बदनव मार्क प्राचि कर्ड पर्न कित जीवन आगि वका क्षिरे। स्थाना स्थान कि सामुटनक निम्। अपूर्ण यश्रन कान अरु जन जानाक चामि ধ্বিষিত্ত পাইতাম, তখন তাঁহাকে দেখিয়া ক্ষিমাৰ জানন্দ হাদুৱে আর ধরিত না। এখন এখানে শত শত নর নারীকে ত্রাক্ষধর্মে দী-ক্লিত ও অনুবৰ্ত দেখিয়া আমার কত আ-<del>নন্দ। স্থান্য স্থানে অনুবালের সহিত</del> অমুরাগ শিশ্রিত হুইয়া কি এক অপূর্ব্ব আন-**रम्मत**ेशांत्र। अधारन क्षेत्राहित इरेगाहि। আনন্দের এমন আসাদ আমি আর কবনই भारे नारे। "এयहाकानमधार्ज।" रॉनरे আনন্দ বিধান করেন। এতগুলিন জ্ঞানে, ধর্মানুষ্ঠানে বিশুদ্ধ পরিবারবদ্ধ ত্রাক্ষদিগকে এজীবনে দেখিয়া যাইব ইহ। আমার চিষ্টার ও আশার অতীত। এমন কি মঞ্চ, কি পুণা বে, এই প্রাপত্তম, উন্তত্ম ত্রাসপ্রথাকে কাদ্যার ধারণ করিয়া ख्राकानगरमा यामि छेलायुक त्नवक इंडेटेंड পারি। তাকাধর্মের জাক্ষসমাজের উন্নতির बना यादा कि बनिशाहि, यादा कि कति-গাছি ভাহা কেবল তাঁহাৰই কুপাতে—ভাহা-प्रदे नाशास्य। आयात सप्रदेश जिनि का সীনু হইয়া আক্ষান্ত উল্ভির্জনা নে ভুত বৃদ্ধি জেরণ করিয়াছেন ভারে ৰামী চলিয়া এডটুকু বাহা বিভু ক্ৰিক পারিয়াছি। সম্দার আকুনে বাহার ক্লান বহন ক্রিতে পারে না, আযার তুর্বন রাদয়ে দেই ভার পড়িয়াছে। ইহাতে আ-শুৰ্বা কি। ভাইার কুপাতে যাদী বে, দে লোগা হয়, পদু গিরিকে লক্ষ্যন করে। এক कुला है किरलर-जनकर्ता है किर्देशः, जना কলা হৈ হৈবলং পাপনাশহেত্রের জন क्षा हि दक्ष्यमः।" दलामना केश्विक क्षा

। व ब्यापना कर. डाइएक छ परत

ভাঁহার আদেশ অনুযায়ী অটল ভাবে চলিতে থাক, রাসাদমাজের অশেষ উল্লভি হইবেঃ চিরদিন ভোমরা ভাঁহাতে বিশ্বাস নির্ভর ও আত্ম সমর্পণ করিয়া ভাঁহার পবিত্র উপাসনার দৃষ্টান্ত সর্বত্র প্রদর্শন কর, ইহাতে আর আঃ সকলের হৃদ্যকে আকর্ষণ করিয়। ভোষাদের मन्त्रो कदिया लगेटङ পারিবে ৷ **েগ্রানাদে**র সহিত এমন প্ৰিক্ত সন্মিলন স্থা 🦝 জাবনে আর উপভোগ করিবার আমার ছানা নাই, সামার তো কথাও শেল ইইয়া আলিহাছে। কামুষ এক্ষণে ডোমান্তের নিকট হইতে বি-গার লই; তৌমাদের মঙ্গণ হউক, ক্রো-भटा नकरन अक्सना इहेबा, खरक करक মিলিয়া, উন্ধ্ৰে-ভাছার সিংছাদলাভিমুবে अवेन ভाবে छनिए थाक, ट्यामारनद मध्य মঞ্ল বিবাদ ফলছ তিরোহিত হউক, শান্তি-স্থ বিস্তার হউক। তোলাদের ধর্ণ্ছতে সতি হউক, ঈশহুরর তে।স-মুখ দশন করিয়া তোগালের হাদয় নিম্পাপ ও পরিত্র হউক 🖺 ্রোমানের প্রাষ্ট্র পারণার খর্টোর পরিবার ভটক, তোমাদের কুলে যে**ন প্রেছ** পরাক্ষ না খে। তথানৱা সকলে ব্ৰুবান্ও বৰ্ধা-এই দভাস্ব এত্ত্যক নরনারীর स्वत्य देशदाय श्रमान व्यवकीर्ग एकक, बहे काशास स्वरूष्ट्रभव जानीकात

সাধীর নমাজের অন্তর্গত ছাত্র সমাজের অভিনন্দন পত্র।

के जिस्मार ।

শ্রম **উ**র্জি**ভাজন** 

্রীমক্ষর্কি দেকে জনাথ ঠাকুর প্রধানাচার্যা নহাশয় শ্রীচরতৈর বু

हज्ता।

আমাদের ভিয়তম মাথোৎদরে আমির লাধান্য ব্রাক্ষমাজের অন্তর্গত ছাত্রসমাজের

সভাগণ ভক্তিপূর্ব অন্তরে হৃদয়ের গভীর প্রদা কডজতা চিহ্ন-মুরুপ এই যৎসামান্য গ্রীতি-উপহার লইয়া আপনার চর্ণ-প্রাস্তে উপস্থিত হুইতেছি। यमिछ षामारमत भएमी **जटनटक जालनात में**ट्रिम माकार**ाट** शहि-চিত নহে, এবং যে সময় আপ'ন জালু-দ্মাজের বেদিকে অলভ্ত করিয়া আর্থেই। গিরির স্বার্থপাতের নাায় জ্বন্ত ও জীবন্ত সভা সকল ব্যাণ করিতেন গদিও আয়র) তৎ-পরকালব দ্রী বলিয়া দেই উপদেশ এবংগ স্বৰদক্ষোগ করিতে পারি নাই, ত্থাপি জা-মর। সকলেই বা দিন হইতে তাপিনীর নাম ৯ লদয়ের ্নভুত স্থান গভার শ্রেকা ও ক্ত-দ্ভালার সহিত্য ধারণ করিয়া আদিতেগছি, এবং অনুষ্ঠা আধ্যাত্মিক জন্মের পণিয়-জরূপ আপ-নার পাধানমাল। পাঠ করিছ। আনবা প্রভৃত উপকার লাভ কবিয়াহি ও অদ্যালি করি-তেছি। অপিনি নিজ জীবনে থে প্রগাড় উপরতীতি, আধ্যান্তিকতা ও সভ্যপরায়ণতার উজ্জান দুর্রান্ত প্রদর্শন করিয়াছেন, আমরা «দ্বৰ্মল শক্তিতে যথাসাধা সেই পদবীর অনু-সরণ করিতে চেপ্তা করিতেছি।

আয়াদের অনিকাংশেরই পঠদশা। ছাত্রগণের মধ্যে পর্যাভাব উদ্দাপিত করা,শিক্ষাকে
ঘর্মের স্থান ভিত্তির উপর স্থাপিত করা,
ম্বকদিগের মনে কর্ত্ব্য জ্ঞানকে উজ্জ্ঞা
করা, তাঁহাদিগকে ধর্মা ও নীতির স্থানিয়ে
ম্প্রতিন্তিত করা, এবং সকল প্রকার সদমুভানে উংসাহিত করা, ছাত্রসমাজের লক্ষা।
আমানের এই ছাত্রসমাজকে আপনার প্রক্রিন প্রতিন্তিত ত্রেরা বিদ্যালয়ের কার্য্যের উত্তরাধিকারী বলিলেও হয়। আমরা অদ্যকার এই
বিশেষ দিনে আপনার স্বেরানীর্কাদ ভিক্ষা
কর্মন, যেন এদেশে বিশ্বা বিভারের সঙ্গে
সঙ্গের মুবকগণ আপনার ইইন্ডে পারে, যেন করাদের শিক্ষা আয়াদিগকে সভা স্বরূপে উপনীত ক্রিতে পারে,
যেন জ্ঞান লাভ করিয়া আয়ারা মর্ল্যের মহিয়া
অনুভব করি এবং - ব্য়েন্য দির সলে সলে
বিশুদ্ধ-চরিত্র থাকিয়া স্বার-শ্রীতি ও স্বারস্বোতে আত্মসমর্পণ করিতে পারি। ইতি।
স্বান্ত হল করে পারি আপনার আনীর্বানাকাজনী
ক্রিকাডা।

# শ্রীমথহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরের প্রভুত্তর।

कें जरमंद ।

নেক্লপ্ৰ ইাজসম্যুত্তৰ সভাগৰ ু স্মীপেয়ু:

#### প্রিয়দর্শন !

খাঁয়ার প্রতি ভোয়াদের 🐞দাের ক্রত-- জ্বতার ও প্রীতির উপাহার আমি আদেরের **সহিত্ত জাননে**র সহিত গ্রহণ<sup>্ট</sup> করিলাম। ক্রেরা ইন্দ্রিয়দিগকে সংযত করিয়া হাদ য়কে পবিত্র কর এবং তাহাতে যে ব্রাঞ্চ ধর্ম-বীজ রোপ্লিড হইবে তাহা ভক্তি ও अकात प्रिक शाननु कतिए थार्क, कारम **उत्तिरः ए। कम क**नित्त रम कन इस्टें নিশ্চয় অয়ত লাভ হইবে। ভোমরা ঘাহা विद् निविद्य, जाहाटक अधीषमृना क्ट्रेट्य। टिकामें वे बटतन भटेष येजुरूक् व्यामत हहेटव वज्ञातिक जाश तका कतित्व। अनिवादक जामनेत्वा अमिष त्यायात्मत छेशदाई नि-র্ভর করিতৈছে। তোমরা জ্ঞান লাভ করিয়া सद्भित सहिया 'अनुस्य कत अवर रहत्रोहिकत मृत्य मृद्य हिछाट विश्व के ब्रिश में बर-ब्या मन्द्र-दावाद्य पान नमर्गन करी। टेहाट देशमान्द्रकर देवकारमद ७ शतकाद्रमत गमन रहेरको द्वारा पान द्वानारमञ्

শরীর মন আত্ম কুণলৈ থাকুক এই আমার আশার্কাদ।

# ব্রাক্ষসাধারণের প্রতি ব্রাক্ষসাজের প্রধান ক্ষাচার্য্য শ্রীস্মাহর্ষি দেবেক্সনাথ ঠাকুরের উপহার।

S 328 1

হৈ প্রিয় রোক্ষণে ।

"সংগ্রুত্বং সংবাদনে সংগ্রেনাগালি জানতাং ।

দেশা ভাগং যথা প্রেন সংবাদা গালিপানতে ॥"

লোমরা সকলো এক সংখ্যে মিলিত ,হাও.
এক মঙ্গে কথা বল, এক সঙ্গে স্কলের মন

সকলো জানো । প্রাহন দেবাহারা ভ্রমন
একমত হইয়া হ্যিত্যা গ্রহণ করেন—ভো-

'স্মানীৰ আক্তিঃ স্মান্য প্ৰয়ানি বং। স্মান্মক্ত বেচ্ছাৰ্ম প্ৰাৰ্থ প্ৰকাস্তি॥"

মরাও দেইরূপ এক্মত হও।

তোমাদের সংকল্প এবং অধ্যবস্থা সমান ১উক, তোমাদের স্থান সমান হউক, তো-মাদের মন সহান হউক-- থাছাতে তোমা-দের মধ্যে স্থানোভন দশ্মিলন প্রাত্ত্ত হয়।

তোমবা সকলে এক-অদয় এক-বাকা

হইয়া চল বেদ্বেচনে তোমাদের প্রতি এই

যে আমার স্লেচের আশীর্হাদ ও হিত-কামনা
প্রকাশ করিলাম, এই বিবাদ কলছের মধ্যে
তাহার প্রতি তোমাদের বিশেষ দৃষ্টি রাখা
কর্ত্তবা। ইহার জনা তোমরা এই প্রত্তী

তিটি যদি অবলম্বন কর, তবে ইহাতে সিদ্ধান্ত হিব। প্রতিটি এই আমারা আদি

আমা কোন রূপ ত্রামা, এই ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ভাব

বিশ্বত হইয়া, আমরা ত্রামা—এক সম্বরের
উপাসক, এক পিতার প্রে, মনুষা আমাদের

ভাতা, এই মহৎ ভাবটির প্রতি আত্রার

সমস্ত বেঁকি সম্পূৰ্ণ করা। এই পদ্ধতিই সন্মিলনের পদ্ধতি। এই পদ্ধতি অবস্থন করিলে ভোমাদের মধ্য হইতে সকল বিবাদ চলিয়া যাইখে শান্তির অভাদয় হইবে এবং ব্যাকধন্মের জ্বা হইবে।

- ১। ত্রাক্ষি আপ্রাজিক ধর্ম। তাহার বীজ এই যে, আত্মার দারা পরমাতাকে
  কানিবে। আত্মাতে ইপরকে দেখিলে সবিজেই ভাহারে দেখা ধার। যিনি সকল
  বৈচিজ্যের মূল, সকল সংসারের একাধিপতি, তাহার প্রিয় আবাস-ছান নর-নারীর
  আজা। আত্মাকে যদি না জানো তবে সকলি শুন্য । আত্মাই পরমাক্স-জ্ঞানের মূল।
- হ। এই শরীরের মধ্যে যে শরীরী
  আত্মা, ভাহার অভান্তরে বিশুক জ্ঞানালোকে
  শুদ্ধ-বৃদ্ধ অশরীর পরনান্তাকে দেখিবে—
  শান্ত, দান্ত, উপরত, তিচিক্স্, সমাহিত হইয়া সীয় আত্মাতে পরমাত্মাকে দেখিবে।
  এই অধ্যাত্মযোগ। ভক্তির দহিত এই
  যোগে যুক্ত হইলে সকল পাপ হইতে
  নিক্তি পাইবে, মুক্তির দোপান লাভ
  করিবে। রুড়ার পরে শরীর পড়িয়া
  থাকিবে কিন্ত এই যোগে যুক্ত হইয়া আজা
  পরমাত্মার সহিত অনস্ত কাল বিচরন করিবে।
- ৩। শরীরের স্থতার জনা যেমন প্রতিদিন নিয়মিত আছার কর, সেইরূপ আত্মার স্থতার জন্য প্রতি দিন ঈশরের উপাসনা করিবে। ঈশরের উপাসনা জা-ভার জন।
- প্র । "ত্রিন্ প্রীতিশুস্য প্রির্বাহ্যসাথনঞ্চ ততুপাসন্মের।" দেশকাল্টে ও অবচ
  দেশকালব্যাপী সর্বাহ্যকী সতার নিন্দ্রন্তর্বামী
  ক্রমকে পিতা মাত্র বহুৎ, জানিক মন্তর্বামী
  ক্রমরের প্রভু ক্রমিয়া প্রেম-ত্রের বিত্রামনীর
  বাধনা করিকে এবং সংসারের বিত্রামনীর
  তাহার প্রির বর্মা-কার্য-ক্রম্ন আর্থানার সা-

ধন করিতে থাকিত্র। তাহার উপাসনার এই নিত্য-যুক্ত তুই অসকে কদাপি বিচিছ্ন করিবে না।

- ৫। কুলপাবন সংপ্ত হই সা সর্বদা সর্বন-প্রয়াত্ত পিতা মাতার সেবা করিবে। তাহাদের প্রতি কদাপি কর্কশ বাবহার করিবে না। আপনার স্থখভোগের কামনা পর্বে করিয়াও ভাঁহাদিগকে স্থাও সভ্ত বাধিবার চেতা করিবে।
- ৬। গরমেধরের ঐতি-কামনায় ভাতা, ভাগনী, ভাইন, পুত্র, কন্যা সন্ততিদিগকে অপরাজিত চিত্তে প্রতিপাদন করিবে এবং তাথাদের শারীরিক মানসিক ও আধ্যাজিক কলাণ সাধন করিবে।
- বিবাহ করিবে। রুগা বা অঙ্গ-হীনা বা তুশ্চ-রিত্রার পানি-গ্রহণ করিবে না। স্ত্রী ও পুরু-বের মধ্যে কেই চারিত্রাহীন হইলে অশেষ অন্তর্গন ইয়, অত এব পরস্পার পরস্পারের স্থানীলতা অবগত ইইয়া বিবাহ-বন্ধনে আকল ইইবে। পত্রী স্থানীর সহ্বধর্মিনী ইইবেন, সহক্ষিনী ইইবেন, সহক্ষেত্রা করিবে না এবং নিজেও অর্থলোল্প ইইয়া পত্নীগ্রহণ করিবে না, ভাষা ধর্মের অনুক্ষিত্র বিবাহন নার বিবাহন করিবে না, ভাষা ধর্মের অনুক্ষিত্র বিবাহন নার বিবাহন নার বিবাহন নার বিবাহন করিবে না, ভাষা ধর্মের অনুক্ষিত্র বিবাহন নার ব
- ৮। স্বামীর প্রিয়কারিনী, হিছুকারিনী,
  নদাচারা, জিতেন্দ্রিয়া, ত্রজাপরায়ণা
  প্রতি বেমন মনুষোরা সম্ভূত্ত হন, নেইরান
  তাঁহার প্রতি ইমর সম্ভূত্ত থাকেন
  রূপ দ্রী প্রতিক পারত্রিক মন্দ্রন লাভ করিয়া
  কুডার্থ হন এবং ভাঁহার কীর্তি পৃথিনীতে
  আনানা স্ত্রীদিগকে সাধুকর্মে উৎনাহ নান
  করে।
- ৯। জাফোরা জীর দারীক্ষা বাবনিক ও আধারিক কদাণি দাধনে ব্যক্তিকার

নেন, সতুপদেশ প্রদান ও সাধু-দৃষ্টা ও প্রাদরের র্নন করিবেন, এবং প্রীতি ও স্মাদরের সহিত তাঁহাকে প্রতিপালন করিবেন। স্থাধী স্থাকে পুরুষ কদাপি পরিভাগে করিবেন না।

১০। তুর্বিনীতদিগের যে অভন্ত দর্শনে,
অভন্ত শ্রবণে মন অভন্ত ছইতে পারে, যে
সকল আমোদ প্রযোদে ধর্মভাব মলিন ইইয়া যায়, যেখানে পাপ-প্রলোভন মনকে
বিচলিত করে, তথায় তুঃসঞ্চে অবস্থান কভ্রবা নহে। বিশেষতঃ স্ত্রীলোকদিগকে এই
সকল তুঃসান ও তুঃসফ ছইতে অতি যত্ত্বপূর্লক রক্ষা করিবে। পাপ-সংসর্গে পাপের
প্রতি আসভ্তি জন্মে।

১১। যাহা কিছু পরাধীন তাহা তুংথের করেন। আত্রন্ধন সকলি অথের করেন। অত্রন্ধন করিবার চেপ্তা করিবেন। আত্রিকিটা করিবেন। আত্রচিন্ডা আত্রনির্ভর আত্রান করিবেন। মাধ্য থাকিতে অন্যের গলগ্রহ হইবেন না। মিত্রবায় অভ্যান করিবেন। মিত্রায় অভিলাভ পরিত্যাপ করিবেন। মিত্রায় ঘারা আপনার ও পরিবারের ও সমাজ্যর কুনল রক্ষা করিবেন। কদাপি রূপণতা দোবে লিপ্ত হইবেন না।

১২। আত্মার দারা যে আত্মা বশীভূত। হইরাছে, সেই আত্মাই আত্মার বন্ধু। আ স্থাই নিয়ত বন্ধু আত্মাই নিয়ত রিপু।

১৩। উত্তম মানব জন্ম প্রাপ্ত হইয়া এবং ইন্দ্রিয়নোষ্ঠব লাভ করিয়া যে ব্যক্তি আন্ত-ছিত নাজানে দে আত্মঘাতী হয়।

১৪। ঘতই বিষয় ভোগ করিবে, বিষয়তৃষ্ণা ওতই রুদ্ধি পাইবে। অভএৰ সন্তোয়
স্মাবলম্বন করিবে এবং প্রাকৃত ভুপ্তি-স্থান সংসাবের অতীত জানিয়া সংসারের আসক্তি
পুরিত্যাগ করিবে।

১৫। স্থাই ছউক আর দুংখই হউক, শ্রেম ঘটনাই হুউক আর অপ্রিয় ঘটনাই হউক, গ্রেক্টি এই লক্ষ্য রাখিবে যেন তাহাতে হন্ম অভিভূঠিনা হয়। ঈপরের মসলস্করণে অভাষিত চিত্তে একান্ত নির্ভর করিয়া স্থা তুঃখ ও সম্পদ বিপদকে পরাজ্যা করিবে। প্রিয় ঘটনায় আফ্লাদে মৃত্র হইবে না, অপ্রিয় ঘটনায় বিষাদে মিয়মান হইবে না। মনের মধ্যে অভান্ত সন্তাপ উপস্থিত হইতে দিবে না। সভাপের করেণ উপস্থিত হইলে ধৈর্য ও বিবেচনা পুল্লক আপনাকে রক্ষা করিবে!

১৬। আত্ম-প্রশংদা ও পরমিন্দা পরি-ত্যাগ করিবে। সর্বদা সভায়ত থালিবে। মনকে সভারে অমুগত করিবে, বাকাকে **সতে**রে অসুগত করিবে, এবং আচরণকে সংস্থার অ**মুগত করিবে।** ধাহ'তে সভ্যের ল্প**লাপ হ**র না অথচ নোকের প্রীতি ও কল্যান উৎপন্ন হয় তাদৃশ বাকাই ক্ছিবে। ধাহা দত্য কিন্তু তাহ। কঢ়িলে কাহারে। লদ্ধে আঘাত দেওয়া হয়, তাহা সংযক্ত করিয়া রাগিবে, ধর্ণ্মের **অনুরোধে তাবশ**কে না হইলে কহিবে না। প্রিয় অথচ মিখা। একেবারে পরিত্যা**গ করি**বে। বিক্যে সভা-বাদী ও ব্যবহারে সত্যপরায়ণ হইরে। স-ত্যের স্থান আর ধর্মানাই—স্পা হইতে श्रक्र हे वख्य बाद कि हुई नाई। हेइटलारक মিথার পর ভীত্তে পদার্থ ও-আর নাই।

১৭। বাহাতে মদল হইবে ভাহারই
অনুষ্ঠান করিবে। পাপকারার প্রতি পাপাচার করিবে না। কেচ অন্যায় করিলে অন্যায়
করিয়া ভাহার প্রতিকার করিবে না। সকরিয়া আসাধুভার প্রতিবিধান করিবে। ন্যায়পরে থাকিয়া অন্যায়াচরবের প্রতিবিধান
করিবে। অসাধুকে সাধুভার ছারা জয়
করিবে। কেছু অস্ছাবহার করিলেও ভাহার
প্রতি স্থাবহার করিবে।

" >b-। यद्भृत्रिक गामूगक किति व । मध्-সারে সামারিধ অবস্থায় পত্তিত ইন্টডে হয়, ভাহাতে অন্তঃকরণ নানাবিধ ভাবে আনুনান্ত ্ও বিক্ষিপ্ত হইতে পারে। ধর্মভান্ধিমান তুইতে পারে, পণিত্র উৎসাহ নির্বাণ ইইতে পারে, দাধু আশা নৈলাশের পদিণত ্র্ছতে शास्त्री दुगांच छेद्धतः सहस कीतनत्कं मनिन कशिएक भारत । अक्तश जनस्था माध्नत्वत মংম**র্থ আত্মানে** প্রকৃতিত করিতে পারে। নাধুদক প্রভাবে মুম্র্ন আত্রা জীবন প্রাপ্ত ষ্ট্র, হতাশ **মনু**য়া **ইআ**শা লাভ করে এবং: নিরুৎসাহ চিত্র উৎসাহিত হয়। ধেখন मूर्विक कारलाक क्र**भशेन, रख**ंक क्रभवान করে, মেইরূপ সাধুগপের সাধুতা অন্তর্ ষ্মীবনকেও পবিজ্ঞ প্রানীল করে। সামু गरमें करे सर्ध्का (४, जिल्ह जमांब ভাবের দমন হয়, সাধু ভাবের উত্তীপন হয়। जार्डन **ध**की भी जन मासूमञ्जलन । जनस्ता क्तिराम ना।

্রিটা অযাধুদান পরিত্যাগ করিবে।
বাহার দলে অব্স্থান করিলে নীচ কামনা
ও নীচ ভাব উৎপদ্ধর, ভাহা ছইতে আপনাকে বক্ষা করিবে। অসাধু বাজিদিদের
মুহলানে দম্ছ নোহের উৎপত্তি হয়। অসাধনঙ্গে গাপের প্রতি হব; ও ধর্মের প্রতি শ্রনা।
বন্ধান্থত হয়। অভব ভোনর। অসাধু-দশ
পরিহার প্রতি দর্মদ। সাধু-দ্দ করিবে।

কং। কাছাকো সহিত বিশাদ করিবে
না। কোন্ধ সম্বরণ করিবে এবং শুদ্দান ও
ীতির সহিত সকলেন সংগতি সন্ধাৰণাব ভূরিবে। মৈত্রীই খেন অনোর সহিত কবে-

ত জিলকারীর প্রতি তৃত্তা হইবে। কেহ সামান। উপকার করিলেও তাহা বিদ্যুত ইবি শা। কৃত্তালীর বিপ্রতি ভাব কৃত- বেহেত্ক কৃতভের ঘশই বা কেথিার, স্থানই বা কোথায়, স্থাই বা কোথায় ? কৃতত্ম বা ক্রি শ্রহার পাত্র নহৈ কৃতত্মের নিষ্কৃতি নাই।

২২। অন্নই হউক আর অনন্নই হউক
শ্রেদ্ধা পূর্বাক সংপাত্রে দান করিবে। দাতার
শ্রেদ্ধা, পাত্রের উপযুক্ততা অনুসারে দানের
উৎকর্যতার তার্ত্যা হয়। যাহাকে দান
করিলে অনং কর্মো উৎসাহ দেওয়া হয় তাদৃশ অসং পাত্রে দান ধর্মোর অনুমোদিত
নহে। যে বাজি বাস্তবিক অভাবে নিপী
ডিতে হইতেছে, দাভাগবের অনুগ্রহই যায়র
একমানে ভরমা সেই বাজিই দানের উপা
যুক্ত পাত্র। তাদৃশ সংপাত্রে শ্রেদা সহকার
যথাসাসা দান করিয়া ভোমর। পুণা উপা
ভলন করিবে। ইহাতে ভোমাদের আত্রা

২০। দানের জনা জ্নায় প্রবিক ধনোপার্জন কবিবে না। তাদৃশ দানে প্রালভ হয় না, প্রত্যুত ভাহাতে মহৎ পালে প্রিত হইতে হয়। জভুএর যদি ধন নানে দামগা না থাকে তবে জার প্রারভিদ্যাত ভূমিনি লোর ভূমিনাচন করিবে। ভূমিণি জ্নায় করিয়া ধন আহরণ করিবে। না।

২৪। আপনার জীবিকা ও অবধা-পোক পরিবারগর্বেরা প্রতিপালনের জনাও অনায় পর্কিক ধনোপার্জ্জন করিবে না। ঈশর থে ধর্মজ্জান উলান করিয়াছেন তাহার জ্ঞানেশ প্রতিপালনক্ষা এ ক্ষণ-ভম্বর জীবনকে রক্ষা করা অপেকাও পরীয়ান। যদি অনায়ে পথে থাকিয়া জীবন ধারণ করিতে হয়, তাহা হইলে নে জীবন বাস্তবিক হয়ু এবং হলি নায়ে রক্ষার অনুরোধে মুগ্রার্থই মৃত্যু উপস্থিত হয় তবে দেই মৃত্যুই আমাদিগের জীবন।

২৫ । মহরহ আপনাকে শিক্ষা দান করিবে—আপনাকে শাসনা করিবে— মার্ নাকে ধর্মপরায়ণ করিব। বিদ্বি আপিনার ইন্দ্রিয়গণ ও অন্তঃকরণ বলীভূত ইক্সিডে পারেন, তাহার ক্লেশ ক্রেশ করিবার কোন কারণ থাকে না। যিনি আপনাকে দম্ন ক-রিজে নাঁ পারেনা ভাঁহার চতুর্দিকেই যন্ত্রণা।

ইউ। পরশ্রীতে কাতর হইবে নাছ পরশ্রীতে কাতর্তার তুলা কুংদিত বুনারি তার
কিছুই নাই। অনোর মঙ্গলের প্রাত্তি যাহার
বিষেষ হয়, ভাহার আর মনের আরাম থাকে
না, ভাহার আর শান্তি থাকে না। আই
সংসারে যে যত উন্নত হইয়া শুভ ফল ভোগ
করিতে থাকে, সে জন্তাত্যারে ইয়াকারীন
মনে তত আগাত দিতে থাকে। শুভ্রদ
সকলের মৃত্তাের মনো আপনার মহল সহিন্
বিদ্ধালানীয়া জেনের। ইর্প কুল্ডা ক্রমের

मुन्तिम विशदम देवनावकथन করিবে। যে ব্যক্তি মনে। ক্লচিত ক্ষম। জা-পন। করী সহজ্ঞ দোকেঁ। দোষী হইলেও खाशात्म श्रम्म। कृदिर । रिकाइ-जनस **েলোভনে পরিবৈশ্বিত** থাকিলেও অন্তঃকরণ যাহাতে বিকার ভাপ্ত ন। হয় এইরুপে ভা-ভাকে বশীভূত বিরিদ্ধে। সামীর মজ্যাত্যারে ষা প্রতারণ। পূর্বকৈ অথব। বলপ্রকি পর-শ্রহা গ্রহণ করিবে ন। কায়িজ, মান্সিক, বীচনিক দোষ-দকল প্রকালন করিয়া সর্বন-श्राकार्**क स्थी हहेग्रा शाकित्य। हे**स्सिग्रननटक শাসন করিবে, বুদ্ধিকে মার্জিত করিবে, জ্ঞান অভ্যাস করিবে, সভা কথা কহিবে এবং জোধ भवता कतिर्ग। रेष्ट्राई धटन्द्रात स्वकन ह

২৮। অনোর মুখ ছইতেও একটি আইল বাকা প্রেনিলে যাহার লজন। বোদ এর কৈই ছীনান। ত্রীমান রীজি পাঁপকে অভিনার রুখা করেন এবং ছাহার সম্পর্ক হতে দুর্কে থাকিতে সভাবিত ইচিছা করেন—ভাছার বী ব্রিভ হয়। যাহার হ্রা নাই হয়, ভাছার পক্ষে হার্নিত পাধা-পথ সহজ হয়—কল্যানক ধর্মপথে তাহার বাধা জ্বান্ধ এবং অদর্শে পতিত হইয়া জ্বীহীন এ মলিন হয়। অত এক-তোমরা কথাতে, ভাবেতে, বেশ-বিনাদে যরপুর্বক হীকে রক্ষা করিবে।

মিছত।" বিনি নকলের শুভাকাক্ষা কলেন তিনি বেমন আপনাকে তেগনি পরকে দে থেনা খেমন আপনাকে তেগনি পরকে দে থেনা খেমন আপনাকে কানেল প্রীতিভালি কিছিল স্থী হও, সেইকল গ্রেনার প্রতি প্রতি কবিয়া ভাহাকে স্থী করিলে। সেন্দ্র খেনার বিদেশে করি বেমানকর, সেইবরণ অনাকেও নিবেম করিয়া করিছা আপনাক মহিল ক্লিয়া করিয়া আপনাক মহিল ক্লিয়া করিয়া আনাকেও নিবেম করিয়া করিয়া করি প্রান্ত করিয়া আপনাক মহিল ক্লিয়া আনাকেও করিয়া আনাকে সাহিল করিয়া আনাকেও করিয়া আনাকেওও কেরিপা আনাকেও করিয়া আনাকেও

৩০। শিনি*ঈশ্বরে*ক ভক্তি করেন এবং शतूपारण श्रीकि **कर**तन, जिनिश्च माधु। किहि কখন মনুষাকে অপবাদ প্রদান করিয় মানন্ধিত হন লা। ুকেননা মনুষ্য ভাঁহাঃ প্রিয়। জিনি কাছারৌ দৌষ দেখিলে ভুংগির হন এবং প্রীতির সহিত তাহা সংশোধন করিতে চেপ্তা করেন। তিনি মুখুংক মনুষা বলিয়া প্রীতি করেন, এই জনা ক্রি কাহারে। সদস্প দেখিলে আন্দ্রিত হুন এবং काशास्त्रा (मार्थ (मिश्राल पूर्विक स्त्रा दें:-হার হ্বথ ও ধুঃথ উভয়ই প্রীতি হইতে উৎপদ্ম হয়। স্থতরাং তিনি ভাহলাদের সহিত কাহারো দোষ ঘোষণা করিতে পা-রৈন না। পিতা যাতা যেগন প্রকে পুর विभाग्ने क्षीजि करतन अहे बना श्रावाद छन स्वितन अभी इन जवर दिशय स्वितन कर्माध ব্যাবার্ড পান, সেইরূপ, মনুষাকে কেবল ম-ৰুষা বল্বাই প্ৰীতি কৰিতে শিক্ষা করিবে।

তাহা হইলে অনোর অপ্যাদে বিদ্যালয় আনিদ্র হৈবে নান যে ব্যক্তি অনোর দেয়ি কিনার দেয়ি দেখির। ও অনোর দেয়ে ঘোষণা করিয়া হানহে স্থা অনুভব করে, তাহার হাণ্য আতান্ত ক্রে। ভাগণ ক্রেতার সংশোধন করিতে সর্বাদা যত্রান থাকিবে।

৩১। বিনয়া নিজিই বশ্বলাভ থারিতে
সমর্থ হন এবং কিনসী কাজিই সংলারে
উলতি কাত করিছে পারেন। বিনাহীন
বাক্তি সকলেরই বিদিপ্ত হয়। যদি সম্পতি
থাকে, বিনসী তইলে ভাতার শোভা দিদি
হইবে; যদি বিপতি হয়, বিনয়গুণে ভাষা
হইতে মুক্তিলাভ হইবে। অতএব ঈথর অভ্যে
শে সকলি সদল্প প্রান্ধ করেন এবং বাহিবে
ব্যুলাল গৌলাগ প্রান্ধ করেন এবং বাহিবে
ব্যুলাল গৌলাগ প্রান্ধ করেন ভাষাব

🧸 🌣 ७५ । 🌃 महाभटन प्रभटित सन्धान हो। इत् "सन्धान १८८म यम, तुष्कि । विद्यक्त-साक्कि निरस्त्रक ৬ ব্লাহীন হইয়া পড়ে, হাদাশের পবিত্র ভাগ দর্ব অসাড় হইয়া যায়, পাত্রার আর न्य कि शदिन ना। त्य शतिवात ब्रासा करे गहा भाषा धारतमा करत, तम भति। देवते पूर्व-किंद योगं केखं नाई। जह व्यट्टिंग कर्क राष्ट्र के गरन राष्ट्रि वह ग्रांभाने समा शका ঘারাইতেছে, অকালে বার্ছন্য প্রাপ্ত হই-्रिट्ये वर्षः धनुमस्य स्ट्रायासम् शिक्त পুহিতেটে। কত কত ব্দিলান ও বিদান ब्रांकि धरे बहाशांश जमां जामनामिद्रात वृक्ति ত বিদ্যা হাত্রাইয়া লোকের সন্মুখে ক্লিভ ও ীম্প্যানিত ইইতেছে। কত কত বিচক্ষ য়াজি বিবেক-শক্তি-চুতে হই**ত্তেহে** ₁এবং রিপুগদের বলীভূত হইয়া পশুর ন্যায় আচল রণ করিতেছে। কত কতে বা**ভি** আ**ন্নার**া णवनिष्णु कतिया नियत छाटन अनिधिकाती हरेशा जालनामिदलेत स्वान्ति लट्ये केन्द्रेक রোপ্রক রিতেছে। অজ্ঞব সাবধান। তো-

করে। তোমরা অনাকে মদা বিধে না।
আপনারা মদাপান করিবে না
ভাগে পশ কবিবে না। এই সরাভিন ধর্ম ।

তাহাদ, তাহা ধর্মাত্র কারে বালাক পরিছে বিলাল প্রাথিকের প্রত্যাদির কার্যাদির কার্যাদির

তঃ। ধর্মকার্যের অনুষ্ঠানের নিমিন্ত সাধ্যানুসারে গড় করিবে। সমুদার শক্তি নিয়োগ করিয়া ক্রতকার্য ছইতে না পারি-লেও পুনা লাভ ২ইবে। ঈশরের অশেষ কার্য্য কে কতদুর সম্পান করিল, ঈশর তাহা গণনা ক্রেন না। তিনি যাহাকে যে শক্তি প্রদান করিয়াছেন সে তাহা অকপটে নিয়োগ করুক ইহাই তাহার ক্ষতিপ্রায়। তাহা হই-লেই তিনি তাহাকে ক্রতক্তা করেন।

তে । সার্থী দেখন অধ-সকলের সংঘন করে, তজ্রপ বিধারে প্রার্ত ই ক্রিয়-সকল লকে সংগ্রম করিবে। যে সকল বিষয় ইক্রিয়গোচরে উপস্থিত হইলে অভঃক্রারে ভালং ভাবের উদয় হয়, ইক্রিয়গণকে তাদুল অপরিত্র বিষয়ে নিয়োগ করিবে না। পরিত্র বিষয় উপভোগের ঘারা ইক্রিয়গণকে পরি-তৃপ্ত করিয়া অহরহ জীবনের উদ্দেশা সাধনে প্রার্ত থাকিবে। যখন যে প্রার্তি উঠে ভাহাতেই ইক্রিয়দিশকে বিচরণ করিতে দিবে না, কিন্তু আধাান্ত্রিক ধর্মের আদেশে মনকে প্রথিকিত ও বনীত্রত করিয়া ইক্রিয়ে দিগতে দমন করিবে। মন যদি সেচ্ছাচারী ইন্দ্রিয়-সকলের অনুগামী হয়, তবে বায়ু যেমন নৌকাকে জলৈতে মগ্র করে মনও ভদ্রগ পুরুষের বুদ্ধিকে নপ্ত করে। যখন প্রলোভন-সন্থল সংলারে অবস্থান করিয়াই ধর্ম সাধন করিতে হইবে তখন মনকে দমন করিতেনা পারিলে পাদে পদেই বিপদ ঘটিয়া উঠে। মন ইন্দ্রিগণের অনুকুল হইলে মন্থা হলচেতন ইয়া প্রপ্রে অনুকুল হইলে মন্থা হলচেতন ইয়া প্রপ্রে যোগে মগ্র হয়। অভ-তব মাহাতে শ্রার ক্ষাণ না হল এমত উপাল লালা মন ও ইন্দিয়-সকলকে বনীভিত করিয়া স্থিবিধানন করিবে।

তথা লাপ চিন্তা, গাপোনাগ, পাপ অনুষ্ঠান কয়িবে না। বাছার। শন ও বাজা ও কর্ম ও বাজা বারা পাপাচরব না কাবেন, সেই মধাসারাই তথ্যা। করেন। বাছার। শবীর শোধন বলেন, তাঁহারা তথ্যনা করেন, না। ক্ষার্ল তেনেনা পাপ স্থাইতে বির্ত্ত কইয়া ভাত কাবেম বৃত্ত প্রিবে। প্রত্তি প্রাক্তিয়া জীবিকা লাভ করিবে।

ত। দর্ঘ-পথে থাকিয়া নি চান্ত এই-দর হইলেও অধর্মো মনোনিবেশ ক্রিবে না L তোমরা প্রাণপূর্বে দর্মাকে দক্রা কর, দর্ম তোমাদিগরেশ্বিকা ক্রিবেন।

ত৮। পরলোকে সহায়ের নিসিত্তে পিতামান্তা স্ত্রী পুত্র জ্ঞাতি বলু কেইই থাকেন। একাকী মনুষ্য ক্ষমগ্রহণ করে, একাকী মত হয়; একাকী দ্বীয় পুণা-ফল ভোগ করে এবং একাকীই সীয় তুক্ত ফুল ভোগ করে। বান্ধবেরা ভূমিতলে মন্ত শরীরকে কার্চ লোভ-বং পরিজ্ঞাগ করিয়া বিমুধ হইয়া গমন করেন, ধর্ম তাহার অনুগানী হন। অতএব আপনার লাহার্যার্থে জনম করে, ধর্ম তাহার সমুগানী হন। অতএব আপনার লাহার্যার্থে জনম করে, ধর্ম তাহার সমুগানী হন। অতএব সাপনার লাহার্যার্থে জনম করে, ধর্ম তাহার সমুগানী হন। অতএব সাপনার লাহার্যার্থে জনম করে, ধর্ম তাহার স্ক্রী হন। অতএব সাপনার লাহার্যার্থে জনম করে। ধর্ম ইছকালের বন্ধু, ধর্মই পর-লোকের নেতা। "ধর্ম সংক্ষমণ ভূতানাং

मद्।" अर्था मकरलत शरक मत् अतिरी क्रिया मकरलतरे शरक मत् अतः(।

পিনা করে **প্রমান্যকে** ক্ষাবিক্ষা ক্ষিত্র হাং প্রথমকের্মুদ্ধন হা ভিত্তবে ক্ষাব্যক্ত প

रचन अल्टार कायना मकन नित्रक्ष हर তপৰ মৰ্ভ অহত হয় এবং নথাটেটি অঞ্চল राभरानां करता श्री पूर काश्रीप्रस्थित मक्षेश्वधाः स्थायन विज्ञात ज्याः निर्देश नि কাম কইয়া ফল তেওকীর সাদক্তি ভাগে করিবে, করে মুভিনর সোধারে আরোহন করিছে পানিতে। ইছার পূর্ব লাদ্রশু সহং केशता स्थिम (मध (क्यम अभाती) একটি কটি পতক্ষেরও আহার পিতে তিনি ভুলেন না। - কঠোর পশ্রতের গ্রস্তর মধ্যেও তিনি জাব জন্তকে অন গোগানতেছেন। किन्छ किन प्यौपनात कना विभूरे शहरनः ·नो, दक्षन भक्नेदक पिट्छिस् भारकन। असे আদর্শ অনুসারে তোমরাও আপনাকে 🛫 লিয়া স্ংশব্রের মঙ্গল **কর্ণে** বিতী <sup>'</sup>থাকিবে। তাঁহাতেই যুক্ত হইয়া সংগার ফর্মের অসু-ষ্ঠান করিবে। যাহা ভাহার আদেশ বলিয়া জানিবে ভাষা প্রাণপণে এতিপালন করিবে। যাহা ভাগার ইজার বিরুদ্ধ বলিয়া জানিবে ভাছা বিষৰৎ পরিভাগে করিবে ৷ ভূমি যদি আপনাকে ভুলিয়া এইকণে তাহার কার্যা করিতে থাক, নিশ্চয় জানিও তিনি তো यात्क जूनित्वन ना। ट्यामात त्य मकन অভাব তাহ। তিনি পূর্ণ করিবেন।

ক্ত তত্ত্বী প্রাহণ করিবে। তিনি ভোষাকে ८घ श्वकात तार्कन रमहे खनवार**ेहे म**खडे পুৰ্কিবে 🏿 🗸 সম্পূৎকালে 💍 ভাছাইট্ 🌂 সুগত ক্রিয়া চলিবে, বিশৎকালে তাছারই শর্ণা-্ৰীম হইগা বিচলিত হইবে না। মনয় তাঁহাতে থাকিয়া কর্মা করিবে বিশ্রা-শের সময় তাহাতেই থাকিয়া বিভাগ ক-রিবে। এই শরীর পৃথিনীতে সকরণ করিবে, ভোমার আত্মা পর্যাত্মাতে যুক্ত থাকিবে ৷ মৃত্যুত্তও ্ আত্মার স হিন্ত शत्रमाञ्चात এ িয়োগের অন্ত:ন।ই।

৪০। প্রাছো স্থানতা নাই। **জিখর আত্মাকে স্থাধীনতা-**অলস্কার সিলা-ছেন। এই স্বাধীনত। থাকাতেই জোনাদের ধৰ্ম কাৰ্মো—ভভ কৰ্মে আদিকার হইয়াছে, প্রত্যামাদের কেবল কর্ণ্মেতে অগিকার হইয়াছে ্রাপি ভাষার ভলেতে নহে। দিভার হভে।

"के **परि**ग्राचाधिकांत्रटल मा कटनम् कनाटन।"

মকাশ্রেরতে কর্মা করিলে বিস্তু ভাষার क्ल-लाउडेत कना दलकुण श्रीत गा। ুঠি। মাদের এই সূত্রিখাল হাউক যে, জগ-্ৰিব্ৰ মঞ্লেই সহিত তোমাদের মঞ্জ কাহা খাঁধা আছে তাহা তিনি নিশ্চয়ই বিধান ্করিবেন। ভোষর ভাছা মস্তক পাতিয়া গ্রহণ করিবে। তোমাদের শরীর মনের অবস্থা তিনি ছাড়া কে আর অধিক কানে? ভৌমাদের প্রতি স্নেহ ও দলা ভাঁহার মত তিনি তোমাদিগাক बाद काहाब जाटह ? বেষন রক্ষা করেন তেমন আর কে ক্রিবে ? অত এব তাঁহার মঙ্গলভাবের প্রাক্তি দৃঢ় বি-খাস রাধিয়া যাহাতে আপনার কলাৰি জানো: তোমরা প্রাণপণে নেই কম্মের অমুষ্ঠান করিতে থাকিবে। ভাহার ফল তিনি 😎 युक्त कारण विश्वान कतिरवृत । এই ভয়াকীর

তে ভাশ হৈ বাহা দেন তাহাই বাৰা বাৰা। সংগাৰে তা পাইলে ভোমরা ভাহার জো-ড়ের অন্ত্রের লইতে পার; রোগে, শোকে, দারিজ্ঞা পুটবে নিশাভিভ হইলে ভাহার নিকট ক্রন্সন করিতে পার; পাপে, তাপে অর্জনিত ইইয়া সত্ত চিতে তাঁহার প্রসাদ-বারি ভিক্ষা করিতে পার; কিন্তু এই ভয় তুংখাকে অতিক্রম করিয়া পাপ তাপ হইতে निकृष्टि পाইয়া यथन डाइाद देख्यात ज्योतन তোমাদের ইচ্ছাকে নিয়োগ করিতে পা-রিবে, ধধন ডোমাদের হৃদয় হইতে দকল প্রার্থনা গিয়া এই একটি প্রার্থনা তাঁধার দিংহাদনাভিম্থে উচ্চত জাবে যে, হে ঈশ্বর। তোমার ইচ্ছা সম্পার হউক, অগ-তের মঙ্গল হউক, তথনি অমুঠিছ তোগীলেব হস্তগত হইবে, জীবন্মুক্তি লাভ করিলে। যথনি ভোষর। আপন আপন-মনের ক্ষুদ্রত! অপসারিত করিকৈ এবং হৃদয়ের কটিন গ্রন্থি-দক্ষ ভাষিয়া ফেলিডে তথনি মেই মহতো মহীয়ান সৌন্দর্যা-সাগরে তোলাদের প্রেম ময় হইয়া যাইবে, লোক লোকান্ত্রে অনন্ত লোকে সেই প্রেমস্থা ভোগাদের উপজীবিকা হইবে এবং ভাছার বলে বলীয়াৰ হইয়া সেই প্রেমদাতার সহচর অকুচর হইয়া পাকিবে।

> 8>। "विकासिन नात्रियेख मनः अधिकतात्रतः নোহৰানঃ পারমাপ্রোতি তছিযোগঃ পরমং প্রথ

বিজ্ঞান যাহার সার্থী, মন যাহার নশী-ভূত<sub>ৰ</sub> দে<sup>্</sup>সংসার-পথের পার সেই বি**ফুর** भवगे भारक প্রাপ্ত হয়। তদিফোঃ পদ্ম পদং সদা পশান্তি সুরয়ঃ দিবীব চক্ষুরাভভং 🏰 সেই বিশ্বর পরম পদকে জ্ঞানীরা সংবাহ দেখেন, ক্ৰন্ধু যেখন আকাশে বিশুত বন্ধ CHEM !

নেই আছাই কুভানা, দেই আছাই जीवार्याम्, त्यः बाह्यम् इट्टाव नहात প্রাপ ও প্রার্থিত ইইয়া, পরীরের অভিনা

लक्ष्मादेख्ये व्यवस्थित

**本1年的** দা; গেস্থ त्वार क्रांटिक नी छ नार इत्हर भारत जतक्षा मेरमात ७ भारक्ता है । एक किला একাক, মধ্যে ক্লয়ং ঈশ্বর দেভ্সনতে পাকে 🕥 **उन्हारत न**र्गामा बका कतिरक्ष्य स्था छ उन्हे সেতৃকে লভ্যন করিয়া ত্রনালেতে উর্পা হইট্র ছইতে না পারে দিন রাজি – না পারে জী। মৃত্যু পোক—না স্কুত বা চক্কত : সকল ছৌৰ্ প্রকার পাপ এশান হইতে এতিনিয়ত হয়। নিষ্ঠাপ এফলোকে পাপের পরাক্তন নাই। মুক্ত বাজা সংগারের পাপ-তাপ সংসারে াথিয়া দংসারপার ত্রন্ধানোকে উট্টার্ন হন। रमश्रीत अल (४ (म. अन्त धर्म, श्रीनिक्ष **ए** एर जनार्भावत इद, छेनजानी एर म অনুপ্রাণী, হয়। দেখানে রাত্তিও দিন হুইয়। যায়, যেহেকুক প্রক্রানোক थकां म-- स्म अकारमर व्य गरि।

"সংস্কৃতিই তিরেষাং লোকানালনাডেলার। নৈনং সেত্রমহোরাতে ভরতঃ ন জরান নৃত্যুন্নোকোন জ করং ন ত্রুভং। সংক্ষ পাপ্যানোহতো নিবলাও অপ-হতপাপ্যাহোয় একলোকঃ শতকাজা এতং সেতৃং কীহা অন্ধঃ স্থানজোতবিদ্ধঃ নামবিদ্ধোত্রতি উপাতাপী সমন্ত্রপাণী ভবতি। তথালা এতং সেতৃং তীত্রপি নজনহরেবাভিনিশালাতে। স্কৃত্বিভাতোহোটাই বন্ধ-শোকঃ ।"

ত্রাক্ষণ করিয়া তোমাদিগকে আমার এই শেষ কথা উপহার দিলাম। তোমরা ইহা জাবনে পরিণত কর এবং অক্ষয় মুক্তি লাভ কর এই আমার প্রার্থনা।

। ই শাস্তিঃ শাস্তিঃ শাস্তিঃ হরিঃ ।

ক্ষামন্ত্র দীকাণী এক বাদকের উত্তর ধর্ম ও ক্ষামণাণ বিষয়ক প্রান্তর উত্তর।

#### जेश्र

পরনেশ্বর আমাদের আলার অন্তর্তম হৈইনেও-অমাদের নানা গলতাবশতঃ তাঁ-হাকে দেখিতে গাই না বলিয়া আমবা চই করিয়া সিদ্ধান্ত করিয়া বাস যে তিনি নাই ইছা আমাদের ভারি জম। আমাদের এই অন দেখিকেই জগতের প্রত্যেক বস্তু যেন আনা দের উপহাস করিয়া উঠি— হুচা জ্লান

ন্দর্যা করে—থার বিরোধা হইয় দাঁড়াই।
নাগজ্যা কারিধানে এত হোলাকতা এক নোল
দের মনে, বর্তুমান অর্থচ ভাহার মূলে এক মধুর
একতা আছে দেখিতে পাই। ইহাতে আমাল
তের মূলে একতাইজ্গতের মূলে যে এক মহান্
একতা সালেক। ক্তাহা জাগিয়া ইঠে। স্থল
তাহা তাহার মূলে একতা আদি—পূর্ণ। জনেকতা
তাহা হইলে জগত বিশুলাল দি জনেকতা থাকিত
হইগা ঘাইত; বৈচিত্রা পৌন্দর্য বিদ্যমান না রহিত
লোপ পাইত—কিছুই রহিত না।, হইগা ছারখার

देगांठ्या स्नोन्नमा (यथारनरे चार्य अस्ति । थात्नरे अंक्छात निष्टम;—वः छित्तरक वि ত্ৰতা পোনৰা ক্লাপি তিষ্ঠিতে পাৱে নাছিল-•এই বৈচিত্ৰা দৌন্দৰ্যোৱ আধার একড*্ই* নেই উজানস্বস্থা তথ্যসন্ত্রল এবনেবাদিতীয়ং। তিনি আমাদের হৃদয়-রাত্রোর একমাত্র রাজা। শতিনা আছেন বলিয়াই আমরা আছি। তিনি ক্লয়ং সভস্ত, ষাধীন,মুক্তমভাব পূৰ্ণ পুরুষ, এঁই হেছু তিনি আমাদিগকেও ভাগীন করিয়া স্বৃত্তি করিয়া ছেন ও ক্রমাণত অপূর্ণাবছা হইতে পূর্বভার দিকে লইয়া যাইতেছেন। ভাঁহার সহিত णासा निरंशन्न একবশ্যাত্র वादवान नाहै।

दस्यिष्ड दम्ब 🚮 🕶 किन्नद्रगत सीहा शिक्षतीत जन दहाँके शक्त का कारण शिक्षिक रण 🐂 हाई करना र विनेष्ठ स्टेशा करे रेडिश न किर भूनतीय भण्डि के क्रिकेश चामकी जारी रहेट उहाउ रहेंगा अवादन वाजि शाब्दि, जामदा जिस्ता (शार्ट्स छारीकुके, दहेरती পুরুরায় খাসাদিনের উভার সভিত সাক্ষাই **ও নিল্ন হইবে। চেম্ম**র নার্নু-সেন্ত্র য**ের**র নিলা একটা বৃহত্বাত্র চইতে হায়ু শোষর কুৰিয়া যদি ভাষার অভ্যন্তরে একট বায়ু श्चर्य निर्मिष् यार्थन क्यो स्वाह छार। हरेरन हरिया द्विगर निनिमनाव वात् भारक विश्वीहत पर स्मर् **উন্নি, হেন্তু** শিশিরপে বাবা ভগ্ন ভূর্ব বা ভাঞ্চিয় **বিশ্ববিদ্রুর সহিত শিলিত** 🔑 🕒 চলিছে: 🔞 গোর क्तर्भ व्यासारमञ्ज व्याक्षा (स्थान्त्र । व्यान स्थान । প্রধান্তাতে শিনিও ছাত্তা যে কোন কর্ম করি মা**ছিত প্ৰামানৈ**ৰ সংগ্ৰেগে মন্ত প্ৰামাৰিক, দেখি ৷ হে দিকে গমন করিপুদে আবেছণ কবি দিনা मकत्मरकेरे काहारक्षक - वर्षे एकन सामाद्वर १८० अर्व्ह (७४) बक्ते मधान जात्रत चेमत इस छ मह्म छटो । इन्हरू ट अधूका भानतमात्र छेमश हर्श ননে বেশহার কারণ তিনিটা সেই মহান পুরুষের ভক্ততি ব কামানের অক্তানে নিষ্ঠিত কান্তে বলি-शहिलारे कारनत गरेश क्षा जब नाहा जन्म मीत मामक्रमा कारा । ताथिलहे पामरा উচ্ছ সিত হইলা পড়ি। প্রতিটা মহছেম হুইতে ক্ষতম বিষয় প্ৰান্ত প্ৰাচনাটনা করিলে ভাগার সভার অনুপশক্ষি বিভূতেই इत मा. त्ववन हेशहे मत्न थाहित-শ্বতে। ম'নেবো জাগর্জি ক্রেছিশি চেষ্টতে অগব। क्तः अभिक्ति बाजामा उपार्टिश अनीवार ॥" ং হেড় সেই পারমবের জাগরিত রহি-

शास्त्र (महे दशक्षां कार दहें होता विश्वाद ।

## ধর্ম ৷

वहित खर्वा भाग ।

महान जन्छ शुक्तवरक लाएख जन।
जामन। समा-नाएका रा निगरमन शिक्ष्टं। कि
निश्कालके छाहार पर्यः। रा निश्रमन शक
जिल्कर्य नाविक श्रेट्रा काल शर्दान समुद्रा
जामारमन मण्डलक श्रेप कानिन। समिक
श्रेप आमारमन श्रिप कानिन। समिक
श्रेप अमारमन श्रिप कानिन। समिक
श्रेप अमारमन श्री कानिन। समिक
श्रेप अमारमन श्री कानिन। समिक
श्रेप आमारमन श्री कानिन। समिक
श्रेप आमारमन श्री कानिन।

ধর্মাই মনুষোর শ্রেষ্ঠ বিজ্ঞান। এই
বিজ্ঞান হাঁহার আহত উন্নোর কথনই জীতে
কুল হয় না। গর্কে অহরার উন্নোকে করিছে
করিতে পাবে না; তিনি স্কুল্টকট ভাই
ভাই—নিকট্ম দেখিকে পানিশ্ব কারণ করি

অহলার বড় তিকে ভুল বি নান প্রের

ননুষা স্বয়ং অনা মনুষা হই অনেক দুরে

অবহিতি করে শেই দূর হা ত দৃষ্টি করাতে

অপর মনুষাদিপকে তাহার তি কলে বলিয়া

বোধ হয়ং কিন্তু আশ্চনা কেন পে প্রায়া
থাকে যে সেই এক দুরজের নান জালাকেও

অপরদেশ নিকটে অতি কুরু মেলায়। প্রের

আনে ধর্মের মত প্রভাব নোন বিশান প্রায়া
ভাগের প্রভাব নাই হয়। কর্মা আহিল প্রায়া
ভাগের প্রভাব নাই হয়। কর্মা আহিল ব্যারী
ভাগের ক্রায়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়া

মারন ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়াল ক্রিয়া

মারন ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়া

মারন ক্রিয়া হয়—ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়া

মারন ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়াল ক্রিয়া

মারন ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়াল ক্রিয়া

মারন ক্রিয়ান ক্রিয়াল ক্রিয়াল ক্রিয়া

মারন ক্রিয়াল ক্রিয়াল ক্রিয়াল ক্রিয়া

মারন ক্রিয়াল ক্রিয়াল ক্রিয়াল ক্রিয়াল ক্রিয়া

মারন ক্রিয়াল ক্রেয়াল ক্রিয়াল ক্

#### शरकातः

নহাম নান — হই সর্তান ইটু ছাড়।
আর সকলি কানকাল। এই মুসূর্ট মানটো
সোলাছিল আছি কানল আৰু আনালা মতেই
বা নান ব ইলা লালিব জাতই আ মানিবা মতেই
আইতে হাইবে। জ সভই ভাতিত্ব কামান আহিব ভাতিব। জ সভই ভাতিত্ব কামান আহিব ভাতিব। জ মান্তাৰ বাহ কামান জ্যা আহি হাইবা মুভিকামান হাইলা মাইবে ভা কামানেব ভিয়েকার্য সাধনাতে গ্রান্তাহ নাম আজার ধারন করিব।

কৃদিকের উন্নতি যেমন আক্রকার উন্নতিকে অপেকা করে; পরকালের উন্নতিও সেইরূপ ইহুকালের উন্নতিকে অপেকা বরে।
নত্রতা ইহুকালের উপর আনাদের ভালনুক্ম দৃষ্টি রাথিকা চলিলে প্রকালের বিষয়
ভাবিতে হুইবে না। ইহুকালে আমরা সরল
মানুষের মত যদি থাকি পরকালে আমরা

क्लि।

অহন্তার বড় তিকে ভূস । এত তাহা হইলে দেবলার মত থাকতে লারব্য ।
ননুষা স্বয়ং আনা মনুষা হইল অনেক দুরে । যাহাব। ইংকার্ডন শুরী করে ভারারাই ।
অবস্থিতি করে একট দর সমত দৃষ্টি করাতে। যাশুনিক পরকালকে শুন্ধা করে।

ब्रिहि, ना, ठेः

## সংশয়বাদের পরিণাম।

আ্জ কাল সভায় জগতে সংশ্বনালে खीरोंदा रमिता **जान्स्ट**क निराम इंदेरण-ত্রেন—সাধিতেডেন সংশ্রপ্রেদ্য প্র ব্যক্তি ন্যান্ত্রিকতা আফিল। লোকেল স্কদ্যকে তাধি-গার কবি**ধে।** কিন্তু শান্ব-লাদ্য নান্তিকভাব বিৰোণা—নাতিকভাৱ নহিত ত'হাম টিং অবভিত্তি অস্থান । পর্জ্ঞান নংশয়ধান পর্ন অংভিতৰ্ব – পূৰ্ ঈশ্ব-লেমিকভায় প্ৰি-भंग महरत, हेहा जागानिस्भत दित विचाम । প্ৰাস্ত কাল্ডের মধ্যেরশ্য সর্জনান সভা मान्य खलीतुः निराधनात करनः त्रकरहान লাভের জ্য়া ক্যান্ত অভাবিক প্রবন্ধ প্ৰবাং ভ্ৰমিটিজ ব'হ ৷ সংখ্যাবলৈ নাৰ ৰস্তান্ত ক্ষিত্ৰবৈদেশ্য নাত্ৰু--- ই,ভারে। हेन्द्रात एके सम्द्रित महत्त्रमा ले क्यारी কৈতিতে চাহেন, জাল 🔆 😥 পাৰেন না বলেলা উচ্চারা উপত ল্লাব্রীকিক জ তেওঁ সংগ্ৰন্থ সামতে থাকেই কিবেন। প্ৰত্য ভ পরকানকে ইং রা বিজেন্স বরীক্ষেত্র বিষয় কৰিছতে ভাতেগৰ এবং ভাষ্ট লাংক পাৰিতে ইহাঁবা গে অতে উজ্ঞানীয় ভড়। इष्ट्रेट्ड भीवित्सम् संभातः भएनः ५१४। **উপর ও পরকালকে ফ**খন ভৌতিক ভিজেতি (नन अतीन कता धार्यक ना करते, रिकेस ভোতিক বিজ্ঞানের শাহিই এতদুর উপ্রতি হয়-বার তিপ্ন দেখা থাইতেছে ে তুর্নি জে 😁 স্থিক জগতের উদ্ধন্তা ও 💢 महिक पांशाजिक अभीत লেখাকর কিনিদ্রের্দ্ধ

নি ক্লাক কৰিছে আনিয় কিছে বিশ্ব কৰিছে বিশ্ব কৰিছে বিশ্ব কৰিছে বিশ্ব কৰিছে আনিয় কিছে বিশ্ব কৰিছে বিশ

## भरकाका

(代刊 化甲) 阿伯 (1)

ি ক্রীনিক্ত স্থিতির সংগ্রীক্তের ক্রান্থ করের বা হলের এনিকল জীপারক সালাগ্রিক গর কেল মেলাক্র কর প্রাপান করে তাহাশ নাগ্রিক স্থার সংগ্রাক্তির প্রকাশ করের অব্যান্ত্রিক সংগ্রাক্ত জিল্লাক স্থানিক্তি প্রকাশ করের ক্রান্

्रीमः भार्य बार्यः भरत्य प्रश्य । वन कारतः व्याचनः वार्यम् अस्य मान्यः । वन कारतः व्याचनः व्य

स्थितिक मून १४०० मादान १४म, १८मय १४५ म १६ १६ इन्हें मूँ १८०१ वर्ष। क्षानीक नदेनम स्थान वस्य १६८० १८० ६८ मादाक नाहे । देश त्वसा प्राम्त केवल १८४ में १८० १८४० मिला संतरक

होतुम्ब क्रिका ७ इम्छ नियम् । जाता । स्रोतिक क्रिका नियम्

प्रमाणकारकार के किया माना विकास अभागमा

ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা ক্ষা কৰিছে বিশ্ব কৰি

.स.च. हाए, के निर्मात संस्थान आस्प्रका छन्। ा केवन निर्मान स्थान नाम

वाहिन क्रेनातर न स्पूर्वकृत हो।

নিবাকন থাটা নজম ও া**রণাম্য প্রনে**ল ৮০% নিবের জনা নিধিস **আ**গত।

আনে ব্যালাকে ভর করিছে **বিদা** কন। আলা- অলেক্ষ্য **দওক**ই ও জ বিদাক্ষি হতু। (১১)

ভাগি ও বংজা**ণ পথ কোন মতে** প্রি**ভাগি না** ক**বার** নামত হিন্দ

(80)

ি সামানিধন চিকার উপর আনাদিশের জন বিক বিপ্রদিশিত কাই পান্তার । গাঞ্চার যে বিন্তু প্রবাস, তাধার ভিত্ত ভালন্থানী হলতে দেখা যায়। চিকার উপন্তানে প্রভাব সমা করি, দান্যা প্রিটি হল্ম।

জীরেনে হাত। বিশ্ব তারা জুমত হাস্ক, কা এছে। বি ক্রিটেব, কিন্ত এটা এ**ডগু**র মন্ত্র**মক্ত ভি**ল্ল ক্রন্তালালার করি। নাম তাহা করিছে কাই করিবে না বি

(62)

(৪২)

সকল শহরে গৃহিত সভাবততে আনদ ২ ৯,
কিছ গাঙাবিলাও পালেক সমুক্ত চিত্র-পাকতা নিয়ক